26928



श्री अर्जुनसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ

नेहरू-गाँधी परम्परा के पोषक

अर्जुनसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ का यह
खण्ड है नेहरू-गाँधी परम्परा के पोषक
अभिहित इस खण्ड में राजीव-लोंगोवाल
, नेहरू-गाँधी की विरासत, राजीव गाँधी
रों-भावनाओं की क्रियान्विति के प्रति
, निष्ठा और राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं
य में उनकी चिन्ता स्पष्ट परिलक्षित होती
ट्र के समग्र विकास की अकुलाहट,
ओं के समाधान के प्रति उदार किन्तु स्पष्ट
ण, काँग्रेस संगठन को सशक्त करने-
की चिन्ता और प्रत्येक भारतीय के
मान को बनाये रखते हुए भारत को
ष्ट्रीय मंच पर स्थापित कर उसकी गौर
को अक्षुण्ण बनाए रखने की वैचारिक
र्णता साफ़ दिखाई देती है।

अर्जुनसिंहजी अगर केवल सत्ता को ही
परम लक्ष्य मानते तो शायद इस शिखर
नहीं पहुँच पाते। सत्ता को माध्यम और
सेवा को मंज़िल मानते हुए उन्होंने अपने बाद
वाले राजनेताओं को यह संदेश दे दिया है
शासन करना हो तो लोगों के दिलों पर करना।
निश्चित ही वह सिंहासन है, जो महान् से महान्
टों को भी नसीब नहीं होता; किन्तु जिसे यह
लब्ध हो जाता है, महानतम तो सचमुच वही
अर्जुनसिंहजी की राजनीति इसी लोकचित्त की
धना की राजनीति रही है।



26928

General Knowledge

Data Entry Complete

REFERENCE BOOKS

CAREER COLLEGE
ACC.No.....
Book No.....
Date.....
BHOPAL



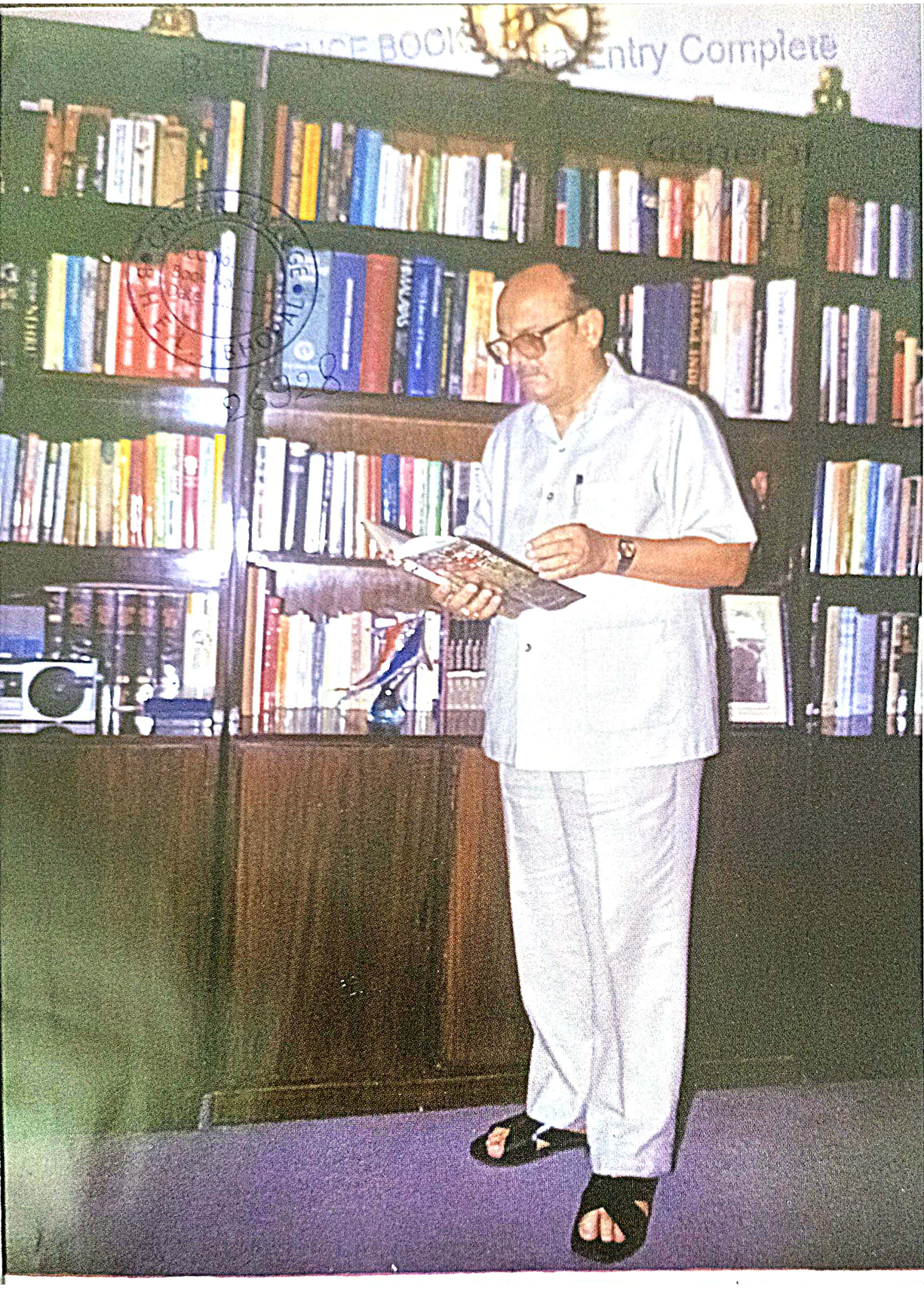
Entry Complete

श्री अर्जुनसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ

नेहरू-गाँधी परम्परा के पोषक

(अष्टम खण्ड)

CAREER COLLEGE
B.H.E.L., BHOPAL
ACC.No.....
Book No.....
Date.....
26928

संयोजक
मुरारीलाल अग्रवाल

सम्पादक
विष्णु राजोरिया

संयोजन
इण्डियन रायटर्स एसोसिएशन, कोलकाता
प्रकाशन
श्री अर्जुनसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ समिति, भोपाल

CAREER COLLEGE
ACC.No.....
Book No.....
Date.....
M. E. L., BHOPAL
26928

श्री अर्जुनसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ

अष्ठम खण्ड : नेहरू-गाँधी परम्परा के पोषक

संयोजन : *इण्डियन रायटर्स एसोसिएशन, कोलकाता*

प्रकाशन : *श्री अर्जुनसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ समिति,*
4 इन्दिरा प्रेस परिसर, महाराणा प्रताप नगर,
भोपाल-462011

- प्रथम आवृत्ति
- कार्तिक कृष्ण अष्टमी, विक्रम संवत् 2061, 5 नवम्बर, 2004
- © लेखकों के सौजन्य से संपादक

- **प्रस्तुति दिग्दर्शक : आशीष**
- **मुद्रण निदेशक : मनीष**

कम्पोजिंग : आकृति फोटोटाइपसेटर्स एण्ड प्रोसेसर्स
मुद्रण : आदर्श प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स
4/1, इन्दिरा प्रेस परिसर, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल-462 011
☎ : *2555442, 2550291*

General Knowledge

श्री अर्जुनसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

खुशवन्त सिंह
सैय्यद हैदर रज़ा
प्रो. के. अयप्पा पणिकर
प्रो. कल्याणमल लोढ़ा
जिया फरीदुद्दीन डागर
प्रोफेसर डॉ. धनंजय वर्मा
दिग्विजय सिंह
डॉ. बिन्देश्वर पाठक
विष्णु खरे
कमलाकर सोनटके
मदन मोहन जोशी
प्रो. प्रेमशंकर रघुवंशी
अजीत जोगी
प्रभात गांगुली
राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल
सुभाष यादव
झुमकलाल भेड़िया
बी.आर.यादव

CAREER COLLEGE
ACC.No.....
Book No.....
Date.....
B.H.E.L., BHOPAL
26928

राजेन्द्र सिंह
महेन्द्र सिंह चौहान
बंशीलाल धृतलहरे
प्रताप सिंह बघेल
श्रीमती उर्मिला सिंह
मोहम्मद अकबर
कांतिलाल भूरिया
चरणदास महन्त
डॉ. आर.के. बिसार्य
सत्यनारायण शर्मा
दीपचंद यादव
मोहम्मद युनुस
बी.एल. सिंह
भूपेन्द्र गुप्ता
मुरारीलाल अग्रवाल
पी.सी. पाठक
आशिस सान्याल
छतरसिंह
विष्णु राजोरिया

इंडियन रायटर्स एसोसिएशन

संरक्षक

महाश्वेता देवी
डॉ. प्रतापचन्द्र चन्द्र
नीरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी
अमिताभ चौधरी
सेवाब्रत गुप्ता
तरुण सान्याल
डॉ. प्रभा खेतान
डॉ. सुरभि बन्दोपाध्याय
नीतिश बिस्वास
डॉ. एस. घोष
एस. कृष्णमूर्ति
गौतम प्रसाद बरुआ
डॉ. नलिन पटेल
एस.ए.मलिहाबादी
विश्वम्भर नेवार
डॉ. उज्जल कुमार मजुमदार
होसेनुर रहमान
देवूलाल बनर्जी
गणेश प्याने
सुचित्रा मित्रा
देवाजंन चक्रवर्ती
सुधांशु शेखर डे
के.सी. धर
संकर मण्डलोई
समित सरकार

कार्यसमिति

प्रेसिडेंट
प्रो. कल्याणमल लोढ़ा
कुलपति, जोधपुर विश्व विद्यालय

उपाध्यक्ष

डॉ. के.सी. भुनया
उड़िया लेखक
गीतेश शर्मा
हिन्दी आलोचक

जनरल सेक्रेटरी

प्रो. आशीष सान्याल
बांग्ला लेखक

मुख्य सलाहकार

मुरारी लाल अग्रवाल

कोषाध्यक्ष

प्रो. श्री शंकर झा
हिन्दी-अंग्रेजी लेखक

सदस्य

सचिन दास
बांग्ला लेखक
कल्याण गंगोपाध्याय
बांग्ला लेखक
डॉ. ज़रीना ज़रीन
उर्दू शायर - आलोचक
प्रणब बरुआ
असमी कवि
ज्योर्तिमय दास
बांग्ला लेखक
सोमेन्दु गंगोपाध्याय
बांग्ला लेखक
डॉ. इन्दु जोशी
हिन्दी लेखिका

CAREER COLLEGE
ACC.No.....
Book No.....
Date.....
B.H.E.L., BHOPAL
2628

CAREER COLLEGE
ACC.No.....
Book No.....
Date.....
BHOPAL
26928

संपादन सलाहकार
पद्मभूषण डॉ. बिन्देश्वर पाठक
प्रोफेसर डॉ. धनंजय वर्मा
डॉ. उज्जल कुमार मजुमदार
डॉ. अवधेश प्रसाद पाण्डेय
माधव शुक्ल मनोज
प्रो. प्रेम शंकर रघुवंशी
मदन मोहन जोशी
आशिस सान्याल
संपादन सहयोगी
पंकज शर्मा
संजय द्विवेदी
डॉ. हरिकृष्ण दत्त
अहद प्रकाश
मोहम्मद युनुस
उत्पल बैनर्जी
ज्योतिष जोशी
सहायक संपादक
मनोहर चौरे
संपादक
विष्णु राजोरिया

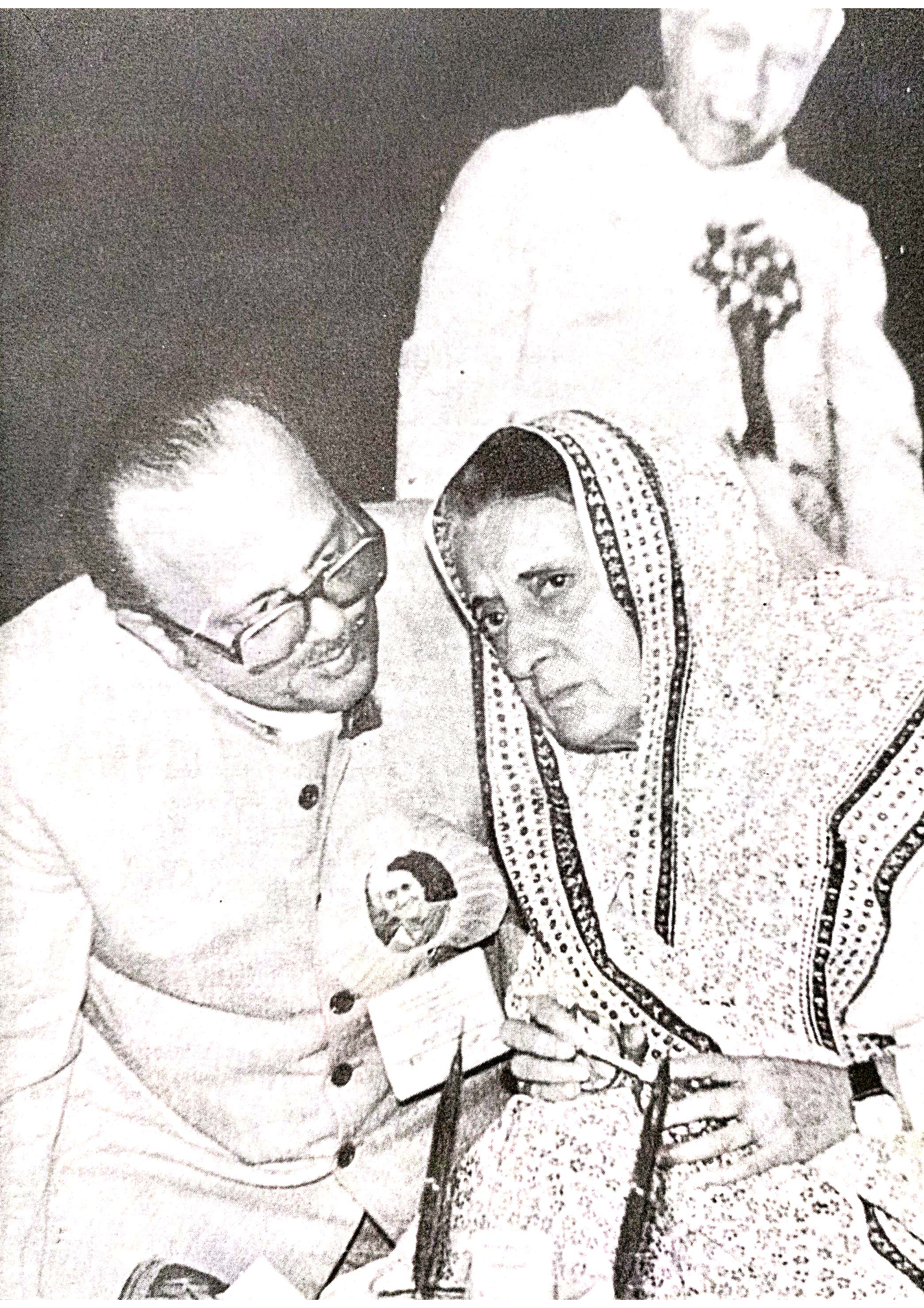

पुरोवाक्

''गाँधी और नेहरू एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं– गाँधी नेहरू के बिना और नेहरू गाँधी के विना। गाँधी-नेहरू-संवाद राष्ट्रीय जागरण की और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम की सबसे कीमती राजनैतिक और सांस्कृतिक विरासत है, वह स्वयं हमारी ऐतिहासिक परम्परा का अंग बन गई है। आधुनिकता और परम्परा, निरन्तरता और परिवर्तन, राष्ट्रीय-स्वायत्तता और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, आर्थिक प्रगति और सामाजिक न्याय आँचलिक विविधता और राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिकता और आध्यात्मिकता, समूह-हित और व्यक्ति-हित, राज्य सत्ता और नागरिक समाज, सामाजिक दायित्व और नागरिक स्वतन्त्रता वृहत् औद्योगीकरण तथा कुटीर उद्योग और कृषि विकास, ग्राम और नगर, बौद्धिक और शारीरिक श्रम, विशिष्ट वर्ग और जनसाधारण, स्त्री और पुरुष, साधन और साध्य, हिंसात्मक और अहिंसात्मक परिवर्तन आदि के परस्पर पूरक अथवा द्वन्द्वपूर्ण संवंधों यानी भारतीय समस्याओं की प्रखर रूप से पहचान और उन पर एक भारतीय मूल दृष्टि (या मूल दृष्टियों) के निर्माण में गाँधी-नेहरू संवाद की एक महत् भूमिका रही है। इस माने में भारतीय सन्दर्भ में गाँधी और नेहरू एक दूसरे के विना अपूर्ण हैं।''

हम जब सुप्रसिद्ध समाज विज्ञानी श्री पूरनचन्द्र जोशी के उपर्युक्त कथन पर गहराई से विचार करते हैं तो आज के भारत में नेहरू-गाँधी के समग्र सोच की प्रतिच्छाया अर्जुनसिंहजी के चिंतन और विचार में परिलक्षित होती है। आपका हर कदम नेहरू-गाँधी के सपनों की पूर्ति के प्रयास के रूप में दिखाई देता है।

16 अगस्त 1992 को सतना काँग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच उन्हें संबोधित करते हुए अर्जुनसिंह जी ने कहा था— ''आज मन्दिर और मस्ज़िद की लड़ाई की बात हो रही है। मन्दिर बने, मस्ज़िद टूटे, क्या हो, कैसा हो, उसको लेकर एक विवाद चारों तरफ दीखता है। मैं इस मन्दिर और मस्ज़िद को विवाद नहीं मानता हूँ। मैं इसको भारत की

मानसिकता को प्रभावित करने का प्रयास मानता हूँ। हम और आपके दिमाग में धर्म की छाप डालने की कोशिश की जा रही है कि आप हिन्दू हैं, तो हिन्दू की हैसियत से विचार करो, मुसलमान हो तो मुसलमान की हैसियत से विचार करो, ईसाई हो तो ईसाई की हैसियत से विचार करो, सिख हो तो सिख की हैसियत से विचार करो। हमें सोचना है, हिन्दुस्तान की साख तभी रहेगी जब हम हिन्दुस्तानी की हैसियत से विचार करेंगे। इस मानसिकता को काटने की जो कोशिश हो रही है, उस कोशिश को अगर हमने इस गफ़लत को समझने में गलती की है तो कोई भी शक्ति अंततः भारत के विनाश को रोक नहीं सकती है क्योंकि **जिस देश में सैकड़ों धर्म के मानने वाले लोग हों, न जाने कितनी भाषाओं के बोलने वाले लोग हों, न जाने कितने आचार-विचार के लोग हैं, न जाने कितनी मान्यताओं को मानने वाले लोग हैं, अगर इस देश में पहचान का आधार राष्ट्रीयता नहीं संकीर्णता बन जाएगी तो कौन इस देश के अस्तित्व को बचा सकता है। अभी कहीं कुछ नहीं हुआ है, इसलिए यह ज़िम्मेदारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है कि अपनी मानसिकता को बँटने न दीजिए। हिन्दुस्तानी की हैसियत से हर विषय पर सोच कर निर्णय लिया जाए, वही रास्ता काँग्रेस का रास्ता है, वही रास्ता गाँधीजी ने दिखाया था, वही तिलकजी ने दिखाया था, सुभाषचन्द्र बोस ने दिखाया था, वही सरदार पटेल ने दिखाया था, और इसी रास्ते पर चलने की कीमत हमारी पार्टी के तीन महान् नेताओं ने अपने जीवन का बलिदान देकर दी है।** यह सम्मेलन हम और आप सब को उस रास्ते पर चलने का साहस दे, हमें और आपको वह संकल्प लेने की शक्ति दे, यही हमारी कामना है।''

कौन देशवासी नहीं जानता कि राष्ट्रपिता गाँधी को हिन्दू-मुस्लिम एकता के अपने जगजाहिर आग्रहों के कारण जान गँवानी पड़ी। सवाल केवल हिन्दू और मुसलमान का नहीं था, उस सांस्कृतिक एकता और हज़ारों सालों के साथ और भाई चारे का भी था जिसमें दोनों साथ-साथ रहते आए थे। दुर्भाग्यवश यह देश बँटा और विरासतें भी बाँट ली गईं। पर हुआ क्या? क्या लोगों के दिलों में जो राजनीतिक तौर पर बँट जाने के बाद भी समीपता और एकत्व की भावना थी, तिरोहित हो गई? उत्तर होगा नहीं। यह कला, संस्कृति, हिन्दी-उर्दू की शायरी और कहानी उपन्यास के मार्फ़त प्रकट होती रही। फिर और कुछ लोगों ने संगठन बनाए। परिषदें गठित की और इस एकता को चूर-चूर करते रहे। अर्जुनसिंहजी ने व्यथित होकर तब कहा— ''**दुनिया के इतिहास से हमको यह सबक मिलता है कि कोई भी समस्या बंदूक-तलवार की नोक पर नहीं सुलझ सकती है। किसी भी कठिनाई पर काबू पाने के लिए एक ही रास्ता है और वह है प्रेम और सद्भाव का, दिलों को जोड़कर कंधे से कंधा मिलाकर हौसले से काम करके ही हम मंज़िल पर पहुँच सकते हैं।** ये विचार उन्होंने पंजाब के राज्यपाल

के रूप में तब व्यक्त किए थे जब वह प्रदेश आतंकवाद की रक्त रंजित छाया में था। प्रदेश और केन्द्र के बीच विश्वास का पुल टूट चुका था। पंजाब के लोगों के मन में एक ऐसी विद्वेष भावना थी जिसके हिंसक रूप सबके सामने थे। एक प्रतिभा सम्पन्न सहृदय और उदार राजनेता के रूप में अर्जुनसिंहजी ने राजनीति की भाषा छोड़कर जिस मानवता की भाषा को प्रयोग शुरू किया, जैसा आत्मीय संवाद कायम किया, वह भारत के राजनीतिक इतिहास में अमिट रूप से दर्ज़ है।

ऐसा भी नहीं कि अर्जुनसिंहजी ये सब ऊपर-ऊपर से कह और कर रहे थे। उन्हें जानने वाले जानते हैं कि वे हमारे समय के उन राजनेताओं में से हैं जो राजनीति को आत्म प्रतिष्ठा नहीं लोक उत्थान और देश-सेवा का क्षेत्र मानते रहे हैं, जिन्हें इस देश की विचारधाराओं, परम्पराओं, लोक मानस का गहरा मान है, जो विरासत की मंशाओं और उनके फलितार्थों की खूबसूरती से परिचित रहे हैं। उसी पंजाब में राज्यपाल के रूप में रहते हुए उन्होंने वहाँ के लोगों से कहा था— **''हमारे पवित्र गुरुद्वारे, मंदिर, मस्ज़िद, हमारे गुरुओं, संतो और फ़कीरों की वाणी और उपदेश, ये सब हमसे अपने फर्ज़ की अदायगी का तकाज़ा करते हैं। हर मुल्क के इतिहास में ऐसे क्षण आते हैं जब वहाँ के रहने वाले इंसानों के इरादों और हौसले की परख होती है। आज हम भी ऐसे ही एक समय से गुजर रहे हैं। हम सबको यह साफ़ तौर से दुनिया को दिखा देना है कि हमारे लिए इस देश में रहने वाले प्रत्येक इंसान की इज़्ज़त व खुशहाली उतनी ही अहमियत रखती है जितनी खुद अपनी और अपने देश की तरक्की।''**

उनके इस कथन में कोरा उपदेश मात्र नहीं था। इसका एक उदाहरण वे मध्यप्रदेश के झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों के जीवन में अधिकार-बोध जगा कर दे चुके थे। मध्यप्रदेश में उनकी एक छवि इस प्रकार की पहले से बन चुकी थी। उन्हें क्रांतिकारी निर्णय लेने वाले, संवेदनशील गरीबों के मसीहा जैसे शब्दों से पहचाना जाने लगा था। यह भी कि उनकी संवेदनशीलता के पीछे एक पूरी समाज व्यवस्था, मानव-बोध और देशी राजनीति और उसकी चेतना का सक्रिय योगदान था।

यह अर्जुनसिंहजी ही थे जिनके प्रयासों से मध्यप्रदेश की राजनीति में संस्कृति और कला, लेखक और कलाकार, नर्तक और गायक नई निगाह से देखे जाने लगे। यह ऐसी निगाह थी जो रोज-रोज अखबारी चेहरों और विज्ञापन-सुन्दरियों के परे उन सांस्कृतिक चेहरों के प्रति अपने ही समाज के नागरिकों के मन में आदर और श्रद्धा पैदा कर रही थी। वे नागरिकगण जो यह समझते थे कि अकेली राजनीति या बाज़ार की समृद्धि से काम चल जाएगा, उत्पादन की वृद्धि से नागरिक जीवन में अभ्युदय आ जाएगा, यह सोचने अनुभव करने और मानने को बाध्य हुए कि धर्म, विज्ञान, बाज़ार और राजनीति ही नहीं कला और संस्कृति से समृद्ध जीवन ही एक परिपूर्ण जीवन कहा जा सकता है। मध्यप्रदेश अगर संस्कृति

प्रदेश, भोपाल अगर संस्कृति की राजधानी कहलाने का गौरव प्राप्त कर सका तो इसका श्रेय अन्य किसी को नहीं, सिर्फ़ अर्जुनसिंहजी को जाता है।

इस संदर्भ में जिस एक प्रसंग को यहाँ याद करना ज़रूरी लग रहा है, वह तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी और उनकी अत्यन्त निकटस्थ विद्वान् महिला श्रीमती पुपुल जयकर का है, जब श्रीमती गाँधी ने उनसे पूछा— "क्या तुम अर्जुनसिंहजी से पहले कभी मिली हो। वे उन विरल राजनीतिज्ञों में से हैं जिनके मन में संस्कृति के प्रति गहरा सम्मान है और जो उसकी फ़िक्र करते हैं, तुम्हें उनसे मिला चाहिए।" उन्हीं श्रीमती जयकर ने अर्जुनसिंहजी को लेकर अपनी जो धारणा बनाई उसे उनके इन शब्दों में ज्यों का त्यों पढ़ा और महसूस किया जा सकता है। श्रीमती जयकर ने कहा था — "मैं अपने जीवन में दो या तीन ही राजनेताओं से मिली हूँ जो संस्कृति के क्षेत्र में अपने राजनैतिक पूर्वाग्रहों को छोड़कर पहचाने जा सकते हैं। मैं यह कह रही हूँ कि अर्जुनसिंहजी, ठीक रास्ते पर जा रहे थे।"

श्रीमती जयकर द्वारा निर्दिष्ट यह ठीक रास्ता जो भी रहा हो पर साहित्य, कला और संस्कृति का विकास अगर इस प्रदेश में अपने रास्ते हो सका है, तो लेखकों, कलाकारों, संस्कृति-मनीषियों के मन में आत्म सम्मान और आत्म गरिमा का भाव अँखुवा और पनप सका है तो उसके पीछे अर्जुनसिंहजी की ऐतिहासिक भूमिका रही है।

यह अर्जुनसिंहजी ही थे जिन्होंने अन्य प्रदेशों को यह प्रेरणा दी कि कला और संस्कृति विहीन राजनीति उस रेगिस्तान की तरह हैं जिसमें नाम मात्र को भी मरूद्यान न हो। संस्कृति और कलाएँ समकालीन सत्ता-राजनीति में इसी मरूद्यान की तरह अपना विकास अगर कर पा रही हैं तो इस अविस्मरणीय और प्रेरक योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

ऐसा सोचा जा सकता है कि तब अर्जुनसिंहजी जैसों ने क्या यही किया, क्या उनकी निगाह उन आधारभूत संरचनाओं और उनसे सम्बद्ध संसाधनों के विकास की ओर नहीं गई जिनके बलबूते एक समृची संस्कृति लहलहाती है और जीवन खुशहाली का अनुभव करने लगता है। क्या अर्जुनसिंहजी की आँखें इस ओर से उदासीन थीं और आम जनता का इस सांस्कृतिक आबोहवा से शायद ही कोई लेना देना रहा हो। तो ऐसा नहीं था। वे हमारे समय के उन विरले राजनेताओं में से हैं जिनकी सोच में सदैव समग्रता बरकरार रही है।

गरीब और अमीर, उद्योगपति और मिल मजदूर, नागरिक और अफ़सर, राजनेतागण ये भले ही अलग-अलग इकाइयाँ हों पर एक ही लोकतंत्र और उसके परिवार को रचने वाले सदस्य हैं। एक के ऊपर उठते चले जाने और दूसरे के ज़मीदोज़ होते जाने से लोकतंत्र बचेगा नहीं। इसीलिए वे राजनीति को न तो कभी सर्वसत्तावाद मान सके, न एकाधिकार, न ही वो निरंकुशता जिसके लिए आज़ादी के बाद कुछेक लोग जाने गए। पर उन्होंने इस संदर्भ में कभी

आत्मस्तुति की हो या कराई हो, ऐसा भी उदाहरण नहीं मिलता। चीजों को उनके सही परिप्रेक्ष्य में समझना और व्याख्या करना, उनकी राजनीति का प्रधान कर्म रहा है।

आपात्काल जैसे अलोकप्रिय निर्णयों पर अपना अभिमत प्रकट करते हुए उन्होंने शायद ही यह मंज़ूर किया हो कि वह एक श्रेष्ठ ऐतिहासिक निर्णय था। पर वह हिन्दुस्तान को कमज़ोर करने के लिए लिया गया निर्णय था, यह भी अर्जुनसिंहजी कभी नहीं मान पाए। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी को लेकर उन्होंने इस संदर्भ में जो बातें एक साक्षात्कार के सिलसिले में दर्ज़ कराई हैं, वे गौर तलब हैं। उनके अनुसार देश में आपात्काल लागू करना, इंदिराजी के व्यक्तित्व की अधीरता तो कही जा सकती है, पर वह उनके स्वभाव का बुनियादी रूप नहीं कहा जा सकता। वे एक विचारवान राष्ट्रनेता के रूप में यह भी कहने से मुँह नहीं मोड़ते कि एक राजनेता के रूप में हमारी यह ज़िम्मेदारी हर वक़्त बनती है कि हमारा कोई भी एक्शन ऐसा न हो जिसे हम जस्टिफ़ॉइ न्याय संगत न ठहरा सकें। अंततः हम राजशाही या तानाशाही में नहीं रह रहे हैं, लोकशाही के अंग हैं और अपने प्रत्येक फ़ैसले और राजनीतिक व्यवहार के लिए लोक के प्रति ज़िम्मेदार हैं। हमारे विचार और कर्म में यह प्रजातांत्रिकता झलकनी चाहिए। यह सब इसलिए भी ज़रूरी हो उठता है कि लोकतंत्र की बुनियादी माँग आम आदमी का उत्थान है। अर्जुनसिंहजी जैसे राजनेता ने इसे अपने राजनीतिक जीवन का मिशन जैसा बनाया। उनके जब-तब के बयानों से इसकी अनुगूँज उठा करती है और सुनने वालों को सुनाई भी देती है —

''हिन्दुस्तान की हालत क्या है? हमारे मुल्क में ग़रीबों की संख्या ज्यादा है। कमज़ोर वर्ग की संख्या ज्यादा है, जो आर्थिक रूप से मज़बूत नहीं है, जो अपने बलबूते पर अपने पैरों पर खड़े होकर सब कुछ नहीं कर सकते और इसलिए हमें उन ग़रीबों के हितों की रक्षा के लिए काम करना है। कोई भी तब्दीली देश में आए, आना चाहिए। लेकिन सबसे पहले उनका ख्याल करिए, जिनके पास कुछ नहीं है, उनके पास कुछ न कुछ होना चाहिए, उन के साथ नाइंसाफ़ी नहीं होनी चाहिए। कमज़ोर को सताने वालों को किसी तौर से बक्शा नहीं जाना चाहिए।''

मध्ययुग के संतों की याद करें तो इन पंक्तियों में कहीं उनके महान् संदेशों और उपदेशों की प्रतिध्वनि भरी हुई है। आखिर रामायण-महाभारत में सारा युद्ध अगर न्याय-अन्याय के बीच घटित हो कर पाप और पुण्य की पहचान भी कराने में सफल हुआ है, तो हमें यह मानकर चलना होगा कि अर्जुनसिंहजी की चेतना में इन विचारों की सत्ता निरन्तर मौज़ूद रही आई है। उनके इन विचारों को पढ़ते-सुनते कवि दिनकर की ये पंक्तियाँ भी बार-बार सामने आकर खड़ी हो जाती हैं—

पापी कौन मनुज से उसका न्याय चुराने वाला
या कि न्याय माँगते विश्व का शीश उड़ाने वाला॥

धर्मराज! यह भूमि नहीं है क्रीत किसी की दासी
हैं जन्मना समान परस्पर इसके सभी निवासी॥

यह परस्परता, समानता, भाई-चारा, सामाजिक विश्वास अर्जुनसिंहजी के राजनीतिक जीवन के मूलमंत्र रहे हैं। प्रजातंत्र की जड़ें अगर गहरी होंगी तो इन्हीं मूल्यों के सहारे होगी। किसी एक धर्म, जाति या राजनीतिक विचारधारा की तानाशाही से कोई प्रजातंत्र कभी भी सुफल नहीं दे सकता।

आज जबकि धार्मिक तत्त्ववाद, अधिनायकवादी शक्तियाँ, सामाजिक संकीर्णताएँ अपनी पताकाएँ लहरा रही हैं और भारतीय समाज की एकता को कई धर्मों-जातियों और विचारधाराओं की टकराहटों और मुठभेड़ों में तब्दील कर देने पर आमादा हैं, अर्जुनसिंहजी लोकतंत्र के एक समर्पित सिपाही की तरह यह कहते हुए घूम रहे हैं—

"आज भारत में वो निर्णायक दौर शुरू हो गया है। और इसमें निर्णायक भूमिका जनमत की होती है। अगर हमने उस जनमत को ठीक तरह से जागृत नहीं किया, उसे आभास नहीं दिलाया, उसे परिस्थितियों से, मुद्दों से, कार्यक्रमों से, नीतियों से अवगत नहीं कराया तो फिर फ़ैसला तात्कालिक कारणों से हो जाया करते हैं। और इसलिए अब मैं जहाँ-जहाँ भी जा रहा हूँ, मेरी यह कोशिश है कि अपने साथियों से भी और अवाम से उनका रुझान हम एक ओर खींच लें। जिस रास्ते चलकर बीसवीं शताब्दी के अंत होने तक भारत देश का इतिहास एक नई करवट लेगा।"

"एक तो यह कि हमने धीरे-धीरे अपने देश में प्रजातंत्र की जड़ों को गहरा किया इसमें दो राय नहीं है। अब भारत के अन्दर किसी भी व्यक्ति या व्यक्ति के समूह का यह काम आसान नहीं है कि वह हमारे प्रजातंत्र को पूरी तरह से उलट दे, उसमें हेर फेर कर दे या उसको खत्म करने की कोशिश करे। सारा देश खड़ा हो जायगा। कोई भी अधिनायकवादी शक्ति भारतवर्ष में डिक्टेटरशिप नहीं ला सकती।"

साम्प्रदायिक ताकतें जहाँ कहीं भी हैं, जो कुछ भी करने की योजना बना रही हैं, जैसे भी उनके मंसूबे हों, अर्जुनसिंहजी जैसे राजनेताओं की पैनी निगाह उन पर है और व अपने लोगों को, उनकी हिंसक आक्रामकता से बचाने और उनके विरुद्ध विराट भारतीय समाज को लामबंद करने की पहल प्रदर्शित कर रहे हैं।

यह सही है कि इस मोर्चे पर वे अकेले नहीं हैं पर उनकी सक्रियता और बेचैनी देखते हुए यह समझना मुश्किल नहीं है कि उनकी स्मृतियों में गाँधी और नेहरू जैसे महान् पुरुषों की कौंध बराबर बनी रही है और वे इसे जितना दाय के रूप में देखते हैं, उतना ही ऋण-शोध के रूप में भी।

मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि अर्जुनसिंहजी बुनियादी तौर पर लोकतांत्रिक होकर भी शहरी खूबसूरती और औद्योगिक सभ्यता के प्रगतिकामी आदर्शों में एक समन्वय की

खोज निरन्तर करते रहे हैं। ऐसा वे सिर्फ़ इसलिए कर सके कि उन्होंने अपने मानस को हर पल खुला रखा और उसे कभी किसी जड़ दृष्टि के हवाले नहीं होने दिया। कश्मीर मुद्दे पर सोचते हुए उन्होंने मई 1996 की एक चुनावी सभा में कहा — "जिसका ज़हन साफ़ है और ज़हन से मेरा मतलब, जो सोच है, जम्मू-कश्मीर में ही नहीं, सारे हिन्दुस्तान में, हम तभी अपने देश को एक बनाकर रख सकते हैं, जब इस देश में रहने वाले हर व्यक्ति को चाहे वो किसी धर्म को मानने वाला व्यक्ति हो, किसी जाति का हो, देश के किसी कोने में रहता हो, सब अपने को बराबर समझ सकें और देश के अन्दर उसका बराबर का हक़ है, ऐसा उनको विश्वास हो सके।

विश्वास का यह संकट, समकालीन भारत की एकता के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। इसे अगर दूर किया जा सकता है तो यही महसूस कर कि हम सबकी विरासत एक है, बहुत पुरानी हैं, ऋषि-मुनियों की है, पीरों-फ़कीरों, महान् संतों (औलियाओं) की है तो तीर्थकरों पैगम्बरों, गुरुओं और आचार्यों की भी है। यह विरासत निर्गुण की है तो सगुण की भी, सूफ़ियों की है तो सिक्ख गुरुओं की भी। निज़ामुद्दीन औलिया की है, तो बाबा फरीद की भी, जायसी-कबीर की है तो सूर-तुलसी-मीरा की भी। सुदूर दक्षिण के आलवारों की भी है। अगर चैत्यगृहों की है तो मन्दिरों, मस्ज़िदों, गुरुद्वारों, गिरजाघरों की भी है। मंत्रोच्चारों, स्तुतियों की है, तो नमाज़ों और अज़ानों की भी है, भजनों-कीर्तनों की भी है।

यही वह परम्परा है जिसके प्रति किसी भी भारतीय को शायद ही कभी संदेह हो। लेकिन अर्जुनसिंहजी नए भारत की कल्पना करते हुए सिर्फ इस अतीत और उसकी गरिमापूर्ण विरासत का स्तुति गान नहीं करते, उस प्रत्यक्ष वर्तमान की यथार्थ— पुकारों को भी याद रखते हैं जिनके बगैर विरासतें बेमानी हो उठा करती हैं और वह प्रत्यक्ष वर्तमान, वह जन-गण-मन है जिसके भीतर विरासत की एकता का न केवल भाव संचार करता है, बल्कि उसके मन में निरन्तर गहराते जा रहे अविश्वासों, सन्देहों और भयों का निवारण भी करना बेहद ज़रूरी है।

समकालीन भारतीय राजनीति में, अर्जुनसिंहजी संभवतः उन विरले राजनेताओं में हैं जिन्हें इसका बोध है कि भारत के राजनेताओं से लोक समाज की सबसे पहली माँग उस शील की रहा करती है, जिसे इस देश ने राम, युधिष्ठिर और हमारे अपने समय में महानायक गाँधी में अनुभव किया है। इस शील का लेश मात्र भी अगर किसी में है, अगर उसने अपने ही लोगों के बीच विचारों का पाखण्ड और आचारों की अविश्वसनीयता नहीं प्रदर्शित की है तो बड़ी से बड़ी कुर्सी तक पहुँचकर भी वह जनता के विश्वास का पात्र नहीं बन पाता और इसकी कसौटी व्यक्तिगत या निजी जीवन में बहुत भला होने से तो नहीं है। इस देश में व्यक्ति की सज्जनता-असज्जनता, विश्वसनीय-अविश्वसनीय की परीक्षा उन स्थितियों में होती आई है जब परिस्थितियाँ बहुत चुनौतीपूर्ण और समय उलझनपूर्ण रहा है। ऐसे कई सज्जनों,

राजनेताओं को इस भारतीय समाज ने अपने चित्त से इसलिए उतार दिया कि देश के ऐसे कठिन निर्णायक क्षणों में वे अपने असाधारण विवेक और निर्णय-क्षमता का परिचय नहीं दे पाए। अर्जुनसिंहजी ने एक अन्यतम राजनेता की तरह ऐसे अनेक असाधारण निर्णय लिए हैं और वह असामान्य राजनीतिक विवेक प्रदर्शित किया है जिससे इस देश की राजनीति उस सहृदयता, शील और उदात्त मनुष्यता की ओर बढ़ सकी है, जिसकी कामना कोई भी उन्नत समाज करता रहा है। भारत के प्रजातंत्र का इतिहास जब भी इस दृष्टि से लिखा जाएगा, अर्जुनसिंहजी का यह लोक विवेक, उनका 'शील' और उदात्त मानव-बोध बार-बार हमारे ध्यान में आता रहेगा।

अर्जुनसिंहजी अगर केवल सत्ता को ही सबसे परम लक्ष्य मानते तो शायद इस शिखर तक नहीं पहुँच पाते। सत्ता को माध्यम और लोकसेवा को मंजिल मानते हुए उन्होंने अपने बाद आने वाले राजनेताओं को यह संदेश दे दिया है कि शासन करना हो तो लोगों के दिलों पर करना। लोकचित्त ही वह सिंहासन है, जो महान् से महान् सम्राटों को भी नसीब नहीं होता; किन्तु जिसे यह उपलब्ध हो जाता है, महानतम तो सचमुच वही है। अर्जुनसिंहजी की राजनीति इसी लोकचित्त की साधना की राजनीति रही है।

यह अष्टम खण्ड उनके भाषणों, मुलाकातों और विभिन्न पत्रकार-वार्ताओं में व्यक्त विचारों का सम्पादित संकलन है जिसमें राजीव-लोंगोवाल समझौते, नेहरू गाँधी की विरासत, राजीव गांधी के विचारों-भावनाओं की क्रियान्विति के प्रति समर्पण, निष्ठा और राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं के विषय में उनकी चिन्ता स्पष्ट परिलक्षित होती है। राष्ट्र के समग्र विकास की अकुलाहट, समस्याओं के समाधान के प्रति उदार किन्तु स्पष्ट दृष्टिकोण, काँग्रेस संगठन को सशक्त करने-सुधारने की चिन्ता और प्रत्येक भारतीय के स्वाभिमान को बनाये रखते हुए भारत को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित कर उसकी गौर गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखने की वैचारिक दूरदर्शिता साफ़ दिखाई देती है।

राष्ट्र को आज उनके कर्मठ नेतृत्व, गतिशील चिन्तन, विचार और मार्गदर्शन की महती आवश्यकता है। मानव संसाधन विकास मंत्री के रूप में वे सतत समर्पित भाव से इस राष्ट्रीय लक्ष्य को पाने के लिए कार्यरत हैं। उसके लिए हम सभी यह कामना करते हैं कि प्रभु उन्हें स्वस्थ, गतिशील, कर्मठ शतायु जीवन प्रदान करें, जिससे वे राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाते हुए, अनवरत भारत भूमि के गौरव की वृद्धि करें और उन्नत करने में सफलता के कीर्तिमान स्थापित कर भारत के विकास के इतिहास में अपने स्वर्णिम कार्यकाल को अमरत्व प्रदान कर सकें।

राजीव-लोंगोवाल समझौते के सूत्रधार

पंजाब लंबे अरसे से जल रहा था। विभाजन की विभीषिका के बाद से सिख समुदाय के कुछ नेताओं में यह भावना प्रबल होने लगी थी कि पंजाब में हिन्दुओं के कारण सिख धर्म खतरे में पड़ सकता है। इन नेताओं ने यह प्रचार किया कि सिख धर्म कमजोर पड़ता जा रहा है, और इसका कारण उन्होंने आर्य समाजियों को बताया। इस प्रचार ने अपना रंग दिखाया, कट्टर-पंथी सिख नेताओं की तूती बोलने लगी। मास्टर तारासिंह कट्टर-पंथ की राह पर थे। वे देश में सिखों के लिए 'पंजाब' को सुरक्षित स्थान देने का नारा दे रहे थे। वे समुदाय में असुरक्षा की भावना को बढ़ावा दे रहे थे। पंजाब में भाषा व बोली भी हिन्दुओं व सिखों के बीच संघर्ष को बढ़ा रही थी। हिन्दू, पंजाबी को बोली के रूप में स्वीकार तो करते थे, किंतु लिपि देवनागरी ही रखने के समर्थक थे। जबकि सिख गुरमुखी लिपि के पक्षधर थे। कट्टर-पंथी, शिरोमणि अकाली दल के लिए विशेष दर्जे की माँग कर रहे थे जिसका हिन्दू विरोध कर रहे थे। इस तरह पंजाब में अलगाववाद के बीज कट्टरपंथियों ने बो दिए।

प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू परिस्थितियों को समझ चुके थे। उन्होंने इस समस्या को हल करने के लिए कई कदम उठाए, जिसमें सच्चर आयोग का गठन एक महत्त्वपूर्ण कदम था। सच्चर आयोग को पंजाब की समस्याओं के समाधान के उपाय सुझाने का कार्यभार सौंपा गया था। किंतु सच्चर आयोग के सुझाव कोई ठोस हल न निकाल सके। भाषा व अलग सूबे की माँग जस की तस बनी रही। पंजाब को सूबा बनाने की माँग उग्र रूप धारण करने लगी थी। 1956 में अकालियों ने पंजाबी सूबे की माँग को लेकर आँदोलन किया। अकालियों ने जेल भरो आन्दोलन शुरू किए। पूरे सूबे में कट्टर-पंथ की हवा थी। अकालियों के हाथ में सिखों का नेतृत्व था। अब तक अकाली जनता में सहानुभूति भी बटोर चुके थे। सन् 1955-56 का विरोध प्रदर्शन इतना तीव्र था कि कुछ समय बाद तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भीमसेन सच्चर को हटा कर श्री प्रतापसिंह कैरों को मुख्यमंत्री बनाया गया। पंजाब की समस्या के विभिन्न पहलुओं को जोड़ें तो स्थिति कुछ यूँ थी कि एक ओर उन्मादी कट्टर-पंथी थे, जो संप्रदाय के नाम पर अलगाव चाहते थे, तो दूसरी ओर पंजाब का हिन्दू अपनी पहचान बरकरार रखना चाहता था। सिख राजनीति में एक तबका ऐसा भी था जो उन्मादी कट्टर-पंथियों का गुप-चुप समर्थन कर रहा था। श्री प्रतापसिंह कैरों के समय पंजाब की राजनीति में कई बदलाव आए। आर्य समाजी हिन्दुओं को अपना अस्तित्व संकट में दिखा, सो उन्होंने आन्दोलन की राह पकड़ ली। मास्टर तारासिंह को भी ऐसा लगा कि नेतृत्व उनके हाथ से फिसल रहा है, तो उन्होंने भी दिल्ली सहित विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शन शुरू कर दिए।

पंजाब में राज्य व सिख समुदाय के बीच संघर्ष खुलकर सामने आने लगा। देश की राजधानी पर भी इसका असर साफ दिखने लगा। कट्टरपंथियों के जोशीले भाषणों से पंजाब में आतंकवाद के बीज अंकुरित होने लगे थे। गुरुद्वारों का उपयोग शह और मात की चालों के लिए किया जाने लगा। सिख समुदाय के नाम पर नेतृत्व सँभालने वालों के अपने एजेण्डे थे, जिसने बाद में आतंकवाद की शक्ल अख्तियार की। पंजाब सूबे की माँग मान ली गई, किंतु पंजाब की राजनीति में अस्थिरता बनी रही। सूबे की माँग ने अपने पैर फैला लिए। अकालियों ने अब स्वायत्तता की माँग शुरू कर दी। इस माँग ने पंजाब की शांति छीन ली। कुछ उन्मादी युवक देश को विभाजित करने की माँग करने लगे। जनरैलसिंह भिंडरावाले ने इन उन्मादी युवकों का नेतृत्व किया।

पंजाब जल उठा। बम विस्फोट और गोलीबारी ने पंजाब में दहशत का माहौल बना दिया। हजारों बेगुनाहों का खून बहाया जा रहा था। आम जनता त्रस्त थी। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति भी इस समस्या के साथ अपने हिसाब चुकता कर लेना

चाहती थी। पाकिस्तान से हथियारों की आवाजाही जारी थी। उग्रवादियों के कैम्प पाकिस्तान में ही लगते थे। कई षड्यंत्र चल रहे थे। पंजाब की राजनीति बंदूक के इर्दगिर्द घूम रही थी।

सन् 1980 में इन सभी गतिविधियों ने जोर पकड़ लिया। एक तरह से आन्दोलन अकालियों के हाथों से निकल पृथकतावादी संगठनों के हाथों में चला गया। आतंकवादी विस्फोटों के जरिए बेकसूर जनता की हत्या करने लगे। आतंकवादियों ने दबाव बनाने के लिए सारे देश में इस तरह के विस्फोट करना शुरू कर दिए। संसद ने कई बार पंजाब के हालात पर चिंता व्यक्त की। उग्रवादी कानून को ताक पर रख अपना काम करते रहे। न्यायपालिका को भी धमकाया जाने लगा। जरनैलसिंह भिण्डरावाले के भड़काऊ बयान जारी थे। अब वह स्वर्णमंदिर से अपनी गतिविधियाँ संचालित करता था। पंजाब में कानून व व्यवस्था की स्थिति चिंताजनक हो गई। तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी जल्द से जल्द समस्या का निपटारा चाहती थी। वे सशक्त राष्ट्रीय नेत्री होने के साथ-साथ, लोकतंत्र को अक्षुण्ण रखने में विश्वास करती थी। वे अकालियों को वार्ता करने के लिए बार-बार न्यौता देती, किंतु यह न्यौते कभी स्वीकारे नहीं गए।

दृढ़ निश्चयी प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने समस्या सुलझाने के लिए सेना की सहायता लेने का मन बना लिया। 2 जून 1984 को पंजाब के आतंकवाद पर काबू पाने के लिए सेना भेज दी गई। श्रीमती इंदिरा गाँधी ने इस दिन देशवासियों के समक्ष सेना भेजने के कारणों का खुलासा किया। सेना ने पवित्र गुरुद्वारों को आतंकवादियों से मुक्त करा दिया। स्वर्ण मंदिर में छिपे आतंकवादियों के विरुद्ध 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' की कार्रवाई की गई। जरनैलसिंह भिण्डरावाले और अमरीकसिंह स्वर्ण मंदिर में मृत पाए गए। कई सैनिकों की जान गई।

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी सैनिक कार्रवाई करने की समर्थक कभी नहीं रहीं। उनकी इच्छा तो मसलों को हमेशा बातचीत द्वारा हल करने की रही। 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' की कार्रवाई का फैसला श्रीमती गाँधी ने दुःखी मन से लिया था। वे नहीं चाहती थीं कि धार्मिक स्थलों पर बंदूक चले।

श्रीमती गाँधी ने संसद में कई बार यह स्पष्ट किया कि कट्टर-पंथियों को हमें रोकना होगा ताकि देश में एकता अक्षुण्ण रहे। श्रीमती गाँधी किसी भी कीमत पर एकता कायम रखना चाहती थी। इसके चलते उन्होंने पंजाब में सैन्य कार्रवाई करने का फैसला लिया।

कट्टर-पंथियों ने इस सैन्य कार्रवाई के खिलाफ काफी प्रचार किया। आतंकवादियों ने बदले की योजना भी बनाई।

31 अक्टूबर 1984 को। सफदरजंग में श्रीमती इंदिरा गाँधी की उनके ही निवास पर नृशंस हत्या कर दी गई। उनके अंगरक्षकों—सब- इंस्पेक्टर सतवंतसिंह और सिपाही बेअंतसिंह ने श्रीमती गाँधी को गोलियों से भून दिया।

देश में दंगे भड़क उठे। बेकसूर सिख समुदाय के लोगों पर दंगाइयों ने हमला किया। एक ओर जहाँ देश अपनी जनप्रिय नेत्री को खोने का गम मना रहा था वहीं दूसरी ओर दंगों ने देश की एकता, अखंडता पर प्रहार किया।

श्रीमती इंदिरा गाँधी के स्वर्गवासी होने के उपरांत श्री राजीव गाँधी विषम परिस्थितियों में देश के प्रधान मंत्री बने। दुःख के क्षणों में भी श्री राजीव गाँधी ने दंगों पर नियंत्रण के लिए सख्ती से कदम उठाए। सिख समुदाय की रक्षा के लिए प्रशासन को निर्देश दिए। दंगा प्रभावित इलाकों का दौरा किया। उन्होंने दंगा प्रभावित लोगों के लिए मुआवजा की घोषणा की। श्री राजीव गाँधी अपने व्यक्तिगत दुःख को भूल देशवासियों के दुःख में शरीक हो गए।

श्रीमती इंदिरा गाँधी की हत्या के तुरन्त बाद देश को एक ऐसे सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता थी जो देश की कमान संभाल सके। और देश के ऊपर मँडराते खतरों को पहचान सके। श्री राजीव गाँधी के आत्मविश्वास से पूर्ण नेतृत्व ने देश को नई राह दिखाई। श्री राजीव गाँधी के पास नवयुवकों के लिए व देश के विकास के लिए एक नया 'विजन' था। श्री गाँधी ने अल्पकाल में देश की समस्याओं को पहचान लिया। उन्होंने धैर्य, विश्वास व दृढ़ निश्चयी स्वभाव के साथ

पंजाब की समस्या पर विचार शुरू किया।

प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी पंजाब की समस्या को एक राजनैतिक समस्या मानते थे। इसलिए वे इसका हल राजनीति के माध्यम से ही मानते थे। उनका स्पष्ट मानना था कि सिख समुदाय के नेताओं को शांति प्रक्रिया में शामिल किए बिना पंजाब में शांति नहीं लाई जा सकती। प्रधानमंत्री राजीव गाँधी पंजाब में शांति चाहते थे। वे कृत संकल्पित थे। प्रधानमंत्री का नजरिया बेहद साफ था— आतंकवादियों से भयाक्रांत पंजाब की जनता में विश्वास पैदा करने के लिए कुशल हाथों में नेतृत्व देना। नेतृत्व ऐसा हो जो दृढ़ इच्छा शक्ति रखे। उन्मादियों का सामना दृढ़ता से करे। जनता की समस्याओं को समझे। उन्हें हल करे और प्रशासन की कमान संभाल सके। राजनीति का जवाब राजनीति से कूटनीति का जवाब कूटनीति से दे सके। नेतृत्व का व्यक्तित्व ऐसा हो जो जनता को अपना सा लगे, सहज हो, सुलभ हो। नेतृत्व ऐसा हो जो समस्या की जड़ को पहचान सके। सौहार्द्र सद्भाव का ऐसा माहौल बना सके जहाँ से समाधान की ओर बढ़ा जा सके।

श्री राजीव गाँधी ने श्री अर्जुनसिंह को इसके लिए चुना। पंजाब की समस्या को हल करने के लिए जिस नेतृत्व की तलाश में वे थे, वह श्री अर्जुनसिंह पर जाकर समाप्त हुई। श्री राजीव गाँधी द्वारा श्री अर्जुनसिंह को पंजाब भेजना, विभिन्न राजनीतिक हलकों में कई मायने रख सकता था, पर प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी व श्री अर्जुनसिंह के लिए यह विशुद्ध रूप से देश की एक गंभीर समस्या को सुलझाने की एक सच्ची कोशिश थी, जो सफल रही।

मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री के रूप में श्री अर्जुनसिंह ने प्रदेश के इतिहास में एक अमिट छाप छोड़ी। वे जनता की संवेदना से सीधे जुड़े थे। कुशल प्रशासन और नेतृत्व के गुणों से उन्होंने जनता की समस्याओं को कम करने का प्रयास किया। जनता ने भी उन्हें स्नेह दिया।

जब श्री राजीव गाँधी के नेतृत्व में लोकसभा चुनाव हुए तो म.प्र. में लोकसभा चुनावों की कमान श्री अर्जुनसिंह ने संभाली। उनके मार्गदर्शन में काँग्रेस 40 स्थानों में से सभी 40 स्थानों पर विजयी रही। इस विजय में न केवल जनता का काँग्रेस के साथ स्नेह परिलक्षित हुआ, बल्कि श्री अर्जुनसिंह के मुख्यमंत्री के रूप में सफलता भी सामने आई। अपने पाँच साल के मुख्यमंत्रित्व काल में श्री अर्जुनसिंह ने सरकार को जनता के द्वार तक पहुँचाने का प्रयास किया। वे जब राज्य के मुख्यमंत्री पहली बार बनाए गए थे तभी उन्होंने अपनी कार्यप्रणाली व मंशा साफ कर दी थी। उन्होंने कहा था "सरकार का शिखर और मापदण्ड दोनों ही आम आदमी व सर्वहारा के लिए होगा। मैं आश्वस्त हूँ कि इसके लिए उसके हित में हम जितनी जल्दी और जितना अधिक काम कर पाएँगे, वही हमारी सफलता और सार्थकता की कसौटी होगी। जो अपने अधिकार के लिए लड़ नहीं सकता, उसके अधिकार सुरक्षित रहें, इसकी जिम्मेवारी हम पर है।"

उपरोक्त उद्धरण से यह साफ है कि श्री अर्जुनसिंह किस तरह की शासन व्यवस्था के पक्षधर थे। वे आम आदमी के दुःख दर्द को बाँटने के लिए सदा तत्पर रहे। चाहे वे मंत्री या मुख्यमंत्री रहे हों या विपक्ष में रहे हों उनके जेहन में गरीब और शोषितों का कल्याण सर्वोपरि रहा। गरीबों के लिए झुग्गी-झोपड़ियों में मुफ्त बिजली दी गई, ताकि उनकी अँधेरी रातें प्रकाशमय हो सकें। गरीबों को पट्टे दिए गए ताकि उनकी झोपड़ियों को कोई हटा न सके। शहर के गरीबों के लिए स्वरोजगार प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई। साइकिल रिक्शा चालकों को रिक्शा का मालिकाना हक दिया गया। भ्रष्टाचार निवारण के लिए उन्होंने लोकायुक्त की व्यवस्था की।

श्री अर्जुनसिंह ने अपने पाँच साल के कार्यकाल में एक बड़ी मुहिम 'बिचौलियों' को खत्म करने के लिए चलाई। उनका मानना था कि आदिवासी व पिछड़े तबके के लोगों का शोषण बिचौलिए करते हैं। उन्होंने वनोपज व आदिवासियों द्वारा संग्रहित, निर्मित अन्य सामग्रियों के विक्रय की सीधी व्यवस्था की, ताकि आदिवासियों को बिचौलियों के शोषण से

मुक्ति मिल सके। वर्ष 1980 से 1985 तक के अपने कार्यकाल में श्री अर्जुनसिंह ने गरीब तबके के उत्थान के लिए हर संभव प्रयास किए।

श्री अर्जुनसिंह का शासन सदा उसकी संवेदनशीलता के लिए जाना जाता रहेगा। यह संवेदनशीलता; संस्कृति, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, कला के संरक्षण के लिए उनके द्वारा उठाए कदमों से स्पष्ट होती है। प्रदेश में अल्पसंख्यकों के हितों के लिए उन्होंने तत्परता से काम किया। प्रदेश में उन्होंने एक संवेदनशील सरकार की स्थापना का प्रयास किया। जब कभी आम नागरिक पोस्टकार्ड पर अपनी समस्याओं से मुख्यमंत्री को अवगत कराता, तो वे तुरंत समाधान करते। स्वयं आदेश जारी करते, अधिकारियों से रिपोर्ट माँगते।

श्री अर्जुनसिंह ने मुख्यमंत्री के रूप में जो कार्य किए उन्हें जनता ने सराहा और अपना स्नेह दिया। यह जनता का स्नेह ही था कि जब नई विधान सभा हेतु चुनाव हुए तो श्री अर्जुनसिंह के नेतृत्व को और अधिक ताकत प्रदान करते हुए अधिक विधान सभा सीटें दी गई।

मार्च 1985 में म.प्र. में 8वीं विधान सभा हेतु चुनाव हुए। अपनी पाँच वर्षों की सेवा के बाद मुख्यमंत्री श्री अर्जुन सिंह जनता का निर्णय सुनने के लिए पुन: उनके पास गए। 2 मार्च 1985 को विधान सभा के लिए मतदान सम्पन्न हुआ। इस दिन लगभग 2 करोड़ 90 लाख लोगों ने मतदान किया। श्री अर्जुनसिंह सीधी जिले के चुरहट विधान सभा क्षेत्र से चुनाव में खड़े हुए। म.प्र. में सबसे अधिक वोट चुरहट में डाले गए। म.प्र. चुनाव कार्यालय ने सूचना दी कि चुरहट में लगभग 70 प्रतिशत मतदान हुआ। इसके विपरीत संपूर्ण जिले में मात्र 40 प्रतिशत मतदान संभव हो सका। चुरहट की जनता में गजब का उत्साह था। चुनाव के समय श्री अर्जुनसिंह अपने विधान सभा क्षेत्र में न होकर भोपाल में थे। उन्हें किसी कार्यवश भोपाल में रुकना पड़ा था।

सात मार्च को प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला हो गया। चुनाव परिणाम घोषित किए गए। श्री अर्जुनसिंह के नेतृत्व में काँग्रेस ने परचम लहराया। 320 सीटों में से 250 पर काँग्रेस विजयी रही। यह काँग्रेस की ऐतिहासिक विजय थी। इस चुनाव ने सिद्ध किया कि जनता को नेतृत्व पर पूरा भरोसा है। 1980 के चुनाव में काँग्रेस को 246 सीटें मिली थी। 1985 के चुनाव में काँग्रेस ने 4 और सीटों पर बढ़त ले ली। श्री अर्जुनसिंह चुरहट से भारी मतों से जीते। 8वीं विधान सभा में एक बार फिर काँग्रेस का बहुमत स्थापित हुआ।

लोकसभा व बाद में विधान सभा चुनावों में काँग्रेस की विजय श्री राजीव गाँधी व श्री अर्जुनसिंह के नेतृत्व में जनता की आस्था की परिचायक थी। श्री अर्जुनसिंह ने विधान सभा चुनावों में काँग्रेस की शानदार विजय पर जनता को कोटिश: धन्यवाद दिया। उन्होंने चुनावों में मिली इस विजय को श्री राजीव गाँधी के नेतृत्व में जनता की आस्था का परिणाम बताया। श्री अर्जुनसिंह की सदा ही यह इच्छा रही कि प्रदेश प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे। चुनाव परिणामों के बाद जनता को धन्यवाद देते हुए उन्होंने कहा था कि उनकी इच्छा स्वर्गीय इंदिरा गाँधी के सपनों को पूरा करते हुए प्रदेश को एक आधुनिक राज्य बनाने की है। श्री अर्जुनसिंह काँग्रेस कार्यकर्ताओं व अपने सहयोगियों पर सदा इस बात के लिए दबाव बनाते रहे कि वह पिछड़ी जनता के हितार्थ कड़ी मेहनत करें।

प्रदेश का राजनैतिक माहौल गर्म था। रविवार 10 मार्च 1985 को श्री अर्जुनसिंह को काँग्रेस विधायक दल का नेता पुन: चुन लिया गया। इस चयन के साथ ही श्री अर्जुनसिंह ने प्रदेश के तब तक के इतिहास में नया अध्याय जोड़ दिया। वे प्रदेश के पहले ऐसे नेता हो गए जिन्हें लगातार दूसरी बार सदन का नेता चुना गया।

उपमुख्यमंत्री श्री शिवभानु सोलंकी ने श्री अर्जुनसिंह के नाम का प्रस्ताव रखा और शालेय शिक्षामंत्री श्री बंशीलाल व श्री चित्रकांत जायसवाल ने इसका अनुमोदन किया। श्री अर्जुनसिंह का चयन निर्विरोध था।

उनके चयन में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व पिछड़े वर्ग के नेताओं की अहम भूमिका रही। चयन हेतु प्रस्ताव रखने से लेकर अनुमोदन तक का कार्य इन्हीं वर्गों के नेताओं ने संभाला। श्री अर्जुनसिंह का पिछड़े व दलित नेताओं के प्रति सदा विशेष अनुराग रहा। अपने पिछले कार्यकाल में भी उन्होंने इन वर्गों के कल्याण के लिए विशेष योजनाएँ संचालित की थीं। पिछड़े व दलित नेताओं का भी श्री अर्जुनसिंह से विशेष लगाव था।

चयन प्रक्रिया के समय केन्द्रीय पर्यवेक्षक श्री सीताराम केसरी व प्रदेश काँग्रेस अध्यक्ष श्री मोतीलाल वोरा उपस्थित थे। श्री सीताराम केसरी का इस मौके पर दिया गया वक्तव्य प्रदेश के प्रतिनिधियों में उनकी लोकप्रियता को स्पष्ट करता है। श्री केसरी शनिवार की रात को प्रदेश के 240 विधायकों से मिले। सभी विधायकों ने सर्वसम्मति से श्री अर्जुनसिंह को अपना नेता चुना।

श्री अर्जुनसिंह का दोबारा प्रदेश का मुख्यमंत्री बनना एक और दृष्टिकोण से ऐतिहासिक था। श्री अर्जुनसिंह स्वर्गीय डॉ. कैलाशनाथ काटजू के बाद पहले ऐसे मुख्य मंत्री थे, जिन्होंने अपना कार्यकाल पूरा किया। 8वीं विधान सभा के नेता के रूप में भी केन्द्रीय नेतृत्व ने सारी जिम्मेदारी विधायकों के हाथों में ही रखी।

श्री अर्जुनसिंह ने एक बार फिर प्रदेश की कमान संभाल ली। मुख्यमंत्री को मंत्रिमंडल का गठन करना शेष था। 12 मार्च 1985 को श्री अर्जुनसिंह मंत्रिमंडल गठन के लिए आवश्यक मशविरा करने दिल्ली गए। वे प्रधानमंत्री राजीव गाँधी से मिलने पहुँचे। श्री अर्जुनसिंह को तब तक यह आभास नहीं था कि उन्हें एक नई चुनौती भरी जिम्मेवारी सौंपी जा रही है। प्रधानमंत्री ने श्री अर्जुनसिंह को पंजाब के राज्यपाल पद संभालने हेतु कहा। श्री अर्जुनसिंह ने त्वरित निर्णय लिया और प्रधानमंत्री के आदेश का पालन किया और राज्यपाल पद हेतु सहमति व्यक्त कर दी।

जब श्री राजीव गाँधी की पेशकश पर श्री अर्जुनसिंह ने अपनी स्वीकृति दी तो श्री राजीव गाँधी ने राष्ट्रपति को, जो वाराणसी में थे, टेलीफोन से इस बारे में सूचित कर दिया। तदुपरांत एक संदेश वाहक फाइल लेकर विमान से वहाँ गया। राष्ट्रपति के हस्ताक्षर हो जाने के बाद सायंकाल श्री अर्जुनसिंह को राज्यपाल बनाने की घोषणा कर दी गई। श्री अर्जुन सिंह की पंजाब के राज्यपाल पद पर नियुक्ति की घोषणा तत्कालीन गृहमंत्री एस.बी. चव्हाण ने की। किंतु इस निर्णय की खबर काँग्रेस पार्टी, विपक्ष व मीडिया वालों को पहले ही पहुँच गई। प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के इस निर्णय से सभी आश्चर्यचकित थे। प्रधानमंत्री के इस निर्णय की व्यवस्था कठिन थी। पर श्री अर्जुनसिंह सदा की तरह आत्मविश्वास से भरे थे। अखबारनवीसों ने श्री राजीव गाँधी के इस निर्णय पर श्री अर्जुनसिंह की राय जाननी चाही। श्री अर्जुनसिंह ने कहा "मेरी नियुक्ति प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी का विशेषाधिकार है, मैं पार्टी का अनुशासनबद्ध सिपाही हूँ। पार्टी मुझसे जो भी काम लेना चाहती है उसे मैं सहर्ष करूँगा।"

पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू था। पंजाब की समस्या बेहद जटिल थी। राज्यपाल का पद काँटों का ताज था। पिछले तीन वर्षों में पंजाब में चार राज्यपालों की नियुक्ति की जा चुकी थी। डा. चेन्ना रेड्डी, श्री ए.पी. शर्मा, श्री विष्णु पाँडे तथा श्री सत्तारवाला बदले जा चुके थे। ये सभी समस्या सुलझाने में नाकाम रहे थे। तीन वर्षों के अल्पकाल में पाँचवें राज्यपाल के रूप में श्री अर्जुनसिंह के हाथों में पंजाब की बागडोर सौंप दी गई। श्री अर्जुनसिंह की नियुक्ति पर प्रसिद्ध विश्लेषक श्री कुलदीप नैयर ने नई दुनिया, इंदौर, के 21 मार्च 1985 के अंक में लिखाः "एक शीर्षस्थ राजनीतिज्ञ को प्रशासक के स्थान पर नियुक्त कर देने से पंजाब में राजनीतिक समाधान खोजने में मदद मिल सकती है। मेरी यह धारणा है कि प्रधान मंत्री उन समस्याओं को सुलझाने के प्रति गंभीर हैं, जो सिख समस्याओं के साथ जुड़ गई हैं। अब पंजाब में सलाहकार आर.वी. सुब्रह्मण्यम पृष्ठभूमि में पड़ जाएँगे, जो अभी तक केन्द्र की ओर से अकेले ही इस मामले को सुलझाने के लिए सक्रिय थे और उन्होंने उस समय संत हरचंदसिंह लोंगोवाल से भेंट की थी। जब श्री लोंगोवाल नजरबंद

थे। श्री अर्जुनसिंह अपने उद्देश्यों के प्रति पूर्णत: सजग है और वह भी कतिपय सिख नेताओं की तुलना में इस समस्या को सुलझाने के प्रति कम गंभीर नहीं है।"

उन्होंने एक और जगह अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा था— "अकालियों को याद रखना चाहिए कि भारत के लोगों ने काँग्रेस के पक्ष में प्रचण्ड मतदान करके अकालियों द्वारा उग्रवादियों के प्रति अपनाए गए ढुलमुल रवैये के प्रति भी अपना फैसला दिया है। श्री अर्जुनसिंहजी उनसे वार्ता करेंगे, वे कोई ऐसे राजनीतिज्ञ नहीं है कि जो पराजित हुए हों अथवा जनता द्वारा ठुकरा दिए गए हों, और जिन्हें आँसू पोंछने के लिए राज्यपाल बना दिया गया हो। वस्तुत: श्री अर्जुनसिंह ने अपने राज्य में दम-खम का परिचय दिया है और उसी के कारण राज्य विधान सभा में काँग्रेस को तीन-चौथाई बहुमत प्राप्त हुआ है।"

श्री अर्जुनसिंह को राज्यपाल बनाए जाने पर देश भर में प्रतिक्रियाएँ हुई। इसके दो प्रमुख कारण थे— पहला तो यह कि एक मुख्यमंत्री को आखिर क्यों पंजाब भेजा गया। दूसरा यह कि पंजाब के राज्यपाल का पद बेहद चुनौती भरा दायित्व था। देश भर के अखबारों में श्री अर्जुनसिंह को पंजाब का राज्यपाल बनाने पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की गई। कुछ अखबारों ने लिखा हिन्दुस्तान के राजनीतिक इतिहास में मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंह ने एक नया पृष्ठ जोड़ा है। ये कीर्तिमान दूसरे कार्यकाल में सबसे कम समय मुख्यमंत्री पद पर रहना है। पद ग्रहण करने के चौबीस घंटे के अंदर ही उन्हें पद छोड़कर दूसरा चुनौती भरा पद दिया गया।

द टेलीग्राफ (कलकत्ता) ने लिखा "श्री अर्जुनसिंह का कहना है कि वे प्रधानमंत्री के निर्णय को अपना व प्रदेश की विधान सभा के निर्णय का अपमान नहीं मानते। वे इस बात पर अपने आपको भाग्यशाली मानते हैं कि प्रधान मंत्री ने उनकी क्षमता एवं प्रशासनिक कुशलता पर विश्वास व्यक्त किया। श्री अर्जुनसिंह का कहना है कि मेरा प्रमुख कार्य अकाली व सरकार के बीच वार्ता का द्वार खोलना होगा, जो एक महत्त्वपूर्ण और कठिन चुनौती है, जिसे मैं सहर्ष कबूल करता हूँ।"

नवभारत टाइम्स (दिल्ली) ने लिखा कि 'श्री अर्जुनसिंह को पंजाब के राज्यपाल पद पर भेजने का फैसला यदि राजीव गाँधी एक दो दिन पहले ले लेते तो बहुत बेहतर होता। विधायकों की मेहनत तब इतनी जल्दी बेकार नहीं जाती।... के.टी. सत्तारवाला की बजाय श्री अर्जुनसिंह को पंजाब का राज्यपाल बनाकर यह कोशिश की जा रही है कि पंजाब के मसले को कानून व व्यवस्था के धरातल से उठाकर राजनीति के धरातल पर ले जाया जाए।'

अँग्रेजी दैनिक नेशनल हेराल्ड (दिल्ली) ने अपने संपादकीय से राजीव गाँधी की उक्त पहल का स्वागत करते हुए लिखा — "श्री अर्जुनसिंह की नियुक्ति केन्द्र सरकार व प्रधान मंत्री की पंजाब समस्या के तत्काल हल की दिशा में एक सुखद पहल है। अकालियों की रिहाई के बाद पंजाब के राज्यपाल पद पर श्री अर्जुनसिंह की नियुक्ति केन्द्र सरकार की समस्या हल करने की दूसरी पहल है। पत्र में आशा व्यक्त की गई की श्री अर्जुनसिंह समस्या के हल की दिशा में अपने आपको नौसिखिया नहीं मानेंगे। यद्यपि श्री अर्जुनसिंह के लिए यह एक कठिन व महत्त्वपूर्ण चुनौती है, किंतु यदि अर्जुन सिंह इसमें सफल होते हैं तो वे देश के एक श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ माने जाएँगे।"

नव भारत (जबलपुर) ने अपने संपादकीय में लिखा कि "श्री सिंह की नई नियुक्ति चुनौतियों से भरपूर है, फिर भी एक मंजे हुये प्रशासक के रूप में श्री सिंह उनका सफलतापूर्वक सामना कर सकेंगे। ऐसी आशा कुछ गलत नहीं होगी।"

नवीन दुनिया (जबलपुर) ने अपने अग्रलेख में लिखा कि पंजाब की समस्या हल करने की दिशा में प्रधानमंत्री द्वारा उठाए गए कदमों में सैन्य राज्यपाल के विकल्प के रूप में एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं प्रशासक श्री अर्जुनसिंह का चयन वास्तव में एक प्रशंसनीय बात है। श्री अर्जुनसिंह ने अपनी कुशलता व व्यवहार की स्थाई छाप छोड़ी है।

श्री अर्जुनसिंह अपने प्रयासों में अवश्य सफल होंगे।

मराठी दैनिक मराठवाड़ा (औरंगाबाद) ने अपने संपादकीय में लिखा कि यद्यपि श्री अर्जुनसिंह ने पंजाब समस्या के हल के संदर्भ में आज तक कोई भूमिका अदा नहीं की, किंतु उनकी प्रशासनिक क्षमताओं को दृष्टिगत रखते हुए ही प्रधान मंत्री ने उन्हें यह महती जिम्मेवारी सौंपी है। श्री अर्जुनसिंह अपनी प्रशासनिक क्षमता का समस्याओं को सुलझाने में कहाँ तक परिचय देते है, यह तो समय ही बताएगा।

अखबारों के उपरोक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि पंजाब की समस्या बेहद जटिल थी, और उसका समाधान केवल कुशल राजनीतिज्ञ व प्रशासक ही कर सकता था। श्री अर्जुनसिंह की नियुक्ति ने देश भर में आशा की एक किरण पैदा की। उनकी नियुक्ति के साथ ही सारे देश की जनता की आस उन पर टिक गई।

पंजाब में राष्ट्रीय एकता व अखंडता के साथ बहुत कुछ दाँव पर लगा था। पंजाब की समस्या बहुत बड़ी कीमत ले चुकी थी, राष्ट्र और अधिक कीमत देने को तैयार नहीं था। राष्ट्र की इस भावना को केन्द्रीय नेतृत्व समझता था। श्री अर्जुनसिंह की नियुक्ति इसी भावना को ध्यान में रखकर की गई थी। श्री अर्जुनसिंह की नियुक्ति एक और दृष्टिकोण से इतिहास में दर्ज करने योग्य है।

डॉ. शंकरदयाल शर्मा के बाद श्री अर्जुनसिंह म.प्र. के दूसरे ऐसे राजनीतिज्ञ थे, जिनकी नियुक्ति संकटग्रस्त राज्य के गवर्नर के पद पर हुई। संकटग्रस्त राज्य का नेतृत्व संभालना अपनी कुशलताओं व क्षमताओं की अग्नि परीक्षा देना होता है। संकटग्रस्त राज्य की बागडोर सौंपने के पूर्व केन्द्रीय नेतृत्व गहन विचार करता है। जिस व्यक्ति को नेतृत्व सौंपा जाना है, उसके कार्यों, उसकी क्षमताओं व अनुभव का बार-बार आकलन किया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो आपदाग्रस्त राज्य को संभालना, हरदम परीक्षा देते रहना व उसमें सफल होते रहना है। बिरले ही नेता ऐसे होते हैं जो परीक्षाओं में सफल रहते हैं। पर श्री अर्जुनसिंह हर कष्ट साध्य परीक्षा में सफल रहे।

पहली बार एक कुशल राजनेता को पंजाब के इस पेचीदा मसले को सुलझाने के लिए चुना गया। राज्यपाल पद स्वीकार करने के बाद श्री अर्जुनसिंह ने टिप्पणी की थी "प्रधान मंत्री ने मेरे प्रति जो विश्वास व्यक्त किया है, उस पर मुझे गर्व है। मैं राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को अच्छी तरह निभाऊँगा।" इस टिप्पणी का वृहद परिप्रेक्ष्य में महत्त्व है और इसके कई पहलू थे। एक पहलू यह था कि प्रधानमंत्री का पूर्ण विश्वास था कि श्री अर्जुनसिंह समस्या सुलझा लेंगे। दूसरी ओर प्रधानमंत्री द्वारा नई जिम्मेदारी व विश्वास व्यक्त करने पर श्री अर्जुनसिंह को गर्व था। राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को निभाने के लिए दृढ़ संकल्पित होना किसी भी समस्या को सुलझाने के लिए स्वतः स्फूर्ति का काम करता है। श्री अर्जुनसिंह स्वतः स्फूर्ति से भरे थे। निःसंदेह प्रधान मंत्री ने श्री अर्जुनसिंह को एक चुनौती भरा कार्य सौंपा था। और सबसे मुश्किल कार्य उसे ही सौंपा जाता है, जिसकी कार्यक्षमता व योग्यता में विश्वास होता है।

श्री अर्जुनसिंह के राज्यपाल पद पर नियुक्ति के साथ ही मध्य प्रदेश की राजनीति में कई परिवर्तन हुए। श्री अर्जुनसिंह जब दिल्ली में प्रधानमंत्री से विचार-विमर्श कर रहे थे, तभी श्री मोतीलाल वोरा को विशेष विमान से दिल्ली बुलाया गया। प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी, श्री अर्जुनसिंह व श्री मोतीलाल वोरा के बीच मध्यप्रदेश की राजनीति पर गहन चर्चा हुई। 14 मार्च को श्री अर्जुनसिंह व श्री मोतीलाल वोरा साथ-साथ वापिस लौटे। श्री सिंह के स्थान पर श्री मोतीलाल वोरा को नेता चुन लिया गया। इसके पूर्व मोतीलाल वोरा प्रदेश काँग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे चुके थे। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में श्री मोतीलाल वोरा ने सात सदस्यीय मंत्रिमण्डल के साथ शपथ ली। 14 मार्च को मुख्यमंत्री पद का कार्यभार संभालते ही मोतीलाल वोरा ने कहा कि "स्वर्गीय इंदिरा गाँधी के निर्देशन में जिन नीतियों को श्री अर्जुनसिंह ने क्रियान्वित किया उससे राज्य विकास के पथ पर अग्रसर है। जनता के पहले सेवक के रूप में

श्री अर्जुनसिंह ने गरीब व शोषितों की जो सेवा की है वह हमारे लिए मार्ग दर्शक है।" मुख्यमंत्री के रूप में श्री वोरा ने कहा "पंजाब की समस्या सुलझाने के लिए श्री अर्जुनसिंह के चुनाव का श्रेय उनकी योग्यता को जाता है। उनकी इस नियुक्ति से प्रदेश भी गौरवान्वित महसूस कर रहा है"। श्री मोतीलाल वोरा ने अपने विभिन्न भाषणों में श्री अर्जुनसिंह को 'कर्मयोगी' माना। 'कर्मयोगी' की योग्यता में संपूर्ण प्रदेश को विश्वास था। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोतीलाल वोरा हो अथवा राज्यपाल श्री के.एम. चण्डी सभी को श्री अर्जुनसिंह की पंजाब नियुक्ति के बाद यह विश्वास हो गया था कि अब पंजाब समस्या का हल दूर नहीं है।

प्रदेश के राज्यपाल श्री के.एम. चण्डी ने श्री अर्जुनसिंह के कार्यकाल की प्रशंसा करते हुए कहा था "एक मुख्यमंत्री के रूप मे उन्होंने जो मूल्यवान सहयोग मेरे साथ किया, उसके लिए मैं आभारी रहूँगा। राज्यपाल ने श्री अर्जुनसिंह को एक पत्र लिख कर कहा, "आपकी सेवाओं को मध्यप्रदेश सदा याद करता रखेगा"।

श्री अर्जुनसिंह की नर्मदा की घाटियों एवं विहंगम् की पहाड़ियों से एकाएक विदाई और पंजाब के रावी, व्यास के मैदानों एवं शैवालिक पहाड़ियों में प्रवास सभी के लिए प्रश्नों का भँवर बना हुआ था। चाहे संसद का केन्द्रीय हाल हो या फिर अखबारनवीसों के स्थाई ठिकाने, सभी जगहों पर पूर्व मुख्यमंत्री को लेकर चर्चे होते रहते थे। दिल्ली के राजनीतिक एवं गैर-राजनीतिक क्षेत्रों में पहली बार श्री अर्जुनसिंह के बारे में इतनी भिन्नता वाली टिप्पणियाँ सुनने को मिल रहीं थीं। अटकलें जोरों पर थी। घटनाओं की कई कोणों से व्याख्याएँ की जा रही थीं।

कानाफूसी शैली में यह प्रचारित किया जा रहा था कि श्री अर्जुनसिंह को हटाया जाना चुनावों से पहले तय हो चुका था। सिर्फ माकूल समय का इंतजार था। कुछ कह रहे थे प्रधान मंत्री ने यह निर्णय श्री अर्जुनसिंह के खिलाफ मिली शिकायतों के आधार पर लिया है। खबरों को बुनने वाले कुछ लोग यह प्रश्न जोर-शोर से उठा रहे थे कि आखिर श्री अर्जुनसिंह को मुख्यमंत्री चुने जाने के बाद राज्यपाल बनाया गया, इसके पीछे क्या राज़ है। कुछ की व्याख्याएँ बड़ी अज़ीबो-गरीब थीं। भाई लोग श्री अर्जुनसिंह को झोपड़ पट्टी, रिक्शा चालकों, आरक्षण आदि के मामलों में प्रदेश में वर्ग संघर्ष का सूत्रधार घोषित कर रहे थे। इस नियुक्ति को वे श्री सिंह के लिए दण्ड मानकर चल रहे थे।

एक समय ऐसा भी आया जब ऐसी खबरों व अटकलों की बाढ़ आ गई। भ्रामक खबरों की भरमार हो जाने पर कॉंग्रेस हाईकमान ने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी। इस स्पष्टीकरण ने सभी अटकलों पर विराम लगा दिया। इस स्पष्टीकरण ने यह सिद्ध कर दिया कि श्री राजीव गाँधी पँजाब समस्या को हल करने के लिए कृत-संकल्पित थे। हाईकमान द्वारा दिए वक्तव्य से यह बात भी साफ हो गई कि आखिर एक नवनियुक्त मुख्यमंत्री की ही नियुक्ति पंजाब में क्यों की गई?

श्री अर्जुनसिंह से बार-बार यह प्रश्न पूछा जा रहा था कि उनकी नियुक्ति का उद्देश्य क्या है? प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी द्वारा निर्वाचित मुख्यमंत्री को पंजाब भेजने के निर्णय की भी इस आधार पर आलोचना की जा रही थी कि यह निर्णय श्री अर्जुनसिंह के शपथ-ग्रहण के पूर्व भी लिया जा सकता था। इस प्रकार के तमाम प्रश्नों व श्री अर्जुनसिंह को पंजाब के राज्यपाल बनाए जाने के केन्द्र के विस्मयकारी निर्णय से व्याप्त विभिन्न प्रकार की चर्चाओं पर इंका हाईकमान ने स्पष्ट किया कि "श्री अर्जुनसिंह की नियुक्ति एक विशिष्ट प्रंकरण है। प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी पंजाब का राज्यपाल किसी वरिष्ठतम राजनीतिज्ञ को बनाना चाहते थे। इंका हाईकमान की नजरों में श्री अर्जुन सिंह एक बहुत अनुभवी एवं चतुर राजनीतिज्ञ हैं और वही पंजाब के उक्त अत्यधिक महत्त्व के पद के लिए सर्वोत्तम व्यक्ति पाए गए। इसलिए पार्टी ने उक्त निर्णय लिया।"

श्री अर्जुनसिंह द्वारा म.प्र. के मुख्यमंत्री पद का भार ग्रहण करने के मात्र 24 घण्टे के बाद उन्हें पद से हटाकर पंजाब भेजने की आलोचना के जवाब में पार्टी हाईकमान ने स्पष्ट किया कि प्रधान मंत्री ने उक्त निर्णय के बारे में पहले

से अपना मन बना लिया था। लेकिन राज्य में चुनाव अभियान के मार्गदर्शन के लिए श्री अर्जुनसिंह को राज्य में बने रहने दिया गया। साथ ही चुनाव परिणामों के आने और श्री अर्जुन सिंह के पुनः मुख्यमंत्री बनने तक प्रधान मंत्री द्वारा इंतजार करने के पीछे यह बात थी कि पंजाब में ऐसे राजनीतिज्ञ को भेजने की भावना न उभरे जो पिटे हुए राजनीतिज्ञ के पद ग्रहण करने पर उभरती है। इसी कारण श्री अर्जुनसिंह के एक प्रभावशाली सशक्त व राजनीतिज्ञ के रूप में स्पष्ट रूप से उभरने के बाद उन्हें पंजाब भेजने का निर्णय लिया गया।

चण्डीगढ़ में श्री अर्जुनसिंह के आगमन को गंभीरता से लिया गया। पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू था। अतएव श्री अर्जुनसिंह की राज्यपाल की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण हो गई थी। उनके आने के साथ ही सभी ओर उम्मीदें पैदा हुई, और लोगों को लगने लगा कि अब पंजाब समस्या के हल के लिए कारगर कोशिशें होंगी।

श्री अर्जुनसिंह की राज्यपाल पद पर नियुक्ति की घोषणा के दूसरे ही दिन वे पंजाब पहुँच गए। श्री अर्जुनसिंह ने पंजाब पहुँचते ही अपनी छाप छोड़ी। राज्यपाल पद की शपथ उन्होंने पंजाबी में ली। वे जब पत्रकारों से मिले तो ऐसा आभास भी दिया कि समस्या की जड़ से वे वाकिफ़ हैं और पंजाब समस्या की पृष्ठभूमि भी जानतें हैं। पंजाब के मीडिया ने श्री अर्जुनसिंह का स्वागत किया। पंजाब में समस्या पर काबू पाने के लिए राज्यपाल बदले जा रहे थे, किंतु हालात जस के तस बने हुए थे। श्री जयसुखलाल के बाद श्री अमीनुद्दीन खाँ, और इसके बाद डॉ. चेन्ना रेड्डी आए। श्री अनंत प्रसाद शर्मा, श्री बी.डी. शर्मा व श्री के.टी. सत्तारवाला के कार्यकाल में पंजाब समस्या ज्यों की त्यों रही। दो अफसर राज्यपालों के बाद एक राजनीतिज्ञ नेता को भेजा गया। जिसका काँग्रेस और प्रशासनिक क्षेत्र में प्रभाव था। जो लोकसभा और विधान सभा चुनावों में भी सफल रहे। श्री अर्जुनसिंह द्वारा राज्यपाल पद ग्रहण करने के बाद पंजाब के राजनीतिक क्षेत्र में यह माना जाने लगा कि उन्हें यहाँ भेजा जाना पंजाब के मसले को क्रमशः निर्णायक स्थिति तक ले जाने और सामान्य हालात कायम करने की दिशा में सोचा समझा कदम है। यह धारणा इसलिए भी पुष्ट हुई कि श्री सिंह की नियुक्ति के दिन पहले ही कई प्रमुख अकाली नेता भी रिहा कर दिए गए थे।

श्री अर्जुनसिंह द्वारा पदभार ग्रहण करने के वक्त भी स्थिति जटिल ही थी, क्योंकि अकाली नेता ऐसे हालात बनाने को तैयार नहीं थे, जिससे बातचीत द्वारा समस्या के हल का और वर्तमान गतिरोध समाप्त करने का रास्ता जल्दी खुल सके। अकालियों की ओर से शर्तें थीं कि आनंदपुर साहिब प्रस्ताव को ही बातचीत का आधार बनाया जाए। श्रीमती इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद हुई हिंसा की घटनाओं की न्यायिक जाँच हो। अखिल भारतीय सिख स्टूडेंट फेडरेशन पर से पाबंदी हटाई जाए। जो लोग फौजी कार्रवाई में मारे गए हैं, उन्हें और दंगा पीड़ितों को मुआवजा दिया जाए। अकाली हर समस्या के लिए सरकार को ही दोषी ठहराते थे।

ऐसी परिस्थितियों में श्री अर्जुनसिंह पर बड़ी नाजुक और महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी थी। अब तक जो भी अफसर राज्यपाल बन कर पंजाब में आए थे उनका मुख्य ज़ोर और ध्यान कानून व्यवस्था कायम करने पर था। किन्तु श्री अर्जुन सिंह ने राज्यपाल के रूप में पहली बात यही कही कि कानून और व्यवस्था कोई समस्या नहीं है। यह तो सरकार की बुनियादी जिम्मेदारी और फ़र्ज है। श्री अर्जुनसिंह ने पंजाब पहुँचते ही स्पष्ट कर दिया कि पंजाब में शांति हो और यह फिर से खुशहाली की ओर बढ़े इसके लिए वे भरसक प्रयास करेंगे। उन्होंने अमृतसर सहित पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों में प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी की पंजाब की प्रगति एवं खुशहाली के प्रति प्रतिबद्धता दुहराई।

श्री अर्जुनसिंह लोकतंत्र को सर्वोपरि रखते हैं। पंजाब में उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि पंजाब में लोकप्रिय सरकार को फिर से कायम करना समस्या के राजनीतिक हल का ही अँग है। उन्होंने यह बात बार-बार दुहराई कि लोकतांत्रिक ढाँचे में लोकप्रिय सरकार की स्थापना एक किस्म से वांछित लक्ष्य है।

श्री अर्जुनसिंह ने पंजाब पहुँचते ही ऐसी कार्य शैली अपनाई जिससे जनता स्वयं समस्या सुलझाने में हाथ बँटा सके। अपनी पहली पत्रकार वार्ता में उन्होंने एक सुखद घोषणा की जिसके तहत अखबारों पर से लेखन संबंधी पाबंदी हटा ली गई। इस घोषणा का व्यापक असर हुआ। पंजाब के उपर छाए काले बादलों के छँटने की शुरुआत हो चुकी थी।

अमृतसर में होली तीन साल बाद खुलकर मनी। चण्डीगढ़, लुधियाना, जालंधर, भटिंडा, कपूरथला और परिमाला मे पिछले साल की तुलना में होली में उल्लास था। सिख युवक चंडीगढ़ व अन्य शहरों में पूरी मस्ती से शरीक हुए।

चौदह मार्च की शाम को श्री अर्जुनसिंह ने पंजाब में पद और गोपनीयता की शपथ ली। 15 मार्च को सचिवालय में अपने सलाहकारों और प्रमुख अधिकारियों के साथ विचार विमर्श किया। जाहिर है श्री अर्जुनसिंह योजना-बद्ध ढँग से व तत्परता से समस्या को हल करना चाहते थे। एक कुशल प्रशासक और म.प्र. जनता के नुमांइदे के रूप में वह सदा जनता के करीब रहे। राज्यपाल बनने के तुरंत बाद उन्होंने अधिकारियों को आदेश दिया कि सर्वप्रथम उन समस्याओं को हल करने का प्रयास करें जो जनता से सीधे जुड़ी हुई हैं। लोगों के मन से सर्वप्रथम अन्याय की भावना दूर करने के लिए प्रयास शुरू किए। श्री अर्जुनसिंह समस्या की जड़ पहचानते थे, इसलिए उन्होंने विकास कार्यों की गति बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने प्रशासन को जनता से संपर्क में रहने का आदेश दिया ताकि ऐसा माहौल बनाया जा सके, जिसमें यहाँ शांति, खुशहाली, प्रगति के साथ लोकतांत्रिक प्रक्रिया सामान्य ढंग से चलने लगे।

बहुत ही कम समय में श्री अर्जुनसिंह सिख समुदाय के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ गए। समस्या सुलझाने की वे पहली शर्त सौहार्द्र व सद्भाव को मानते थे। वे अमृतसर गए। वहाँ स्वर्ण मंदिर में प्रार्थना की। सारा इलाका देखा और पृष्ठभूमि की जानकारी ली। प्रमुख व्यक्तियों से भेंट की किंतु अकाली नेता उनसे नहीं मिले। राज्यपाल को स्वर्ण मंदिर में सम्मान और सरोपा भेंट करने वाली औपचारिकता नहीं हुई। गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा कि उन्हें सूचना नहीं मिली थी, जब कभी सूचना मिलेगी तो वे श्री अर्जुनसिंह को आमंत्रित करेंगे। इस पर श्री अर्जुनसिंह ने कहा "मैं तो तीर्थयात्री के बतौर श्रद्धा व्यक्त करने आया हूँ, तीर्थ में निमंत्रण की प्रतीक्षा का क्या मतलब है।"

राज्यपाल के रूप में श्री अर्जुनसिंह की दिनचर्या बेहद व्यस्त रही। उन्होंने समस्या के लिए हर बिंदु पर गहन विचार-विमर्श किया और रणनीति बनाई। राज्यपाल निवास पर आम जनता उनसे मिलने आती। श्री अर्जुनसिंह भी प्रमुख लोगों को बुलाकर उनसे मिलते। वे पंजाब समस्या पर सभी के विचार जानने और विवाद की गहराई में जानने का प्रयास लगातार करते रहे, और बहुत कम समय में विवाद के मुख्य बिन्दु समझ लिए।

श्री अर्जुनसिंह के लिए राज्यपाल का पद एक नई भूमिका थी। इसके पूर्व लगभग 28 सालों तक वे सक्रिय राजनीति में रहे थे। वे पहली बार 1957 में विधायक बने थे। किंतु श्री अर्जुनसिंह अपनी नई भूमिका में जिस गंभीरता से आए उसने यह सिद्ध कर दिया कि वे प्रतिभा संपन्न राजनेता हैं।

श्री अर्जुनसिंह ने पंजाब में अमन कायम करने के लिए सबसे पहले जनता में विश्वास जगाया। राज्यपाल बनने के बाद उन्होंने पंजाबी भाषा में जब पहली बार जनता को संबोधित किया तो दर असल यह जनता में विश्वास जगाने की प्रक्रिया का ही अंग था। उन्होंने अपने पहले ब्राडकास्ट में कहा:

"आज इस प्रदेश के प्रथम सेवक के रूप में आपको पहली बार संबोधित करते हुए मैं गर्व का अनुभव कर रहा हूँ। मुझे भारत के उन लोगों की सेवा करने का मौका आज मिला है, जो न केवल बहादुर हैं, और नेक दिल के हैं, बल्कि जिन्होंने इस महान देश के इतिहास के कई पन्नों को अपने खून और पसीने से लिखा है। भारत की आजादी की जंग में शहीद सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव और कर्नल हिल्टन के अलावा हजारों-हजार बहनों और भाइयों ने जो

कुर्बानियाँ दी हैं, आज उसी की बदौलत हम एक आजाद देश में साँस ले रहे हैं, इस आज़ादी और देश की एकता व अखण्डता की रक्षा करना हम सबका सबसे पहला फर्ज है।

आजादी के बाद के भारत की तरक्की की शुरुआत पंजाब से ही हुई और ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहाँ पंजाब के मेहनती व लगनशील लोगों ने कई नई मिसाल न कायम की हो, यहाँ के किसानों ने नई तकनीक इस्तेमाल करके हर फसल की पैदावार कई गुना बढ़ा ली है। और देश को अनाज के मामले में अपने पैरों पर खड़े होने लायक बना दिया है। इसी तरह उद्योगों के मामले में चारों तरफ छोटे व बड़े उद्योग की स्थापना करके तरक्की की एक नई फ़िजा तैयार कर दी है।

यह दुःख की बात है कि इन सब क्षेत्रों में आज हमारी रफ्तार कुछ धीमी हुई है, क्योंकि पिछले कुछ सालों में शांति भंग होती रही और एक के बाद एक इस प्रकार की अड़चनें पैदा होती रहीं। प्रदेश की खुशहाली को बरकरार रखने के लिए और तेजी से आगे बढ़ने के लिए यह जरूरी है कि हम अमन चैन बनाकर रखें। शांति और तरक्की एक साथ चलती हैं, दोनों को अलग नहीं किया जा सकता है। इसके लिए हम सबको होशियार रह कर एक दूसरे का साथ देना है और मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूँ कि प्रदेश में अमन चैन कायम रखने के लिए मैं अपनी पूरी जिम्मेदारी निभाऊँगा।

हमारे देश के युवा प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी पंजाब की खुशहाली, अमन चैन और तरक्की के लिए हर संभव तरीके से आपकी मदद करना चाहते हैं। अभी अपनी पंजाब यात्रा के दौरान उन्होंने कुछ घोषणाएँ की हैं, जिनको अमल में लाने के लिए तुरंत कार्रवाई शुरू हो गई है, पंजाब के किसानों को गेहूँ की खरीदी के समय बोनस देने की बात भी उन्होंने की थी। प्रधानमंत्री की इच्छानुसार प्रदेश शासन ने इस रबी की खरीदी के समय प्रति क्विंटल गेहूँ पर 5.00 (पाँच रुपये) का बोनस देने का निर्णय लिया है, इस तरह करीबन 27 करोड़ रुपये पंजाब के किसानों को ज्यादा फायदा मिलेगा। इसी प्रकार उद्योग धंधों में जो अड़चने पैदा हुई हैं, उन्हें भी एक समय के अंदर दूर करने का निर्णय लिया गया है, जिससे पंजाब फिर इस रास्ते पर तेजी से बढ़ सके।

मुझे इस बात का पूरा अहसास है कि प्रदेश के नौजवानों के दिल और दिमाग पर कुछ बोझ है, और कुछ नाराजगी भी है- मेरा विश्वास है कि कोई भी समाज तब तक तरक्की नहीं कर सकता है, जब तक नौजवान काम में पूरी तरह न लग जाएँ। मैं कठिनाइयों को अच्छी तरह समझता हूँ, लेकिन नौजवान भाइयों और बहनों से दरखास्त करता हूँ, कि मुझे सेवा करने का थोड़ा मौका दें और हिंसा व टकराव के रास्ते पर जाने की बात छोड़ दें। दुनिया के इतिहास से हमको यह सबक मिलता है कि कोई भी समस्या बंदूक-तलवार की नोक पर नहीं सुलझ सकती है। किसी भी कठिनाई पर काबू पाने के लिए सिर्फ एक ही रास्ता है, और वह है प्रेम और सद्भाव का दिलों को जोड़ कर, कंधे से कंधा मिला कर हौसले से काम करके ही हम मंज़िल पर पहुँच सकते हैं।

आज प्रदेश के सामने कुछ सियासी मसले भी हैं, जिन्हें हमें सुलझाना है। प्रदेश के सभी राजनैतिक नेताओं से मैं प्रार्थना करना चाहता हूँ कि इन मामलों पर ठंडे दिल से और प्रदेश व देश के हितों को ध्यान में रखकर ही विचार करें। यह सोचना गलत होगा कि एक पक्ष की हार या एक पक्ष की जीत हमारी समस्याओं का समाधान है। प्रश्न देश की एकता और आजादी को बरकरार रखने का है। यदि भारत स्वतंत्र व अखंड रहेगा, तो हम सब भी जिंदा रहेंगे, उसके बाहर हममें से किसी की कोई कीमत नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस प्रदेश के सभी नेतागण इसी आधार पर इन सब मामलों को सुलझाएँगे। इस काम में आपके सेवक की हैसियत से मैं जो भी कर सकता हूँ, ईमानदारी से करने की कोशिश करूँगा।

इस प्रदेश के लोगों को बेशुमार और बहुत कीमती चीजें इतिहास से वसीयत के रूप में मिली है। हमारे पवित्र

गुरुद्वारे, मंदिर, मस्जिद, हमारे गुरुओं, संतों और फकीरों की वाणी और उपदेश, ये सब हमसे अपने फर्ज की अदायगी का तकाज़ा करते हैं। हर मुल्क के इतिहास में ऐसे क्षण आते है, जब वहाँ के रहने वाले इंसानों के इरादों और हौसले की परख होती है। आज हम भी ऐसे ही एक समय से गुजर रहे हैं। हम सबको यह साफ तौर से दुनिया को दिखा देना है कि हमारे लिए इस देश में रहने वाले प्रत्येक इंसान की इज्जत व खुशहाली उतनी ही अहमियत रखती है जितनी खुद अपनी और अपने देश की तरक्की की। और इसकी आजादी और अखण्डता को बरकरार रखने के लिए हम हर कुर्बानी देने के लिए तैयार है।

भारत माता ने हम सबको बेहद प्यार और वरदान दिए हैं। इस मुल्क में रहने वाले हर शख्स ने कुछ न कुछ पाया है और उसकी जिंदगी पहले से कुछ बेहतर हुई है। आज माँ को हमसे भी कुछ चाहिए। आइए, हम सब बिना किसी भेदभाव के भारत माता के आँगन की खुशहाली में चार चाँद लगाने में जुट जाएँ और अपनी मेहनत और बलिदान से इस देश में नए इतिहास को बनाएँ।''

पंजाब में शांति स्थापना की कोशिशें अपना असर दिखाने लगी थीं। प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी शांति वार्ता शुरू करने के लिए उत्सुक थे, किंतु वे राष्ट्र की एकता और अखंडता के साथ रत्ती भर समझौता करना नहीं चाहते थे। श्री अर्जुन सिंह की नियुक्ति के बाद पंजाब से सेना हटा ली गई, और वहाँ बी.एस.एफ. एवं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस तैनात कर दी गई। इन कदमों का उद्देश्य था बातचीत एवं विश्वास का माहौल पैदा करना।

अकाली दल अध्यक्ष संत लोंगोवाल सहित अन्य अकाली नेताओं को रिहा किया गया था, तब से सिख राजनीति में कई परिवर्तन आए। जेल से छूटने पर ही अकाली नेता यह जान पाए थे कि पँजाब की फ़िजा बदल रही है। सिख राजनीति में भी दो खेमे हो गए थे। संत हरचंदसिंह लोंगोवाल उदारवादी नेता थे और वे इस बात को स्वीकार करने लगे थे कि समस्या केवल बातचीत से ही सुलझाई जा सकती है। किंतु उनके ऊपर सदा उन्मादी व कट्टरपंथी नेताओं का दबाव रहता था, जिसके चलते वे अपनी बात नहीं कह पाते थे। रिहा नेताओं में अकाली दल (तलवंडी) के अध्यक्ष, श्री जगदेव सिंह तलवंडी भी शामिल थे। वे एक 'हार्ड लाइनर' माने जाते थे। रिहा होने के बाद संत हरचंदसिंह लोंगोवाल गुट व तलवंडी गुट में ठन गई थी। इसके चलते अकाली दल की राजनीति अपने पैर नहीं जमा पा रही थी। इसका सीधा प्रभाव शांति प्रक्रिया पर पड़ रहा था। उग्रवादी जब-तब धमाके करते रहते थे।

मई-जून 1985 में श्री अर्जुनसिंह के अथक प्रयास रंग दिखाने लगे थे। अकाली राजनीति भी जब तब सकारात्मक रुख दिखाती थी, किंतु उसके कदम ठोस नहीं थे। श्री सुरजीतसिंह बरनाला भी सकारात्मक रुख अपनाने लगे थे। पंजाब में श्री अर्जुनसिंह ने राजनीति का ऐसा माहौल बनाया था जिसमें नेता सोच-विचार कर सकें व अपनी स्थिति स्पष्ट कर सकें। इस बीच पंजाब के तनावपूर्ण माहौल में एक शिथिलता आई थी। हिन्दुओं और सिखों के बीच तनाव में काफ़ी कमी आई थी। पंजाब के शहरों में ही नहीं बल्कि गाँवों में भी हिन्दू-सिख साथ-साथ बैठे हुए नजर आने लगे थे, और पंजाब मसले पर बातें करते थे।

बैसाखी के दो दिन पहले जब गृहमंत्री ने संसद में यह घोषणा की कि श्रीमती गाँधी की हत्या के बाद दिल्ली में हुए दंगों की न्यायिक जाँच कराई जाएगी और साथ ही अखिल भारतीय सिख छात्र संघ पर लगी पाबंदी हटा ली गई। यह घोषणाएँ प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी द्वारा पंजाब समस्या को हल करने के कृत संकल्प का मूल थीं। इससे पंजाब के आम आदमी ने राहत की साँस ली। केन्द्र सरकार ने इन कदमों से वार्ता के लिए वातावरण बनाया। श्री अर्जुन सिंह की पहल पर केन्द्र सरकार ने उन अकाली नेताओं और कार्यकर्ताओं को छोड़ दिया जिन पर गंभीर आपराधिक मामले नहीं थे। ऐसे कुल लोग बैसाखी के दूसरे दिन छोड़ भी दिए गए।

प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने इसके साथ ही कट्टरपंथियों को यह साफ़ कर दिया था कि वे खालिस्तान का सपना देखना बंद कर दें। एक ओर सरकार पंजाब में शांति कायम करने के भरसक प्रयास कर रही थी, और अकाली राजनीति को अवाम के असली मुद्दों से जुड़ने के लिए कह रही थी, वहीं दूसरी ओर उग्रवादी अपनी कुंठाएँ, गोलीबारी व विस्फोट कर निकाल रह थे। उग्रवादियों को अपना भविष्य संकट में नजर आ रहा था। श्री अर्जुनसिंह लगातार अकाली नेताओं को उग्रवादियों के प्रभाव से निकालने का प्रयास कर रहे थे। यह एक कठिन कार्य था। इसके साथ ही श्री अर्जुनसिंह ने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि यदि अकाली नेता उग्रवादियों का समर्थन बंद नहीं करेंगे तो केन्द्र सरकार कठोर कार्रवाई करेगी। पाक समर्थक उग्रवादी देश की एकता के लिए बड़ा खतरा थे, इसलिए उनके खिलाफ साफ तौर पर बिना किसी भय के मुहिम चलाना अनिवार्य था। श्री अर्जुनसिंह ने शांतिपूर्वक लोकतांत्रिक ढँग से वार्ता करने वालों को प्रोत्साहित किया और आतंकवाद का सहारा लेने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की।

प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी ने श्री अर्जुनसिंह के साथ मिलकर पंजाब के विभिन्न इलाकों में शांति का संदेश पहुँचाया। श्री अर्जुनसिंह पंजाब की जनता व उनकी भावनाओं को बखूबी समझ चुके थे। 28-29 मार्च को श्री सिंह दिल्ली की संक्षिप्त यात्रा पर आए थे। इस यात्रा का मकसद, प्रधानमंत्री द्वारा पंजाब में आर्थिक कार्यक्रमों की घोषणा पर आम लोगों की राय से अवगत कराना था। इस तरह श्री सिंह, प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी को पंजाब की स्थिति से सतत् रूप से अवगत कराते रहे। श्री राजीव गाँधी ने हुसैनवाला की यात्रा की जिसको आम लोगों ने सराहा। श्री अर्जुनसिंह को इस बात की फिक्र हमेशा रहती थी कि जनता से किए वादों पर जल्द से जल्द अमल हो। पंजाब में अपने कार्यकाल के दौरान विकास संबंधी वादों के क्रियान्वयन के लिए वे लगातार केन्द्रीय मंत्रियों से मिलते रहे, और उनका सहयोग लिया। श्री अर्जुनसिंह के इन प्रयासों का जनता पर अच्छा असर हुआ। आम लोगों को पता चल गया कि राज्य के आर्थिक उत्थान में सरकार की पूरी निष्ठा है।

अकालियों के सहयोग का अब भी अभाव था। श्री अर्जुनसिंह बातचीत के लिए हमेशा तैयार थे, किंतु अकालियों की आपसी फूट उनके आड़े आ रही थी। एक बार जब श्री अर्जुनसिंह से पूछा गया कि पंजाब समस्या के समाधान के लिए कौन सा तरीका आप कारगर समझते हैं तो उन्होंने कहा था, "मैं राजनीतिज्ञ हूँ, लेकिन कोई भी राजनीतिज्ञ, प्रशासनिक अधिकारियों के बिना मसले का समाधान नहीं ढूँढ सकता, मैं हर तबके तक पहुँच कर कोई न कोई रास्ता निकालने की कोशिश में हूँ।"

संत लोंगोवाल का रुख नरम पड़ रहा था, इससे कट्टरपंथी परेशान थे। श्री अर्जुनसिंह ने शांति वार्ता एवं समझौता कराने के लिए ऐसे मध्यस्थों को सक्रिय किया जो सरकार का दृष्टिकोण अकाली नेताओं तक बेहतर ढँग से रख सकें। केन्द्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने प्रतिपक्ष के नेताओं से अलग-अलग बैठकें कीं। प्रधानमंत्री ने भाजपा के श्री अटलबिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी, जनता पार्टी के मधु दण्डवते, कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव राजेश्वरराव के अलावा क्षेत्रीय पार्टियों, तेलगू देशम और अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम के नेताओं से मिलकर उनके विचार जाने।

श्री अर्जुनसिंह ने पंजाब के नेताओं के साथ लंबी बैठकें कीं, और वार्ता के कई दौर हुए। इन वार्ताओं का असर दिखने लगा था। संत लोंगोवाल ने अपने डेढ़ दर्जन से अधिक भाषणों में बार-बार इस बात को रेखांकित किया कि 'हम खालिस्तान की हामी नहीं भरते, हम पृथकतावादी नहीं है।' अब अकाली नेता भी सिखों में विश्वास पैदा कर सद्भाव का माहौल बनाने में योगदान देने लगे थे। अब अकाली दल का नेतृत्व संत हरचंदसिंह लोंगोवाल के हाथ में था। संत लोंगोवाल देश भर के सिख समुदाय का मनोबल बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे। संत लोंगोवाल कई दफा दिल्ली आए, वहीं

पंजाब समस्या से सम्बद्ध केन्द्रीय मंत्रिमंडल की उपसमिति पंजाब के अनेक स्थानों का दौरा कर रही थी। संत लोंगोवाल को बुद्धिजीवी वर्ग का समर्थन व सहयोग प्राप्त था। पंजाब के हालात में जो सुधार हुआ, इससे सभी की निगाह प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी व संत हरचंदसिंह लोंगोवाल पर आ टिकी थी। संत सहित अकाली नेताओं का एक प्लेटफार्म पर लाना कठिन कार्य था। पर श्री अर्जुनसिंह इसके लिए सतत् रूप से प्रयत्नशील थे। श्री अर्जुनसिंह के प्रयासों का सबसे बड़ा असर यह हुआ कि समझदार व नरमपंथी अकाली नेता उग्रवादियों के खिलाफ सार्वजनिक रूप से आ गए। और उन्होंने खुलकर उग्रवादियों की निंदा की। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी को अमेरिका के राष्ट्रपति ने वचन दिया कि आंतकवाद के खिलाफ भारत-अमेरिका एक जुट रहेंगे। श्री राजीव गाँधी के इन प्रयासों से आंतकवाद के खिलाफ उन देशों मे भी वातावरण बना जहाँ उनके गढ़ थे।

श्री अर्जुनसिंह ने सिख नौजवानों की ओर भी समस्या को हल करने के लिए हाथ बढ़ाया। स्थिति सामान्य करने के प्रयास तेज कर दिए गए। जून-जुलाई में 427 युवा रिहा कर दिए गए। बीस वर्ष से कम उम्र के बंदियों की रिहाई के काम में तेजी लाने के लिए राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह ने अपने सलाहकार शिवस्वरूप की अध्यक्षता में एक पाँच सदस्यीय समिति का गठन किया, इसकी सिफारिशों पर अनेक लोग रिहा कर दिए गए। युवकों की रिहाई का सारे पंजाब में स्वागत हुआ।

पंजाब के हालात तेजी से सामान्य हो रहे थे किंतु श्री अर्जुनसिंह ने कभी इसे अपनी उपलब्धि नहीं बताया उन्होंने एक मौके पर कहा "यह मेरी करामात नहीं है। यह उन सब लोगों की मेहनत का फल है जो पंजाब में सुख और शांति के इच्छुक हैं।" राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह ने राज्य में सद्भाव का माहौल बनाने के लिए शांति-समितियाँ गठित कीं। पहली बार अकाली पार्टी (लोंगोवाल) के एक नेता ने इसमें शिरकत की। इससे सरकार और अकाली पार्टी के बीच की दूरी कम करने में काफी मदद मिली। श्री अर्जुनसिंह द्वारा सद्भाव का जो माहौल बनाया जा रहा था, उसे संत लोंगोवाल सहित श्री सुरजीतसिंह बरनाला, श्री बलवंतसिंह व श्री प्रकाश सिंह बादल जैसे पढ़े-लिखे और उदारवादी सिख नेताओं का समर्थन भी मिला।

श्री अर्जुनसिंह 'कर्मयोगी' की तरह लगातार काम में लगे थे। वे सुबह नौ बजे से अपने कार्यालय में बैठ जाते, भोजन के समय को छोड़कर वे सारा दिन अधिकारियों की बैठकें लेते। रोज कार्यों की समीक्षा होती, और पूरे प्रदेश का जायजा लिया जाता। श्री अर्जुनसिंह पंजाब में तेजी से सामान्य होती स्थिति का श्रेय प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी के मार्गदर्शन को देते। श्री अर्जुनसिंह के कार्यकाल में अपराधों में तेजी से गिरावट आई। पिछले वर्ष के प्रथम छह माह की तुलना में इस साल, में अपराध कम हुए। वर्ष 1984 में 31905 अपराध हुए थे, जबकि 1985 में 29908 अपराध दर्ज हुए। वर्ष 1984 की तुलना में 1985 में 189 हत्याएं, 177 हत्या के प्रयास, 2 अपहरण की, 25 शासकीय कर्मचारियों पर हमले तथा 712 आर्म्स एक्ट के अपराध हुए। इसी प्रकार लगातार कई प्रकार के अपराधों में गिरावट आई जो इस बात का प्रमाण थी कि पंजाब में सुरक्षा के कड़े प्रबंध थे।

श्री अर्जुनसिंह ने अपने पहले ब्रॉडकास्ट में पंजाब के किसानों को याद दिलाया था कि वे हरित क्रांति को संभव बनाने वाले व देश में सबसे अधिक अन्न उपजाने वाले हैं। प्रदेश में फैले आतंकवाद का सीधा प्रभाव खाद्यान्न उत्पादन पर पड़ा था, क्योंकि किसान असुरक्षित था, और निःसहाय था, किंतु श्री अर्जुनसिंह ने शांति प्रक्रिया की जो शुरुआत की थी उससे प्रदेश में अनाज का रिकॉर्ड उत्पादन हुआ। 1984-1985 में जहाँ 49 लाख, 33 हजार, 488 टन अनाज का उत्पादन हुआ था, वहीं 1985-86 में 61 लाख, 34 हजार 442 टन का उत्पादन हुआ। किसानों की सहायता के लिए जहाँ वर्ष 1983-84 में 30 लाख 98 हजार 710 टन चावल विभिन्न माध्यमों से क्रय किया गया था वहीं

1984-85 में 38 लाख 98 हजार 823 टन खरीदा गया। चना पिछले वर्ष 4910 टन खरीदा गया था, जबकि 1985 में 6728 टन खरीदा गया। इन आँकड़ों से यह भी साफ हो गया कि प्रदेश के किसान का आंदोलन और आतंकवादी गतिविधियों से कोई सरोकार नहीं था, जैसा कि आतंकवादी प्रचारित करते रहते थे। श्री अर्जुन सिंह ने किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए गेहूँ की खरीदी मूल्य पर पाँच रुपए प्रति क्विंटल बोनस की व्यवस्था की। इस तरह लगभग 3082.22 लाख रुपया किसानों को वर्ष 1985 में बोनस के रूप में दिया गया।

श्री अर्जुनसिंह जनता की सीधी प्रतिक्रिया जानने में विश्वास करते थे। उनकी इच्छा सदा से जनता से सीधा संपर्क करने की रही। अपनी इन इच्छाओं के लिए दूरदर्शन पर जनवाणी कार्यक्रम शुरू किया। जनवाणी के माध्यम से जनता के साथ सीधा संपर्क शुरू हुआ। इससे प्रशासन को जनभावना समझने का मौका मिला, प्रशासकीय ढाँचे में मनमानी करने की प्रवृत्ति पर रोक लगी। इस स्तर पर जरूरी संवाद की स्थापना हुई। इससे शासन तंत्र को भी फायदा हुआ, और तंत्र की कुछ कमजोरियाँ सामने आई। जिन्हें सुधारा गया, और उत्तरदायित्व के सही निर्वहन में मदद मिली।

पंजाब में शांति का माहौल बनने के बाद समझौता होना बाकी था। श्री अर्जुनसिंह को विश्वास था कि समस्या का समाधान जल्द ही निकल आएगा। राज्यपाल श्री अर्जुन सिंह ने कई अकाली नेताओं से गोपनीय वार्ता की और इसमें होने वाली प्रगति की रिपोर्ट प्रधानमंत्री को देते रहे। श्री अर्जुनसिंह, संत लोंगोवाल व श्री बलवंतसिंह के साथ सीधे संपर्क में रहते और उन्हें प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी के दृष्टिकोण से अवगत कराते रहते थे।

तेईस जुलाई को दिल्ली में केन्द्र और अकाली नेतृत्व में बातचीत के दो दौर हुए। इसे बातचीत को श्री अर्जुन सिंह के अथक प्रयासों ने संभव बनाया था। सुबह दस बजे संत हरचंदसिंह लोंगोवाल और प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी में करीब पचास मिनिट अकेले में बातचीत हुई। दूसरा दौर सवा बारह बजे शुरू हुआ। दूसरे दौर में प्रधान मंत्री व संत के स्थान पर अन्य लोगों ने वार्ता में भाग लिया। अकाली दल की ओर से पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुरजीतसिंह बरनाला और पंजाब के पूर्व वित्तमंत्री बलवंतसिंह तथा सरकार की ओर से गृहमंत्री शंकरराव चव्हाण, रक्षामंत्री नरसिंहराव, वित्तमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह, राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह और केबिनेट सचिव ने बातचीत को आगे बढ़ाया। दोनों दौर के बाद पंजाबी भवन में अकाली नेताओं ने बंद कमरे में समीक्षा भी की।

इसके पूर्व प्रधानमंत्री और संत लोंगोवाल ठीक 10 बजे संसद भवन में दाखिल हुए थे। संसद भवन में प्रधान मंत्री दफ्तर तक उनके साथ सरदार बलवंतसिंह व सुरजीत सिंह बरनाला भी गए थे। वहाँ राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह ने उनकी अगुवाई की। वे संत को प्रधानमंत्री के कमरे तक पहुँचाकर लौट आए। बातचीत को सुविधाजनक बनाने के लिए राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह 22 जुलाई की शाम को ही दिल्ली पहुँच गए थे। पंजाब के प्रमुख बुद्धिजीवी श्री अतर सिंह वार्ता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। श्री अर्जुनसिंह, दिल्ली पहुँचते ही रेसकोर्स रोड गए। वहाँ अतरसिंह ने उन्हें बताया कि वार्ता का पहला दौर अनौपचारिक होगा। और इसमें राज्यपाल की उपस्थिति इतनी जरूरी नहीं है। लेकिन संत लोंगोवाल के काफिले के दो प्रमुख नेता देर रात श्री सिंह से मिलने कपूरथला हाउस गए और श्री अर्जुनसिंह से कहा कि हम वार्ता में आपकी उपस्थिति चाहते हैं।

श्री सिंह के साथ अधिकारियों और राजनैतिक सलाहकारों का एक दल भी दिल्ली आया था। इसके पास पूरा रिकॉर्ड था, जिसमें रिहा किए गए लोगों की जानकारी, जो जिलों में बंद है उनका रिकॉर्ड, ऑपरेशन ब्लू स्टार के दौरान मारे गए लोग और सैनिक कार्रवाई के दौरान किए गए खर्च का ब्यौरा भी उनके पास था। अधिकारियों एवं राजनीतिज्ञों का ऐसा मानना था कि बातचीत के दौरान यदि अकाली नेता बेबुनियाद आरोप लगाते हैं तो इसका जवाब देने में ये आँकड़े मदद कर सकते है। किंतु श्री अर्जुनसिंह का पूरा ध्यान औपचारिक वार्ता के लिए तैयारी करने पर था। श्री अर्जुनसिंह अकाली

नेताओं व सरकार के बीच के मध्यस्थों की भूमिका को भी हटा देना चाहते थे।

सरकार और अकाली नेताओं के बीच बातचीत जारी रही। संत लोंगोवाल आशावान दिख रहे थे। किंतु बातचीत व आशा का माहौल अचानक नहीं बना था, इसके पीछे श्री अर्जुनसिंह की अथक मेहनत काम कर रही थी। समझौते के आसार तब ही बन गए थे जब 22 तारीख को राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह, अकाली नेताओं से चण्डीगढ़ में मिले थे। इसी समय बातचीत के लिए दिल्ली जाने का न्यौता मंजूर हुआ था।

प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी का मार्गदर्शन व राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह के प्रयास रंग लाए। सरकार और अकाली नेताओं के बीच समझौता हो गया। इसे 'राजीव - लोंगोवाल समझौता' कहा गया। 24 जुलाई की शाम पौने 6 बजे प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी व अकाली दल के अध्यक्ष संत हरचंदसिंह लोंगोवाल ने सात सूत्री मसविदे पर दस्तखत किए। प्रधानमंत्री ने संसद के दोनों सदनों में इसकी घोषणा की। सांसदों ने तालियों की गड़गड़ाहट से इसका स्वागत किया। दस्तखत करने के लगभग 15 मिनिट बाद प्रधान मंत्री सदन में पहुँचे थे। उन्होंने वहाँ घोषणा की "हमने समझौता मसविदे पर हस्ताक्षर किए हैं। इससे समस्या हल होगी। सरकार ने पंजाब संकट सुलझाने के लिए ठोस कदम उठाया है। देश का सबसे गंभीर संकट खत्म हो रहा है। संकट के दौर से गुजरने के बाद हम देश की एकता और अखंडता के लिए सहयोग का नया दौर शुरू कर रहे हैं।"

चार पेज का यह समझौता दस्तावेज अँग्रेजी में था, इसके हर पेज पर प्रधान मंत्री एवं अकाली दल अध्यक्ष के हस्ताक्षर थे। समझौते के समय सरदार सुरजीतसिंह बरनाला और बलवंत सिंह के अलावा केन्द्रीय मंत्रिमंडल के कुछ सदस्य मौजूद थे। 23 जुलाई को इस मसविदे का प्रारूप बनाने में अर्जुनसिंह ने कड़ी मेहनत की। राज्यपाल श्री अर्जुन सिंह की मदद के लिए डॉ. अतर सिंह, श्री पृथ्वीपाल कपूर और गुरबीरसिंह मौजूद थे। बातचीत के दौरान एक ऐसा नाजुक दौर भी आया जब ऐसा लगने लगा कि बातचीत टूट जाएगी, लेकिन 24 जुलाई को दोपहर में श्री अर्जुनसिंह ने अकाली नेतृत्व से अलग से बातचीत की, और समझौते के मसविदा पर सहमति हो गई। बाद में यह मसविदा मंत्रिमंडल की राजनैतिक समिति को भेज दिया गया। समझौते के साथ ही प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी, संत हरचंद सिंह लोंगोवाल और राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह का भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया। समझौते के बाद श्री इंद्र कुमार गुजराल ने कहा "अकाली नेतृत्व और प्रधान मंत्री ने पंजाब संकट पर समझौता कर सराहनीय काम किया है, अब हमें हिन्दू-सिख की एकता को मजबूत बनाने और पंजाबियत के बीते गौरव को लौटाने का काम करना है।" समझौते की खबर सुनते ही सारे देश में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। हिन्दू-सिख सभी को लगा जैसे मानो वे अँधेरी गुफा से अब बाहर निकल आए हैं। दिल्ली में सिखों ने सड़कों पर मिठाई बाँटी, और गाजे-बाजे के साथ समझौते का स्वागत किया।

श्री अर्जुनसिंह ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था "प्रधानमंत्री की संवेदना और संत लोंगोवाल की सूझबूझ से हुआ समझौता पंजाब त्रासदी को हमेशा के लिए समाप्त कर देगा।" श्री सिंह ने इस समझौते का श्रेय श्री राजीव गाँधी को देते हुए कहा था "भारत ने राजीव गाँधी के रूप में एक सच्चा नेता पा लिया है। इस समझौते का पूरा श्रेय श्री गाँधी को है। उनके अथक प्रयत्नों से ही यह संभव हुआ है।"

इस समझौते को संभव बनाने के लिए श्री अर्जुनसिंह लगातार 48 घंटे तक काम करते रहे। इनमें से 12 घंटे उन्होंने लगातार प्रधान मंत्री के साथ बिताए। श्री सिंह ने यह ऐतिहासिक समझौता मात्र चार माह के परिश्रम के बाद संभव बना दिया था। पंजाब के राज्यपाल बनने के बाद से श्री अर्जुनसिंह का उद्देश्य समस्या का हल संविधान के तहत निकालने का था, जो उन्होंने कर दिखाया।

पंजाब समझौते पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियाएँ हुई। सभी ने प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी को बधाई दी। न्यूयार्क टाइम्स ने भी पंजाब समझौते को सुर्खियों में छापा, तथा इसे प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी की एक और उपलब्धि बताया था। अखबार ने समझौते की प्रशंसा करते हुए लिखा "श्री राजीव गाँधी को, नेहरू एवं इंदिरा गाँधी की योग्यता एवं दृढ़ता का सही उत्तराधिकारी माना जा सकता है।"

प्रसिद्ध पत्रकार प्रभाष जोशी ने समझौते पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा 'राजीव गाँधी, संत लोंगोवाल और श्री अर्जुनसिंह के माथे पर तिलक करिए। अक्षत डालिए। और देश भर की तरफ से आशीर्वाद दीजिए कि जो समझौता उन्होंने किया है, उससे हिन्दुओं और सिखों के दिल एक हों ताकि पंजाब देश के धड़े से फिर जुड़कर उसका गौरवशाली मस्तक प्रदेश बन सके।'

कुछ लोग अब भी पंजाब पर समझौता होने को स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। क्योंकि यह चमत्कार से कम कुछ भी नहीं था। कुछ दिनों पहले तक हरेक अखबार वाले और राजनीतिज्ञों का यह कहना था कि 'पंजाब में हालात कभी सामान्य नहीं हो सकते।' तिस पर अकाली नेताओं की बातचीत के लिए आमने-सामने बैठा पाना असंभव ही था, किंतु इस असंभव को श्री अर्जुनसिंह ने संभव बना कर दिखा दिया। उन्होंने 'आहत भावनाओं' को समझा और दिल्ली-चंडीगढ़ के बीच की दूरी को खत्म किया। संभवत: 1947 के बाद राष्ट्रीय एकता की दिशा में यह सबसे बड़ा कदम था।

पंजाब समझौते ने सिद्ध कर दिया कि श्री अर्जुनसिंह न केवल चतुर राजनीतिज्ञ हैं बल्कि सुजान भी हैं। इस समझौते को संभव बनाने में श्री अर्जुनसिंह के व्यक्तिगत गुणों ने भी काम किया। पंजाब की सबसे बड़ी समस्या भावनागत थी। श्री सिंह ने सर्वप्रथम लोगों की भावनाओं के साथ अपने को जोड़ा। अच्छे विश्लेषक के रूप में समस्या की जड़ को पहचाना। उनकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि वे सुनते सबकी हैं, और काफी धैर्य से सुनते हैं। उनके इस गुण से तनाव शिथिल हुआ। श्री अर्जुनसिंह को पंजाबी नहीं आती थी, लेकिन राज्यपाल बनने के बाद उन्होंने एक भी भाषण हिन्दी में नहीं दिया। श्री अर्जुनसिंह ने 1985 के मार्च, अप्रैल, मई व जून माह में पंजाब के चप्पे-चप्पे में शांति का संदेश फैलाया। उनके भाषणों में सद्भाव, सांप्रदायिक सौहार्द्र और पंजाबी होने की अहमियत पर बल होता था। वे अपने किसी भी भाषण में भिंडरावाले, अकाली दल, लोंगोवाल या श्रीमती गाँधी की हत्या का जिक्र नहीं करते थे। वे सौहार्द्र की बात करते समय सिर्फ प्रधान मंत्री का जिक्र करते थे और जनता को बताते थे कि श्री राजीव गाँधी पंजाब में शांति के लिए कृत संकल्पित हैं। उनके व्यक्तिगत गुणों में जनता के साथ मिलनसार होना भी शामिल है। इसका प्रमाण उनके पंजाब दौरे हैं। जालंधर टेलीविजन से उन्होंने एक पाक्षिक कार्यक्रम शुरू करवाया, जिसमें वे स्वयं पंजाब और पंजाब की समस्याओं पर सवालों के जवाब देते थे।

पंजाब में कार्यकाल के दौरान एक नेता के रूप में उन्होंने ऐसी टीमों का निर्माण किया जो बेहद संवेदनशील और समझदार थी। जिस प्रकार श्री अर्जुनसिंह स्वयं समस्याओं के प्रति संवेदनशील और चिंतित होते थे उसी प्रकार वे अन्य लोगों में सौहार्द्र की समझ विकसित करने में सफल रहे। इसका प्रमाण उनका जालंधर दौरा था। नये राज्यपाल ने खुद जालंधर जाकर अकालियों के अखबार अकाली पत्रिका और आर्य समाजी दैनिक पंजाब केसरी के मालिकों-संपादकों से विचार-विमर्श किया और उनसे सौहार्द्र का वातावरण बनाने में मदद माँगी। श्री अर्जुनसिंह की बात का असर हुआ और जालंधर प्रेस का रवैया नरम हो गया।

श्री अर्जुनसिंह का एक प्रमुख गुण उनका सदा सक्रिय रहना रहा है। उन्होंने पंजाब पहुँचते ही इस अवधारणा को तोड़ा कि पंजाब में कुछ नहीं हो रहा है। उनके पहुँचते ही ऐसा लगने लगा कि पूरी सरकारी मशीनरी लगातार 'मूव'

पर थी। पंजाब में कवि सम्मेलनों का दौर भी शुरू हुआ। महाराजा रणजीतसिंह के नाम पर समारोह का आयोजन किया जाता तो कभी जलियाँवाला बाग में समारोह करके शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती। लगता था कि पंजाब में सरकार सक्रिय है।

श्री अर्जुनसिंह को सौहार्द्र का संदेश बेहद सटीक होता था और वह अपना जादुई असर दिखाता था। श्री सिंह ने जिन अवधारणाओं को लेकर पंजाब समस्या का हल निकाला उसमें सौहार्द्र प्रमुख थी। एक बार सांप्रदायिक सौहार्द्र की राज्य समिति के सम्मुख अपने भाषण में अँग्रेजी के कवि डब्ल्यू.एच. ओडेन की ये पंक्तियाँ उद्धृत की थीं, जो उनकी भावनाओं की भी परिचायक थीं:

'देयर इज नो सच थिंग, एज द स्टेट,
एंड नो वन एक्जिस्ट्स एलोन,
हंगर अलाउज नो च्वाइस,
टु द सिटीजन ऑर पुलिस,
लेट अस लव वन एनअदर ऑर डॉई।'

श्री अर्जुनसिंह के इस मिशन की एक बड़ी सफलता यह भी थी कि उनके दफ्तर से एक भी खबर नहीं निकलीं। यह इसलिए आवश्यक था क्योंकि मिशन के संदर्भ में यदि कोई भी अफवाह फैलती तो यह परेशानी खड़ी कर सकती थी। सफलता की इस कहानी में राज्यपाल के संयुक्त सचिव सुदीप बनर्जी को नहीं भुलाया जा सकता। इस मिशन में गैर-राजनीतिक एवं पंजाब के प्रमुख बुद्धिजीवी डॉ. अतरसिंह का अमूल्य योगदान था। उन्होंने अकाली नेताओं को सही राह दिखाने में मदद की। डॉ. अतर सिंह ने श्री अर्जुनसिंह को जहाँ कहीं भी आवश्यक हुआ सलाह मशविरा दिया। वे इस मिशन को सफल बनाने में श्री अर्जुन सिंह के प्रमुख सलाहकारों में थे। डॉ. अतरसिंह ने पंजाब को समझने में भी श्री अर्जुन सिंह को मदद की। इस मिशन के संदर्भ में श्री अर्जुनसिंह लगभग 35 बार अकाली नेताओं से मिले, इनमें से अधिकांश मुलाकातें डॉ. अतर सिंह ने कराईं थीं।

पंजाब समझौते को श्री अर्जुनसिंह ने अकाली दल अध्यक्ष संत हरचंद सिंह लोंगोवाल के साहस से पंजाब की जनता की महान जीत बताया। राज्य के नाम प्रसारित अपने संदेश में श्री अर्जुनसिंह ने स्पष्ट किया कि प्रधानमंत्री ने पंजाब समस्या को प्राथमिकता देने का वचन पूरा कर दिया है। इस प्रसारण के बाद भी श्री अर्जुनसिंह के कदम रुके नहीं। वे स्थाई अमन चाहते थे। वे इस समझौते को जनता तक पहुँचाना चाहते थे। उन्होंने अपने प्रसारण में कहा "प्रत्येक नागरिक का अब यह कर्तव्य है कि वह इस महान समझदारी के आधार पर राज्य का निर्माण करे। और बुद्धिजीवी और कार्यकर्ता, जनता को इस समझौते के पूरे प्रभाव से अवगत कराएँ।"

राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह इस समझौते के बाद आने वाली कठिनाई से वाकिफ थे। यह उनकी दूरदर्शिता थी। समझौते के बाद उन्होंने सबसे अधिक प्रयास इस बात के किए कि पंजाब प्रशासन में कोई शिथिलता न आने पाए। उन्होंने प्रशासन को उतनी ही तत्परता से काम करने को कहा जितना कि वह, इस महान समझौता के पूर्व काम कर रहे थे। एक दूरदर्शी नेता के रूप में वे भलीभाँति जानते थे कि समझौते के बाद की स्थिति को संभालना ज्यादा बड़ा काम है। श्री अर्जुन सिंह यह जानते थे कि आतंकवादी अब अधिक हंगामा करने का प्रयास करेंगे। आतंकवादियों का प्रयास था कि एक बार फिर वातावरण जरूर बिगड़े। इस समझौते से आतंकवादी 'डिमोरेलाइज़' हुए और उन्होंने हिंसक प्रतिक्रिया भी की। पर श्री अर्जुन सिंह स्थितियों का पूर्वानुमान लगा चुके थे। वे पूरी तरह सतर्क थे।

समझौता मिशन के उपरांत आतंकवादी बौखलाए हुए थे। वे राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह को अमन की बहार लाने

वाला 'शत्रु' मानते थे। गुप्तचर विभाग की रिपोर्टों से यह पता चला था कि श्री सिंह व संत हरचंदसिंह लोंगोवाल आतंकवादियों की हिट लिस्ट में है। 27 जुलाई 1985 को अमृतसर में एक सब-इंस्पेक्टर को दो अज्ञात युवकों ने मार डाला था। बाद में पुलिस एवं गुप्तचर विभाग को ऐसे साक्ष्य मिले जिनसे इस हत्या के उपरांत मिले कुछ सुरागों से यह स्पष्ट हुआ कि दरअसल आतंकवादियों की योजना श्री सिंह की हत्या करना था। बाद के घटनाक्रम से यह और स्पष्ट हो गया कि पंजाब में अमन को नापसंद करने वालों में श्री सिंह के जीवन को खतरा है। इन्हें समझौते की सफलता व जनता का उत्साह खल रहा था। संख्या उनकी बहुत कम थी, लेकिन वे यह सोचकर परेशान थे कि यदि सारा श्रेय कॉंग्रेस और अकाली दल को मिल गया तो उनकी तोड़-फोड़ की राजनीति का क्या होगा? पर श्री अर्जुनसिंह ने इस बात की तनिक भी फिक्र नहीं की और एक 'कर्मयोगी' की भाँति अपने उद्देश्यों की पूर्ति में लगे लगे रहे।

खतरे की आशंका के चलते राजभवन में सेन्ट्रल रिजर्व पुलिस का पहरा बढ़ा दिया गया था। इस समय केन्द्र एवं राज्य खुफिया तंत्र से जो सूचनाएँ मिल रही थीं, उनसे साफ जाहिर था कि पंजाब में हिंसा का एक जबरदस्त दौर लाने की आतंकवादी कोशिश करेंगे। उग्रवादियों के निशाने पर न केवल संत हरचंदसिंह लोंगोवाल व राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह थे, बल्कि वे स्वर्ण मंदिर को भी नुकसान पहुँचाना चाहते थे। उनका उद्देश्य हिन्दू-सिख समुदाय के बीच जहर पैदा कर, शांति भंग कर समझौते को बेमानी करना था। कुल मिलाकर समझौते के विरोधी अपनी चालें चल रहे थे। राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह का काम केवल समझौता करा देने तक सीमित नहीं था। शांति कायम रखना एवं समझौते के क्रियान्वयन की जिम्मेवारी भी उन्हीं के ऊपर थी। जिसे श्री अर्जुनसिंह ने बखूबी निभाया। श्री अर्जुनसिंह का विश्वास था कि आम जनता जान चुकी है कि अँधेरी रात का अंत हो चुका है। पंजाब में पौ फट चुकी है, अमन का सूरज ऊग चुका है। कालिमा के यह आतंकवादी अब कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

नेहरू-गाँधी परिवार के निष्ठावान समर्पित सेवक

श्री अर्जुनसिंह मध्यप्रदेश के बघेल खण्ड के एक सामंती परिवार से आते हैं। उनका बचपन पारम्परिक रीति-रिवाजों के साथ गुज़रा। प्रारम्भिक पढ़ाई इलाहाबाद के सेण्ट मेरी कॉन्वेण्ट में हुई पर पिता ने विशेष रूप से उनके लिए पंडित ब्रजवासी लाल पाण्डेय को अपनी परम्परा एवं हिन्दी भाषा के शिक्षण हेतु नियुक्त किया था। अपनी माता से तो उन्हें सहिष्णुता, सौम्यता, उदारता और परोपकार के संस्कार मिले ही, पर गुरु पं. ब्रजवासीलाल पाण्डेय ने अपने बाल शिष्य को 1937 में ही महात्मा गाँधी और तेजस्वी युवा पं. जवाहर लाल नेहरू के दर्शन करा उन्हें देशभक्ति की प्रेरणा दी। युवा श्री अर्जुनसिंह का स्वप्रेरणा से जो झुकाव, समाजवादी चिंतनधारा की ओर हुआ, शायद उसका ही प्रभाव यह हुआ कि इन्हें महात्मा गाँधी और प्रखर तेजस्वी युवा नेता नेहरू जी के व्यक्तित्व ने और उनके साहित्य ने गहरे तक प्रभावित किया।

एक पत्रकार से हुई चर्चा में अपने बचपन की याद करते हुए खुद श्री अर्जुनसिंह ने एक बार बताया— 'यह बहुत छोटे समय की बात है। मुझे स्मरण नहीं लेकिन दो-एक चीज़ें हैं । एक तो इलाहाबाद में जहाँ हमारी शिक्षा प्रारंभ हुई। जब मैं साढ़े छः-सात साल का था, सैण्ट मेरी कॉन्वेण्ट में पढ़ता था। वहाँ एक पूर्णतः अँग्रेजी कॉन्वेण्ट स्कूल था। उस समय तो अँग्रेजी राज्य अपनी चरम सीमा पर था। वह दूसरी ही दुनिया थी जिसकी आज कोई तुलना किसी से नहीं की जा सकती है। वहाँ हम लोग 'बोर्डर' की हैसियत से थे। यह नहीं कि पढ़ने जायँ और लौट आएँ । लेकिन पिताजी ने वहाँ से अनुमति लेकर प्रबंध किया था ताकि हम लोग अपनी संस्कृति से जुड़े रहें, कटें नहीं अपने भारतीय अस्तित्व से, एक विशेष अनुमति उन्होंने ली थी। हमारे गार्डियन कहिए, ट्यूटर कहिए, पं. ब्रजवासीलाल पाण्डेय को विशेष रूप से इलाहाबाद में रखा था ताकि वह रोज़ हम लोगों को एक घण्टा आकर, एक तो हिन्दी का ज्ञान कराएँ और बाकी अपनी परम्पराएँ बताएँ तथा सब धार्मिक ग्रंथों— रामायण, महाभारत, गीता का, का पाठ कराएँ। वह घण्टा जो बीतता था, वह हमारे जो उस वक़्त के परिवेश से बिल्कुल अनूठा एक घण्टा होता था जिसका वहाँ के स्थानीय वातावरण से कोई सामंजस्य नहीं था। लेकिन आज मैं सोचता हूँ अगर ऐसा न होता तो यह संभव था कि मेरा दृष्टिकोण एक ऑग्ल दृष्टिकोण हो जाता और हम लोग, जो भारतीयों को रट्स कहते हैं, उनसे शायद हम कुछ कट जाते।

इस बीच में घटित हुई एक घटना है जो और भी ज़्यादा याद रहती है। सन् 1937 में शायद दिसम्बर का महीना होगा, एक तारीख जो रैफ़र की जा सकती है, उनकी रिकॉर्डेड डेट है। कमला नेहरू अस्पताल का शिलान्यास करने गाँधीजी इलाहाबाद आए थे। हमें उस वक़्त गाँधीजी, नेहरूजी इन सब लोगों के बारे में सोचने का मौका नहीं मिलता था, एक तो वहाँ ऐसे स्कूल में थे, और उम्र के लिहाज़ से भी। लेकिन ये जो हमारे पं. ब्रजवासीलाल पाण्डेय थे, वे बहुत स्टॉच नेशनलिस्ट थे और जो स्वतंत्रता संग्राम था उससे वह हरदम अवगत रहते थे और हम लोगों को भी उससे अवगत कराते रहते थे। लेकिन उसकी व्याख्या और उसका दायरा है वह हमारे दिमाग में कभी फिक्स नहीं हुआ। तो उन्होंने पूछा, संयोग से गाँधीजी और पंडित नेहरूजी दोनों यहाँ आ रहे हैं तो क्या आप लोग वहाँ चलना चाहेंगे? हम तीन भाई हैं और तीनों भाई वहाँ थे। केवल इसलिए कि स्कूल से दो-ढाई घंटे बाहर रहना पड़ेगा, एक आकर्षण था और क्योंकि खाना वहाँ का करीब-करीब बहुत पसंद नहीं था। यह हुआ कि उस दो-ढाई घंटे को हम किसी रेस्ट्रॉ में जाकर समोसा वगैरह खाएँगे तो हमने कहा हम लोग ज़रूर चलेंगे। उन्होंने कहा हम ले तो चलेंगे लेकिन स्कूल से हम आपकी छुट्टी वहाँ के नाम से नहीं लेंगे। थोड़ा ताज्जुब हुआ जब इतने बड़े-बड़े लोग हैं, गाँधीजी के बारे में

इतना कहते रहते हैं, जवाहरलालजी के बारे में इतना कहते रहते हैं, तो उनके कार्यक्रम में ले चलने के लिए उनको गलत जानकारी देने की क्या ज़रूरत थी। एकदम से यह बात ठनकी। यदि कहा जाय तो देश की आज़ादी का संघर्ष हो रहा है उस संघर्ष से हम लोग कितनी दूर कटे हैं, यह एक अहसास हुआ। लेकिन कौतूहल की वजह से हम उस समय तो कुछ कह न सके, बाद में जब मैंने सोचा, यह पहला मौका था जब हमें उस उम्र में इस बात का अहसास हुआ कि यह ऐसी बात है जो बहुत महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है लेकिन ऐसी बात है जो उस संदर्भ में वहाँ के लोगों को बताने लायक नहीं है। खैर वह हम लोगों को लेकर गए। क्योंकि छोटे-छोटे बच्चे थे तो हरदम आगे बैठने का स्थान मिल जाता था। बीच में से रास्ता खुला था, हम लोग सबसे आगे डायस के नीचे और बहुत से बच्चों के साथ बैठे थे। आगे की पंक्ति में गाँधीजी आए और तीन सीढ़ियाँ थी मंच पर चढ़ने के लिए । पहली सीढ़ी चढ़ गए, दूसरी सीढ़ी चढ़ गए ठीक उनके पीछे पंडितजी जा रहे थे। जैसे ही तीसरी सीढ़ी चढ़ने लगे तो उनकी धोती जो कमर में खुसी रहती है वह छूट गई। इससे पहले कि वह नीचे गिरें पंडितजी ने लपककर उनको संभाल कर फिर से ठीक कर दिया। एक तो इतने बड़े आदमी की यह पोशाक, वह हम लोगों के लिए थोड़ा ताज्जुब सा लग रहा था और फिर यह अचानक हो गया, थोड़ी-सी वहाँ हँसी भी हुई, बच्चे तो बच्चे ही हैं फिर सबने बड़े सीधे तरीके से हम लोगों को देखा, फिर सब चुप हो गए। लेकिन उसमें दो चीज़ें हमारे दिमाग पर हुईं। एक तो यह गाँधीजी जो आगे-आगे चल रहे हैं, यही सबसे बड़े नेता होंगे, नेता शब्द आज मैं इस्तेमाल कर रहा हूँ, यह सबसे अग्रणी होंगे और दूसरे यह कि पंडितजी एकदम उनके पीछे हैं तो यह नंबर दो पर होंगे। वह जो घटना घटित हुई, पंडितजी एकदम तपाक से गए, पंडित जवाहरलाल नेहरू उनकी अगुआई में चल रहे हैं, कोई चीज़ खुल जाती है, धोती तक अस्त व्यस्त है तो वह उसको ठीक करते हैं और फिर एक मेण्टल-पिक्चर थी। दैट वाज माई फर्स्ट साइट ऑफ बोथ द लीडर्स। किसी न किसी रूप में वह घटना भी हरदम दिमाग में रही। जब फंक्शन खत्म हो गया, चलने लगे, उसी क्रम में नीचे आए तो हम लोग किनारे-किनारे खड़े हो गए तो एक सेकेण्ड के लिए गाँधीजी वहाँ रुके। किसी बच्चे का सर सहला दिया, किसी के गाल पर थप्पड़ मार दिया और जब मेरे सामने आए तो हम तो अपनी स्कूली ड्रेस में थे, कोट, पैंट और शर्ट, टाई पहने थे, तो सामने खड़े होकर उन्होंने हमारी टाई पकड़ ली और बोले एक शब्द भी नहीं। केवल टाई पकड़ ली ऐसे। मैं कुछ कह भी नहीं सका और आगे निकल गए। मुझे ऐसा लगा कि पूछना चाहते थे यह क्या है। खैर कोई बात नहीं हुई। जब मैं स्कूल से बाहर निकला दो साल बाद, दो साल तक वह बात हमारे दिमाग में रही। मैं यह समझ गया यह बात गाँधीजी को मेरा टाई पहनना पसंद नहीं आया। उसके बाद से आज तक मैंने टाई नहीं पहनी। मैं भूल ही गया टाई पहनना। कई ऐसे मौके आए जब लोगों ने कहा कि आपको इस ड्रेस पर टाई पहनना चाहिए तो मैंने कहा मुझे आदत नहीं। ये चीज़ें हैं, जो कभी जाने अनजाने अपना प्रभाव छोड़ जाती हैं। साढ़े 6-7 वर्ष की उम्र, कोई उम्र ही नहीं। यही है उस समय की बात।'

पचास के दशक की मध्य प्रदेश विधानसभा आज की अपेक्षा कहीं अधिक गरिमामय इसलिए थी कि उस सभा के बहुसंख्यक सदस्य वे लोग थे जो भारतीय स्वाधीनता के आन्दोलन के सक्रिय भागीदार थे और उनमें देश के प्रति समर्पण की भावना भरी हुई थी। स्वयं मुख्यमंत्री डॉ. कैलाशनाथ काटजू ही संत प्रकृति के प्रेरक व्यक्तित्व थे। इन्हीं दिनों वह घटना घटी जिसने नेहरूजी के प्रति मौजूद आस्था को श्री अर्जुनसिंह के मन में और ज़्यादा गहरा कर दिया। यह 1959 की बात है। हुआ यह कि उस वर्ष के बजट अधिवेशन में युवा विधायक श्री अर्जुनसिंह ने एक अभूतपूर्व सुझाव विधानसभा में प्रस्तुत किया कि सभा के समस्त माननीय सदस्यों को अपनी सम्पत्ति और आमदनी का लेखा-जोखा सदन में प्रस्तुत करना चाहिए और एक सच्चे प्रस्तावक के रूप में इन्होंने अपना सम्पत्ति संबंधी विवरण

विधानसभाध्यक्ष के पास भेज दिया। पता नहीं क्यों, उन दिनों की सोच के मुताबिक किसी ने भी इस सुझाव को, समर्थन देना तो दूर पसंद तक नहीं किया। यहाँ तक कि मुख्यमंत्री ने भी समर्थन नहीं दिया। क्षुब्ध श्री अर्जुन सिंह ने सीधे एक पत्र पूरे घटनाक्रम सहित पंडित नेहरू को लिख भेजा। पं. नेहरू ने इनसे तुरंत मिलने की इच्छा जताई और ये सपत्नीक उनसे मिलकर लौटे। उसी वर्ष अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी ने प्रस्ताव पारित कर अपने मंत्रियों, विधायकों आदि को सम्पत्ति का ब्यौरा देने को कहा। यह बहुत बड़ा नैतिक बल था जो इन्हें पंडितजी से प्राप्त हुआ। लगता है दोनों ओर से ही कोई अज्ञात आकर्षण था। तभी तो इससे भी पहले जब नेहरूजी से अचानक काठमांडू स्थित पशुपतिनाथ मंदिर में श्री अर्जुनसिंह की भेंट हुई थी, तो उन्होंने इन्हें रुद्राक्ष की माला उपहार में दी थी जो आज भी श्री अर्जुनसिंह के पास रहती है और जब परेशानी या मुसीबत के क्षण आते हैं, तो वे इसी से एक आत्मिक संबल प्राप्त करते हैं। नेहरूजी के व्यक्तित्व की छाप इतनी गहरी रही कि श्री अर्जुनसिंह को उसने नेहरूजी का जन्म-जन्मांतर का मुरीद बना दिया।

एक साक्षात्कार के दौरान पं. जवाहरलाल नेहरू के प्रति अपने अबूझ आकर्षण की बात को याद करते हुए कुँवर साहब ने अपना अविस्मरणीय संस्मरण सुनाया। उन्हीं के शब्दों में पंडित नेहरू से उनका आध्यात्मिक मिलन इस प्रकार हुआ था— 'पहली मुलाकात तो नहीं, पहला दर्शन मैंने आपको बताया जो हुआ था। मुलाकात मेरी एक दफा सन् 1953 में हुई जब वह दौरे पर आए थे रीवा। मैं प्रेसीडेंट था वहाँ कॉलेज का। मुझे उनको माल्यार्पण करने को कहा गया था। मंच पर भाषण देकर नीचे उतरे तो मुलाकात की थी, एक इन्ट्रॉडक्शन दिया किसी ने कि यह प्रेसीडेण्ट हैं, कॉलेज यूनियन के। उन्होंने अभिवादन स्वीकार किया। कोई बातचीत नहीं हुई। फिर जब मैं यहाँ आ गया विधानसभा में तो उस समय मैंने उनको एक पत्र लिखा कि यहाँ काँग्रेस ज्वाइन नहीं किया था वहाँ की परिस्थितियों को देखते हुए, सब अपने विचार व्यक्त करते हुए और जो कुछ मुझे आश्चर्यजनक लगा, जो मुझे सही नहीं लगा वह सब लिखते हुए। शुरू में ही मैंने अपना परिचय उनको दे दिया। मैंने बताया कि मैं कहाँ का रहने वाला हूँ और किसका लड़का हूँ। उसमें मैंने जो भी घटनाएँ हुईं थीं, वह सही-सही अंकित कीं। अंत में मैंने लिखा मैं आपसे भारत के प्रधान मंत्री की हैसियत से कुछ नहीं चाहता। कुछ आपसे पाना चाहता हूँ। यह मेरी इच्छा जरूर है कि आपके नेतृत्व में देश के लिए मैं सेवा करूँ, यह मेरी दिली इच्छा है लेकिन लगता है घटनाएँ और कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हमारी इस इच्छा को पूरा नहीं होने देना चाहतीं। जब चौथे दिन उनका उत्तर मुझे मिला। उत्तर में उन्होंने मुझे लिखा था, मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ा, विचारों से बहुत अच्छा लगा और तुम मिलना चाहते हो तो अगली तारीख दे दी थी कि इन तारीखों में दिल्ली आ सकते हो, अगर मुझे टाइम मिला तो मैं मिल लूँगा। मैं वहाँ पहुँच गया और चार.....चार दिन के बाद। हम और हमारी पत्नी दोनों साथ गए मिलने उनसे तीनमूर्ति भवन में। ऊपर से नीचे तक उन्होंने हमें देखा और फिर कहते हैं अच्छी बात है, काँग्रेस में रहकर काम करो। मैंने कहा मैं तो अभी इंडिपेंडेंट ग्रुप का लीडर हूँ। उन्होंने कहा वह तो लीडरी है न, वहाँ काम कुछ नहीं होगा। काम तो काँग्रेस के अंदर होगा। यह तो मैं जानता हूँ। इसलिए मैंने आपको पत्र लिखा। उन्होंने कहा ठीक है, काटजू भाई को, उनको भाई कहते थे, कह दूँगा। फिर पूछने लगे तुम्हारी और क्या हॉबीज है? हमारी पत्नी चुपचाप बैठी थीं। उनकी तरफ मुखातिब होकर पूछा, तुम क्या करती हो? तो उन्होंने तुरंत कहा मैं तो बच्चों को पालती हूँ। वह भी हमारा काम जरूरी है। तुम और कुछ नहीं करना चाहती? शायद उन्होंने पूरी तरह से सुना न हो, जो भी होगा। उन्होंने कहा मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए। एकदम से हाथ बढ़ा कर पंडितजी ने उनको जोर से पकड़ लिया। कहा, यह मैं कहाँ कह रहा हूँ तुम मुझ से कुछ चाहती हो। जो कुछ तुम कर रही हो वह कोई मामूली चीज नहीं है। इतनी बात हुई फिर हम लोग चले आए। काटजू साहब से बातचीत की। आठ

महीने बाद फिरोज़ गाँधी की मृत्यु हुई। पंडितजी इलाहाबाद आए, उनके क्रियाकर्म के लिए। जब आने की तारीख पहले से तय हुई तो मैंने उनको लिखा-हम लोग दर्शन करने इलाहाबाद आना चाहते हैं, खास तौर से हम अपने बच्चों को लाना चाहते हैं। हमारे बच्चे भी वहाँ पढ़ते थे, जहाँ हम लोग पढ़ते थे, इलाहाबाद में ही। उनका उत्तर आया, हाँ, ज़रूर तुम आओ, मैं कोशिश करूँगा। तो गए हम लोग। सन् 63 की बात है जहाँ तक मुझे याद है, 62 होगा। हम लोगों को ले जाकर बरामदे में बैठा दिया गया। वहाँ सबसे पहले मेरी मुलाकात श्री जगतपाल सिंह से हुई, जो उनके साथ काम करते थे। उन्होंने पहचाना भी, उनको यह अंदाजा हो गया था कि कहाँ से यह लोग आए हैं। हम लोग करीब आधा-पौन घंटे बैठे रहे, पंडितजी जहाँ भी रहे हों। जब वह उधर से आए, मेरे तीनों बच्चे हमारे साथ थे, उन्होंने देखा तो कहने लगे तुम लोग कितनी देर से बैठे हो? मैंने कहा कोई ज्यादा नहीं। उन्होंने पूछा फिर भी? मैंने कहा एक घंटा हो रहा है। उन्होंने कहा बच्चों को एक घंटे तक तुमने भूखे बैठाए रखा? मैंने कहा आपके दर्शन के लिए एक-दो घंटे और बैठना पड़ता तो क्या बुरा था। कहा, नहीं ऐसा नहीं। किसी को पुकारा और कहा कुछ फल दो इनको खाने के लिए। जो मेरा सबसे छोटा लड़का था, राहुल उस वक्त मुश्किल से 7-8 वर्ष का था। उसने कहा हमको तो बहुत भूख लगी है। उन्होंने कहा तुम दो केले खाओ। फिर यही हुआ। मैंने कहा मैं आपसे और कुछ तो नहीं, इन लोगों को मिलाना चाहता था। उन्होंने पूछा कहाँ पढ़ते हैं? इतने में कुछ ऐसा मुझे लगा यह जल्दी में हैं। मैंने और वाइफ ने कहा ऐसे मौके पर आए हैं, हम सब बहुत दुःखी हैं। क्या कुछ शब्द इन्दिराजी से हम कह सकते हैं? तुरंत गए और उनको बुलाकर लाए। उनके साथ राजीवजी भी आए। वहीं पर न जाने कैसे पंडितजी के मन में बात आई। उन्होंने बताया ये लोग रीवा से आए हैं, फिर मुड़कर इन्दिराजी को कहते हैं, यह महाशय, "महाशय" वर्ड मुझे याद है, महाशय अब कॉंग्रेस में हैं और यह तुम्हारे साथ काम करना चाहते हैं। इन्दिराजी देखकर मुस्करा दीं, वह क्या उत्तर देतीं । फिर हमने कहा, एक तस्वीर लेनी है। तस्वीर ली सब की खड़े हो कर। उसमें राजीवजी भी हैं, संजय भी हैं, पंडितजी भी हैं, इन्दिराजी भी हैं, मैं ही नहीं हूँ क्योंकि मैं तस्वीर लेने वाला था।' नेहरूजी के प्रति श्री अर्जुनसिंह के अन्तर्मन में उपजी यह आस्था आज तक सतत् जीवनधारा की तरह प्रवाहित है। नेहरू-गाँधी परिवार की पीढ़ियाँ बदलीं मगर श्री अर्जुनसिंह की निष्ठा कभी रंच मात्र भी विचलित नहीं हुई। नेहरू पुत्री, भारतीय राजनीति के वृहदाकाश की सर्वाधिक तेजस्वी एवं विवादग्रस्त नेता श्रीमती इन्दिरा गाँधी के प्रति ही नहीं बल्कि उनके पुत्र श्री राजीव गाँधी के प्रति भी श्री अर्जुनसिंह का भावनात्मक जुड़ाव बेज़ोड़ रहा है। आज भी वे कॉंग्रेस और श्रीमती सोनिया गाँधी के अति विश्वस्त एवं सर्वाधिक निकटस्थ राजनेता हैं।

कॉंग्रेस के अधिकृत प्रत्याशी के रूप में श्री अर्जुनसिंह की राजनैतिक सार्वजनिक जीवन यात्रा 1962 से शुरू होती है जो आजतक लगभग लगातार जारी है। तत्कालीन परिस्थितियों की बाध्यताकारी हलचलों और प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप हुए विचलन का एक संक्षिप्त काल खण्ड इसमें शामिल है। किंतु उसके दौरान भी वे स्वयं को सच्चा और वास्तविक कॉंग्रेसी ही घोषित करते रहे। उन्होंने नए राजनीतिक दल की स्थापना भी की तो उसे भी 'इन्दिरा-कॉंग्रेस' (नारायण दत्त तिवारी गुट) के नाम पर ही 'कॉंग्रेस' नाम दिया। श्री अर्जुनसिंह के विराट व्यक्तित्व की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे उन गिने-चुने राजनेताओं में से है, जिन्होंने अपने राजनैतिक जीवन में सांगठनिक ही नहीं, सत्ता के विभिन्न पदों पर भी अत्यन्त सफलतापूर्वक कार्य किया। वे राज्य सरकार में राज्यमंत्री, मंत्री और मुख्यमंत्री रहे। यही क्यों एक समय उन्होंने विपक्ष के नेता/नेता प्रतिपक्ष का पद भी संभाला। वे केन्द्रीय मंत्री बने। उन्होंने पंजाब प्रदेश के राज्यपाल का पद भी सुशोभित किया। केन्द्र में सदन के नेता की जिम्मेदारी भी उन्होंने सफलतापूर्वक निभाई। पार्टी और देश हित में श्रीमती इन्दिरा गाँधी, श्री राजीव गाँधी और आज श्रीमती सोनिया गाँधी ने जो भी जिम्मेदारी

श्री अर्जुनसिंह को सौपी उसे इन्होने बिना हील-हुज्जत के पूरी निष्ठा और कर्तव्यपरायणता के साथ सिर माथे लिया और पूरी क्षमता के साथ निभाया। इनके नेतृत्व में किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति और उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति को शत-प्रतिशत गारंटी का पर्याय माना गया। आज भी ऐसा ही माना जाता है। इनकी निष्ठा, विश्वसनीयता और सफलता कभी भी संदिग्ध नहीं रही।

श्री अर्जुनसिंह ने अपने जीवन में पं. नेहरू के आदर्शों और विचारों को आत्मसात ही नहीं किया बल्कि उन्हें व्यावहारिक स्तर पर मूर्त रूप देने का भी महती प्रयास किया। विवेचना के शिखर बिन्दु पर पहुँचकर कभी न कभी मध्यप्रदेश का और देश का इतिहास यह गवाही अवश्य देगा कि समाज के दलित, दमित और कमज़ोर वर्गों के हित में समाजवादी चिंतन धारा के आदर्शों को साकार करने हेतु अनेक निर्णय लेने वाले एक मात्र मुख्यमंत्री हैं श्री अर्जुनसिंह। इतिहास यह गवाही आज भी दे सकता है और इस दिशा में अभी तक देश भर में श्री अर्जुनसिंह का कृतित्व ही बेमिसाल रहा है। शहरी क्षेत्रों में गरीब झुग्गीवासियों को झुग्गियों का मालिकाना हक़ देना, मेहनतकश रिक्शा चालकों को रिक्शा मालिक बनाने, छोटे किसानों के तकाबी कर्जों की सम्पूर्ण बकाया राशि माफ़ कर देने, एल.डी.सी. की ही तरह एल.डी.टी. अर्थात् लोअर डिव्हीजन टीचर का पदनाम बदलकर सहायक शिक्षक करने तथा इन शिक्षकों का वेतन, लिपिक वर्ग से ऊँचे वेतनमान में रखने, फुटपाथ पर, हाथठेलों, गुमठियों और रेवड़ियों के सहारे छोटा-मोटा दैनिक कारोबार करने वाले पान, चना-चबेना, मूँगफली, सब्जी बेचने वालों, जूतापालिश-जूता मरम्मत, चिमनी लालटेन की मरम्मत करने वाले लाखों छोटे कारोबारी लोगों का निःशुल्क पाँच-पाँच हजार का दुर्घटना बीमा शासन की ओर से कराने का श्रेय केवल श्री अर्जुनसिंह को ही है। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई, सिपाही और ग्रामीण कोटवार को अधिक वेतन सुविधा तथा मृत्यु होने पर पारिवारिक संरक्षण देने का कार्य भी सर्वप्रथम आपने ही मध्यप्रदेश में सम्पादित किया।

झुग्गी-झोपड़ीवासियों को ही नहीं, नगर के निवासियों तथा नगरों के विकास के लिए नगर विकास प्राधिकरण और विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण का निर्माण और गठन किया। धार्मिक और ऐतिहासिक नगरों का मास्टर प्लान तैयार कराया गया। राजधानी भोपाल के प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति आपका अटूट आकर्षण रहा। आपके ही मार्गदर्शन में तत्कालीन आवास एवं पर्यावरण मंत्री श्री विष्णु राजोरिया ने 1988 में मध्य प्रदेश विधानसभा में प्रदेश की नवीन आवास नीति को सर्वसम्मति से पारित किया। दिल्ली में आवास मंत्रियों के सम्मेलन में तत्कालीन केन्द्रीय आवास मंत्री श्रीमती मोहसिना किदवई ने मंच से न केवल मध्यप्रदेश की आवास नीति की मुक्तकंठ से सराहना की वरन् उसी दिन दिल्ली से फोन कर तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंह को बधाई भी दी। नई आवास नीति के साथ ही भोपाल में कमला पार्क के पास से खानूगाँव तक ओव्हर ब्रिज बनाने, वन विहार से मनुआ भाण्ड की टेकरी (जैन मंदिर) तक रोप-वे बनाकर पर्यटकों को आकर्षित करने, कश्मीर की झील के शिकारे बड़े तालाब में चलाने, न्यू मार्केट कम्यूनिटी हॉल को सेन्ट्रली एअर कण्डीशण्ड अठारह मंजिला कॅमर्शियल कॉम्पलेक्स बनाने, सम्पूर्ण साउथ और नॉर्थ टी.टी. नगर के एक मंजिले आवासगृह तोड़कर उसकी जगह नीचे शॉपिंग और ऊपर तीन मंजिले आवासीय परिसर बनाने की योजना के स्वरूप को आपने स्वीकृति दी थी। आर्किटेक्ट श्री उल्हास वल्लभ, बी.डी.ए. के एस.ई. श्री जैन, टाउन प्लानिंग डायरेक्टर श्री बापट तथा नगर निगम के तत्कालीन कमिश्नर श्री डी.पी. तिवारी ने इन योजनाओं की कल्पना में रंग भरने का कार्य आरंभ भी कर दिया था। किंतु जनवरी, 1989 में श्री अर्जुनसिंह के त्यागपत्र के बाद सभी योजनाएँ अफसरशाही के बियाबान में एक युग (12 वर्षों) तक खोई रहीं। जब इन योजनाओं को श्री दिग्विजय सिंह ने अमलीजामा पहनाना शुरू किया तब इन सभी का श्रेय लेने के लिए भाजपा के बड़बोले नेताओं ने अखबारों

के जरिए भले ही श्रेय लेने का भ्रम पैदा कर दिया हो और संबन्धित अधिकारी भी संकोच या मर्यादा में खामोश रहे हों, किंतु सत्य-तथ्य के आइने में विकास की जिस तस्वीर की रूपरेखा श्री अर्जुनसिंह के कार्यकाल में उनके विश्वस्त सहयोगी आवास एवं पर्यावरण मंत्री श्री विष्णु राजोरिया ने तैयार की थी उसीका स्वरूप पूर्ण आकार लेकर आज राजधानी भोपाल के प्राकृतिक सौन्दर्य में चार चाँद लगा रहा है।

झुग्गी विहीन राजधानी की घोषणा इस नवीन आवास नीति का सबसे प्रमुख मुद्दा था। इस योजना की परियोजना, नक्शे, रूपरेखा और बगैर एक पैसा खर्च किए सभी झुग्गीवासियों को सर्वसुविधायुक्त पक्के आवास देने की योजना आज भी लंबित है। और ऐसे ही अनेक साहसिक निर्णय लेने की जोखिम सिर्फ़ श्री अर्जुनसिंह ने उठाई तथा अपने निर्णयों को सफलतापूर्वक कार्यान्वित भी किया। उनके ऐसे क्रांतिकारी निर्णयों ने उन्हें 'गरीबों के मसीहा' जैसी उपाधियों से अलंकृत किया। प्रदेश की कमज़ोर वर्ग से आने वाली जनता के बीच जाकर आप आज भी श्री अर्जुनसिंह के प्रति उनकी सम्मान भावना को महसूस कर सकते हैं।

सन् 1984 में अपनी सरकार के चार साल पूर्ण होने के अवसर पर प्रदेश के लोगों को सम्बोधित करते हुए श्री अर्जुन सिंह अपने संभाषण में स्वर्गीय पं. नेहरू को याद करना भूले नहीं— उन्होंने कहा— "हमारे प्रदेश की आधी से ज़्यादा जनसंख्या हरिजन, आदिवासी और पिछड़ी जाति की है।.....राष्ट्रनायक पं. जवाहरलाल नेहरू ने देश के किसानों को सदियों के शोषण से मुक्ति दिलाई थी और उन्हें अपनी भूमि का मालिक और अपने श्रम का खुद फायदा लेने का अधिकार दिलाया था और आदरणीय श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने न्यूनतम मूल्य की नीति को लागू करके व आधुनिक कृषि के लिए साधन उपलब्ध कराके किसानों को इस बात के लिए सक्षम बनाया कि वे पूरे देश की जनता के लिए पर्याप्त खाद्यान्न पैदा कर सकें। फिर भी हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि प्रदेश के किसानों का आर्थिक आधार अभी भी कमज़ोर है और प्रकृति का प्रकोप कभी-कभी उसे और भी क्षीण कर देता है।.....प्रदेश के कुल 56 लाख खातेदार हैं, इनमें से 42 लाख खातेदारों के पास 10 एकड़ या उससे कम ज़मीन है। 30 मार्च, 1974 को इनके ऊपर करीब 37 करोड़ 75 लाख रुपये की राशि तकाबी की बकाया थी। यह पूरी राशि माफ की जा रही है। .....शासन का यह प्रयास होगा कि ऋण-मुक्ति का प्रमाणपत्र किसान भाइयों को राष्ट्रनायक पं. नेहरू के अगले जन्म दिवस 14 नवम्बर, 1984 तक प्रदान कर दिया जाए।"

श्री अर्जुनसिंह एक व्यक्ति के रूप में और एक प्रदेश के सर्वोच्च प्रतिनिधि के रूप में नेहरू-गाँधी परिवार के प्रति अपनी निष्ठा की सार्वजनिक घोषणा करते हुए कई बार परिलक्षित होते हैं। वैसे यह कोई अकेला अथवा अंतिम अवसर नहीं है। भीड़ भरी सभा में, मंचों पर जब-जब भी उन्हें उचित अवसर प्रतीत हुआ है, वे अपनी इसी निष्ठा और आस्था की सार्वजनिक घोषणा करते रहे हैं।

श्री अर्जुनसिंह की चरित्रगत विशेषता है कि वे शब्दों को तौल कर और सधे स्वर में बोलते हैं तथा अपने अभिप्राय को बहुत ही स्पष्ट रूप से सामने रखते हुए मूल वास्तविकताओं पर कोई आवरण रखना उन्हें गवारा नहीं है। उनके मुख्य मंत्रित्वकाल में ही प्रदेश की रजत जयंती मनाई गई। इसी अवसर पर एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना यह हुई कि श्रीमती गाँधी की प्रेरणा से निर्मित 'भारत भवन' का उद्घाटन करने के लिए श्रीमती गाँधी भोपाल पधारीं। भारत भवन के बारे में सब जानते हैं। यह बात अलग है कि कालान्तर में भारत भवन अपने निर्धारित उद्देश्यों की वास्तविक पूर्ति आज तक नहीं कर सका और इसकी प्रशासन-व्यवस्था हमेशा विवादों के घेरे में ही बनी रही, तथापि इसमें संदेह नहीं कि भारत भवन की परिकल्पना इसे कलाओं का एक आत्मीय घर बनाने की थी। उद्घाटन समारोह वास्तव में श्रीमती गाँधी की गरिमा के अनुरूप ही आयोजित किया गया था और उसमें देश के ही नहीं विदेशों के

भी कई नामी-गिरामी कलाकार उपस्थित थे। इन्दिराजी का स्वागत श्री अर्जुनसिंह ने अपने भावना, प्रधान सशक्त एवं आत्मीय भाषण से किया। उनके शब्द आज भी भारत भवन के विस्तृत प्रांगणों में गूँजते से लगते हैं। तेरह फरवरी, 1982 के दिन भारत भवन के नवनिर्मित परिसर में कलाकारों और प्रदेश व देश के कला प्रेमियों का अद्‌भुत जमावड़ा था। ऐसी बौद्धिक साक्षी में श्री अर्जुनसिंह ने जो भाषण आरंभ किया, वह इस प्रकार था—

"आज हमारे लिए बड़े गौरव का दिन है। कलाओं के एक नए केन्द्र का उद्‌घाटन आज प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा होने जा रहा है। हमारी संस्कृति के बुनियादी मूल्यों और जीवन शक्ति की वे सबसे प्रखर प्रतीक है। आज जब भोपाल में बड़े तालाब के किनारे हम कलाओं के संरक्षण और सम्मान की एक नई शुरुआत करने जा रहे है, तो हमारा यह चाहना बहुत स्वाभाविक है कि उसे इन्दिराजी अपनी उदारता और आशीर्वाद से प्रारंभ करें। इस नए केन्द्र का नाम 'भारत भवन' है और भारत के कलाकार समुदाय को इसे इन्दिराजी समर्पित करें इससे अधिक सार्थक संयोग दूसरा हो ही नहीं सकता। हम मध्य प्रदेश के नागरिकों और कलाकारों के साथ श्रीमती गाँधी का अत्यन्त कृतज्ञता से हार्दिक स्वागत करते हैं। इस तरह के प्रयत्न के पीछे भी उनकी महान् प्रेरणा रही है। भारत की एकता उसके हर अंचल में प्रतिबिम्बित हो, यह एक तरह से सभी मानते हैं। मध्यप्रदेश तो फिर देश का मध्यवर्ती राज्य है। यह इन्दिराजी के ही प्रोत्साहन का प्रतिफल है कि हम कलाओं के माध्यम से सारे देश की विविधता और एकता का एक केन्द्र आज यहाँ शुरू कर पा रहे हैं। यह और भी सौभाग्य की बात है कि यह उद्‌घाटन मध्यप्रदेश के रजत जयंती वर्ष के दौरान हो रहा है।"

अपने उद्‌घाटन भाषण में श्रीमती गाँधी ने भी मध्यप्रदेश के प्रति अपनी सहज आत्मीयता का प्रदर्शन कई बार किया। उन्होंने कहा— "हमारे लिए यह बहुत गौरव का दिन है।.....आज हम यहाँ जमा हैं और शायद ही कभी पहले इस प्रकार का सम्मेलन हुआ होगा, जब इतने बड़े कलाकार भारत के, कुछ बाहर के यहाँ पर जमा हुए हैं। भारत भवन का उद्‌घाटन हुआ है।

बहुत दिन पहले भी मेरी कल्पना थी कि इस प्रकार के भवन हर प्रदेश में बनें, जिससे कि इस देश में जो योग्यता है, गाँव-गाँव में है, पहाड़ों में है, जंगलों में है, रेगिस्तान में है, उसको किस प्रकार से हम निकलने का, फूलने का अवसर दे सकें।.....मैं फिर भी धन्यवाद देना चाहती हूँ मुख्यमंत्रीजी और दूसरों को जिन्होंने इस मौके पर मुझे यहाँ शरीक होने का अवसर दिया। मेरी आशा तो थी कि मैं कुछ ज़्यादा समय तक यहाँ रह सकूँ और ज़्यादा देख सकूँ लेकिन ऐसा जीवन है कि हर काम जल्दी में ही होता है।.....मुझे भारत भवन का उद्‌घाटन करते हुए बहुत खुशी है।"

भारत भवन की बात चली है तो याद आती है उसके प्रथम गठित न्यास की। एक महत्त्वपूर्ण सदस्य श्रीमती पुपुल जयकर की जो कि कला जगत की बहुत बड़ी हस्ती तो थीं ही, श्रीमती इन्दिरा गाँधी के अत्यन्त निकट भी थीं। उन्होंने अपने भाषण में यह उद्‌घाटित किया कि— "जहाँ तक मुझे याद है मेरी श्री अर्जुनसिंह से मुलाकात श्रीमती गाँधीजी के घर पर ही हुई थी। वे (श्रीमती गाँधी) बोलीं— क्या तुम अर्जुनसिंहजी से पहले कभी मिली हो? ये उन विरले राजनीतिज्ञों में से है, जिनके मन में संस्कृति के प्रति गहरा सम्मान है। और जो उसकी फ़िक्र करते है। तुम्हे उनसे मिलना चाहिए।" श्रीमती जयकर विद्वान महिला होने के अलावा श्रीमती गाँधी के अत्यन्त निकटस्थ भी थीं और इन्दिरा गाँधी नेहरू परिवार के प्रति श्री अर्जुनसिंह की निष्ठा की वे एक प्रमुख गवाह भी रहीं। ज़ाहिर है वे श्री अर्जुनसिंह की प्रशंसक बनती गई। उन्होंने बताया कि एक विशुद्ध सांस्कृतिक संस्था के अध्यक्ष के रूप में श्री अर्जुनसिंह को कार्य करते देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ था। श्रीमती जयकर के अनुसार श्री अर्जुनसिंह ने न्यास के सदस्यों पर कभी भी अपनी

राजनीतिक मंशाएँ थोपने का कोई प्रयास नहीं किया। उनके मुताबिक यही गुण श्रीमती गाँधी में था। यह तथ्य जगजाहिर है कि परस्पर पसंदगी की बात उन्हीं दो लोगों के बीच होती है जो किसी न किसी रूप में समान धर्मा होते हैं। संस्कृति और कला के प्रति जो अनुराग और सम्मान की भावना, उन्हें राजनीति से अलग रखकर देखने की जो दृष्टि श्रीमती इन्दिरा गाँधी के पास थी, वही दृष्टि श्री अर्जुनसिंह की भी रही। इस बात की पुष्टि श्रीमती पुपुल जयकर ही नहीं, देश के अनेक कलाकार, कला प्रेमी और कला समीक्षक आज भी कर सकते हैं। श्रीमती जयकर ने तो एक बार कहा कि "मै अपने जीवन में दो या तीन ही राजनेताओं से मिली हूँ जो संस्कृति के क्षेत्र में, अपने राजनैतिक पूर्वाग्रहों को छोड़कर जा सकते हैं। मैं यह कह रही हूँ कि श्री अर्जुनसिंहजी, ठीक रास्ते पर जा रहे थे।"

श्री अर्जुनसिंह ने भारत भवन के न्यास के अध्यक्ष पद से स्वेच्छा से त्यागपत्र दे दिया और तब श्रीमती पुपुल जयकर न्यास की अध्यक्ष रहीं। अध्यक्ष पद से श्री अर्जुनसिंह स्वयं त्यागपत्र तो दे सकते थे मगर उन्हें हटाया नहीं जा सकता था, ऐसा प्रावधान न्यास के गठन के साथ बने उसके संविधान में बताया जाता है। श्री अर्जुनसिंह को इस न्यास का आजीवन अध्यक्ष ट्रस्टी बनाया गया था लेकिन अपनी आदर्श नेता श्रीमती इन्दिरा गाँधी का नाम भारत भवन से जुड़े होने की वजह से, आलोचकों की पूर्वाग्रहपूर्ण आलोचना को समाप्त करने की भावना से शुद्ध जनहित में उन्होंने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया। हालाँकि भारतीय जनता पार्टी ने भी अपने ढंग से, अपनी रुचि के प्रशासक/निर्देशक के संरक्षण में भारत भवन को संचालित करने की कोशिश की, मगर उन्हें सफलता नहीं मिली। श्रीमती जयकर ने तो भाजपा नेताओं (विशेषतः, भाजपा के श्री सुंदरलाल पटवा) का नाम लेकर लिखा है कि वे इतने दुर्भावना- ग्रस्त थे कि उन्होंने यह कह कर भारत भवन को समस्त शासकीय सहायता देना बंद करा दिया था कि जब तक श्री अर्जुनसिंह अध्यक्ष पद पर हैं, भारत भवन को आर्थिक सहायता दी ही नहीं जाएगी। यह ओछी राजनीति का एक शर्मनाक उदाहरण है। मगर यह मानना ही पड़ता है कि रचनात्मक कार्यों में बिना राजनैतिक भेदभाव के अधिक उदारता से सभी को सहायता देना काँग्रेस जैसी पार्टी ही कर सकती है, यह उसकी राष्ट्रीयता की भावना के अनुरूप है। खैर यह श्री अर्जुनसिंह के त्वरित और साहसिक निर्णय लेने की क्षमता का भी प्रमाण है। श्रीमती इन्दिरा गाँधी ऐसे ही लोगों को ज़्यादा तरजीह देती थीं, जो सक्रियता के उनके पैमाने पर खरे उतरते हों।

नेहरू-गाँधी परिवार के प्रति श्री अर्जुनसिंह की निष्ठा उनके सुदीर्घ राजनैतिक जीवन में कदम-कदम पर झलकती है। मुख्यमंत्री के रूप में प्रथम शपथ ग्रहण के बाद वल्लभ भवन में उच्च प्रशासनिक अधिकारियों की बैठक को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा— "जब शक्ति और कल्पनाशीलता दोनों का संगम होता है तब राष्ट्र आगे बढ़ता है। यह हमारा सौभाग्य है कि स्वतंत्रता के पिछले 34 वर्षों में बहुत समय तक राष्ट्र का नेतृत्व ऐसे लोगों के हाथों में रहा है जो शक्तिशाली भी थे और दूरदृष्टि सम्पन्न भी-कल्पनाशील भी। यही कारण है कि इतने कम समय में भारत ने इतनी तरक्की की, जिसकी मिसाल किसी अन्य देश के इतिहास में मिलनी मुश्किल है।"

वे अपने अधिकारियों पर भी यह स्पष्ट करना चाहते थे कि उनके लिए देश की प्रधान मंत्री श्रीमती गाँधी का महत्त्व क्या है? बड़े सधे और सटीक शब्दों में वे इसका आभास इस प्रकार देते दिखाई पड़ते हैं— "श्रीमती गाँधी ने हमें एक कार्यक्रम दिया है और एक निश्चित दिशा-निर्देश भी और चूँकि उनकी मनीषा इतिहास की पदचापों के प्रति संवेदनशील है इसलिए उन्होंने सचेत भी किया है कि देश को सशक्त बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए और अगर हम देश की प्रगति चाहते हैं तो हमें क्या नहीं करना चाहिए।"

इसी तारतम्य में अपनी बात को और अधिक स्पष्टता देने का प्रयास करते हुए वे अधिकारियों से कहते हैं— "यहाँ आपको बुलाने और यह सब कहने के पीछे, जो कुछ किया गया है या जो नहीं किया गया है, उसका

कोई हाथ नहीं है। वास्तव में प्रेरणा यह है कि स्वयं अपने से ही संतुष्ट नहीं हूँ।" और इस बिन्दु पर आकर उनकी चिन्ता अपने एकमात्र लक्ष्य श्रीमती गाँधी की संतुष्टि की ओर पहुँचकर पुनः पुंजीभूत हो जाती है।

उन्हें अपनी नेता श्रीमती गाँधी की छवि की अधिक चिन्ता है। वे चाहते हैं कि जनता ने जिस प्रकार भारी मतों से और स्पष्ट बहुमत देकर पराजित श्रीमती गाँधी का राजनैतिक पुनरुद्धार किया तो श्रीमती गाँधी की भी यही कोशिश होनी चाहिए कि जनता की आस्था टूटने न पाए। इस बात के लिए स्वयं श्रीमती गाँधी भी निश्चय ही प्रयासरत होंगी किंतु हमारे लिए तो देखने की बात यह है कि श्रीमती इन्दिरा गाँधी की अनुपस्थिति में उनकी छवि और उनके द्वारा दिए गए तमाम अनुदेशों का पालन बेहतर बनाने की गहरी चिन्ता श्री अर्जुनसिंह करते दिखाई देते हैं। अपने अधिकारियों को वे कहते हैं— "मैं समझता हूँ कि जनता ने जो अधिदेश, जो मैनडेट श्रीमती गाँधी को दिया है और उसके द्वारा हम सबको, उसका समुचित कार्यान्वयन नहीं हो रहा है। मैं समझता हूँ हमें जो कुछ करना था उसे हम दृष्टि से ओझल करते जा रहे है। सत्ता में आना या सत्ता से बाहर जाना कुछ लोगों के लिए यह एक अंतिम ध्येय हो सकता है लेकिन मेरे लिए नहीं। मेरे शिक्षक ने तो मुझे यही सिखाया कि वही व्यक्ति सुखी होता है जिसके पास रोटी के एक टुकड़े का इन्तज़ाम सदा के लिए हो। यही मेरा आदर्श वाक्य है और सदा से रहा है। जो समय हमें दिया गया है, वह इसके लिए नहीं है कि हम अपने को और महिमा मंडित कर लें या और प्रभावी हो जाएँ या और शक्तिशाली हो जाएँ, यह जो समय हमें मिला है वह इसलिए कि हम जो उचित समझते हैं वह करें और इस तरह करें। कि उसमें हमें सभी का सहयोग प्राप्त हो, उनका भी जो हमारे जबरदस्त विरोधी हैं। कम-से-कम इतना तो करें ही कि जो लक्ष्य हमारी सरकार के सामने, हमारी नेता तथा हमारी पार्टी ने रखा है उसके संबंध में हम व्यापक जनसमर्थन और जागरूकता पैदा कर सकें।"

यह सब किसलिए था? इसकी एक ही वजह थी कि प्रचंड बहुमत से जब श्रीमती इन्दिरा गाँधी का पुनरागमन प्रधानमंत्री पद पर हुआ उस समय मध्यप्रदेश की प्रादेशिक काँग्रेस की राजनीति काफी विभाजित थी और हर व्यक्ति प्रदेश के नेतृत्व के बारे में कुछ अलग ही भविष्यवाणी करता दिखाई देता था। काँग्रेस विधायक दल की गुटीय शक्ति परीक्षण सम्बन्धी बैठकों में एक बारगी श्री अर्जुनसिंह की स्थिति डगमगाती दिखाई पड़ रही थी। लेकिन जब अस्पष्ट परिस्थितियों में अचानक निर्णय श्री अर्जुनसिंह के पक्ष में हो गया था। पार्टी की विधिवत् बैठक जब बुलाई गई तो आदिवासी नेता शिवभानु सोलंकी ने श्री अर्जुनसिंह के नाम का प्रस्ताव रखा और वे दल के नेता तथा मुख्यमंत्री बन गए। हालाँकि उन दिनों सुनने में यह आया था कि विधायकों के अधिक वोट तो शिवभानु सोलंकी के पक्ष में जा रहे थे। यह बात शीशे की तरह साफ़ थी कि श्री अर्जुनसिंह को जो चांस मिल रहा था वह श्रीमती गाँधी के प्रति उनकी एकाग्र निष्ठा का ही परिणाम था। केन्द्र से पर्यवेक्षक होकर आने वालों के रूप में आए थे पार्टी कोषाध्यक्ष श्री सीताराम केसरी और श्री एच.के.एल. भगत। कुछ लोगों का कहना है कि यह सब कुछ श्रीमती गाँधी के निर्देशानुसार ही किया गया था। वे विद्याचरण शुक्ल से उन दिनों कुछ नाखुश थीं। बहरहाल, श्री अर्जुनसिंह तब मुख्यमंत्री और श्री सोलंकी उपमुख्यमंत्री बने।

श्री अर्जुनसिंह को प्रदेश का सर्वाधिक सफल एवं दूरदर्शी कूटनीतिज्ञ माना जाता है। लेकिन वे ऐसे व्यक्तित्व के मालिक हैं, जिनमें अद्‌भुत सहनशीलता है। मितभाषी श्री अर्जुनसिंह स्वयं पर हुए भारी-से-भारी प्रहार को भी बड़ी खिलाड़ी भावना के साथ मुस्कराकर झेल जाते थे। उनके विरोधी उनकी मुस्कान से भयग्रस्त होते देखे गए हैं। उनकी अत्यन्त शालीन, शिष्ट और सहज टिप्पणियों के अनेक उदाहरण दिए जाते हैं, जिनसे वे ऐसा उत्तर दे देते है कि आक्रमक व्यक्ति तिलमिला जाता है और शिकायत भी नहीं कर पाता। प्रसंगवश दो घटनाएँ ली जा सकती है। एक

काँग्रेस के ही श्री गुलाबचंद तामोट से सम्बन्धित है, जबकि दूसरी एक वरिष्ठ केन्द्रीय मंत्री से। तामोटजी से सम्बन्धित घटना राज्य विधानसभा की है, जब पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र मुख्यमंत्री थे। श्री अर्जुनसिंह के पिताजी के बारे में, 'मुँहफट' कहलाने वाले तामोटजी ने कुछ अपमानजनक टिप्पणी कर डाली। कोई भी होता तो ऐसी स्थिति में आपे से बाहर हो सकता था लेकिन श्री अर्जुनसिंह ने शांत स्वर में कहा—अध्यक्ष महोदय, तामोटजी को अपना पिता चुनने का अधिकार मिला होगा। पर मुझे तो नहीं मिला। तामोटजी की हालत का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। दूसरी घटना में वरिष्ठ केन्द्रीय मंत्री महोदय ने भद्दी टिप्पणी की थी— "श्री अर्जुनसिंह सत्ता का साँप है। वह कब किस बिल में से निकल आए और किसे डस ले, कहा नहीं जा सकता।" श्री अर्जुनसिंह ने ऐसे तीक्ष्ण कटाक्ष का जवाब चतुराईपूर्ण इस वाक्य से दिया— "मुझे फ़ख्र है कि मैं राजीव गाँधी के चंदन-वन और इन्दिराजी की विरासत में खज़ाने की पहरेदारी करने वाला साँप हूँ।"—ज़ाहिर है टिप्पणी करने वाले मंत्रीजी को साँप ही सूँघ गया और गहरी चुप्पी साध लेने में ही उन्होंने अपनी भलाई समझी।

वर्ष 1977 राजनैतिक उथल-पुथल का समय था। देश में जनता पार्टी की सरकार आ चुकी थी। एक बड़े धक्के से आहत् पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती गाँधी संभल भी नहीं पाई थीं कि पार्टी अध्यक्ष श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी से उनके मतभेद हो गए। परिवर्तित राजनैतिक परिदृश्य का प्रभाव यह हुआ कि स्वयं काँग्रेस में ही अनेक वरिष्ठ नेता आपातकाल को लेकर श्रीमती गाँधी की आलोचना करने में मुखर हो उठे। इनमें यशवंतराव चव्हाण तो स्पष्टतः, खुलकर सामने आए। बंबई के काँग्रेस अधिवेशन में स्थिति इस तरह बिगड़ी कि श्रीमती गाँधी ने पार्टी विभाजन का अप्रिय किन्तु दृढ़निश्चयी निर्णय ले लिया। फलस्वरूप एक जनवरी, 1978 को काँग्रेस पुनः विभाजित हो गई। एक रेड्डी काँग्रेस और दूसरी इन्दिरा काँग्रेस। यही इन्दिरा काँग्रेस बाद में शक्तिशाली काँग्रेस (आई) बनकर राजनीतिक आकाश पर उभरी। घटना क्रम बहुत ही नाटकीय रहा, किन्तु अंततः 44 विधायकों के साथ अर्जुन सिंह इन्दिरा काँग्रेस के कर्णधार बने। दूसरा गुट यानी मूल काँग्रेस के साथ रहने वाला गुट 40 विधायकों का था जिसकी कमान श्री श्यामाचरण शुक्ल संभाल रहे थे। लेकिन चूँकि श्री अर्जुनसिंह अपने गुट के साथ ऐलानिया तौर पर इन्दिरा समर्थक थे, लिहाज़ा, उनका नेतृत्व कायम रहा और दूसरा गुट अपना वर्चस्व नहीं जमा सका।

वर्ष 1977 में जो चुनाव हुए थे उनमें काँग्रेस पार्टी को चुनाव में ऐसी पराजय का सामना करना पड़ा था जो उसके लिए एक बहुत ही कटु अनुभव था। लेकिन सत्ताच्युत हो जाने के बाद श्रीमती इन्दिरा गाँधी बहुत जल्दी निराशा के सदमे से उभर आई और उन्होंने पुनः एक बार अपनी आत्मिक शक्ति से ऊर्जावान होकर समूचे देश के तूफ़ानी दौरे शुरू किए। इधर मध्यप्रदेश में भी पार्टी लोकसभा चुनाव में ऐसे भयानक दिन देख चुकी थी कि 40 में से मात्र एक सीट (छिन्दवाड़ा) पर ही उसे विजय मिली थी। किंतु राज्य विधानसभा में गनीमत यह रही कि काँग्रेस मुख्य विपक्षी दल रही और उसके नेता यानी प्रदेश के नेता प्रतिपक्ष श्री अर्जुनसिंह ही रहे। नेता प्रतिपक्ष के रूप में इनका कार्यकाल एक उज्ज्वल उदाहरण माना जाता है। विभिन्न प्रकार के दलों के दलदली विलय से बनी जनता पार्टी एक पार्टी का वास्तविक स्वरूप नहीं ले पाई और वह बेमेल विचारधाराओं का 'मिक्सचर' ही सिद्ध हुई। इन्दिरा गाँधी पर बिठाए गए आयोगों के मुकदमे, उनकी सुनवाई, उनका प्रचार और बिलानागा जनता पार्टी नेताओं के उन पर आरोप भरे शाब्दिक आक्रमण इन्दिराजी का कुछ खास बिगाड़ तो नहीं सके, उल्टे उन्हें धीरे-धीरे जन-सहानुभूति ज़रूर मिलने लगी। ऊपर से इन्दिराजी की दृढ़ता और साहस तथा आत्मशक्ति का अभूतपूर्व प्रदर्शन, केन्द्र में ही नहीं मध्यप्रदेश में भी तत्कालीन जनता सरकार अपने अंजाम को पहुँच गई। मध्य प्रदेश में श्री अर्जुनसिंह का तेजस्वी और कट्टर इन्दिरा-भक्त नेतृत्व था ही। जनता शासन काल में मध्यप्रदेश सरकार का नेतृत्व सत्ता पक्ष के पूर्व घटक जनसंघ के पास

आया था। यही जनसंघ विलय के बाद जब पुनः स्वतन्त्र राजनैतिक इकाई बना तो भारतीय जनता पार्टी के रूप में सामने आया। मध्य प्रदेश में अल्प शासन काल में इसके तीन मुख्यमंत्री बदले। श्री कैलाश जोशी, श्री वीरेन्द्र कुमार सखलेचा और अंत में श्री सुंदरलाल पटवा। श्री पटवा तो सिर्फ़ 29 दिन ही मुख्यमंत्री रह सके कि सरकार गिर गई। और 1980 में श्री अर्जुनसिंह के नेतृत्व में काँग्रेस (इ) ने प्रदेश में एक बार फिर विजय का इतिहास रचा। और जैसा कि तय था श्री अर्जुनसिंह निर्विरोध पार्टी नेता चुने गए। वे सर्वानुमति से मुख्यमंत्री पद पर आसीन हुए। विधानसभा में प्रथम दिन ही कुल 304 सदस्यों ने शपथ ग्रहण की और उसी दिन विपक्ष के साथ तालमेल से सर्वानुमति से ही विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव किया गया। श्री यज्ञदत्त शर्मा अध्यक्ष बने । उल्लेखनीय बात यह है कि ऐसे गहमा-गहमी भरे माहौल में भी वे श्रीमती इन्दिरा गाँधी को भूले नहीं। बात आते ही उन्होंने उनका ज़िक्र किया, यही नहीं जिस दिन मृतकों का उल्लेख होता है उस दिन उन्होंने उसमें श्री संजय गाँधी के निधन को भी शामिल करवाया।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी के प्रति अगाध विश्वास और निष्ठा का जैसा आभास हमें श्री अर्जुनसिंह के जीवन से मिलता है वैसा उनके अनुयायियों में आसानी से दूसरा नज़र नहीं आता। यूँ यह भी कोई अंतिम सत्य नहीं कि हम मान लें कि श्रीमती गाँधी अथवा नेहरू परिवार के प्रति श्री अर्जुनसिंह ही एकमात्र निष्ठा-प्रतीक हैं। लेकिन अपने नेता के प्रति ऐसी आस्था विरल ही है। 25 अगस्त, 1981 की बात है कि मध्य प्रदेश के नेता प्रतिपक्ष श्री सुंदरलाल पटवा तथा कुछ अन्य जनप्रतिनिधियों ने राष्ट्रपति से भेंट कर मुख्य मंत्री श्री अर्जुनसिंह एवं उनके कतिपय सहयोगियों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए जाँच की माँग की। इस प्रकरण में श्री अर्जुनसिंह ने स्वप्रेरणा से 28 अगस्त, 1981 को राज्य विधानसभा में एक वक्तव्य दिया। यह वक्तव्य सार्वजनिक जीवन में उनकी निष्ठा और व्यक्तिगत साहस का प्रमाण तो है ही, यह इन्दिराजी के प्रति उनके समर्पण को भी दर्शाता है। उन्होंने श्रीमती गाँधी को जो तत्कालीन प्रधानमंत्री भी थीं, अपना इस्तीफ़ा इस प्रस्ताव के साथ भेजा कि वे चाहे जैसी भी जाँच करा लें और यदि कोई भी आरोप तनिक भी सत्य पाया जाय तो उनका त्यागपत्र तुरंत स्वीकार कर लिया जाय। सिर्फ़ मुख्यमंत्री पद से ही नहीं उन्होंने सदन की सदस्यता से भी अग्रिम रूप से इस्तीफ़ा भेज दिया। 28 अगस्त, 1981 का सदन का रिकॉर्ड देखा जाय तो श्री अर्जुनसिंह की मर्मस्पर्शी भावना का अंदाज़ा साफ़ तौर पर हो सकता है। उनके वक्तव्य और सदन में हुई बातचीत के कुछ अंश द्रष्टव्य हैं:

श्री अर्जुनसिंह (मुख्यमंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सम्माननीय सदन का कुछ समय और कृपापूर्वक आपकी अनुमति से सार्वजनिक महत्त्व के एक विषय पर वक्तव्य देने के लिये चाहता हूँ।

25 अगस्त को प्रतिपक्ष के माननीय नेता श्री पटवा, अपने दल के कुछ अन्य सदस्यों के साथ भारत के महामहिम राष्ट्रपति से मिले और उन्होंने व्यक्तिगत रूप से मेरे और मेरी सरकार के कुछ अन्य माननीय सदस्यों के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोपों का एक ज्ञापन उनके समक्ष प्रस्तुत किया। यह सही है कि प्रतिपक्ष को, जैसा कि इस प्रदेश के किसी भी नागरिक को यह अधिकार है कि वह किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध आरोप लगा सकता है। लेकिन मुझे विश्वास है कि यह सदन मुझसे सहमत होगा कि इस तरह के आरोप लगाने का कोई पुष्ट आधार होना चाहिए, क्योंकि अंततः इस तरह के आरोप प्रजातांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता को ही प्रभावित करते हैं। .....सार्वजनिक जीवन में निःसन्देह यह मुश्किल है कि कोई संघर्ष और झूठे आरोपों की खरोंचों से बचा रहे लेकिन हरेक को यह अवसर भी मिलता है कि वह सही मार्ग अपनाने की दिशा में ईमानदारी से और निष्ठापूर्वक प्रयत्न करे।.....मुझे यह अनुमति दी जाय अध्यक्ष महोदय कि मैं पूरी विनम्रता से कह सकूँ कि मुझे इस सम्माननीय सदन में बैठने और काम करने का सौभाग्य 25 वर्षों से अर्थात् इसकी स्थापना के समय से ही मिला है। ये 25 वर्ष मेरे वयस्क जीवन का प्रायः

पूरा अंश है। ईश्वर की कृपा और देश की नेता श्रीमती इन्दिरा गाँधी की अनुकम्पा से इस अवधि में एक साधारण सदस्य के रूप में, लब्ध-प्रतिष्ठित मुख्यमंत्रियों की मंत्रिपरिषद् के सदस्य के रूप में, प्रतिपक्ष के नेता के रूप में, और अब इस सदन और इस राज्य के लोगों के प्रथम विनम्र सेवक के रूप में मुझे अपने दायित्वों का निर्वहन करने का सुअवसर मिला है।

मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने इस दौरान गलतियाँ की होंगी, निर्णय की ऐसी त्रुटियाँ हुई होंगी, जिनसे किसी का अहित हुआ होगा लेकिन विनम्रता से, किन्तु ऊँची आवाज़ और दृढ़ मन से मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैंने इस सदन द्वारा प्रदत्त किसी भी अवसर या विशेषाधिकार का उपयोग सार्वजनिक हित के प्रतिकूल किसी निजी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कभी नहीं किया है। इसलिए जब इस तरह का आरोप लगाया गया है तो न केवल मैं आहत और दुःखी हूँ बल्कि मेरा कर्तव्य मुझे विवश करता है कि मैं स्वयं इन आरोपों की जाँच के लिए प्रथम पहल करूँ।.....

इसलिए मैं इस सदन को सूचित करना चाहता हूँ कि मैंने माननीय प्रधानमंत्री और इस राष्ट्र की नेता श्रीमती इन्दिरा गाँधी को एक पत्र लिखकर उनसे यह निवेदन किया है कि वे इन आरोपों को ऐसी विधि से और उस रूप में जैसी कि वे उचित समझें, जाँच करवाएँ अगर मेरे सहयोगियों में किसी के विरुद्ध कोई आरोप सिद्ध पाया गया तो इस बारे में उनके निर्देशानुसार कार्रवाई की जाएगी।

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैंने आदरणीय प्रधानमंत्री को अपने पद से अपना त्यागपत्र आज भेज दिया है।.....इस सम्मानित सदन की सदस्यता से भी मैंने अपना त्यागपत्र उनके पास भेजा है।.....

मैं प्रतिपक्ष के नेता और उन सब लोगों को, जो इस मामले में दिलचस्पी रखते हों, यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि मैंने यह कदम निरी साहसिकता से नहीं उठाया है और न ही किसी को मैं चुनौती दे रहा हूँ। मैंने यह कदम सिर्फ़ इस वजह से उठाया है कि मैं इस देश के दूसरे करोड़ों देशवासियों के समान श्रीमती इन्दिरा गाँधी का एक विनम्र सैनिक माने जाने में गर्व और सौभाग्य महसूस करता हूँ। देश की सेवा में जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गाँधी और नेहरू परिवार का एक सैनिक होना कोई साधारण बात नहीं है और जीवन में कुछ भी बिना दिए हम कुछ नहीं पा सकते हैं। इस सौभाग्य के लिए मूल्य चुकाना होगा.....अगर ज़रूरत पड़ी तो विपुल मात्रा में मैं अंतिम मूल्य चुकाने हेतु तैयार हूँ ताकि श्रीमती इन्दिरा गाँधी के गतिशील और प्रेरणादायी नेतृत्व में लोगों का एक विनम्र सेवक कहलाने के अपने विशेष अधिकार को सुरक्षित रख सकूँ।

श्री सुंदरलाल पटवा (सीहोर): अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्रीजी ने जिस तत्परता से यह वक्तव्य दिया है और वक्तव्य देने में जिस साहस का प्रदर्शन किया है मैं उसकी प्रशंसा करना चाहता हूँ।.....

श्री विक्रम वर्मा: यह साहस नहीं है, नाटक है।

श्री पटवा:.....

.....

श्री अर्जुनसिंह: अध्यक्ष महोदय, मैंने जो कहा है ज़रा इस पर ध्यान दीजिए। मैंने कहा है कि जिस विधि से भी जाँच करवाना हमारी प्रधान मंत्री उचित समझें, उस तरह से वे जाँच करवाएँ। अध्यक्ष महोदय, उनके विवेक पर हमने कोई अंकुश नहीं लगाया है। हमने प्रधान मंत्री के हाथ में पूरा मामला सौंपा है। हमें श्रीमती इन्दिरा गाँधी पर विश्वास है, आपको भले ही न हो लेकिन इस देश के करोड़ों लोगों को उन पर विश्वास है।

श्री पटवा :.....आप स्वप्रेरणा से यह लिखकर भेजें कि सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश से आप न्यायिक जाँच कराएँ, फिर प्रधान मंत्री जाँच कराएँ या न कराएँ।

श्री अर्जुनसिंह: माननीय पटवाजी, मुझे इस देश की प्रधान मंत्री और देश की नेता श्रीमती इन्दिरा गाँधी के विवेक और न्यायप्रियता पर पूरा-पूरा भरोसा है।

राज्य विधानसभा की 28 अगस्त, 1981 की कार्रवाई का ऊपर लिखित विवरण उद्धृत करने का यहाँ केवल एक ही उद्देश्य है कि अपनी निष्ठा, अपनी समर्पित भावना और आस्थापूर्ण मनोभावों को जितने साहसपूर्ण ढंग से अर्जुन सिंह ने भरे सदन में तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया, ऐसा भला कब कोई कर पाता है। यह इस बात का भी प्रमाण माना जा सकता है कि भारतीय राजनीति के विराट फलक पर सम्भवतः श्री अर्जुनसिंह के अलावा और कोई राजनेता है ही नहीं जो अपने नेता और 'राजनैतिक आदर्श' के प्रति इतना समर्पित हो। और यदि आप श्री अर्जुनसिंह से पूछें तो हो सकता है वे दो टूक शब्दों में आपसे कहें कि भारतीय राजनीति के विशाल फलक पर बापू के बाद पं. जवाहर लाल नेहरू और श्रीमती इन्दिरा गाँधी के गुणात्मक क़द का भी तो कोई अन्य नेता नहीं है। बहरहाल, महान् व्यक्तियों के महान् अनुयायी का मामला है, जिसे पूर्ण अनुचर भावना से, सार्वजनिक तौर पर स्वीकार करने में श्री अर्जुनसिंह कभी भी झिझके नहीं हैं।

स्वतन्त्र भारत के इतिहास में, शुरू-शुरू में ही, यानी 1948 के जनवरी माह में ही वह दर्दनाक हादसा हुआ था, जिसमें राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को, जिन्हें समूचे देश ने आत्मप्रेरणा से 'बापू' अर्थात् पिता का दर्जा व्यावहारिक बोलचाल में दे दिया था, धर्मांध हत्यारे की गोली का शिकार हो जाना पड़ा। किन्तु देश के तत्कालीन नेतृत्व ने स्थितियों को संभाला और बाद में सभी जानते हैं कि पं. जवाहरलाल नेहरू इस महादेश के सच्चे राष्ट्रनिर्माता कहलाए। पं. नेहरू के बाद कौन? यह प्रश्न उन दिनों हर सुविचारक बुद्धिजीवी के मन में कौंधा करता था। किन्तु देश का सौभाग्य कि बागडोर एक छोटे-से सामान्य व्यक्ति ने सँभाली, जिसे लोगों ने लालबहादुर शास्त्री के नाम से जाना। वह मामूली लगने वाला बहादुर इतिहास का एक 'विराट' व्यक्तित्व हुआ। सन् 1965 का भारत-पाक युद्ध उसी 'इस्पाती बौने' ने लड़ा और वह ज़रा-सा भी न झुका, टूटने का तो प्रश्न ही नहीं था। शास्त्रीजी के असामयिक निधन ने पुनः उसी असमंजस की भावना को जन्म दिया। अब कौन? किन्तु देश के कोटि-कोटि जन साक्षी हैं कि तब राजनैतिक आकाश में एक बेहद द्युतिमान नक्षत्र उभरा—इन्दिरा गाँधी। पं. नेहरू की तेजस्विनी पुत्री इन्दिरा प्रियदर्शिनी ने अजेय दृढ़ता का एक बेमिसाल इतिहास ही रच दिया, जब 1971 के युद्ध में पाकिस्तानी सेना ने विश्व के युद्ध के इतिहास का सबसे बड़ा 'समर्पण' किया। भारतीय सेनाध्यक्ष अरोड़ा के सामने जनरल नियाज़ी के साथ उनके करीब एक लाख सैनिकों ने हथियार डाले। भारत ने यह भी दिखाया कि वह विस्तारवादी देश क़तई नहीं है। विश्व के नक्शे में तभी एक स्वयं-भू स्वतन्त्र राष्ट्र 'बांगलादेश' उदित हुआ। श्री अर्जुनसिंह ने अपनी आस्था और राजनैतिक निष्ठा का केन्द्र यदि इन्दिराजी के महान् व्यक्तित्व को बनाया तो इसे एक श्रेष्ठ निर्णय ही कहा जा सकता है। मुसीबतों और संकटों से भरे समय में अच्छे-अच्छों की निष्ठाएँ धूल-धूसरित हो जाया करती हैं। दुर्भाग्य के अँधेरों में साए की तरह साथ रहने वाले तथाकथित 'अपने' साथ छोड़ जाते हैं। लेकिन यह साधारण धारणा अर्जुन सिंह पर लागू नहीं होती। वे तब भी इन्दिराजी के पक्ष में दृढ़ता से खड़े रहे जब उनके अनेक पक्षधर साथ छोड़ गए, नज़रें बदल गए या मुँह फेर कर खड़े हो गए। एक अच्छी बात यह रही कि इस तथ्य से स्वयं इन्दिराजी भी पूर्णतः वाकिफ़ रहीं और वे ही नहीं उनके सुपुत्र श्री राजीव गाँधी, जिन्होंने बाद के वर्षों में देश की बागडोर सँभाली, भी इससे अनभिज्ञ नहीं रहे। यह राजीव गाँधी ही थे, जिनके कार्यकाल में श्री अर्जुनसिंह प्रदेश से केन्द्रीय राजनीति में पहुँचे और यही नहीं उन्हीं दिनों वे

विपदाग्रस्त पंजाब राज्य के राज्यपाल भी बने। पंजाब का राज्यपाल बनना हँसी-खेल नहीं था। वह एक चुनौतीपूर्ण पद था। इतिहास साक्षी है कि श्री अर्जुनसिंह ने अपने नेता के विश्वास की रक्षा की, बल्कि ऐसा परिणाम सामने लाकर दिखाया कि बड़े-बड़े कूटनीतिज्ञ भी आश्चर्य से भर उठे । उन्हीं के प्रयास से पंजाब के धू-धू जलते उग्रवादी माहौल में 'राजीव लौंगोवाल समझौता' सम्पन्न हुआ। यह एक अकल्पनीय घटना थी। किन्तु यह अपने समय की एक 'अविश्वसनीय किंतु सत्य' जैसी प्रत्यक्ष वास्तविकता थी।

यहाँ हम कुछ क्षणों के लिए पीछे लौटें तो आज भी हर प्रबुद्ध देशवासी याद कर सकता है कि 1971 के पराभव से पीड़ित पाकिस्तान लगातार इस कोशिश में लगा रहा है कि काश वह भी किसी तरीके से भारत को विखण्डन का 'दाग़' लगाने में सफल हो सके। उसकी इसी भावना से भारत में विदेश-पोषित आतंकवाद, उग्रवाद या चरमपंथी विचारधारा को बल मिला और समस्या दिनों-दिन उग्र रूप धारण करती गई। पंजाबी सूबे की और उसकी स्वायत्तता की माँग ने इतना ज़ोर पकड़ा कि वह पंजाब की शांति के लिए घातक बनती चली गई। भाषाई आधार पर पंजाब प्रांत का विभाजन हो ही चुका था। हरियाणा का उपजाऊ हिस्सा अलग हो चुका था, अतः शेष बचे पंजाब में कट्टरपंथियों का ज़ोर पकड़ना ज़्यादा आसान था। पाकिस्तान की भूमि पर रचे जा रहे षड्यन्त्रों ने अलगाववाद का ज़हर घोलना शुरू कर दिया था जो खालिस्तान की माँग के रूप में प्रस्फुटित हुआ। 1980 तक आते-आते आतंकवादी गतिविधियाँ विस्फोटक रूप ले चुकी थीं। वर्ष 1984 की 2 जून को श्रीमती इन्दिरा गाँधी के निर्णय के अनुसार धार्मिक-स्थल को आतंकवादियों से मुक्त कराने के लिए ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार हुआ, यानी सेना ने एक्शन लिया और अमृतसर के पवित्र स्वर्ण मंदिर साहब को आतंकवादियों तथा उग्रपंथियों से मुक्त करा लिया गया। उग्रवादियों के शीर्ष नेता भिंडरा वाले और अमरीक सिंह स्वर्ण मंदिर में 'मृत' पाए गए। कट्टरपंथियों ने इस कार्रवाई को लेकर इतनी हाय-तौबा मचाई कि 31 अक्टूबर, 1984 को ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार की जिम्मेदार मानते हुए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को उन्हीं के दो अंगरक्षकों ने गोलियों से भून दिया। ये दोनों, सब इंस्पेक्टर सतवंतसिंह और सिपाही बेअंतसिंह दोनों ही सिख थे।

इसके बाद की घटनाएँ भी लोगों को विस्मृत नहीं हुई हैं। दिल्ली ही नहीं, देश के अनेक क्षेत्रों में सिख विरोधी दंगे भड़क उठे। मध्य प्रदेश के मुरैना रेलवे स्टेशन पर लोगों को जिंदा जला देने जैसी लोमहर्षक घटनाएँ घटित हुईं। उस कठिन समय में श्री अर्जुनसिंह मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री थे। मौकों की नज़ाकत को भाँपने में उनसे कभी भी गफ़लत नहीं हुई और यह केवल संयोग नहीं है कि मध्य प्रदेश सरीखे देश के विशालतम प्रदेश में स्थितियों को कभी विस्फोटक रूप नहीं लेने दिया गया। वर्ष 1984 का अंतिम चरण मध्यप्रदेश के लिए बहुत अच्छा नहीं था। श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या जैसी राष्ट्रीय दुर्घटना के बाद उसी वर्ष दो दिसम्बर की रात को विश्व का सबसे बड़ा औद्योगिक हादसा हुआ, जिसे आज हम भोपाल गैस त्रासदी के नाम से याद करते हैं। प्रदेश की राजधानी भोपाल पर वह दुश्चिंताओं भरी कालरात्रि बहुत भारी बीती। उस त्रासदी के ज़ख्म शहर भोपाल के जिस्म में आज भी देख सकते है। अर्जुन सिंह ही तब भी सत्तारूढ़ थे, और उन्होंने बड़े कौशल एवं सूझबूझ के साथ तत्कालीन परिस्थितियों का सामना किया और उन्हें सँभाला।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी के साथ श्री अर्जुनसिंह का रिश्ता केवल पार्टीगत राजनीति का रिश्ता नहीं था, न ही उनका रिश्ता केन्द्र के सत्तासीन प्रधान मंत्री और उसके अधीन कार्यरत किसी फ़रमाबरदार और पदानुसार विनम्र मुख्यमंत्री का ही था। उनका रिश्ता इन सीमाओं से कहीं अधिक गहरा एक परिवार की मुखिया और परिवार के छोटे व अत्यन्त आत्मीय सदस्य जैसा बन चुका था। एक अवसर पर भाव-विह्वल श्री अर्जुनसिंह ने श्रीमती गाँधी के व्यवहार को मातृवत्

व्यवहार की संज्ञा दी। श्रीमती इन्दिरा गाँधी में उन्हें अपने लिए मातृत्व की छाया दिखाई दी। इस बात का उल्लेख हम आगे चलकर विस्तार से करेंगे। लेकिन यह बात बहुत साफ़ है कि काँग्रेस शासित अन्य राज्यों में भी मुख्यमंत्री थे। उनमें से अनेक अत्यन्त योग्य थे और उन्हें प्रधानमंत्री से मिलने-जुलने के यथेष्ठ अवसर भी प्राप्त थे। लेकिन जैसी आत्मीयता का रिश्ता श्री अर्जुनसिंह से इन्दिराजी का था, वैसा औरों से नहीं था।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी के निधन पर श्री अर्जुनसिंह ने प्रदेश के जनप्रतिनिधियों के नाम एक पत्र लिखा था। यह पत्र आज भी इन्दिराजी के प्रति उनकी भावनाओं का एक जीवंत प्रमाण कहा जा सकता है । बड़े भाव-विव्हल अंदाज़ में उन्होंने लिखा —

'प्रिय बंधु! मैं बड़े भारी मन से आपको यह चिट्ठी लिख रहा हूँ। सहसा विश्वास नहीं होता कि हमारी आदरणीया श्रीमती इन्दिरा गाँधी हमारे बीच नहीं है। देश की नेता को कुछ सिरफिरे नृशंस हत्यारों ने हमसे छीन लिया है। लेकिन क्या वे सचमुच हमारे बीच से उठ गई हैं? नहीं, क्योंकि हममें से हर भारतीय में उनका अंश आज भी मौजूद है।

हम सब अपने देश से प्यार करते हैं। हम सब चाहते हैं कि वह सदा-सर्वदा के लिए अखंड बना रहे, शक्तिशाली हो और दुनिया में उसका नाम रौशन हो।

अपनी आखरी साँस तक इन्दिराजी इसी कोशिश में लगी रहीं। उन्होंने अपना सर्वस्व देश के लिए न्योछावर किया और इसे वह गरिमा दी, जिस पर देशवासियों को नाज़ है। उनकी विराट आत्मा अब देश के 70 करोड़ लोगों में समा गई है। वह अमर है। दुनिया की कोई ताकत उसे मिटा नहीं सकती।'

अपने इसी ऐतिहासिक पत्र में श्री अर्जुनसिंह ने अपने पार्टी जनप्रतिनिधियों से आग्रह किया है कि वे अब प्रधान मंत्री बने श्री राजीव गाँधी के प्रति अपनी निष्ठाओं को समर्पित करें और सब मिलकर राजीव गाँधी के हाथ मज़बूत करें।

इन्दिराजी के प्रति मातृवत प्रेम और आदरभाव रखने वाले श्री अर्जुनसिंह की हार्दिक सहानुभूति श्री राजीव गाँधी के साथ होनी चाहिए थी और वह थी भी। वैसे उनका संपूर्ण जीवन देखा जाए तो हम पाते हैं कि एक बार काँग्रेस में आने के बाद उनकी राजनीतिक दलीय निष्ठा में रंच मात्र भी अंतर नहीं आया। बीच में कुछ वर्ष जब वे काँग्रेस से बाहर भी आए और उन्होंने अपने ही जैसे पुराने तपोनिष्ठ काँग्रेसी श्री नारायणदत्त तिवारी के साथ मिलकर नई पार्टी भी बनाई, तब भी उनकी कल्पना का केन्द्र काँग्रेस ही थी। विषयांतर न करते हुए हम पुनः उनकी निष्ठा के बिंदु पर आएँ तो उनके द्वारा स्वयं व्यक्त उद्‌गार एक निश्छल प्रमाण के रूप में सामने आते हैं, जो उन्होंने एक पत्रकार से हुई बातचीत में व्यक्त किये थे।

"इन्दिराजी का तो एक मातृवत का दृष्टिकोण बन गया था और जैसे माता घर में होती है, खुश भी रहेंगी, नाराज भी रहेंगी, डाँट-डपट भी होगी, खाना भी अच्छा होगा, सब कुछ उन्हीं के हाथों से होगा। बाद में इन्दिराजी का यह स्वरूप बन गया था। जब शुरू-शुरू में प्रवेश किया, चारों तरफ से लोगों ने उनको घेरना शुरू किया तब तो वह बिल्कुल लड़ाई की मुद्रा में थीं। लेकिन बाद में उनका स्वभाव कुछ इस तरह का बन गया था। बाकी हर व्यक्ति कोई पसंद करता है, कोई नापसन्द करता है। किसी व्यक्ति को वह चीज़ अच्छी लगती है, किसी को वह चीज़ बुरी लगती है। यह तो व्यक्तिगत सवाल थे। मैंने उनमें हरदम अपने प्रति वही मातृत्व की झलक देखी । मुझसे कई गलतियाँ भी हुई होंगी, उन्होंने यह माना कि गलती भी सुधारी जा सकती है। कहीं मुझे तिरस्कार नहीं किया। मैं पद में रहूँ या न रहूँ, मुझे टिकट भी एक बार नहीं दे सकीं, ऐसा भी संदर्भ आया पार्लियामेंट में। मुझे चाहती थीं लेकिन नहीं दे

सकीं। लोग आड़े आ गए। उनके यहाँ से जाने के बाद टिकट काट दिया गया। जब वह क्षेत्र में दौरे पर गईं और जब भाषण देतीं तो उम्मीदवार को आगे बुला लेती थीं। उन्होंने मुझसे कहा अर्जुन सिंहजी सामने आओ। क्योंकि जब वह निकली यहाँ से दौरा करते हुए वहाँ पहुँचीं। मैंने कहा इन्दिराजी मैं काहे के लिए आऊँ? उन्होंने कहा आप यहाँ से चुनाव लड़ रहे है। मैंने कहा नहीं। चुनाव जो लड़ रहे हैं, वह है। मैंने उनको आगे कर दिया। बड़ी देर तक मुझे देखती रहीं। वहाँ कुछ नहीं बोलीं। बाद में उन्होंने पूछा यह कैसे हुआ? मैंने कहा छोड़िए आप क्यों इसमें पड़ती हैं। जो कुछ हुआ ठीक ही हुआ। शायद मैं उस वक्त एम.पी. बन कर आ जाता तो यह मध्यप्रदेश जो है हमारा, वह होता नहीं। लेकिन कभी भी उनकी तरफ से मैंने तिरस्कार नहीं पाया। राजीव जी का ऐसा था कि वह तो आकस्मिक राजनीति में आए। उनकी व्यक्तिगत रूचि तो उसमें कदाचित नहीं थी। इसलिए किसी भी राजनीतिक व्यक्ति से उनका अंतरंग संबंध बनने का प्रश्न ही नहीं उठता। कोई यह कहे, मेरे नहीं बन सके, यह उसकी गलती है। उनकी मनोवृत्ति और दृष्टि में राजनीति थी ही नहीं। एक चीज़ का उनको अहसास ज़रूर हो गया। जब वह आ गए उस पीरियड में, क्योंकि मेरी वफ़ादारी और मेरा समर्पण पूरा इन्दिराजी के साथ था, यह उनको अच्छी तरह से मालूम था। इसकी पुष्टि भी उन्होंने कभी-न-कभी अपनी माताजी से की होगी, ऐसा मैं मानता हूँ। इसलिए वह विश्वास का एक आधार ज़रूर था। इसीलिए सब कुछ होते हुए भी कम-से-कम वह आधार तो पूरी तरह से टूटा नहीं था। जो कुछ मैं उनके साथ रहकर काम कर सका। मैंने करने की कोशिश की। उनके स्वाभाविक दृष्टिकोण में काफी अंतर था। उनका परिस्थितियों और समस्याओं को आँकने का अपना दृष्टिकोण भी अलग था। तात्कालिक परिणाम उम्र का तकाज़ा था। ये सब चीज़ें थीं, लेकिन बेसिकली वह देश से प्रेम करते थे।

श्री अर्जुनसिंह ने स्व. इन्दिरा गाँधी के जीवनकाल में ही नहीं, उनके निधन के बाद भी उन्हें अपनी आस्था व निष्ठा का केन्द्र बनाए रखा। उनकी कार्यशैली में भी श्रीमती इन्दिरा गाँधी की कार्यशैली का अद्‌भुत आभास मिलता है। अपने शासनकाल में श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने कई बार ऐसे निर्णय लिए जिनके बारें में कोई स्पष्ट जन-आन्दोलन नहीं था। शुद्ध रूप में समाज हितकारी यह निर्णय, उनके स्वतन्त्र चिंतन के परिणाम थे। राजा महाराजाओं के 'प्रिवी पर्सों' की समाप्ति और निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण, सम्भवतः इसी श्रेणी के कार्य कहे जा सकते हैं, जो श्रीमती गाँधी ने अपने शासन काल में लिए। मध्यप्रदेशमें 'तेन्दू पत्ता' व्यवसाय को सहकारी क्षेत्र में लाकर उसका 'सहकारीकरण' करने का बेमिसाल निर्णय श्री अर्जुनसिंह ने लिया और करोड़ों रुपयों का लाभांश उन गरीबों, दलित मज़दूरों को मिलने लगा, जो तेन्दू पत्ते के व्यवसाय से सीधे रूप में जुड़े हैं। यानी जो तेन्दू पत्ते को तोड़ने से लेकर बीड़ी बनाने तक की प्रक्रिया में भागीदार हैं। पहले ही वर्ष करोड़ों रुपये गरीब मज़दूरों के हिस्से में आए। ऐसी कल्पना इससे पहले किसी ने कभी की ही नहीं थी।

दरअसल, स्व. श्रीमती इन्दिरा गाँधी और श्री अर्जुनसिंह के व्यक्तित्वों में कई तरह से अद्‌भुत समानता है। तत्कालीन रूस का सहयोग और समर्थन श्रीमती गाँधी को इसलिए सहज रूप से प्राप्त था कि वे सही अर्थों में 'मास-लीडर' थीं। बहुसंख्यक जनता की नेता। मध्यप्रदेश में अभी तक हुए राजनेताओं में केवल श्री अर्जुनसिंह की छवि ही इस कोटि की है। यद्यपि वे भी श्रीमती गाँधी की तरह सामंती पृष्ठभूमि से जुड़े अगड़ी जाति के प्रतिनिधि है मगर उनके कृतित्व से सामाजिक-न्याय की पक्षधरता उनकी दृष्टि में सर्वाधिक स्पष्ट है। साम्प्रदायिकता के विरुद्ध उनकी दृढ़ता और सद्‌भावपूर्ण राष्ट्रीय एकता के प्रति उनकी समर्पित भावना से उनके विरोधी भी परिचित है। और तो और मध्यप्रदेश में पिछड़े वर्गों को आरक्षण देने के लिए आयोग बिठाने का निर्णय भी श्री अर्जुनसिंह द्वारा ही लिया गया।

वर्ष 1985 श्री अर्जुनसिंह के राजनैतिक जीवन का एक निर्णायक मोड़ लेकर आया। दो मार्च, 85 को राज्य

विधानसभा के लिए मतदान सम्पन्न हुआ जिसमें सबसे भारी मतदान श्री अर्जुनसिंह के चुनाव क्षेत्र चुरहट में हुआ था। सात मार्च को चुनाव परिणामों की घोषणा हुई और संचार माध्यमों के ज़रिए संपूर्ण देश ने जाना कि श्री अर्जुनसिंह के नेतृत्व में मध्य प्रदेश में काँग्रेस ने एक बार फिर जीत के झण्डे गाड़ दिए। राज्य की 320 में से 250 सीटों पर काँग्रेस विजयी रही। दस मार्च को श्री अर्जुनसिंह काँग्रेस विधायक दल के नेता चुने गए। बारह मार्च, 85 को वे जब अपने मंत्रिमंडल के गठन के सिलसिले में राय-मशविरा करने दिल्ली गए, तब तक किसी को आभास तक नहीं था कि किस प्रकार की राजनैतिक उथल-पुथल के योग हैं। राजीव गाँधी प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने दिल्ली में ही पंजाब के चुनौतीपूर्ण राज्यपाल पद को सम्भालने का आग्रह श्री अर्जुनसिंह से किया और घटनाक्रम इतनी तेज़ी से बदला कि प्रधान मंत्री की पेशकश श्री अर्जुनसिंह ने स्वीकार की। राष्ट्रपतिजी दिल्ली से बाहर वाराणसी में थे । उनसे अनुमति ली गई— विशेष संदेशवाहक, फाइलें लेकर राष्ट्रपतिजी के पास विमान से वाराणसी गया और शाम को श्री अर्जुनसिंह को पंजाब का राज्यपाल बनाए जाने की घोषणा कर दी गई। उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया में केवल यही कहा था कि वे तो पार्टी के एक अनुशासनबद्ध सिपाही हैं। पार्टी उनसे जो भी काम लेना चाहती है ले सकती है, वे उसे सहर्ष पूरा करेंगे।

पंजाब में उन दिनों राष्ट्रपति शासन लागू था। आतंकवाद और उग्रवाद की आग में धू-धू कर जलते पंजाब में विश्वास का संकट था जिसका ओर-छोर किसी को सूझ ही नहीं रहा था। यह अत्यन्त चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी से भरा एक पद स्वीकार करना श्री अर्जुनसिंह के जीवन का निर्णायक मोड़ इस अर्थ में रहा कि कहाँ तो वे पुनः एक पूर्ण कार्यकाल के लिए प्रदेश का नेतृत्व सम्भालने जा रहे थे और कहाँ यह कि प्रदेश की राजनीति से ही उनका सम्बन्ध विच्छेद हो गया। इसके बाद वे सीधी तौर पर दोबारा राज्य की राजनीति में कभी नहीं लौट पाए। उन्हीं का प्रताप था कि राजीव गाँधी के कार्यकाल में ही लोकसभा चुनावों में श्री अर्जुनसिंह के नेतृत्व में जो चुनाव लड़ा गया, उसमें काँग्रेस ने 40 में से 40 यानी शत्-प्रतिशत् स्थानों पर विजय पाई। प्रदेश में शासन चलाने के साथ, जनता के सुख-दुःख और अन्य समस्याओं को देखते हुए नीतियों को सर्वप्रथम, सर्वहारा और आम आदमी पर केंद्रित किया गया। आम जन से संवेदना के स्तर पर जुड़ना एक ऐसा मुद्दा है, जिसकी वजह से प्रदेश का दलित, पिछड़ा और सर्वहारा वर्ग आज भी श्री अर्जुनसिंह के नाम पर सड़कों पर निकल आ सकता है। ऐसे संवेदनशील नेता को पंजाब की बागडोर सौंपना आग पर पानी डालने का प्रयास था जो आगे चलकर अपने उद्देश्य में सफल भी साबित हुआ। प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने उनमें जो विश्वास प्रकट किया, श्री अर्जुनसिंह ने उसकी रक्षा की।

श्री अर्जुनसिंह के पंजाब जाने से उत्पन्न हुए शून्य की पूर्ति श्री मोतीलाल वोरा ने की, जिन्हें अपने साथ लेकर 14 मार्च को स्वयं श्री अर्जुनसिंह भोपाल लौटे थे । प्रदेश का नेतृत्व सँभालने के बाद श्री वोरा ने कहा कि " स्वर्गीय इन्दिरा गाँधी के निर्देशन में जिन नीतियों को श्री अर्जुनसिंह ने कार्यान्वित किया, उससे राज्य विकास के पथ पर अग्रसर है। जनता के पहले सेवक के रूप में श्री अर्जुनसिंह ने गरीब व शोषितों की जो सेवा की है वह हमारे लिये मार्गदर्शक है।" श्री वोरा के इस एक ही वाक्य में स्वर्गीय इन्दिरा गाँधी और अर्जुन सिंह का उल्लेख स्पष्ट करता है कि दोनों के बीच कितनी निकटता और एकरूपता है।

गृह प्रदेश से विदा लेकर अपने नेता एवं प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी की इच्छा कि पंजाब में हिंसा के स्थान पर शांति का माहौल हो और वह विखण्डन का स्थान न बने तथा भारत की एकता व अखण्डता पर कोई आँच न आए, को पूर्ण करने की दिशा में श्री अर्जुनसिंह सक्रिय हो गए। पंजाब के नागरिकों के नाम अपने प्रथम संदेश के प्रसारण के साथ ही उन्होंने पंजाब में शांति-स्थापना का अपना मिशन पूरे समर्पण और सत्यनिष्ठा भाव के साथ अनथक

रूप से चलाया। धीरे-धीरे उनकी मेहनत रंग लाई और वे राज्य में एक विश्वास का माहौल बनाने में कामयाब हुए। उनके सद्प्रयासों की परिणति से समूचा देश परिचित है। उन्होंने राजीव गाँधी-संत लौंगोवाल समझौता संभव कर दिखाया। उदारवादी अकाली नेतृत्व जिसमें संत लौंगोवाल, श्री सुरजीतसिंह बरनाला, श्री प्रकाशसिंह बादल इसमें उनके सहायक सिद्ध हुए। लगातार चार माह तक श्री अर्जुनसिंह ने अनथक काम किया और पंजाब के बारे में ऐतिहासिक समझौता हो जाने का श्रेय उन्होंने अपने नेता श्री राजीव गाँधी की शांति एवं सद्भावप्रियता को ही दिया। उन्होंने अपने सार्वजनिक बयान में जब भी कहा, यही कहा कि —

"प्रधान मंत्रीजी की संवेदना और संत लौंगोवाल की सूझबूझ से हुआ समझौता पंजाब त्रासदी को हमेशा के लिए समाप्त कर देगा।" यह उनकी निष्काम कर्म योगी जैसी प्रवृत्ति का परिचायक भी कहा जा सकता है।"

मध्य प्रदेश में कम-से-कम बोलने वाले राजनेता के रूप में प्रसिद्ध श्री अर्जुनसिंह ने पंजाब प्रवास में सिद्ध किया कि वे जितना बोलते हैं, वह कितना सटीक और सार्थक होता है। उन्हें पंजाबी आती नहीं, लेकिन पंजाब पहुँचकर अपने हर भाषण में उन्होंने सायास पंजाबी बोलने का यत्न किया और बिला शक उनकी यह छोटी-सी कोशिश भी पंजाबवासियों के दिलों पर 'बड़ा असर' छोड़ने वाली साबित हुई। समझौता हो जाने के बाद भी उन्होंने विश्राम नहीं किया बल्कि सरकारी मशीनरी को समझौते की विभिन्न धाराओं पर अमल के लिए लगातार सक्रिय करते रहे। पंजाब समझौते पर न केवल समूचे भारत में बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैश्विक प्रतिक्रियाएँ हुईं। सभी ने प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी को बधाई दी। और क्यों न दी जातीं जबकि समझौते के पीछे तमाम घटनाचक्र के सूत्रधार श्री अर्जुनसिंह ने प्रेस के नुमाइन्दों से जब भी कहा, यही कहा कि, 'भारत ने राजीव गाँधी के रूप में एक सच्चा नेता पा लिया है। इसका पूरा श्रेय श्री गाँधी को है। उनके अथक प्रयत्नों से ही यह संभव हुआ है।' युवा प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की प्रशंसा में 'न्यूयार्क टाइम्स' ने लिखा— 'श्री राजीव गाँधी को नेहरू एवं इन्दिरा गाँधी की योग्यता एवं दृढ़ता का सही उत्तराधिकारी माना जा सकता है।' मगर पर्दे के पीछे की हक़ीक़तों से परिचित राष्ट्रीय स्तर के पत्रकार श्री प्रभाष जोशी ने, जो कि स्वयं मध्य प्रदेश से मूलरूप से जुड़े हैं, पंजाब-समझौते पर अपनी प्रतिक्रिया में लिखा— 'राजीव गाँधी, संत लौंगोवाल और श्री अर्जुनसिंह के माथे पर तिलक करिए। अक्षत डालिए और देश भर की ओर से आशीर्वाद दीजिए कि जो समझौता उन्होंने किया है, उससे हिंदुओं और सिखों के दिल एक हों ताकि पंजाब देश के धड़ से फिर जुड़कर उसका गौरवशाली मस्तक-प्रदेश बन सके।'

समझौते के बाद उग्रवादी आतंकियों की ओर से हिंसक प्रतिक्रियाओं की आशंका ग़लत नहीं थी। श्री अर्जुनसिंह इस दिशा में चौकस एवं चाकचौबंद थे और उन्होंने उन दिनों विशेष सतर्कता बरतते हुए काम किया। उन्हें अच्छी तरह पता था कि उनकी सफलता के कारण वे उग्रपंथियों की सर्वोच्च हिट-लिस्ट में आ गए हैं किन्तु वे कभी भी क्षणांश के लिए भी अधीर या अशांत दिखाई नहीं दिए।

6 दिसम्बर, 1992 को पंजाब के मुक्तसर की आम सभा में दिए गए अपने भाषण में हज़ारों की भीड़ के बीच उन्होंने कहा— 'पंजाब के बहादुर लोगों के मन में अपनी जन्मभूमि से प्यार है, अपने प्रदेश से प्यार है और अपने देश से प्यार है और ऐसे ही लोगों के लिए हिन्दुस्तान के प्रधान मंत्री (राजीव गाँधी) का सबसे पहले मैं आपको आपके प्रति अभिवादन और शुभकामनाएँ देना चाहता हूँ।'

'आज से चार-पाँच वर्ष पूर्व एक बिल्कुल अजनबी की हैसियत से इस सुंदर प्रदेश में मैं आया था। दिल में कशिश, आँखों में नाराज़गी थी, मन बेचैन था। यहाँ के बहुत से नौजवानों के हाथों में हथियार थे। मैं जानता हूँ किसी भी व्यक्ति के लिए ऐसी परिस्थितियों में काम करना संभव नहीं था, लेकिन मुझे भरोसा दो चीज़ों का था। एक

तो हमारे नेता श्री राजीव गाँधी का पूरा विश्वास और दूसरा पंजाब के भाइयों और बहनों की देशभक्ति का, उनके जज़्बातों का और उनके अंदर कूट-कूटकर भरी हुई उस भावना का कि वे हिन्दुस्तान के हैं और हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं। प्रश्न केवल विश्वास की कड़ी को जोड़ने का था। यदि राजीवजी अपनी भावनाओं से ऊपर उठकर, अपने दुःख छोड़कर, जो इन्दिराजी की हत्या के बाद स्वाभाविक था किसी भी पुत्र को होता, अगर वे उससे ऊपर नहीं उठते तो संत लौंगोवाल का हाथ उनकी ओर नहीं बढ़ता। संतजी ने, जिन्होंने कई दफ़े जत्थे निकालकर जेलें भरीं, उनके ऊपर, उनके साथियों के ऊपर भी अत्याचार हुए, अगर उनके मन में भारतमाता की तस्वीर नहीं होती तो वे उससे ऊपर उठकर अमन का, चैन का, विश्वास का हाथ राजीव गाँधी की तरफ़ नहीं बढ़ाते।' पंजाब में राज्यपाल रहने के दौरान यह बहुत साफ़ था कि श्री अर्जुनसिंह के संदेश बहुत ही सटीक और सौहार्द्रपूर्ण होते थे, जिनका आम जनता पर जादुई असर हुआ। श्री अर्जुनसिंह स्वयं भी एक आदर्श धर्मनिरपेक्ष व्यक्तित्व के स्वामी हैं। यह एक खुला तथ्य है। राजीव गाँधीजी से मिली ज़िम्मेदारी को उन्होंने जिस खूबी के साथ निभाया और उद्देश्य को जिस तरह से पूर्णता के मुकाम पर पहुँचाया वह शायद किसी और के लिए संभव नहीं था।

पंजाब से लौटने के बाद श्री अर्जुनसिंह के जीवन का जो दूसरा हिस्सा आज तक चला आ रहा है उसमें भले ही मध्यप्रदेश की राजनीति के अनेक महत्त्वपूर्ण तार उनसे जाकर जुड़ते हों, किन्तु सीधे रूप में वे दोबारा प्रदेश राजनीति से नहीं जुड़ पाए। धीरे-धीरे उनका स्थाई केन्द्र दिल्ली ही बनती गई। और अनेक उलटफेरों के बाद आज भी वे दिल्ली में ही प्रवास-रत हैं। अलबत्ता यह ज़रूर है कि उनका भोपाल आगमन आज भी भारी राजनीतिक गहमा-गहमी का सबब् बन जाता है।

एक छोटा-सा कालखण्ड आया जब प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की हत्या के बाद श्री नरसिंहराव की सरकार सत्ता में थी और एक बड़े घोटाले के रूप में 'हवालाकाण्ड' अखबारों की सुर्खियाँ बन चुका था। परिस्थितियों ने इतनी तेज़ी से मोड़ लिया कि स्वयं को असली काँग्रेस का अनुयाई और वारिस बताते हुए वे तत्कालीन काँग्रेस से बाहर आ गए। उन्होंने भोपाल में इन्दिरा काँग्रेस (तिवारी) का गठन करने की घोषणा की। वह वास्तव में एक ऐतिहासिक रैली थी। जो भोपाल के न्यू दशहरा मैदान पर हुई थी। इन्दिरा काँग्रेस की स्थापना करके श्री अर्जुनसिंह स्वयं को जन मंचों से स्व. इन्दिरा गाँधी और राजीव गाँधी का समर्पित सेवक ही निरूपित करते रहे। उन दिनों उनके प्रत्येक भाषण में इस बात का थोड़ा-बहुत पुट हर कहीं आ ही जाया करता था किन्तु फिर भी सिर्फ़ एक उदाहरण के लिए ही सही आइए देखें 9 मार्च, 1995 को भोपाल की उस ऐतिहासिक रैली में उन्होंने क्या कहा। उन्होंने याद दिलाया—

"हमारे देश के एक बहुत प्यारे हम सबके दुलारे रहनुमा राजीवजी आज हमारे बीच में नहीं है। भोपाल के लोग राजीवजी को प्रधान मंत्री के रूप में तो याद रखते है। उनके कामों के बारे में भी सुनते हैं। फायदा मिलेगा हमको, लेकिन भोपाल में राजीव गाँधी की यदि आज याद ताज़ा है तो सबसे बड़ी बात उसके पीछे ये है कि जब एक अप्रत्याशित घटना भोपाल में हुई, गैस रिसन की। उस वक़्त राजीवजी कहीं दक्षिण में चुनाव प्रचार में लगे हुए थे। प्रचार छोड़कर राजीवजी रातों रात यहाँ आए। हमारे आपके दुःखों को बाँटने के लिए। हमारी परेशानियों को कम करने के लिए। भोपाल के लोग उस राजीव गाँधी को ज़्यादा याद रखते है, जिसने हमारे दिल को उस आँधियारे में टटोला जब चारों तरफ़ हमको अँधेरा दिखता था।"

26 मई, 1995 को रतलाम में आम सभा हुई। उसे सम्बोधित करते हुए भी वे राजीव गाँधी की याद से विमुख नहीं हो सके। उन्होंने अपनी बात शुरू की— 'यह बात अपने आप में महत्त्व रखती है कि आखिर वो कौन-से कारण थे, जिनकी वजह से सारे देश के काँग्रेस के कार्यकर्ता दिल्ली में इकट्ठे होकर, उन्होंने एक फैसला लिया कि अब काँग्रेस

पार्टी के पुनर्जीवन के लिए यह आवश्यक है कि काँग्रेस इन्दिरा को अब एक नया रूप दिया जाय, एक नई प्रेरणा दी जाय, एक नया संकल्प दिया जाय। ताकि जो भटकाव हुआ है, जो अवाम से दूरी हुई है वो समाप्त की जा सके और काँग्रेस पार्टी फिर से अपनी ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी को निभाने के लायक बन सके।'

इस संक्षिप्त-सी भूमिका के बाद ही उन्होंने कहा— 'स्वर्गीय राजीवजी, जो हमें छोड़कर गए, एक सूत्र थे हमारे बीच। चुनाव के आखरी दिन उनकी हत्या हुई और ये हत्या केवल हत्या करने के लिए नहीं हुई। मै केवल आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि आज जो कुछ हो रहा है उसके सूत्र कहाँ हैं। इन्दिराजी की शहादत के बाद राजीवजी के युवा हाथों में देश ने अपनी मशाल दी, मशाल ही नहीं दी एक विश्वास दिया था। काँग्रेस के अध्यक्ष के नाते काँग्रेस के शताब्दी समारोह में, बंबई में राजीवजी ने इस बात का आभास दिलाया दुनिया को, काँग्रेसजनों को कि वे अपनी ज़िम्मेदारी को समझते हैं, वो समझ रहे हैं कि काँग्रेस को अंदर से घुन लग गया है और एक तेवर से काँग्रेस को काम करना पड़ेगा। आपको याद होगा, बंबई के एक समारोह में उन्होंने कहा था कि सत्ता के दलालों से काँग्रेस को मुक्ति दिलानी होगी। उस वक़्त से सत्ता के दलाल चौंक गए। उनके कान खड़े हो गए। क्योंकि दलाली में जो मज़ा है, वो मज़ा संघर्ष में तो है नहीं। और एक-एक करके उन्होंने राजीवजी की छवि को खंडित करना शुरू कर दिया। किसी बात को लेकर उनके खिलाफ़ आरोप लगाए। बहुत हल्ला-गुल्ला सुना बोफोर्स का। विश्वनाथ प्रताप सिंह ने लम्बे-चौड़े बयान दिए । कहा कि मैं जिस दिन प्रधानमंत्री बनूँगा, 11 दिन के भीतर मैं सबके नाम बता दूँगा। तो ठीक है, 11 महीने हो गए एक नाम भी वो बता नहीं सके। ये केवल चरित्र हनन् करने की एक साजिश थी ताकि उस युवा-व्यक्तित्व को धूमिल किया जा सके। क्योंकि लोगों को ये खतरा था कि जो सत्ता के दलालों को सत्ता के गलियारे से निकालने का संकल्प जो देश के सामने व्यक्त कर चुका है, अगर वो सचमुच में जनता का बन कर और मजबूत हो जाएगा तो इन दलालों की नहीं चलेगी। और मैं बहुत साफ़ तौर से कहना चाहता हूँ कि उनके इस कुप्रचार से ज़रूर राजीवजी चुनाव हार गए। उसके बाद सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरकर काँग्रेस आई। लोगों ने कहना शुरू किया कि अब दावा करिए सरकार बनाने का। प्रधानमंत्री बनने का उन्होंने दावा नहीं किया, उन्होंने यह कहा कि जब तक जनता हमको बहुमत नहीं देगी हम इस जोड़-तोड़ की सरकार नहीं बनाना चाहते। वो विश्वास जनता के बीच में जाकर पाना चाहते थे। और जब ये खिचड़ी सरकारें आपस में लड़-भिड़ कर टूटने लगीं और 91 का चुनाव नज़दीक आने लगा। सारे मुल्क में राजीवजी ने दौरा करके, अपनी गलतियों को स्वीकार करके, राजीवजी ने वादा किया कि हम देश को बनाने के लिए हर प्रकार की कुर्बानी देना चाहते हैं। आपका हमें सहयोग चाहिए। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एक नई फिज़ा बन गई। सत्ता के दलालों की और भी चिंता बढ़ गई। और राजीवजी की हत्या की साज़िश उन्हीं सत्ता के दलालों के द्वारा हुई है। ये मैं खुले मंच से कहना चाहता हूँ।

अपने विश्वास की बात 12 जून, 1995 को शिवपुरी की एक सभा में उन्होंने व्यक्त की— 'साम्प्रदायिक शक्तियों की बात है। श्रीमती इन्दिरा गाँधी और श्री राजीव गाँधी और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ये तीनों बलिदान पिछले 50 वर्ष में हुए हैं। आज़ादी के बाद दुनिया के किसी देश का ऐसा कोई इतिहास नहीं है, प्रमाण नहीं है जहाँ तीन नेताओं को केवल उनके विश्वासों के लिए केवल उनके देश के समर्थन की भावना के लिए, मौलिक एकता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए जिनकी हत्या 50 वर्षों के अंदर की गई है। हम सब उस विरासत को अपनी विरासत मानते हैं।'

26928

स्वयं को अति सामान्य मानते हैं, श्री अर्जुनसिंह। मगर इस सामान्य होने में अपना विशिष्ट का विश्लेषण भी स्वयं ही प्रस्तुत करते हैं कि हम वे सामान्य लोग हैं, जो अति विशिष्ट या कि महान् लोगों के साथ काम करते

SHEEL COLLEGE ACC.No..... Book No. Date..... BHOPAL

26928

रहे है। महान् व्यक्तित्वो की छत्रछाया में रहकर काम करने की वजह से महान् विभूतियों की कुछ-न-कुछ महानता जाने-अनजाने सामान्य एवं सरल लोगों के व्यक्तित्व में भी आ ही जाती है। वे एक उदाहरण हमें बताते हैं। पं. जवाहर लाल ने अपने स्वयं के बारे मे लिखा है। पंडितजी कहते हैं— "हम जैसे साधारण, सादे लोग, जिनकी अपने आप में बहुत बड़ी वख़त नही है, महत्त्व नहीं है, एक महान् नेता गाँधीजी के नेतृत्व में एक महान् कार्य करने में लगे हुए थे, उस महानता का कुछ अंश हमने भी पा लिया।" बस, यही श्री अर्जुनसिंह के जीवन का मूलमंत्र बन गया। उन्होंने भी पूरी निष्ठा से महान् नेता श्रीमती इन्दिरा गाँधी के साथ काम किया। वे याद करते हैं— 'वर्ष 84 के 31 अक्टूबर को श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या हो गई। एक अंधकार छा गया समूचे भारत में। सभी स्तब्ध थे, ग़म में डूबे हुए लोग, जल्दी समझ नहीं आ रहा था कि क्या होगा। क्योंकि इन्दिराजी का व्यक्तित्व केवल राजनैतिक नेता का व्यक्तित्व नही था, उनका व्यक्तित्व समाज और समूचे देश का, और उन मूल्यों और आदर्शों का प्रतिबिम्ब थीं इन्दिरा गाँधीजी, जिनके सहारे भारत की पहचान होती थी। धीरज, शौर्य, साहस, सूझबूझ, सहिष्णुता, एक-दूसरे को सही ढंग से सोचने की, समझाने की कोशिश और जब कोई चुनौती आ जाए, उस चुनौती का शेर की तरह मुकाबला करना। उस वक़्त लिखा ही जाता था कि श्रीमती इन्दिरा गाँधी की केबिनेट में एक ही पुरुष है और वो श्रीमती इन्दिरा गाँधी हैं।' उन्होंने आगे कहा— 'जब ऐसा नेतृत्व अचानक चला जाय ओर वह भी राष्ट्र की रक्षा के लिए तो स्तब्ध होना स्वाभाविक है।'

इसी क्रम में वे आदरपूर्वक राजीवजी को याद करते हैं— 'उस स्तब्धता में भारत के एक युवक ने जो राजनीति मे नहीं आना चाहता था, जिस की रुचि राजनीति में नहीं थी, केवल अपनी माँ की सहायता करने के लिए उन्होंने राजनीति मे प्रवेश किया था हिचकते हुए, अचानक सारे राष्ट्र का बोझ उन जवान कंधों पर आ गया। एक तरह से देश मे, भारत की मशाल भारत की युवा पीढ़ी के हाथ में आ गई। राजीवजी को लोग निकट से जानते हैं। आज भी वो हँसता हुआ चेहरा, वे निर्भीक और विश्वास में डूबी हुई आँखें और वही साहस माँ का।'

राजीव गाँधी की जवान मौत से श्री अर्जुनसिंह लम्बे अरसे तक विचलित रहे। और वे ही एक मात्र शीर्ष-पंक्ति के कॉंग्रेसी नेता भी थे, जो संसद में राजीव हत्याकाण्ड की जाँच की कार्रवाई को तेज़ करने तथा षड्यन्त्रों की जड़ों तक पहुँचने के लिए आवाज़ उठाते रहे। लोकसभा की कार्रवाई का लेखा-जोखा इसका प्रमाण है।

श्री राजीव गाँधी की नृशंस हत्या की जाँच हेतु भारत सरकार ने जैन आयोग की स्थापना की। लोकसभा में 26 अगस्त, 1995 को जैन आयोग की स्थिति पर हुई चर्चा श्री अर्जुनसिंह के प्रश्न के आधार पर ही निर्धारित की गई थी। उस समय यह विषय तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री श्री पी. चिदम्बरम के अधीन था। चर्चा की शुरुआत करते हुए श्री अर्जुनसिंह ने जाँच कार्य में आई ढील तथा स्व. राजीव गाँधी के हत्यारों को पकड़ने में हो रहे विलंब पर आक्रोश व्यक्त किया। उनकी माँग थी कि सरकार को इस हत्या के पीछे षड्यन्त्र का भी पर्दाफाश करना चाहिए तथा अपराधियों को अविलम्ब दंडित किया जाना चाहिए। यह चर्चा नियम 193 के अन्तर्गत हुई। चर्चा में श्री अर्जुनसिंह ने अत्यन्त शालीनता और तर्कपूर्ण अंदाज़ मे अपनी बातें सदन के सामने रखीं। उनका एक विशेष गुण जो देखने को आया, वह यह है कि अपनी बात को कहते समय अथवा अपना पक्ष प्रस्तुत करते समय वे इतने चौकस रहते है कि विरोधियों की टिप्पणियों अथवा व्यवधान डालने के तमाम तरीकों से बचते रहते है और अपने मूल विषय से कभी भी इधर-उधर नहीं जाते। उनकी प्रस्तुति इतनी तथ्यात्मक और पूर्व तैयारी से परिपुष्ट होती है कि लोग निरुत्तर या हतप्रभ से रह जाते है। पूरी स्थिति को विस्तार से स्मरण करने के लिए हम उस दिन की राजीव गाँधी हत्याकाण्ड सम्बन्धी लोकसभा में जैन आयोग की स्थिति पर नियम 193 के अधीन चर्चा का अविकल ब्यौरा देख सकते है, जो इस प्रकार है:

श्री अर्जुनसिंह (सतना) : माननीय अध्यक्ष महोदय, शुरू में, मैं इस चर्चा की अनुमति देने के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूँ, शायद इससे सभी को कुछ असुविधा हुई होगी और मैं इस असुविधा के लिए माफी चाहता हूँ। माननीय श्री चिदम्बरम यहाँ बैठे हुए हैं। वे केवल 90 दिनों का उत्तर दे सकते हैं जब से वे उपर्युक्त मामले के प्रभारी बने हैं। मैं समझता हूँ कि माननीय महोदय मैं आपके जरिए यह जानने के लिए विधिसम्मत ढंग से अनुरोध कर सकता हूँ कि शेष चार वर्षों का उत्तर कौन देगा।

एक माननीय सदस्य : आप भी इनमें शामिल हैं।

रक्षा मंत्रालय में राज्यमंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्यमंत्री (श्री मल्लिकार्जुन) : यदि वे इसके सीधे प्रभारी अभी बने हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि वे पहले की घटनाओं के बारे में नहीं जानते हैं। जाँच आयोग जो कुछ भी कर रहा था, उन्हें इसके बारे में पता है।

एक माननीय सदस्य : वह यहाँ हैं। इसलिए वे यह कह सकते हैं।

श्री अर्जुनसिंह : मेरी टिप्पणियाँ उत्तर जानने की भूमिका में हैं जो माननीय मंत्री महोदय ने दिया है।

इसलिए, कम से कम तब और उसके बाद यह नहीं कहा जाएगा कि वे केवल 90 दिनों का ही जवाब देंगे और बाकी समय के उत्तर जानने के लिए मुझे किसी और की तरफ देखना पड़े।

महोदय, मैं अपने सीमित ज्ञान और योग्यता से, जो कि बहुत कम है, जो कुछ मैं जानता हूँ और जो मेरे विचार से हम में से कई लोग जानते हैं, उसे सभा में रखता हूँ और कुछ कारणों के कारण हम में से कई नहीं भी जानते हैं तो मैं समझता हूँ कि उन्हें पूछना चाहिए और मुझे भरोसा है माननीय मंत्री महोदय हम सबको इसके बारे में बताएँगे।

मुद्दों पर बहस करने से पहले मैं एक अति महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछना चाहता हूँ क्योंकि इस प्रश्न के उत्तर में इस दुःखद घटना के सभी पहलुओं पर वास्तव में ईमानदारी से ध्यान दिया जाएगा या नहीं दिया जाएगा इसी बात से इस प्रयोजनार्थ बरती गई ईमानदारी का पता चलेगा। यदि कुछ अन्य प्रयोजन हैं जो इस एकनिष्ठता से मामले की जाँच नहीं होने दे रहे हैं या जो किसी न किसी व्यक्ति, एजेन्सी के लिए समस्या खड़ी कर सकते हैं, तो औचित्य और विधिक आवश्यकता की सीमाओं के अन्दर, मेरे विचार से, इस सभा और इस देश को इसके बारे में जानने का हक है। हम मामलों को किसी के गले नहीं मढ़ सकते हैं, हम मामलों की उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। हम टालमटोल नहीं कर सकते हैं और हम गलत प्रचार नहीं कर सकते हैं।

मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि कुल मिलाकर जो धारणा बनी है केवल मेरी ही नहीं अपितु सुप्रसिद्ध न्यायाधीश न्यायमूर्ति वर्मा, जो वर्मा आयोग के प्रमुख थे, उच्चतम न्यायालय के सबसे वरिष्ठ जजों में से एक, न्यायमूर्ति जैन जिनके बारे में श्री चिदम्बरम ने कल बोला था, एक प्रसिद्ध न्यायाधीश और राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश — अब यदि उन्हें कुछ आशंकाएँ हैं और यदि वे आशंकाएँ थीं तो मैं समझता हूँ मेरे जैसे आम आदमी को जानने का पूरा अधिकार है कि क्यों इस तरह की आशंकाओं को विकृत किया जा रहा है और यह सरकार इन आशंकाओं का उत्तर देने के लिए क्या कर रही है?

मैं न्यायमूर्ति वर्मा से बहस शुरू करूँगा। वर्मा आयोग जिसके वे प्रमुख थे, श्री वर्मा ने अपनी विद्वत्तापूर्ण

रिपोर्ट में, मैं विस्तार में कई अन्य पहलुओं पर नहीं जाना चाहता लेकिन रिपोर्ट का एक महत्त्वपूर्ण वाक्य जो निष्कर्षों में से एक है, उसका उल्लेख यहाँ किया जाना चाहिए और सभा का ध्यान इस ओर दिलाना चाहिए. उन्होंने आसूचना ब्यूरो के निदेशक श्री नारायणन की गवाही का उल्लेख किया है। मैं उसे उद्धृत करता हूँ:

"श्री नारायणन श्री गाँधी की सुरक्षा व्यवस्था से संतुष्ट प्रतीत नहीं हुए और उनकी सुरक्षा के बारे में आशंकित थे। लेकिन कुछ गुप्त कारणों से वे अप्रभावी थे और आयोग के समक्ष गवाही के दौरान भी उन्होंने चुप रहना पसंद किया। एक उच्च पदाधिकारी की ऐसी असमर्थता व्यग्र करने वाली है और इसके कारणों का पता लगाना चाहिए और शासन व्यवस्था के हित के लिए इसे समाप्त करना चाहिए।"

स्वातंत्र्योत्तर भारत में दुःखद घटनाओं में से यह एकमात्र दुःखद घटना घटित हुई है।

जब कोई युवा नेता, जो इस देश का प्रधानमंत्री था — युवाकाल में उसकी हत्या कर दी जाती है — कुछ लोगों का उनकी राजनीति से मतभेद हो सकता है, कुछ लोग उनका चेहरा भी न देखना चाहते हों, इसका कोई महत्त्व नहीं रहता — लेकिन तथ्य यह है कि उन्होंने देश की लगन से सेवा की और देश को उनसे भविष्य में कुछ और आशाएँ थीं।

पहली बात, जिसकी स्वाभाविक रूप से पश्चिम से जाँच की जानी चाहिए थी वह श्री राजीव गाँधी को खतरे की संभावना के बारे में थी, जिस समय कि उनकी हत्या की गई। जैसा मैंने कहा, मैं तफसील में नहीं जाना चाहता लेकिन खतरे की संभावना, महोदय, जैसा आप दोनों तरह से जानते हैं — हम माननीय सभा के अध्यक्ष के रूप में और सरकार में उच्च पद धारण करने के कारण — कि आसूचना ब्यूरो केन्द्रीय एजेन्सी है, जिसकी प्रमुख जिम्मेदारी सभी उपलब्ध साक्ष्यों का मूल्यांकन और विचार करना और अति महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को खतरे की संभावना पर निर्णय लेना है। यह जिम्मेदारी श्री नारायणन के कंधों पर थी और उसी जिम्मेदारी के संबंध में न्यायमूर्ति वर्मा का यह निष्कर्ष है। वस्तुतः यदि हम वर्मा आयोग की समूची रिपोर्ट को देखते हैं तो यह धारणा बनती है कि वह अन्ततः सूचना से नहीं अपितु चुप्पी से अटक गए थे। यह हमें न केवल आयोग की रिपोर्ट से पता चलता है, अपितु तत्पश्चात् एक विचित्र घटना घटी है, महोदय, मेरे विचार से कदाचित हमारे न्यायिक इतिहास में पहली बार न्यायमूर्ति वर्मा सरीखे न्यायाधीश ने 15 अगस्त, 1993 को इस देश के एक प्रसिद्ध साप्ताहिक 'द इंडिया टुडे' को एक साक्षात्कार दिया था। मैं जानता हूँ कि इसे पढ़ने में कतिपय सीमाएँ हैं लेकिन आपकी अनुमति से क्योंकि मामला इतना गम्भीर है कि, मुझे इसे पढ़ने के लिए कि न्यायमूर्ति वर्मा ने क्या कहा था आपकी अनुमति चाहूँगा, 'द इंडिया टुडे' को एक लम्बे साक्षात्कार में उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश, न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा — वस्तुतः यह वह है जो समाचार-पत्र में दिया गया है — मैं यह नहीं कहूँगा कि सरकार पर तथ्यों को छुपाने का आरोप लगाओ।"

उद्धरण :

प्रश्न : आपने अपने निष्कर्ष को कैसे साबित किया कि आसूचना ब्यूरो ने सूचना को छिपाया था?

उत्तर : सार्वजनिक रिपोर्ट में इस तरह के अत्यधिक संवेदनशील मामले की व्याख्या करना ठीक नहीं है, तथापि सरकार जानती है कि मैं क्या कर रहा हूँ, यह सब दस्तावेजों में है जो हमने वापस कर दिए।

प्रश्न : क्या आपका निष्कर्ष अनुसंधान एवं विश्लेषण विंग के वरिष्ठ अधिकारी श्री एस.ए. सुब्बैया द्वारा दायर किए गए शपथपत्र पर आधारित है?

उत्तर : जी, हाँ, सुब्बैया का शपथपत्र उस शपथपत्र के साथ पढ़ें जो उस समय आसूचना ब्यूरो के भूतपूर्व संयुक्त निदेशक, श्री के.एन. ठाकुर ने दायर किया था।

प्रश्न : क्या आपको विश्वास है कि आपने इन शपथपत्रों को अधिक नहीं पढ़ा है?

उत्तर : न्यायाधीश होने के कारण, मैंने पूरी रिपोर्ट में बहुत संयमित भाषा का प्रयोग किया है, जहाँ कठोर शब्द की आवश्यकता थी वहाँ मैंने मृदु शब्द का प्रयोग किया है। फिर भी मैं यह कहना चाहता हूँ कि अधिसूचना ब्यूरो के पास 'स्पष्ट और वाकपटु' सूचना थी, तो आपको विश्वास होना चाहिए कि मैंने इन शब्दों का प्रयोग सावधानी से किया।

प्रश्न : सरकार ने आपके जाँच परिणाम को अस्वीकार कर दिया है?...(व्यवधान)

यह केवल सारांश है। यह बहुत बड़ा साक्षात्कार था। मैं केवल उन्हीं प्रश्नों को उद्धृत कर रहा हूँ जो सीधे प्रासंगिक हैं। केवल दो या तीन प्रश्न शेष हैं, महोदय...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : इन सब बातों की प्रामाणिकता की जाँच नहीं की जा सकती है, आप सारांश दे सकते हैं इस पर कोई आपत्ति नहीं करेगा, लेकिन शब्दश: या उद्धरण मुद्दे को कदाचित जटिल बना सकता है।

श्री अर्जुनसिंह : यदि यह बात एक प्रमुख व्यक्ति उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा कही गई है तो मैं अपनी ओर से कुछ नहीं कहना चाहता। यदि, मैं जो कुछ महसूस करता हूँ वह कह दूँ तो स्थिति और भी बिगड़ सकती है। **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : जो उन्होंने कहा है आप कह सकते हैं। बिना उद्धरण दिए उन्होंने जो कुछ कहा है आप उसका सारांश दे सकते हैं।

श्री अर्जुनसिंह : यह प्रश्न जिसका उत्तर मैं बाद में दूँगा।

प्रश्न : सरकार ने आपके निष्कर्ष को अस्वीकार कर दिया है मुझे खेद है कि इस दल के एक माननीय सदस्य मुझे रोकना चाहते हैं। नेता को ऐसा कहने दिया जाए।

उत्तर : आपने देखा होगा कि उन्होंने कोई कारण नहीं दिया, उन्होंने कहा मेरा जाँच परिणाम तथ्यों पर आधारित नहीं था। यदि वस्तुत: ऐसा था तो उन्होंने इसे अस्वीकार करने के कारण दिए होते, उनकी चुप्पी यही दर्शाती है कि मेरा निष्कर्ष सही था। छिपाने में लगने के बजाय, सरकार ने मेरे जाँच परिणाम को नोट किया होता और सुधारात्मक उपाय किए होते।

केवल एक बात है जो मैं इस बारे में कहना चाहता हूँ। इस बारे में मैं सिर्फ एक बात कहना चाहता हूँ। प्रश्न यह था:

प्रश्न : श्री एम.के. नारायणन ने इस बारे में क्या कहा कि आई.बी. ने सूचना छुपाई थी?

उत्तर : उन्होंने टालमटोल वाले अथवा असंतोषजनक उत्तर दिए थे।

मैंने जो उद्धृत किया है वह वर्मा आयोग रिपोर्ट का अंग है।

महोदय, मुझे पृष्ठभूमि के रूप में यह सब कुछ इसलिए बताना पड़ रहा है क्योंकि आयोग को उस घटना के संबंध में सभी सुरक्षा व्यवस्थाओं में त्रुटियों, गलतियों और कमियों की जाँच करने का कार्य सौंपा गया था। आयोग

किसी निष्कर्ष पर कैसे पहुँच सकता था जबकि सुरक्षा के लिए मूलतः जिम्मेदार व्यक्ति बिना किसी कारण के चुप रहता है और आयोग के समक्ष भी बोलने के लिए तैयार नहीं है? यह वास्तव में इस बात का सूचक है कि इस अत्यन्त दुःखद घटना के संबंध में क्या दृष्टिकोण अपनाया गया।

मेरे दोनों तरफ के साथी कहते रहते है कि आप सरकार का अंग थे। हाँ, मैं इस बात से इन्कार नहीं करता हूँ और विनम्र भाव से कहना चाहता हूँ कि मैं मंत्रियों के उस दल का सदस्य था जिसे वर्मा आयोग की रिपोर्ट पर अनुवर्ती कार्रवाई करने का कार्य सौंपा गया था। मैं याद दिलाना चाहता हूँ कि मेरे विचार से वर्मा आयोग की रिपोर्ट पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई रिपोर्ट दो बार सभा में प्रस्तुत की गई थी, परन्तु सभा ने उसे स्वीकार नहीं किया था। इसको पुनः देखने का निर्देश हुआ था और इसी पृष्ठभूमि में मंत्रिमंडल ने निर्णय लिया था कि इसकी जाँच हेतु मंत्रियों के एक दल का गठन किया जाए और इस माननीय सभा को संतुष्ट करने के लिए एक अनुवर्ती कार्रवाई रिपोर्ट तैयार करे। मेरे विचार में यह बैठक जून अथवा जुलाई, 1994 में आरम्भ हुई थी। मैं उन पत्रों को उद्धृत नहीं करना चाहता हूँ क्योंकि अब यह सार्वजनिक रिकॉर्ड का अंग है, क्योंकि यह श्री रेड्डी द्वारा मुझे कॉंग्रेस पार्टी से निष्कासित किए जाने वाले कारण बताओ नोटिस के उत्तर में संलग्न है। इच्छुक व्यक्ति इनको पढ़ सकते हैं। (व्यवधान) वह आन्ध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और अनुशासनात्मक कार्रवाई समिति के अध्यक्ष श्री विजय भास्कर रेड्डी हैं।...(व्यवधान) देखिए, हम सिर्फ अनुशासन में ही विश्वास नहीं रखते हैं अपितु अपनी जिम्मेदारी में भी विश्वास रखते हैं। अनुशासन जिम्मेदारी के पश्चात् होता है और जिम्मेदारी का निर्वाह करने के पूर्व नहीं होता है।

श्री सोमनाथ चटर्जी : इस कॉंग्रेस में?

श्री अर्जुनसिंह : मैं इस सब में नहीं जाना चाहता।

...(व्यवधान) कौन किसको निकालता है, वह जनता तय करेगी।

हमको इसके ऊपर नहीं झगड़ना चाहिए, यह इस वाद-विवाद का विषय नहीं है।

मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ क्योंकि इस गंभीर मामले में श्री नारायणन की चुप्पी, जो मैंने उठाई है, मंत्रियों के दल को जाँच करनी है...

श्री सोमनाथ चटर्जी : चव्हाण साहब ने कल क्या बोला?

श्री अर्जुनसिंह : कल वाली बात पर तो मैं अभी आ रहा हूँ, यह तो आज वाली है। चव्हाण साहब को तो मैं नहीं जानता कि कहाँ है लेकिन अब इन्होंने पूरी रिस्पॉंसिबिलिटी ले ली है।

मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि साधारणतः सरकार, जिसके प्रधान मंत्री श्री नरसिंह राव हैं, श्री चिदम्बरमजी के माध्यम से सभा के प्रति उत्तरदाई हैं।

महोदय, अगर श्री राजीव गाँधीजी को खतरे के संबंध में वास्तव में जानकारी उपलब्ध थी तो जो व्यक्ति इसके मूल्यांकन के लिए जिम्मेदार है तो कम से कम आयोग को तो उत्तर देना चाहिए था। आयोग को उत्तर न दिए जाने का कारण, जैसा कि मैंने अभी पढ़ा है, राजनीतिक नेतृत्व की जिम्मेदारी है कि यह उत्तर क्यों नहीं दिया गया। उनको यह उत्तर सभा में और सभा के बाहर देना चाहिए।

मुद्दा यह है कि आसूचना ब्यूरो के पास मद्रास से लेकर दिल्ली तक उपलब्ध सूचनाओं, पत्रव्यवहार और जानकारी से स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि एक दुःखद घटना होने वाली थी। अन्ततः, यह सब वर्मा आयोग के समक्ष

भी रखा गया था। यही पृष्ठभूमि है और अब मैं न्यायमूर्ति जैन जाँच आयोग को सुझाए गए कार्यक्षेत्र पर आता हूँ।

महोदय, न्यायमूर्ति जैन आयोग का गठन 23 जून, 1991 को किया गया था। तब से यह पूरी मेहनत, न्यायिक तहकीकात और चेतना से कार्य कर रहा है। न्यायमूर्ति जैन ने मुझसे बेहतर बहुत अच्छे ढंग से खुद कई दिक्कतों को सामने रखा है। उन्होंने यह भी कहा है कि वास्तव में सरकार असहयोग कर रही है। यह सब बातें आयोग की खुली बैठक में उठाई गई थी और प्रेस में छप चुकी हैं। मैं इस पर बोलना नहीं चाहता हूँ।

कल माननीय चिदम्बरमजी ने कहा था कि माँगी गई तमाम जानकारी दो शर्तों के अध्यधीन हैं, जो कि उन्होंने एक विशिष्ट वकील के रूप में कही है, विशेषाधिकार का मामला और कुछ दस्तावेज अन्य बातों को प्रभावित करेंगे जो कि सार्वजनिक नहीं करने हैं, उपलब्ध करा दी गई है और करा दी जाएगी।

मैं श्री चिदम्बरमजी की अनुमति से सभा को सूचित करना चाहता हूँ कि उन्होंने इस मामले को समझने के लिए स्वयं 90 दिन का समय लिया था, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। मेरे पास अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के महासचिव, श्री अहमद पटेल द्वारा हस्ताक्षरित एक पत्र है, जो कि आयोग में दाखिल किया गया था और जिसमें मेरे विचार से लगभग 25 सुस्पष्ट मुद्दों के संबंध में पूछी गई जानकारी प्रेषित की गई थी। विशिष्ट दस्तावेज माँगे गए थे। इस पत्र में सभी बातें दी गई हैं। मैं यहाँ पर पढ़ना नहीं चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि आप मुझे सभा पटल पर रखने की अनुमति नहीं देंगे।

श्री हरिकिशोरसिंह (शिवहर) : क्यों?

श्री अर्जुनसिंह : अगर आपकी अनुमति है तो मैं चाहता हूँ कि इसको कार्रवाई वृत्तान्त का हिस्सा बनने दिया जाए।

अध्यक्ष महोदय : "क्यों" उन्होंने कहा है, मैंने नहीं कहा है।

श्री हरिकिशोरसिंह : आप इसके लिए अनुरोध कर सकते हैं।

श्री अर्जुनसिंह : मैं इसके लिए सिर्फ अनुरोध ही नहीं कर रहा हूँ, परन्तु यह भी कहना चाहता हूँ कि मेरी जानकारी के मुताबिक यह एक सत्यापित प्रति है। मैं यह सत्यापित कर सकता हूँ कि यह अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी द्वारा दाखिल किए गए पत्र की प्रति है। मेरी जानकारी के मुताबिक अगर मैं गलत कह रहा हूँ तो क्षमा का प्रार्थी हूँ – सम्पूर्ण प्रारूप श्री चिदम्बरमजी द्वारा तैयार और अनुमोदित किया गया था।

श्री मृत्युन्जय नायक (फूलबनी) : इस पत्र पर किसके हस्ताक्षर हैं?

श्री अर्जुनसिंह : मैंने कहा अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी महासचिव श्री अहमद पटेल के हैं।

एक माननीय सदस्य : कृपया हमें तिथि बताइए।

श्री जसवंतसिंह : आपने कहा था कि यह अखिल भारतीय काँग्रेस समिति का है। इसी वजह से मैंने ऐसा कहा।

श्री अर्जुनसिंह : ए.आई.सी.सी. एक दल है।

श्री जसवंतसिंह : आपने ऐसा ही कुछ कहा था, दोनों काँग्रेस पार्टियों में अंतर है?

श्री अर्जुनसिंह : जी नहीं, महोदय। मेरे विचार में आप चर्चा का रुख मोड़ने का प्रयास कर रहे है। और मेरा

आपसे अनुरोध है कि यह निवेदन आपस में एक दूसरे से नहीं बल्कि जैन आयोग से किया गया है। और जैन आयोग से जो निवेदन किया गया है, वह आयोग का एक दस्तावेज है।

श्री सैफुद्दीन चौधरी : दस्तावेज की विषय-वस्तु क्या है?...(व्यवधान)

श्री अर्जुनसिंह : आयोग के लिए काँग्रेस दल भी एक पार्टी है।

श्री नीतीश कुमार : उसमें खास-खास क्या है, नमूना बताइए?

श्री सोमनाथ चटर्जी : चिदम्बरम ने क्या गड़बड़ किया है?

श्री अर्जुनसिंह : नहीं, गड़बड़ कुछ नहीं है।

जैसा कि श्री चिदम्बरम की स्वीकृति से मैंने कहा है, इस पत्र में जिस जानकारी के लिए कहा गया था, वह वही है, जिसे आयोग को बताने से अब सरकार इन्कार कर रही है। महोदय, अब मैं समझ सकता हूँ कि उस अनुरोध में बहुत सी बातें लिखी गई थीं जिन पर संभवत: आगे जाँच-पड़ताल अथवा विचार करने पर यह पाया गया है कि इन्हें प्रदान करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन इसका कोई प्रबल कारण होना चाहिए। हम आयोग के लिए कोई दस्तावेज तैयार करके उससे पीछे नहीं हट सकते और यह नहीं कह सकते कि ये दस्तावेज हम नहीं दे सकते।

इसकी एक लंबी सूची है। अगर आपको कोई परेशानी न हो, तो मैं इसे पढ़ सकता हूँ या सभा पटल पर रख सकता हूँ...(व्यवधान)

(एक) प्रधान मंत्री के मुख्य सचिव, मंत्रिमंडल सचिव, विदेश सचिव तथा भारत सरकार के गृह सचिव को यहाँ पेश होने और निम्नलिखित दस्तावेज पेश करने के लिए सम्मन भेजे जाएँ :

(क) 29 जुलाई, 1987 दिनांकित राजीव-जयवर्धने समझौता।

(ख) श्रीलंका में पुन: शांति स्थापित करने के लिए श्रीलंका सरकार द्वारा भारत सरकार से शांति सेना तैयार करने के अनुरोध सहित रिकॉर्ड।

(ग) वर्ष 1988 से 21 मई, 1991 के बीच श्री राजीव गाँधी पर हमला होने की धमकियों के संबंध में (रॉ, केन्द्रीय जाँच ब्यूरो, इंटेलीजेंस ब्यूरो, इत्यादि) विभिन्न केन्द्रीय और राज्य एजेन्सियों की रिपोर्ट।

(घ) श्री एम. करुणानिधि की श्री नटेशन तथा श्री काशीनंदन से मुलाकात से संबंधित इंटेलिजेंस ब्यूरो/ रॉ. के रिकॉर्ड तथा केन्द्र सरकार की वह गुप्त सूचना जिसे उन तक पहुँचाया गया था और जिसे उन्होंने लिट्टे तक पहुँचाया।

(ङ) 1989 में श्री वी.पी. सिंह की अध्यक्षता में जनता दल की सरकार का श्री राजीव गाँधी से एस.पी.जी. सुरक्षा वापिस लेने संबंधी निर्णय और उन्हीं के आदेश के तहत उन्हें प्रदान की गई वैकल्पिक सुरक्षा व्यवस्था।

(च) काँग्रेस अध्यक्ष अर्थात् श्री कमलापति त्रिपाठी, सांसद श्री पी. चिदम्बरम, अखिल भारतीय काँग्रेस समिति के पदाधिकारियों, विधिक प्रकोष्ठ अधिववक्ताओं के समूह, महिला विंग तथा अन्य लोगों द्वारा दिए गए तथा उन्हें प्राप्त विभिन्न प्रतिवेदनों के साथ उन पर किसी प्रकार के आदेश या उत्तर, यदि कोई हों।

(छ) वर्ष 1989 से लेकर 21 मई, 1991 तक विभिन्न एजेन्सियाँ जैसे रॉ, सी.बी.आई., आई.बी., विभिन्न राज्यों की गुप्तचर एजेन्सियों, इंटरपोल तथा अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों द्वारा

तत्कालीन प्रधान मंत्री को पेश की गई रिपोर्ट और उन पर तत्कालीन प्रधान मंत्रियों द्वारा पारित आदेश।

(ज) श्री राजीव गाँधी की सुरक्षा के साथ-साथ सरकार द्वारा वहन किए जा रहे व्यय के ब्यौरे के संबंध में श्री वी.पी. सिंह अथवा गृह मंत्री के संसद और संसद से बाहर दिए गए विभिन्न वक्तव्य।

(झ) वर्ष 1988 से लेकर 1991 तक की अवधि, विशेष रूप से तमिलनाडु में लिट्टे की गतिविधियों के संबंध में इंटेलीजेंस ब्यूरो, रॉ, सी.बी.आई., तथा राज्य खुफिया एजेन्सियों के पास उपलब्ध रिपोर्टें।

(दो) वर्ष 1989 से 1990 के बीच श्री वी.पी. सिंह की सरकार द्वारा श्री राजीव गाँधी की सुरक्षा में कटौती करने के संबंध में विभिन्न प्रतिनिधिमंडलों द्वारा सचिव, भारत के राष्ट्रपति को दिए गए अभ्यावेदन तथा उन पर पारित आदेश/कार्रवाई तथा उसके संबंध में किया गया किसी प्रकार का कोई पत्र-व्यवहार।

(तीन) श्री राजीव गाँधी की सुरक्षा के प्रश्न पर की गई चर्चा से संबंधित संसदीय कार्रवाई प्रस्तुत करने के लिए लोकसभा तथा राज्य सभा के महासचिवों से अनुरोध किया जाए।

(चार) रक्षा सचिव को निम्नलिखित दस्तावेज पेश करने का अनुरोध किया जाए...(व्यवधान)

सचिव, तमिलनाडु, सरकार/गृह सचिव, तमिलनाडु सरकार से निम्नलिखित के संबंध में रिकॉर्ड प्राप्त किए जाएँ:—

(क) वर्ष 1989 से द्रविड़ मुनैत्र कषगम् की सरकार की स्थापना के रिकॉर्ड। उनके लिट्टे से संबंधों के बारे में एजेन्सियों की रिपोर्ट।

(ख) वर्ष 1989 से 1991 की अवधि में श्री राजीव गाँधी की सुरक्षा को खतरे के बारे में 1989 से लेकर 1991 तक की एजेन्सियों की रिपोर्ट।

(ग) द्रविड़ मुनैत्र कषगम् सरकार की अवधि के दौरान लिट्टे द्वारा तस्करी, आयुध कारखाने चलाने, मादक औषधियों का अवैध व्यापार, कैंप लगाने, वायरलैस सेट संचार केन्द्रों की स्थापना संबंधी गतिविधियों पर खुफिया एजेन्सियों की रिपोर्ट। राजकोष से पुनर्वास योजनाओं या अन्य किसी नाम से तमिलनाडु सरकार द्वारा उन्हें धनराशि प्रदान करने का निर्णय।

(घ) जून, 1989 में मद्रास शहर में ई.पी.आर.एल.एफ. के नेता श्री पद्मनाभ की हत्या संबंधी रिकॉर्ड। राज्य सरकार द्वारा की गई जाँच-पड़ताल।

(ङ) बिना कोई वीसा और अनुमति प्राप्त किए कानून का उल्लंघन करते हुए सांसद श्री गोपालस्वामी श्रीलंका जाकर लिट्टे के नेता से भेंट और उस पर श्री करुणानिधि द्वारा केन्द्र सरकार द्वारा की गई कार्रवाई के रिकॉर्ड।

(च) विशेष रूप से मई, 1991 में तमिलनाडु सरकार और केन्द्र सरकार की एजेन्सियों के बीच रिपोर्टों का आदान-प्रदान तथा लिट्टे की गतिविधियों और श्री राजीव गांधी की सुरक्षा के संबंध में उन पर की गई कार्रवाई।

(छ) 1989 से 1991 के बीच द्रविड़ मुनैत्र कषगम् और लिट्टे के संबंधों के बारे में रिपोर्ट।

(ज) तमिलनाडु में श्रीलंकाई लोगों के पंजीकरण के संबंध में रिकॉर्ड तथा गृह-स्वामियों द्वारा श्रीलंकाई लोगों को मकान किराए पर देने को अधिसूचित करने संबंधी आदेश तथा इस योजना के क्रियान्वयन और रिकॉर्ड।

(झ) तमिलनाडु में लिट्टे के आदमियों द्वारा किए गए विभिन्न अपराधों और गिरफ्तारियों से संबंधित किसी प्रकार के रिकॉर्ड।

महोदय, अगर आप चाहते हैं, तो मैं इसे सभा पटल पर रखना चाहूँगा और सभा का अधिक समय नहीं लूँगा...(व्यवधान)... इसमें आगे कहा गया है :–

"21 मई, 1991 को या उसके आसपास श्रीपेरम्बुदूर में क्या कोई बम-निरोधक दस्ता या जासूसी कुत्तों का दस्ता लाया गया था या फिर इसे जानबूझकर मद्रास हवाई अड्डे पर ले जाया गया था। इसके संबंध में राज्य सरकार को रिकॉर्ड पेश करने के लिए कहा जाए।"

इसमें कुछ महत्त्वपूर्ण बातें हैं और अगर आपकी अनुमति हो तो माननीय सदस्य इसे देख सकते हैं।

मेरी शिकायत यह है कि ये अनुरोध इसलिए किए गए थे कि आयोग ऐसी स्थिति में आ सके कि वह कोई स्पष्ट निर्णय ले सके। अब अनुरोध करने के बाद भी अगर कोई न कोई बहाना लगाकर वही दस्तावेज आयोग को नहीं भेजे जाते तो यही मेरी शिकायत का विषय है।

श्री हरिकिशोरसिंह : उस समय अखिल भारतीय काँग्रेस समिति का अध्यक्ष कौन था?

श्री अर्जुनसिंह : मैं समझता हूँ हमें किसी अप्रासंगिक बात पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

श्री हरिकिशोरसिंह : आप अखिल भारतीय काँग्रेस समिति के महासचिव द्वारा दिए गए दस्तावेज को उद्धृत कर रहे हैं। उन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस समिति का महासचिव किसने नियुक्त किया? अध्यक्ष आप थे।

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, महासचिव की नियुक्ति अध्यक्ष करते हैं। आपके दल में भी ऐसा होता है। जब तक कि आप स्वत: नियुक्त नहीं हो जाते।...(व्यवधान)

श्री हरिकिशोरसिंह : आप झिझक क्यों रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह : मुझे कोई झिझक नहीं है। मैं केवल यही कह रहा हूँ जो मुझे कहना चाहिए।

श्री नीतीश कुमार : श्री अर्जुनसिंहजी, आप थक गए हैं।

श्री अर्जुनसिंह : हम थकने वाले नहीं हैं, नीतीश कुमारजी।

श्री सैफुद्दीन चौधरी : तारीख कितनी थी?

श्री अर्जुनसिंह : 28 अक्तूबर, 1993 की बात है।

महोदय, मेरी जानकारी के अनुसार यह अनुरोध मुख्य रूप से मंजूर किया गया था। यह आयोग के अभिलेखों से संबंधित है। अत: मैं यह नहीं कह सकता कि हर एक अनुरोध के संबंध में क्या आदेश दिए गए हैं। मुख्यत: ऐसा किया गया था।

विशेषाधिकार का प्रश्न आता है जैसा कि श्री चिदम्बरम ने कहा है। यद्यपि मैं वकील नहीं हूँ, मैंने कानून पढ़ा है लेकिन इसे अपना पेशा नहीं बनाया, फिर भी मैं जानता हूँ मेरे हिसाब से और निश्चित रूप से श्री चिदम्बरम की योग्यता मुझ से कहीं अधिक है कि उनकी बात मेरी समझ से परे है। लेकिन थोड़ा बहुत कानून मैं जो जानता हूँ उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि जी हाँ, विशेषाधिकार का दावा किया जा सकता है। वह अभियोजन, या बचाव पक्ष या किसी भी अन्य का न्यायालय में विशेषाधिकार है। लेकिन विशेषाधिकार मंजूरी का अधिकार उस व्यक्ति के पास नहीं होता जो इसके लिए आवेदन करता है।

यहाँ पर ऐसा लगता है कि विशेषाधिकार का दावा करना, और इसका निर्णय करना, दोनों भूमिकाएँ सरकार ने अपने पास ले ली है। अन्यथा जिन दस्तावेजों को आयोग के समक्ष रखे जाने का अनुरोध किया गया था उन्हें क्यों

नहीं भेजा गया? मैं उन दस्तावेजों के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ जो भेजे गए हैं। लेकिन दस्तावेज न भंग कर वह विशेषाधिकार मान लेना जो है ही नहीं, यह कैसी बात है, मैं नहीं समझता कि श्री चिदम्बरम कहेंगे कि यह अधिकार है।

महोदय, अंत में अनेक हिचक के बाद जब आयोग ने अपनी सुनवाई शुरू की, जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ, जिनकी प्रचार माध्यमों में काफी चर्चा हुई, 10 फरवरी, 1994 को मंत्रिमंडल के सामने जैन आयोग को समाप्त करने के लिए एक प्रस्ताव आया जिसकी अब हर एक को अच्छी तरह से जानकारी है।

इस पर सहमति नहीं हुई थी, मैं इसके कारण यहाँ नहीं बता सकता हूँ, लेकिन इस पर सहमति नहीं थी। एक माह के अन्तर्गत श्री मुश्ताक अहमद ने दिल्ली उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की जिसमें उन्होंने बहुत से आधारों पर अनुरोध किया था कि आयोग को समाप्त किया जाए। उस याचिका पर सुनवाई हुई और उच्च न्यायालय ने आयोग को समाप्त करने के अनुरोध को अस्वीकार करते हुए कतिपय शर्तें निर्धारित की थीं। उच्च न्यायालय ने कतिपय स्पष्ट मार्गनिर्देश निर्धारित किए कि जुलाई 1987 से पहले के सभी मामलों पर आयोग गौर नहीं कर सकता है और जुलाई, 1987 के पश्चात् के सभी मामलों पर आयोग गौर कर सकता है। इसे सभी ने अर्थात् आयोग ने, सभी परिषदों ने और केन्द्र सरकार ने स्पष्ट तौर पर स्वीकार किया था, मैं इस प्रश्न में नहीं जाना चाहता हूँ कि श्री मुश्ताक अहमद की क्या हैसियत थी। इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया है। उत्तर आज प्रासंगिक भी नहीं है क्योंकि उच्च न्यायालय का आदेश स्वीकार कर लिया गया है।

श्री सोमनाथ चटर्जी : वह कौन है?

श्री अर्जुनसिंह : मुश्ताक अहमद नाम का एक व्यक्ति है।

श्री नीतीश कुमार : जब नाम लिया है और जानते हो तो कुछ बताइए।

श्री अमल दत्त : क्या आप उन्हें जानते हैं?

श्री अर्जुनसिंह : हर एक के पीछे जाकर उनका पता लगाना मेरी जिम्मेदारी नहीं है।

महोदय, उच्च न्यायालय द्वारा यह आदेश दिए जाने के बाद प्रश्न यह है कि सरकारी वकील ने जैन आयोग को एक आवेदन पत्र दिया था कि इस याचिका पर अंतिम निर्णय दिए जाने तक आयोग को अपनी कार्रवाई रोक देनी चाहिए। जिसका मतलब यह है कि क्या न्यायालय इसे समाप्त करने के आदेश देना चाहता है या नहीं, न्यायालय के इस आदेश के बाद सरकारी वकील का आवेदन पत्र जैन आयोग को दिया गया था।

महोदय, मैं समझता हूँ, मुझे पूरा विश्वास है और मैं इस विचार से पूरी तरह से सहमत हूँ कि आयोग को केवल जुलाई 1987 के बाद की घटनाओं पर गौर करना चाहिए। सरकारी कारणों से इस बारे में अब कोई विवाद नहीं है जो हम सब को मालूम है। हर एक को इस प्रयास में दृढ़ क्यों रहना चाहिए कि उस आदेश के बावजूद इस आयोग को समाप्त किया जाए। यह मामला इतना गंभीर हो गया कि इस सभा के कुछ माननीय सदस्यों को उस मामले में अन्तर्गायक (इंटरवीनर) बनाए जाने के लिए आग्रह करना पड़ा और वे उस मामले में अन्तरायक है। यह तथ्य रह गए हैं कि आज जैन आयोग के समक्ष जाँच चल रही है और उस विभाजक रेखा का कड़ाई से पालन किया जा रहा है।

महोदय, अब मैं 90 दिन की छूट पर आता हूँ जो श्री चिदम्बरम के छूट के दिन थे। मैं मानता हूँ कि वह

एक दृढ़ विश्वासी, योग्य और सक्षम व्यक्ति है और वे दिया गया कोई भी काम बहुत सावधानी से करते हैं। प्रश्न यह है कि इन 90 दिनों के दौरान कतिपय घटनाएँ हुईं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : इनको ज्यादा सर्टिफिकेट देंगे तो गड़बड़ नहीं होगी?

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, चर्चा समाप्त होने के बाद मैं उनकी सुरक्षा के लिए उन सभी प्रमाण-पत्रों को वापस ले लूँगा।

श्री सोमनाथ चटर्जी : अच्छा लगा।

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, आयोग ने केन्द्रीय एजेन्सियों के प्रमुखों को साक्ष्य के लिए आयोग के समक्ष पेश होने के लिए 27, 28 और 29 जुलाई तिथियाँ निर्धारित की हैं।

उन्होंने शपथ-पत्र भी दाखिल कर दिए हैं। लेकिन उसके पक्ष और आयोग महसूस करते हैं कि उन्हें भी आना चाहिए और साक्ष्य देना चाहिए। इस बात पर सहमति भी हो गई थी। तदनन्तर अब जैसा कि श्री चिदम्बरम् को स्पष्ट करना पड़ा कि किसके सुझावों और आदेशों से यह आभास दिया गया कि वे मौखिक साक्ष्य के लिए नहीं आएँगे और उन्होंने जो शपथ-पत्र दाखिल किए हैं वे पर्याप्त है। जब यह सूचना आयोग के पास पहुँची तो स्वाभाविक रूप से इसके पक्ष उत्तेजित हुए कि ऐसा क्यों किया जा रहा है जबकि ऐसा आदेश मौजूद है कि इन तीन दिनों में उनकी जाँच की जानी है। उन्होंने आयोग में अपनी आपत्तियाँ दर्ज करवाईं, उस पर दलील हुई और अंत में आयोग ने आदेश दिया कि उन्हें जिरह के लिए स्वयं आयोग के समक्ष उपस्थित होना पड़ेगा। महोदय, अब जैसा आयोग ने निर्णय लिया है अब जिरह बन्द कमरे में होगी, इसलिए मैं उस बारे में कुछ नहीं कह सकता। मैं यह जानना चाहता हूँ कि उनके पेश होने का आदेश क्यों बदला गया था और किसने बदला।

जैन आयोग को थोड़ी सी असुविधा होनी तब शुरू हुई जब आयोग के वकील माननीय श्री अरोड़ा, एक वरिष्ठ अधिवक्ता ने कतिपय कारणों से त्यागपत्र दे दिया। मैं समझता हूँ कि दो महीने तक या एक माह से कुछ अधिक समय तक आयोग का कोई अधिवक्ता नहीं था। कोई भी व्यक्ति जो जाँच आयोग की कार्रवाई से भिज्ञ है वह आयोग को सहायता पहुँचाने में आयोग के अधिवक्ता की भूमिका को समझता है। मुझे विश्वास है कि श्री चिदम्बरम को यह बात मालूम थी प्रसिद्ध अधिवक्ताओं की नियुक्ति की गई थी, महोदय, लेकिन यह नियुक्ति 24 अगस्त, 1995 को की गई थी।...**(व्यवधान)**... जी, हाँ, मैंने तारीख ली है, यह भूतलक्षी प्रभाव से नहीं हो सकती है, यह परसों की बात है।

अब, मुझे मालूम नहीं है कि यह ठीक 24 तारीख को ही क्यों की गई, लेकिन ऐसा हुआ है। अब यह साधारणतः आयोग को सहायता पहुँचाने की प्रक्रिया में किया गया है लेकिन इसमें विलम्ब हुआ है। महोदय, न्यायमूर्ति जैन एक ऐसे मामले की जाँच कर रहे हैं जो बहुत महत्त्वपूर्ण है, जिसमें उनके लिए सुरक्षा संबंधी बहुत से जोखिम भी हैं। हम सब इस बात को मानेंगे। सुरक्षा की आवश्यकता है, और यह स्वीकार भी किया गया है और शायद पहले जैन आयोग या न्यायमूर्ति जैन को एक सुरक्षा सलाहकार दिया गया था। यह पद काफी लंबे समय से रिक्त पड़ा है। मुझे विश्वास है कि श्री चिदम्बरम यह सुनिश्चित करेंगे कि जिन उपलब्धियों का वर्णन किया गया है उसमें इस बात को भी शामिल किया जाए।

महोदय, अब मैं उन कुछ दस्तावेजों के बारे में कहना चाहता हूँ जो जैन आयोग ने माँगे थे लेकिन जो उसे

उपलब्ध नहीं करवाए गए।

महोदय, मेरे पास डॉ. सुब्रह्मणयम स्वामी द्वारा आयोग को संबोधित एक पत्र है...(व्यवधान)...मेरे विचार से आप डॉ. सुब्रह्मणयम स्वामी को जानते हैं...(व्यवधान)।

एक माननीय सदस्य : मिर्च-मसाला लगाइए।

श्री अर्जुनसिंह : मै मिर्च-मसाला लगाने का आदी नहीं हूँ। मै फैक्ट के आधार पर बोलता हूँ और फैक्ट्स के आधार पर इनफेरेंस ड्रा करता हूँ।

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप डॉ. सुब्रह्मणयम स्वामी को जानते हैं। बस इतना कहना ही काफी है।

श्री अर्जुनसिंह : इतना मिर्च-मसाला लगाना ही काफी है...(व्यवधान)... नहीं, महोदय, लेकिन मुझे अत्यन्त खेद है कि मुझे माननीय सदस्य के बारे में ऐसा कुछ कहना पड़ा, जिसे कि आप पसंद नहीं करते, लेकिन विषय-वस्तु ही ऐसी है कि मै इस बात की अनदेखी नहीं करना चाहता।

निस्संदेह इसमें उन्होंने यह कहा है कि वह आयोग के समक्ष पेश होना चाहते हैं और आयोग की सहायता करना चाहते है। उन्होंने यह कहा है :

"इस पत्र के साथ मैं तमिलनाडु एवं जाफना में लिट्टे के लोगों के बीच हुए वार्तालाप का अनुवाद संलग्न कर रहा हूँ, जिसे कि मैं पहले ही एक प्रेस-सम्मलेन में जारी कर चुका हूँ।"

यह कोई गोपनीय बात नहीं है। इसे एक प्रेस-सम्मेलन में पहले ही जारी किया जा चुका है। इण्डिया टुडे में भी लगभग डेढ़ वर्ष पहले यह बात प्रकाशित हुई थी, लेकिन महोदय, ये वार्तालाप/संदेश विशेषाधिकृत दस्तावेज हैं। आपकी अनुमति से मैं इन वार्तालापों में से कुछ अंश पढ़ कर सुनाना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : आप पढ़ कर सुना सकते हैं, परन्तु उद्धरणों के रूप में नहीं।

श्री अर्जुनसिंह : इन अंशों को मैं उद्धरणों के रूप में नहीं पढ़ूँगा।

वाणिज्य मंत्रालय में राज्यमंत्री (श्री पी. चिदम्बरम) : आम तौर पर मैं श्री अर्जुनसिंह जैसे किसी वरिष्ठ सदस्य के बीच में नहीं बोलता।

ये वार्तालाप 'ए' और 'बी' व्यक्तियों के बीच हुए गुप्त बेतार संप्रेषण हैं जिन्हें कि खुफिया एजेन्सियों ने प्रकट किया था तथा मैं यह उल्लेख नहीं कर सकता कि ये 'ए' और 'बी' व्यक्ति कौन थे। इन्हें डी-कोड किया गया था तथा स्वर्गीय श्री राजीव गाँधी की हत्या के मामले की सुनवाई कर रही पुण्डामल्ली (मद्रास) में स्थित पदनामित न्यायालय के समक्ष चल रहे मुकदमे में इन्हें 'प्रदर्शित' के रूप में अंकित किया गया है। जैन आयोग ने इन संप्रेषित संदेशों की प्रतियाँ माँगी थीं। इन्हें जैन आयोग के समक्ष प्रस्तुत किया गया था– जो वस्तुत: विशेषाधिकार का मामला बनता है तथा मुझे विश्वास है कि सभी जानते हैं। मेरा अत्यन्त सम्मानपूर्वक यह कहना है कि मैं यह बात नहीं समझ रहा हूँ कि किसी ऐसे गुप्त संप्रेषित संदेश पर — जो किसी सुनवाई न्यायालय में दाखिल किया गया महत्त्वपूर्ण अभियोजन है, न्यायाधीन न्यायिक मुकदमा है, जैन आयोग के समक्ष भी विचाराधीन है, इसकी कार्रवाई न्यायिक प्रकृति की है एवं न्यायाधीन भी है — यह मुद्दा कैसे आरम्भ हुआ और श्री अर्जुनसिंह — जिन्हें अपने उत्तरदायित्व की पूर्ण जानकारी है - इस महत्त्वपूर्ण साक्ष्य के अंश को इस माननीय सभा के समक्ष कैसे पढ़ कर सुनना चाहते है? मेरी समझ में यह नहीं आता कि यह दस्तावेज उन्हें कैसे प्राप्त हुआ है। इस समय, मैं यह रहस्योद्घाटन करने की स्थिति में

नहीं हूँ। चाहे मुझे इस बात की जानकारी है अथवा नहीं तथा किसी समाचार में प्रकाशित कोई संदेश सही है अथवा नहीं, लेकिन उसे मैं यहाँ प्रकट करने में असमर्थ हूँ। यह दस्तावेज न्यायालय में उपलब्ध है।

श्री हरिकिशोरसिंह : श्री सुब्रह्मणयम स्वामी को बहुत-सी बातों की जानकारी हो सकती है क्योंकि इस सरकार ने उन्हें भी केबिनेट मंत्री का दर्जा दिया हुआ है। अत:, वह कोई साधारण आदमी नहीं है। इन दस्तावेजों को जारी करने के बाद, उन्हें केबिनेट मंत्री का दर्जा दिया गया था। उनके कहने का यही तात्पर्य है।

अध्यक्ष महोदय : जो बात श्री चिदम्बरम कहने की कोशिश कर रहे थे, मैं उसे समझना चाहता हूँ। वह यह कह रहे थे : "इसे पढ़कर नहीं सुनाया जा सकता। यह एक विशेषाधिकृत दस्तावेज है।"

श्री पी. चिदम्बरम : यदि श्री अर्जुनसिंह यह दावा करते हैं कि यह एक संप्रेषित संदेश है, तो मैं यह बताना चाहता हूँ कि सुनवाई न्यायालय एवं जैन आयोग के समक्ष प्रस्तुत "साक्ष्य" अंकित दस्तावेज को विशेषाधिकृत दस्तावेज के रूप में होने का दावा किया गया था।

श्री सोमनाथ चटर्जी : उन्होंने इस बारे में क्या निर्णय लिया था?

अध्यक्ष महोदय : मुझे इसे समझना पड़ेगा। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। क्या इस दस्तावेज को प्रदर्शित किया गया है अथवा उसे इस शर्त के साथ प्रदर्शित किया गया है कि न्यायाधीश इस दस्तावेज पर बाद में निर्णय लेगा?

श्री पी. चिदम्बरम : इसे सुनवाई कार्यालय में प्रदर्शित किया गया है।

अध्यक्ष महोदय : तब तो यह एक साक्ष्य है।

श्री पी. चिदम्बरम : इसे प्रकट नहीं किया जा सकता क्योंकि इस पर टाडा कानून के अंतर्गत बंद कमरे में मुकदमा चल रहा है।

अध्यक्ष महोदय : मैं भी यही कह रहा हूँ। आपको मुझे बताना चाहिए कि न्यायाधीश महोदय ने इसे प्रकट करने को मना किया है।

श्री पी. चिदम्बरम : इस पर बंद कमरे में मुकदमा चल रहा है तथा यह टाडा न्यायालय की कार्रवाई है।

अध्यक्ष महोदय : क्या सभी कुछ बंद कमरे में हो रहा है?

श्री पी. चिदम्बरम : इस पर बंद कमरे में कार्रवाई चल रही है। इसमें से कुछ भी प्रकाशित नहीं किया जा सकता। सुनवाई न्यायालय ने इस संबंध में आदेश जारी किया हुआ है।

अध्यक्ष महोदय : श्री अर्जुनसिंह, मैं कोई निर्णय लेने से पूर्व उस दस्तावेज को देखना चाहता हूँ। इस मामले में कार्रवाई बंद कमरे में हुई थी तथा इन्हें प्रदर्शित किया गया था। यदि इस मामले में कार्रवाई बंद कमरे में न हुई होती और इन्हें प्रदर्शित नहीं किया हुआ होता, तो मैं आपको उस दस्तावेज में से पढ़कर सुनाने की अनुमति दे देता। लेकिन यदि कार्रवाई बंद कमरे में न हुई होती — इससे पूर्व कि आपने इस मामले विशेष का उल्लेख किया है — मैं यह देखना चाहता हूँ कि आप जिस दस्तावेज को रिकॉर्ड में लाना चाहते हैं, वह दस्तावेज क्या है। (व्यवधान)

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, मेरे माननीय मित्र श्री पी. चिदम्बरम ने जो कहा है न तो मैं उस पर कोई विवाद खड़ा करना चाहता हूँ और निश्चित रूप से न ही उसका खंडन करना चाहता हूँ, जो आपने कहा है।

अध्यक्ष महोदय : यह खंडन करना नहीं है। हम बिल्कुल सही करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

श्री अर्जुनसिंह : कृपया मेरी बात सुनें आपकी ऐसी इच्छा है, अतः मैं निश्चित रूप से आपसे सहमत हूँ।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री अर्जुनसिंह, मान लीजिए कि जो श्री चिदम्बरमजी कह रहे हैं, वास्तव में मैं यह महसूस नहीं करता हूँ कि जैन आयोग के समक्ष जो कुछ चल रहा है, वह सब कुछ बंद कमरे में चल रहा है।

श्री पी. चिदम्बरम : महोदय, यह सब कुछ जैन आयोग के समक्ष विचाराधीन नहीं है। यह मुकदमा पदनामित न्यायालय के समक्ष विचाराधीन है, जो कि स्वर्गीय श्री राजीव गाँधी की हत्या के संबंध में 41 अभियुक्तों के विरुद्ध मुकदमे की सुनवाई कर रही है तथा इस न्यायालय की कार्रवाई पूर्णतया बंद कमरे में चल रही है।

अध्यक्ष महोदय : यदि यह कार्रवाई बंद कमरे में चल रही है तथा यदि इसे प्रदर्शित भी कर दिया गया है, तब भी मुझे आपको इसकी कार्रवाई वृत्तान्त/रिकॉर्ड में लाने के लिए अनुमति देने से पूर्व जाँच-पड़ताल करनी होगी।

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, जैसा कि मैंने स्पष्ट कहा है और मैंने अपनी जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए कहा है कि आपने जो कहा है मैं उससे सहमत हूँ और उसे स्वीकार करता हूँ। जहाँ तक आपका संबंध है, निस्संदेह मुझे ऐसा कुछ नहीं कहना चाहिए। मैं केवल एक प्रश्न पूछ रहा हूँ जिसे कि आपको भी बिल्कुल निष्पक्ष तौर पर अवश्य ही पूछना चाहिए और वह प्रश्न सरकार से इस दस्तावेज के बारे में पूछने से संबंधित है। मैं इसमें से एक भी वाक्य पढ़कर नहीं सुनाउँगा।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कोई निर्णय लेने से पहले मैं जो आप पढ़कर सुनाना चाहते हैं – उसे जानना चाहता हूँ।

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, इसी वजह से मैं ऐसा कह रहा हूँ। मैं इसे पढ़ नहीं रहा हूँ। मैं इसे नहीं पढ़ूँगा। मैं तो आपसे बस इतना ही अनुरोध कर रहा हूँ कि आपको उनसे यह अवश्य पूछना चाहिए...

अध्यक्ष महोदय : किस बारे में?

श्री अर्जुनसिंह : सरकार से एक प्रमुख तथ्य के बारे में पूछा जाना चाहिए कि क्या यह दस्तावेज...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : लेकिन कौन-सा दस्तावेज, मैं यह जानना चाहता हूँ।

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, आपको इसके बारे में पता लग जाएगा। इस दस्तावेज को, मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर दूँगा। मैं इस दस्तावेज को आपको दे दूँगा।

अध्यक्ष महोदय : अब, इस बात को छोड़िए। यह दस्तावेज मुझे दे दीजिए। मैं इसे पढ़ने के बाद कोई निर्णय ले लूँगा।

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, मैं शब्दों को प्रयुक्त करना नहीं जानता। लेकिन इस संबंध में निर्णय लेने के लिए आप ही बिल्कुल उचित व्यक्ति हैं। आपके अलावा अन्य कोई व्यक्ति इस बारे में कैसे निर्णय ले सकता है?

अध्यक्ष महोदय : श्री अर्जुनसिंह ऐसी बात नहीं है। मान लीजिए कि आप कुछ कहते हैं तथा यह रिकॉर्ड करने की बात बन जाती है, यदि इसे प्रकट कर दिया जाता है, तो मेरी तरफ से यह कहने का कोई औचित्य नहीं है कि इसे कार्रवाई वृत्तान्त में शामिल नहीं किया जा सकता। कम-से-कम इसे इस सभा में तो कहा ही गया है।

श्री अर्जुनसिंह : अच्छा महोदय, मैं उस बात को मान लूँगा। परन्तु मुझे अपना कर्तव्य समझकर एक बात

कहनी है और वह यह है कि इस दस्तावेज में जो तथ्य हैं, जिसका मैं उल्लेख नहीं करूँगा।...(व्यवधान)

श्री नीतीश कुमार : 'इंडिया टुडे' में है।

श्री अर्जुनसिंह : 'इंडिया टुडे' को छोड़िए, हाउस की बात है।

श्री नीतीश कुमार : 'इंडिया टुडे' में छपा है।...(व्यवधान)...

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष महोदय, आपका निर्णय बिल्कुल सही है। उसमें केवल एक पहलू और है। क्योंकि अर्जुन सिंहजी ने अपने व्याख्यान में कहा है, यह चीज 'इंडिया टुडे' में छपी है। इसीलिए अगर 'इंडिया टुडे' में क्या छपा है, उसका वे उल्लेख करें, तो उसकी ऑथेंटिसिटी कितनी है और कितनी नहीं है, यह तो मैं नहीं जानता हूँ, लेकिन इसके आधार पर तो आज कम से कम जो चीज वे पढ़ना चाहते हैं, वह जगजाहिर है।

यद्यपि मुकदमे की कार्रवाई कैमरे के सामने चल रही है फिर भी इसमें कोई गोपनीय बात नहीं है क्योंकि 'इंडिया टुडे' ने जिस सूचना को प्रकाशित किया है वह चाहे सच है या गलत, मैं नहीं जानता क्योंकि हमारे पास इसको जानने का कोई भी तरीका नहीं है...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : जो भी कार्रवाई वृत्तान्त में निश्चित रूप से सम्मिलित किया जा सकता है, हम उसको रोकने के पक्ष में नहीं है। लेकिन, साथ ही हमारी देश के प्रति जिम्मेदारी है। यदि मंत्री अथवा सदस्य द्वारा सभा में कुछ भी कहा जाता है अथवा उद्घाटित किया जाता है तो वह सही है अथवा गलत उसका फैसला बाद में होना चाहिए। लेकिन उसमें कुछ पवित्र भावनाएँ सम्मिलित हैं और ये भावनाएँ समाचार-पत्रों में प्रकाशित तथ्यों से कुछ और ज्यादा पवित्र है। यदि यह दो देशों के बीच का मामला है तो मुझे सचेत रहना पड़ेगा। यदि यह उस प्रकार का कोई मामला है तो मुझे उस पर ध्यान देना होगा। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि मैं इसका उत्तर 'हाँ' या 'ना' में दे रहा हूँ। मेरा यह कहना है कि पहले मैं यह पढ़ना चाहूँगा कि आखिर यह मामला क्या है और उसके बाद मैं निर्णय लूँगा कि इसे कार्रवाई वृत्तान्त में सम्मिलित किया जाना चाहिए अथवा नहीं।

यदि न्यायालय की कार्रवाई गुप्त नहीं होती और यदि इसे खुला रखा जाता तो मैंने केवल इतना कहा होता कि यह न्यायालय के रिकॉर्ड में एक दस्तावेज है और इसलिए यह एक प्रकार से सार्वजनिक दस्तावेज है और इसकी अनुमति दी जानी चाहिए। चूँकि यह कार्य गुप्त रूप से हो रहा है इसलिए, मुझे सतर्क रहना होगा और अर्जुन सिंहजी, मुझे आशा है कि आप मेरी बात से सहमत होंगे।

श्री अर्जुनसिंह : मैंने आपका विनिर्णय आरम्भ में ही स्वीकार कर लिया है।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद।

श्री अर्जुनसिंह : मैं यह कहने की कोशिश कर रहा हूँ कि उस दस्तावेज को देखने के बाद आप जिस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं, उसके अलावा — मैं दस्तावेज का उल्लेख नहीं कर रहा हूँ — सूचना से इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि मार्च 1991 में ही सरकार को यह ज्ञात हो गया था कि श्री राजीव गाँधी की हत्या करने का प्रयास किया जा रहा है। किस प्रकार की तैयारी की जा रही थी, इसकी व्यवस्था कैसे की जा रही थी और यह हत्या मद्रास में अथवा दिल्ली में की जानी थी इसके बारे में मैं अब कुछ भी नहीं कह पाऊँगा। आपके निर्देश के कारण मैं चुप बैठ रहा हूँ। मैं इसे नहीं पढ़ूँगा।

अध्यक्ष महोदय : हम सब लोगों की दिलचस्पी सच और सही जानकारी प्राप्त करने में है।

श्री अर्जुनसिंह : जी अच्छा। मैं इसे ऐसे समाप्त करता हूँ। लेकिन मैं एक बात कहूँगा कि ये प्रश्न, हम सब लोगों को और मुख्यत: देश को व्यथित करते रहेंगे और यही प्रश्न भावी पीढ़ियों का भी पीछा नहीं छोड़ेंगे और हम सब लोगों को अपने-अपने ढंग से इसका उत्तर देना होगा। इतना कहते हुए मैं यह बात समाप्त करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : श्री अर्जुनसिंहजी, मुझे वह दस्तावेज देखने दीजिए। आप कृपया वहीं पर बैठे रहिए। कोई आकर आपसे वह दस्तावेज ले लेगा। आप दूसरे मुद्दे पर आ सकते हैं और उसके बाद इस बात पर आ सकते हैं।

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, कल राज्य सभा में भी यह मुद्दा उठाया गया था और इस संदर्भ में मैं समझता हूँ कि माननीय गृहमंत्री द्वारा जारी वक्तव्य के दो अथवा तीन सम्बद्ध विशेषताओं को आपके समक्ष रखना मेरे लिए प्रसंगौचित्य होगा।

श्री संतोष मोहन देव : महोदय, मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या यहाँ पर राज्य सभा के वाद विवाद का उल्लेख किया जा सकता है। मैं नहीं जानता इसलिए पूछ रहा हूँ। क्या ऐसा पहले कभी हुआ है?

अध्यक्ष महोदय : आप इसे या तो व्यवस्था के प्रश्न के रूप में रखिए अथवा आप संबंधित पुस्तक पढ़िए।

श्री संतोष मोहन देव : आप उनकी सहायता कर रहे हैं, मेरी भी सहायता कीजिए। कृपया मेरी भी सहायता कीजिए। मैं केवल यही बात जानना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : मैं बस यही तो कर रहा हूँ। यदि आप को विश्वास है कि इसका उल्लेख नहीं किया जा सकता तो आप नियम पढ़िए और उसके बाद कहिए कि उसका उल्लेख नहीं किया जा सकता है और फिर उसके बाद आप उसे व्यवस्था के प्रश्न के रूप में रखिए।

श्री संतोष मोहन देव : तब तो आपको मुझे उसका अध्ययन करने के लिए समय भी देना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : मैं समझता हूँ कि मुझे पुस्तक भी लाकर देनी होगी। सामान्यत: हम इस चर्चा का उस रूप में उल्लेख नहीं कर सकते हैं।

श्री अर्जुनसिंह : हम आम तौर पर इसका उल्लेख नहीं करते हैं और मैंने सामान्यत: इसका उल्लेख किया भी नहीं होगा।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : जहाँ तक मंत्रियों का संबंध है, यह एक अलग मामला है।

अध्यक्ष महोदय : तभी तो यह बात रख रहे हैं। मैं यह पढ़ रहा हूँ।

श्री अर्जुनसिंह : मैं किसी सदस्य का नाम नहीं लूँगा।

महोदय, वह दो बातें कहते हैं :

"एक और मामला है जो कि षड्यंत्र से संबंधित है। न्यायाधीश जैन इस मामले को देख रहे हैं, जिसमें वास्तव में अन्य देश और देश के कुछ लोगों का षड्यंत्र शामिल है।"

उसके बाद मैं वह बातें यहाँ उद्धृत नहीं करूँगा जो कि एक माननीय सदस्य ने पूछा। लेकिन गृहमंत्री का उत्तर था:

"जी, हाँ। देश के और बाहर के भी कुछ लोग इसमें शामिल हैं। यह भी आश्चर्य की बात नहीं कि षड्यंत्र के इस मामले में अन्य अभिकरण भी शामिल हों। और षड्यंत्र के मामले में कतिपय ऐसे मुद्दे हैं जिन पर हमें विचार

करना है कि क्या कतिपय दस्तावेजों को उद्घाटित करना उचित होगा आदि।''

महोदय, मैंने आरम्भ में यही प्रश्न उठाया था। हम श्री राजीव गाँधी की हत्या से संबंधित षड्यंत्र का पर्दाफाश करने के बारे में कितने गंभीर है? रुकावट किस बात की है? वे बाहरी तत्व कौन से हैं जो कि इसके बीच अवरोध उत्पन्न कर रहे है वह भी सिर्फ इसलिए कि इसमें कोई अभिकरण अथवा कोई व्यक्ति शामिल है? हम किसको बचाने जा रहे हैं? हम इस मूल विषय से क्यों हट रहे हैं? और यदि यह बात गृहमंत्री ने नहीं कही होती तो मैं कतई उसका उल्लेख नहीं करता।

और उन्होंने श्री चिदम्बरम के बारे में कुछ कहा था :

''जहाँ तक गृह मंत्रालय का संबंध है, श्री चिदम्बरम ने मुझसे कभी भी ये नहीं कहा 'कि इस दस्तावेज की आवश्यकता है। कृपया मुझे यह दस्तावेज दीजिए।' मैं दस्तावेज देने के लिए तैयार हूँ।''

यह बातचीत उनके और श्री चव्हाण के बीच हुई। मैं उस मामले में कतई नहीं पड़ना चाहता।

दूसरी बात जो उन्होंने कही थी और जो कि समाचार-पत्रों में व्यापक रूप से प्रकाशित हुई थी वह यही है। मुझे विश्वास है कि श्री चव्हाणजी ने 1987 के बाद की घटनाओं के संबंध में इसका उल्लेख किया क्योंकि जैन आयोग के समक्ष यही विषय-वस्तु थी और 1987 के पूर्व के समय के बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता। अत: वह इसका अवश्य ही उल्लेख कर रहे थे और आगे वह कहते हैं :

''हम यह नहीं चाहते थे कि विभिन्न देशों द्वारा किसी परिवार को भी बदनाम किया जाए और इसलिए मैं स्वयं श्रीमती सोनिया गाँधीजी से मिलने गया था।''

क्या इसका यह मतलब है कि 1987 के बाद के घटना क्रम में, जिस पर अभी जाँच चल रही है, ऐसी कोई बात है जो कि गृहमंत्रीजी हमें बताना नहीं चाहते हैं, जो कि उनको बाद में हमें बता देना चाहिए था। (व्यवधान) उसमें ऐसा कुछ भी नहीं था।

महोदय, आज जानबूझकर उनका नाम लेने का मेरा कोई इरादा नहीं है और कल भी मेरा कुछ भी कहने का इरादा नहीं था सिवाय उन भावनाओं के जो कि हम सभी ने व्यक्त की थी। मैं किसी विवाद में पड़ना नहीं चाहता था। परन्तु ऐसा करने का यह कोई तरीका नहीं है। दुर्भाग्यवश, इससे सारा माहौल ही बिगड़ जाता है। मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि यह पूरे प्रकरण का एक छोटा सा हिस्सा है। सभी दस्तावेजों को पढ़ने और उनके विस्तार में जाने का मेरे पास कोई समय नहीं है। लेकिन इससे लोगों के मन में यह धारणा लाई गई कि वे लोग इस बारे में बात नहीं करना चाहते हैं कि सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा कहाँ की जा रही है। वे यह भी नहीं बताना चाहते हैं कि वे उनकी सुरक्षा क्यों नहीं कर पाए। वर्मा आयोग स्तब्ध है। अब जैन आयोग कार्रवाई कर रहा है। विशेषाधिकार के लिए दावे पर दावे किए जा रहे हैं। मुझे नहीं मालूम कि आखिर में क्या होगा।

इतने महत्त्वपूर्ण गंभीर मामले को निपटाने का यह कोई तरीका नहीं है। मैं इस देश के लिए गंभीर महत्त्वपूर्ण शब्दों को दोहराना चाहता हूँ जिसमें इस देश के एक नेता का जघन्य हत्याकांड शामिल है।

अगर इसे हल करने का यही तरीका है तो फिर यह प्रश्न उठाया जाएगा कि क्या हम किसी का बचाव करने का प्रयास कर रहे हैं? क्या इस कार्रवाई में किसी को बचाने की कार्रवाई की जा रही है? यहाँ तक कि एक इंटरव्यू के दौरान उच्चतम न्यायालय के एक प्रतिष्ठित न्यायाधीश ने भी **'कवर-अप'** शब्द का इस्तेमाल किया है। क्या हम

राष्ट्र को यही दिखाना चाहते हैं? यह हमारी मर्यादा, हमारे शौक, जो हमें अत्यधिक दु:खी कर देती है, के अनुरूप किस प्रकार हो सकता है?

इन शब्दों के साथ मैं चाहूँगा कि इस सभा में इन प्रश्नों के जवाब दिए जाएँ और अगर मुझे और अधिक कुछ कहने के लिए आपकी अनुमति मिली तो मैं अपने जवाब में इस बात को पूरा करूँगा।

श्री जसवन्तसिंह : मैंने बैठक में भी कहा है कि यदि आप चर्चा करना चाहते हैं तो निश्चित रूप से हम भी चर्चा चाहते हैं। लेकिन मैं नियम 193 के अंतर्गत चर्चा का, समय का तथा चर्चा के विषय का हवाला दे रहा हूँ। निश्चय ही मैंने कहा था और मैं पुन: यह मानता हूँ महोदय, कि मैंने कहा था कि यदि सब लोग चर्चा करना चाहते हैं तो हम उनका साथ देंगे।

महोदय, जो प्रश्न पूछे गए हैं उनका जवाब वास्तव में सरकार को देना है। उनका जवाब मुझे नहीं देना है। लेकिन मैं वास्तव में देख रहा हूँ कि जहाँ तक कि जैन आयोग द्वारा कार्य किए जाने का संबंध है, हमें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि जैन आयोग किस तरह से कार्य कर रहा है अथवा किस तरह से नहीं कर रहा है। मैं अभी भी उसके कार्यकरण के बारे में भ्रमित हूँ।

लेकिन, मैंने तो इस मामले को यह समझा है कि यह पूरा विषय आयोगों की राजनीति है और उसके पश्चात् आयोगों के माध्यम से राजनीति के संबंध में है। उदाहरण के लिए मेरे विचार से ठक्कर आयोग के संबंध में अन्तत: सरकार में काफी समय के बाद उगलवाया गया कि हमें ठक्कर आयोग के संबंध में चर्चा करनी चाहिए। महोदय, मैंने ऐसा सभा में भी कहा था और इसलिए मुझे यह टिप्पणी करने में कोई कठिनाई महसूस नहीं हो रही है कि ऐसे घोर अपराध के लिए वह बहुत गलत दस्तावेज है। निश्चय ही, अपराध की जाँच की जानी चाहिए। अनेक आयोग स्थापित किए गए हैं। लेकिन आयोग को राजनीति का विषय नहीं बनाना चाहिए।

महोदय, अन्य विषय क्या हैं। मैं माननीय अर्जुनसिंहजी द्वारा व्यक्त विचारों से भी पूर्णत: सहमत हूँ, मेरा विचार है कि अगला विषय है शीघ्र न्याय, प्रत्यक्ष न्याय और फिर दयालु और ध्यान रखने वाली सरकार का पहलू। अब हम इस सरकार से दया और ध्यान देने की उम्मीद नहीं कर सकते।

हम शीघ्र न्याय की उम्मीद भी नहीं कर सकते क्योंकि अब न्यायिक प्रणाली स्वयं भी अत्यधिक बाधाग्रस्त हो गई है और हम सब आयोग के माध्यम से राजनीति को करने लगे हैं। इसलिए जब पूर्व प्रधान मंत्री की हत्या के संबंध में विरोध, चिन्ता व्यक्त की जाती है तो समय और संदर्भ महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं। हम भी, इस दल में अपने अनेक राजनीतिक साथियों को खो चुके हैं जिनकी हत्या कर दी गई थी। हमने अपने दल के अध्यक्ष श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी तथा स्वर्गीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय को भी इसी तरह खो दिया। उनके मामले भी आज तक सुलझ नहीं सके। लेकिन रोज हम उस दु:ख को तथा राजनीतिक निष्ठा को प्रदर्शित नहीं करते हैं अथवा रोज इस विषय को नहीं उठाते हैं क्योंकि यह भा.ज.पा. का अपना मामला है। हम निश्चय ही कॉंग्रेस दल के राजनीतिक सिद्धांतों का समर्थन नहीं करते हैं। यदि मैंने उन्हें स्वीकार कर लिया होता तो मैं उसके साथ बैठता। लेकिन, चूँकि मैं उनके राजनीतिक सिद्धांतों को नहीं मानता इसलिए मैं यहाँ बैठता हूँ और हमेशा यहीं बैठूँगा। हम व्यक्तिगत दु:खों को बयान नहीं करते हैं। यहाँ दो प्रसिद्ध नेता मेरे साथ बैठे हैं जो कि इन दोनों स्वर्गीय नेताओं को व्यक्तिगत रूप से जानते थे। लेकिन वे अपनी व्यक्तिगत क्षति को बैज के रूप में हमेशा लगाए नहीं रहते हैं और जनता को यह नहीं दर्शाते कि अब हमारी कितनी साख है। मैं ऐसा बहुत संकोच से कह रहा हूँ। लेकिन मैं यह बहुत मजबूर होकर कह रहा हूँ।

श्री आर. प्रभु : हम भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री की हत्या के बारे में बात कर रहे हैं। वह इस सदन के सभी सदस्यों के प्रिय रहे हैं चाहे वे काँग्रेस के सदस्य हों अथवा विपक्ष के। भारत के प्रधान मंत्री होने के अलावा वह एक अत्यन्त उदार व दयालु व्यक्ति थे। हरेक आदमी यह बात जानता है। हम इस संबंध में बात नहीं कर रहे हैं। हम एक व्यक्ति अथवा किसी महिला के पति के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम भारत के प्रधान मंत्री की हत्या के बारे में बात कर रहे हैं। एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं जो धर्म-निरपेक्षता, समाजवाद तथा देश की एकता व अखंडता का समर्थक था तथा जिसका विश्वास था कि इस देश की गरीब जनता को साथ लेकर ही इस देश का विकास किया जा सकता है। मुझे उनके मंत्रिमंडल में मंत्री होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था तथा कई मामलों में मैंने उनके साथ बहुत निकट रह कर कार्य किया था। मैं जानता हूँ कि अब उदारीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हो गई है। परन्तु उनकी मुख्य चिंता यह थी कि देश की गरीब व ग्रामीण जनता की हमेशा सुरक्षा की जानी चाहिए। यही बात श्रीमती सोनिया गाँधी ने अमेठी में कही थी परन्तु किसी ने भी यह बात कल नहीं कही। इन आदर्शों का परित्याग कर दिया गया है। 'हम यहाँ राजनीति पर बहस नहीं कर रहे हैं।' परंतु हम, जैसा कि माननीय सदस्य श्री जसवंत सिंह ने कहा है, इस मामले को रफा दफा किए जाने की बात कर रहे हैं। इससे पहले भी कई हत्याएँ हुई हैं। परंतु जाँच आयोगों में इन्हें रफा दफा किए जाने के कोई आरोप नहीं लगाए गए थे। हाँ, इनमें विलम्ब अवश्य हुआ था। मैं श्री अर्जुनसिंह द्वारा कही गई सभी बातों में नहीं जाना चाहता क्योंकि उन्होंने विभिन्न जाँचों के बारे में अधिकतर सभी मुद्दों का उल्लेख कर दिया है। परंतु मैं कुछ और बातें कहना चाहता हूँ तथा यदि मुझसे कुछ छूट जाता है तो भी आप कृपया ध्यान से सुनें क्योंकि मैं कोई भी बात दोहराना नहीं चाहता।

हम सभी जानते हैं कि तीन प्रकार से जाँच चल रही है। पहली मद्रास में अभिहीत न्यायालय में। विशेष जाँच दल ने दो सालों के बाद आरोप-पत्र दाखिल किया है। दूसरी वर्मा आयोग में, जिसने 15 जून, 1992 को अपनी रिपोर्ट पेश कर दी थी तथा तीसरे जैन आयोग के द्वारा जो अगस्त 1991 में गठित किया गया था तथा जिसे इस हत्याकांड के पीछे षड्यंत्र का पता लगाना था।

महोदय, माननीय मंत्रीजी ने कल कहा था कि वह 24 मई, 1995 के बाद से इस मंत्रालय के प्रति सीधे जिम्मेदार हैं। जब श्री अर्जुनसिंह बोल रहे थे, उस समय संभवत: संसदीय कार्य मंत्रालय के प्रभारी मंत्री ने कहा था कि वह इससे पहले की घटनाओं से अवगत हैं। महोदय, अब मुद्दा यह नहीं है कि वह अवगत हैं अथवा नहीं। परन्तु जब कोई व्यक्ति किसी विभाग या किसी मामले, जो अत्यधिक संवेदनशील हैं का कार्यभार ग्रहण करता है तो एक वरिष्ठ अधिवक्ता होने के नाते उस व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वह अपना कार्यभार ग्रहण करने की तारीख तक की सभी जाँच कार्यों की स्थिति से अवगत होगा। अत: वह जानते होंगे। पिछले चार वर्षों से क्या हो रहा था। उन्होंने इस सम्माननीय सभा को इस जानकारी से अवगत नहीं कराया। मेरी इच्छा है कि वे ऐसा करें।

मैं सबसे पहले जैन आयोग के बारे में कहना चाहूँगा। जैन आयोग को वर्मा आयोग की रिपोर्ट को आधार मान कर आगे काम करना था। परन्तु सरकार ने लंबे समय तक वर्मा आयोग की रिपोर्ट की आधिकारिक प्रति जैन आयोग को उपलब्ध नहीं कराई। तथा मैं नहीं समझता कि यह कभी उपलब्ध कराई जाएगी। किसी अन्य स्रोत से यह रिपोर्ट आई तथा न्यायमूर्ति जैन उसे तभी देख पाए। जैन आयोग के गठन के बाद लंबे समय तक किसी वकील की नियुक्ति नहीं की गई। भारत के तत्कालीन महान्यायवादी जैन आयोग में आते हैं तथा कहते हैं, "आपका कोई क्षेत्राधिकार नहीं है। आपके पास कोई अधिकारिता नहीं है। जैन आयोग को समाप्त कर दिया जाना चाहिए।" उसके बाद जैन आयोग की सहायता के लिए एक वकील की नियुक्ति की जाती है। उन्होंने इस्तीफा दिया तथा और भी कई

बातें हुई। तब जैसा श्री अर्जुनसिंह ने कहा कि जैन आयोग को समाप्त करने के लिए मंत्रिमंडल के समक्ष पत्र आया था। मुश्ताक अहमद नामक वकील ने जैन आयोग को समाप्त करने के लिए दिल्ली उच्च न्यायालय में एक याचिका दाखिल की थी। वे एक कनिष्ठ वकील हैं। मुझे ये ब्यौरे मालूम हैं क्योंकि मैं उन संसद सदस्यों में से था जिसने उस याचिका पर कार्रवाई न होने देने के लिए दखल दिया था ताकि जैन आयोग समाप्त न होने पाए। लोकहित वादी के रूप में सामान्यतया एक वकील अपने मुकदमों के लिए ही बहस करता है। वह विख्यात बनने का प्रयास करता है लेकिन इस मामले में वकील जो जैन आयोग के समक्ष सरकार की ओर से पेश हो रहा है, दिल्ली उच्च न्यायालय में श्री मुश्ताक अहमद की ओर से भी पेश हुआ और मुझे विश्वास है माननीय मंत्री यह सब जानते हैं क्योंकि वे बहुत वर्षों से उसके सहकर्मी रहे है और वे दोनों संभवत: एक ही पीढ़ी तथा एक ही राज्य के हैं। जैन आयोग की अब तक सात बार अवधि बढ़ाई गई है और श्री अर्जुनसिंह ने बहुत सी बातें कहीं है जिनको मैं दोहराना नहीं चाहता हूँ।

जहाँ तक वर्मा आयोग का संबंध था, न्यायमूर्ति वर्मा ने स्वयं कहा है यह सब लीपा पोती करने का प्रयास है। मैंने 5 अगस्त, 1993 को इस सम्माननीय सभा में यह मामला उठाया था। मैंने उसी दस्तावेज से उद्धृत किया था जिससे श्री अर्जुनसिंह ने आज उद्धृत किया है और मैंने सरकार से निवेदन किया था कि वह 5 अगस्त, 1993 को इसका जवाब दे। लेकिन सरकार ने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने सरकार पर आरोप नहीं लगाया है। न्यायमूर्ति वर्मा ने कहा है यह मामले पर लीपा-पोती करने का एक इस हद तक प्रयास किया गया है कि जो प्रतिवेदन गुप्तचर एजेन्सियों को उस समय दिए गए थे जब श्री राजीव गाँधी तमिलनाडू का दौरा करने वाले थे लेकिन वे तमिलनाडू सरकार तथा स्थानीय प्राधिकारियों को नहीं सौंपे गए।

एस.आई.टी. ने दो वर्ष बाद मद्रास में एक आरोप-पत्र दाखिल किया था सामान्यतः दो वर्षों में सी.बी.आई. अथवा सी.बी.आई. की कोई शाखा एक हजार से भी अधिक गवाहों से पूछताछ कर सकती थी, लेकिन इस मामलें में उन गवाहों में से आधे व्यक्तियों से भी पूछताछ नहीं की गई और दो वर्षों बाद आरोप-पत्र दाखिल कर दिया गया। खैर, मैं इस मामले में हुए विलंब के बारे कुछ नहीं कहूँगा। कतिपय अधिकारियों के मामले में कुछ असामान्य बातें घटित हुई हैं। मैं उनके नाम लेना नहीं चाहता हूँ। एक ऐसे पुलिस महानिरीक्षक को पद्मश्री दिया गया जो राजीव गाँधी की हत्या के समय मौजूद था।

अभी विचार समाप्त नहीं हुआ है और इस दृष्टि से भी विचार नहीं किया गया कि वह षड्यंत्र था या नहीं फिर भी किसी व्यक्ति को पद्मश्री दिया जाता है। हाल ही में एस.आई.टी. के उप-पुलिस महानिरीक्षक को राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया है और अन्य व्यक्तियों के सिवाय उल्लेखनीय सेवा जो उन्होंने की है वह यह है कि षणयुगम नामक व्यक्ति जो तमिलनाडू में कतिपय लोगों तथा लिट्टे के बीच एक कड़ी का काम कर रहा था वह हथियारों की सप्लाई करता था। उसे तमिलनाडू के एक जिले में निरुद्ध किया गया था, उसने आत्महत्या कर ली थी। ये उप-पुलिस महानिरीक्षक उस कैम्प के प्रभारी अधिकारी थे। बाद में यही उप-पुलिस महानिरीक्षक कुछ जानकारी प्राप्त करने के लिए सारे विश्व में जाँच पड़ताल करते रहे। खास बात यह भी है कि उन्होंने लंदन में कागजात से भरा एक पूरा सूटकेस ही खो दिया और अब उसी उप-पुलिस महानिरीक्षक को राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया है। तो यह कतिपय असामान्यताएँ हैं जिनसे यह सभा स्वयं समझ सकती है कि यहाँ क्या हो रहा है?

अब मैं 24 मई, 1995 अर्थात् उस अंतिम तिथि के बाद की स्थिति के बारे में चर्चा करूँगा। कल श्री चिदम्बरम ने कहा था और जिस तिथि से उन्होंने कार्यभार संभाला था, उन्होंने अपने वक्तव्य में, यदि आपने पढ़ा हो तो आप

यह समझ जाएँगे कि वे अत्यंत पांडित्यपूर्ण भाषण में कह रहे थे कि जैन आयोग को पूरा सहयोग दिया जा रहा है और वे यह देखने के लिए सभी कदम उठाएँगे कि हर दृष्टि से पूरी जाँच की जाए और वे अपना पूर्ण सहयोग देंगे। लेकिन स्वयं न्यायमूर्ति जैन ने 26 तारीख को कहा था कि सरकार से सहयोग नहीं मिल रहा है। यदि आप मुझे अनुमति दें तो उन्होंने कहा है कि मैं उसका सारांश देता हूँ। मैं किसी को उद्धृत नहीं कर रहा हूँ।

महोदय, न्यायमूर्ति जैन ने कहा है कि उन्हें केन्द्र सरकार से आशा है कि वह स्वेच्छा से इस संबंध में कुछ जानकारी देगी और सूचना तथा कागजात भी देगी लेकिन वह कोई जानकारी नहीं दे रही है। जब तक उनसे आग्रह नहीं किया जाता तब तक उनसे हमें कुछ नहीं मिलता है। अखिल भारतीय काँग्रेस समिति के अधिवक्ता श्री मित्तल ने इस कार्रवाई के बारे में जो कहा वहाँ रिकार्ड में दर्ज है कि केन्द्र सरकार कागजात तथा रिकॉर्ड न देकर सरकार कागजात छिपाने का प्रयास क्यों कर रही है और वह किसे बचाने का प्रयास कर रही है मैं कोई आरोप नहीं लगा रहा हूँ। यह श्री चिदम्बरम द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि के बाद हुआ है। मैं वे तथ्य सामने रख रहा हूँ जो मुझे मालूम हैं। यह तो स्वयं सभा को निर्णय करना है कि जो कुछ हो रहा है अनुचित है अथवा उचित है।

श्री मोहन रावले (मुम्बई दक्षिण मध्य) : अध्यक्ष महोदय, जैन कमेटी के सामने कहा गया है कि गवर्नमेंट की तरफ से डाक्यूमेंट देने हैं। अभी हमारे आदरणीय मणिशंकर अय्यरजी ने कहा, डाक्यूमेंट्स बताए जा रहे हैं। लेकिन कमेटी के चेयरमैन श्री जैन, उन्होंने स्टेटमेंट दिया है अभी तक आयोग द्वारा माँगे गए दस्तावेजों में से केवल दस प्रतिशत दस्तावेज ही उपलब्ध करवाए गए हैं। वे भी बोल रहे हैं और काँग्रेस पार्टी के जो वकील हैं, वे भी बोल रहे हैं कि उनको डाक्यूमेंटस नहीं मिल रहे हैं। उन्होंने इसलिए बताया कि डाक्यूमेंट सरकार सामने नहीं लाना चाहती है। यह भी उन्होंने बताया कि ये डाक्यूमेंट सरकार सामने नहीं लाना चाहती है। यह भी उन्होंने बताया। उन्होंने कहा हैं - उनके पास वृहद् तंत्र और संसाधन है। सरकार के पास सब कुछ है। यह आम आदमी के हाथ में नहीं है। श्री जैन ने कहा है। इसका मतलब यह है कि यहाँ हमारे मणिशंकर अय्यरजी जो बोलते हैं, वह सच है या हमारे कमीशन ने जो बताया है, वह सच है। मामला इतनी धीमी गति से चल रहा है, यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। हमारे प्रधान मंत्रीजी मारे जाते हैं या किसी नारी का पति मरता है, तो वह एकदम दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन उससे ज्यादा जो हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री थे, उनकी पत्नी सोनिया गाँधी की वेदना कहती है कि कितनी देरी से यह काम चल रहा है।

यह मामला श्री अर्जुनसिंहजी ने उठाया है, ऐसा लग रहा है कि श्री अर्जुनसिंहजी ने जो यह मामला उठाया है, बहुत अच्छी बात की है, लेकिन जिस तरह से गम्भीरता से उठाया है, उससे लगता है कि वह पॉलिटिकल एँगल से उठाया गया है। क्यों? क्योंकि जब वे काँग्रेस में थे, काँग्रेस पार्टी में थे, कैबिनेट मंत्री थे, वे उस समय भी इसको एक्सपिडायट कर सकते थे, लेकिन दुर्भाग्य से उस समय नहीं किया और अभी कर रहे हैं बाहर निकल कर। अभी किसी को पिंजरे में खड़ा करने के लिए उन्होंने ये बातें उठाई हैं, मुझे ऐसा लगता है। यहाँ चिदम्बरमजी बैठे हैं, वहाँ आपके चीफ सेक्रेटरी श्री देशमुखजी ने भी कहा था, जब राजीव गाँधी की हत्या हुई तो चिदम्बरमजी ने स्टेटमेंट दी थी कि स्पेशियल प्रोटेक्शन ग्रुप वापस लिए जाने के बाद श्री राजीव गाँधी को प्रदान की गई सुरक्षा पर इसमें संतोष प्रकट किया गया था। यह संतोषजनक थी।

इसलिए जो हमारे चिदम्बरमजी ने यहाँ कहा था, वह सच था या नहीं सच था, वह भी हमारे सामने आना चाहिए।

मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूँ। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ, हमारे दीनदयाल उपाध्यायजी मारे

गए, श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी भी मारे गए। लोगों के दिल में भावना है, कोई भी व्यक्ति मर जाता है, मारे जाते हैं और लोगों में आशंका होती है, तो कमीशन एन्क्वायरी होनी चाहिए। आज लोगों के दिल में यह भावना है और चन्द्रशेखरजी के ऊपर यह इल्जाम है, इसलिए कमीशन की रिपोर्ट जल्दी से जल्दी बाहर आना चाहिए। जिस तरह से भूतपूर्व प्रधानमंत्री मारे गए और चन्द्रशेखरजी के ऊपर...(व्यवधान) मैं यह बताना चाहता हूँ कि यह रिपोर्ट जल्दी से जल्दी बाहर आना चाहिए। इसमें उनकी इमेज गलत होगी और उनकी इमेज खराब होगी। मैं यह नहीं कहता हूँ, वे एक्चुअली इसमें इन्वॉल्व है या नहीं है, लेकिन वह रिपोर्ट बाहर निकलनी चाहिए। 'डर्टी पॉलिटिकल गेम प्लेड बाई डर्टी पीपल' यह लोगों के दिल में भावना है। जब लालबहादुर शास्त्रीजी मर गए थे, तब धर्मयुग मैगजीन के अन्दर उनकी पत्नी ललितादेवी शास्त्रीजी का बयान मैंने पढ़ा था। उनकी पत्नी को उनकी लाश के नज़दीक नहीं जाने दिया। लोगों के दिल में यह भावना है, मैं कोई इल्जाम नहीं लगा रहा हूँ, कि शायद इसके पीछे...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : इसे कार्रवाई वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

श्री मोहन रावले (मुम्बई दक्षिण मध्य) : इसलिए मैं कहना चाहता हूँ, अगर लोगों के दिल में भावना हो, तो उसकी एन्क्वायरी होनी चाहिए और उसका क्लैरिफिकेशन होना चाहिए।

वाणिज्य मंत्रालय के राज्यमंत्री (श्री पी. चिदम्बरम) : अध्यक्ष महोदय, मेरे विचार में मेरे कल के वक्तव्य से सरकार के निर्दिष्ट न्यायालय में चल रहे मुकदमे और न्यायमूर्ति जैन आयोग के समक्ष चल रही जाँच के संबंध में सरकार की वचनबद्धता के बारे में सभी शंकाओं का निवारण हो जाना चाहिए था। यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं कम से कम इस सभा के कुछ माननीय सदस्यों को यह विश्वास नहीं दिला सका। इसकी पूर्व सूचना मुझे कल ही मिल गई थी मैंने कहा है कि इसमें सच्चाई है, संकल्पना है। सत्य शाश्वत है अपरिवर्तनीय होता है, सच्चाई को बदला नहीं जा सकता लेकिन संकल्पना को बदला जा सकता है। सच्चाई की धारणा प्रत्येक व्यक्ति की अलग हो सकती है और हर दिन उसमें परिवर्तन आ सकता है।

महोदय, कल मैंने कहा था कि इसमें सच्चाई का होना ही पर्याप्त नहीं है। विश्व को किसी व्यक्ति की सच्चाई को भाँपना चाहिए। अगर मैं कल सरकार की सचेतता, वचनबद्धता और जाँच-पड़ताल के तार्किक परिणाम के बारे में जानकारी देने में विफल रहा हूँ तो उस विफलता की जिम्मेदारी मेरी है।

आज सरकार ने मुझे इन मामलों को समन्वित करने की जिम्मेदारी सौंपी है। 23 मई, 1995 तक की कार्रवाई और 24 मई, 1995 के पश्चात् होने वाली कार्रवाई जो भी हो मेरे ऊपर सिर्फ इन्हीं कार्यों का निर्वहन करने की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि श्री अर्जुनसिंह, उनके जैसे अन्य लोगों के साथ-साथ इस सभा और इस देश को सरकार के परिश्रम और दृढ़ निश्चय के बारे में विश्वास दिलाना भी है।

महोदय, आज बहुत सी बातें कही गई हैं। इस चर्चा को शुरू हुए चार घंटे और 10 मिनट बीत चुके हैं। अनेक प्रश्नों के जवाब दिए गए हैं। भारत के लोग इसके बारे में प्रातःकाल पढ़ेंगे। उनमें से अनेक लोग हमें भाषण देते हुए या कम से कम उसके कुछ अंशों को कल देखेंगे। लोगों पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा। मेरा कर्तव्य दो उद्देश्यों की प्राप्ति है। पहला, तत्कालीन सरकार ने स्वर्गीय राजीव गाँधी की हत्या के बाद विशेष जाँच दल की नियुक्ति की थी जिसने एक रिपोर्ट तुरन्त प्रस्तुत की थी कि 41 लोग, जिनमें से 12 मारे जा चुके हैं, षड़यंत्रकारी और हत्यारे थे।

मैं न्यायाधीश नहीं हूँ। मेरा कर्तव्य यह सुनिश्चित करना है कि जिनके निर्दिष्ट न्यायालयों में मुकदमे चल रहे

हैं, उनको कानून के अनुसार न्याय मिले। मेरा कर्तव्य यह सुनिश्चित करना है कि वह सुनवाई ठीक से हो, कि अभियुक्त यदि दोषी हों, तो उनको दण्ड दिया जाए, यह कि कल, अगले वर्ष, उससे अगले वर्ष, सुनवाई भले ही न्यायालय या अपीलीय न्यायालय, अथवा राष्ट्रपति के समक्ष हो रही हो, दोषी व्यक्ति कानून के शिकंजे से बच न पाए। यह मेरा प्रथम कर्तव्य है। और मैं ऐसा कुछ नहीं कहूँगा और न ही ऐसा कुछ करूँगा जो उस कर्तव्य की कीमत पर हो जो मेरा सर्वोच्च कर्तव्य है।

महोदय, सरकार की ओर से मंत्री के रूप में बोलते हुए, मेरा दूसरा कर्तव्य जैन जाँच आयोग को उसके निदेश पदों के अनुरूप जाँच पूरी करने में तथा सरकार को प्रतिवेदन देने में सहायता करना है, जो इस संसद को रिपोर्ट देगी कि क्या कोई अन्य षड्यंत्रकारी थे, या इसके पीछे क्या कोई अन्य षड्यंत्र था और फिर यह निर्देश देना है कि उस षड्यंत्र तथा उन षड्यंत्रकारियों के बारे में क्या किया जाएगा। कृपया न्यायमूर्ति जैन आयोग के निर्देश पदों को देखें। महोदय, मंत्री के रूप में मेरा कर्त्तव्य जैन जाँच आयोग की सहायता करना है, न कि उनकी जाँच में अड़चन डालना। मेरा कर्तव्य वह सब जानकारी प्रदान करना है जो आयोग को चाहिए, और जो सरकार के पास उपलब्ध है। मेरा कर्तव्य सच्चाई का पता लगाने में आयोग की सहायता करना है क्योंकि यह आम जानकारी है कि आयोग के सामने जो कुछ आया है वह सभी सत्य नहीं है।

जैसा कि माननीय सदस्य ने कुछ खेद सहित उल्लेख किया था, दो भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों पर आयोग के समक्ष आरोप लगाए गए हैं। इसका निर्णय करने वाला मैं कौन होता हूँ? मेरा कर्तव्य न्यायमूर्ति जैन जाँच आयोग को सच्चाई का पता लगाने और यह पता लगाने में सहायता करना है, कि क्या कोई षड्यंत्रकारी है और इसके पीछे कोई और भी षड्यंत्र था, मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगा अथवा कहूँगा जिसके लिए मुझे अपने इस कर्तव्य की कीमत पर समझौता करना पड़े। इस बात को देखते हुए मुझे संक्षिप्त में बोलना है, मुझे अपने शब्दों का सावधानीपूर्वक चयन करना है, मुझे अपनी सीमा में रहना है, मुझे यह दिए जा रहे तर्कों तथा उन सदस्यों के प्रति आदरभाव प्रदर्शित करना है जो अपनी स्थिति स्पष्ट कर रहे हैं। मेरा किसी से विद्वेष नहीं है। प्रथम वर्ष में इस सरकार में मंत्री होने पर मैं खुश था। सरकार में मंत्री न होने पर मैं और अधिक प्रसन्न था।

महोदय, पाँच अलग-अलग मुद्दों का उल्लेख किया गया है और मैं उनमें से प्रत्येक का संक्षेप में उत्तर दूँगा। अखिल भारतीय न्यायमूर्ति जैन आयोग के समक्ष काँग्रेस कमेटी की एक याचिका विचाराधीन है जिसमें कतिपय दस्तावेज प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया है। इस पर अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के महासचिव, श्री अहमद पटेल द्वारा हस्ताक्षर किए गए हैं, जो राज्य सभा के सम्माननीय सदस्य है। उनके वकील ने भी याचिका पर हस्ताक्षर किए हैं। वह याचिका न्यायिक आयोग में विचाराधीन याचिका है और आयोग ने इस याचिका पर आदेश पारित किए हैं। ये आदेश सार्वजनिक दस्तावेज है। कोई भी इन दस्तावेजों को यह देखने के लिए देख सकता है कि क्या आदेश पारित किए गए थे और उन आदेशों का अनुपालन कैसे हुआ है। मुझे श्री अर्जुन सिंह द्वारा, अपने सामान्य स्वभाव के विपरीत सुझाई गई इस उत्तेजक बात का उत्तर देना है कि याचिका का प्रारूप तैयार करने में मेरा भी कुछ हाथ है। इस याचिका में एक स्थान पर श्री वी.पी. सिंह का प्रतिनिधि के रूप में उल्लेख किया गया है। मेरे नाम में 11 अक्षर है। इस याचिका में भी मेरे नाम में 11 अक्षर है। 11 में से 2 गलत हैं। यदि श्री अर्जुनसिंह ने उस याचिका पर उसकी भाषा, वर्तनी पर कुछ ध्यान दिया होता, जैसा कि वे समान्यतया देते हैं, तो उन्होंने मुझे उस याचिका के लेखक बताकर मुझे जो श्रेय दिया है, उससे कहीं अधिक श्रेय दिया होता।

श्री जसवंतसिंह : अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के महासचिव ने यह किया है।

श्री पी. चिदम्बरम : उसने कहा, 'मैंने यह कहा है'...(व्यवधान)... मैं उस भाग पर नहीं बोल रहा हूँ।

श्री जसवंतसिंह : फिर, आपका सुझाव क्या है? आप शीघ्रता से अपने सुझाव दें।

श्री पी. चिदम्बरम : ठीक है। यदि माननीय अध्यक्षजी अनुमति दें तो मैं पाँच मिनट में अपना भाषण समाप्त कर दूँगा।...(व्यवधान)... कृपया मेरे ऊपर कुछ दया कीजिए। मेरा इस याचिका से कोई संबंध नहीं है। उत्तरदायित्व लेने के पश्चात् पहली बार मैंने इसे देखा था और मैंने यह देखने के लिए इस याचिका को पढ़ा कि कितने आदेशों का अनुपालन किया गया है और उनके अनुपालन की क्या स्थिति है।

महोदय, श्री मुश्ताक अहमद के बारे में रिकॉर्ड से मुझे पता लगा है कि उस नाम के एक व्यक्ति ने दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष एक रिट याचिका दायर की थी। उस याचिका में दिल्ली उच्च न्यायालय ने कतिपय आदेश पारित किए थे। याचिकाकर्त्ता पर कुछ प्रतिवादियों ने आपत्ति की है। उक्त मामला न्यायालय के विचाराधीन है। मुश्ताक अहमद की याचिका पर मेरी कोई टिप्पणी नहीं है।

मैं अब तीन खुफिया संगठनों के तीन अध्यक्षों की जाँच पर आता हूँ। न्यायाधीश जैन आयोग द्वारा जारी किए गए आदेशों के अनुसरण में, केन्द्र सरकार तथा तमिलनाडू सरकार के अतिरिक्त आसूचना ब्यूरो, अनुसंधान और विश्लेषण स्कन्ध तथा केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने न्यायाधीश जैन आयोग के आदेशों के उत्तर में शपथ-पत्र दायर किए हैं। इन शपथ-पत्रों के साथ, उन्होंने दस्तावेज प्रस्तुत किए हैं और जिन मामलों के दस्तावेज प्रस्तुत करने में असफल रहे, वहाँ उन्होंने शपथ-पत्र में दस्तावेज प्रस्तुत न कर पाने के कारण बताए हैं और जहाँ उन्होंने विशेषाधिकार का दावा किया है, तो विशेषाधिकार का दावा किया ही हुआ है। न्यायमूर्ति जैन ने इनमें से प्रत्येक शपथ-पत्रों की जाँच की है और उपयुक्त आदेश पारित किए गए हैं।

ये आदेश सार्वजनिक दस्तावेज हैं और उनकी जाँच की जा सकती है। एक चरण पर, जिरह के लिए उक्त तीनों अध्यक्षों को बुलाने के लिए एक याचिका दायर की गई थी। इस सभा को स्मरण होगा कि उक्त तीनों संगठनों के वर्तमान अध्यक्ष हैं उस हत्या के समय अथवा उसके तुरंत पहले अध्यक्ष नहीं थे, अत: उनके पास उस दिन या उससे पूर्व हुई घटनाओं की कोई व्यक्तिगत जानकारी नहीं है। उन्होंने सरकारी विवरण से शपथ-पत्र दिए हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि सुनवाई के दौरान, केन्द्र सरकार के एक वकील द्वारा यह सुझाव दिया गया था कि उक्त तीनों अध्यक्षों से जिरह करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब मुझे इसके बारे में बताया गया, तो मैंने उस निर्णय के विपरीत यह कहा था, "नहीं, तीनों अध्यक्ष उपस्थित होंगे और उनसे जिरह की जाएगी।" वास्तव में, दूसरे दिन मैंने एक सार्वजनिक वक्तव्य दिया था कि तीनों अध्यक्ष न्यायमूर्ति जैन आयोग के समक्ष उपस्थित होंगे और जिरह के लिए उपलब्ध होंगे। वास्तव में, कानून स्वत:पूर्ण है। जो कोई शपथ-पत्र दायर करता है, भले ही वह सरकारी रिकॉर्ड पर आधारित हो, उसे जिरह के लिए उपलब्ध होना चाहिए। जिरह का स्वरूप क्या है, और किस सीमा तक न्यायाधीश जिरह की अनुमति प्रदान करेगा, ये भिन्न बातें हैं, लेकिन उसे जिरह के लिए उपलब्ध रहना होगा। अत:, यह स्थिति है। तीनों अध्यक्ष उपलब्ध होंगे। यह बताया गया है कि तीनों अध्यक्ष जिरह के लिए उपलब्ध होंगे। न्यायाधीश ने कनिष्ठ अधिकारियों की जाँच करनी प्रारम्भ कर दी है और यह निर्णय न्यायाधीश करेंगे कि कब और किस सीमा तक तीनों अध्यक्षों से जिरह की अनुमति प्रदान करेंगे।

आयोग के वकील को संदर्भ भेजा गया था। यह कार्य गृह मंत्रालय द्वारा किया जाता है और मुझे यह बताने का निर्देश हुआ है कि श्री अगेड़ा, जो मेरे विचार से एक बुजुर्ग है, ने अपना त्यागपत्र दे दिया था। उसने कुछ समय

पूर्व अपना त्यागपत्र दिया, जिसे 24 अगस्त, 1995 को स्वीकार किया गया था। अत:, 24 अगस्त, 1995 का एकमात्र महत्त्व यह है कि उस दिन पहले दिए गए त्यागपत्र को गृह मंत्रालय में उपयुक्त प्राधिकारी द्वारा विचार करने के पश्चात् स्वीकार किया गया था।

सुरक्षा सलाहकार का उल्लेख किया गया था। आयोग का एक सुरक्षा सलाहकार था। वह अपने एक संवर्ग में वापस चला गया। तब से मुझे बताया गया है, उपयुक्त उत्तरवर्ती अधिकारी के चयन के बारे में गृह मंत्रालय तथा आयोग के बीच पत्र-व्यवहार हुआ था। कुछ नाम सुझाए गए हैं, कुछ सुझाव दिए गए हैं, कुछ अधिकारी उपलब्ध नहीं है, सुरक्षा सलाहकार का शीघ्र ही चयन किया जाएगा। इस मामले से संबंधित सुरक्षा पहलुओं पर आयोग को परामर्श देने के लिए न कि आयोग की सुरक्षा के लिए, आयोग के पास एक सुरक्षा सलाहकार का होना अहम है। क्योंकि इस मामले में सुरक्षा विषयों के बारे में कुछ विशेषज्ञतापूर्ण जानकारी की जरूरत है। मैंने गृह मंत्रालय से अनुरोध किया है कि वे शीघ्र एक सुरक्षा सलाहकार की नियुक्ति सुनिश्चित करें और जहाँ तक यह मेरे अधिकार क्षेत्र में आता है, तो मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि एक सुरक्षा सलाहकार नियुक्त कर दिया गया है।

वर्मा आयोग की रिपोर्ट का उल्लेख किया गया था। मैं नहीं समझता कि यह चर्चा वर्मा आयोग रिपोर्ट पर की जा रही थी। कल, मेरा उत्तर जैन जाँच आयोग तथा आयोग द्वारा की जा रही जाँच तथा नामित न्यायालय में मुकदमे चलाने तक सीमित था। वर्मा आयोग पर इस सभा में चर्चा की जा चुकी है, अनुवर्ती कार्रवाई की जानी है। मंत्रियों के दल ने कुछ कार्रवाइयाँ करने की सिफारिश की है। मंत्रियों के एक दल द्वारा कुछ अधिकारियों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई किए जाने की सिफारिश के अनुसार ये कार्रवाइयाँ भी की जा रही है। यह अर्ध न्यायिक प्रक्रिया है।

इन न्यायिक प्रक्रियाओं पर कोई भी पूर्व निर्णय नहीं ले सकता है और न ही कोई अपनी राय जाहिर कर सकता है, अन्यथा अधिकारियों अथवा अधिकारियों के दोषी होने अथवा दोषी न होने के संबंध में विचार कर रहे प्राधिकरण के स्वतंत्र निर्णय के बारे में लोगों की राय पर प्रभाव पड़ सकता है।

इसलिए, निष्कर्ष के तौर पर मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि जो कुछ भी मैंने कल कहा था मैं उस बात पर अटल हूँ। मैं जैन जाँच आयोग को सरकार की ओर से पूर्ण सहयोग देने का वचन देता हूँ। मैं इस सभा को आश्वासन देता हूँ, जैसा कि मैंने कल कहा था, यदि भगवान ने चाहा तो अभियोजन पक्ष नामित कोर्ट के सामने दिसंबर तक पूरे साक्ष्य दर्ज करवाने का काम पूरा कर देगा। मैं इस सभा को आश्वासन देता हूँ कि अन्य सभी मामलों में भी जिनमें अनुवर्ती कार्रवाई की आवश्यकता है, पूर्ण निष्ठापूर्वक अनुवर्ती कार्रवाई की जाएगी। मैं बिना किसी डर के, अथवा बिना किसी का पक्ष लिए कार्य करूँगा। मैं अपने अन्त:करण की आवाज के अनुसार कार्य करूँगा। मैंने इस सभा में मंत्री के रूप में तथा एक सदस्य के रूप में जो शपथ ली थी उसके अनुरूप कार्य करूँगा। मैं सरकार की ओर से, प्रधान मंत्री की ओर से तथा मंत्रियों की ओर से बोलता हूँ। मैं कहता हूँ कि इस सरकार में कोई ऐसा नहीं है जो कि मेरे द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से भिन्न विचार रखता हो। हम सब सामूहिक रूप से और मैं चूँकि प्रभारी मंत्री हूँ, यह सुनिश्चित करूँगा कि नामित कोर्ट के समक्ष मुकदमा किसी तर्कपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचे और न्यायमूर्ति जैन आयोग द्वारा जाँच रिपोर्ट सरकार को प्रस्तुत कर दी जाए जिसे निश्चय ही संसद के समक्ष रखा जाएगा।

कल, मैं स्वयं से यह पूछते हुए कि मुझे यह सुनिश्चित करने के लिए और किस चीज की आवश्यकता हो सकती है कि मैं अपना कार्य कर रहा हूँ, खिन्न मन से और विचारमग्न अवस्था में सभा से चला गया था। आज,

महोदय जो बातें इस सभा में कहीं गई है, मैं उनके कारण में आज इस सभा से कल से अधिक उदास मन:स्थिति में सभा से जाऊँगा। लेकिन यदि आप कहें तो मैं आपसे, जो कुछ भी आपने कल कहा था, उसके सारांश को दोहराने का नम्र निवेदन करूँ जिससे कि मैं समझता हूँ कि प्रदर्शित होती है जिससे सभा द्वारा कल व्यक्त की गई सर्वसम्मति परिलक्षित होती है और जिस तरीके से इस संसद और भारत की जनता के संकल्प को प्रदर्शित किया था कि उन सभी को, जो षड्यंत्रकारियों के रूप में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से श्री राजीव गाँधी की हत्या के लिए जिम्मेदार है, दण्डित किया जाए।

महोदय, मैं इस उम्मीद के साथ अपनी टिप्पणी को समाप्त करता हूँ कि यदि इतिहास हमारा आकलन करेगा वह हमारे बारे में यही निर्णय लेगा कि हमने अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। मैं वचन देता हूँ कि यह सरकार अपने कर्तव्य का निर्वहन करेगी।

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, मैं बिल्कुल थोड़ा सा समय लूँगा। मैं केवल यह कहना चाहूँगा कि मेरे माननीय मित्र श्री चिदम्बरम द्वारा दिए गए जवाबों के कारण मेरा कार्य बहुत आसान हो गया है।

यहाँ तक कि आज भी जब मैंने दस्तावेज पढ़ना आरम्भ किया तो श्री चिदम्बरम ने आपत्ति उठाई, तो मैंने वह दस्तावेज माननीय अध्यक्ष महोदय को सौंप दिया और मैं उस पर उनके निर्णय का इंतजार कर रहा हूँ। मैंने उस बारे में कुछ नहीं कहा क्योंकि श्री चिदम्बरम ने कहा था कि उस बारे में यदि कुछ कहा गया तो उसका वहाँ चल रहे मुकदमे पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

आपने स्वयं अपने वक्तव्य को यह कहकर अर्थहीन बना दिया है कि मेरे वक्तव्य से जिन लोगों पर मद्रास में नामित कोर्ट में मुकदमे चल रहे हैं, उन्हें न्याय से बच निकलने में मदद मिलेगी। जो कुछ भी आपने कहा है मैं उसके लिए आपको कोई खेद व्यक्त करने के लिए नहीं कहूँगा लेकिन कृपया भविष्य में ऐसी बात कहिए जिसका वास्तविकता के साथ कोई संबंध हो।

श्री चिदम्बरम ने कल सभा में काफी स्वागत योग्य विचार व्यक्त किए है जिनका माननीय अध्यक्ष महोदय ने बहुत सुंदर तरीके से सार प्रस्तुत किया था। आपके विचार में आज की चर्चा जानबूझकर कल की बात को चरम सीमा से सामान्य स्थिति में लाने के लिए की गई है। फिर भी आपने उन शब्दों को इस्तेमाल नहीं किया, आपके शब्दों की अभिव्यक्ति बहुत स्पष्ट है।

महोदय, कल बार-बार मैंने यह उल्लेख किया कि इस समय हमें विस्तारपूर्वक चर्चा नहीं करनी चाहिए और इससे कटुता पैदा होगी। मुझे नहीं मालूम कि कल श्री चिदम्बरमजी को किसने कहा था कि विस्तारपूर्वक चर्चा करें क्योंकि वह कोई ऐसा अवसर नहीं था, उनको ब्यौरे देने के लिए किसी ने नहीं कहा था। उनसे किसी ने नहीं कहा था कि वे हमें यह बताएँ कि वे क्या कर रहे हैं और जैन आयोग क्या नहीं कर सकता और उसकी स्थिति क्या है। लेकिन उनके वक्तव्य के उस भाग में, जिसमें उन्होंने सच्चाई और प्रत्यक्ष अनुभूति की बात की है और जिसे उन्होंने आज पुन: दोहराया है, उससे यही प्रतीत होता है कि कुछ लोग यह सोचते हैं कि सच्चाई और प्रत्यक्ष अनुभूति दोनों ही उनके पक्ष में है। मैंने कल कहा था कि एक विभाजन रेखा है, ऐसा कभी भी नहीं सोचना चाहिए कि आप सच्चाई का साथ दे रहे हैं जबकि अन्य अवबोधन के साथ है और परस्पर जुड़ी हुई ये दोनों बातें एक साथ नहीं चल सकती। ऐसा नहीं हुआ है। जिंदगी में ऐसा नहीं होता है। इसी कारण से यह चर्चा उठाई गई है। आज भी शंकाकुल होने के बावजूद भी मैंने चुनिंदा शब्दों का प्रयोग सावधानीपूर्वक किया। और स्वयं कुछ नहीं कहा है, मैंने न्यायमूर्ति वर्मा को

उद्धृत किया है, अगर उनका मानना है कि इसमें लीपा-पोती की गई है, तो मैं भी उन्हीं की बात को दोहराने के लिए स्वतंत्र हूँ। महोदय, यह मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मंत्रियों के दल की बैठक में आयोग की रिपोर्ट के ऊपर की गई अनुवर्ती कार्रवाई चर्चा का विषय था। मैंने पूरी कोशिश भी की कि जो बातें न्यायमूर्ति वर्मा को नहीं प्रस्तुत की गई थीं और जिनके कारण उन्होंने कहा कि उत्तर टालमटोल पूर्ण है, तो उनकी सच्चाई का पता लगाया जाए ताकि अनुवर्ती कार्रवाई में सरकार कुछ कर सके:

परन्तु, यह सब संभव नहीं था। मेरे सभी पत्रों में यह बात स्पष्ट है, मेरे पास कोई उचित तरीका न होने के कारण मैंने त्यागपत्र दे दिया था। अगर इससे आपको गुस्सा आया है, तो मुझे इसके लिए खेद है। अगर इसी से आपको नाराज़गी है, तो कृपया मुझे क्षमा कीजिए, मैं अपने पूर्ण सद्विवेक के साथ उस सरकार में नहीं रह सकता था जो हाल में किए गए सबसे घिनौने अपराध की तह तक जाने के लिए तैयार नहीं है।

दूसरी बात जैन आयोग के बारे में है। मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा है। कल कहा गया था 'केस डायरी' दी जा सकती है क्योंकि विशेषाधिकार का मामला है, मैं आज यह पूछ रहा हूँ कि क्या न्यायमूर्ति को 'केस डायरी' दिखाई गई थी? किसी अन्य व्यक्ति को मत दीजिए, परन्तु क्या वह माननीय न्यायमूर्ति जैन को दिखाई गई है? मेरी जानकारी के अनुसार उन्हें नहीं दिखाई गई।

महोदय, आयोग को समाप्त करने की बात उठाई गई थी। महोदय, मेरे विचार से आपने स्पष्ट निवेदन किया था और इसी कारण से आपको याद होगा कि मैंने आरम्भ में कहा था कि श्री चिदम्बरम ने 90 दिन का समय माँगा था तथा बाकि बातों का कौन उत्तर देगा? जहाँ तक मैं समझता हूँ आपने स्पष्ट निर्देश दिया था कि सब कुछ बता दिया जाए। मै जानना चाहता हूँ कि आयोग को समाप्त करने के मामले को मंत्रिमंडल के समक्ष रखने का क्या कारण था? महोदय, मैं पूर्ण निष्ठापूर्वक कहना चाहता हूँ कि माननीय प्रधान मंत्रीजी की स्पष्ट अनुमति के बिना इस मामले को मंत्रिमंडल के विचारार्थ नहीं लाया जा सकता है। यह कार्य संचालन संबंधी नियम है। कोई भी सचिव, या अन्य कोई भी मंत्रिमंडल के विचार हेतु कोई कागज चोरी छिपे नहीं ले जा सकता। आपने इस बारे में कुछ नहीं कहा है। यह अलग बात है कि मंत्रिमंडल ने इस पर सहमति नहीं दी।

महोदय, इस मामले में न्यायालय में क्या कहा गया है? सरकार को न्यायालय में जाकर यह कहने की छूट थी कि हम नहीं चाहते हैं कि 1987 के पूर्व के मामलों पर आयोग विचार करे, अथवा उन पर चर्चा करे, मैं नहीं समझता हूँ कि कोई न्यायालय आपके अनुरोध को ठुकरा देता, उनको यह स्वीकारने में खुशी होती। परन्तु, ऐसा नहीं हुआ और बहानाबाजी की गई। एक व्यक्ति ने, जिसका कोई आधार नहीं है, निर्णय ले लिया, जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, इस सबसे यही पता चलता है कि साजिश का पर्दाफाश करने तथा तथ्यों का पता लगाने का कोई प्रयास ही नहीं किया गया है जिसकी वजह से सुरक्षा में चूक हुई और यह त्रासदी घटित हुई, यह सब आपकी कार्यशैली से ही पता चल जाता है।

मैं शब्दों के साथ खिलवाड़ नहीं कर रहा हूँ, और न ही उन शब्दों का प्रयोग कर रहा हूँ जिसके दस-दस अर्थ निकलें। मैं स्पष्ट रूप से सीधे कह रहा हूँ कि न्यायमूर्ति वर्मा ने जो तथ्य छुपाए जाने की जो शंका व्यक्त की है, उसका आधार है और उसका खुलासा किया जाना चाहिए और इसके लिये जिम्मेदार व्यक्ति का भी पर्दाफ़ाश किया जाना चाहिए। हमको दोषी व्यक्तियों को ही सजा नहीं देनी है अपितु उनको भी दंडित करना है जो तथ्यों को छुपाने का कार्य कर रहे हैं और इस कार्य में शामिल हैं, और जिन्होंने अपनी सामाजिक हैसियत और सम्मान की आड़ में उनको भी सजा देनी है, देश की जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। उनको नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता,

इसीलिए यहाँ यह चर्चा की जा रही है। मुझे यह कहते हुए दु:ख हो रहा है कि श्री चिदम्बरम और उनके साथियों ने प्रमुख उद्देश्य को पूर्ण भुला दिया है और ऐसी बातें कही है जिनका इससे कोई सरोकार नहीं है। इससे जैसा न्यायमूर्ति वर्मा ने भी कहा था, टालमटोल और छलकपट का पता चलता है। मै नहीं समझता कि उसे सभा में जो कुछ कहा गया है समझ सकती है, निस्संदेह यह समझ नहीं सकती हमसे और संतुष्ट भी नहीं हो सकती है। उन्होंने कहा कि वह इस सभा से एक वायदा कर रहे है। मै उनके सदृश विशिष्ट व्यक्ति नही हूँ। परन्तु एक विनम्र सामाजिक कार्यकर्ता के रूप मे देश के करोड़ों लोगों की ओर से एक वायदा करना चाहता हूँ कि हम तब तक शांत नहीं होंगे जब तक साज़िश का पर्दाफ़ाश नहीं हो जाता। हम उन लोगों का पर्दाफ़ाश करेंगे जिनका राजीव गाँधीजी के हत्याकांड में हाथ है तथा जो इससे जुड़े लोगों को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। इसकी कोई भी कीमत चुकानी पड़े अथवा कुछ भी परिणाम निकले, परन्तु यह किया जाएगा।

महोदय, मैं सिर्फ यही निवेदन करना चाहता हूँ और आपको सभा में इस मामले को उठाने देने की अनुमति देने के लिए धन्यवाद भी देना चाहता हूँ। मैं उन सभी माननीय सदस्यों का धन्यवाद भी करना चाहता हूँ जिन्होंने इस चर्चा में विभिन्न उद्देश्यों और कारणों से भाग लिया है। उनको वह सब कहने का अधिकार है:

परन्तु, यह सच है कि इससे उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पाई है और जो इसके लिए जिम्मेदार है वे सभा में उपस्थित नहीं है। मैं श्री चिदम्बरमजी पर दोषारोपण नहीं कर रहा हूँ क्योंकि उनके पास सिर्फ पिछले 90 दिनों की जानकारी है।

अध्यक्ष महोदय : मुझे लगता है कि सभा का मानना है कि देश में हुई सभी त्रासदियों की तेजी से छानबीन की जानी चाहिए और सभी मामलों में सभी को न्याय मिलना चाहिए और हमें एक दूसरे के खिलाफ कुछ नहीं कहना चाहिए।

मैं सभा में यह बात कहना चाहता हूँ।

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, मुझे दु:ख है कि मैं हस्तक्षेप कर रहा हूँ, परन्तु आपने कहा था कि आप दस्तावेज को देखकर मुझे सूचित करेंगे। आपका आशय अगले सत्र से था।

अध्यक्ष महोदय : मैंने दस्तावेज देखा है, परन्तु, मैं सोचता हूँ कि मुझे गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए तभी कुछ करना बेहतर होगा।

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, धन्यवाद। ठीक है।

अध्यक्ष महोदय : सभी न्यायिक पहलुओं की गहराई में न जाकर, मैं संक्षेप में यही कहना चाहता हूँ कि इसे प्रथम दृष्टया आधार पर कार्रवाई वृत्तान्त का अंग बनाना अनावश्यक है। मैं सिर्फ प्रथम दृष्टया कह रहा हूँ, न कि अंतिम निर्णय के रूप में।

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, मैंने सुना नहीं, आप किस प्रथम दृष्टया की बात कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : मैंने कहा है कि मैंने दस्तावेज के विषय-वस्तु को देख लिया है। सभा में सभी बातों को समझने और न्याय करने के लिए इसका साथ होना जरूरी नहीं है। परन्तु, यह मेरा अन्तिम निर्णय नहीं है, जब आप सभी बोल रहे थे, तो मैं इसे पढ़ रहा था।

(लोकसभा कार्रवाई / 26 अगस्त 1995, पृष्ठ 118 से 203)

जैसा कि इस आलेख का शीर्षक ही प्रदर्शित करता है, नेहरू-गाँधी परिवार के प्रति श्री अर्जुनसिंह की निष्ठा इतनी अविचल और स्थिर है कि उसमें कोई दरार खोज पाना आज भी असम्भव दिखाई पड़ता है। पंडित जवाहर लाल नेहरू के महान् व्यक्तित्व से ली गई प्रेरणा का वह मुहूर्त कितना पवित्र और प्रभावशाली रहा होगा, यह केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है, जिसका प्रभाव आज तक जस-का-तस है। पं. नेहरू के बाद मातृशक्ति तुल्य इन्दिराजी से निकटता और उनके बाद उनके पुत्र श्री राजीव गाँधी के साथ काम करना। ये सबके सब प्रधानमंत्री थे और श्री अर्जुनसिंह देश की प्राचीनतम राजनैतिक पार्टी काँग्रेस के एक समर्पित सिपाही-अनुशासनबद्ध सिपाही-उत्साही तथा कठोर परिश्रम के पर्याय, कार्यकर्ता। देश की जनता ने देखा कितने ही लोग थे जो धूमकेतु की तरह राजनैतिक क्षितिज पर उभरे, पार्टी के महाविस्तार पर छा जाने की कोशिशें करते रहे और धीरे-धीरे अपरिचय की धुँध में खो गए या कि उत्साह ज़्यादा चला नहीं ठण्डा पड़ता गया और वे स्वयं ही मौन, निष्क्रिय हो गए। मगर श्री अर्जुनसिंह आज भी कर्मयोगी अर्जुन की तरह सन्नद्ध हैं । यही वजह है कि श्री राजीव गाँधी की मृत्यु के बाद चली काँग्रेसी सत्ता जब विवादास्पद बनकर बिखरी तो पुनः एक बार संजीवनी तलाशने का काम शुरू हुआ और अंततः पार्टी की बागडोर नेहरू-गाँधी परिवार की बहू श्रीमती सोनिया गाँधी को ही सौंपनी पड़ी। सोनियाजी ने एक पवित्र कर्म की तरह इस ज़िम्मेदारी को ओढ़ा और जितनी तेज़ी से उन्होंने राजनीति के ककहरे से लेकर भारतीय जीवन-शैली को अपना स्वभाव बनाया वह वास्तव में चमत्कृत करने वाली बात है।

श्री अर्जुनसिंह प्रथम दिन से ही अपनी व्यक्तिगत निष्ठा एवं सुयोग्य क्षमताओं के साथ सोनियाजी के साथ खड़े हैं। आज की परिस्थिति में कोई चाहे तो उन्हें संरक्षक मान सकता है और चाहे तो पूर्ववत् रक्षक सिपाही, अनुयायी भी। काँग्रेस को पुनः बलशाली बनाने के लिए सोनियाजी की मुहिम के अग्रणी सिपहसालारों में निश्चय ही श्री अर्जुनसिंह प्रमुख हैं। कुछ राज्यों के चुनावों के अवसर पर एक पत्रकार से हुई चर्चा में वे सोनियाजी के बारे में बताते हैं:

'श्रीमती सोनिया गाँधी के नेतृत्व में काँग्रेस पार्टी ने एक सघन अभियान देश में छेड़ा है। हम काँग्रेस पार्टी की नीतियों, सिद्धांतों और कार्यक्रमों को प्राथमिकता देकर उनमें जनता का विश्वास पुनर्जागृत करने की कोशिश कर रहे हैं। संस्था को भी इस लायक बनाने की कोशिश हो रही है कि वह नई चुनौतियों का सामना कर सके। बहुत-से लोग संस्था में आए हैं। नौजवान आए हैं, महिलाएँ आई हैं। मैं समझता हूँ यह चुनाव काँग्रेस के लिए भी महत्त्वपूर्ण है और देश के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। चुनाव में काँग्रेस को बहुत अच्छी सफलता मिलेगी,' और श्री अर्जुनसिंह की यथार्थ आधारित भविष्यवाणी बहुत ही सफल रही। कुछ राज्यों में हुए इन चुनावों में काँग्रेस पार्टी ही सर्वाधिक लाभ में रही। यह अभी बहुत पुरानी बात नहीं है।'

प्रतिपक्ष की ज़िम्मेदारियाँ एक ज़िम्मेदाराना भावना के साथ उठाती हुई श्रीमती सोनिया गाँधी देशहित को महत्त्व देते हुए चल रही हैं। कहा जा सकता है कि इस संपूर्ण रीति-नीति में नेपथ्य में कहीं-न-कहीं श्री अर्जुन सिंह का भी वैचारिक सहयोग अवश्य है। परंतु वे मानते हैं कि सोनियाजी को जो पहचान मिली है वह उनके कृतित्व की देन है।

पं. नेहरू, इन्दिराजी और राजीव गाँधी के प्रति श्री अर्जुनसिंह की आस्था और निष्ठा को हम उनका व्यक्तिगत मामला मानकर निरपेक्ष भूमिका अपनाने का प्रयास कर तो सकते हैं मगर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इन्दिराजी आदि के प्रति श्री सिंह के इस अपनत्व भरे विशेष नज़दीकी सम्बन्ध का लाभ समूचे मध्यप्रदेश और प्रकारांतर से मध्यप्रदेशवासी प्रत्येक नागरिक को मिलता रहा है। परिवार के मुखिया के पुण्यों का लाभ बिन कहे और बिन माँगे ही परिवार के सदस्यों को मिलता रहता है। श्री अर्जुनसिंह के मुख्यमंत्रित्वकाल की ही बात है कि उनके व्यक्तिगत

सम्बन्धों के चलते प्रधान मंत्री सचिवालय में अलग से एक प्रकोष्ठ मध्य प्रदेश के लिए बनाया गया था। यह प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश की समस्याओं के निदान ढूँढने में ही लगा रहता था। अनेक चीज़ें मध्य प्रदेश को प्रधान मंत्री के निजी हस्तक्षेप के आधार पर ही उन दिनों मिलीं। कहा जा सकता है कि श्री अर्जुनसिंह के पुण्य-प्रताप के फल उनके प्रदेश और प्रदेश की समस्त जनता को मिलते रहे हैं और हम सब उनका लाभ उठाने वालों की सूची में शामिल हैं। इन्दिराजी का विशेष लगाव मध्य प्रदेश से इसलिए भी रहा कि जिन दिनों उन पर और उनकी पार्टी पर दुर्भाग्य की छाया रही, उन दिनों मध्य प्रदेश में काँग्रेस की मशाल उठाए रखने का कठिन कार्य अर्जुन सिंह ने बखूबी अंजाम दिया।

श्री अर्जुनसिंह के राजनैतिक जीवन को श्रीमती गाँधी का वरदहस्त प्राप्त हुआ, इसमें दो राय नहीं। बहुत पहले 1980 में श्री अर्जुनसिंह ने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री का पद सम्भालने पर कहा था— "मेरी राजनीति का प्रारंभ एवं अंत इन्दिराजी की चौखट पर है।" नेहरू-गाँधी परिवार के प्रति अपनी भक्ति-भावना के चलते काँग्रेस के आलोचकों के भयानक हमलों का शिकार भी श्री अर्जुनसिंह को ही होना पड़ा। उनकी इसी भावना के चलते काँग्रेस के भीतर भी और बाहर भी अनेक बार श्री अर्जुनसिंह को शक्तिहीन बनाकर उनकी राजनैतिक हत्या कर देने तक के प्रयास हुए। राजनीति और प्रेस का एक बड़ा मुखर और विशिष्ट वर्ग आज भी इन्दिरा गाँधी और राजीव गाँधी का विशेष आलोचक है। उनकी आलोचना केवल आलोचना नहीं बल्कि व्यक्तिगत कारणों से उपजी 'नफ़रत' भी कही जा सकती है। इस वर्ग की इन निहित नफ़रतों के निशाने पर अर्जुन सिंह आज भी बने हुए हैं।

किन्तु इस सबके बावज़ूद श्री अर्जुनसिंह की निष्ठा आज तक अविचल है। वे अब श्रीमती सोनिया गाँधी के सर्वाधिक विश्वस्त, समर्थक और सहायक राजनेता कहे जा सकते हैं। उनकी सक्रियता भले ही पहले जैसी न रह गई हो मगर उनका क़द अभी भी पूर्ववत् है। वे पार्टी में सतत् वफ़ादारी के जीवंत प्रतीक कहे जा सकते हैं। काँग्रेस में समय-समय पर वफ़ादारियों का खेल होता रहा है और निश्चित रूप से पार्टी नेता तथा पार्टी के वफ़ादारों में श्री अर्जुनसिंह का क़द हमेशा सबसे ऊँचा रहा है।

कश्मीर की केसर क्यारियों की चिंता है अर्जुनसिंहजी को

इस चरम सत्य और कठोर यथार्थ का वास्तव में कोई विकल्प नहीं है कि जम्मू कश्मीर भारत का अविभाज्य एवं अभिन्न अंग है। लेकिन यह भी एक वास्तविकता है कि भारत को स्वाधीनता प्राप्ति के साथ ही साथ कश्मीर तो मिला परंतु उसी समय से 'कश्मीर समस्या' भी प्राप्त हुई जो आज तक हल नहीं हो पाई है। कश्मीर-समस्या पिछली आधी शताब्दी से भी अधिक समय से समस्या ही बनी रही है। कश्मीर समस्या के बारे में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत मतान्तर हो सकते हैं। काफ़ी हद तक हैं भी। लेकिन जम्मू कश्मीर और कश्मीर-समस्या के बारे में देश के और काँग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री अर्जुनसिंह के विचार स्पष्ट हैं। उनका इसके बारे में दृष्टिकोण बहुत ही सटीक और सार गर्भित है। वे अपने तौर पर बड़े दृढ़ और दो टूक विचार के पोषक हैं। सर्वप्रथम तो यह कि वे मानते हैं कि जम्मू-कश्मीर संप्रभुता प्राप्त स्वाधीन-राष्ट्र भारत का एक अंग है और उसके एक बड़े भू-भाग पर पाकिस्तान ने जबरन कब्ज़ा कर रखा है।

श्री अर्जुनसिंह ने जम्मू-कश्मीर के बारे में अपने इसी सुस्पष्ट और निर्भीक दृष्टिकोण को हमेशा सामने रखा है वे चाहे संसद में रहे हों या पत्रकारों के बीच या किसी सार्वजनिक मंच पर उन्होंने यह माना ही नहीं कि कश्मीर कोई ऐसी द्विपक्षीय समस्या है जिस पर किसी भी दूसरे पक्ष के साथ बातचीत या किसी प्रकार के समझौतें या फैसले की आवश्यकता हो। यह कारण है कि वे उस अमरीकी बयान की भी कटु आलोचना करते हैं जिसमें कहा गया है कि कश्मीर समस्या ग्रस्त क्षेत्र है। श्री अर्जुनसिंह का कहना है कि कश्मीर कोई समस्याग्रस्त क्षेत्र नहीं है। यह नितांत हमारा घरेलू मामला है। वे समूचे कश्मीर में निर्भीक स्वतंत्र और निष्पक्ष रूप से चुनाव कराने के हामी हैं और चाहते हैं कि सरकार जम्मू कश्मीर के बारे में स्पष्ट नीति बनाए और वहाँ के चहुँमुखी विकास की ठोस योजनाएँ बना कर उन्हें क्रियान्वित करे।

श्री अर्जुनसिंह का मानना है कि संसार की कोई भी समस्या, फिर चाहे वह कश्मीर समस्या ही क्यों न हो, बंदूक के ज़रिये हल नहीं हो सकती। लेकिन वे पड़ोसी देश द्वारा जानबूझकर फैलाए जा रहे आतंकवाद से निज़ात अवश्य पाना चाहते है। इस बारे में वे कठोर रवैया अपनाने के पक्षधर हैं और उनका कहना है कि भाड़े के आतंकवादियों और घुसपैठियों को बलपूर्वक खदेड़ दिया जाना चाहिए। श्री अर्जुनसिंह की स्थायी मान्यता है कि यदि संघर्ष का रास्ता पाकिस्तान अपनाता है तो उसका परिणाम हमेशा वही होगा जो आज तक होता आया है। वे कहते हैं कि इस तथ्य से स्वयं पाकिस्तान भी अच्छी तरह परिचित है। उनका स्पष्ट विचार है कि सैनिकों की सफलता पर राजनीति करना उचित नहीं है।

श्री अर्जुनसिंह का मानना है कि जम्मू कश्मीर में भी प्रजातांत्रिक पद्धति को पूरी तरह लागू करना चाहिए जैसा कि समस्याग्रस्त पंजाब में किया गया। यह बात उन्होंने 21 अगस्त 1992 को 'न्यू मस्तक' पत्रिका को दिये गए साक्षात्कार में प्रस्तुत की। उक्त साक्षात्कार के अंश इस प्रकार हैं -

प्र. पंजाब और कश्मीर की समस्या के हल का कोई मसौदा आपकी पार्टी ने क्या तैयार किया है? समस्या के लिए आप किसे दोषी मानते है?

उ. दोनों समस्याएँ ऐसी नहीं है कि बहुत सतही तौर पर उनसे निपटा जा सके। कई मामलों में अलग-अलग पहल हुई है, कुछ की प्रतिक्रिया अच्छी हुई है कुछ की नहीं हुई है। लेकिन धीरे-धीरे हम ऐसा समझते है कि उस दिशा की ओर बढ़ रहे है जिससे ये दोनों सवाल राष्ट्रीय स्तर के सवाल नहीं रहे। जो ऐसे मुद्दे फँसे है जिनसे

हमारी राष्ट्रीय एकता को खतरा है वह अलग से हों तो यह एक प्रदेश लेवल की सी बातें प्रदेशों में हैं, वहाँ तो रहेंगी। एक तो प्रजातांत्रिक पद्धति को बहाल करना, जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा है वह नहीं चाहते कि हिन्दुस्तान का कोई भी कोना प्रजातांत्रिक रूपरेखा से बाहर रहे। पंजाब में चुनाव हुए हैं, काफी लोगों ने उसका समर्थन किया, काफी लोगों ने बायकाट भी किया। लेकिन लोगों के मन में एक बात चली कि यह चुनी हुई सरकार है। वह सरकार कैसे चलेगी, नहीं चलेगी उस पर निर्भर करता है। उसका भविष्य क्या रहेगा? यही प्रयास कश्मीर में भी है। वहाँ अभी पूरी स्थितियाँ ऐसी नहीं बनी हैं कि वहाँ कोई तिथि निर्धारित की जा सके चुनाव की। लेकिन लोगों के मन में इस बात को चला दें कि रास्ता वही है। यदि आप फैसला करना चाहते हैं तो हिन्दुस्तान में बैलट से ही होगा, बुलेट से नहीं होगा।

प्र. वैसे कोई बातचीत हुई है? कश्मीर विस्थापितों के साथ? उनका झुकाव वैसे सैयद मीर कासिम की तरफ काफी है।

उ. यह तो अलग बात है। नेताओं के बारे में कुछ कहना भी ठीक नहीं है। सभी लोग अच्छे हैं। वहाँ नेता कौन होगा इसका फैसला कश्मीर के लोग ही करेंगे। दिल्ली में बैठकर अब होने का नहीं है, करना भी नहीं चाहिए।

हम देखते हैं कि श्री अर्जुनसिंह जनता पर किसी विचार के जबरदस्ती थोपे जाने के विरुद्ध है लेकिन सही सुझाव देने और सही तथा उपयुक्त रास्ता बताने को वे अच्छा समझते हैं। मतलब यह कि समस्या कितनी भी गंभीर क्यों न हो उसे परस्पर बातचीत के ज़रिए विश्वास कायम करके सुलझाया जा सकता है। उपरोक्त बातचीत के समय कश्मीर के हालात चुनाव कराने लायक नहीं थे लेकिन सुधार की गुंज़ाइश हमेशा रहती है। हालात में सुधार लाने के लिए सतत् और गंभीर प्रयास करने तथा जनता में लोकतंत्र के प्रति विश्वास की भावना को बढ़ाने की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए भी श्री अर्जुनसिंह ने 3 अप्रैल 1993 को 'वॉयस ऑफ़ मिलियंस' टी.वी. चैनल के साथ साक्षात्कार में भी ऐसे ही विचार व्यक्त किए थे। इस साक्षात्कार में भी उन्होंने कश्मीर में निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव कराने की पैरवी की थी। टी.वी.चैनल के उक्त साक्षात्कार का अंश :—

Q: Just one question, Are you satisfied today with the performance of the Government *vis-a-vis* Punjab and Jammu and Kashmir? Because these are national problems.

A: Well, in Punjab things have taken a right turn and I think we should congratulate basically the people of Punjab for it, because it is they who have turned their back on blind terrorism and they want to live a peaceful life and make Punjab as prosperous or more prosperous than it was before. I know there are a lot of things which can still be improved there, but basically the direction is correct.

In Jammu and Kashmir I think we have yet to come to that stage where we can say that, yes, we have turned the corner and we are now on the path which will lead us both to peace and prosperity in that area and also be in tune with the larger national interest. I don't think we have reached that point as yet but our efforts are in that direction.

कहना न होगा कि कश्मीर समस्या के संदर्भ में कोई भी समझदार एवं देश हितैषी व्यक्ति यही रवैया अपनाना चाहेगा कि मामला शांति और प्रेम पूर्ण माहौल में निपट जाय। आज के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी यदि हम विचार करें तो अधिकांशतः जनभावना संघर्षपूर्ण स्थितियों की विरोधी ही है। हालांकि यह सच है, कि अब जबकि विश्व एक ध्रुवीय हो चुका है शक्ति का सर्वोच्च प्रतिनिधि अमेरिका ऐसा राष्ट्र है जो बातें तो न्याय प्रियता की करता है परंतु

विश्व के मंच पर वह अपनी चौधराहट भी कायम रखना चाहता है। यही वज़ह है कि उसकी तरफ़ से अनेक बार भारत को द्विपक्षीय बातचीत की सलाह दी जाती है। पाकिस्तान का स्वार्थ इसी में छिपा है कि वह किसी तरह भारत की कश्मीर समस्या को अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का दर्जा दिला दे। यह अलग बात है कि अभी तक ऐसा हो नहीं पाया है और ऐसा हो पाने के आसार तक भी नहीं हैं। लेकिन इस मामले में अमेरिका की ओर से भी बड़े ही शांतिपूर्ण तथा सहृदयी तरीके से समय-समय पर सुझाव दिए गए हैं। भारत का सदैव से यही रूख़ रहा है कि हमें इस मामले को अन्तर्राष्ट्रीय विचार-विमर्श अथवा हस्तेक्षप का मामला बनाना ही नहीं है। यह हमारा अंदरूनी मामला है और हम इसमें किसी भी तीसरे देश की दखलन्दाज़ी बर्दाश्त करते ही नहीं। अभी कुछ दिन पूर्व भी अमेरिका की ओर से मध्यस्थता की पेश कश की जा चुकी है और भारत ने उस पर अपनी अनिच्छा भी प्रकट करदी है। यह स्थिति बहुत नई नहीं है। पहले भी ऐसा हुआ है। बात 1993 की है तब भी अमरीका का एक वक्तव्य आया था जिसका आशय यही था कि कश्मीर को समस्या ग्रस्त क्षेत्र कहा गया था। इस तरह के वक्तव्यों का निहितार्थ यही होता है कि इस प्रकार अलग क्षेत्र कह कर स्थिति को अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बना दिया जाय। यदि तुरंत खण्डन न किया जाय तो भारत के मौन को इस बात की स्वीकृति माना जा सकता है कि जैसे यह समस्या भारत की न हो कर कई पक्षों की साझी समस्या हो। जबकि हम इसे नितांत घरेलू समस्या मानते हैं और इसमें किसी अन्य का हस्तक्षेप हमें पसंद नहीं है। इस तरह की समस्याएँ दुनिया के अन्य देशों में भी विद्यमान है। एक सतर्क और सजग राजनेता के रूप में 25 मई 1993 को लखनऊ में हुई पत्रकार वार्ता में श्री अर्जुनसिंह ने अमेरिका के उक्त वक्तव्य की न केवल कटु आलोचना की बल्कि यह भी कहा कि इस तरह के वक्तव्य का जोरदार खण्डन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वे मानते हैं कि कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है। पाकिस्तान ने जबरन हमारे कश्मीर के कुछ क्षेत्र पर कब्ज़ा कर रखा है। इस पत्रकार वार्ता के कुछ अंश इस प्रकार हैं -

प्रश्नकर्ता: कश्मीर के मामले में जो पहला अमरीकी हस्तक्षेप हुआ है, उसके बारे में आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, वैसे तो 'अमरीकी' प्रवक्ता ने काफ़ी बातें कही हैं, एक पहलू जरूर बहुत उभर कर सामने आया है, जिसमें कि मिस्टर मेलट ने यह कहा है कि, जो तीन सिद्धांत, तीन विषय उन्होंने बताए हैं, जिनके ऊपर विचार-विमर्श होना जरूरी है। पहला तो उसमें यह है कि अमरीकन सरकार का यह दृष्टिकोण है कि कश्मीर, अंग्रेजी में जिसको उन्होंने कहा— "द एण्टायर वैली आफ कश्मीर इज ए डिस्प्युटेड एरिया"। यह मैं समझता हूँ कि बिल्कुल आपत्तिजनक है, खास तौर से इस संदर्भ में कि कश्मीर के मामले में सारे हिन्दुस्तान की सभी राजनैतिक पार्टियों ने आज से नहीं 1947 से, जबसे यह समस्या हमारे सामने आई है, एक मत रहा है और उस एक मत होने के जो मुख्य आधार हैं, वे यह हैं कि कश्मीर का एक्सेसन जो इंडिया में हुआ है वह फायनल और इररिवोकेबल है, कोई भी टेरेटरी जम्मू और कश्मीर की, हमारे दृष्टिकोण में जम्मू कश्मीर के बाहर नहीं है और भारत की सार्वभौमिकता समूचे जम्मू और कश्मीर पर है। इस विषय को लेकर कई दफे पाकिस्तान से आक्रमण भी हुए और हिन्दुस्तान ने पूरी मजबूती के साथ उन आक्रमणों को विफल किया। भारतीयों का खून पहाड़ों और घाटियों में बहा है, वह इसलिए नहीं कि किसी वक्त कोई यह कह दे कि सारे कश्मीर में आज भी अनिश्चितता है कि कश्मीर का कौनसा अंग भारत का है और कौनसा भारत का नहीं है। इसलिए इस बात का तो जोरदार खंडन होना ही चाहिए।

दूसरा संदर्भ यह भी है कि भारत और अमरीका के बीच में संबंध प्रगाढ़ होने चाहिए, मैत्रीपूर्ण होने चाहिए और परस्पर हितकारी होने चाहिए। हिन्दुस्तान और अमरीका के बीच में कई ऐसे आदर्श और मूल्य है, जो सामान्य है, प्रजातांत्रिक मूल्य हैं, समाज के अंदर दृष्टिकोण हैं, इन सबमें मतैक्य होने की वजह से बहुत सी बातें ऐसी है, जिनकी वजह से बहुत अच्छे संबंध अमरीका के और हिन्दुस्तान के हो सकते हैं, हुए हैं और आगे भी होंगे। मैं इनका हिमायती हूँ, लेकिन कश्मीर के मामले में ऐसे किसी भी विचार को कि आज कश्मीर के किसी अंग पर भारत की सार्वभौमिकता नहीं है या वह डिसप्यूटेड है, इसे पूरे जोर से हमें नकारना चाहिए और बातचीत का कोई आधार बनाने के लिए मजबूर नहीं होना चाहिए।

यह उदाहरण दर्शाता है कि हर भारतीय नागरिक की तरह श्री अर्जुनसिंह की चिंताओं में भी जम्मू-कश्मीर की समस्या शामिल है। न सिर्फ़ शामिल है बल्कि वे इसके प्रति हमेशा हर जगह, हर मोर्च पर सक्रिय हैं, सजग हैं, सतर्क है। कारण यह कि यह एक ज्वलंत राष्ट्रीय चिंता है। एक राष्ट्रीय प्रश्न है जो हर देश प्रेमी की तरह श्री अर्जुनसिंह के मन को भी मथता है।

कश्मीर में एक घटना होती है। घटना क्या इसे दुर्घटना कहना ही उचित है। गंभीर दुर्घटना। हुआ यह कि कश्मीर की एक पवित्र दरगाह, चरारे-शरीफ़ को एक अफ़ग़ानी दहशत गर्द 'मस्तगुल' ने अपने भाड़े के सैनिकों की मदद से जला डाला। ये लोग वहाँ तीर्थयात्रियों के भेष में पहुँचे थे। इस घटना ने न केवल कश्मीरियों को बल्कि देश के तमाम नागरिकों को हिला कर रख दिया। ज़ाहिर है इस घटना से श्री अर्जुनसिंह भी विचलित हुए। देश भर के मीडिया में इस घटना की खासी चर्चा रही और ज़ाहिर है लोकतंत्र के हृदय-स्थल, लोकसभा में भी इस पर चर्चा हुई। श्री अर्जुनसिंह जी ने संसद में इस घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए, इस संकटपूर्ण स्थिति पर समग्र दृष्टिकोण के साथ विचार करने और तत्पश्चात् एक सुनिश्चित रणनीति बनाए जाने पर जोर दिया।

उपरोक्त चर्चा लोकसभा में 11 मई 1995 को हुई थी। उसमें भाग लेते हुए श्री अर्जुनसिंह ने अपने जो उदगार प्रकट किये वे आज भी प्रासंगिक हैं। उससे हमें उनके दृष्टिकोण का भली प्रकार ज्ञान होता है। दरगाह चरारे-शरीफ़ को विस्फोटों से जला दिये जाने की घटना पर लोकसभा-सदन में हुई चर्चा के अंश भी श्रीसिंह के विचारों को हमारे सामने उदघाटित करते हैं। ग्यारह मई 95 को हुई कार्रवाई का विवरण इस प्रकार है —

श्री अर्जुनसिंह (सतना) : माननीय अध्यक्ष महोदय, बोलने का अवसर देने के लिए मैं आप का आभारी हूँ।....(व्यवधान)

अनेक माननीय सदस्य : आप हिन्दी में बोलिए। (व्यवधान)

श्री अर्जुनसिंह : यह आखिरी अवसर नहीं है।

महोदय, मैं आपके प्रति आभारी हूँ कि आपने कुछ शब्द बोलने की मुझे अनुमति दी है। बहुत विवादग्रस्त मामले का किसी विवादग्रस्त मामले से या किसी समस्या का दूसरी समस्या से तुलना करने का मेरा कोई इरादा नहीं है। क्योंकि मेरा ऐसा करना अर्थहीन कोशिश है। इस दुर्भाग्यशाली घटना के बाद जो स्थिति उत्पन्न हुई है यह इस तरह के प्रयासों से भी बहुत ज्यादा गंभीर है। मैं इस माननीय सभा को यह याद नहीं दिलाना चाहता कि कश्मीर एक ऐसा स्थान रहा है जहाँ पर सभी तरह की अवधारणाएँ साम्प्रदायिक सौहार्द, मानसिक शांति और एक दृष्टिकोण, उभरे, विकसित हुए जिनका स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इस देश के महान नेताओं और जनता ने अनुसरण किया, यह वही भूमि है जो भारत विभाजन की दुःखद घटना की अंतिम परीक्षा की साक्षी रही।

इसलिए मेरे विनम्र दृष्टिकोण से, यह केवल प्रशासनिक ढाँचे अथवा राजनीतिक मान्यताओं की असफलता का प्रश्न नहीं है हमें इस मामले को इस परिप्रेक्ष्य में देखना है कि भारत क्या बनना चाहता है, कहाँ हम आए है, कहाँ हमें जाना है, यदि हम इस विस्तृत परिप्रेक्ष्य में इसे नहीं देखते तो हम निश्चय ही भावावेश में दुर्भावना के शिकार हो सकते है और एक-दूसरे पर आक्षेप लगाने का प्रयास कर सकते हैं। मैं उस समय बहुत दुःखी हुआ जब सभा में कुछ वरिष्ठ लोगों ने एक निश्चित स्तर पर चर्चा को लाने के लिए आपके हस्तक्षेप का अनुरोध किया था। यह आवश्यकता नही उठनी चाहिए थी। जम्मू और कश्मीर में हम किस स्थिति का सामना कर रहे हैं? इससे मात्र किसी धार्मिक स्थल के प्रति आस्था ही किरच-किरच होकर नहीं बिखरी है अपितु मैं तो आक्रोश और विनम्रता के साथ यही कहूँगा कि हम न केवल कश्मीर में अपितु समूचे देश में हमारे विश्वास, प्रतिबद्धता और गणतंत्र के मूलभूत सिद्धांतों के प्रति आस्था के बिखरने के संकट का सामना कर रहे हैं।

यदि आस्था खंडित हो रही है, तो हम देश के किसी भी भाग में इसे कृत्रिम रूप से नहीं जोड़ सकते, दृढ़ता नहीं दे सकते यही सब कुछ हुआ है। जिस नैतिक ताने-बाने से हम खड़े रह सकते हैं और भयंकर से भयंकर संकट का सामना कर सकते हैं जैसा कि हमने विगत दिनों में किया। विश्वास के प्रति जो साहस हमें चाहिए और जटिल परिस्थितियों, विवादास्पद मामलों का समाधान करने के लिए पहल करने की क्षमता पैदा करने वाले चिंतन का आज अभाव है और जब हम से इनका अभाव दूर नहीं होता तो चाहे यह अयोध्या हो या चरार-ए-शरीफ़ या कल फिर कोई स्थान हो सकता है जैसा कि मेरे मित्र श्री यादव ने कहा कि हम उन पवित्र पूजा स्थलों की दुःखद तबाही की केवल गणना भर करते रहेंगे जिनमें देश के सभी धर्मों के आम लोगों की आस्था और विश्वास है।

मैं जानता हूँ कि कुछ लोग यही कहेंगे कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ उसका आज सभा में हो रही चर्चा के साथ कोई संबंध नहीं है और मैं भी यही कहूँगा क्योंकि यह एकदम स्पष्ट है कि जवाबदेही, जो किसी भी प्रजातांत्रिक संस्था में मुख्य होती है, वह आज बहुत कलंकित स्थिति में आ गई है। मैं उसकी चर्चा नहीं करना चाहता। आपकी अनुमति से मैं यही बताना चाहता हूँ कि आज जो कुछ कश्मीर में दाँव पर लगा है हमने उसकी सम्पूर्णता में उस पर विचार करने का प्रयास नहीं किया है। जो चूँकि कुछ हो रहा है अथवा क्योंकि कुछ हम पर थोपा गया है इसलिए जो कभी कभार पहल की गई है उनसे कोई कश्मीर नीति नहीं बन जाती। मैं इस सभा को उस अत्यंत उलझनभरी स्थिति के बारे में बताना चाहूँगा जिसका कुछ समय पूर्व मुझे जम्मू में सामना करना पड़ा था।

जब सर्वदलीय शिष्ट मंडल मुझसे मिला और उन विषयों पर जो मेरे प्रभार के अंतर्गत थे, के बाद, स्वाभाविक रूप से उन्होंने मुझसे पूछा कि "कश्मीर के संबंध में भारत सरकार की क्या नीति है।" यह बात रिकॉर्ड में है क्योंकि उस समय भी यह बात समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुई थीं मैंने कहा कि अभी मैं पूरी निष्ठा के साथ इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। वहाँ से वापस आने के बाद हमने इस बात का प्रयास किया कि सरकार की कैबिनेट में, जो रणनीति बनाती है, और निर्णय लेती है, कश्मीर की समस्या पर एक व्यापक चर्चा होनी चाहिए और कश्मीर नीति बनाने में हम सभी को सम्मिलित किया जाना चाहिए। मैं कैबिनेट की गोपनीय बातें नहीं बता रहा हूँ क्योंकि किसी बात पर चर्चा नहीं की गई थी, कम से कम मेरी जानकारी में। केबिनेट में कभी भी कश्मीर पर व्यापक रूप से कोई चर्चा नहीं हुई है और जब तक मैं मंत्रिमंडल का सदस्य रहा तब तक ऐसी चर्चाओं से कोई नीतिगत ढाँचा नहीं बन पाया।

महोदय, मैं शिकायत नहीं कर रहा हूँ क्योंकि मैं किसके विरुद्ध शिकायत कर सकता हूँ? और जिस स्थिति का आज हम सामना कर रहे हैं, उसका मूल शिकायत करने में नहीं है। हम इतनी बड़ी समस्या का टुकड़ों में समाधान

नहीं निकाल सकते।

महोदय, हमारे देश के एक महान् योद्धा इस समय जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल हैं। वह अत्यधिक सम्माननीय और सामर्थ्यवान व्यक्ति हैं और मेरा विश्वास है कि मातृभूमि के प्रति उनकी सेवाएँ किसी से कम नहीं हैं। लेकिन वह नागरिक प्रशासन का नेतृत्व कर रहे है और वह नागरिक प्रशासन अगर पूरी तरह से नहीं तो कुछ सीमा तक, राज्य में सैनिक अभियानों पर नियंत्रण रखे हुए है या कम से कम उन्हें दिशा-निर्देश दे रहे हैं। या धारणा बनाए बगैर कि कोई व्यक्ति ठीक है या गलत, कुछ जो मनोवैज्ञानिक कारण उत्पन्न हो गए हैं, उन पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इस संबंध में हमारे बड़े निश्चित मापदंड हैं। मैं सेना के किसी पूर्व जनरल अथवा अधिकारी के विरुद्ध नहीं हूँ। वह सब ठीक है। लेकिन ऐसे गड़बड़ी वाले क्षेत्रों में, जहाँ प्रतिदिन निर्णयों का इतना महत्त्व होता है, किसी पूर्व जनरल और कार्यकारी जनरल के बीच संबंधों की संवेदनशीलता से समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं और उस पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए। मैं इन पर अथवा उन पर, किसी पर भी आरोप नहीं लगा रहा हूँ।

महोदय, दूसरी बात यह है कि वहाँ सामान्य स्थिति कैसे बहाल की जाए ताकि हम वहाँ चुनाव करवा सकें। यहाँ इस महान सभा में बैठा हुआ प्रत्येक सदस्य इस सभा में जनमत के माध्यम से ही आया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हममें से प्रत्येक न केवल लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति कृतज्ञ हैं बल्कि इसके अंतिम सोपान भी हैं। यहाँ कोई भी यह बात किस प्रकार कह सकता है कि जम्मू और कश्मीर में कोई लोकतांत्रिक विकल्प नहीं होना चाहिए? लेकिन प्रश्न अति सरल है। महोदय, लोकतांत्रिक विकल्प का प्रयोग दो महत्त्वपूर्ण स्थितियों के अंतर्गत किया जाता है। पहली, वहाँ शांति और अमन-चैन होना चाहिए। दूसरी, किसी को अपने मताधिकार का प्रयोग करने में कोई मुश्किल नहीं आनी चाहिए। अगर सरकार, सारा देश और सभी राजनीतिक दल यह महसूस करते हैं कि ऐसी परिस्थितियाँ वहाँ मौजूद हैं, तो वे निश्चित रूप से वहाँ चुनाव करवा सकते हैं। लेकिन हमें केवल चुनाव करवाने के लिए ही प्रयास नहीं करना चाहिए बल्कि हमारे पास एक रणनीति भी है जिसे लागू करना है महोदय, यह देश बहुत विशाल है और इसकी समस्याएँ इतनी जटिल हैं कि इन्हें बड़े सरल ढंग से सुलझाना कठिन कार्य है।

इस बात का ध्यान रखना होगा। केवल तभी चुनाव करवाने का निर्णय किया जा सकता है। इस पर काफी टीका-टिप्पणियाँ की गई हैं लेकिन जैसा कि मैंने शुरू में ही कहा है, मेरी इसमें अपने आपको शामिल करने की कोई मंशा नहीं है। मुझे यह विश्वास है और मैं यह स्वीकार करता हूँ कि हम कश्मीर के लोगों से यह पूछने के लिए तैयार नहीं हैं कि वे हमसे दूर क्यों चले गए हैं। अगर हम यह प्रश्न नहीं पूछ सकते, तो मुझे नहीं लगता कि हम अपने आपको ठीक से तैयार कर पाएँगे और फिर ईमानदारीपूर्वक इस अलगाववाद का कोई संतोषजनक हल ढूँढ पाएँगे और अगर इन लोगों की संतुष्टि हमारा उद्देश्य नहीं है तो फिर मेरा विश्वास है कि जैसी स्थिति है, हम उसे ऐसे ही चलते रहने देना चाहेंगे और इसमें थोड़ा-बहुत सुधार करेंगे ताकि इसका श्रेय हमें मिल सके। ऐसे चमत्कार कल्पनीय तो हैं, लेकिन ऐसे चमत्कार व्यावहारिक रूप से विश्व में कहीं भी नहीं हुए हैं। किसी लोकतांत्रिक देश में निर्णय बड़ी कठिन परिस्थितियों के अंतर्गत लेने पड़ते हैं. उग्रवाद, आतंकवाद और कट्टरतावाद के कारण वे स्थान ही, जहाँ निर्णय लिए जाते हैं, तहस-नहस हो गए हैं और अभी भी वे निर्णय लिए जाने हैं। हालाँकि मैं कोई तुलना नहीं कर रहा हूँ, परन्तु पंजाब में भी हमें व्यावहारिक रूप से इसी प्रश्न का, इसी परिस्थिति का, इसी विकल्प का सामना करना पड़ा था लेकिन वहाँ दो बातें बिल्कुल स्पष्ट थी। पहली-कमान अर्थात् निर्णय किस स्तर पर लिया जाना है और किसके द्वारा लिया जाना है, यह स्पष्ट था। उसमें कोई अस्पष्टता नहीं थी और जिस समय-सीमा में ऐसे निर्णय लिए जाने थे, वह उस समय की जरूरतों के प्रतिकूल नहीं थी। अगर कोई निर्णय दो घंटे के भीतर लिया जाना है, तो उसे इसका

दो सप्ताह में लिया जाना उतना फ़ायदेमन्द नहीं हो सकता। ऐसी ही स्थिति वहाँ उस दिन उत्पन्न हुई थी जबकि विधान सभा के चुनावों के लिए नामांकन पत्र भरने की प्रक्रिया शुरू हो गई थी, उसी समय सन्त लोंगोवाल की हत्या कर दी गई थी। वहाँ आतंकवादी चुनावी माहौल को विषाक्त करना चाहते थे, चुनावों को रोकना चाहते थे क्योंकि ये सभी लोगों की इच्छा के सामने खड़े नहीं रह सकते थे, जिसका प्रदर्शन केवल लोकतांत्रिक चुनावों के द्वारा ही हो सकता है। बहुत से माननीय सदस्य जो इस सभा में बैठे हुए हैं, उस दिन वहाँ मौजूद थे जब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने प्रत्येक सदस्य से सलाह मशविरा करते हुए यह निर्णय लिया था कि जो कुछ घटित हुआ उसके उपरांत भी चुनाव होंगे और उन्होंने इस सभा में एक वक्तव्य दिया। उसका एक वाक्य अभी भी मेरे कानों में गूँज रहा है— 'चाहे हम जीतें या हारें, लोकतंत्र की जीत अवश्य होगी' और लोकतंत्र की जीत हुई क्योंकि ऐसे जघन्य हत्याकांड के साए में भी, किसी एक व्यक्ति की भी जान नहीं गई, हिंसा की एक भी घटना नहीं घटी और पंजाब में हुए चुनाव किसी एक राजनीतिक दल अथवा दूसरे राजनीतिक दल के उपयुक्त न रहे हों लेकिन कम से कम पंजाब के लोग तो संतुष्ट थे कि उन्हें अपना लोकतांत्रिक अधिकार प्रयोग करने और अपने मतानुसार काम करने का अवसर दिया गया। क्या आज जम्मू और कश्मीर में ऐसा करना संभव है? और अगर ऐसा संभव नहीं है तो इसकी सारी जिम्मेदारी सरकार की है। पहले वह स्वयं को, उसके बाद इस सभा को और तत्पश्चात् इस देश को आश्वस्त करेगी। लेकिन जो खतरे मंडरा रहे हैं, जिनकी ओर श्री चन्द्रशेखर ने इस सभा का ध्यान आकर्षित किया है, वे काल्पनिक बातें नहीं हैं।

जहाँ तक पाकिस्तान के साथ हमारे संबंधों का प्रश्न है, जिनका जम्मू और कश्मीर की स्थिति से गहरा संबंध है, मुझे इस पर और अधिक कुछ नहीं कहना है। दो बातों का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए। पाकिस्तान उस आघात से नहीं उभर सका है जिसका स्पष्टीकरण देने के लिए वह स्वयं असमर्थ है। वह कौन सा आघात है, जो अभी भी उनके मस्तिष्क पर छाया हुआ है? क्या यह पाकिस्तान बनने के बावजूद, भारत के दो टुकड़े न होने की पराजय है? क्या इसकी वजह यह है एक अल्पसंख्यक समुदाय के अधिकांश लोगों ने पूरे विश्वास के साथ इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि भारत एक शांतिप्रिय और धर्म-निरपेक्ष देश है, जहाँ उनके अधिकार और उनका भविष्य सुरक्षित है? या फिर यह वह आघात है जो उनके द्वारा इस देश पर किए गए जिन असफल आक्रमणों के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ है? पाकिस्तान सरकार इससे उबर नहीं सकी है। लेकिन जहाँ तक पाकिस्तान की जनता का प्रश्न है, ऐसी स्थिति नहीं है। अब समय आ गया है कि पाकिस्तान के लोगों से अपने भेदभाव मिटाने के लिए सच्चे दिल से प्रयास करें। मैं जानता हूँ कि इस कार्य में अनेक बाधाएँ हैं। यहाँ तक कि छोटी-छोटी चीजें जैसे व्यापारिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक आदान-प्रदान की अनुमति नहीं है। लेकिन उस प्रयास में दृढ़ भावना का होना आवश्यक है।

बहुत सी ऐसी बातें हैं, जिनका हमें भी ध्यान रखना चाहिए। पाकिस्तान जानता है और हम भी जानते हैं कि अगर किसी भी समय उसने भारत की शक्ति को चुनौती दी, तो उसका परिणाम वही होगा जो पिछले युद्धों में रहा है। कोई और परिणाम हो ही नहीं सकता। लेकिन हमें लोगों को पाकिस्तान से आने वाले सम्माननीय लोगों के विचारों से अवगत कराना चाहिए, जो खुले रूप में इन लोगों को यह विश्वास दिलाने का प्रयास करते हैं कि जो उनका विचार है, वही वास्तव में भारत के हित में है और इस देश में हम जम्मू और कश्मीर के लोगों के बारे में जो सोचते हैं, वह उनके हित में नहीं है। हुर्रियत नेताओं के साथ नई दिल्ली में एक भेंटवार्ता आयोजित की गई थी। उसमें सम्भाषण दिया गया और मेरे विचार में वह सम्भाषण से कुछ ज्यादा ही था। क्या ऐसा करना आवश्यक था? या यह कूटनीति का एक भाग था जिसका कुछ अन्य उद्देश्य दृष्टिगत रहा हो? हो सकता है। लेकिन हमें मालूम नहीं है। हमें इसके बारे

में सावधान रहना है।

अन्त में, मैं एक टिप्पणी के साथ अपना भाषण समाप्त करना चाहता हूँ। जैसा कि एक रोमन दार्शनिक ने कहा था, कोई भी देश या कोई भी नेता अपने प्रति या देश के प्रति तब तक न्याय नहीं कर सकता है जब तक कि वह अधिकार की सीमाओं से परिचित नहीं है। मैं समझता हूँ कि इन सीमाओं से बाहर जाना, इतने प्रच्छन्न और अहितकारी विचारों की शुरुआत अन्ततोगत्वा एक प्रजातांत्रिक देश में राष्ट्र की आत्मा और भविष्य को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं, जो वास्तव में शक्ति को क्षीण कर देते हैं, पहल को क्षीण कर देते हैं और उसको क्षीण कर देते हैं जो पूरी भागीदारिता, आत्म-विश्वास और संतुलन के साथ एक प्रजातंत्र के संचालन के लिए जरूरी है और अन्ततोगत्वा देश और लोगों की सेवा करने की उस प्रेरणा, इच्छा और प्रतिबद्धता को क्षीण कर देते हैं जिनसे हमें इस सभा का प्रतिनिधित्व करने का सम्मान प्राप्त हुआ है।

संसद में इतने खुले और सुस्पष्ट रूप में, बिना अपने आवेग संवेग को दबाए किसी राष्ट्रीय महत्त्व के विषय पर अपनी बात रखने का साहस कौन कर सकता है? यह साहस और वैचारिक स्पष्टता भी श्री अर्जुनसिंह के पास है। यही वज़ह है कि वे जब सदन में बोलने खड़े होते हैं तो उनके संभाषण को पक्ष-विपक्ष दोनों ही गंभीरता से सुनते हैं और एकाग्र होकर सुनते है। अपनी बात सामने रखते हुए श्री अर्जुनसिंह बहुत ही संयमित और तनाव मुक्त रहते हैं यह सभी जानते हैं। यह भी कि उनकी वाणी में गहरा आत्मविश्वास भरा होता है। वे न आलोचना के लिए आलोचना करते हैं न प्रशंसा के लिए प्रशंसा। विषय के प्रतिपादन में तार्किक आधार पर आलोचना के स्थान पर आलोचना और प्रशंसा की जगह प्रशंसा करना उनका गुण है। वे आत्मालोचना से भी नहीं झिझकते। संसद में दिए गए अपने वक़्तव्य में ही नहीं समाचार पत्र को दिए साक्षात्कार में भी उन्होंने सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया कश्मीर के बारे में सरकार की कोई सुस्पष्ट नीति नहीं थी। चरारे-शरीफ़ की घटना को लेकर ही उन्होंने 'उर्दू सहारा' समाचार पत्र को एक साक्षात्कार दिया था। यह साक्षात्कार 28 मई 1995 के 'राष्ट्रीय सहारा' (उर्दू) के अंक में प्रकाशित हुआ था। कश्मीर के बारे में किसी स्पष्ट नीति का अभाव उन्हें बराबर खटक रहा था। यह उनकी बातचीत में साफ़ झलकता था। एक अंश देखें —

प्रश्नकर्ता : अच्छा, इस सिलसिले में एक तो चरार-ए-शरीफ़ को जलाए जाने और कश्मीर पर शेषन साहब ने भी कहा है। इस बारे में आप क्या सोचते हैं? वहाँ चरार-ए-शरीफ़ की घटना ....?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, बात यह है कि यह दुःख की बात है कि सरकार के पास कश्मीर के पूरे मसले पर कोई सोची-समझी नीति है ही नहीं। मैंने पार्लियामेंट में भी यह बात कही थी कि पिछले चार सालों में एक दफे भी कैबिनेट में कश्मीर की पॉलिसी क्या है? इस पर बात नहीं हुई। अब इससे बढ़ कर और क्या चीज हो सकती है? इस पृष्ठभूमि में आज के हालातों में वहाँ क्या होना चाहिए? यह तो हमें सोचना होगा। तो अभी पिछली वर्किंग कमेटी हमारी जो हुई, उसमें यह बात हुई थी कि मैं कुछ और साथियों के साथ जम्मू कश्मीर जाऊँ और अगले 6 जून को तीन दिन के लिए हम लोग वहाँ जा रहे हैं। चरार-ए-शरीफ़ भी जाएँगे और भी लोगों से वहाँ बातचीत करेंगे और सब बातों का जायजा लेकर हम लोग कुछ कह सकते हैं। अभी मैं ऊपर ही ऊपर कुछ कह दूँ यह उचित नहीं है।

यह बातें उन्होंने इन्दौर में 29 मई 1995 को सम्पन्न पत्रकार वार्ता में भी दोहराई। उनके चिंतित मन को एक ही शिकायत थी कि कश्मीर के बारे में कोई सोची समझी, सुविचारित नीति आखिर क्यों नहीं है? उनका विचार था

कि कश्मीर के बिगड़ते हालात के लिये सिर्फ़ यही मुख्य वज़ह थी। अपनी धारणा को उन्होंने कभी भी छिपाया नहीं। इस पत्रकार वार्ता में कश्मीर के बारे में पूछे गए सवाल के जबाव में उन्होंने कश्मीर के बारे में अनिश्चितता की बात कही -

प्रश्न : कश्मीर के बारे में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, कश्मीर के मामले में एक चीज तो स्पष्ट है, जब इलेक्शन कमेटी में यह बात सामने आई कि कोई सुविचारित नीति प्रधानमंत्री की कश्मीर के बारे में नहीं है। हर घटना से जुड़कर कोई न कोई एक्शन होता है, तो उसका तात्कालिक प्रभाव रहता है और फिर 6 महीने के लिए सब भूल जाते हैं। इसी वजह से आज कश्मीर की ये हालत हुई है। मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैंने पहले भी कहा है, मै उसको दोहराना चाहता हूँ। पिछले करीब तीन साढ़े तीन साल में एक दफे भी बारबार रिक्वेस्ट करने के बावजूद कश्मीर के मामले में केबिनेट में कोई बहस नहीं हुई। कोई पॉलिसी नहीं रखी गई, तो जब इस तरह का अनिश्चितता का वातावरण है, वो भी ऐसे संवेदनशील क्षेत्र के लिए, जिसके बारे में मुझे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है, जिसे सारा हिन्दुस्तान और दुनिया जानती है। और हम लोगों ने फैसला किया है, तीन दिन के लिए हमारा प्रतिनिधि मंडल 6,7,8 जून को वहाँ जा रहा है।

प्रश्न : कहाँ पर जा रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: जम्मू-कश्मीर जा रहा है।

प्रश्न : वहाँ चुनाव की क्या स्थिति है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, जाने से पहले मैं कोई राय नहीं देना चाहता।

इस तरह के उदाहरणों से किसी व्यक्ति को ऐसा भी लग सकता है मानो श्री अर्जुनसिंह और प्रधानमंत्री नरसिंहराव के बीच किसी तरह के मतभेद रहे होंगे। मगर 15 जुलाई 1992 को संसद में हुई चर्चा में जब चित्तौड़गढ़ के भाजपा सांसद श्री जसवंतसिंह ने देश में कानून और व्यवस्था की स्थिति में आई गिरावट का बखान शुरू किया तो उसमें कश्मीर, पंजाब और लिट्टे की बड़ी समस्याओं से निपटने में सरकार की नाकामी का खासा उल्लेख किया। तब राव सरकार के बचाव का प्रयास श्री अर्जुनसिंह ने ही किया। उन्होंने जसवंतसिंहजी की भाषण शैली पर चुटीले कटाक्ष किए और सरकार का बचाव किया। उन्होंने भारत की लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के अंतर्गत ही कश्मीर समस्या के हल की बात कही। 15 जुलाई 1952 को हुई लोकसभा की कार्यवाही का सम्बन्धित अंश काबिले गौर है और इस प्रकार है — (श्री जसवंतसिंह द्वारा उठाए गए तर्कों का उत्तर देते हुए)

श्री अर्जुनसिंह : आपने कश्मीर का उदाहरण दिया है कि दो मंत्रियों ने अलग-अलग वक्तव्य दिए हैं। यह सत्य नहीं है कि दोनों मंत्रियों ने अलग-अलग बात कही हो। दोनों ने ही सरकार की चिंता को व्यक्त किया है। जब स्वयं प्रधानमंत्री ने यह कहा है कि इस देश की एक इंच भूमि भी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के दायरे से बाहर नहीं है तो ऐसी स्थिति में अगर कोई चुनाव करवाने की बात कहता है तो वह नीति के विरुद्ध बात नहीं कर रहा है। अगर कोई व्यक्ति जो कानून व्यवस्था स्थापित करने, आतंकवाद विरोधी अभियान को वास्तव में जारी रखने के लिए जिम्मेदार है, वह इस संबंध में अपनी चिंता अभिव्यक्त करता है तो वह कोई नीति विरोधी कार्य नहीं कर रहा है। राष्ट्र के समक्ष मुद्दों और समस्याओं में समन्वय स्थापित करना ही वास्तव में प्रबंध कला है। अगर आप इसे पाप या गलत समझते है तो आप ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हैं, परंतु मेरे विचार में ऐसा ठीक नहीं है तथा यह सरकार अपने उत्तरदायित्वों से विमुख हुए बिना तथा सारी स्थिति को इसकी समग्रता में सामने रखते हुए तथा यह मानकर कि मूलतः यह एक लोकतांत्रिक देश है तथा शासन चलाने का कार्य लोकतांत्रिक ताकतों को दिया जाना चाहिए, शासन

व्यवस्था करती रहेगी। यही हमारा उद्देश्य है। इस प्रक्रिया को काफी उतार-चढ़ाव से होकर गुज़रना होगा। इस दुनिया में ऐसा होता ही है।

इसके अतिरिक्त उन्होंने सुरक्षा के खतरे की बात की है। श्री जसवंतसिंहजी प्रतिष्ठित पृष्ठभूमि से आए हैं, मैं यह जानता हूँ। उन्हें भारतीय सेना में विभिन्न पदों पर सेवा करने का गौरव प्राप्त है, जिसका हमें गर्व है। हम उनका सम्मान करते हैं। परंतु क्या आप किसी एक घटना के आधार पर सुरक्षा के खतरे की बात कह सकते हैं। मैं नहीं समझता कि आप ऐसा कर सकते हैं। राष्ट्र की सुरक्षा विशेषकर विद्यमान संदर्भ में ऐसा विषय है जिसके दायरे में देश के भीतर होने वाली प्रत्येक घटना आ जाती है। तथा इसका देश के समक्ष बाहरी खतरे से क्या संबंध है? इसलिए जब ऐसा कह कर उन्होंने अपनी बात समाप्त की तो शायद अनजाने में उन्होंने ऐसी बात कही जो कि वे पहले नहीं कह सके थे तथा यह बात उनके मन में खटक रही थी कि भारतीय गणराज्य के समक्ष यह खतरा बना हुआ है। बेशक आपके विचार से इसके लिए पुलिस तथा गैर जिम्मेदार आसूचना सेवाओं की स्वायत्तता जिम्मेदार है। मैं माननीय सदस्यों के समक्ष यह बात दोहराना चाहूँगा कि देश की सुरक्षा केवल पुलिस तथा गैर जिम्मेदार आसूचना एजेन्सियों तक ही सीमित नहीं है; हाँ, यह उसमें योगदान करने वाली एक बात हो सकती है परंतु मेरी वास्तविक शिकायत यह है जो कि मैं स्पष्ट रूप से व्यक्त करना चाहता हूँ कि अगर इस देश की सुरक्षा के लिए कोई खतरा उत्पन्न हुआ है, अगर देश के लोकतांत्रिक ढाँचे के लिए कोई खतरा है तो इस खतरे का कारण सदन में इस ओर बैठे हुए लोग नहीं हैं बल्कि विपक्ष में बैठे हुए लोग हैं।

यह भी उन्हीं दिनों की बात है। विपक्ष शासन को बात-बात पर कश्मीर का मुद्दा लेकर घेरने की बात कर रहा था। सांसद श्री शब्बीर अहमद सलारिया ने जम्मू कश्मीर में बेरोज़गार इंजीनियरों को लेकर सवाल पूछा। दर असल सवाल के बहाने कुछ ऐसा पेंच पैदा करने की कोशिश सांसद महोदय की थी कि जिससे मीडिया में उसके सहारे खलबली पैदा की जा सके। श्री सलारिया ने पूछा —

श्री शब्बीर अहमद सलारिया — क्या मानव संसाधन विकास मंत्री यह बताने की कृपया करेंगे कि :—

(क) जम्मू और कश्मीर में कितने वृत्ति भोगी इंजीनियर उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्ति के आदेश दिये जाने के बावज़ूद बेरोज़गार हैं;

(ख) इसके क्या कारण हैं; और —

(ग) क्या यह भी सच है कि वे घरने पर बैठे हुए हैं और यहाँ तक कि जनवरी 1992 में उन्होंने आत्मदाह का भी प्रयास किया था क्योंकि न्यायालय के आदेशों को कार्यान्वित नहीं किया गया?

मानव संसाधन विकास, मंत्री (श्री अर्जुनसिंह) :— (क) से (ग) जम्मू और कश्मीर सरकार से प्राप्त सूचना के अनुसार जम्मू एवं कश्मीर में बेरोज़गार वृत्तिभोगी इंजीनियरों की संख्या 1297 है जिन्हें पर्याप्त संख्या में पद नहीं होने के कारण और चयन प्रक्रिया में लिये गए समय के कारण रोज़गार प्रदान नहीं किया जा सका। वे समय-समय पर धरने पर बैठते रहे हैं। तथापि किसी ने आत्मदाह नहीं किया है।

कहने का तात्पर्य यह कि श्री अर्जुनसिंह भी प्रश्नकर्त्ता के समान ही कश्मीर के हालात के प्रति चिंतित रहते थे और वहाँ से सम्बन्धित प्रश्नों को खूब मनोयोग से देखते थे। कश्मीर के प्रति उनकी यह रुचि आज भी बनी हुई है क्योंकि वहाँ पुनर्स्थापित लोकतांत्रिक व्यवस्था के बावज़ूद घुसपैठ और आतंकवाद की समस्या आज भी बनी हुई है। समय कितना भी बदला हो परंतु श्री अर्जुनसिंह की यह धारणा आज भी अपरिवर्तनीय है कि जितना अभी हमारे पास केवल वही नहीं बल्कि समूचा कश्मीर ही संप्रभु राष्ट्र 'भारत' का अंग है।

यह अनायास नहीं है कि संसद में जब कभी भी अवसर आया है कश्मीर को लेकर अर्जुन सिंह जी ने गहरी संलग्नता दर्शाई है और बड़े ही गंभीर तथा बड़े-बड़े वक़्तव्य भी दिए हैं। अगस्त 1995 में लोकसभा का सत्र चल रहा था और जम्मू कश्मीर के बजट अनुमानों पर चर्चा जारी थी। 22 अगस्त को हुई चर्चा में थी अर्जुनसिंह ने बजट अनुमानों का समर्थन तो किया लेकिन कुछ व्यवस्था सम्बन्धी प्रश्न भी उठाये। दर असल वे जम्मू-कश्मीर की कानून और व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति से व्यथित थे। श्री अर्जुनसिंह का यह मानना रहा है कि जम्मू-कश्मीर की वित्त व्यवस्था से सम्बन्धित कोई चर्चा यदि सदन में होती है तो वह विशुद्ध रूप से वित्त व्यवस्था पर ही नहीं होती बल्कि वहाँ की समग्र स्थिति पर होती है। इसमें राज्य विशेष के लोगों और जनप्रतिनिधियों की ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण देश की भावनाएँ जुड़ी होती हैं। श्री अर्जुनसिंह की श्रद्धा संसद के प्रति अगाध है। लोकतंत्रीय व्यवस्था के प्रति समादर और विश्वास उनके वक़्तव्यों से प्रतिध्वनित होता है। इस दृष्टि से 22 अगस्त 1995 की संसद की कार्रवाई और उसमें श्री अर्जुनसिंह के वक़्तव्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। उस दिन की कार्रवाई के कुछ अंश द्रष्टव्य हैं:—

श्री अर्जुनसिंह : महोदय, मैं व्यवस्था का एक प्रश्न उठाना चाहता हूँ। हम लोग इस आशा में थे कि प्रधान मंत्री उत्तर देंगे किन्तु अब माननीय गृहमंत्री ने यह कह कर उसे झुठला दिया कि प्रधानमंत्री आज इस चर्चा में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। निश्चित रूप से उनका यह विशेषाधिकार है कि वह हस्तक्षेप करना चाहते हैं अथवा नहीं। वह कश्मीर संबंधी मामलों के प्रभारीमंत्री हैं। मैं यह जानता हूँ कि वित्त राज्यमंत्री को संविधान द्वारा विशेष स्थिति में बजट प्रस्तुत करने का अधिकार प्रदान किया है। उन्हें ऐसा करने का अधिकार है और हम बजट का समर्थन कर रहे हैं। इस मुद्दे पर कोई मतभेद नहीं है। किन्तु जो आधारभूत मामले विपक्ष के नेता ने उठाए हैं, माननीय श्री सोमनाथ चटर्जी ने उठाए हैं और जिसे हममें से अनेक सदस्यों ने उठाना चाहा है, वह मूल रूप से नीति संबंधी मामलों से संबंधित है, मूल मामले केवल हमारे देश के उस अभागे भाग का भला करने से ही संबंधित नहीं है, अपितु उनसे इस देश का भविष्य भी गंभीर रूप से प्रभावित होता है। अत: मेरे विचार से यदि प्रधान मंत्री अनुपस्थित रहते हैं तो यह इस सभा के लिए बहुत ही अनुचित होगा। हमारे गृहमंत्री के लिए मेरे मन में अत्यधिक व्यक्तिगत सम्मान है। वह ऐसा करने में सक्षम थे, किन्तु अब उनके पास इसका प्रभार नहीं है। विशिष्ट रूप से उन्हें इस प्रभार से वंचित कर दिया गया है। महोदय, हमें इस मामले से खिलवाड़ नहीं करना चाहिए।

सभापति महोदय : वास्तव में चर्चा का विषय तो 1995-96 के लिए जम्मू और कश्मीर के संबंध में अनुदानों की माँगों पर चर्चा करने से संबंधित है और इस चर्चा का उत्तर देने के लिए वित्तमंत्री सही व्यक्ति हैं। वित्तमंत्री सभा में उपस्थित हैं, और वही वह व्यक्ति हैं जो इस चर्चा का उत्तर देंगे। वस्तुत: इसका अन्य पहलू भी है। विपक्ष के माननीय नेता ने यह कहा था कि गृहमंत्री को भी उपस्थित रहना चाहिए। इसके बावजूद कि माननीय गृहमंत्री राज्यसभा में चर्चा में अत्यधिक व्यस्त थे, उन्होंने स्वयं को वहाँ से मुक्त कराया और यहाँ आए तथा सदस्यों की भावनाओं का सम्मान किया। वित्तमंत्री और गृहमंत्री दोनों ही सभा में उपस्थित हैं।

श्री अर्जुनसिंह : यह अत्यधिक अनुचित है।

श्री सोमनाथ चटर्जी : निश्चित रूप से हमें प्रसन्नता होगी यदि गृहमंत्री श्री चव्हाण मामले में हस्तक्षेप करें। मुझे विश्वास है कि अपनी इच्छा के विपरीत उन्होंने अपना कश्मीर संबंधी मामलों के मंत्री का पद खो दिया है। अब हस्तक्षेप का प्रश्न और उत्तर देने की बात दो पृथक् चीज हैं। सरकार के बहुत ही वरिष्ठ और आदरणीय सदस्य होने के नाते वह हस्तक्षेप कर सकते हैं।

श्री चन्द्रजीत यादव : मुझे एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण तथ्य की सूचना गृहमंत्री तथा अध्यक्ष पीठ को भी देनी

है। जब अध्यक्ष ने सभी नेताओं की बैठक बुलाई थी तब हमारी माँग थी कि जम्मू और कश्मीर में व्याप्त स्थिति के बारे में पृथक् रूप से चर्चा की जानी चाहिए। यह एक महत्त्वपूर्ण मामला है और इस पर चर्चा करने की आवश्यकता है। तब सरकार की तरफ से यह सुझाव दिया गया था कि बजट और जम्मू और कश्मीर में राजनैतिक स्थिति पर चर्चा दोनों को जोड़ दिया जाए। यह भी निर्णय लिया गया था कि जब चर्चा हो तब गृहमंत्री और प्रभारी मंत्री भी उपस्थित रहेंगे? मैं हमारे गृहमंत्री का बहुत सम्मान करता हूँ। हमें अवश्य ही उनका कृतज्ञ होना चाहिए क्योंकि विगत बैठक में वह भी उपस्थित थे और उन्होंने कहा था कि "मैं चर्चा में उपस्थित रहूँगा।" वह यहाँ उपस्थित हैं। श्री अर्जुनसिंह जी ने एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण मुद्दा रखा है कि प्रधानमंत्री जम्मू और कश्मीर के प्रभारी मंत्री हैं और जो चर्चा हो रही है उसका संबंध नीति से है। यह कहना ठीक नहीं है कि मूल बात बजट पर चर्चा की है। ऐसा नहीं है। यह निर्णय किया गया था कि बजट और जम्मू तथा कश्मीर में राजनैतिक स्थिति की चर्चा को एक साथ जोड़ा जाएगा और इसीलिए यह कहा गया था कि "हम बजट पारित कर देंगे।" चर्चा बजट पर नहीं होनी है।

श्री एस.बी. चव्हाण : सभापति महोदय, चूँकि श्री चन्द्रजीत यादव ने कार्य मंत्रणा समिति का उल्लेख किया है तो मुझे विश्वास है कि वहाँ जो कुछ भी हुआ था वह सब उन्हें याद आ गया होगा और वहाँ ऐसी कोई माँग नहीं थी कि प्रधान मंत्री को सदन में रहना होगा। दूसरी ओर, वास्तव में कुछ सदस्यों ने मुझे यहाँ उपस्थित रहने को कहा था। यथा संभव मैं स्थिति स्पष्ट करने की चेष्टा करूँगा और यदि आप संतुष्ट नहीं होंगे तब मैं श्री चतुर्वेदी को आने के लिए तथा आपको स्पष्ट करने के लिए कह सकता हूँ।

श्री अर्जुनसिंह : मैं केवल माननीय गृहमंत्री से अनुरोध कर रहा हूँ। जैसा कि मैं कह चुका हूँ हम सबका उनके प्रति अत्यधिक सम्मान है। वह ऐसा करने में सक्षम हैं। किन्तु दुर्भाग्यवश उन्हें उस उत्तरदायित्व से वंचित कर दिया गया है और वह भी सार्वजनिक रूप से। हम उन्हें कैसे हतोत्साहित कर सकते हैं? ऐसा करना उचित नहीं है।

सभापति महोदय : दो बातें उठाई गई हैं। एक मामला स्वामित्व के अधिकार से संबंधित है, जिसका उत्तर माननीय मंत्री दे चुके हैं। कार्य मंत्रणा समिति में चर्चा बहुत स्पष्ट थी। श्री जसवंतसिंहजी को शायद याद होगा कि कार्य मंत्रणा समिति में उन्होंने आपत्ति की थी और उन्होंने चाहा था कि गृहमंत्री उपस्थित रहें। उस चर्चा में आपने यह नहीं कहा था कि आप चाहते हैं कि चर्चा में प्रधान मंत्री उपस्थित रहें। आप चाहते थे कि गृहमंत्री उपस्थित रहें और गृहमंत्री सभा में आएँ हैं। हम अपने निर्णय को बदल तो नहीं सकते। नियमानुसार सभा जो चाहती है, उसका उत्तर देने के लिए वित्तमंत्री हैं।

दूसरी बात यह है कि श्री अर्जुनसिंह अध्यक्ष पीठ से इस मामले में व्यवस्था चाहते थे। मैं व्यवस्था देना चाहता हूँ। आवश्यकतानुसार, इसका उत्तर देने के लिए वित्तमंत्री हैं। कार्य मंत्रणा समिति में जो चर्चा हुई थी, उसे दृष्टि में रखते हुए तथा सभा में भी जो चर्चा हुई है, उसे ध्यान में रखते हुए, गृहमंत्री यहाँ हैं। और किसी का भी ऐसा कोई प्रश्न नहीं है जिससे वह परेशान हो जाय। पूरी सरकार का, पूर्ण प्राधिकार के साथ, प्रतिनिधित्व करने के लिए गृहमंत्री यहाँ हैं। इसलिए प्रधानमंत्री की अनुपस्थिति को अनादर नहीं माना जा सकता है। प्रधानमंत्री की अनुपस्थिति के बारे में श्री अर्जुनसिंह ने प्रश्न उठाया था। मैं कहता हूँ कि इसे अवमानना नहीं कहा जा सकता है। हम लोग चर्चा जारी रखें।

(अध्यक्ष पीठासीन हुए)

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद। श्री अर्जुनसिंहजी, क्या आप बोलना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे इस अत्यधिक महत्त्वपूर्ण

विषय पर कुछ कहने का अवसर प्रदान किया जिसका संबंध न केवल इस देश के एक भाग से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है बल्कि मेरे विचार से इसका संबंध इस राष्ट्र की स्वाभाविक विशिष्टता और इस देश की भावी राजनैतिक स्थिति से पूरी तरह सम्बद्ध है।

कश्मीर, जैसा कि सभी को पता है, एक ऐसी कड़ी परीक्षा का स्थान रहा है जहाँ स्वतन्त्रता के बाद भारतीय राष्ट्र के वास्तविक स्वरूप को बाध्यकारी बनाया गया। कश्मीर ऐसा स्थान है जहाँ दो राष्ट्र के सिद्धांत की, जिससे दुर्भाग्यवश देश का विभाजन हुआ था, के हानिकारक सिद्धांत को दफ़न किया गया था। देश का यह भाग अनेक बार उतार-चढ़ाव की स्थिति से गुजरा है। आज जो भी हो रहा है उससे वे सभी विवश हैं, किन्तु दु:खी हैं जो यह चाहते हैं कि भारत एक महान् देश बने, भारत एक लोकतांत्रिक और धर्म-निरपेक्ष देश बने और इससे भी बढ़कर जो यह चाहते हैं कि भारत लोकतांत्रिक प्रणाली का एक आदर्श बने, जिसे हमने, भारत की जनता ने अपनाया और अपने लिए एक संविधान की रचना की। कश्मीर में आज जो अनेक प्रश्न उठ खड़े हुए हैं, वह न केवल सरकार बल्कि इस देश के नागरिकों के लिए भी गंभीर चिंता का विषय बने हुए हैं। देश के एक भाग में जो घटना घटती है उसकी प्रतिक्रिया सामान्य रूप से दूसरे भाग में जो होती है। वैसी स्थिति भारत या भारत के अन्य भागों और कश्मीर के बीच विद्यमान नहीं है। ऐसी स्थिति होने का अत्यधिक दु:खद कारण अनुकूल अवसर का न होना, जानबूझकर की गई गलतियाँ और यहाँ तक कि सुगमता से टाली जा सकने वाली कभी-कभी की गई गलत परिगणना है।

मैं दो या तीन मुद्दे लेना चाहूँगा। किन्तु उन्हें कहने से पूर्व मैं यहाँ उपस्थित सभी के साथ नॉर्वे के उस पर्यटक की क्रूर हत्या पर अपनी गहरी सम्वेदना व्यक्त करता हूँ जो भारत भ्रमण पर आया था और कश्मीर की उस भूमि को देखने गया था जो अपने सौन्दर्य और आतिथ्य सत्कार के लिये सुप्रसिद्ध है। हम लोग उन अन्य बंधकों के लिए उसी प्रकार दु:खी और चिंतित हैं जिन्हें अभी तक छोड़ा नहीं गया है।

'कश्मीर से संबंधित नीति' का प्रश्न उठाया गया था। इसके बारे में अन्य सदस्यों के समान मैं भी अनभिज्ञ हूँ। श्री यादव ने समानुगत नीति के बारे में कहा है। केवल समानुगत और सुविचारित नीति ही अभिव्यक्त की जा सकती है। अन्यथा आप यदा-कदा केवल यही बातें ही कर सकते हैं; जो किसी दिन कुछ घटित हो जाएँ, जिसके बारे में कुछ टिप्पणियाँ की जाएँ, कुछ प्रतिक्रियाएँ हों और तदनन्तर, समय के अन्तराल में हमारे दावे भी धूमिल हो जाएँगे। दुर्भाग्यवश हाल ही में जो हो रहा है वही होता रहा है। यह कुछ ऐसी घटना हुई है जिससे हम दु:खी हो गए हैं। किन्तु फिर भी मैं यह महसूस करता हूँ कि इस उदासी से हमें निराश नहीं होना चाहिए। कश्मीर की छवि जो धूमिल नहीं हुई है, उसमें भी आज कुछ-कुछ आशा की उज्ज्वल किरण झलक रही है। चूँकि यह पहलू उजागर नहीं है, इसलिए हम इस छवि को देख नहीं पा रहे हैं।

कश्मीर और इस देश के शेष भागों के बीच संचार की जो कड़ी है, मैं उसके बारे में बात कर रहा हूँ। कश्मीर में उन सभी उपभोग्य वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता जिनका वहाँ उपयोग होता है। वे कहाँ से आती हैं? वे न तो पाकिस्तान से आती है और न विदेशों से आयात की जाती हैं। वे भारत से ही आती है। जिस माध्यम से सभी वस्तुएँ देश के अन्य भागों में पहुँच रही हैं, उसी माध्यम से वे कश्मीर के लोगों के पास भी पहुँच रही हैं। मैं चाहूँगा कि इसी माध्यम को और अधिक सुदृढ़ और पूर्ण किया जाए और यदि उनके पास किसी चीज की कमी है तो उसे बुद्धिमत्ता से निश्चित रूप से दूर किया जाए।

दूसरा मुद्दा ढाँचे के बारे में है— इस ढाँचे के अन्तर्गत क्या अधिक स्वायत्तता देने या इसी प्रकार की कोई बात है, वह विचारणीय है।

जहाँ तक हमारे संविधान के ढाँचे के अन्तर्गत इसका संबंध है, मेरे विचार से हम इस प्रकार की चर्चा करने के वास्तविक अधिकारी नहीं है। इस प्रकार की चर्चा और निर्णय जम्मू और कश्मीर के लोगों की तरफ से लिया जाना चाहिए। हम उनके बारे में न तो सोच सकते हैं और न कोई सुझाव दे सकते हैं। वह वार्ता, जो लोकतंत्र के किसी कार्यकरण की बहुत ही प्रमुख भूमिका है, जो भी हो- मै इसे असाध्य तो नहीं किन्तु गंभीरतापूर्वक अशांत कहूँगा वह वार्ता अवश्य ही आरम्भ की जानी चाहिए।

मैं विशेषज्ञ होने का दावा नहीं करता हूँ। किन्तु एक सामान्य व्यक्ति के रूप में मैं भी यही महसूस करता हूँ कि कश्मीर के संबंध में हमारे देशवासियों के मन में यह धारणा व्याप्त है कि दिल्ली में हमारे प्राधिकारी एवं प्रतिनिधि केवल बंदूक के माध्यम से वार्ता कर सकते हैं। बंदूक की आवश्यकता किसी देश के मौलिक हित की रक्षा लिए होती है। बंदूकों की आवश्यकता तब होती है जब देश की स्वतंत्रता और अखंडता को खतरा हो। किन्तु बंदूकें किसी देश की जनता के बीच संचार का माध्यम कदापि नहीं बन सकती।

यदि ऐसा होता है तो ऐसी अनेक दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएँ घटेंगी जो दशकों तक मस्तिष्क में कौधती रहेंगी आज जो कोई जम्मू और कश्मीर जाता है और यदि वह अपने नेत्र और कर्ण खुले रखता है, तो उनके मन में यही छाप पड़ेगी कि प्रशासन संचालन करने वाले उत्तरदाई व्यक्तियों और जनता के बीच संचार का पूर्णत: अभाव है। ऐसा कैसे हुआ? मुझे विश्वास है कि भारत का कोई भी प्राधिकारी मेरे इस विचार से असहमत नहीं होगा, जो मैंने अभी-अभी अभिव्यक्त किया है।

मेजर जनरल (रिटायर्ड) भुवन चन्द्र खन्डूरी (गढ़वाल) : महोदय, समय बढ़ाया जाना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : मेरे विचार से, हम सब इस बात पर सहमत हुए थे कि हम यहाँ बैठेंगे और इस कार्य को पूरा करेंगे।

श्री सोमनाथ चटर्जी : आज ही?

अध्यक्ष महोदय : अन्यथा, सारा कार्यक्रम अस्त-व्यस्त हो जाएगा।

श्री अर्जुनसिंह : किन्तु तथ्य यह है कि वहाँ ऐसा हो रहा है। मैं संक्षेप में यह जानना चाहूँगा कि जम्मू और कश्मीर में इस चुप्पी को तोड़ने के लिए क्या कार्रवाई की गई है। इस स्थिति को पैदा करने के लिए उत्तरदाई चाहे जो भी व्यक्ति हो, चाहे वह राज्यपाल हो अथवा सचिव या कोई अन्य व्यक्ति, क्या उसे उत्तरदाई ठहराया गया है। और यदि कोई प्रश्न नहीं पूछा गया है और कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है, तो हम कहाँ जाएँ और क्या करें?

मैं राज्यपाल के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता हूँ। पिछली बार भी मैंने कहा था कि मैं उन्हें जानता हूँ कि वह एक सत्यनिष्ठ व्यक्ति एक अच्छे सिपाही रहे हैं। किन्तु स्वाभाविक रूप से जब किसी को एक नागरिक के रूप में और एक सिपाही होने के नाते उपद्रव ग्रस्त क्षेत्र में सेना की कमान संभालनी पड़ती है तो ऐसी स्थिति में चाहे भूतपूर्व मुख्य सेना कमॉन्डर ही क्यों न हो, उसके बारे में विरोधाभास तो होना स्वाभाविक ही है। वे परम्परावादी हैं। क्या हम उनकी ओर ध्यान देने में असमर्थ हैं? क्या हम उन्हें पहचानने में असमर्थ हैं? इस मौलिक विरोधाभास के कारण ही प्रशासन में अधिक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। बिना किसी पूर्वाग्रह के किसी व्यक्ति के प्रति बिना किसी द्वेष के जितनी जल्दी हम उस राज्य के प्रशासन की ओर ध्यान देंगे, उतनी ही जल्दी स्थिति में सुधार होगा।

मेरे अन्य मित्रों ने अन्य मुद्दे भी उठाए हैं किन्तु मैं इस बात पर जोर देना चाहूँगा कि जम्मू और कश्मीर में प्रशासन की सत्यनिष्ठा नष्ट हुई है उसके भी गम्भीर और गहन कारण हैं। आप चाहे जहाँ जा सकते हैं। सड़कों पर करोड़ों रुपये व्यय किए जा चुके हैं किन्तु वहाँ सड़क है ही नहीं। इस सभा में हमारे माननीय राज्यमंत्री ने कुछ धन

माँगा है जिसके लिए हर एक ने यही कहा है कि बिना किसी आनाकानी के वह दे दिया जाएगा। क्या कोई भी व्यक्ति यह बता सकता है कि उस धनराशि में से अनुमानत: कितनी राशि उग्रवादियों और प्रशासन में भ्रष्ट अधिकारियों की जेब में जाएगी? मै अनुमान लगाने का जोखिम नहीं उठाना चाहता हूँ क्योंकि हमारे आपके अनुमान में जमीन आसमान का अंतर होगा। किसी भी प्रशासन की ये मूल बातें हैं और यदि ऐसे उपद्रव ग्रस्त क्षेत्र में इन मौलिक बातों की उपेक्षा की जाती है और उन्हे ध्यान में नहीं रखा जाता है, जहाँ अन्य देश की पूरी पैठ है और वह उस क्षेत्र के सामान्य कार्यकलापों को अव्यवस्थित करने का हर संभव प्रयास कर रहा है, तो इससे देश को खतरा ही होगा।

अंत में, मैं नीति के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ जो मुझे आशा है कि कभी-कभी बहुत ही गंभीर विमर्श और चिंतन अथवा आकस्मिक रूप से नीति बनती है। किन्तु उसके संबंध में कुछ ऐसी बातें हैं जिन पर ध्यान देना आवश्यक है। जैसा कि श्री वाजपेयी ने अपने भाषण में कहा है कि जम्मू और कश्मीर क्षेत्र में जम्मू के लोगों और घाटी के लोगों के बीच दरार बढ़ रही है जिसका बढ़ते रहना हितकर नहीं है। अभी ऐसी स्थिति पैदा नहीं हुई है कि उसे सुधारा नहीं जा सकता है किन्तु यदि उसकी उपेक्षा की जाती रही तो मेरे विचार से यह समस्या अत्यधिक गंभीर हो जाएगी और इससे जम्मू और कश्मीर की समस्या कई गुणा बिगड़ जाएगी। इसका प्रयोग लद्दाख में स्वायत्तता प्राप्त एकक के साथ हो चुका है। संविधान के अन्तर्गत राज्य में एक सुदृढ़ एकक के रूप में समानता वित्तीय प्रशासन और विकास शक्तियों के साथ हर क्षेत्र के लिए स्वायत्त परिषदों की प्रतिष्ठापना की वांछनीयता और अवांछनीयता के बारे में संभवत: विचार किया जा सकता है, अन्ततोगत्वा उसका परिणाम जो भी हो। मैं संविधान के संबंध में नहीं कहना चाहता हूँ किन्तु यह एक विचार है जिसकी चर्चा अनेक लोगों ने की है। इस पहलू पर यदि सभा चाहे तो विचार कर सकती है और सरकार प्रयास कर सकती है।

हाल ही में, इस देश में दूसरे शक्तिशाली मित्र देशों और उनके प्रतिनिधियों से उपचारात्मक सुझाव प्राप्त हुए हैं। हमने विश्व के राष्ट्रों के साथ प्रगाढ़ और मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए हैं। किन्तु हमें ऐसी योजना बनानी चाहिए जिससे वे उपचार निर्देश बन जाएँ। यदि यह दृष्टिकोण अपनाया गया तो मेरे विचार से इससे हमारी प्रतिष्ठा नहीं घटेगी अपितु अन्ततोगत्वा हमारे लिए बहुत पहले बंद हो चुके वे मार्ग खुल जाएँगे जो इस देश के महान नेताओं ने दृढ़तापूर्वक एवं दूरदर्शिता के साथ निर्धारित किए थे। मुझे आशा है कि आज की इस चर्चा से हम मुद्दों पर, जो यहाँ उठाए गए हैं, गंभीरतापूर्वक विचार कर सकेंगे और एक ऐसी कार्यप्रणाली और एक ऐसी नीति निर्धारित कर सकेंगे जो एक समानुगत नीति का पूर्ण हिस्सा होगा। हम सभी को आशा है कि भारत का वह अशांत क्षेत्र देश के लोकतांत्रिक ढाँचे में सम्मिलित हो जाएगा, स्पष्ट रूप से उन परिस्थितियों के अन्तर्गत जो लोकतंत्र को बहाल करने के पक्ष में हैं, न कि ऐसे लोकतंत्र जिस पर संगीन की परछाई है।

22 अगस्त 1995 की संसद की यह रिपोर्ट दर्शाती है कि किसी प्रकार श्री अर्जुनसिंह पक्ष और विपक्ष की नहीं समूचे देश की कश्मीर सम्बन्धी भावना का सही प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से सदन के सामने रखते हैं। अपनी स्पष्टोक्ति के चलते वे कहीं-कहीं घोर प्रतिपक्षी जैसे नज़र आते हैं लेकिन वे अपने नीतिगत विचारों को कभी भी अतार्किक नहीं होने देते। एक सांसद का सही धर्म निभाने की जो मिसाल वे हमारे सामने पेश करते है वह वाक़ई सराहनीय है। देश की सुरक्षा, देश के नागरिकों की इच्छाओं आकांक्षाओं और देश के व्यापक हितों के परिप्रेक्ष्य में जितना अधिक से अधिक चिंतन और प्रयास आवश्यक है, श्री अर्जुनसिंह वह भली प्रकार करते है। वे कड़ी और कड़वी बात कहने से भी गुरेज़ नहीं करते और अंतरात्मा की आवाज़ को दबाने का प्रयास तो क़तई नहीं करते। संसद में पूर्ण प्रखरता से अपनी बात कहने का शालीन, शिष्ट और भाषाई सौष्ठव भरा ढंग कोई उनसे

सीखे। उनके विचारों की दृढ़ता और स्पष्टवादिता उनकी परिपक्वता की ही परिचायक हैं। सब जानते हैं कि उनके पास सुदीर्घ संसदीय, प्रशासनिक और अकादमिक अनुभव है।

ऐसा नहीं कि श्री अर्जुनसिंह के आलोचक नहीं हैं। उनके एक नहीं अनेक आलोचक हैं। अनेक कारणों से आलोचक हैं। लेकिन उन आलोचकों में से बहुत सारे ऐसे हैं जिन्हें नेता पद आसमान से टपकी सौग़ात की तरह मिला है। जबकि सभी को यह मानना पड़ता है कि श्री अर्जुनसिंह की पारिवारिक पृष्ठभूमि जो भी जैसी भी रही हो, स्वयं उन्होंने नेतृत्व को अपनी निजी लगन, निष्ठा और समर्पण के बल पर जन-सेवा, समाज सेवा के माध्यम से अर्जित किया है। वे हवाई नेता नहीं एक वास्तविक और ज़मीन से जुड़े नेता हैं। आम आदमी उन्हें अपने ज़्यादा करीब पाता है और अंतिम पंक्ति में खड़ा बेघर बेसहारा दुःखी जन तो उन्हें और भी करीब पाता है। वे जन नेता हैं। जनता के नेता हैं और इसी लिये कभी भी जनता के बीच पहुँचने का मौका वे छोड़ते नहीं। वे बिना डरे, झिझकें और अवसर खोये जनता के बीच पहुँच कर अपनी बात लोगों के सामने रखते रहे हैं। जम्मू और कश्मीर के विभिन्न स्थानों में उन्होंने आम सभाओं में शिरकत की और अपनी दलीलें सबके सामने पेश की। जम्मू की एक सभा में तो उन्होंने साफ़ कहा कि जनता के बीच जाने का साहस वही करता जो बिना किसी स्वार्थ के जनता की फिक्र करता है। जनता के बीच जाने से दो प्रकार के लोग डरते हैं। एक तो वे जिन्होंने जनता के साथ बेईमानी या धोखा घड़ी की हो और दूसरे वे जो केवल अपना स्वार्थ लेकर ही जनता के बीच गए हों। उन्हें जब जब मौका मिला वे जम्मू-कश्मीर की जनता के बीच गए और उन्होंने अपनी तर्कसंगत बातों से जनता को सही दिशा में मोड़ने की भरसक कोशिशें कीं। 25 जनवरी 1996 को उन्होंने जम्मू-कश्मीर के ऊधमपुर में आमसभा को सम्बोधित किया। अपने भाषण में उन्होंने जम्मू-कश्मीर में फैली अशांति की वज़ह बिगड़ी हुई कानून-व्यवस्था की स्थिति को बताया। विकास के ठप हो जाने की ओर इंगित किया। बेघर हुए कश्मीरी ब्राह्मणों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। उक्त भाषण के प्रमुख अंश कुछ इस प्रकार है —

श्री अर्जुनसिंह : कुछ और कहने के पहले मैं आप सब आदरणीय बहिनों और भाइयों को इस बात के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ कि इस मौसम में और इतने समय तक आपने यहाँ बैठ कर इंतज़ार किया। इससे केवल हमारा हौसला ही नहीं, सारे मुल्क के उन लोगों की हौसला अफ़जाई आपने की है, जो भारत की एकता की राह में विश्वास करते हैं। हमारे सम्मानित भाई जम्मू कश्मीर गुरुचरणसिंह चरखजी, वर्किंग प्रेसीडेण्ट हैं, इंदिरा काँग्रेस के ऊधमपुर से यहाँ पर आए हुए सम्मानित बहनों और भाइयों, जम्मू-काश्मीर की सर जमीन पर जिन्होंने अनेक थपेड़ों के बावजूद आपको बचाए रखा हुए हैं। हम उस जमीन को सबसे पहले सलाम करते हैं।

जम्मू-काश्मीर, भारत का वह अंग है, जिसने हिन्दुस्तान के प्राचीन इतिहास में एक ऐसे नाज़ुक मोड़ पर जब नया हिन्दुस्तान बन रहा था, एक ऐसा फैसला देकर जिससे हिन्दुस्तान के उन साथियों को मजबूती मिली, जो साम्प्रदायिकता के विरुद्ध लड़ रहे थे, जो देश के खतरे से जूझने के लिए सब कुछ न्योछावर करने को तैयार थे।

हिन्दुस्तान के निर्माण का वह सिलसिला शुरू हुआ, जिससे भारत के अन्दर रहने वाले हर धर्म, हर जाति, हर प्रकार के वेष-भूषा पहनने वाले और भाषा बोलने वाले लोगों को बराबर का हक देकर आगे बढ़ने की कोशिश शुरू हुई। आज उसी सिलसिले में हमें नए-नए पड़ावों पर पहुँचना है। लेकिन अपनी निगाहें और अपना जेहन साफ रखना है कि हम अपनी पहचान अपने अलग-अलग मज़हब, अपनी अलग-अलग भाषा, अलग-अलग वेश-भूषा के साथ तो जुड़ेंगे, लेकिन, हमारी असली पहचान एक हिन्दुस्तानी की होगी। वही हिन्दुस्तानी जो सारी दुनिया में सर ऊँचा करके चलता है।

इस समय एक ऐसे ऐतिहासिक दौर से जम्मू-कश्मीर गुज़र रहा है, जब एक अशांति लोगों के मन में व्यवस्था

CAREER COLLEGE H.B.H.L. BHOPAL ACC.No. Book No. Date

के खिलाफ़, उसके खिलाफ़ एक जज़बा है। हमें इस बात को कभी भूलना नहीं चाहिए कि हिन्दुस्तान अगर एक प्रजातांत्रिक देश है, तो हमें इस देश के हर हिस्से में, चाहे जम्मू-काश्मीर हो, पंजाब हो, बंगाल हो, गुजरात हो, तमिलनाडू हो, कोई भी हो, वहाँ के लोगों के हक और हुकूक की रक्षा करते हुए, उन्हें पूरी तरह से हिस्सेदार बनाते हुए प्रगति में, आगे बढ़ने की कोशिश में हम उसी रास्ते से हिन्दुस्तान को एक रख सकते हैं।

यह हमें कहने में जरा भी हिचक नहीं है कि कश्मीर में इस समय, पिछले तीन-चार सालों में जो हुआ है, उसकी वजह से कई लोगों के मन में ऐसे सवाल उठ खड़े हुए कि क्या हम देश को एक बना कर रख सकेंगे? यह सवाल हमारे सामने है। यह कोई अच्छी बात नहीं है, लेकिन सवाल खड़े हों, तो उनका जवाब किस प्रकार से दिया जाए, वो भी इतना कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसका जवाब केवल संगीन नहीं है, बंदूक नहीं है। इसका जवाब लोगों के ज़ज़बातों से खिलवाड़ नहीं है। उनको समझने की जरूरत है उनकी बातों को देख कर, उनके साथ मिल कर काम करने की जरूरत है। नौजवानों के बीच में जो शंकाएँ हैं, उनको दूर करने की जरूरत है और जब ये परस्पर विश्वास की कड़ी मजबूत होगी, तब हिन्दुस्तान मजबूत होगा।

आज चुनाव की बात भी उसी लहजे में हो रही है। ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो कश्मीर के अंदर चुनाव न चाहता हो? आखिर हिन्दुस्तान एक प्रजातांत्रिक देश है। सारे हिन्दुस्तान में अगर वोट के आधार पर सियासत चलती है, सरकार चलती है, तो जम्मू-काश्मीर में भी चलना चाहिए। लेकिन वह होने के लिए संगीन के साए की जरूरत नहीं है। उसके होने के लिए लोगों के मन में विश्वास पैदा करने की जरूरत है।

मैं जब चरार-ए-शरीफ़ गया था पिछले वर्ष, इसी वर्ष शुरू में, तो जिस सड़क से हम लोग श्रीनगर से वहाँ तक गए, उस सड़क पर दो-चार पत्थर इधर उधर पड़े थे तो उससे पता चलता था कि यह सड़क है। लोगों से पूछा तो कहा कि इस सड़क पर कम से कम बीस-बीस लाख रुपये तीन दफ़े खर्च हो चुके हैं, लेकिन सड़क बनी नहीं। यही हाल करीब-करीब हर जगह है। भ्रष्टाचार किस सीमा तक जम्मू-कश्मीर में है, इसकी कल्पना बाहर के लोगों को नहीं हैं। हमारे कश्मीरी पंडित भाई हालात बिगड़ने की वजह से जम्मू के पास कैम्पों में रहते हैं। हम उनसे मिलने गए, जो नजारा वहाँ देखा, तो ऐसा लगता है कि एक वहिशियानापन है, उन लोगों में, जिनके ऊपर यह काम को करने की जिम्मेदारी है। कोई इंसान ऐसे वातावरण में नहीं रह सकता। माताएँ और बहनें नहीं रह सकतीं।

आज आप सब लोगों के बीच में उसी के लिए हम अपनी दरख्वास्त करने आए हैं। आज कोई चुनाव नहीं हो रहा है। आज हम आपसे वोट नहीं माँगना चाहते। हम आपका विश्वास किसी व्यक्ति में नहीं चाहते। आपका विश्वास भारतमाता में हो, यह हम आपसे प्रार्थना करने आए हैं।

मुझे पूरी उम्मीद है कि आप मेरी इस बात पर गौर करेंगे और मैं आपको इतमीनान दिलाना चाहता हूँ कि चाहे कोई भी चुनौती हो, कोई भी कठिनाई हो, किसी भी प्रकार की परेशानी हो, जो हमारा फ़र्ज है, इंदिरा काँग्रेस का फ़र्ज है, हमारे नेता श्री नारायणदत्त तिवारी जिसके अध्यक्ष हैं, उस पार्टी का फर्ज है। हम उस फर्ज को अदा करेंगे। हर चुनौती का सामना करते हुए भारत के लिए, उसकी प्रगति के लिए हर समय जम्मू-कश्मीर अपनी अस्मिता की रक्षा करते हुए आगे बढ़ते रहे।

इस प्रदेश के हर भाग से जम्मू, श्रीनगर और लेह ये सब एक हैं। इस सबकी तरक़्क़ी एक है। इन बात को हमें समझने की जरूरत है। सबको हक मिलना चाहिए और सबको आगे बढ़ना चाहिए। वही हमारा रास्ता है। उसी रास्ते पर चलने के साथ-साथ हम आप सब के कंधे से कंधा मिला कर चलना चाहते हैं।

इसी विश्वास के साथ मैं आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। जय हिन्द।

इसी प्रकार 24 मई 1996 को जम्मू की आमसभा में दिया गया श्री अर्जुनसिंह का भाषण भी एक यादगार भाषण है जिसमें उन्होंने जम्मू-कश्मीर के चल रहे खून खराबे से लोगों को हो रही परेशानी को रेखांकित किया और हमेशा की तरह काश्मीर को भारत का अविभाज्य अंग घोषित करते हुए कहा कि वे वहाँ की तरक्की के हिमायती तथा आतंकवाद के विरोधी हैं। जम्मू की उक्त सभा के भाषण के प्रमुख अंश देखें -

श्री अर्जुनसिंह : श्री हारून, आदरणीय माताओं, बहिनों और भाइयों। अभी हमारे साथी ने आप से बहुत-सी बातें कहीं। मैं उन सब बातों को दोहराना नहीं चाहता हूँ। मैं सीधे दो-चार बातें आप के सामने रख कर फैसला आप पर छोड़ना चाहता हूँ।

जम्मू-कश्मीर की बदहाली का बयान लाल सिंह साहब ने किया, जिस की वजह से पिछले तीन-चार सालों में भारत के एक निहायत खूबसूरत प्रदेश किस प्रकार से खून खराबे के जाल में फँस गया? किस प्रकार से यहाँ की तरक्की रुक गई? कैसे यहाँ पर लोगों की समस्याएँ अनसुनी हो गई? और धीरे-धीरे यहाँ के आम लोगों का भरोसा यहाँ की हुकूमत से उठ गया, और दूसरी तरफ हुकूमत भी मनमानी ढंग से काम करने लगी। और उस का फायदा पाकिस्तान ने उठा कर एक ऐसा माहौल पैदा कर दिया कि हम सब को यह चिन्ता हो गई कि जम्मू-कश्मीर में क्या हो रहा है? बड़े-बड़े लोग, नेता, हमारे प्रधानमंत्री से लेकर छोटे नेता तक दिल्ली से आह्वान किया करते हैं और कहते रहे कि कश्मीर हिन्दुस्तान का अविभाजित अंग है, उस को कोई हम से अलग नहीं कर सकता। कोई तोड़ नहीं सकता। हम हर दम एक रहेंगे। यह किसी ने मुड़ कर नहीं पूछा कि आखिर आप को यह कहने की नौबत क्यों आ गई? क्यों अपने मुल्क का एक हिस्सा इस हालात में पहुँच गया? जहाँ इस प्रकार का खतरा पैदा हो गया और सबको लम्बे-चौड़े बयान देने की मजबूरी आ गई।

अगर जरा-सा संजीदगी से उस पर ध्यान दिया जाता तो न जाने कब की यह समस्या हल हो गई होती। एक तरफ लोगों के मन में शंकाओं का पैदा होना। शंकाओं की वजह से कुछ ऐसी हरकतें होना जिन से अमन-चैन खत्म हुआ और फिर अमन चैन को बहाल करने के लिए ऐसे उपाय करने की कोशिश करना कि अमन-चैन केवल संगीन के साए के नीचे ही कायम हो सकता हो, और किसी तरीके से नहीं।

किसी भी प्रजातांत्रिक देश में, मुल्क में बंदूक की गोली की नोक पर या संगीन के साए में देश नहीं चल सकता है। और यह बहुत अच्छी तरह से यहाँ साबित हुआ। कश्मीर भारत का अविभाजित अंग है और रहेगा। लेकिन इस के लिए समाज के लोगों को, नेताओं को अपने आचरण से यह साबित करना पड़ेगा कि सचमुच में वे इन लोगों को अपना मानते हैं। अगर कहीं कोई भेदभाव है। अगर दो तरह के न्याय देने की बात है तो कितने दिन तक लोग मानेंगे कि हम सब एक हैं?

इसलिए यह चुनाव जो अब हो रहा है यह एक मौका है, मुल्क के लिए भी और जम्मू-कश्मीर में रहने वाले लोगों के लिए भी कि जो हमारे बीच के संबंध हैं। विश्वास की जो कड़ियाँ हैं। हम उन कड़ियों को मजबूत बना सकें। जो हमारी गलतियाँ हैं, इस चुनाव का केवल मेरी नज़र में यही महत्त्व है। यद्यपि कश्मीर में कुल छः लोकसभा की सीटें हैं। सारे हिन्दुस्तान के चुनाव हो चुके हैं। नतीजे आ गए हैं। एक नया राजनीतिक चित्र उभर कर देश के सामने आया है। किसी पार्टी को बहुमत नहीं है। यहाँ की जो छः सीटें हैं, यदि छः की छः किसी एक पार्टी को मिल भी जाएँ, तो भी दिल्ली में किसी एक पार्टी का बहुमत नहीं बनने वाला है।

जब मैंने गवर्नर साहब से पता करवाया तो उन का एक बहुत सीधा जवाब मुझे मिला कि आप और कहीं भी जाइए, पर सीमा के इलाकों में आप कभी नहीं जाइए। मैंने पूछा-भाई, ऐसी क्या वज़ह है वो, जहाँ गवर्नर कहते

है कि कहीं भी जाइए, वहाँ मत जाइए, वहाँ क्या हो रहा है? उन्होंने कहा कि क्या हो रहा है? यह तो बिना गए पता चलेगा ही नहीं। श्रीनगर जम्मू में बैठ कर क्या राय बनेगी? आप को चलना हो तो चलिए, न चलना होतो नहीं चलिए। और ठीक ही कहा, और क्या जवाब देते। मैंने फैसला किया कि मैं चलूँगा।

जब मै जम्मू आया, यहाँ गवर्नर साहब शायद कोई दूसरे थे शायद ये राव साहब होते तो हम को यह हैलीकॉप्टर ही नहीं देते। लेकिन उस समय गवर्नर थे, सक्सेनाजी थे। फिर उन्होंने मुझ से कहा कि मत जाइए। मैंने कहा, नहीं, मैंने तो वायदा किया है। मै तो जाऊँगा। तो उन्होंने कहा कि मैं भी चलूँगा। मैंने कहा-बहुत खुशी की बात है। गवर्नर साहब भी मेरे साथ गए। जिस जगह मुझे जाने से रोक रहे थे, वहाँ वे स्वयं मेरे साथ गए और जब वहाँ पर नज़ारा देखा, तो उनको भरोसा हो गया कि कितनी बड़ी गलती हिन्दुस्तान की हुकूमत और वो नेता कर रहे हैं, जो कश्मीर की इस आग को बुझाने के लिए बजाए पानी और रेत डालने के, मिट्टी का तेल डाल रहे हैं। क्योंकि जब जज़बात भड़के हों, किसी वजह से तो उन जज़बातों को ठण्डा करने की जरूरत है। उन के ऊपर रौब दिखाने का समय नहीं होता है वहाँ जब पहाड़ियों से निकल कर हजारों लोग आए थे, जब मैं उन के बीच में गया तो मुझे ऐसी हैरत भरी बातें सुनने को मिलीं कि मेरे तो रौंगटे खड़े हो गए।

मैंने उन लोगों का वहीं पर गवर्नर और वहाँ के जो बड़े-बड़े अधिकारी थे, उन के सामने आमना-सामना करा दिया। ये ऐसा कह रहे हैं। आप सुन लीजिए। इस तरह आपको क्या करना है? आप सोचिए। एक जगह की बात थी। इस के बाद कार्यक्रम हमारा वहाँ का बनने ही नहीं दिया गया। किसी न किसी बहाने कैंसल होता रहा। लेकिन मैं इस का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ कि उस समय न तो कोई चुनाव होने वाला था।

जम्मू कश्मीर में चुनाव प्रचार हेतु दिए गए इस भाषण का भी वास्तविक लक्ष्य उस अशांत क्षेत्र में संवैधानिक सरकार की स्थापना करना और तब एक प्रजातांत्रिक वातावरण में संवाद की स्थिति निर्मित करना ही तो है। चुनाव प्रचार के लिये ही सही उन दिनों जम्मू कश्मीर जाकर जम्हूरियत का पक्ष लेना भी ज़ोखिम भरा था। यह ज़ोखिम श्री अर्जुन सिंह ने इसलिए उठाया कि वे पार्टी के एक अनुशासित सिपाही रहे हैं बल्कि इसलिए भी कि वे स्वयं इस विचार के पक्षधर हैं कि कश्मीर हो या अन्यत्र समूचे देश को जम्हूरियत के अंतर्गत रहना ही चाहिए। अशांत क्षेत्रों को देश की मुख्य धारा में लाकर जन संवाद को प्रोत्साहन देना वे आवश्यक मानते हैं। एक साक्षात्कार जो उन्होंने 5 अगस्त 1996 को उलय उल्ला खाँ को दिया उनके विचारों को बड़ी साफ़गोई से हमारे सामने पेश करता है :—

प्रश्न: आपकी राय जानना चाहेंगे इससे मुताल्लिक कई सवाल हैं कि हुर्रियत कांफ्रेंस के लीडरान के साथ बातचीत के बगैर कश्मीर एसेम्बली का क्या कोई फायदा निकलेगा और एक सवाल यह भी है इससे मुताल्लिक कि कश्मीरियों पर जो मज़ालिम हो रहे हैं और मीडिया इस सिलसिले में काफी कुछ लिख रहा है और क्या ऐसे लोगों को सिर्फ कुछ माशी सहूलियतें देकर और इलेक्शन कराकर उनका मसला खत्म किया जा सकता है? और कश्मीरी अवाम का चुनावों से भरोसा उठ गया है। बहुत दफ़े वहाँ इलेक्शन हो चुके हैं। पार्लियामेंट्री इलेक्शन के मौके पर मीडिया ने ताकत के इस्तेमाल की रिपोर्टिंग की है क्या ऐसी हालत में एसेम्बली के चुनाव साफ-सुथरे हो सकते हैं? क्या इस पर भरोसा किया जा सकता है? एक सवाल इसी से मुताल्लिक है कि कश्मीर के मामले को समझकर सुलझाने की जरूरत है या इलेक्शन के जरिए ये मसला क्या हल हो सकता है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए एक-एक कर के चलें तो ठीक है।

प्रश्न: पहला प्रश्न यह है कि कश्मीर के मुसलमानों पर फौज मजालिम ढा रही है। मीडिया इस सिलसिले

में काफ़ी लिख रहा है क्या ऐसे लोगों को सिर्फ इलेक्शन कराके ही मेन स्ट्रीम में लाया जा सकता है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिये, कश्मीर में चाहे जिसके द्वारा ज्यादती हो रही हो, उसके बारे में किसी भी प्रकार की नरमी बरतने का सवाल नहीं उठना चाहिए और असलियत का पता लगाकर जो भी दोषी हैं उनके खिलाफ़ कार्रवाई होनी चाहिए और साथ ही साथ जो कम्पेन्सेशन और ये सब चीजें हैं वो भी एक प्रक्रिया का अंग है। लेकिन पहली बात तो यह है कि ऐसी कोई घटना होती है वह इसकी पूरी सही जाँच करके जो भी इसके जिम्मेदार हैं अनधिकृत कार्रवाई करने के, उनके बारे में सख्ती से कार्रवाई होना चाहिए। जहाँ तक चुनाव का सवाल है, देखिए हिन्दुस्तान ने ज़म्हूरियत का रास्ता अख्तियार किया है। ये कैसे संभव होगा कि हिन्दुस्तान का कोई भी हिस्सा ज़म्हूरियत के सिलसिले से बाहर रहे। ये अंत में जाकर सारे देश की जम्हूरियत पर एक सवालिया सवाल खड़ा कर देगा... इसलिए ज़म्हूरियत के फिर से पूरी तरह एक्शन में आ जाना निहायत जरूरी है। क्योंकि उसके माध्यम से ही वह वातावरण बनता है और वो दरवाजे भी खुलते हैं जिनके द्वारा अवाम जो चाहती है वो सामने आएगा। कोई कदम उठाता है उसके आसार बनेंगे और अंततः जनता द्वारा चुनी गई सरकार फैसला करेगी। इन्तज़ामियात के बारे में, डेवलपमेंट के बारे में, ज्यादतियों के खिलाफ कार्रवाई के बारे में, हक और हुकूक को सही ढंग से देने के बारे में, ये तो एक डेमोक्रेटिक गवर्नमेंट ही करेगी। अब आपने एक सवाल जो उसी के साथ पूछा कि यह इलेक्शन फ्री एण्ड फेयर होंगे कि नहीं। मैं इसको सबसे ज्यादा अहमियत देता हूँ। इलेक्शन होना तो डेमोक्रेटिक सिस्टम का अंग है ये कहना कि इलेक्शन से कुछ नहीं होता तो फिर तो आप डेमोक्रेसी को ही बलाए ताक रखना चाहते हैं। मैं नहीं समझता कि कोई इसमें इन्ट्रेस्टेड है। जहाँ तक फ्री और फेयर इलेक्शन का सवाल है निश्चित रूप से यह बहुत अहमियत रखता है। इसके लिए जितनी भी कोशिश हो सके पॉलिटिकल पॉर्टीज़ के द्वारा, इलेक्शन कमीशन के द्वारा, सरकार के द्वारा वो सब चीजें होनी चाहिए और उसमें ओपन डिबेट के साथ होना चाहिए। हम अपने आप कुछ कर रहे हैं और कह दें कि इससे फ्री और फेयर इलेक्शन होगा, वो पर्याप्त नहीं होगा। जितने लोग हैं जो इसमें इन्ट्रेस्डेड हैं चुनाव में, डेमोक्रेसी को वापस लाने में, जो नहीं इन्ट्रेस्टेड हैं, इसमें, उनसे तो बात करने का सवाल ही नहीं। जो ये चाहते हैं कि कश्मीर में डेमोक्रेसी रिस्टोर हो और सही डेमोक्रेसी हो, रिग्ड डेमोक्रेसी नहीं हो तो उनको सामने कॉफ्रेंस में लानी चाहिए, उनको भी सेटिस्फाय करके चुनाव की प्रक्रिया करना चाहिए ताकि किसी को गुंजाइश न रहे यह कहने की कि फ्री एण्ड फेयर चुनाव नहीं हुए। इसके अलावा मैं कोई रास्ता नहीं देखता। कश्मीर में एक नई करवट बदलने का क्योंकि ये तो कोई नहीं मान सकता है कि कश्मीर के लोग पाकिस्तान ज्वाईन कर लेंगे। ये च्वाईस कैसे किसी को दी जा सकती है और ऐसे कोई च्वाईस माँग भी नहीं रहा है।

प्रश्न: हुर्रियत कांफ्रेंस वाले।

श्री अर्जुनसिंह: हुर्रियत भी पार्ट ऑफ इंडिया है। उन लोगों को भी आना चाहिए। उनसे पूरी बात होनी चाहिए।

प्रश्न: मुफ़्ती सईद साहब कह रहे हैं कि उनसे बातचीत किए बगैर चुनाव कराना बेकार होगा।

श्री अर्जुनसिंह: उनको चुनाव के अन्दर शामिल करना चाहिए। इसमें कोई दो राय नहीं। हुर्रियत के लोगों को शामिल

करना चाहिए।

प्रश्न: लेकिन कश्मीर के मसले की एक पार्टी पाकिस्तान को भी समझा जाता है, क्या उससे बातचीत के हक में आप है या नहीं है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए कश्मीर के सेटलमेंट के सिलसिले में किसी भी बाहर के देश से बातचीत करने का कोई इरादा नही है, चाहे वो पाकिस्तान हो, चाहे कोई दूसरा देश हो। कश्मीर भारत की समस्या है और हमें देश के अन्दर ही उसको हल करना पड़ेगा।

इस साक्षात्कार में भी श्री अर्जुनसिंह अपनी उस धारणा पर दृढ़ दिखाई देते हैं जो वे अनेक बार प्रकट कर चुके हैं। यह धारणा है कि कश्मीर की समस्या भारत की समस्या है और किसी अन्य को इस मामले में पड़ने की ज़रूरत ही नही है। जनसत्ता के श्री रामबहादुर राय के साथ 7 जनवरी 1996 को दिये साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि कुछ देशों को यह ग़लतफ़हमी है कि भारत कमज़ोर है और वे दबाव डालकर उससे मनमाफ़िक बात मनवा सकते हैं। साक्षात्कार का एक प्रमुख सवाल और उसका जबाव देखिए :-

प्रश्न: आम धारणा यह है कि कश्मीर के बारे में अमेरिकी दबाव में हमारी सरकार काम कर रही है। और अमेरिका की कोशिश कश्मीर को भारत से अलग करने की है। इस पर आप कुछ कहना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए ये कोई नई बात नहीं है। ये तो जिस दिन भारत आज़ाद हुआ और कश्मीर ने भारत के साथ आने का अपना फैसला किया, उस दिन से ये कोशिश जारी है। ये तो इस देश का सौभाग्य है कि ये कोशिश इसलिए सफल नहीं हो पाई, क्योंकि कश्मीर मसला एक ऐसा था जिस पर कि बहुत व्यापक रूप से सहमति थी। और नेतृत्व भी ऐसा था कि दबाव में आकर किसी चीज को करने के लिए कभी राजी नहीं हो रहा था। आज कुछ देश ऐसा समझते हैं कि भारत कमजोर है। नेतृत्व कमजोर है। और दबाव डालकर अपनी बात को मनवा सकते हैं। लेकिन आप यह निश्चित मानिए कि पार्टी और नेतृत्व कमजोर हो सकता है, लेकिन देश मज़बूत ही रहेगा और भारत किसी के दबाव में आकर ऐसा कोई भी काम करने के लिए राजी नहीं होगा जिससे देश के हितों पर कुठाराघात हो। वो कश्मीर हो या और कोई हो।

ऐसा नहीं कि वे जब कश्मीर में हों, कश्मीरियों के बीच हों तभी कश्मीर की बातें करते हों। जैसा कि पहले भी कहा गया है कि जम्मू कश्मीर की समस्या उनकी आम चिंताओं का अनिवार्य हिस्सा है, यानी वे कश्मीर में हो या देश दुनिया में कहीं भी अन्यत्र, उनके मन से कश्मीर-समस्या दूर ही नहीं हटती। वो इस बारे में हर दृष्टि से सोचते हैं लेकिन उनका आग्रह संवैधानिक और लोकतांत्रिक तरीकों के बारे में है। अब यही देखिये कि वे भाषण दे रहे है बिहार के विक्रमगंज में और चिंता कश्मीर के निष्पक्ष निर्भीक चुनावों की है। बात 19 जनवरी 1996 की है और स्थान है, विक्रमगंज (बिहार)। गौर कीजिये भाषण के इन अंशों पर :—

वे कहते हैं मैं समझता हूँ कि बिहार के अंदर निष्पक्ष और स्वतंत्र मतदान का उतना ही महत्त्व है जितना जम्मू और कश्मीर में है या भारत के किसी और कोने में है यदि निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव कराने की क्षमता इस सरकार में नहीं है तो फिर उनको देश अथवा प्रदेश में प्रजातंत्रिक तरीके से शासन करने का कोई अधिकार नहीं है। (तालियों की आवाज....) और हम सब मिलकर अपनी ओर से इलेक्शन कमीशन से सबसे बड़ी माँग यही रखेंगे कि आप सारे देश की बात करिए वहाँ तक तो ठीक है। लेकिन कम से कम बिहार में मतपेटियों की चोरी, मतदाता को मतदान करने से रोकने, मतदान केन्द्रों पर जबरन कब्जाकर मतपत्रों पर जबरन ठप्पा लगाने आदि की घटनाएँ अगर समाप्त

नहीं होगी तो फिर यहाँ पर प्रजातंत्रिक तरीके से सरकार नहीं चल सकती, यह आपको समझना चाहिए और मुझे भरोसा है कि इलेक्शन कमीशन इस मामले पर जरूर गौर करेगा।

कश्मीर का जिक्र आया, आज कश्मीर में सबसे बड़ी बात यही है, जो भी परिस्थितियाँ वहाँ निर्मित हुईं, लोगों का असंतोष बढ़ा, नौजवानों का असंतोष बढ़ा। ऐसे लोगों का असंतोष बढ़ा जो समझते थे कि हमारे हक और हुकूक जिस तरह से मिलने चाहिए, वह नहीं मिल रहे हैं। इन सबको मिल बैठकर बात करके हमें सुलझाने की जरूरत है और यह राजनीतिक मामला नहीं बनना चाहिए, ये विषय राष्ट्रीय विषय है, सभी पार्टियों से एक साथ मिल जुलकर कोई ऐसा रास्ता कश्मीर में निकालना चाहिए।

श्री अर्जुनसिंह हमेशा कश्मीर को देश के लोकतांत्रिक ढाँचे के अंदर लाने और वहाँ बाकायदा आम चुनाव कराए जाने की वकालत करते रहे लेकिन उन्होंने हमेशा कहा कि ये चुनाव संगीन के साये में, बलपूर्वक नहीं कराए जा सकते। चुनाव के लिए शांतिपूर्ण और उपयुक्त माहौल पहले पैदा किया जाना चाहिए। यह चुनाव इसलिए भी ज़रूरी हैं कि कश्मीर की जनता, प्रकारांतर से कश्मीर की जनता के प्रतिनिधि ही तय कर सकते हैं कि उनके प्रदेश का भविष्य क्या होगा। कश्मीर की ऑटोनॉमी की माँग करने वालों को भी उन्होंने कहा कि यह निर्णय भी आप जनता तथा जनप्रतिनिधियों को ही करने दीजिए। देखिए 12 सितम्बर 1996 को जम्मू कश्मीर में ही आयोजित एक पत्रकार वार्ता के अंश :—

अर्जुनसिंह : समय की थोड़ी कमी है, इसलिए मैं अनुमति चाहूँगा आरंभ करने की। सबसे पहले तो मैं इस बात के लिए जम्मू कश्मीर के अवाम को और खास-तौर से मतदाताओं को धन्यवाद और बधाई इनको देना चाहूँगा कि उन्होंने भारत के प्रजातन्त्र की प्रतिष्ठा को भी और उसकी महिमा को भी बरकरार रखने के लिए आगे कदम बढ़ाया है। हम लोगों की शुरू से ही मान्यता थी कि इस देश के अंदर ऐसा कोई हिस्सा अब नहीं रह सकता जो सारे मुल्क के साथ-साथ डेमोक्रेटिक सिस्टम में फिट न हो। पिछले नौ साल की घटनाएँ डेमोक्रेसी के लिए एक सेट बेक थी और आज इस बात का स्पष्ट प्रमाण दिख रहा है कि यहाँ के लोगों इस बात के लिए पूरी तरह से मन बना लिया है कि वो फिर से जम्मू-कश्मीर को डेमोक्रेटिक सिस्टम में इंटीग्रेट करने की कोशिश करेंगे। यहाँ के बहादुर लोगों को इसके लिए बधाई देना चाहिए।

हम लोगों का भी पार्टी की ओर से इंदिरा काँग्रेस की ओर से पहला प्रयास यही होगा, हम इस प्रक्रिया में लोगों के साथ खड़े हों और ज्यादा से ज्यादा मैंने अपने सभी भाषणों में पहली बात यही कही है कि हमारी पार्टी का पहला मकसद यही है कि ज्यादा से ज्यादा लोग वोट डालें और इस बात को रजिस्टर करें कि वे प्रजातन्त्र के पक्ष में हैं और फिर उसके बाद हमें अपनी पार्टी के लिए अपील की क्योंकि हमारी यह मान्यता है कि इंदिराजी उन उसूलों के लिए लड़ रही हैं और लड़ेंगी जो सही मायने में काँग्रेस के उसूल रहे हैं लेकिन जिनसे बाहर हटकर काँग्रेस की जो दुर्दशा हुई है वो सब देख रहे हैं।

एक मुद्दा इस समय जम्मू-कश्मीर में ऑटोनामी की बात लेकर है। इस मामले में प्रधानमंत्री ने घोषणा की है हम उसकी ताईद करते हैं कि ऑटोनामी के ढाँचे के बारे में चुनावों के बाद जो चुनी हुई विधानसभा होगी, उसी को बहस करनी चाहिए, उसी को फैसला करना चाहिए जिसमें केंद्रीय शासन का भी पूरी तरह से उसके सहयोग रहेगा, क्योंकि सिद्धांत रूप से यूनाइटेड फ्रंट ने इस बात को स्वीकार किया है कि जम्मू-कश्मीर में ऑटोनामी के मामले में हमें कुछ आगे करना चाहिए। जब ऑटोनामी की बात आती है तो साथ ही साथ यूनाइटेड फ्रंट का भी एक दृष्टिकोण साफ है, हमारी पार्टी का भी साफ है। जम्मू-कश्मीर के जो अलग-अलग रीजन्स हैं, जम्मू है, लद्दाख है, कारगील

है, वेली है, इन सब के अंदर भी वहाँ के लोकल एसपरेशन्स को, आशाओं को और वहाँ के विकास की संभावनाओं को कैसे हम एक साथ जुड़कर आगे बढ़ सकें, ये जरूर ध्यान में रखना पड़ेगा। मेरी समझ में बात तो इतनी ही है।

जम्मू कश्मीर में घुसपैठ की समस्या नई नहीं है श्री अर्जुनसिंह हमेशा इसे रोकने के लिये आह्वान करते रहे है। 6 जून 1999 को रीवा में हुई पत्रकार वार्ता में भी उन्होंने इस बाबत कहा था:—

प्रश्न : जम्मू-कश्मीर में घुसपैठियों की समस्या कैसे हल की जा सकती है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए वहाँ क्या समस्या है इस पर बहुत कुछ कहा जा चुका है और कहा गया है। लेकिन आज के समय पर तो केवल एक ही प्रश्न है, समस्त राजनीतिक पार्टियों के सामने और काँग्रेस उसी पर विश्वास करती है। फिर सहयोग और समाधान देना काँग्रेस का ही काम है। काम में सफलता दिलाना चाहिए कि वहाँ घुसपैठियों को निकाल दें। बाकी जो चीजें हैं वे महत्त्वपूर्ण हैं और उनके ऊपर निश्चित रूप से ध्यान केन्द्रित करना पड़ेगा।

प्रश्न : लाहौर घोषणा-पत्र के बारे में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: ये तो हम कह रहे हैं बहुत सी चीजें कही जा सकती हैं। लाहौर घोषणा-पत्र एक पड़ाव रहा। उद्देश्यहीन प्रयास होता है। स्वयं व्यक्तिगत राजनीतिक लाभ लेकर तो यही परिणाम निकलता है। लेकिन ये सब चीजें विवादास्पद हैं। उनको इस वक्त उठाना उचित नहीं है।

घुसपैठ करके देश में भीतर तक मार करने वाले आतंकवादी तत्त्वों से सख्ती के साथ निपटने के हामी श्री अर्जुनसिंह हमेशा से रहे हैं। उनके विचार में यह प्रश्न सीधे-सीधे देश की सुरक्षा से जुड़ा है। यह एक खुला सच है कि सीमा पार से होने वाली आतकंवादी घुसपैठ में सीमापार स्थित पड़ोसी देश, पाकिस्तान का पूरा-पूरा हाथ है। यह तय है कि यदि पाकिस्तान सरकार न चाहे, पाकिस्तानी कौम भी सीमा पर सतर्क रहे और जानबूझकर घुसपैठ के प्रति आँखें न मूँदे और यदि पाकिस्तान की सरकार तथा व्यवस्था इन घुसपैठियों की मदद न करे तो घुसपैठ संभव ही नहीं है। यह भी हुआ है और होता है कि सीमा पार से बाकयदा फ़ौजी हमले की आड़ में या गोलीबारी का कवर देते हुए घुसपैठ करा दी जाती है। तो ऐसे में क्या किया जाए? राजनैतिक स्तर पर, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धें के स्तर पर भारत अपने पड़ोसियों के साथ हमेशा दोस्ती के रिश्ते बढ़ाने का हामी रहा है। मगर इसका नतीज़ा क्या रहा? शांति की अपीलें, दोस्ती के लिए बार-बार हाथ बढ़ाने की क़वायद बेकार जाती है। श्री अर्जुन सिंह यद्यपि शांति प्रिय व्यक्ति के रूप में ही जाने जाते है अगर इस मामले में वे भी सख़्त कदम उठाने की सलाह देते हैं। नवम्बर 1995 में भोपाल में आयोजित पत्रकार वार्ता में उनका यही रूख़ देखने को मिलता है। इस पत्रकार वार्ता के कुछ अंश :-

श्री अर्जुनसिंह : हमारे देश की सुरक्षा की जहाँ तक बात है। यह नितांत आवश्यक है कि भारत की सुरक्षा का प्रश्न पर्दे के पीछे रखने की जरूरत नहीं है। क्या हो रहा है? कौन से खतरे हैं जिनका मुकाबला करने की कोशिश की जा रही है? पाकिस्तान को सैन्य बल या सामग्री दी जा रही है। हम इसके लिए क्या कर रहे हैं? कुछ चंद लोगों के बीच में छुपे रहने वाला भारत नहीं रह सकता। प्रजातंत्र में इसकी जानकारी देश की जनता को होना चाहिए। पृथ्वी, जो मिसाइल प्रोग्राम था, उसे क्यों रोका गया? वो उधार लिया हुआ प्रोग्राम नहीं था। देश के वैज्ञानिकों ने अपनी दक्षता की वजह से कार्यक्रम चलाया जिससे बहुत बड़ी सैन्य शक्ति एक हुई। अब वह रोकी गई है। किसके कहने से रोकी है? क्यों रोकी है? अखबारों में पाकिस्तान को चेतावनी दे देना तो ठीक है। लेकिन उस चेतावनी को कार्यरूप में परिणित करना पड़े, उसके लिए तो नीति भी तो चाहिए, चेतावनी से थोड़े युद्ध जीते जाते हैं। भारत ने कभी युद्ध करने की बात नहीं की। तीनों परिस्थितियों में देश पर आक्रमण हुआ। आज कुछ ऐसा महसूस हो रहा है कि देश के उन हितों

को भी राजनीतिक लाभ और रंग देकर समझौते हो रहे है। यह बहुत खतरनाक प्रक्रिया है। जो हमारे देश के लिए भविष्य में खतरा पैदा कर सकती है। पहले तो इतना नहीं था। हमारी सरहदों के क्या हाल है वो तो सर्वविदित है। कश्मीर में, पंजाब में पहले से अपेक्षाकृत शांति है। लेकिन उत्तर-पूर्वी राज्यों में शायद कश्मीर से भी ज्यादा विस्फोटक स्थिति है और वहाँ तीन अन्तर्राष्ट्रीय सरहदें मिलती है, बर्मा की, बंगलादेश की, चीन की वह एक ऐसा क्षेत्र बन गया है, जहाँ पर कि अगर यह कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, कि भारत सरकार का वहाँ पर शासन नहीं है। ये बात बहुत कटु लगती है, लेकिन यथार्थ है। वहाँ के जो आतंकवादी तत्व है, ऐसा शायद ही कोई व्यक्ति वहाँ पर हो, मै गवर्नर की बात तो नहीं कह सकता, लेकिन जितने मंत्री है, अधिकारी हैं सब इनके सहारे जिन्दा हैं। इनको टैक्स देते है। मिलिटेन्टो की अपनी सुरक्षा के लिए ऐसी स्थिति का निर्माण हो जाना और उसको तवज्जो न देना देश के हित के बहुत ही प्रतिकूल है। यह तीन-चार बातें हैं जो मुझे आपको कहनी थी, आगे सवाल जो आप करना चाहें कर सकते है।

8 नवम्बर, 1995 को एक पत्रकार वार्ता में श्री अर्जुनसिंह कहते है कि जम्मू-कश्मीर में निष्पक्ष और निडर चुनाव होना चाहिए। संगीन के साए में चुनावों का कोई मतलब नहीं है। प्रस्तुत है संबंधित अशः

प्रश्नकर्ता : कश्मीर में चुनाव हो रहा है, पर क्या वहाँ निष्पक्ष चुनाव सम्भव है?

श्री अर्जुनसिंह: कश्मीर का चुनाव तो होना चाहिए। इसमें कोई दो राय नहीं है। लेकिन चुनाव निष्पक्ष और निडर होकर हो, तो चुनाव हो। संगीनों की साया में तो कोई चुनाव होता नहीं। इससे तो आगे दिक्कतें बढ़ेंगी। वाकी कश्मीर में भी प्रजातांत्रिक प्रक्रियाएँ चालू हैं, यह तो हम सभी चाहते हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या अभी चुनाव होना ठीक नहीं है?

श्री अर्जुनसिंह: ऐसी स्थिति अभी निर्मित नहीं हुई है।

4 जून 1999 को कटकोन की आमसभा में दिए गए भाषण में पार्टी स्तर की राजनीति और उसकी पैंतरेबाज़ी की ओर तो इशारे करते ही हैं मगर देश की सुरक्षा को सर्वोच्च वरीयता देने की बात भी कहते हैं। सरकार कोई भी क्यों न हो देश की सरहदों की रक्षा सर्वोपरि है। पहले देश की सुरक्षा तब उसके बाद भीतरी राजनीति। यह सूत्र है जो वे प्रस्तुत करते है। :—

श्री अर्जुनसिंह : आज ऐसे ही असमंज़स में अपना देश पड़ गया है। आज तो केवल एक ही लक्ष्य है, सबके सामने सरकार में कोई बैठे हों, इससे कोई मतलब नहीं है। हमारा लक्ष्य यह है कि भारत की सीमा सुरक्षित हो, भारत की सीमा के अंदर जबर्दस्ती जो लोग घुस रहे हैं, उनको देश से बाहर निकाला जाय। भारत की सेना जो है, वह बहादुरी से, हिम्मत से काम को पूरा कर रही है। एक भारतीय होने के नाते हमारा पहला कर्तव्य यह है कि उस प्रयास में हम जो कुछ सहयोग दे सकें, अपने स्तर पर वो सहयोग हम दें, एकता के साथ दें। एक दफ़े देश सुरक्षित हो जाय, उसके बाद फ़िर अंदर की राजनीति देखी जाय लेकिन देश की सुरक्षा के साथ राजनीति के खेल देश के लिए कितना खतरनाक हो सकता है, इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। इस बारे में हम लोगों का दृष्टिकोण साफ है और जनता के बीच में ये बात कहना इसलिए जरूरी है कि कई प्रकार की भ्राँतियाँ जनता के बीच में फैलाने की कोशिश हो रही है।

जम्मू कश्मीर की बातों से भग-भग यह अध्याय अधूरा ही रह जाय यदि भारतीय राजनीति के बदलते परिदृश्य में देश में स्थापित रा.ज.ग. (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) की सत्ता जिसका नेतृत्व बी.जे.पी. (भारतीय जनता पार्टी) के हाथ रहा, के कार्य काल में हुए कारगिल युद्ध का जिक्र न हो। कारगिल की लड़ाई एक महत्त्वपूर्ण घटना है।

श्री अर्जुनसिंह जी के अपने विचार है। वे इसे युद्ध नहीं मानते। वे सकहते हैं कारगील की विजय में जय-विजय जैसा कुछ नहीं है। यह तो ऐसा है कि कुछ तस्कर, विदेशी सैनिक, आतंकवादी या आवंछित तत्त्व हमारे इलाके में घुस आए तो हमने उन्हें मार-मार कर अपने इलाके से बाहर खदेड़ दिया। निःसंदेह इसमें हमारे वीर जवानों की शूर वीरता तथा दमखम का योगदान है। लेकिन राजनैतिक स्तर पर बहुत सारे पहलू ऐसे भी हैं जिनकी प्रशंसा नहीं की जा सकती। कारगिल की लड़ाई देश के कर्णधार नेताओं की असफलता की कहानी है। असफलता या अनदेखी कुछ भी कहा जा सकता है। 18 जुलाई 1999 को लखनऊ में कौमी संगठन की सभा को सम्बोधित करते हुए श्री अर्जुनसिंह ने कुछ इसी प्रकार की बातें कहीं — स्वयं देखिए और महसूस कीजिए कि कारगिल एपीसोड वास्तव में कैसा है :—

श्री अर्जुनसिंह : कारगिल के मसले पर कई लोगों ने अपनी-अपनी राय जाहिर की। मैं आज एक बात कहना चाहता हूँ और दावे के साथ कहना चाहता हूँ कि जितने भी प्रमाण अभी तक सामने आए हैं, उससे यह साफ़ जाहिर होता है कि यह घुसपैठिए दिसम्बर के महीने में कारगील के अंदर स्थापित हो चुके थे और इसकी जानकारी दिसम्बर के आखरी हफ्ते में भारत सरकार को मिल चुकी थी और जब वाजपेयीजी लाहौर की बस यात्रा करने जा रहे थे, तो इनको इस बात का इल्म था। आज तो बड़ी लम्बी चौड़ी चुनौतियाँ दी जा रही हैं पाकिस्तान को, जब बस पर चढ़कर गए थे और गले मिलने की नौबत जब आई उस वक्त भी दो बातें कर लेते, अब तो कह रहे हैं कि मैं तो सो रहा था उस वक्त प्रधानमंत्री कहते हैं। देश का जो प्रधानमंत्री गफलत में सोता रहे, उससे मुल्क क्या उम्मीद कर सकता है। अब आज इनक्वायरी की बात शुरू हुई है। वह भी इसी नज़रिए से कि इनक्वायरी जैसे होती है, सबसे छोटे से छोटे अफसर के ऊपर जिम्मेदारी डालकर कह देंगे इसने इत्तला नहीं दी समय पर। यह सरासर गलत बात है। ये इंटेलिजेंस का फेलियर केवल नहीं है। एक स्टेज पर इंटेलिजेंस का फेलियर हो सकता है, लेकिन बाद में समूची की समूची जानकारी भारत शासन को थी, और फेलियर पॉलिटिकल लीडरशिप की है, इंटेलिजेंस की नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में जब देश गुजर रहा है तो निश्चित रूप से आवाम की जिम्मेदारी होती है कि हम अपने बीच में जो हमारी थोड़ी बहुत गलत फहमियाँ भी हैं, कहीं कोई मतभेद हैं, उनको एक सीमा से ऊपर न जाने दें और हिन्दुस्तान को हरदम, जब वह एक रहा है तो जिंदा रहा है, जब बँटा है छोटी- छोटी बातों में भी गुलाम हुआ है। यह नसीहत हमें कभी-कभी नहीं भूलना चाहिए। ये ऐसा मुल्क है जिसमें सबके लिए स्थान है, दुनिया का शायद ही कोई मुल्क हो जिसमें इतने धर्मों को मान-सम्मान दोनों मिला हो, जितना भारतवर्ष से मिला है। आज इस पर गर्व करके, गौरव करके हमें उनको मजबूत रिश्तों में बाँधना है।

उत्तर प्रदेश जो कि राजग की प्रमुख पार्टी भाजपा का गढ़ बन चुका है वहाँ इस तरह से उसकी तथा कथित उपलब्धि कारगील-विजय की पोल खोलना वाकई दिल गुर्दे का काम है लेकिन श्री अर्जुनसिंह मानते हैं कि चूँकि उनके साथ सत्य का बल है इसलिए उन्हें सच कहने में तनिक भी डर नहीं लगता। कारगिल हो या कहीं और, देश की सीमा का अतिक्रमण कोई भी करे तो उसे दण्डित करना वे भी चाहते हैं लेकिन इसका राजनैतिक उपयोग वे वांछित नहीं मानते। भाजपा ने कारगिल-युद्ध को वाजपेयी जी के मुकुट की कलगी की तरह प्रचारित किया जबकि इसके लिए देश के बहादुर सिपाही साधुवाद के असली और एक मात्र हक़दार हैं। सैनिको की शूरता के कारनामे सतुल्य हैं लेकिन सरकार और प्रधानमंत्री तथा रक्षामंत्री की भूमिका को वे उपयुक्त नहीं मानते। लखनऊ में 18 जुलाई 99 को आयोजित पत्रकार वार्ता में उन्होंने कहा :—

श्री अर्जुनसिंह : आपने आज एक वक्तव्य देखा होगा प्रधान मंत्री के विशेष सचिव श्री बृजेश मिश्रा का जिसमे उन्होंने कहा है कि कारगिल के घुसपैठियों के बारे में सरकार जाँच कराएगी और यह पता करेगी कि कैसे इंटेलिजेन्स

नाकामयाब रही। मेरा यह स्पष्ट मत है कि [redacted] जो इरादा जाहिर किया गया है, वह केवल इस समूचे मसले पर लीपापोती करने का एक बहाना है।

मीडिया के द्वारा अन्य स्रोतों से यह बात साफ़ ज़ाहिर हो चुकी है कि कारगील में जो घुसपैठिए आए, वो काफी पहले आए शायद वाजपेयीजी की लाहौर यात्रा के पहले। अब चूँकि देश के बहादुर जवानों ने भारत की भूमि को घुसपैठियों से मुक्त करा दिया है जिसके लिए सारा राष्ट्र उनके प्रति कृतज्ञ है। यह निहायत जरूरी है कि असलियत अब देश के सामने आए, अच्छा हुआ सरकार ने ही उसकी पहल शुरू कर दी। इरादा तो कुछ और है लेकिन हम चाहते है कि जाँच का दायरा और तरीका दोनों के बारे में देश की सभी राजनीतिक पार्टियों से विचार-विमर्श करके फैसला किया जाए और यह स्पष्ट है कि केवल चन्द अफसरों के ऊपर दोष देकर और इस मामले को रफा दफा नहीं किया जा सकता। अगर इसमें जिम्मेदारी प्राथमिक रूप से है तो वह देश के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और रक्षामंत्री की है उन्हें भी जाँच के दायरे में लाया जाना चाहिए ताकि सही बात देश के सामने आए।

दूसरी बात यह है कि यह मात्र संयोग नहीं है कि 6 मई को जब पहली बार देश को यह मालूम हुआ कि ऐसी गतिविधियाँ हुई हैं और सरकार ने भी बयान दिया कि हम कार्रवाई करने जा रहे हैं उसी समय पर दो बयान आए। रक्षामंत्री के, जिसकी पुष्टि प्रधानमंत्री ने की। पहला बयान तो यह था कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इस पूरी घटना से पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं। दूसरा बयान यह भी आया कि इन घुसपैठियों को सेफ पैसेज़ भी दिया जा सकता है। मैं समझता हूँ कि यह अद्‌भुत संयोग होगा कि वह सेफ़ पैसेज़ की बात जो इस घटना के शुरुआत में की गई, वही सेफ पैसेज़ आज सरकार ने इनको दिया है। यह सब चीजें जाँच के दायरे में आना चाहिए ताकि हम अपने इन शहीदों को जिन्होंने हँसते-हँसते देश पर बलिदान किया है उनके प्रति भी न्याय कर सकें।

प्रश्न : कारगील जाँच के संबंध में आपके क्या सुझाव हैं?

श्री अर्जुन सिंह: देखिए, उसके बारे में मैं कोई फैसला या सुझाव देना उचित नहीं समझता हूँ। जब मेरी यह राय है कि समूचे प्रश्न पर सभी पार्टियों से सलाह मशविरा करके ही कोई फैसला होना चाहिए, वरना यह सरकार का जो एक तरीका होता है जाँच बैठा दी, अब कहेंगे कि जाँच होने तक चुप रहिए और 6 महीने बाद जाँच का नतीजा आएगा तो कहेंगे कि फलाने-फलाने अफसर इसके लिए जिम्मेदार हैं।

कारगिल-युद्ध जीतने के नाम पर समूचे देश को एक भ्रम का माहौल दिया गया। यह भ्रम कि हमने पाकिस्तान को हरा दिया है और प्रकारान्तर यह कश्मीर-विजय है। बस कारगिल फ़तह और कश्मीर-समस्या समाप्त। परंतु क्या वास्तव में ऐसा हुआ? कश्मीर की अभी तक की स्थितियाँ और घटनाएँ देखकर क्या ऐसा कहा जा सकता है? इन पंक्तियों के लिखे जाने तक तो केन्द्र में राजग की सत्ता के स्थान पर संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यू.पी.ए.) की सरकार सत्तासीन हो चुकी है और कश्मीर अभी तक पहले का शांति प्रिय कश्मीर अभी तक नहीं बन सका है। घुसपैठ और आतंकी हिंसा जारी है। यद्यपि मनमोहन सरकार भी राजग सरकार और अटल बिहारी वाजपेयीजी द्वारा शुरू की गई समझौता प्रक्रिया को आगे बढ़ाती जा रही है लेकिन मन चाहे परिणाम अभी भी बहुत दूर हैं। श्री अर्जुनसिंह पुनः एक बार देश के केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में शामिल हैं; लेकिन जब वे प्रतिपक्ष में थे तब 25 जुलाई 99 को उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थ नगर की सभा में उन्होंने करगिल को लेकर वास्तविकता को उजागार किया था। उनके शब्द थे :—

श्री अर्जुनसिंह : यह इस बात का सबूत है कि भारतीय जनता पार्टी और उनके सहयोगी आपका विश्वास पाकर भी देश का काम नहीं चला सकें और अब 2-4 नहीं, अब तो 18 पार्टियाँ एक साथ हो गई हैं। पहले 5-6

थे, तो अलग-अलग खींचतान होती थी। अब 18 तरफ खींचतान होगी और सब उसकी पुष्टि के लिए खींचतान करेंगे। किसी के हाथ कुर्सी का एक पाया मिलेगा, किसी के हाथ दूसरा पाया लगेगा और देश के हाथ केवल दरवाजा आएगा। जैसा कि इस वक्त कारगील में हुआ देश के बहादुर सिपाहियों ने पाकिस्तान की घुसपैठ को जो बिल्कुल ही नाजायज है और बिलकुल ही गलत थी, बहादुरी के साथ उनको खदेड़कर देश के बाहर निकालने का प्रयास किया है। सबसे पहले मैं अपने देश के उन बहादुर जवानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ और यह कहना चाहता हूँ कि सारा राष्ट्र उनके प्रति कृतज्ञ है। जो कुछ उन्होंने किया है, कोई भी देश उसको भुला नहीं सकता है।

ये बात मुझे इसलिए कहना पड़ रही है, क्योंकि जो कुछ कारगील में हुआ था, वह जीता-जागता नमूना है, श्री अटलबिहारी वाजपेयी की अक्षमता का और उनके गैर-जिम्मेदाराना कदमों का। जिस देश के प्रधानमंत्री को ये न मालूम हो कि उसके घर में कौन कब घुस आया है, इस बात का जवाब उन्होंने आज तक नहीं दिया। श्री अटलबिहारी वाजपेयी को स्वयं यह कब पता चला कि देश के अंदर घुसपैठिए घुस आए हैं। अब जाँच उसकी होगी, किस बात की जाँच होगी वो तो कह चुके कि कोई कमी नहीं है तो फिर जाँच किस बात की बिठाई गई। ये केवल देशवासियों को एक धोखे में डालने की बात है कि किसी भी प्रकार से सच्चाई बाहर न आ सके। तीन महीने जाँच होगी तब तक चुनाव हो गए होंगे। और उनके छुटभय्ये देश में विजय यात्राएँ निकालेंगे और कैसी विजय यात्रा, किसी के ऊपर विजय नहीं पाई। अपने देश के अंदर लड़ाई हुई, अपने देश के अंदर घुसे हुए लोगों को निकालने की कोशिश की गई, सेना के सैकड़ों लोगों की जानें गईं, सैकड़ों घायल हुए और विजय किसकी हुई श्री अटलबिहारी वाजपेयी की। इस तरह का नजारा पहले देश में कभी नहीं हुआ। और यह जरूरी है इस तरह के अनैतिक राजनीतिक तरीकों से अपनी कुर्सी को बचाने का यह प्रयास हो रहा है, भारतीय जनता पार्टी के द्वारा। उसे आप पहचाने और आने वाले चुनाव में उन्हें किसी भी प्रकार का सहयोग न दें।

काँग्रेस ने यह कोशिश की कि किस तरह से भारत को एक सूत्र में बाँधकर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने, सरदार पटेल, श्री लालबहादुर शास्त्री ने, श्रीमती इंदिरा गाँधी ने और राजीव गाँधी ने बनाकर रखा। जिस हिन्दुस्तान में रहने वाले व्यक्ति को चाहे वह किसी भी धर्म का हो, कोई भी भाषा बोलता हो बराबरी का हक रहा। वही विकास आज सोनिया गाँधी फिर से भारत को बनाना चाहती हैं और इसमें हम सब लोग उनके सिपाही हैं।

2 अगस्त 1999 को जम्मू कश्मीर के कठवा में शहीदों के सम्मान में एक सभा आयोजित की गई। शहीदों को आत्मीय श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए श्री अर्जुनसिंह ने पाकिस्तान की धूर्त्ततापूर्ण हरकतों से सावधान रहने की सलाह दी और आने वाले समय के लिए सतर्क किया।

श्री अर्जुनसिंह : आदरणीय सम्मानित विधायक श्री लालसिंहजी, पी.सी.सी. की जनरल सेक्रेटरी और अन्य साथीगण। आज हमारा यहाँ उपस्थित होना, मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है।

मुझे यह मौका मिल रहा है कि भारत माता की बलिवेदी पर सर्वस्व न्योछावर करने वाले शहीदों के चरणों में श्रद्धाँजलि अर्पित कर पा रहा हूँ। इन शहीदों ने इस जुलाई में अपने शौर्य का परिचय देकर, देश भक्ति का परिचय देकर और अपना बलिदान देकर न केवल अपनी पारिवारिक परंपरा को कायम रखा, बल्कि साथ ही साथ उन्होंने सारे मुल्क के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसमें बिना किसी संकोच के, बिना किसी हिचक के उन मूल्यों के लिए बलिदान दिया, जिन मूल्यों से भारत की पहचान बनी है और आगे भी बनी रहेगी। विशेषकर जम्मू-कश्मीर में जो एक नमूना है, भारत की गंगा-जमुनी संस्कृति जो एक ऐसे उसूल पर कायम है, जिसे लोगों ने अपने खून से सींचा है। भारत की एकता और अखंडता और इस देश के रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की पहचान और अपना-अपना हक

अगर हिन्दुस्तान में कहीं रेखांकित होता है तो वह जम्मू-कश्मीर की धरती से होता है और यही वजह है कि फ़िरक़ापरस्त और धर्म के नाम पर उन्माद से भरे हुए लोग जम्मू और कश्मीर की पवित्र धरती को अपने नापाक इरादों से साज़िश करके उसे नष्ट करना चाहते है।

पाकिस्तान की यह हरकत सबको अच्छी तरह से मालूम है और पाकिस्तान की हरकतें कभी कामयाब नहीं होंगी। जब तक इस देश में ऐसे शहीद विद्यमान रहेंगे, पाकिस्तान ने बहुत ही घूर्तता से ये परिस्थितियाँ पैदा की, जिसकी सर्वथा निंदा होनी चाहिए। लेकिन साथ ही साथ हमें इस बात को भी नहीं भूलना है कि अपने देश की रक्षा करने की प्राथमिक जिम्मेदारी भारत के लोगों की है। मुझे पिछले एक साल से भाई लालसिंहजी अपने क्षेत्र में आने का निमंत्रण देते रहे हैं। मैं उनके निमंत्रण पर तो उस समय नहीं आ सका, लेकिन आज जो आयोजन उन्होंने और उनके साथियों ने किया है। मैंने अपना फ़र्ज समझा कि मैं यहाँ हाज़िर रहूँ। यहाँ पर इस बात को कहना निहायत जरूरी है कि जैसा एक बहुत बड़े विचारक पंडित नेहरू ने इस बात को बार-बार दोहराया है, अँग्रेजी में यह है "Eternal Vigilance is the Price of Liberty." आजादी की क़ीमत सतत् चौकन्ना रहना भी है और कोई उसकी क़ीमत नहीं है, अगर हम अपने देश की आज़ादी के लिए चौकन्ना रहकर फ़र्ज अदा नहीं करे उनके परिवारों के प्रति केवल सतही तौर से हमें अपनी भावनाएँ व्यक्त नहीं करनी चाहिए और इसलिए जो लालसिंहजी ने आयोजन किया है उन परिवारों की मदद करने के लिए आप लोगों ने आयोजन किया है आप सबको मैं इसके लिए धन्यवाद देता हूँ। यह समय भाषण का नहीं हैं, उपदेश देने का नहीं है यह समय केवल श्रद्धाँजलि देने का है। मैं उन सब वीर शहीदों के चरणों में अपनी श्रद्धाँजलि अर्पित करता हूँ और उनके दुःखी और संतृप्त परिवारों के प्रति इतना ही कहना चाहता हूँ कि आप आपके परिवार ने सबसे बड़ी और आखिरी क़ीमत देश की आज़ादी के लिए चुकाई है। आपके प्रति हम अपनी जिम्मेदारी को निभा सकें। इसकी शक्ति हमें अर्जित करनी है और इसमें हमें ईमानदारी से कोशिश करनी है, इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धाँजलि अर्पित करता हूँ और इस आयोजन की सफलता की कामना करता हूँ। जय हिन्द।

2 अगस्त 1999 को इन्टलेक्चुअल फोरम जम्मू के कार्यक्रम में संबोधन करते हुए श्री अर्जुनसिंह ने कहा कि कारगील पर किए गए आक्रमण की जानकारी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ को नहीं होना हास्यास्पद एवं अविश्वसनीय बात है, पर मुझे तरस आता है हमारे सत्ताधारी नेताओं पर जो उसे सही मान रहे है। प्रस्तुत है उनके सम्बोधन के प्रमुख अंशः

Respected Shri Puriji, former V.C., University of Jammu, respected Shri N.R. Sharmaji, Secretary, Intellectual Forum, Shri B.P. Singhji, Dean, Faculty of Law, distinguished members of the audience. At the outset I must express my deep gratitude to all of you for having assembled here and giving me the opportunity to interact with you on a subject which has been introduced here.

I agree with many of the persuasion as initiated in the subject by him because it was very obvious that his transparent analysis was not awaited for or against anyone. But tried to draw impartially which is of importance to the nation. The sentence that Pandit Jawahar Lal Nehru uttered after independence, comes to my mind. When he said "Eternal vigilance is the price of liberty." Liberty came to India in a normal way, in a peaceful revolution comparatively and perhaps that is why we in this country, could not fully grace. What is the price of liberty? This is not reflection for anyone but this is the psychological background in which the common people of this country, view

all that happened after 15th Aug. 1947 though it is true, that during the freedom struggle thousands and thousands of people sacrificed their lives, many were martyr, many homes were destroyed but the revolution for the freedom of the country as is commonly understood around the globe did not come to India and for this we must thank only one person that is the father of the nation Mahatma Gandhi.

We adopted a constitution giving the fullest right to everyone. The fundamental rights, rights to education, the right to vote. The Indian Army is the most brilliant professional armed force in the world. They have a heritage of bravery. They have inspiration and have the training and that is why under the most trying circumstances they have maintained absolute propriety about civil and military authorities their functioning and the line of authorities but when aberrations take place and they are not taking into account by people who are supposed to be taken into account beyond certain event, human nature is such that anything could happen. There is one thing which I consider crucial to Indian democracy and that is the element of accountability. It is one of the sad factors of our progress of Indian democracy. That the issue of accountability which live at the route of a democratic system has not been given that importance, something should have happened naturally there has to be a human cry about it and hesitation about it or some other form of action and even than persons are accountable tried to fine wages and means to get out of it and I am not speaking of any political Party. I am speaking broad of Indian democracy yes, if there is no accountability to the Parliament of this country our democracy can't be strengthened and if we have been able to sustain the democratic system in India. It is primarily because of the trust and faith of the common man. He has many things to come about it but he believes, he trusts and therefore, does not cross that forbidden life. But when event like Kargil happened and then everybody wants to turn his face away instead of allowing, a candid review of the situation. All the things should come out because democracy is not a secret society in India. It is quite natural process a thing to happen because there is democracy. You can call them oligarchy and that selected oligarchy which differs from time to time. The democratic rules and pressures that control Indian political system and therefore, I think it is very necessary but all the events and facts that live behind this episode must not be brushed under the carpet. They should be brought to the notice of the Indian people. If there is something which they find fall brief as a democratic society we must be accepted unless we prescribed to the theory of superior knowledge. This is also one of the weaknesses, some believe that we have the knowledge.

Sometimes some comments are made about Pt. Jawaharlal Nehru in the Chinese aggression Yes, it was the period but Panditji never felt shy about it. Where he saw that the public opinion has already found Mr. Krishna Menon guilty he did not hesitate a single minute to ask him to quit.

I don't want to take any name but certain things have occurred in the last thirteen or fourteen months which give much to be desired in the running of the defence system certain basic facts are beyond question. That is not an allegation being made by anyone today. What have been stated then

had any grain of truth it should have lead to something. After that a clumsy attempt was made to make us believe that what had happened in Kargil was not the fault of Nawaz Sharif the Prime Minster of Pakistan and this attempt was joined also by our Prime Minister. The perfidy of Pakistan is so apparent and blatant that even a child can't say that Nawaj Sharif was not aware. The whole thing was a plan and precisely implemented operation. We were busy with Lahore and I am not decrying Lahore's importance because India always want peaceful relations with all our neighbours particularly with Pakistan but the desire to have peaceful relations should not close our eyes to ugly realities of the Pakistan, its pattern of behaviour and only if you had kept your antenna up perhaps that kind of things would not have happened. So, this is the kind of balance of approach which is needed have always been saying one thing and I want to repeat it here not a part of political polemics but because I believe that is one thing which the people of this country have a right too. We don't want to disturb the morale of the armed forces, we don't want to take sides but this country wants to know from non else then the Prime Minister himself, as to when did he come to know for the first time that these intrusion are taking place. This question is being asked for the last twenty days. There is no response from him, neither from his Minister of Information Shri Pramod Mahajan, total silence, why? Is the country not entitled to know this? Failure answer it obviously because once an answer is given to this question then many other questions will arise which will be very difficult to answer. There is another aspect and which military strategy will be better equipped to answer it. We can't remain static on the issue that we can not discuss publicly where at least those who are responsible for it must be aware of it accepted the necessary and then go about it.

The great General Nepolian who said that "War is ultimate weapon of diplomacy." But here it appears that the weapon and actions concerning the same are so jumbled up. We all want the best relation with America, friendship with America is a very positive factor for India. Both are democratic republics.

There is a question to be asked and the intelligent people of India want to ask that question till now the officially stated position of America, that Jammu & Kashmir is disputed territory. I think I am not mis-quoting anyone, you all must be remebering what was said, now if Jummu & Kashmir is disputed territory in the eyes of United States of America, what we are doing and what we have done itself falls through. Jammu & Kashmir is not a disputed territory so far as India is concerned. It is the sovereign right of India that prevails in Jammu & Kashmir yes, we have been deprived some of our land, adversely occupied by Pakistan, to avoid bloodshed. But here is the resolution unanimously adopted by the Parliament of India. This says that the territory occupied by Pakistan belongs to India and must come to India. That is stated position of our country and stated position of America that Jammu & Kashmir is a disputed territory.

There are certain issues which you can't turn your head. On the other hand, it is true that a developing country like India, can't afford to wage war either you spend on the armaments or spend

on drinking water for the poor people, housing health, communication all which go to make like worthwhile and therefore, for India war can never be a policy time and again India sought peace around the world only because the time and the sources that we have today are not enough for us to develop our country and also to fight a war. The whole concept of peaceful coexistence that was initiated by India and which let to the formation of the third world. It is because powerful developing country of the world believed in this theory which was profounded by Pandit Jawaharlal Nehru, Succarno, China of course, became victim of its own grandiose But we have not abandoned I mean, can't afford to abandon as we go from strength to strength as our resources increase the dilemma becomes sharp and sharp.

The people of this country should know what is happening in Kargil take them in confidence don't treat everyone as less knowledgeable and we only have superior knowledge and third is that the basic postulates if now given Govt. conduct, public conduct in this country must be mutually discussed and define very carefully. We can't have a free for all, we can't have limitless criticism. Let's pull ourselves up and now define for ourselves our goal in the next century because a next century will be much-much faster than 20th century and if we are left behind there time that the half way mark in the 21st century is reached..... We can by the middle of the 21st century become super powers, not acquire anybodies land, because India had the unique example at least that could we could very easily pinpoint, never in recorded history had the arm forces of India attacked other countries.

इस भाषण में श्री अर्जुनसिंह ने एक जगह पर स्वयं यह स्पष्टोक्ति की कि वे किसी भी राजनैतिक दल की तरफ नहीं बल्कि एक सामान्य भारतीय की हैसियत से बहुतसी बातें सोचते और कहते हैं। मसलन उन्होंने स्वीकार किया कि लोकतंत्र में संसद सर्वोच्च है लेकिन संसद के कार्यों को तौलने उनकी समीक्षा करने की कोई व्यवस्था नहीं है। संसद की भी कुछ जबाव देही होनी चाहिए। उन्होंने स्वीकार किया कि देश में यदि लोकतंत्र कायम है तो वह राजनेताओं के कारण नहीं, वह इसलिए कायम है कि भारत का आमजन इस व्यवस्था में विश्वास करता है। वे साथ ही यह कहने से भी नहीं चूके कि चूँकि हमें आज़ादी गाँधी जी के प्रयासों से अहिंसक रास्ते से बैठे बिठाये मिले गई इसलिए आज अनेक लोग उसका अधिक मूल्य भी नहीं आँकते। लेकिन हमें अन्य उदाहरणों को देखकर अपनी आज़ादी का मूल्य भी आँकना चाहिए। श्री सिंह ने भारत जैसे विकासशील देश को युद्ध जैसे खर्चीले झमेले से दूर रहने की ही सलाह दी। उन्होंने यह भी कहा कि वे लाहौर-समझौते के रास्ते का महत्त्व भी कम नहीं करना चाहते। वे भी मानते हैं कि भारत अपने सभी पड़ोसियों के साथ शांतिपूर्ण एवं सम्मानजनक व्यवहार रक्खे।

अगस्त 1999 की एक पत्रकार वार्ता में भी श्री अर्जुनसिंह कहते है कि भारत युद्ध में नही शांति में विश्वास करता है। कारगिल घुसपैठ पर बहस के लिए शासन को राज्य सभा का अधिवेशन आहूत करना चाहिए। आतंकवाद केवल कश्मीर की समस्या नहीं है। मिजोरम, असम तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्र भी आतंकवाद से पीड़ित है। इसे रोकने के लिए सरकार को त्वरित, उचित कदम उठाना चाहिए। प्रस्तुत है पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंशः

Q.: What is the heritage of this country? What were the effects of chinese war? Do you suggest that Defence Minister should resign because of the lapses in Kargil war?

Shri Arjunsingh : Please, please we wanted to hear superior wisdom so that we could also be enlighten but that should be short so that even I remember what I have to reply. If I remember I am replying to what you have asked me and Jamwal Shab will certainly say what he has to say. As far as I remember this is a matter of record that Mr. Krishna Menon resigned before the war ended. You can check up and secondly, about the hertiage of this country. The heritage of this country is not defined by individuals however high, important or wise they may be. The heritage is forced by common people of our country, don't be mislead the A, B and C create a heritage. The heritage is that which is decided by collective wisdom of the country and on that I think there can be no two opinions that the heritage of the country is peace not war, so far as the third question that you have asked which I recollect, I hope I am not forgetting it, is the Rajya Sabha Session asked for and while were these things talked about them. If the Rajya Sabha Session had been held. I don't think the heaven would have fallen and I will only like to remind you that the height of the Chinese war. The present Prime Minister of India Shri Atal Bhihari Vajpayee raised these very questions and in these very manner and Pt. Jawaharlal Nehru does not hesitate even one day to summon the Rajya Sabha and ask everyone to come for discussion. Rajya Sabha and Lok Sabha can not go against the interest of our country.

The point that was made, whether you call it, disfailure or that failure is immaterial the fact remains that people came in this war or war like situation was dealt with within our borders. It was not dealt with outside our borders and therefore, that question arose now if you think that in the Chinese war no territory was taken back by India that is not a factual statement. Yes, Siachin was not taken back it is not about in the other sectors, the land that Chinese have taken, may be by mutual agreement, just is it happened here, I don't think these comparison to derive or to praise anyone is relevant that is why I have in the very beginning said that the point is that unless we are able to fix our priorities properly than these things will happen and some other aspects of matter which I don't hope there is no relationship and that perhaps promped that question by the spokesman according to the official thing, the whole thing came to knowledge of Govt. of India on 6th May. If I remember correctly within a couple of days of 6th May. The Defence Minister of India and the Prime Minster of India both hint that the Pakistan Govt. political Govt. is not involved in this. Second hint that came, I don't know in what background, the issue of

safe passage something events historically happen in the manner, which give rise to many questions, which can't be answered. Now, they will be answered in due time. The reason for this question to be posed or subdue to be expressed. We don't know or one thing we know that when Pakistan intruders went back our guns were silent and whether you can call it safe passage of whatever you may call.

Q.: The new regional party of Mr. Mufti, what do you think has the position to have many impact on the the future prospect of the Govt. in the State?

Shri Arjunsingh : My assessment is and with all due respects to Mr. Mufti because I thought he will apply more rational parameter for his action. This is an action which has no basis one can't understand why he had to do this and he has also not explained it. Only thing that has come out is that he wanted a discussion with the militance without any conditions what we have said in the Press. Just recollect India has faced such problem with militancy in this kind of situation where a section of our own people have sort to go out from the orbit of national thing and pose such problems. We saw it in the North East, Mizoram, Assam. We saw it in Punjab and I can tell you at least in two instances. I was directly involved both in Punjab and Mizoram. We never said that there won't be any discussion free and frank discussion. No condition was asked only that be maintained and I think we can't afford not to maintain it that whatever solution we want to find out, has to give within the parameter of the Indian constitution. If Muftiji can say that I don't see anybody disagree with him but he seems to be hinting there is the solution available beyond the pale of constitution. That the country is not prepared to accept. So far as impact is concerned. I have grave doubt whether he will have any impact in Jammu & Kashimr. outside का तो सवाल ही नहीं उठता।

श्री अर्जुनसिंह की आलोचना पर कुछ लोग सवाल उठा सकते हैं कि अपने कार्यकाल की घटनाओं का राजनैतिक लाभ तो सभी सरकारें अथवा पार्टियाँ उठाना चाहती हैं। यदि बी.जे.पी. ऐसा करती है तो इसमें ग़लत क्या है? श्री अर्जुनसिंह का कहना सिर्फ़ यह कि काँग्रेस पार्टी कारगील युद्ध का राजनैतिक लाभ उठाने में विश्वास नहीं करती। इस तरह के विचार उन्होंने 27 अगस्त 1999 के ऑब्जर्वर में प्रकाशित साक्षात्कार में प्रकट किए हैं। प्रस्तुत हैं इस साक्षात्कार के प्रमुख अंश। इसमें वे कहते है कि अगर प्रधानमंत्री सीधे अथवा परोक्ष ढंग से करगील-युद्ध का राजनैतिक लाभ उठाने का प्रयास न करें तो दूसरे भी इस बात को अनछुआ छोड़ सकते हैं। लेकिन स्वयं लगातार मुखर रहते हुए दूसरों से चुप रहने की अपेक्षा करना ग़लत है -

Q.: What do you think about rightly or wrongly this election Kargil has become on the major issues, what do you think what is the position of the congress party?

Shri Arjunsingh : The Congress Party never wanted to make Kargil a political issue and we exercise the ..... restraint while hostility is your own but it is obvious that from day one the BJP. wanted to politicise the Kargil issue and they did whatever they could under the circumstances now that hostility has ceased. We are not making it an issue but we have to answer the points raised by the BJP and also to both certain relevant points regarding this episode and the first thing that has been said on our behalf is that forget everything else. Let the nation know as to when did the Prime Minister himself come to know of the intrusions, in Kargil but today Prime Minister does not know this thing or is not prepared to take the nation into confidence either way. It is something which has serious implication and the stage of affairs about this national issue and the attitude of the cavalier attitude of the BJP.

Q.: Well, replying to Kargil whenever Congress has raised the question.....

Shri Arjunsingh: That shows total bankruptcy of this set up, we are talking of 1999, not of 48 this is deference of 50 years.

Q.: Recently the Army Chief thought you read the remarks of Army Chief about Kargil....

Shri Arjunsingh: Well, the feelings of the Army Chief are well understood but the first person to heed his request should be the Prime Minister of this country it can't it is not possible that the Prime Minister goes on making all the symbolic references and direct references and expects everyone else we keep quiet. If he doesn't make use of the issue no one will touch it.

बात कुछ तार्किक तो है कि भले ही सरकारें बहादुर सैनिकों के शौर्य का श्रेय लेने से चूकती नहीं किन्तु यह श्रेय वास्तव में तो सैनिकों, सेना अथवा किसी हद तक सेनाध्यक्ष का हो सकता है। होता भी है।

बहरहाल करगिल की लड़ाई का प्रसंग सिर्फ़ इस लिए कि वह देश की प्रतिष्ठा से जुड़ा हुआ प्रश्न तो है ही, कश्मीर से जुड़ा प्रश्न भी है। वह भूमि, वे पर्वत श्रेणियाँ, वे घाटियाँ और वे मोर्चे जहाँ यह युद्ध लड़ा गया, कश्मीर के ही तो हैं। वही कश्मीर जो हमारा अपना है। श्री अर्जुनसिंह की चिंता कश्मीर और उसके विकास के प्रति इतनी रही है कि उन्होंने उसकी समस्याओं को लेकर हमेशा जो भी संभव हुआ किया है, कहा है। संक्षेप में कहें तो श्री अर्जुन सिंह गीता में वर्णित वह कर्मयोगी हैं जो कर्म करने में विश्वास करते हैं। फल की कोई विशेष चिंता वे नहीं करते लेकिन प्रयास करते रहना अपना धर्म मानते हैं। वे भारत माता के पूजक हैं अर्थात् कहना न होगा कि भारत माँ के उज्ज्वल किरीट (कश्मीर) की चिंता वे न करेंगे तो कौन करेगा।

समग्र राष्ट्रीय विकास के लिए प्रतिबद्धता होनी चाहिए

श्री अर्जुनसिंह से धुवनारायण और विष्णु राजोरिया की लम्बी बातचीत

प्रश्न – बातचीत यहाँ से शुरू करें कि जब ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ स्वाधीनता आन्दोलन उफान पर आ रहा था, उस समय आप किशोर और युवावस्था की ओर बढ़ रहे थे तो उस समय आपके मन में जो आपका किशोर मन था, किस तरह के विचार और क्या आशंकाएँ थी।

श्री अर्जुनसिंह — 1942 में अगस्त के पहले हम लोग वाराणसी पहुँचे थे और वाराणसी एक प्रमुख केन्द्र था। पूर्वी उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन जोरों पर था। बनारस, बलिया में अनशन जो था और वहाँ पर एक प्रकार से युवाओं का और वयस्कों का दोनों का एक बहुत सक्रिय कांग्रेस का वहाँ पर केन्द्र, था। हम पढ़ते थे। वहाँ उदयप्रताप कालेज का नाम था वहाँ भी काफी युवा लोग थे जो राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े थे। उन लोगों से भी सम्पर्क रहता था, वहाँ होस्टल में रहता था। एक जागरूक संघ था चारों तरफ से जोश खरोश का वातावरणा था और खास तौर से अगस्त में जब आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक जब हुई तो गांधी जी ने 'करो या मरो' तथा 'अंग्रेजों भारत छोड़ो', का नारा दिया तो हम लोग भी सुनकर सोचते थे कि भाई ये क्या होने जा रहा है।

प्रमुख समाचार पत्रों से जानकारी मिली कि यह संग्राम तो कुछ दिनों से चल रहा हैं लेकिन उसका एक निर्णायक मोड़ आया हैं और देश को आजाद कराने का यह अंतिम प्रयास हैं, अंतिम नहीं वरन् निणार्यक प्रयास हैं। वहीं पर कालेज के अन्दर या कालेज के बाहर दो चार जुलूसों में हम लोगों ने भाग लिया। उनको सख्ती से प्रशासन ने रोक दिया क्योंकि यह बोर्डिग हाउस था। उसके बाहर हम लोगों को जाने की मनाही हो गई कालेज की तरफ से तो ये चर्चाएँ और बातें तो सब आती थी। पहले दफे मुझे अहसास हुआ कि देश किसी ऐसे प्रयास में लगा है जिस प्रयास में कुछ न कुछ योागदान सभी कर रहे हैं। आजादी और इसका उतना फर्क समझ में नहीं आता था। अगस्त के तुरन्त बाद हम लोग वाराणसी छोड़कर रीवा आ गए क्योंकि स्थितियाँ बड़ी वैसी बन गई थी। सुरक्षा की दृष्टि से वहाँ से शिफ्ट करके हम लोग रीवा आ गए और वहाँ के मार्तण्ड हाईस्कूल में नाम लिखाकर पढ़ने लगे हम, रीवा चूँकि देशी रियासत थी तो आन्दोलन उतना वहाँ नही था लेकिन उसका किसी न किसी रूप में तो असर था ही।

प्रश्न – उस समय के जो टीचर थे वह आप लोगों का आजादी के प्रति किस तरह से प्रेरित करते थे उनकी क्या भावनाएँ होती थी। उससे आप प्रेरित हो उन शिक्षकों को क्या आप आज भी याद करते हैं?

श्री अर्जुनसिंह — शिक्षकों की ओर से तो जरूर इस प्रकार का एक तरह से शांत रूप से प्रेरणा थी। एक आध दो लोग थे जो बिल्कुल खुलकर आजादी के आन्दोलन के समर्थक थे। हमारे ऊपर सबसे ज्यादा असर पड़ा वह हमारे व्यक्तिगत शिक्षक थे। हमारे पिताजी ने पंडित बृजवासीलाल पाण्डे को हिंदी पढ़ाने के लिए रखा था। वह हम लोगों के साथ 1937 थे। 36 में जब हम लोग इलाहाबाद में भर्ती हुए कांवेंट स्कूल में और वह केवल इसलिए रखे गए थे वहाँ कि हम लोग दिन में एक घण्टे विशेष अनुमति लेकर कांवेन्ट स्कूल से, वो आकर हमें हिन्दी पढ़ाते थे और वो चर्चाएँ करते थे। खास तौर पर हमारे धार्मिक संदर्भ में और हमारे सांस्कृतिक संदर्भ में क्योंकि वह स्कूल तो पूरी तरह से अंग्रेजी स्कूल था तो वह हम लोगों की सांस्कृतिक धारा टूटे ना इसलिए पंडितजी का वहाँ विशेष तौर पर अनुमति लेकर वहाँ रखा गया था। वह काफी इस विषय में सक्रिय थे और वहीं 1937 में एक दिन उन्होंने

कहा कि कल परसों यहाँ इलाहबाद में गाँधी जी और पंडितजी आ रहे हैं। हम लोगों को इसका ज्ञान नहीं हुआ कि गाँधीजी कौन हैं जो आ रहे हैं, पंडितजी कौन है जो आ रहे हैं तो वह बोले उनको देखने चलोगे। हमारे बड़े भाई भी थे, हमारे छोटे भाई भी थे। तीनों लोग पढ़ते थे वहाँ, तो कहा हम लोग चलेंगे तो आपको हेड मास्टर से पूछना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मैं उनसे तो नहीं पूछ सकता। एक समय तो दिमाग में हुआ कि ऐसी क्या बात है कि इन लोगों से मिलाने के लिए भी पंडित जी इजाजत नहीं लेना चाहते। भाई कोई गलत काम हैं तो मैंने पूछा उनसे कि क्यों नहीं अनुमति लेना चाहते उन्होंने कहा कि ये लोग नही समझेंगे। ये कांवेंट स्कूल हैं। हम लोगों ने कहा कि हम तो चलना चाहते है लेकिन अनुमति आपको लेना पड़ेगी। हम लोग तो कुछ नही कहेंगे तो वह बोले कि ठीक हैं मैं वो देख लूँगा। जैसे भी हो अनुमति ली हो अवसर था कमला नेहरूजी के नाम पर वहाँ एक अस्पताल का शिलान्यास करने गाँधीजी गए थे और पंडितजी भी उसमें आए थे। तो हम लोग पहुँचे तो देखा कि वह सभा थी। सब बैठे थे और बच्चों को आगे बिठा दिया जमीन पर और बाकी कुर्सी पर सब बैठे थे। तो और बीच से रास्ता था मंच तक आने का जब टाईम हुआ तो गाँधी जी आगे-आगे, पीछे पंडितजी और बाकी सब लोग चलते हुए आए तो कौतूहलवश हम लोगों ने भी देखा?

प्रश्न– अच्छा ठीक करीब-करीब क्या उम्र रही होगी उस समय जब आपने बापू को पहली बार देखा?

श्री अर्जुनसिंह - सात वर्ष की।

प्रश्न – तो पहली बार का अनुभव याद है कि बापू को देखते हुए आपको क्या लगा?

श्री अर्जुनसिंह – जाते हुए तो नहीं, आते हुये जब वो मंच पर चढ़ने लगे तो जैसी वह धोती पहनते थे वह धोती खुल गई पीछे से जल्दी से पंडितजी ने उसको फिर से ठीक कर दिया तो ये हम लोगों को बड़ा ताज्जुब लगा कि ये क्या हो रहा है। फिर भाषण क्या हुआ याद नहीं। वहाँ से चलने लगे तो वहीं पर एक कतार थी वहीं पर हम लोग खड़े थे तो उधर से आते-आते हम लोगों के सामने पहुँचे गाँधीजी तो ऐसे देखा। हम बच्चे थे वहाँ और हम लोग बाकायदा अपनी टाई जो पहनते थे स्कूल में तो ऐसे ठिठककर एक मिनट रूक कर उन्होंने हमारी टाई पकड़ ली मुझे लगा कि क्या करूँ न तो छुड़ा सकूँ और खड़े रह गए वहाँ उन्होंने कहा ये क्या है। जवाब भी नही दिया हमने फिर आगे निकल गए चले गए। जब समारोह खत्म हुआ तब हमने पंडितजी से पूछा कि आप कहाँ लाए थे हमको और ये कौन लोग है तब बताया उन्होंने।

प्रश्न – अच्छा हम लोग सोचते हैं कि जब आप वयस्क हुए और चूँकि विंध्य प्रदेश का एक रियासती और उस तरह का कहें कि सामंती परिवार था उसकी एक खुशबू थी। वयस्क होते होते समाज के प्रति, सत्ता के प्रति आपका दृष्टिकोण विकसित हुआ ये कैसे इसके क्या कारण रहे कि अब सीधे समाज से जुड़ा जाएँ और समाजवाद से जुड़ा जाएँ। ये कब पहली प्रेरणा आई और कैसे इसकी शुरुआत हुई?

श्री अर्जुनसिंह – नहीं, पहले मैंने जो आपको घटना बताई पंडितजी से पूछा कि उन्होंने हमारी टाई क्यों पकड़ी तो उन्होंने कहा कि तुम तो मानोगे नहीं वे इसके सख्त खिलाफ हैं इस तरह के वस्त्रों के। और सब लोगों ने ये वस्त्र जला दिए तो सत्याग्रह शुरू हुआ। उस समय पूरा अर्थ तो समझ में नहीं आया लेकिन मैंने टाई पहनना बंद कर दिया।

प्रश्न – क्या उसी दिन से?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ, बाद में बहुत लोग कहते थे कि क्या बात है तो कहा कि भूल गए बाँधना और फिर पंडितजी ने बहुत सी बातें बताना शुरू की। उससे एक संस्कार बना कि देश में कुछ ऐसा हो रहा हैं जो उचित नहीं

है और बहुत से लोग उसका विरोध कर रहे हैं फिर अखबारों में जो निकलता था तो उसकी भी जानकारी तो पढ़ते थे, तब से धीरे-धीरे एक चेतना ये शुरू हुई कि जो आज की युवावस्था हैं वह अनुकरणीय अवस्था नहीं है।

प्रश्न – तो यह भावना ग्रेज्युट होते-होते काफी स्ट्रांग हो गई?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ, तब तक तो काफी हो गया था फिर तो हमने एक सोसायटी भी बनाई, क्लब भी बनाया।

प्रश्न – भावनाओं की आजादी के लिए?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ, एक उन्हीं भावनाओं को और तो हम लोग कुछ नहीं कर सकते थे, चर्चा करते थे, डिबेट करते थे।

प्रश्न – उसका कोई नाम रखा था? जैसे मतलब वानर सेना वगैरह?

श्री अर्जुनसिंह – नहीं, ऐसा कोई नाम तो नहीं था वह डिबटिंग क्लब ही था। ये जो श्री गोविन्दनारायणसिंहजी के पिताजी थे, केप्टेन अवधेश प्रतापसिंह यह हम लोगों के परिवार के प्रति काफी निकट इनका संबंध था, इन्ही को हम लोग बुलाया करते थे उसमें गाइड करने के लिए और बीच-बीच में एक आध दिन उनको किसी ने कहा भी कि आप क्यों लड़कों को बर्बाद कर रह हैं तो वह बोले कि हम कहाँ कर रहे है वह तो खुद ही कर रहे हैं।

प्रश्न – अच्छा उस समय कांग्रेस का एक उठाव था और तमाम बातें थी लेकिन सीधे कांग्रेस को ज्वाइन न करते हुये आपने निर्दलीय भूमिका को राजनीति में आने के लिए क्यों चुना?

श्री अर्जुनसिंह – नहीं-नहीं उसके लिए एक दुर्भागयपूर्ण घटना जिम्मेदार हैं। मैं यह समझता हूँ अगर मैं ऐसा नहीं करता तो मेरा जो व्यक्तित्व था उसको आप कह सकते हैं कि आत्मशक्ति वह पूरी तरह से विकसित नहीं होती क्योंकि बीच में कुछ घटनाएँ हुई। हमारे पिताजी को कांग्रेस का टिकट मिल रहा था 1947-48 के चुनाव में और 51 के चुनाव में। पहला चुनाव तो 51 में हुआ इस समय मैं कालेज में था, कॉलेज में मैं प्रेसीडेण्ट था। पंडितजी आए थे अपने इलेक्शन टूर में तो उन्होंने जो रीवा में भाषण दिया। इन लोगों ने कुछ शिकायत की होगी कांग्रेस के लोगों ने जिसमें पंडित शम्भूनाथजी और कप्तान साहब, नर्मदा प्रसाद सिंह सभी थे तो मंच पर से पंडितजी ने एनाउंस कर दिया। हमारे पिताजी का नाम लेकर कि ये हमारे कांग्रेस के केंडीडट नहीं है और नीचे मैं कालेज प्रेसीडेण्ट की हैसियत से माला पहनाने के लिए खड़ा था।

प्रश्न – मार्तण्ड कॉलेज था उसकी तरफ से?

श्री अर्जुनसिंह – नहीं, दरबार कॉलेज। अब बड़े असंमजस में हम पड़े। लेकिन पंडितजी को हमने माला पहनाई और चल दिए। उन्होंने तो कुछ कहा नहीं लेकिन उस घटना का मुझ पर असर पड़ा उस समय मैं 21 वर्ष का था तो वो अभियान में मैं जुटा था पिताजी के, अभियान तो शुरू हो चुका था। अब स्वभाविक था कि पंडितजी ने इस तरह की घोषणा कर दी तो कांग्रेस उम्मीदवार का सपोर्ट तो करता नहीं पिताजी हार गए करीब 1000 वोटों से एक समाजवादी पार्टी के केंडीडेट के खिलाफ। वह बात मेरे दिल में थी। तो कांग्रेस के साथ तो हम पूरी तरह से प्रभावित थे लेकिन ये जो व्यक्तिगत अनुभव हो गया इससे थोड़ी सी मन में खटास आ गई। तो जब 57 का चुनाव आया तब तक मैं चुनाव लड़ने लायक हो गया था तो केप्टेन अवधेश प्रतापसिंहजी ने कहा कि भाई तुमको लड़ना है मैंने कहा मैं नहीं लड़ूँगा लेकिन वे बोले बेवकूफ हैं। इस समय तो कांग्रेस के नाम से लेम्पपोस्ट भी जीत जाता है, उस वक्त, मैंने कहा कप्तान साहब मैं तो नहीं लड़ूँगा। डॉक्टर सुशीला नायर जो पर्यवक्षक बनकर गई थी, विंध्य

प्रदेश में उनसे कप्तान साहब ने कहा कि ये इस कांस्टीट्यून्सि से जीत सकता है लेकिन वो अभी अड़ा हुआ है तो आप बुलाकर कुछ कहिएँ तो डॉक्टर नायर ने बुलाया और पूछा उन्होंने तो मैंने कहा माफ कीजिए मैं कांग्रेस के टिकट पर तो चुनाव नहीं लड़ूँगा आप कहेंगे तो नही लड़ेंगे मगर लड़ने का इरादा तो है, मगर इंडीपेंडेंट केंडीडेट, तो डॉक्टर सुशीला नायर ने कहा तब उनको किसी ने बताया होगा कि ये सब घटना घटी है तब उन्होंने मुझसे कहा दूसरे दिन कि भाई मै समझती हूँ। मै कह तो नहीं सकती कि कांग्रेस के खिलाफ लड़ो पर आई रिस्पेक्ट यूवर जजमेण्ट और फिर मै इंडिपेंडट केंडीडेट लड़ा और जो मुनिप्रसादजी शुक्ल थे कांग्रेस के उम्मीदवार उसी कांस्टीट्यून्सि से, तो मै जीता और उनकी जमान जब्त हुई, हम असेम्बली में आए।

प्रश्न – आप कितने वोट से जीते थे निर्दलीय के रूप में ?

श्री अर्जुनसिंह – उस समय वोट ज्यादा पड़ता नहीं था।

प्रश्न – कम होता था तो वोट तो वैसे भी गिने ही जाते होंगे।

श्री अर्जुनसिंह – बीस-पचीस हजार से ।

प्रश्न – जिज्ञासा होती है जिसे आप आजकल तो जैसे जो निर्दलियों की भूमिका हैं वह बहुत अजीब सी हो गई है क्योंकि दलों का इतना चक्रव्यूह है, लेकिन उस समय जब देश नया-नया आजाद हुआ था और आप एक निर्दलीय विधायक के रूप में हाउस में आए होंगे तो जाहिर है एक तरफ़ अकेलापन होता होगा एक निर्दलीय के रूप मे या उस समय इतनी स्वछंदता आपको मिली थी। क्या आप वैसे ही सुने जाते थे जैसे अन्य दलों की बात सुनी जाती थी?

श्री अर्जुनसिंह – अब वैसे तो वातावरण आज से बहुत भिन्न था लेकिन वहाँ असेम्बली में आने के बाद भी करीब 15 विधायक थे निर्दलीय और वही जो एक कुदरत की फितरत होती हैं सब इकट्ठे होने लगे हम लोगों ने एक इंडिपेंडेंट ग्रुप बना लिया।

प्रश्न – गुट ही गुट में बदले?

श्री अर्जुनसिंह – हम लोगों ने बना लिया ग्रुप। हमको चुन लिया उन लोगों ने उसका लीडर और फिर असेम्बली में हम लोगों को एक स्थान मिल गया बैठने को ग्रुप के हिसाब से और उस वक्त तो कांग्रेस होती थी और अपोजिशन में जो भी पार्टी हो बहुत कम।

प्रश्न – सीधे बाद में आपको कांग्रेस में आने की प्रेरणा कहाँ से आई?

श्री अर्जुनसिंह – देखिए कांग्रेस से मैं दूर तो कभी नहीं था। जहाँ तक वैचारिक रूप से और सैद्धान्तिक रूप से विचार धारा तो वही थी।

प्रश्न – बाकायदा ज्वाइन करने की प्रेरणा कहाँ से मिली।

श्री अर्जुनसिंह – नहीं वह तो फिर मैंने ही स्वयं 1960 मार्च में पंडितजी को एक पत्र लिखा।

प्रश्न – करीब-करीब आप 30 वर्ष के रहे होंगे उस वक्त?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ तो मुझे ऐसी कुछ कल्पना नहीं थी कि जवाब आएगा।

प्रश्न – इसमें शायद संपत्ति का ब्यौरा देने का भी प्रस्ताव आया। विधान सभा में आपका सबने विरोध किया फिर पत्र वगैरह लिखा गया?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ कुछ ऐसे ही संदर्भ है तो उन्होंने बुलाया तो हम वहाँ अपनी पत्नी के साथ गए। पंडितजी

ने फिर स्पष्ट कहा कि इस वक्त सबको मिलकर काम करने का समय हैं। ठीक हैं हम तो चाहते ही थे 10 मार्च की बात हैं तो वहाँ से लौटकर आया तो भोपाल में तब मैंने कांग्रेस के लोगों से पूछा कि कैसा होता हैं कांग्रेस में कैसे जुड़ा जाता हैं तो उस वक्त तो सबका अपना-अपना दृष्टिकोण रहता हैं तो विंध्य प्रदेश के लोगों ने सोचा कि ये कांग्रेस में आ जाएगे तो नया वो शुरू हो जाएगा पूरी तरह से मुझे कोई बताए नही और मैंने फिर चिट्ठी लिखी पंडितजी को कि यहाँ तो हमको कोई कांग्रेस में आने नहीं देता और मैंने एक फार्म जो होता हैं उसमें दस्तखत करके भेजा उनके पास।

प्रश्न — सदस्यता का फार्म?

श्री अर्जुनसिंह — तो उत्तर आया कि मैंने तो आज तक किसी को सदस्य बनाया नहीं लेकिन मैं इसका इंतजाम कर दूँगा। उन्होंने फिर डाक्टर काटजू को फोन लगाया होगा। उन्होंने मुझे बुलाकर विधिवत सदस्य बनाया।

प्रश्न — अच्छा उन्हीं दिनों आपकी इंदिरा जी से मुलाकात हुई या उसके बाद?

श्री अर्जुनसिंह — नही इंदिरा जी से मुलाकात इसके बाद हुई। सम्पर्क में मैं आया तो पंडित जी आया करते थे आनंद भवन में प्रति वर्ष जाड़ों के समय। वहाँ मैंने अनुमति माँगी कि हम अपने पूरे परिवार को लाना चाहते हैं उन्होंने कहा ठीक हैं आओ, गए हम लोग, ये राहुल के साथ वहाँ महीने एक रहे होंगे।

प्रश्न — 6-7 वर्ष के रहे होंगे राहुल उस समय।

श्री अर्जुनसिंह — हम लोग बैठ गए। यह हल्ला मचाने लगे हमको भूख लगी हैं। अब खाना क्या मिलेगा लौटकर चलते हैं तब मिलेगा। नहीं आप रूकिएँ हम तो जाते हैं, हमने कहा कैसे जाओंगे, यह बात चल ही रही थी कि पंडितजी आ गए बच्चों को तो वो वैसे ही प्यार करते थे। तो वे उसे ले गए कमरे में क्या चाहते हो, हमको भूख लगी है ये लोग खाने को नहीं दे रहे हैं, तभी इंदिराजी को देखा पंडित जी ने और कहा इन्दू खाने को लाओ इसके लिए। फिर केला वेला लाकर दिया तभी पहली बार देखा इंदिरा जी को मैंने।

प्रश्न — ये माहौल के बाद धीरे-धीरे चूँकि आप शुरू से बहुत अध्ययनशील भी रहे हैं तो कुछ न कुछ तो जो अपने समय के उस जमाने के पौराणिक चरित्र या आधुनिक उपन्यास का चरित्र हमेशा कुछ चरित्र किसी न किसी जीवन में प्रेरणा स्रोत बनते हैं तो आप किन चरित्रों को याद कर के चाहे वह पुराण से हो या आधुनिक ग्रंथों से हो या अपने देश के हो या दूर दुनिया के देश के हो क्योंकि जरूर वे कोई न कोई चरित्र प्रेरणा के कारण रहे ही होंगे ऐसा हम सोचते हैं और एक नहीं अनेक होंगे।

श्री अर्जुनसिंह — देखिए कांवेंट में पढ़ने की वजह से हम लोगों का मानसिक दृष्टिकोण बँटा हुआ था पूरी तरह से क्रिश्चयन एनवायरमेण्ट में रोज सुबह चर्च जाना शाम को चर्च जाना वहाँ का जो कार्यक्रम वगैरह होता था उसमें शामिल होना एक तो यह वातावरण था और पंडित जी को पिताजी ने वहाँ रखा था वो जब आए तो उन्होंने दूसरी चीजें बताना शुरू कर दी। कभी रामायण कथा, तो कभी महाभारत कथा। कथा में द्वंद्व तो नहीं कहूँगा लेकिन एक वातावरण अशांत जैसा था।

प्रश्न — आपके साथ भी हो रहा था कि क्या है?

श्री अर्जुनसिंह — हाँ कि ये क्या है? लेकिन जब घर आया करते थे छुट्टियों में तब हमारे एक और गार्जियन थे। गर्मियों की छुट्टियाँ तब हुआ करती थी। गर्मी में पहले बाहर निकलना बहुत मुश्किल होता था वो खस की टट्टी वगैरह लगाकर रखते थे लेकिन उस उम्र में नींद तो आती नहीं कि घुसे रहे घर के अन्दर। वहाँ रोककर रखने के लिए

आनंद प्रताप सिंह नाम था उनका, को रखा था वो रामायण या महाभारत का पाठ किया करते थे।

प्रश्न – क्या प्रतिदिन?

श्री अर्जुनसिंह – नहीं रोज नहीं। तो उसमें थोड़ा इंट्रेस्ट बना रहता था तो हम लोग धूप में नहीं निकलते थे। मतलब उनका यही था कि ये लोग कमरे में रहे बाहर न जाय तो एक तो वो छवियाँ मन में आती स्कूल में तो चूंकि क्रिश्चयन वातावरण बिल्कुल शांतपूर्ण प्रारंभिक द्वंद्व नहीं है क्रिश्चयन रिलिजन में जैसा मैं समझता हूँ तो बायबल मे सेंटस थे और इन सबका था उसी से मिली जुली जो कहानियाँ थी, जॉन ऑफ आर्क का यह दृष्टिकोण कि धर्म मे हमें कोई लड़ाई झगड़े करने की जरूरत नहीं। कोई हमारे दिमाग पर प्रतिस्पर्धा नहीं थी क्रिश्चयनिटी वर्सेस हिन्दू और एक मौलवी साहब भी आते थे तो वह अपना अलग ही धर्म पढ़ाते थे।

प्रश्न – अच्छा तो आपकी अरबी वगैरह की शिक्षा हुई है अलग से?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ, इसी वजह से धर्म की वजह से मुझे कोई मानसिक तनाव कभी नहीं हुआ।

प्रश्न – धर्म को लेकर खास तौर पर?

श्री अर्जुनसिंह – और आगे चलकर तनाव बनाने की प्रक्रिया थी वह मुझे अस्वाभाविक लगी थी कि ये बनावटी चीज हैं।

प्रश्न – संतों को जो सहज स्वीकार वाली प्रक्रिया थी उसका संस्कार उसमें आ गया होगा। वो संत कबीर वगैरह ने धर्म को सहज स्वीकारने की बात की शायद वही कहना चाह रहे हैं आप।

श्री अर्जुनसिंह – देखिए, कबीर बाद में आए हैं। कबीर का नाम तो तब आयगा जब कविता पढ़ें उस वक्त तो वे कवि नही थे शुद्ध धार्मिक भावना का जो दर्शन, जो तनावमुक्त था उनको वह स्वभाविक स्वीकृति मिल गई।

प्रश्न – अच्छा एक बात और है आजकल तो बहुत ज्यादा हैं और आपका भी भरोसा रहा है। कई तरह के साधु प्रवृति के लोग होते हैं सन्यासियों में तो क्या आपको लगता हैं भाग्य की तरफ भी भरोसा किया जाना चाहिए।

श्री अर्जुनसिंह – भाग्य के ऊपर भरोसा अंध विश्वास तो नहीं बनना चाहिए और बल्कि एक स्टेज यह भी आई जब धर्म पर रिसर्च जो होती थी हिन्दी में, तो उसको उतनी मान्यता नहीं थी।

प्रश्न – एक तरह का लोकाचार कर्मकाण्ड भी कह सकते हैं।

श्री अर्जुनसिंह – कि इस वक्त बैठकर यह करना हैं उस वक्त बैठकर वह करना है तो वह उसमें एक दम से मेरी अरूचि थी।

प्रश्न – क्या शुरू से?

श्री अर्जुनसिंह – बल्कि यहाँ तक कुछ लोग कहने लगे कि वह नास्तिक है और लेकिन मैं नास्तिक हूँ यह तो महसूस नहीं करता था लेकिन इस प्रपंच में पड़ना आँखे मूँद कर बैठों, पूजा करो जनेऊ पहनकर, ये करो संध्या करो जो कि वो सब करना पड़ा स्कूलों में, स्कूलों में जो हम गए तो वो एक तरह से भारतीय पृष्ठभूमि थी वहाँ तो रोज आधे घण्टे संध्या होती थी चटाई पर बैठकर लेकिन कोई विशेष हमारे ऊपर वो तो था नहीं कि कोई खास काम करना है।

प्रश्न – इसलिए पूछा मैंने आजकल आप देखते होंगे। आपको हँसी भी आती होगी कि एक तरह से राजनेताओं के भाग्य की चर्चा भी बहुत होने लगी है।

श्री अर्जुनसिंह – हाँ।

प्रश्न – तो आपसे मैं जानने के लिए उत्सुक हूँ कि अगर लोकतंत्र में जनता की एक बड़ी भागीदारी है। जिसमें हम पार्टिसिपेशन करते हैं जिसके निर्माण में तो हम नेताओं के भाग्य को और जनता के भाग्य को कैसे जोड़ेंगे। इस बारे में आप क्या सोचते है क्योंकि जनता लोकतंत्र के भाग्य का निर्माण भी करती हैं अंततः?

श्री अर्जुनसिंह – देखिए, अब वो तो जनता का अधिकार हैं। अब तो जनहित किस प्रकार से उसका साधन हो ये परिस्थितियाँ और समय-समय की विचार धाराओं पर निर्भर करता हैं उसमें कौन राजनेता किस हद तक शामिल होता है उसको ये चीज रूचिकर लगती है, उसमें कुछ तो योगदान करता हैं ये उसके कर्तव्य वाला हिस्सा है। और सामान्य जन है उसको वो किस तरह से देखते हैं, ये मनःस्थिति की बात है। एक्चुअली इसको आप कहेंगे कि अंतर्मन में जाकर धर्म की जो परिभाषा उभरकर आई उसमें मुझे भगवान राम और जीसस काइस्ट में कोई फर्क नहीं लगता।

प्रश्न – आपने एक बार लिखा भी था मुझे याद है 'हृदय चिकित्सा देश सेवा' आपकी तो एक बहुत फेमस चिट्ठी है? एक दिलचस्प सवाल आपसे पूछते हैं कि चूँकि अब तो आप राजनीतिक गुरू हैं बल्कि आज क्या लम्बे समय से हैं आपको एक राजनीतिक गुरू माना ही जा चुका है। अगर हम आपसे पूछे कि आपका राजनीतिक गुरू कौन है?

श्री अर्जुनसिंह – देखिए, ये गुरू शब्द ये कोई बहुत साधारण शब्द नहीं है।

प्रश्न – गुरू माने टीचर जिसने आपको सचमुच राजनीति के संस्कार में दक्ष किया हो, प्रेरणा दी हो। मैं ऐसे उस गुरू की बात पूछ रहा हूँ कि अगर आपसे पूछे कि आपका राजनीतिक गुरू कौन हैं तो आप किसका नाम लेंगे। जिससे आपने राजनीतिक शिक्षा पाई हो।

श्री अर्जुनसिंह – देखिए किसी राजनीतिक व्यक्ति से तो मुझे यह कतई नहीं मिला, उचित, अनुचित और कर्तव्य इन तीन पंथ पर राजनीति होती है।

प्रश्न – क्या उचित, अनुचित और कर्तव्य?

श्री अर्जुनसिंह – ये तो पंडितजी से मिला।

प्रश्न – आपके गुरू प्राथमिक स्कूल के गुरू ही सिखा चुके थे यानि उस समय उचित अनुचित विवेक वगैरह की चर्चाएँ आप लोगों से किया करते थे?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ बिल्कुल।

प्रश्न – तो यूँ देखा जाय तो शिक्षक ही आपके गुरू रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह – बिल्कुल, बाकी और लोग मिले किसी से कुछ सीखने को मिला तो किसी से कुछ।

प्रश्न – मसलन आप कुछ राजनीतिक दर्शनों के सम्पर्क में कभी न कभी आए होंगे। जिसके पश्चात कुछ राजनीतिक दर्शन दिए होंगे?

श्री अर्जुनसिंह – नहीं फिर तो किताबें पढ़ी तो उसमें सभी अलग-अलग फिलासफर की पोलिटिकस थी। लेकिन वो तो फिर एक स्वयं अपने विवेक से आदमी समझ सकता है।

प्रश्न – कुल स्थापनाएँ जिससे आपको क्या लगता है कि अरस्तु हो या गांधी जी तक आते-आते आपको किन्हीं ऐसी स्थापनाओं ने प्रभावित किया हो कि हम कहीं जीवन में उतार ले, उसे सीखना चाहिए उसके लिए प्रयास करना चाहिए। ऐसे कोई विचार दृष्टियों से आप प्रभावित हुए हो।

श्री अर्जुनसिंह – एक तो गांधी जी का और पंडितजी का और अंग्रेजी पाश्चात्य महान नेताओं की फिलासफी

हमारे सबजेक्ट थे और उनकी जो एक संगत विचार धारा थी वो विचारधारा व्यक्ति को अपने विवेक से फैसले करने में किस प्रकार सहायक होती है वो राजनीति के क्षेत्र में हो या किसी क्षेत्र में हो। अब एरिस्टाटल और प्लेटो का तो केवल हिस्टारिकल महत्व है।

प्रश्न – क्योंकि आप जैसा शुरू में कह रहे थे उसे जोड़कर पूछना चाह रहा हूँ कि स्कूल के वातावरण में एक तरफ ईसाईयत का प्रभाव था और घर आते तो धार्मिक संस्कार और वो सब बातें थी। भारत भी कुछ नियति जैसा लगता है उसकी राजनीति भी पूर्व और पश्चिम के द्वंद्व में जैसे खड़े होकर अपने देश को संचालित कर रहे हो आप तो विदेश के भी प्रतिनिधि मण्डलों में भी बहुत प्रारंभिक जमाने से जाते रहे हैं और तब भी आपने देखा होगा कि ये पूर्व और पश्चिम का द्वंद्व हैं। यह भारत का पिछली आजादी के बाद से ही अभी भी हम उसको शायद हल नहीं कर पाए बल्कि वो और उलझता ही जा रहा हैं। इस अर्थ में आपको क्या लगता है कि ये द्वंद क्या हम कभी हल कर पाएगे?

श्री अर्जुनसिंह – देखिए, द्वंद शब्द इसके लिए इस्तेमाल होना नहीं चाहिए। मेरा ख्याल हैं समस्याएँ होती है आखिर मनुष्यों से तो समस्या ही सामने आती हैं और उन समस्याओं का हल किस प्रकार से ढूँढा जाता हैं उसके पीछे क्या प्रेरणा सहायक होती हैं और काम करने में कौन सी विचारधारा निर्णायक होती हैं ये सब मिलकर इस चीज का फैसला करती है तो मैं नहीं समझता कि इसको हम द्वंद समझ सकते हैं। मानवीय रिश्तों को बनाने निभाने का और मानव कल्याण को आगे बढ़ाने के ये रास्ते तो अपने आप अलग हैं। इनमें हम धर्म को लाकर उलझ जाएँ कुछ यही है लेकिन यह आवश्यक नहीं है।

प्रश्न – जिस समय आप पहली बार जन सेवा के इस मार्ग पर आए तो उन दिनों के अनुभव क्या रहे। जब यह लगा कि एक दायित्व आप निभाने जा रहे हैं शायद 1963 के आसपास?

श्री अर्जुनसिंह – देखिए, वो तो तब तक तो राजनीति ने कई करवटें ले ली थी। मिश्र जी तो 1963 में मुख्यमंत्री बने। सम्पर्क तो मेरा उनसे 61 में हुआ था या यों कहिए कि 61-62 में तो अपने साथी के साथ मिलने गया था उनसे तो थोड़ा सा मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि यह व्यक्ति जरा दृढ़निश्चई है और जो बात करते हैं थोड़ा खुलकर करते हैं और साफ-साफ करते हैं लेकिन उनकी जो पहले की पृष्ठभूमि थी उसकी जानकारी मुझे थी कि ये पंडितजी के विरोधी हैं तो मेरी वो जो मानसिकता थी या मान्यता थी पंडितजी के संबंध में उसकी वजह से मैं एकदम से नहीं बन गया उनका अनुयाई।

प्रश्न – एक तटस्थ भाव रहा?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ बीच में एक दो ऐसी घटनाएँ हुई 62 के चुनाव में। डाक्टर काटजू चुनाव हार गए थे। अब डाक्टर काटजू ने कांग्रेस का सदस्य बनाया था और वैसे उनके परिवार से हमारे पारिवारिक संबंध थे करीब 15 साल पहले के और पंडितजी का उनसे सीधा संबंध था। काटजू साहब से काटजू भाई कहा करते थे पंडितजी, जब चुनाव हार गए तो बड़ा हम लोगों को आश्चर्य हुआ तब पता चला कि यह चुनाव तो उनको हरवाया गया है। तब पता चला कि इस चुनाव में ये भी होता है अपने लोगों को हरवाया भी जाता है।

प्रश्न – ये आपका एक तरह से पहला अनुभव था?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ और अब लोगों ने बताया कि किसने किया ये सब स्वभाविक तौर से मेरे विचार तो इस बारे में दूसरे थे। यह अनुचित है लेकिन अब जो राजनीतिक शिकंज़ा होता है उसमें तो तब तक फँस ही चुके

थे तो एकदम से बुरा लगने पर भी हम एकदम से विद्रोह कर दे यह स्थिति तो बन नहीं सकती थी पार्टी के अन्दर लेकिन तब तक काटजू साहब को फिर से टिकट दिया गया वह जीतकर आ गए। इस बीच में वह पार्टी के नेता तो बन ही गए थे लेकिन पंडितजी चाहते थे कि एक दफ़े काटजू साहब की प्रेस्टिज फिर से रिस्टोर हो।

प्रश्न — वह इस कार्य काल के बारे में आपसे गंभीरता और गहराई से जानना चाहता हूँ कि यह एक मोड़ जैसा है। पंडित द्वारकाप्रसादमिश्र जी के कार्यकाल में ही करीब-करीब उन्ही दिनों संविद की एक राजनीति शुरू हुई यानी जोड़तोड़ की राजनीति, अपने ही लोगों को अपने दल के लोग हराते हैं ये कोई दुष्प्रवृत्ति की शुरूआत उस समय हो रही थी। ऐसा मुझे लगता हैं और फिर जब संविद का खेल चला कि तोड़ लो कुछ और लोगों को ले आओ तो कहीं ऐसा तो नहीं लगता कि आज जो गठबंधन की जो भारत में राजनीति हैं यह उसकी शुरूआत थी जिसको क्रिटीसाइज किया गया था?

श्री अर्जुनसिंह — देखिए एनालेसिस करके उससे जोड़ने वाली बात तो शायद भौतिक रूप से बनाई भी जा सकती है लेकिन हमने जो आँखों देखा हाल हैं वह इससे बेहतर हैं तो जबसे सवाल आया है कि विधान सभा में चुनकर आ गए काटजू साहब नरसिंहगढ़ से वह सीट खाली रखी थी महाराज नरसिंहगढ़ ने। अब यह हुआ कि फिर से उनको लीडर बना दिया जाय। इसी के लिए वह पूरा खेल हुआ था। वहाँ भी मुझे जो राजनीति की कुटिल चाहें होती हैं देखने को मिली। पंडितजी का तो यहाँ से पूरा जो इरादा था कि काटजू चुनकर आ गए हैं स्वभाविक रूप से इनको मुख्यमंत्री फिर बना दिया जाय और एक दो साल रहकर फिर रिटायर हो जाएँगे लेकिन और लोगों की महत्वाकांक्षा के बीच में वो आ गया और सबसे बड़ी बात पंडित मिश्र की महत्वाकांक्षा उससे टकरा गई तो उन्होंने यह घोषणा कर दी कि यूनानीमस चुनाव होना चाहिए। डाक्टर साहब को अगर यूनानीमस नहीं चुना जायगा तो मैं चुनाव लड़ूँगा। एक तरफ भगवंतरावजी मण्डलोई, तखतमल जी, नरसिंहराव दीक्षित थे जो भिण्ड के थे, ये उनका एक ग्रुप था तो जब इन्होंने ये घोषणा कर दी तो मुझे थोड़ा सा संदेह हुआ कि जब काटजू साहब को बनना ही है तो चुनाव लड़कर आएँ या यूनानीमस आए उसमें क्या फर्क हैं। जब घोषणा यह है फिर पंडितजी और मेरी शंकाएँ सही निकली। जब चुनाव का समय आया तब नरसिंहराव दीक्षित ने तख्तमलजी का नाम प्रपोज कर दिया और उन्होंने कह दिया कि तखतमल जी लड़ेंगे तो यूनानीमीटी की बात खत्म हो गई। तब यह प्रश्न खड़ा हुआ कि तखतमल जी के खिलाफ कौन लड़ेगा। तो काटजू साहब ने पहले कह दिया कि मैं पार्टी में विवाद करने के लिए खड़ा नही होऊंगा नेक्सट पर्सन पंडित द्वारका प्रसाद मिश्र थे, लेकिन ये सब अचानक नहीं हुआ।

प्रश्न — ये सब सोची समझी राजनीति थी। मतलब यह कहा जा सकता है कि उस समय हाईकमान के साथ छेड़खानी की शुरूआत हो चुकी थी?

श्री अर्जुनसिंह — हाँ सही बात है।

प्रश्न — लेकिन ये जो कारण क्या रहा होगा कि कांग्रेस के अचानक 36 विधायक टूट गए?

श्री अर्जुनसिंह — वह बात तो बाद में आई॥

प्रश्न — नेहरुजी के विरोधी होते हुये भी पंडित मिश्र विधान सभा में कैसे आए कांग्रेस के टिकट पर?

श्री अर्जुनसिंह — वे कसडोल से लड़े और जीते। तब तक चाइनीज इनवेज़न 62 हुआ और इंदिरा जी के नजदीक मिश्र जी पहुँच चुके थे अपने अन्य प्रयासों से जिसमें कि दीक्षित जी का काफी बड़ा रोल था उमाशंकर दीक्षित का उनको वहाँ का वो बना दिया था गिलिफ मेजर्स का मेनेजर, मिश्रजी को जो चाइनीज इन वेज़न में जुड़ा हुआ एक

अभियान चल रहा था जब कसडोल बाय इलेक्शन आया तो वहाँ से टिकट दे दिया। उस टिकट में भी काफी खींचतान रही। हम लोग ये समझते थे कि टिकट इनको मिल गया तो ये जीत जाएँगे फिर तो ये सक्रिय रूप से बीच में आ जायँगे। ये किसी को नहीं बख्सेंगे। फिर तो इनको कोई रोक भी नहीं सकता, लेकिन इंदिरा जी की इच्छा होने की वजह से उनका खुलकर विरोध तो नहीं हुआ लेकिन अंदर-अंदर काफी विरोध हुआ और पंडितजी को थोड़े रिजर्वेशन थे उसी बीच में मिश्रजी ने हम लोगों से जो सम्पर्क बनाया था, गौतम जी थे, मैं था और अन्य लोग थे। ये सब को लोग थे जो मूलतः तो पंडितजी और इंदिरा जी के साथ थे और मिश्रजी ने मध्य प्रदेश की पोलिटिक्स में प्रवेश इंदिराजी के प्रभामण्डल के नीचे किया था।

प्रश्न — पंडितजी से तो उनकी एक स्थाई असहमति थी?

श्री अर्जुनसिंह — हाँ, किसी सीमा तक।

प्रश्न — मिश्र जी की?

श्री अर्जुनसिंह — नहीं, वह तो अलग था। लेकिन इंदिराजी के प्रभा मण्डल में मिश्र जी ने मध्यप्रदेश की राजनीति में प्रवेश किया तो पंडित जी भी कुछ नही बोल सकें। किसी एक स्टेज में विवाद हुआ और अंत में इंदिराजी ने उनसे जो भी शंकाएँ थी उनको शांत किया और उनको टिकट दिलवा दिया तो वह चुनाव प्रचार में भी आई थी। तो एक तरह से जो एंटी नेहरू का जो एक ठप्पा लगा था मिश्र जी पर वह काफी हद तक मिट चुका था। उनको इंदिरा जी का काफी समर्थन था।

प्रश्न — वह यही कारण हैं शायद कि इंदिराजी जो प्राइम मिनिस्टर बनी थी, उस समय इंदिराजी को पी.एम. बनाने में मिश्रजी ने जो भूमिका निभाई थी। उसमें आपकी भी भूमिका रही।

श्री अर्जुनसिंह — लेकिन जब डॉक्टर काटजू के सक्सेशन के टाईम पर ये रूख मिश्रजी ने ले लिया कि स्वतंत्र मतलब यूनानीमस डॉक्टर काटजू होंगे और कोई उनके खिलाफ लड़ेगा तो मैं उनसे चुनाव लड़ूँगा। ये फार्मूला जो उन्होंने स्वयं ही प्रचारित किया और फिर जैसा कि मेरा तो ऐसा मानना है कि मैं गलत नहीं हूँ। वह यूनानीमस न हो पाए तो इसकी भी रूपरेखा उन्होंने बना दी तो अपने आप स्वभाविक तौर से परिस्थितियाँ कुछ और बन गई और उसमें उन्होंने चुनाव लड़ा और जीत गए उस वक्त थोड़ा सा मैं मिश्रजी से अन्दर ही अन्दर बहुत खिन्न हो गया था इसी वजह से कि डाक्टर काटजू को इन्होंने बनने नहीं दिया और पंडितजी भी खिन्न थे। जब मैं दिल्ली आया तो डाक्टर शंकरदयाल शर्माजी ने मुझ से कहा कि भाई पंडितजी की तो इच्छा यह नहीं थी। उन्होंने कहा कि आप लोग सीनियर लीडर हैं जाकर कहिए जो कुछ कहना हो तो सबने मना कर दिया कि हम लोग पंडितजी के पास नहीं जाएँगे यह समझाने की काटजू साहब क्यों नहीं हुए डी.पी.मिश्र कैसे हो गए। मैंने कहा कौन जाएगा फिर सबने कहा आप ही जाओं और फिर मैं आया और पंडितजी से टाईम माँगा। दो दिन बाद टाईम मिला। जब मैं मिलने गया तो बहुत नाराज थे गुस्सा पंडितजी का बहुत प्रसिद्ध हैं उसके दर्शन हुए।

प्रश्न — उनके बारे में कहते हैं कि उनकी मीटिंग में तकिया उठाकर मार देते थे लोगों को?

श्री अर्जुनसिंह — पता नही तकिये का तो मुझे नहीं मालूम।

प्रश्न — उनकी एक तस्वीर मैंने देखी है वह जिस तकिये पर बैठे है वो उठाकर वही फेककर मारा किसी को?

श्री अर्जुनसिंह — जब मैं मिलने गया तो प्राइम मिनिस्टर का जो आफिस है साउथ ब्लाक में वहाँ गया था,

बैठे थे तो वहाँ जो पेपर वेट रखा था उसको ऊपर करके हाथ में पकड़ना इस हाथ से फेकना दूसरे हाथ से पकड़ना, यह प्रक्रिया चल रही थी। तुम लोग बिल्कुल नालायक हो, इतने इज्जतदार और फिर उनकी टोपी उछाल दी काटजू साहब को नहीं बना सकते थे तो क्यों कहा पहले से अब कह तो आए थे डाक्ट शर्मा वगैरह की हम लोग सब सम्हाल लेंगे अब जब नौबत दूसरी आ गई तो कहा हम लोग जाएँगे नहीं। हम पाँच मिनट तो सुनते रहे जो कुछ उनकी नाराजी थी जब वह थोड़े से शांत हुए तो मैंने कहा पंडितजी इसमें हम लोग क्या करें। आपको असली कहानी सुननी हो तो मै बताऊँ, शंकरदयाल क्यों नहीं आए क्योंकि सबसे ज्यादा उन्होंने ही ली थी जिम्मेदारी, तो मैंने कहा पंडितजी मैं तो नहीं जानता कौन क्यों नही आया, मैं तो आया अगर आप सुनना चाहे तो मैं सुना दूँ तो बोले बताओ, तो मैंने बताया कि इस तरह हुआ।

प्रश्न – इंदिराजी का नेतृत्व आने के बाद जैसा कांग्रेस में देश में नया युग बदलता हैं ये उनके बाद है, बीच में शास्त्रीजी का थोड़ा सा समय बीत गया तो इंदिराजी जैसा एक नए युग का पत्थर रखती हैं एक नया शिलान्यास करती है राजनीति में, देश के विकास में, इन तमाम चीजों में तो उस समय की स्थिति के बारे में हालाँकि उस समय बहुत राजनीतिक तिकड़मों का एक दौर भी शुरू होता हैं कांग्रेस का एक विभाजन भी होता है तो उस समय की परिस्थितियों के बारे में आप किस तरह से विचार करते हैं कि कांग्रेस के इस विभाजन की जरूरत क्या थी?

श्री अर्जुनसिंह – विभाजन की बात तो बाद में आई। आपने जो मिश्रजी की बात उस वक्त की तो जब मैं वहाँ से लौटा तो पंडितजी से मिलकर मुझे थोड़ा और भी आभास हो गया कि ये जो घटना वहाँ भोपाल में हुई है यह उचित नही थी। वो तो मैंने थोड़ी सी दूरी कर ली मिश्र जी से। तब वह चुने जा चुके थे चुनाव लड़कर तखतमल जी से। उन्होंने मुझे बुलवाया और कहा कि तुम चूँकि आते हो, मैंने कहा मुझे तो कोई द्वेष था नहीं और आप बन गए बस मेटर एण्ड। तो उन्होंने कहा कि ऐसी बात नहीं है और हमें तुम्हारी ज़रूरत है इसलिए कह रहा हूँ। मैंने कहा जरूरत होगी तो आप आज्ञा देंगे तो मैं हाजिर हो जाऊँगा। मेरा इरादा नहीं था उनकी केबीनेट में जाने का लेकिन फिर मुझे बाद में संकेत मिला कि उनकी केबीनेट ज्वाइन करूँ यह पंडितजी का इरादा है केबीनेट ज्वाइन कर लिए फिर बीच में बैठकर काम करने में जो निकटता आती हैं तो वह फिर उस प्रकार के संबंध उनसे डेवलप हो गए और प्रशासन के कई मामलों में तो वो निश्चित रूप से अनुभव और दृष्टिकोण बहुत ही स्पष्ट रहा। ये एक दो प्रशासनिक मामलों में मिश्र जी से मुझे जरूर सीखने को मिला। सैद्धांतिक रूप से जो उनकी बातें थी उनका यह कहना था कि कोई भी मंत्री किसी भी प्रशासनिक अधिकारी को अपने इतने निकट नहीं आने देना चाहिए कि जो तुम्हारी भावनाओं के बारे में जानकारी लेकर और फिर काम करें एक दूरी रखना चाहिए। दूसरा यह कि किसी भी ऐसे विषय पर जो निर्णय के लिए सामने आए उस विषय पर अधिकारी की राय पूरी तरह से आने देना चाहिए उसमें अपनी तरफ से कोई रूकावट नहीं आने देना चाहिए। ऐसा वातावरण नहीं बनाना चाहिए कि वह हिचकिचाकर सही बात अपने मन की नहीं कह सकें जब उसकी राय आ जाय तब तुम अपनी राय बनाओं तो कभी यह सवाल नहीं आयगा कि कोई ऐसा निर्णय हुआ है जिस निर्णय में या तो तुम पूरी तरह कंविंस नहीं हो या वो जो अधिकारी हैं वो कंविंस नहीं है कोई बीच का रास्ता निकालने के लिए कोई निर्णय लिया गया। अब उसी में भ्रष्टाचार होता हैं तो यह बात हमको बिल्कुल सही लगी और मैंने कोशिश की कि जहाँ भी कोई ऐसा विषय हो और जिन लोगों ने भी मेरे साथ काम किया मैंने किसी को भी कही जरा भी दबाव में डालकर राय नहीं ली कि उसको यह लगे कि हम यही राय चाहते हैं और मैं समझता हूँ एक तरह से कई बातों में मिश्र जी का मुझे लाभ मिला। युवक कांग्रेस का उस समय मैं अध्यक्ष था और पचमढ़ी में हम लोगों

ने सम्मेलन किया, इंदिरा जी को आमंत्रित किया गया था और बीच में तो प्रधान मंत्री शास्त्रीजी बन गए थे लेकिन हमने फैसला किया था कि इस सम्मेलन का उद्घाटन इंदिरा जी ही करेगी जब शास्त्री जी बन गए तो मिश्रजी ने कहा कि शास्त्रीजी को बुला लीजिए। मैंने कहा भाई बात जो तय हो गई वह तो वही रहेगी लेकिन चूँकि शास्त्रीजी प्रधानमंत्री बन गए थे अब उन लोगों को लगे कि इंदिराजी को कैसे बुलाएँ? उस लेबल पर जो थोड़ी सी वो होती है, मैंने कहा एक साल बाद सही, मैंने कह तो दिया लेकिन एक साल बाद इंदिराजी प्रधानमंत्री बन जायगी यह तो कोई संदर्भ था ही नहीं।

प्रश्न – यह तो कोई नही जानता था?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ, दुर्भाग्यवश एक घटना हुई पचमढ़ी सम्मेलन में इंदिराजी आई और श्री माधवराव सिंधिया और राजमाता सिंधिया ये लोग भी आए उस समय तो कांग्रेस में ही थे तो उस समय जो पचमढ़ी का सम्मेलन हुआ मैंने इन सभी को बुलाया सम्मान के साथ और यह सब किसी ने मिश्र जी से कह दिया कि ये एक सामंती गठबंधन बन रहा है। राजमाता सिंधिया, अर्जुनसिंह, फलाना, ढिकाना उनके कान तो चौकन्ने रहते ही थे उन्होंने डायरेक्टली तो हमसे नहीं पूछा लेकिन हमको ऐसा लगा कि इनको थोड़ा इस पर विश्वास हुआ है। खैर मुझे सफाई देने की जरूरत तो थी नहीं क्योंकि उस समय कुछ नहीं था, कुछ आधार ही नहीं था तो वह जो सम्मेलन हुआ और राजमाता और माधवरावजी वहाँ गए उसी भ्रम में मिश्र जी ने वहाँ जो भाषण दिया उसमें वह फूट के बीज डाल दिए जिसकी वजह से राजमाता ने संविद बनाई और पंडित मिश्र की सरकार को अपदस्थ किया।

प्रश्न – तो मिश्र जी ने ऐसा क्या कहा वहाँ?

श्री अर्जुनसिंह – मुझे ऐसा एक्जेक्ट तो याद नहीं वो सब इतिहास की बात हैं। वहाँ रिकार्डिंग की गई थी।

प्रश्न – आग में घी का काम उस भाषण ने किया?

श्री अर्जुनसिंह – वह अपना रास्ता अलग ही पकड़ लिया उन्होंने।

प्रश्न – लेकिन इतनी जल्दी देश के आजाद होने के मतलब करीब करीब समझ लीजिए 30 साल के अन्दर ये तोड़ फोड़ की राजनीति का जल्दी शुरू हो जाना एक तरह से आज की परिस्थिति में यह काफी नुकसानदेह सिद्ध हुआ।

श्री अर्जुनसिंह – हाँ, निश्चित रूप से इसमें कोई दो राय नहीं है।

प्रश्न – देश आजाद होते ही इतनी जल्दी टूट-फूट होने लगी।

श्री अर्जुनसिंह – और यह भी 36 लोगों ने अलग अपना दल बनाया तो मैं मिश्र जी के साथ खड़ा था, कल्पना यह थी कि मैं मुख्यमंत्री बनूँगा मिश्र जी को हटाकर पर गोविंद नारायण सिंह मुख्यमंत्री बन गए तब मिश्र जी को पता लगा कि उनको कितनी गलतफहमी थी।

प्रश्न — यानी आपके बारे में भी वो गलत राय पाल चुके थे?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ बिल्कुल।

प्रश्न – कि मुख्यमंत्री के उम्मीदवार तो आप हैं? अच्छा एक और उसी वक्त जल्दी तो नहीं लेकिन आपको उस रोज ही गलती का अनुभव हुआ मतलब अपने राजनीतिक उतराव बल्कि उसके पहले ही हुआ?

श्री अर्जुनसिंह – हाँ हुआ।

प्रश्न – तो आज की और उस जमाने के विरोध में उसकी रचनात्मकता में आप क्या अनुभव पाते हैं?

श्री अर्जुनसिंह – देखिएँ विरोध विरोध ही होता है। वह रचनात्मक तो नहीं होता लेकिन हाँ कुछ मर्यादाओं का पालन जरूर तब होता था आजकल तो मर्यादाएँ बिल्कुल ही नहीं बची।

प्रश्न – आप ऐसे समय विरोधी दल के नेता रहे हैं जब कांग्रेस एक तरह से क्राइसेस में थी और उसको सम्हाले रहना था तो उस समय कुछ चुनौतियाँ थी आपको विरोध के इस सब दायित्व का निर्वाह करते समय किस अनुभव से गुजरना पड़ा होगा?

श्री अर्जुनसिंह – नहीं मैं समझता हूँ मर्यादा का निर्वाह करने में कोई मौलिक कठिनाई नहीं होती। अगर व्यक्ति उसको उस रूप मे देखे क्योंकि मर्यादा का निर्वाह कभी गलत परिणाम नहीं ला सकता। आपकी व्यक्तिगत कठिनाईयाँ बढ़ सकती हैं, संघर्ष और तेज हो सकता है। परिणाम गलत नहीं हो सकता।

प्रश्न – हाँ भले ही फिर विलम्ब, देर भले ही लगे। अब हम सोच रहे हैं कि हम बात को थोड़ा सा बदले अगर आप कहे तो, हम थोड़ा सा रेस्ट ले लें एक दूसरे मोड पर आएँ।

श्री अर्जुनसिंह – चलिए जहाँ से आप चले।

प्रश्न – मैं सोच रहा हूँ कि आप ऐसे राजनीतिज्ञ है कि जिन्होंने नेहरू परिवार की तीन पीढ़ी का साथ निभाया हैं स्वयं नेहरूजी, इंदिरा जी और राजीव जी। और राजीवजी के तो आप एक मार्गदर्शक और सलाहकार के रूप में भी आप एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका में रहे हैं लेकिन राजीवजी का जो असमय बिछुड़ जाना है जबकि उनके स्वप्न के निर्माण में आपकी भूमिका रही हैं तो आप राजीवजी के स्वप्न को किस तरह लेते हैं कि राजीवजी आज होते तो दोबारा तो प्रधानमंत्री बनते अगर वह असमय न छिन जाते तो आज का भारत शायद कुछ अलग तरह का भारत होता।

श्री अर्जुनसिंह – हाँ निश्चित तौर पर इसमें कोई दो राय नहीं है।

प्रश्न – इसमें क्या कल्पनाएँ थी?

श्री अर्जुनसिंह – एक तो वह चापलूसों और सही लोगों के बीच में पहचान करने लगे थे जो उनके लेवल के नेता के लिए बहुत जरूरी होता है क्योंकि चापलूसी के द्वारा जो लोग निकटता पाते हैं और उस निकटता को सत्ता में परिवर्तित करते हैं और उसमें जो होता हैं वह देश के लिए हितकर नहीं हो सकता। उस बात को उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव करके समझ लिया था।

प्रश्न – अपने पहले पाँच वर्ष के काम करते हुए क्योंकि आम जन में यह दुःख है राजीव गांधी को लेकर, मैं भी कई लोगों से बात करता हूँ कि जैसे ही उन्होंने सुरक्षा का घेरा तोड़ा और वह एक तरह की बेचेनी को अनुभव करते रहे तो वह जब सचमुच जनता के बीच में गए तो वह असुरक्षित हो गए। यह दुःख एक तरह से भारत के उन लोगों को सताता है जो राजीव गांधी के ड्रीम में एक तरह का भरोसा करते थे तो उनकी उन कल्पनाओं को आप किस रूप में देखते हैं कि आप आज जो कांग्रेस की स्थिति हैं आप अक्सर कहते भी रहे है पिछले ही दिनों आपने कुछ ताजी बात चीत में कहा है कि वह ड्रीम पूरा नहीं हो रहा है तो वह ड्रीम एक्चुअली क्या था?

श्री अर्जुनसिंह – वह ड्रीम जितना मैं समझ सकता हूँ मैंने तो वह यह जाना था कि देश को आधुनिक युग में अपनी पहचान और अपना पैर जमाने में बहुत विश्वास करते थे और यह तो हम भी स्वीकार करेंगे कि किस तेजी से जमाना बदल रहा है अगर इसका भान उन्होंने न कराया होता तो जितना कुछ हम आज कर सके वह भी नही कर पाते। अब ये लोग बी.जे.पी. इस बात को मानती नहीं लेकिन दूसरा यह कि कुछ ऐसी समस्याएँ देश की है जिसे

थोड़े से थोड़े समय में हल करना अनिवार्य है जैसे इंदिरा जी ने खाद्यान्न के बारे में आत्मनिर्भर बनाने की बात की तो उससे पूरा परिदृश्य ही बदल गया भारत का विश्व के अन्दर।

प्रश्न — हरित क्रांति?

श्री अर्जुनसिंह — हाँ उसी प्रकार से राजीवजी ने भी कुछ प्वाइंटस रखे थे जिसको उन्होंने मिशन का नाम दिया जो आज लोगों को मालूम हुआ है कि यह जो परमाणु बम का विस्फोट वाजपेयीजी ने आते ही आदेश दिया यह आदेश तो राजीवजी का दिया हुआ है। अब वह सब तैयारियाँ तो पूरी थी इनको केवल हाँ कहना था। नरसिंहरावजी भी कर सकते थे लेकिन नरसिंहरावजी की हिम्मत नहीं पड़ी। अमेरिका ने उनको एकदम से दबा दिया था इन्होंने इससे पहले कि कोई कुछ कहें कर दिया उसके बाद आया दबाव इनके अन्दर वह तो एक घटना हो चुकी। शिक्षा के क्षेत्र में राजीवजी ने जो किया मैं समझता हूँ बहुत मौलिक प्रयोग था और वह प्रयोग बीच में तो भटक गया है लेकिन भटकाव के बाद भी उसकी कुछ न कुछ रूपरेखा बनी हुई है यह सब बाते वह दोबारा प्रधानमंत्री बनते तो और व्यवस्थित और मजबूती के साथ होती।

प्रश्न — जैसे पानी की चिंता भी सबसे पहले राजीव गांधी ने उठाई थी। आज जो क्राइसेस हैं पानी को बचाने के लिए मुझे याद हैं संभवतः आपका भी स्मरण होगा? इसकी चिंता राजीवजी ने की थी।

श्री अर्जुनसिंह — मुझे याद है।

प्रश्न — उसी मिशन में उन्होंने पानी की रक्षा की बात की थी और दूरसंचार वगैरह की तो की ही थी। एक और चीज जो आपसे जुड़ी हुई है कि आपकी जो छवि हैं वह बिल्कुल सांप्रदायिकता विरोधी राजनीतिज्ञ की छवि है और आज जो स्थिति है कि राजनीति कई मोर्चो पर देश का अहित कर रही हैं और आपने यह लड़ाई अलग-अलग मोर्चो पर स्वयं ही लड़ी है। मुख्यमंत्री रहते हुए और दूसरे पदों पर रहते हुए आज आप इस लड़ाई को क्योंकि मुझे लगता है यह लड़ाई ज्यादा कठिन भी होती जा रही हैं, ज्यादा मुखर भी होती जा रही है, चुनौतीपूर्ण हैं, आप क्या सोचते हैं, कैसे लड़ी जाना चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह — देखिए, यह लड़ाई की संज्ञा तो इसको नहीं देनी चाहिए। सबसे पहली बात तो यह है लड़ाई तो वह हैं जो दो पक्षों में लड़ाई होती हैं जिनको इस बात की कोई चिन्ता नहीं की परिणाम क्या हो लेकिन ये जो संघर्ष है इससे हम इस दृष्टिकोण से नहीं चल सकते देश को चाहे जो हो जाय हमको तो यह करना है। देश का जो कुछ होना है वह भी इसके संघर्ष का अंग होना चाहिए। मैं समझता हूँ कि आज जो ये अलग-अलग विचार धीरे-धीरे आम जनता के बीच में इनके बारे में समझ आनी शुरू हो गई और आम जनता इसको राजनीतिक लड़ाई का रूप नहीं देना चाहती। यही वजह है कि वाजपेयी जी और अडवाणीजी आज यह कह रहे हैं कि हमें हिन्दुत्व को अपना वो साम्प्रदायिक मुद्दा नहीं बनाना क्योंकि हिन्दुत्व को मुद्दा बनाकर हिन्दुत्व को साम्प्रदायिक कट्टरता की उस सीमा पर ले जाकर उन्होंने पहुँचा दिया था और अडवाणी जी स्पष्ट बोलने वाले हैं कि हम तो जहाँ तक पहुँचे इसकी वजह से पहुँचे, यह तो स्वीकार भी किया उन्होंने लेकिन अब उसी स्वरूप में आगे ले जाना श्रेयस्कर नहीं मानते क्योंकि अब अगर आधार बनाकर चलेंगे तो देश को उसका बहुत नुकसान उठाना पड़ेगा।

प्रश्न — एक सवाल छूट गया था बीच में। यह उस समय की घटना है कि जब हम दोनों शुरू में बात कर रहे थे कि इंदिरा जी के कांग्रेस में आने से एक नए युग की शुरूआत हो रही थी और वह नया युग भारत में कुछ इस तरह से भी शुरू होता है तो वामपंथी विचारधाराओं के प्रभाव में शुरू होता है बल्कि थोड़ा पहले से उसका प्रभाव

तो था ही पंडित जी के जमाने से और कई तरह के अंतर्विरोध कुछ राजनीतिक तिकड़म का समय जिस वक्त शुरू होता है एक तरह का तो इसके बीच में एक रास्ता बनाते हुए इंदिरा जी चली और चूँकि आप अपने समय बहुत महतवपूर्ण भूमिका में रहे है? आप क्या सोचते हैं।

श्री अर्जुनसिंह – नहीं, मेरी भूमिका तो ऐसी नहीं थी। यह सौभाग्य जरूर था कि प्रधानमंत्री बनने से पहले यहाँ एक इंदिराजी ने अपने चारों तरफ एक अनौपचारिक ग्रुप बना रखा था, कोई ग्रुप नहीं था कि किसी का खास योगदान हो, किसी का काम हो मिलने बैठे हैं, चर्चा करने का उनमें यही सब बातों पर चर्चा होती थी और उससे फिर कुछ अपने निष्कर्ष भी निकालती थी या जो उनके विचार रहते थे उनको सबके सामने रखती थी कि वह लोग उस पर टिप्पणी कर सके, उसकी खिलाफत कर सकें तो उसको सुधारने के स्वरूप देने की कोशिश करते थे। यही कारण मै समझता हूँ जिसकी वजह से इतनी ब्राड रेंज इशू थे। इतना जल्दी प्रधानमंत्री बनने के बाद उनका ग्रिप हो गया क्योंकि उन सब पर किसी न किसी समय विचार-विमर्श किया था, तर्क किए थे लोगों ने अपोज किया था। सब प्रक्रिया हो चुकी थी उस ग्रुप में मैं भी था यहाँ तो बैठने आया करती थी महीने में एक दफे और भी लोग थे।

प्रश्न – प्रमुख कौन थे?

श्री अर्जुन सिंह – प्रमुख उसमें दिनेश सिंह थे, गुजराल साहब थे, रमेश थापर थे और कुमार मंगलम थे एक कोई राजस्थान का था, एक बम्बई के थे। राजस्थान के नटवरसिंह नहीं थे। शैगांव के पटेल थे। एक बम्बई के काफी सक्रिय रजनी पटेल थे । इस तरह से 10-15 वह लोग किचन केबीनेट का नाम आया था वह इसकी वजह से चला था क्योंकि यह सब कोई प्रभाव नहीं डालते थे इंदिराजी पर, पर बैठते तो थे।

प्रश्न – लेकिन एक भारत के बुद्धिजीवी के अनुसार इंदिरा जी के इमरजेंसी वाले समय में दो तरह के विचार रहे थे। आप स्वयं उससे परिचित भी हैं कि कुछ लोग मानते रहे हैं कि इंदिरा जी शायद एक छत्र बनना चाहती थी। एक तरह एक तबका उस वक्त संवेदनशील ढंग से यह मानता रहा है क्योंकि एक प्रकार के सुधार की प्रक्रिया थी कि कुछ गडबडियाँ हैं उनको थोड़ा सख्ती से निपटा जाय तो आप तो उन सबसे परिचित रहे होंगे।

श्री अर्जुनसिंह – मैं तो यह समझता हूँ इंदिरा जी का मेन डायरेक्शन था हिन्दुस्तान को मजबूत और उसे कहते है वायबल नेशन यह वर्ड वायबल नेशन काफी व्यापक है बनाने का था। बीच-बीच में इम्पेशेण्ट हो जाया करती थी। अब ये जो थोड़ा बहुत इम्पेशेण्ट का लक्षण हैं वह इस इमरजेन्सी का है यह उनका स्वभाविक लक्षण नहीं था और शायद उस वक्त जिन लोगों ने उनको सलाह दी अब तो सब जानते हैं पहले तो नहीं मालूम था। आपके ये बंगाल के जो सिद्धार्थ शंकर राय जो रहे हैं इन लोगों ने बहुत योगदान किया है इमरजेंसी में एक सार्थक नीति बनाने के लिए एक तरफ इंदिरा जी का वह इम्पेशेण्ट को किस रूप में परिणित किया जाय एक्शन में इन लोगों के सुझाव से इसलिए वह एक चेप्टर हो गया देश में उसमें मुझे बाद में मालूम पड़ा, मैं तो उस वक्त किसी आफीशियल उसमें नहीं था लेकिन मीटिंग में आया जाया करता था, ले आते थे तो कई दफे उस वक्त वहाँ रहकर भी कुछ पब्लिक स्टेटमेण्ट दिए थे क्या पता कहाँ मिलेंगे, मिलेंगे भी कि नही मिलेंगे मैं दूसरे रूप में कहता था कि इस वक्त जो कुछ हो उसमें हमें और सतर्क इसलिए रहना है कि कोई हमारे खिलाफ क्रिटिसाइज करने के लिए नहीं है। इसलिए हमारी जिम्मेदारी है कि कोई भी एक्शन ऐसा न हो जिसे हम जस्टिफाय एक डेमोक्रटिक कण्ट्री में न कर सके। अब एक तरह से ये इमरजेंसी के सच्चे ढाँचे में तो नहीं आता है लेकिन मैं इसलिए कहता था कि यह हमेशा स्वयं सोचना चाहिए बल्कि एक साहब ने हमारी शिकायत उस वक्त की कि साहब यह इमरजेंसी के पक्ष में नहीं है तो इंदिरा जी ने तो

कभी नही पूछा संजय जी ने पूछा कि आप क्या इसके विरोध में हैं तो मैंने कहा कि मैं विरोध के इस रूप में नहीं हूं कि उसे बंद करना चाहिए, मै केवल विरोध इतनी दूर तक का कर रहा हूँ कि जो कुछ आज किया जा रहा है कि जब यह बंद भी हो जाए तो जस्टिफाय किया जा सकें अगर उस रास्ते के बारे में नही सोचा जायगा तो बाद में एकदम से इसके बारे मे विरोध होगा, सुनकर वे चुप हो गए, बोले नहीं कुछ, लेकिन मैं समझता हूँ पसंद नहीं आया होगा।

प्रश्न – क्या ऐसा आप सोचते हैं? जयप्रकाश जी के आंदोलन के बाद सरकार का जो गठन हुआ क्या वहीं से एक तरह के गठबंधन की राजनीति की शुरुआत नहीं हो जाती?

श्री अर्जुनसिंह – देखिए गठबंधन की राजनीति की शुरुआत आप ढूँढने चलेंगे और उसको ट्रेस आप करना चाहेंगे कि कहा से आया यह बहुत कठिन काम हैं क्योंकि समय पर यह चीज होती नहीं हैं लेकिन इस परिवेश में वह आवश्यक थी उसकी वजह से बाकी गठबंधन हुआ यह जरूरी नहीं है कि इसमें कोई रिलेशनशिप हैं।

प्रश्न – मैं सिर्फ इसलिए यह सवाल पूछ रहा हूँ आपसे कि गैर कांग्रेसवाद का नारा पहले से चला हुआ है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि कांग्रेस को लगातार पीछे करते जाने की कोई राजनीति बनाई हो?

श्री अर्जुनसिंह – बनाई होगी, उसमें कोई टिप्पणी करने में शायद मैं सक्षम नहीं हूँ जो मैंने थोड़ा बहुत देखा राजनीतिक जो हुआ यह कोई स्वभाविक तौर से कुछ चीजें होती चली गई और उन्होंने एक स्वरूप ग्रहण कर लिया। ये जो गैरकांग्रेसवाद का जो नारा हैं ये कोई थ्यौरी नहीं है। वह तो कांग्रेस की जो व्यवस्था बनी हैं उसमें मेरा मत कहीं फिट नहीं हुआ तो मैं धीरे-धीरे एक दूसरी लाईन पर चला गया चार लोग हो गए तो मजबूती आ गई उसमें।

प्रश्न – अगर यह प्रक्रिया का हिस्सा रहा होगा स्वभावगत लेकिन आज जो परिस्थितियाँ हैं उसमें लगता है कि एक तरह की चालाकी हैं यह स्वभावगत नहीं लगता, लगता है जैसे एक तरह से दबाव बना है। बाकी छोटे दलों को अपने आभा मण्डल में घेरने की चाल जैसी थी गैर कांग्रेसवाद। आप बताइये, नहीं लगता आपको ऐसा, ये लोग शायद बहुत सतर्क होकर कांग्रेस को अकेला करने की जैसी कोई साजिश रच रहे हैं।

श्री अर्जुनसिंह – आपका तात्पर्य आज की राजनीति से हैं?

प्रश्न – हाँ, आज की परिस्थिति से हैं।

श्री अर्जुनसिंह – आज की परिस्थितियों में तो मेरे बहुत स्पष्ट मानवीय आचरण का जो न्यूनतम स्तर होता है, कहाँ समानता आती है उसमें उस चीज का अध्ययन करके उस स्तर पर कौन-कौन पहुँचते हैं उनका पहले आयडेंटिफिकेशन होना चाहिए। मानवीय मूल्यों, राजनैतिक विचारधाराओं, सामाजिक परिवेश और राष्ट्रीय समग्र विकास के लिए प्रजातांत्रिक धर्म निरपेक्ष भाव से प्रयास होना चाहिए केवल गैर कांग्रेसवाद का नारा देकर कुछ नहीं किया जा सकता। डॉंगजी, राजीवजी और गांधीजी ने बलिदान दिया है जनता उसे समझती हैं हमें जनता की समझ पर विश्वास रखना चाहिए।

हमारा देश प्रजातांत्रिक है और इस देश में प्रजातंत्र के आधार पर अलग-अलग राजनीतिक दलों को जनता के सामने अपने-अपने विचारों को रखने का, अपने कार्यक्रम रखने का, अपनी नीतियों को रखने का संवैधानिक अधिकार है और उस अधिकार का उपयोग करते हुए वह जनता का समर्थन प्राप्त कर सकता है ताकि उन्हीं नीतियों और कार्यक्रमों के आधार पर जिनको जनता समर्थन दे, वे पाँच वर्ष तक प्रदेश या देश की सेवा कर सकें।

—श्री अर्जुनसिंह

26 सितम्बर 1992

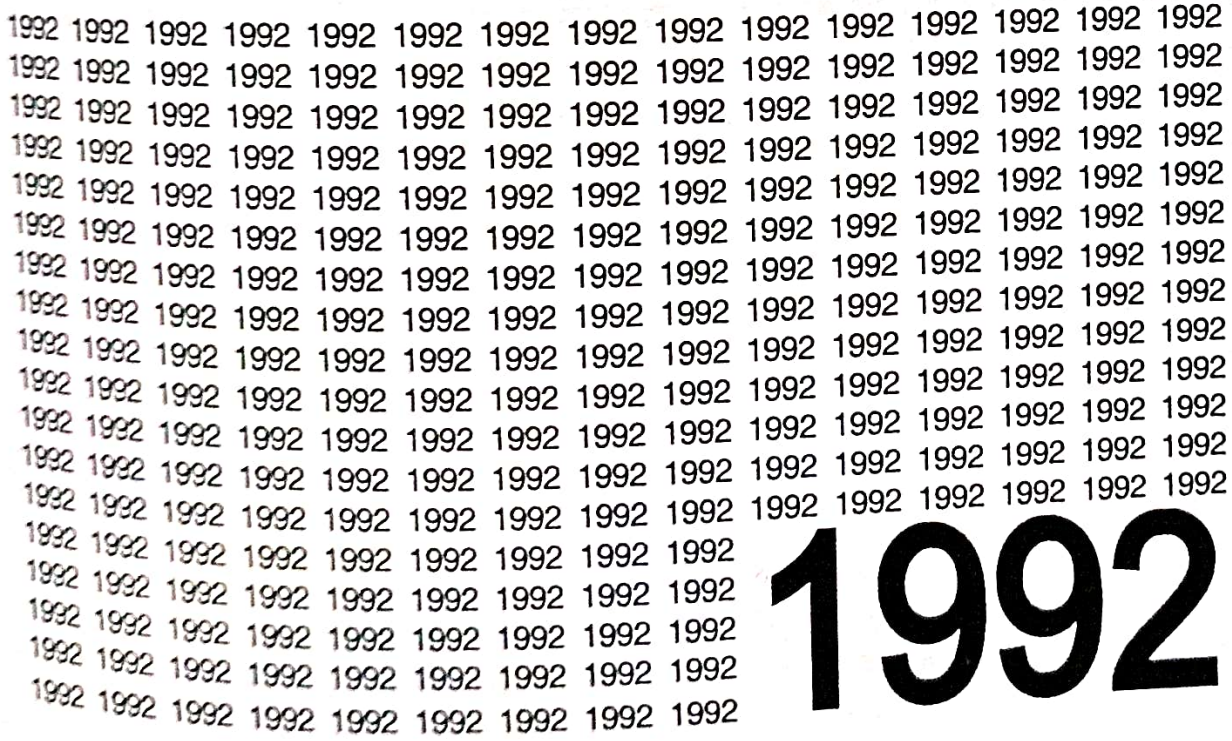

1992

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में कॉंग्रेस नेतृत्व को मज़बूत बनाएँ

16 अगस्त 1992 को सतना में कॉंग्रेस कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में संबोधन के प्रमुख अंश—

सम्मानित अध्यक्ष श्री दिग्विजयसिंह, और यहाँ पर विराजे हुए कॉंग्रेस के सभी आदरणीय साथियों। हमारे साथियों ने अभी काफी विस्तार से मौजूदा परिस्थिति और उस परिस्थिति में हमारे और आपके एक कॉंग्रेस के सिपाही के नाते क्या कर्तव्य है, क्या दायित्व है, किस प्रकार से हम इस कर्तव्य को निभा सकते हैं, अपनी-अपनी राय जाहिर की। यह राय जाहिर करने का मौका श्री दिग्विजयसिंह के सहयोग से मिला है। वे इस प्रदेश की जमीन से और हमारे कॉंग्रेस के साथियों से, जुड़े हुए हैं।

अक्सर कॉंग्रेस के अंदर मार्गदर्शन लिया जाता है मैं समझता हूँ यह सम्मेलन और अन्य जो आने वाले सम्मेलन होंगे जो इस प्रदेश में होंगे, वह मार्गदर्शन लेंगे नहीं वरन वे इस प्रदेश के कॉंग्रेसजनों को मार्गदर्शन देंगे। कॉंग्रेस पार्टी में जितने भी उथल-पुथल हुए, वह आज़ादी के पहले हुए। संघर्ष के माध्यम से उतार-चढ़ाव दोहराने का वह समय था और एक दफा आजादी के उद्देश्य को प्राप्त करने के बाद कॉंग्रेस गंगा के समान शांत होकर, गहरी होकर प्रवाह धारा में बह गई। देश की आजादी का मिलना और आज़ाद देश के नव निर्माण की कोशिश, ये दो महत्वपूर्ण मोड़ है कॉंग्रेस के इतिहास में। 107 साल में बहुत सी चीजें हुईं लेकिन ये दो विराम चिह्न हम मान सकते हैं। एक तो देश की आजादी की लड़ाई का समाप्त होना, और देश के नव निर्माण की शुरूआत होना। मैं इनकी याद आपको इसलिए दिला रहा हूँ क्योंकि अक्सर हम सब अपने रोज के हालातों से इतने दबे रहते हैं, इतने प्रभावित रहते हैं कि मुड़ कर पीछे देखने का हमें मौका ही नहीं मिलता और मिलता भी है तो हम देखने की जरूरत नहीं समझते। लेकिन हमें अतीत का गुलाम तो नहीं बनना चाहिए, हमें पुराने जमाने की जंजीरों में अपने को नहीं जकड़ना चाहिए लेकिन यदि हम अपने इतिहास से अनभिज्ञ हो जाएँगे तो देश का इतिहास बहुत ही क्रूर है जब वह अपने को दोहराता है, जैसा कि दोहराता ही आया है हजारों सालों से, उस वक्त हम अपने को बिल्कुल अक्षुण्ण पाएँगे इतिहास के उन थपेड़ों को सहने के लिए।

मैं आपको बताता हूँ आजादी को एक साल भी नहीं हुआ था, 6 महीने के अंदर ही जो इस देश में हुआ, उसकी तरफ ध्यान ले जाना चाहता हूँ। 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ और 30 जनवरी 1948 को गाँधीजी की हत्या हुई। 15 अगस्त, 1947 पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उस मध्यरात्रि को जो शब्द कहे थे— 'सदियों से सोया हुआ भारत आज रात को 12 बजे जब सारी दुनिया सोती रहेगी तब जागेगा। सदियों से जिस भारत की आवाज को दबाए रखा था वह आवाज अब खुल कर दुनिया के सामने सुनाई पड़ेगी। उस आवाज का विरोध भी शुरू हो गया। पहले दिन ही वह विरोध उस चरम सीमा पर पहुँच गया, और नाथूराम गोड़से ने गाँधीजी की छाती गोलियों से छलनी कर दी। गोड़से ने गाँधीजी को क्यों मार दिया? इसलिए कि वह जिस विचारधारा से प्रभावित और

प्रेरित थे उनसे उनकी मान्यता यह थी यदि गाँधीजी के रास्ते पर देश चलता रहेगा, गाँधी की बात को सुनता रहेगा, गाँधीजी के उद्देश्यों से प्रभावित होता रहेगा तो इस देश के अंदर उन्माद का, लड़ाई झगड़े का, साम्प्रदायिकता का कोई वर्चस्व कायम नहीं हो सकता। इसलिए गाँधीजी की जुबान को बन्द करना जरूरी था। गाँधी जी इंसान तो थे ही लेकिन वह भारत की सच्ची आत्मा के विशप भी थे। इसलिए गाँधीजी की हत्या ने कम से कम 20 वर्षों के लिए इन लोगों के उन्माद पर ठंडा पानी फेर दिया।

उसके बाद ज्यों-ज्यों हमारी और आपकी स्मृतियाँ कमजोर होती चली गई, वह हादसा एक ऐतिहासिक घटना के रूप में केवल हमारे आपके दिमाग में बस गया। फिर से उसी विचारधारा के लोगों ने अपनी आवाज को बुलन्द करना शुरू किया। अलग-अलग तरीके से, अलग-अलग रूप से उसे देश के सामने लाते रहे। कभी गो-हत्या के नाम से, कभी गंगा जल के नाम से, कभी साधु संतों के नाम से यह प्रभावित करने की कोशिश करते रहे - भारत के राजनीतिक और सामाजिक चिंतन को। उस समय हमारे देश के पास पंडित नेहरूजी का अत्यंत प्रभावी नेतृत्व था। जवाहर लाल जी ने काँग्रेस को और देश के करोड़ों इंसानों को अपने उद्देश्यों के, रास्ते पर डटे रहने के लिए प्रेरित किया और हम बढ़ते रहे। कहीं जनसंघ बना, कहीं कुछ बना, इसकी हम कहानी सुन चुके हैं। यह सब राजनीतिक हथकंडे थे, देश को भ्रमित करने के। इन्हीं कट्टरपंथी लोगों ने श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या की। राजीव गाँधी ने भारत की करोड़ों जनता की ओर से उस शून्य को भरने की कोशिश की। देश की मशाल उनके हाथों में सौंपी गई। जब उनको लगा कि राजीव गाँधी का नेतृत्व भारत की तरुणाई के दिलों से जुड़ रहा है और ऐसी संभावना है कि कम से कम दो दशक तक उनका नेतृत्व भारत को आगे ले जाने में सहायक बनेगा तो सबसे पहले उनका चरित्र हनन करने की कोशिश की गई। यह अभी का इतिहास है, आप सभी को अच्छी तरह से मालूम है।

सन् 1989 में काँग्रेस की हार इस बात का द्योतक है कि हमने पूरी संजीदगी से, उन शक्तियों के तौर तरीके और उनकी शक्तियों की पहचान करने की गफलत की। इस बात को सबसे ज्यादा किसी ने समझा पराजय के बाद तो राजीव जी ने समझा था। राजनीतिक विचार और राजनीतिक रंगमंच पर आचरण केवल कल्पना लोक में घूम कर नहीं हो सकता। जमीन पर पैर रखकर ही कोई देश, कोई पार्टी, कोई व्यक्ति अपनी रक्षा कर सकता है, देश की रक्षा कर सकता है। उस गफ़लत में राजीवजी जैसे महान व्यक्ति को हम ने हमारे सामने उनको पराजित होते देखा। पराजय के बाद जब उन्हें यह सब चीजें समझ में आई कि कहाँ उनसे भूल हुई और कहाँ पर किस की सलाह पर काँग्रेस के सीधे रास्ते से हट गए थे। जब उन्हें इस बात की समझ आई तो सारे देश में घूम-घूम कर उन्होंने लोगों को आश्वस्त किया कि हम अपनी भूल को समझ गए हैं।

उन्हें लगा कि फिर से उनके नेतृत्व के प्रति अटूट विश्वास भारत के लोगों का बढ़ता जा रहा है, विरोधियों ने तो फिर हत्या का मार्ग अपनाया। कट्टरपंथी विचारधारा के लोगों ने राजीव जी की हत्या की। यही सोचा गया था कि राजीव गाँधी की हत्या के बाद काँग्रेस अपने आप अलग-अलग टुकड़ों में बिखर जाएगी और फिर काँग्रेस के पास न कोई नेतृत्व रहेगा और न एक साथ चलने की क्षमता। उस समय के सामयिक इतिहास को देखा जाए तो वह पहला अवसर था जब सचमुच में काँग्रेस में बिखराव होने की संभावना थी। क्योंकि इन्दिराजी और राजीवजी के समकक्ष काँग्रेस में कोई नेतृत्व नहीं था, अभी भी नहीं है, इसके बारे में दो राय नहीं है। काँग्रेसजनों की भावना से बिना किसी दिक्कत के, बिना किसी हिचकिचाहट के हमने अपने सयाने सबसे लायक व्यक्ति श्री नरसिंहरावजी को काँग्रेस का अध्यक्ष बनाया, प्रधानमंत्री बनाया और उनके नेतृत्व में देश की सेवा में काँग्रेस फिर से जुट गई। यह पृष्ठभूमि है आज की परिस्थितियों के लिए।

उन शक्तियों का प्रतिनिधित्व कौन कर रहा है? राजनीतिक रूप से हम अगर नाम लेना चाहते हैं तो भारतीय जनता पार्टी कर रही है। लोग ऐसा समझते हैं जैसे मेरी कोई उनसे खानदानी दुश्मनी है। कुछ लोग कहते हैं मेरी पटवा जी से दोस्ती है। आज भी हमारे पत्रकार बंधु कह रहे थे इससे क्या जाहिर होता है कि न दोस्ती है न दुश्मनी है। मैं अपने कर्तव्य को जानता हूँ। मेरा कर्तव्य काँग्रेस के सिपाही की हैसियत से क्या है वह महत्वपूर्ण है। किसी की दुश्मनी या किसी की दोस्ती महत्वपूर्ण नहीं है। क्या कर्तव्य है ऐसे समय पर, यह मैं जानता हूँ। काँग्रेस में फूट डालने का मेरा कर्तव्य नही है।

मै यह जानता हूँ कि जिससे मेरी पहचान बनी है, जिसकी वजह से आज दस लोग हमें जानते हैं, अगर हम उसी संस्था को कमजोर कर देंगे, उसे बर्बाद कर देंगे तो हमारी पहचान दूसरे क्षण ही समाप्त हो जाएगी। लेकिन यह बात जरूर है कि जिस संस्था ने हमें पहचान दी है, हम उस संस्था के प्रति, नेतृत्व के प्रति वफादारी दिखा सकते है, गद्दारी नहीं।

आज हमें आप सबको यह सोचना पड़ेगा यदि हम काँग्रेस के अस्तित्व को नहीं मिटने देना चाहते हैं तो हमें क्या करना होगा और वही उनकी कतार में खड़े होना चाहते हैं, जिन्होंने संस्था को तोड़ा, अपने राजनीतिक स्वार्थ के साधन बनाए हैं तो कुछ कहने की जरूरत नहीं है। अपने आप जब तक स्वार्थ मिलता रहेगा तब तक जय-जयकार करते रहेंगे और जब स्वार्थ पूरा नहीं होगा अपना दूसरा स्थान ग्रहण करेंगे। लेकिन आज हमें अस्तित्व बनाए रखना है तो जिनको आज हमने अपना नेता बनाया है काँग्रेस के अंदर एक तो हमें हर हालत में उनके नेतृत्व को मजबूत करना होगा। नरसिंहराव संयोग से प्रधानमंत्री नहीं बन गए हैं संयोग से काँग्रेस अध्यक्ष नहीं बन गए हैं। यह पद देने के लिए भारत के सभी काँग्रेस जनों ने और उनके प्रतिनिधियों ने फैसला किया है तब नरसिंहराव प्रधानमंत्री बने हैं और काँग्रेस अध्यक्ष बने हैं। अगर हमने अपने फैसले से कोई काम किया है, तो यह हमारा कर्तव्य है हम उस फैसले की साख हर परिस्थिति को बरकरार रखें।

दूसरी बात यह है आज देश को खतरा केवल साम्प्रदायिक शक्तियों से नहीं है, लेकिन उससे भी बड़ा खतरा देश को उन लोगों से है जो हमारे आर्थिक ढाँचे को कमजोर करने के लिए सामने खड़े हुए हैं। आर्थिक ढाँचा बाजार में बिकने वाली वस्तु से नहीं बनता है। आर्थिक ढाँचा किसी देश के कुछ मूल तत्वों को सामने रखकर उठाए गए कदमों से बनता है। भारत के करोड़ों करोड़ लोगों के मन में नेताओं ने जगाया वह आत्मविश्वास है जो देश को मजबूत बनाता है, उस आत्मविश्वास की कमी देश को कमजोर बनाती है। आज उस आत्मविश्वास को कमजोर करने की प्रक्रिया चल रही है, काँग्रेस पार्टी यदि अपने सिद्धान्तों से भटकती है तो उस खतरे से हमें सतर्क रहना है।

जिन कठिनाइयों का जिक्र बलबीर सिंह जी और दूसरे लोगों ने किया, जिन कठिनाइयों से गुजर कर हम और आप जहाँ पहुँचे हैं, उससे बड़ी कठिनाई अभी देश के सामने आने वाली है। हमारे अस्तित्व को चुनौती दी जाएगी, हमारी मान्यताओं को चुनौती दी जाएगी, हमारे मूल्यों को चुनौती दी जाएगी क्योंकि कश्मीर से कन्याकुमारी और अरब सागर और बंगाल की खाड़ी ही भारतवर्ष की सीमाओं को इंगित नहीं करते है। हमारे पास हजारों साल से ज्यादा का इतिहास है। हमारी संस्कृति ने जो हमें आदर्श दिया है, एकता का, सद्भावना का, करुणा का, लोगों के साथ न्याय करने का, शोषण के खिलाफ संघर्ष करने का, भाईचारे का, यह भारतवर्ष की परिभाषा करता है, वही हमारी धरोहर है। उस धरोहर को अगर हम बचाने की क्षमता नहीं रखते या उस विरासत को भोगने की हम में क्षमता नहीं है, साहस नहीं है तो दूसरे तरीके से भारतवर्ष में सदैव हुआ है- वीर भूमि की यह वसुन्धरा तलवार के बल पर नहीं है, तलवार के बल पर जो भोग करता है वसुंधरा का, तलवार के द्वारा ही उसकी समाप्ति होती है। यह वीरता मन की वीरता

है, विश्वास की वीरता है, आत्मा की वीरता है, आने वाले समय की तस्वीर को दिखाने की क्षमता है। उस भारतवर्ष ने हजारों साल में उसका विकास किया है और उन आदर्शों और मूल्यों को हमें दिया है जिनकी रक्षा करने की जिम्मेदारी हमारी और आपकी है। देश के सभी नागरिकों की है। लेकिन प्राथमिक रूप से वह जिम्मेदारी काँग्रेसजनों की है, क्योंकि आज इतिहास ने ऐसे मोड़ पर लाकर देश को खड़ा कर दिया है यदि काँग्रेस पार्टी गफलत करती है, काँग्रेस पार्टी कमजोर होती है, काँग्रेस पार्टी बिखरती है तो देश के अस्तित्व को खतरा पैदा हो जाएगा।

हम किसी जिला काँग्रेस के अध्यक्ष हैं, ब्लाक काँग्रेस के अध्यक्ष हैं, इसका यह मतलब नहीं है कि आपके कार्य क्षेत्र में बाकी कोई काँग्रेस का व्यक्ति नहीं है। आप ही सब कुछ हैं। यह आपको समझने की जरूरत है। यदि आप अध्यक्ष हैं तो आपकी जिम्मेदारी है, पहली जिम्मेदारी है आपके साथ रहने वाले, जिले में जितने काँग्रेस के लोग है आप उनको अहसास दिलाए कि अध्यक्ष विधान के मुताबिक आप हैं लेकिन हम सब को ऐसा अहसास हो, कि वह आपके अधिकारों में साझेदार हैं, उनके और आपके विचारों में साझेदारी है और यदि आप ऐसा नहीं कर सकते है, अध्यक्ष की धरोहर तो आपके पास रहेगी लेकिन नैतिक अधिकार आपके पास नहीं रह सकता। इस एकता की कड़ी को मजबूत करने की बहुत जरूरत है। दूसरी बात अपनी पार्टी के कार्यक्रम को समझना जरूरी है।

भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ हम संघर्ष करना चाहते हैं और उसे बाहर उतार फेंकना है। यह सब राजनीतिक रूप से जरूरी है लेकिन किस बात के लिए यह सब करना है? इसलिए कि अपने मध्य प्रदेश में 320 सीटें हैं, इसमें 300 में काँग्रेस के लोग चुन कर आ जाएँ, कोई प्रदेश का मुख्यमंत्री बन जाए, सांसद बन जाए, अगर उतना ही काँग्रेस का उद्देश्य है, काँग्रेस पार्टी का उद्देश्य है या कार्यक्रम है तो फिर बड़ी मुश्किल की बात होने वाली है। काँग्रेस पार्टी का जो कार्यक्रम है, एक-एक कार्यक्रम को आप उठाकर देखें, उन सब में एक दर्शन है, स्पष्ट दिशा है, कर्तव्य बोध है। कहते हैं आदिवासी, हरिजनों का उत्थान होना है, जैसे कोई बड़ी कृपा हम कर रहे हों। हरिजन आदिवासियों को आप कर्ज दिला दें, उनकी समस्या हल कर दें, पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए कर सकते हैं उनको हम कुछ कर्ज दिला दें, जहाँ यह सब जरूरी है लेकिन उससे भी जरूरी इस बात की है, कि समाज के कमजोर वर्गों को यह अहसास होना चाहिए कि काँग्रेस किसी के कार्य के रूप में कुछ नहीं कर रही है, अपने कर्तव्य के रूप में सब कुछ करना चाहती है। जब तक यह उपकार करने की भावना हमारे मन में रहती है, तब तक हम ईमानदारी से काम को नहीं कर सकते। क्योंकि उपकार किसी एवज में किया जाता है, और कर्तव्य किसी एवज में नहीं किया जाता।

तीसरी बात यह है जो मैं मध्य प्रदेश के संदर्भ में कहना चाहता हूँ। यहाँ पर आज जो शासन है वह शासन बिल्कुल निरंकुश तो है ही, विवेक से शून्य भी है, लेकिन वह प्रजातांत्रिक मान्यताओं को बलाए ताक रखकर अपना काम करना चाहता है। इसलिए प्रजातंत्र में चलने वाली जो व्यवस्था है, उस व्यवस्था को अगर पुनः जीवित करना है, उसके वर्चस्व को कायम करना है, उसके महत्व को कायम करना है, तो वह काँग्रेस पार्टी को ही करना पड़ेगा। भारतीय जनता पार्टी के लोग पंचायतों में नामजदगी कर सकते हैं, म्युनिसिपल्टीज़ में नामज़दगी कर सकते हैं, कोआपरेटिव में नामज़दगी कर सकते हैं क्योंकि उनको प्रजातांत्रिक मूल्यों की कोई पहचान भी नहीं है और उनकी इनके प्रति कोई प्रतिबद्धता भी नहीं है। लेकिन उस चीज को समाप्त करने की बात अगर होती है तो वह काँग्रेस के लोग ही करेंगे। अगर ऐसा करना है, तो हर स्तर पर हमें उस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहना पड़ेगा, जो चुनौती इस दिशा में आएगी।

पंचायतों के चुनाव आएँगे। अगर हम पंचायतों के चुनाव में एकता से संघर्ष नहीं करते, जैसा त्रिपाठी जी ने जो बात कही, पंचायती राज कानून में संशोधन जो राजीव जी ने पहले रखा था वह सभी राज्यों में लागू नहीं किया

जा सका। वह पंचायत का कानून अगले पार्लियामेंट के सत्र में पास किया जाएगा। उसके बाद से हमें उस कानून के प्रावधान के मुताबिक अपनी बात को हिम्मत के साथ रखने के लिए आगे आना चाहिए और चुनाव चाहे पंचायत के हो, चाहे म्युनिसिपलटीज के हों, चाहे कोआपरेटिव के हों इस प्रकार से संगठित रूप से लड़ना चाहिए जिससे फिर से हम प्रजातांत्रिक प्रक्रिया को उसको रास्ते पर ला सके।

अंत में एक बात और कहूँगा। बहुत सी बातें इस समय हमारे और आपके सामने आती जाती रहती है। आज मन्दिर और मस्जिद की लड़ाई की बात हो रही हैं। मन्दिर बने, मस्जिद टूटे, क्या हो, कैसा हो उसको लेकर एक विवाद चारो तरफ दिखता है। मैं इस मन्दिर और मस्जिद को विवाद नहीं मानता हूँ। मैं इसको भारत की मानसिकता को प्रभावित करने का प्रयास मानता हूँ। हम और आपके दिमाग में धर्म की छाप डालने की कोशिश की जा रही है कि आप हिन्दू है, तो हिन्दू की हैसियत से विचार करो। मुसलमान हो तो मुसलमान की हैसियत से विचार करो, ईसाई हो तो ईसाई की हैसियत से विचार करो, सिख हो तो सिख की हैसियत से विचार करो। हमें सोचना है हिन्दुस्तान की साख तभी रहेगी जब हम हिन्दुस्तानी की हैसियत से विचार करेंगे। इस मानसिकता को काटने की जो कोशिश हो रही है उस कोशिश को अगर हम इस गफलत को समझने में गलती की है तो कोई भी शक्ति अंततः भारत के विनाश को रोक नहीं सकती है क्योंकि जिस देश में सैकड़ों धर्म के मानने वाले लोग हों, न जाने कितनी भाषाओं के बोलने वाले लोग हों, न जाने कितने आचार-विचार के लोग हैं, न जाने कितनी मान्यताओं को मानने वाले लोग है, अगर इस देश में पहचान का आधार राष्ट्रीयता नहीं संकीर्णता बन जाएगी तो कौन इस देश के अस्तित्व को बचा सकता है। अभी कहीं कुछ नहीं हुआ है, इसलिए यह जिम्मेदारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि अपनी मानसिकता को बदने न दीजिए। हिन्दुस्तानी की हैसियत से हर विषय पर सोच कर निर्णय लिया जाए वही रास्ता काँग्रेस का रास्ता है, वही रास्ता गाँधी जी ने दिखाया था, वही तिलक जी ने दिखाया था, सुभाषचन्द्र बोस ने दिखाया था, वही सरदार पटेल ने दिखाया था, और इसी रास्ते पर चलने की कीमत हमारी पार्टी के तीन महान नेताओं ने अपने जीवन का बलिदान देकर दी है। यह सम्मेलन हम और आप सब को उस रास्ते पर चलने का साहस दे, हमें और आपको वह संकल्प लेने की शक्ति दे, यही हमारी कामना है।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशों में

साम्प्रदायिकता की बात करना पाप है

26 दिसम्बर 1992 कानपुर में राष्ट्रीय एकता पर दिए गए भाषण के प्रमुख अंश —

माननीय जायसवालजी, मंच पर विराजे हुए सभी आदरणीय साथियों, आदरणीय देवियों और सज्जनों, मैं अत्यंत आभारी हूँ आज की इस सभा के आयोजकों का कि उन्होंने 'राष्ट्रीय एकता' के महत्वपूर्ण विषय पर यह आयोजन करके हम सभी को यह अवसर प्रदान किया है कि भारत की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाकर रखने के लिए अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सके। अक्सर जब एकता की बात की जाती है, तो लोग उसका महत्व एकरूपता से लेते है कि सब लोग एक तरह से सोचने लगे, सब लोगों के विचार एक हो जाएँ, एक ही राजनीतिक मंच पर खड़े हो जाएँ या एक ही प्रकार के विचारों से प्रभावित हो जाएँ। भारत एक ऐसा देश है जिसमें न जाने कितने अलग-अलग धर्म को मानने वाले लोग हैं, हर सौ मील पर भाषा में थोड़ी बहुत तब्दीली आ जाती है, सैकड़ों

रीति-रिवाज को मानने वाले लोग हों, अनेकों भाषाओं के बोलने वाले लोग हों, परम्पराओं से जुड़े हुए लोग हों, तो इस देश में एकरूपता हो ही नहीं सकती और यही हमारे देश की विशेषता है, अनेकता में एकता, एकरूपता का स्वरूप हमारे देश में नहीं रहा। और वही हमारी मजबूती का आधार है कि हम अलग-अलग होते हुए भी इस बात का सदैव अहसास रखते हैं, कि जब हम कोई कदम उठाने की बात सोचते हैं तो हम इस बात का ध्यान रखते हैं कि उस कदम से कोई ऐसा परिणाम न निकले जिसकी वजह से हमारा यह अनेकता में एकता का स्वरूप बिखरने के कगार पर खड़ा हो। यदि हमारे किसी भी कदम से ऐसे परिणाम निकलते हैं, तो वही कदम राष्ट्रीय एकता के लिए खतरे के कदम होंगे।

हमारा प्रजातांत्रिक देश है और इस देश में प्रजातंत्र के आधार पर अलग-अलग राजनीतिक दलों को जनता के सामने अपने-अपने विचारों को रखने का अपने कार्यक्रम रखने का, अपनी नीतियों को रखने का संवैधानिक अधिकार है और उस अधिकार का उपयोग करते हुए वह जनता का समर्थन प्राप्त कर सकता है ताकि उन्हीं नीतियों और कार्यक्रमों के आधार पर जिनको जनता समर्थन दे, वे पाँच वर्ष तक प्रदेश या देश की सेवा कर सकें। आश्चर्य तब होता है जब कोई भी दल या कोई भी व्यक्ति प्रजातांत्रिक रूप से समर्थन पाने के लिए किसी नीति, किसी कार्यक्रम पर, किसी विचार के आधार पर, जनता के सामने जाने में हिचकता है। केवल राजनीतिक आधार पर सार्वजनिक हितों के विपरीत आधारों पर राजनीतिक समर्थन प्राप्त करने की कोशिश करता है। आज भारत में अगर कोई खतरा है, तो इस अवसरवादी प्रयोग से है।

अगर भारतीय जनता पार्टी या कोई और पार्टी हो तो वह देश के अंदर अपने विचार से कोई विकल्प प्रस्तुत करके आर्थिक आधार पर नीतियाँ बनाए, राजनीतिक आधार पर नीतियाँ बनाए, सामाजिक विषयों पर नीतियाँ बनाए और वह जनता के सामने समर्थन के लिए रखे और जनता उन नीतियों का, कार्यक्रमों का समर्थन करे और फिर वह पार्टी अधिकार में आए, सत्ता में आए तो किसी को कभी कोई एतराज नहीं हो सकता। लेकिन आज परिस्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है। चाहे वह 89 का लोक सभा का चुनाव रहा हो, चाहे 91 का रहा हो, चाहे 90 में विधान सभा का चुनाव रहा हो, भारतीय जनता पार्टी ने कोई भी विकल्प न आर्थिक, न राजनीतिक, न सामाजिक इस देश के मतदाताओं के सामने रखा। आप भी मतदाता हैं, आपने भी मत डाले होंगे। यदि आज किसी मन्दिर को बनाने की बात है, तो कल किसी मन्दिर को तोड़ने की बात भी हो सकती है। आज भगवान राम के मन्दिर की बात है, तो कल कोई और समुदाय बात कह सकता है जैनियों का मन्दिर बनाने की या भगवान राम के मन्दिर को हटाकर बौद्ध धर्म का मन्दिर बनाने की बात कर सकता है। इन परिस्थितियों में क्या हम और आप देश के प्रजातांत्रिक ढाँचे को बचा सकेंगे? ये मुद्दे हैं जो आज हमारे और आपके विचार के लिए हैं और इनके आधार पर जो खतरे पैदा हुए हैं उनके बारे में हमें सोचना है।

आर्थिक रूप से जो दुनिया में तब्दीलियाँ हो रही हैं, उन तब्दीलियों से भारत को अपने को जोड़ना पड़ेगा। उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना पड़ेगा और यह कदम से कदम मिलाकर चलने की दिशा में, जो कठिनाइयाँ हमारे देश के अंदर आएगी उन पर काबू पाना होगा। जो मँहगाई की बात है, जो कोई उत्पादन का लक्ष्य है, फेक्टरियों में नुकसान हो रहा है उसकी बात है, ये सब मुद्दे हवा में बात करने से हल नहीं होंगे। इन पर बहुत गहराई से ईमानदारी से सब को मिल बैठकर विचार करके फैसला करना होगा। यदि हम यह चाहें कि हम नारा लगाते रहें और अपनी भावनाओं को व्यक्त करते रहें कि इससे देश की आर्थिक समस्याएँ सुलझ जाएँगी इससे बढ़कर मृगमरीचिका कोई दूसरी नहीं होगी। लेकिन यह कैसे होगा? यह हम सब बैठकर जब बात करेंगे तब हम किसी हल पर पहुँचेंगे। और

इस आर्थिक ढाँचे को सुधारने के लिए जितने भी प्रयास होंगे उन सब प्रयासों में कुछ न कुछ त्याग और बलिदान निहित है, और वह कानून जो इस ढाँचे को बनाने में आएगा उस कानून का कम से कम भार देश के गरीब तबकों पर पड़े यह हमको तकवारी करनी होगी और तभी हम भारत के आर्थिक ढाँचे को भारतवर्ष को सुधार सकते हैं। इस दिशा में कोई पहल भारतीय जनता पार्टी की ओर से आज तक तो मैंने नहीं देखी है। कभी वह किसी एक बात की तारीफ कर देंगे तो कभी उसकी निन्दा कर देंगे। कभी स्वदेशी का नारा लगाया जाएगा तो कभी किसी और चीज के बारे में कह देंगे। अभी कुछ दिन पहले उनकी राष्ट्रीय समिति की बैठक हुई। बहुत शोर-शराबा हुआ कि नई आर्थिक नीति उस बैठक में बनाई जाएगी। बैठक समाप्त हो गई आर्थिक नीति का मसौदा देश के सामने तो नहीं रखा गया, केवल कल्याण सिंह, पटवाजी, शांता कुमार और अटलजी के बीच में रह गया।

जहाँ तक सामाजिक समस्याएँ हैं, पिछड़े वर्ग की बात है, हरिजनों की बात है, आदिवासियों की बात है, ये सामाजिक समस्याओं से जुड़े हुए प्रश्न हैं। इन पर कौन सी सोच है भारतीय जनता पार्टी की जिसकी जानकारी देश को है। मंडल के विषय में उनका कोई दृष्टिकोण नहीं था, पिछड़े वर्गों के कल्याण के लिए क्या आधार रहेगा क्या आरक्षण होगा और किस आधार पर उनकी समस्याओं को सुलझाने की कोशिश होगी, कोई रूपरेखा नहीं है। हरिजनों पर जो अत्याचार हो रहे हैं, जो उनकी समस्याएँ हैं उनको किस प्रकार से सुलझाया जाएगा। इसके बारे में कोई विचार नहीं है। आदिवासियों के बारे में कोई विचार नहीं। ऐसी अवस्था में भारत जैसे देश के अंदर कैसे शासन की बागडोर को संभाल कर कोई आगे चल सकता है, यह आपको सोचना है।

राम जन्म भूमि विवाद के संबंध में प्रधानमंत्रीजी ने एक फैसला लिया कि यह विषय दो पक्षों के द्वारा कई वर्षों से सामने लाया जा रहा है। इस विषय पर आपस में मिल बैठकर विचार करके आम सहमति बनाकर एक रास्ता निकाला जाए। यह उनकी नेक नियति और निष्ठा से उठाया गया एक कदम है। सारे देश ने उस कदम को उचित माना। इन लोगों ने भी कहा कि कदम ठीक है हम सहयोग करेंगे। और दूसरे दिन से ही भाषण आने लगे कि आप ऐसा करिए तो हम आपके साथ हैं, ऐसा करिए तो हम आपके साथ हैं। हम तीन महीने बाद आपको चुनौती दे देंगे। हम उसके बाद आंदोलन छेड़ देंगे। मैं बहुत विनम्रता से, क्यों कि मैं उत्तर प्रदेश में बोल रहा हूँ इसलिए काफी दृढ़ता के साथ यह कहना चाहता हूँ, दो लाख, पाँच लाख, दस लाख की रैली निकाल कर अगर हमारे देश के प्रधानमंत्री और काँग्रेस पार्टी को धमकी देने की कोशिश की जाएगी तो न तो प्रधानमंत्री और न कभी काँग्रेस पार्टी ऐसी धमकियों से डरने वाले हैं। हम वही करेंगे जो राष्ट्रीय एकता के हित में होगा। उसी रास्ते पर हम चलेंगे जो रास्ता देश के लोगों के मनों को जोड़ कर बड़ी से बड़ी समस्याएँ सुलझाने में सफल होगा। मैं उन नेताओं से कहना चाहता हूँ कि गफलत में न रहें, इस तरह के भाषण अपनी बिखरती हुई पार्टी को जोड़ कर रखने के लिए आवश्यक हो सकता है लेकिन भारत के बिखराव को नहीं रोक सकता है और हमें समझना चाहिए कि भारत के बिखराव को रोकने का रास्ता वही है जो प्रधानमंत्री ने अपनाया है और जिस रास्ते पर चल कर वे इस समस्या का समाधान सब की सहमति से लाना चाहते हैं।

विश्व हिन्दू परिषद् के लोग कहते हैं हिन्दुओं को कोई बात मान्य नहीं होगी। जो वह कहेंगे वही मान्य होगी। क्या मैं पूछ सकता हूँ विश्व हिन्दू परिषद् को भारत के करोड़ों हिन्दुओं ने किस दिन अपना वकालतनामा सौंपा था? और किस आधार पर और किस बल पर विश्व हिन्दू परिषद् के प्रतिनिधि हिन्दुओं की तरफ से बात कर रहे है? ठीक है बाबरी मस्जिद-राम जन्म भूमि विवाद पर विश्व हिन्दू परिषद् जिसके अध्यक्ष अशोक सिंहलजी है, एक पक्ष है और एक पक्ष की हैसियत से बात कर सकते हैं, लेकिन भारत के करोड़ों हिन्दुओं की भावनाओं को वह व्यक्त कर रहे है, ऐसा दुःसाहस उन्हें नहीं करना चाहिए। ऐसा दुःसाहस करके इस देश के करोड़ों हिन्दुओं का अपमान कर रहे है।

उनकी भावनाओं से खिलवाड़ कर रहे है क्योंकि मैं जानता हूँ जो सच्चा हिन्दू वह तभी हो सकता है जब वह दुनिया के हर मजहब और धर्म का सबसे ज्यादा सम्मान करेगा। हिन्दू धर्म के अंदर किसी दूसरे मजहब के स्थान को गिराकर उसके ऊपर अपने धर्म का मन्दिर बनाने की भावना हमारे इतिहास में कभी देखने को नहीं मिली है, न आज है और न आगे मिलेगी। मैं अपने हिन्दू भाइयों से कहना चाहता हूँ कि बहुत संजीदगी से आप दिल पर हाथ रख कर सोचें कि क्या भगवान राम का मन्दिर बनना निहायत जरूरी है? भगवान राम आज भी कोई बेघरबार नहीं है। न वह किसी फुटपाथ पर सोते है। अगर फुटपाथ पर कोई सोता है तो कोई गरीब आदमी सोता है जिसको सुबह से शाम तक मेहनत करने के बाद भोजन मिल गया तो सिर छिपाने के लिए छत नहीं है। आज वह व्यक्ति प्रताड़ित है, पीड़ित है। भगवान राम की कृपा से हम सब जिंदा हैं और अपना-अपना जीवन यापन करने की कोशिश करते हैं।

यह आधार है एक सभ्य समाज का काम करने का। यह सभ्य समाज के काम करने की दिशा में अगर अड़चनें आती है तो ये अड़चनें हमारे देश की एकता के लिए खतरा पैदा करती हैं। उन्हें पहचानने की और उनका मुकाबला करने और मुकाबला करते हुए अपनी एकता को बनाकर रखने की आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है और काँग्रेसजनों के सामने यही एक मुख्य रूप से कर्तव्य है। यह मेरा अपना विचार है। आपके सामने इन विचारों को रखकर समझता हूँ, मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ। धन्यवाद। जयहिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकारवार्ता

मंदिर निर्माण में करोड़ो हिन्दू सहयोग को तत्पर

30 जुलाई 1992 को संडे आब्जर्वर के श्री राजीव शुकला के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

प्रश्नकर्ता : अर्जुनसिंहजी, पिछले दिनों काँग्रेस के नेताओं के स्पीच हुए, उसको लेकर तमाम अखबारों ने उन्हें कई तरह से पेश किया, तो आप क्या समझते हैं कि अयोध्या के मामले में जो आपने निर्णय लिया है, वह आज की परिस्थितियों में सार्थक् है और आप उसके संबंध में किस ढंग से विचार रखना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, मैंने स्पष्ट बात रखी। प्रधानमंत्री ने एक पहल की शुरूवात की थी और वह बहस भरोसे और विश्वास के साथ शुरू हुई थी। मैं उस पहल का पूरा-पूरा समर्थन करता था और करता हूँ। सही बात यह है कि उन लोगों से बात करने के थोड़ी देर पहले, उन्होंने मुझसे इस बारे में मशविरा भी किया था। मैं उनकी इस राय से सहमत था कि उन्हें ...(अस्पष्ट)... यह कहना चाहिए कि आप काम बंद करें और फिर हम लोग आगे मिल-बैठकर विचार करेंगे। इसलिए इस हद तक तो कहीं कोई मत मतान्तर का प्रश्न ही नहीं है। मेरे मन में कुछ शंकाएँ थी और चूँकि वे शंकाएँ सिर्फ मेरी नहीं थी, बल्कि मेरे जैसे बहुत से लोगों ने रखनी चाहिए थी पर लोगों ने उसे कहा नहीं, लेकिन मैं जानता था कि ये शंकाएँ और लोगों के मन में भी थीं, इसलिए मैंने जो दो-तीन बातें वहाँ पर कीं, उनका उद्देश्य केवल यही था कि उनको भी ध्यान में रखकर हम आगे बढ़ें ताकि ऐसी कोई स्थिति निर्मित न हो कि जो प्रधानमंत्री का इरादा है, उस इरादे में कोई अवरोध आए। मैंने उनसे कहा और वह सबको मालूम है और उसे दोहराने का कोई मतलब नहीं है और मैं यही उम्मीद करता

हूँ कि यह शंकाएँ पूरी तरह से निर्मूल होंगी और जो प्रधानमंत्री कह रहे हैं, उसमें उन्हें पूरी सफलता मिलेगी।

प्रश्नकर्ता : आपको क्या लगता है चुनाव में आपकी क्या स्थिति रहेगी क्या आप टिके रहेंगे ...(अस्पष्ट)... हर जगह लड़ाई होगी?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, उत्तर भारत में और धीरे-धीरे दक्षिण भारत में, कर्नाटक और आँध्र में भी उपचुनावों में बी.जे.पी. ने सीट ली है। कर्नाटक में तो उनकी स्थिति पहले से काफी सुदृढ़ हुई है। तो दक्षिण में और उत्तर में भी अगर सचमुच में आगे राजनीतिक संघर्ष होगा, वह चाहे चुनावों में या चुनावों के अलावा हो, तो वह भारतीय जनता पार्टी से ही होगा। इसलिए भारतीय जनता पार्टी के सही मंतव्य को, उनके कार्यक्रमों को, उनके कार्यक्रमों के स्वरूप को अगर कॉंग्रेस पार्टी नहीं समझ पाई और नहीं अंदाज लगा पाई तो फिर तो हम इस राजनीतिक संघर्ष में पीछे हो जाएँगे। इसलिए यह नितांत आवश्यक है और मैं समझता हूँ कि इस मामले में प्रधानमंत्री के मन में भी कोई दुविधा नहीं है। ऐसी परिस्थिति में जो पहल उन्होंने की है, वह दूसरे संदर्भ में की है और उस पहल से इस संघर्ष का कोई मतलब भी नहीं है, लेकिन हमें उसकी तैयारी करनी पड़ेगी। अच्छी तरह से विचार कर के प्लान ऑफ एक्शन बनाना चाहिए। पिछली वर्किंग कमेटी की मीटिंग में यह बात उठाई गई थी और प्रधानमंत्री ने स्वयं इसके महत्व को समझते हुए कहा था कि इस पर विचार कर के कुछ रास्ता बनाइए और हम लोग विचार कर रहे हैं।

प्रश्नकर्ता: मुझे नहीं लगता कि कोई समझौता हो पाएगा। क्या आपको लगता है कि यह समझौता हो पाएगा क्योंकि बी.जे.पी. और वी.एच.पी. से जुड़ी हुई जो संस्थाएँ हैं, वह कहते हैं कि वह तो 'सुसाइडल' होगा। हम तो अपनी शर्तों पर बात करेंगे। तो कहीं ऐसा न हो कि चार महीने के बाद हम फिर वहीं-के-वहीं खड़े रहें?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, शर्तों पर बातचीत करने का तो कोई मतलब नहीं क्योंकि अगर ये शर्त उन्होंने पहले से रखी होती कि ये-ये शर्तें हैं और आप उनको मानेंगे तब हम बात करने आएँगे, तब तो उनको यह कहने का अधिकार था। ऐसा तो मेरी समझ में कुछ उन्होंने किया नहीं। इन लोगों ने बाहर ऐसा कहा भी नहीं कि इस शर्त पर हम लोगों ने बातचीत की थी। अभी जो बात सामने आ रही है, वह यह है कि हमने ऐसा सोचा था, हमने कहा नहीं....

प्रश्नकर्ता: उन्होंने ऐसा कहा नहीं कि तीन महीने की बात हुई थी।

श्री अर्जुनसिंह: वह अलग चीज है, लेकिन जिसको प्रायर कंडीशन कहते हैं, बातचीत के लिए...

प्रश्नकर्ता: आडवाणी जी का बयान था अदालत के मामले में।

श्री अर्जुनसिंह: वह होगा, लेकिन चर्चा शुरू करने के पहले अगर ये बात कहते कि हम चर्चा ही तभी करेंगे जब ये बातें आप स्वीकार कर लेंगे, तब तो दृष्टिकोण सही होता, लेकिन चर्चा करने के समय तो ऐसी कोई कंडीशन डाली नहीं गई और अब उस तरह की बातें करेंगे तो उससे दिक्कत तो पैदा हो सकती है, लेकिन यह सब निर्भर करेगा कि कितनी ईमानदारी के साथ, कितनी साफगोई के साथ ये हल ढूँढने की कोशिश की जाती है। आप जो कह रहे हैं, वह भी अपनी जगह एक विचार का विषय है क्योंकि आडवाणीजी ने तो बिल्कुल साफ शब्दों में कहा है कि हम इस विषय पर कैसे सोच सकते है जबकि इसी के सहारे हम 2 से 199 तक सीट पर आए हैं।

प्रश्नकर्ता : वह उन्होंने साफ-साफ कहा है।

श्री अर्जुनसिंह: वह भी एक बात है जिसे कि हमें हर समय दिमाग में रखना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता: क्या आपको लगता है कि एक ऐसी स्थिति आ सकती है कि अगर इन चीजों को न मानें तो कंट्रोल के लिए क्या तरीका अपनाना चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: खैर ऐसी बात तो मैं समझता हूँ कि अभी नहीं सोचना चाहिए क्योंकि हमारी नीति है कि ऐसी स्थिति पैदा नहीं होगी क्योंकि यह सारे देश का जो मंतव्य उभरकर सामने आया है इस समय वह शांति और व्यवस्था को बनाकर रखते हुए इस मसले का हल ढूँढने के पक्ष में हैं।

प्रश्नकर्ता : आपकी पार्टी ..... ऐसा लगता था कि ..... तो पार्टी को फायदा होता?

श्री अर्जुनसिंह: हाँ ठीक है, उस समय कुछ लोगों का रुख ऐसा था और उसमें सच्चाई भी हो सकती है, लेकिन अब जबकि सोच-समझकर एक रास्ता अपनाया गया है तो हम सब का यह कर्त्तव्य है और हमारी यह कोशिश होनी चाहिए कि वह सफल हो। फिर अगर परिस्थितियाँ नया मोड़ लेती हैं तो उन परिस्थितियों में विचार होगा कि क्या करना है?

प्रश्नकर्ता : फिर क्या आप यह फील करते हैं कि अयोध्या में कोई मंदिर ही न बने?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो इस बात से सहमत हूँ कि मंदिर एक-से-एक विशाल और भव्य अयोध्या में बने, लेकिन एक तो उस मंदिर को बनाने के लिए धर्म के ठेकेदारों को ठेकेदारी नहीं लेनी चाहिए। इस देश का हिंदू समाज बहुत व्यापक और बहुत श्रद्धालु है। उन सब को भी हिस्सा मिलना चाहिए। अब जैसे वी.एच.पी. के लोग या जितने भी बड़े-बड़े नेता या कार्यकर्ता बी.जे.पी. के हैं, उन से कम श्रद्धा मेरी भी हिंदू धर्म, भगवान राम, कृष्ण और शंकर में नहीं है। ठीक है, मैं उसका झंडाबरदार नहीं बनता हूँ और मैं यह भी नहीं कहता कि मैं ही सब लोगों की आस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता हूँ, लेकिन ऐसे भी लाखों, करोड़ों हिंदू हैं जो चाहेंगे कि उस कार्य में सहयोग दें लेकिन अगर मंदिर बनाने का रास्ता खून-खराबे के माध्यम से होना है, किसी दूसरे धर्म के स्थान को तोड़कर होना है तो मैं समझता हूँ कि सच्चा हिंदू तो उसमें भाग नहीं ले सकता।

प्रश्नकर्ता : आपके हिसाब से मंदिर का निर्माण किन लोगों के हाथों में जाना चाहिए। कोई राष्ट्रीय संस्था बनानी चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह : कम-से-कम धर्म के ठेकेदारों के हाथों से तो बाहर रखना चाहिए और जो हमारे देश के प्रमुख और बहुत प्रसिद्ध धर्म गुरू हैं, शंकराचार्य जी हैं या कुछ और बड़े-बड़े विद्वान हैं जिनका कि राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। यह राजनीति का विषय तो नहीं रहना चाहिए। भगवान की श्रद्धा में लोगों का ध्यान जाय, उस दिशा में जो भी जुड़ना चाहे, उसे जुड़ना चाहिए और यह कार्य ऐसे लोगों के हाथ में देना चाहिए जिनके बारे में किसी को कोई शंका न हो। अब करोड़ों रुपए खर्च हुए हैं वहाँ, किसी के पास उसका हिसाब-किताब है कि कितना पैसा जमा हुआ है? उसका कहीं लेखा-जोखा होगा कि नहीं होगा या जिसके हाथ लग गया सो लग गया और वह उसका मालिक बन बैठेगा? कहते हैं कि ये फैसला कोर्ट से नहीं हो सकता। कितने मुकदमे इस देश में चले हैं जहाँ कि मंदिरों के स्वामित्व के ऊपर निर्णय हुआ है, मठों के बारे में, मठों की संपत्ति के बारे में, भगवान की संपत्ति क्या है? इसके बारे में निर्णय हुआ है। तो यह कहना तो ऐसी बात है जिसकी कि कोई तुक नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मुझे लग रहा है कि राजीव फार्मूले की तरफ बढ़ रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: राजीव जी ने तो कोर्ट केस की बात बहुत विचार के बाद कही थी। उससे इंकार तो नहीं किया जा सकता, लेकिन इन लोगों की मुश्किल यह है कि यह तो चाहते हैं कि हल इनके मन का होना चाहिए। अगर मन के हल के हिसाब से किसी भी फार्मूले को स्वीकार करना है तो फिर कैसे होगा .....

प्रश्न : पार्टी मेनीफेस्टो में लिखा हुआ है कि मस्जिद गिराए बिना मंदिर का निर्माण होगा, तो क्या यह एक विवादास्पद बात नहीं है?

श्री अर्जुनसिंह: एक बार तय कर दें कि मस्जिद को नहीं गिराना है, फिर तो झगड़ा ही कोई नहीं है।

प्रश्न : एक बात और कही जाती है कि शाहबानो मामले में कोर्ट की भावनाओं का ख्याल क्यों नहीं रखा गया?

श्री अर्जुनसिंह: थोड़ा इसमें फर्क है, एक कोर्ट का आदेश हुआ और उस आदेश की प्रतिक्रिया को ध्यान में रखते हुए कानून में संशोधन किया गया। यही हुआ न शाहबानो केस में? अब वह संशोधन किसी के मत में सही है या गलत है, वह अलग चीज है। यहाँ तो अभी फैसला ही नहीं हुआ है। यहाँ तो अभी फैसला करना है। वहाँ तो फैसले के प्रभाव को संशोधित करना था। दोनों में जमीन आसमान का फर्क है।

प्रश्न : वह तो संसद से कराया जाएगा .....

श्री अर्जुनसिंह: वह तो कर सकते हैं। आज भी कर सकते हैं, कल भी कर सकते हैं क्योंकि पार्लियामेंट जो है, वह तो समूचे देश का प्रजातांत्रिक कांसिएंस है वह ऐसे मामलों में ही कोर्ट के निर्णय के बारे में पुनःविचार करने की बात सोचेगा कि ऐसा करना जनहित में है या नही?

प्रश्न : एक इस चीज को अखबारों में महत्व दिया जा रहा है कि आपका नरसिंह राव जी के साथ कोई टकराव है? आपको क्या लगता है?

श्री अर्जुनसिंह: जहाँ तक मैं जानता हूँ, मेरा तो कोई टकराव नहीं है और नरसिंह राव जी भी जानते हैं कि कोई टकराव नहीं है, लेकिन कुछ लोग टकराव की ही राजनीति जानते हैं और वह भी अपने मन मुताबिक बनाकर उसे प्रकट करना चाहते हैं। तो अगर उनको इससे खुशी होती है तो होने दीजिएं इससे मुझे तो कोई नुकसान नहीं है।

प्रश्न : ऐसे कौन से लोग हैं?

श्री अर्जुनसिंह: हैं, सब के अपने-अपने मोटिवेशंस होते हैं।

प्रश्न : वह आपकी पार्टी के हैं?

श्री अर्जुनसिंह: मैं इसमें जाना नहीं चाहता क्योंकि मैं उस लाइन ऑफ थिंकिंग को निरर्थक मानता हूँ

प्रश्न : आप दोनों की आपसी समझ अच्छी है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो इसमें कहीं कोई संदेह नहीं देखता हूँ।

पंजाब को आर्थिक पेकेज दिया जाए

6 दिसम्बर 1992 को मुक्तेश्वर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश:

Q: Don't you think Mr. Jagjit Singh Brar has broken the discipline of the party?

A: Well, I am nobody to pass judgement on that. That is why I have said that is a decision for the party President. There are some rules and procedures for that. Let it go through that. If he is guilty, then he deserves punishment. If he is not guilty, then he does not. I can't pass a judgement on it. Neither can one person without giving him a chance to say what he feels pass a judgement. That is what the AICC has said.

Q: Have you taken PM into confidence before coming to Punjab, since it has become a controversial issue?

A: Well, I don't know what all this means. Controversy is a part of our system. Democracy will always have controversy on one thing or the other. The only thing as a Congressman I should take care of that I don't say anything against the policies and programmes of the party. And in any function I go I should not be saying anything of that kind this is my responsibility. I don't see there is any compulsion to take anybody's permission every time I step out of my house.

Q: Punjab has seen so much of bloodshed in the past so many years. You were the Governor of Punjab and now you are the Union Minister for Human Resources. Development I think it is time that we should pray for the country, pray for our State of Punjab. What kind of prayer you have in your heart?

A: You see, prayer is born out of faith. If you pray without faith, then it is a mockery, according to me. And the only faith that can actuate or make us do something is faith in our country. If we have faith in our country and love for our country, whatever the language may be, whatever the words may be, that prayer will matter. And that is why I am saying that this is the first responsibility of everyone to think of his country first, and himself and his State second. That is the only way to pray. If by `pray' you mean which temple I should go, or which Gurudwara or Masjid I should go, that is where I say whether I pray in a temple or a Masjid or a Gurudwara or a Girja Ghar is nobody's business. That is my business as an individual between myself and the faith I have.

Q: A lot of youngsters here are waiting for heavy industry of some kind of an economic package should come to Punjab, like including Chandigarh should be given to Punjab. Punjab package is always delayed. Why?

A: You see, ``package'' word is some thing which I do not appreciate because it is like buying and selling. This is not buying and selling. This is time to do what is right for this part of the country. Economic development, all the impediments to agricultural development have to be provided, employment has to be provided and I think under the circumstances

to the extent possible it is being done. Perhaps more needs to be done. As Brahm Mahindraji has said in his speech, I agree with him that more has to be done. But now that comes under the overhaul situation. It depends on your resources. You just can't go beyond certain limits.

Q: As far as militancy in Punjab is concerned, people always mean numbers, like so many killed or so many not killed. Why these numbers are counted and why such statements are coming from our politicians of today?

A: Please don't make me answer for every one. I can only answer for myself.

Q: Do you think there is need for organising more of such functions?

A: I think in a democratic set up, there is no other alternative. You see, everyone need not have spoken here, could not have spoken when thousands of people come. But the communication that goes, then they make their own judgement when there is weight in what was said, was it worth listening to it. Interaction between people is the essence of democracy. If that interaction does not take place, then how does democracy function? So it is very essential. You see, the PCC keeps a very close watch.

भारत को सम्प्रदायवाद से बचाना है

10 दिसम्बर 1992 को द हिन्दू की सुश्री मालिनी पार्थ सारथी के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Q. Do you feel that the political line that was reflected in your letter to the political secretary to the Prime Minister calling for a more assertive and confrontationist approach to communal forces has been vindicated in the light of the tragedy that has occureed at Ayodhya?

A. I don't look at the whole issue as vindication or no vindication of any line. The point is, the nation has been confronted by such forces in the past also and the reaction in those circumstances has also been clearly laid down whether it was 1948 or 1975. The simple point is, I believe and I continue to believe that this section of the political segment of this country, by whatever name it may go, has always put its own interests, political or otherwise, above the interests of other people and even above the interests of the country. Time and again, they have proved it. And this is the background in which I had written that letter. Now you may ask that after having written that letter, why did you not follow it up consistently day by day. The answer is very simple: I agreed with the Prime Minister's initiative to solve this matter amicably because in a democratic setup, it is absolutely correct to follow a line which takes the country to a solution of a vexed problem in an amicable manner. No one can find fault with that. The sincerity of purpose, no body should doubt - in his effort to have an amicable settlement. It is

obvious that this was not the intention of the RSS, VHP and BJP. They took this effort by him in the same attitude of insincerity which they have always done, which today has led the Prime Minister to go on record publicly and say that they have betrayed him and they have betrayed the nation. I stop at this stage, so far as that thing is concerned.

Now having learnt this lesson, not only at the cost of a political party but at enormous cost of the country, we have to be very firm in dealing with these elements, of course within the laws of the land. And in his address to the nation, the Prime Minister has used a certain terms - ``Machiavellian strategy of the BJP''. This is the term he had used. I think such Machiavellian use of opportunity the democratic and secular polity of this country has to deal with ruthlessly.

Q. How far do you think is the Government responsible for this state of affairs? Shouldn't the Government own responsibility for what has happened?

A. Well, any government which is in power has to own responsibility for whatever happens. We take credit for a lot of things and if something goes wrong, then we have to take the blame for it also. But the circumstances in which all of this has occurred has also to be kept in view.

Q. In that case, certain political strategy was adopted by the government which involved much more conciliatory approach then might have been realistic in dealing with communal forces. Should the government not publicly repudiate such a line?

A. After taking a firm line in the broadcast of the Prime Minister and his statement which could not be given but was published none the less, there is no doubt or any reservation in the minds of the government that now we have to take a very consistently firm and strong attitude against the communal froces.

Q. Could you spell out the elements of such a line on the ground?

A. It has been announced that clearly identified communal bodies and elements will be banned. Now this is a legal action. It will be taken in a legal frame work. I don't think it will be delayed any further.

Q. You mean it will be announced.

A. I mean, it cannot be delayed any further. And the second thing is that on the political level, the party will have to come out and clearly reiterate its commitment and adherence to the principles of secularism and democratic functioning and this will be a campaign which the party will have to carry out throughout the length and breadth of the country which will underline the fact that these elements by demolishing the mosque have shown unmistakably that they will stop at nothing to destabilise the country, would create any kind of unrest so long as it helps them in their view to acquire power in India. So our response has to be much more strongly

and firm.

Q. The other point is the Congress has forfeited the faith of the minorities. One of the reasons why the Congress has not been able to establish in the North is because of the feeling that it has been insincere in implementing secularism. With this latest incident, don't you think minorities faith will be further eroded?

A. Well, we cannot afford to overlook this factor and it is a fact that over the last few years, though the reasons were not correct, yes the perception that was allowed to grow and which influenced the minds of the minorities was that perhaps the Congress is waffling in its stand. But it was wrong then that we were waffling or resiling from our stand and it is wrong today. But now having the experience of the last three or four years, the party will have to come out much more clearly and categorically about our stand. And I must also say that this stand cannot be purely one of going along with the minorities and giving the impression that we do not care for anybody else.

Secularism does not imply dividing the country in various sections - that there is a Muslim thought, then there is a Christian thought and then there is a Sikh thought. The Congress approach has always been one of harmony amongst all this. Or the Hindu thought as I said. We will have to stick to this path that unless India is able to think in terms of India and not in terms of castes and communities, India cannot exist as it does today. The real threat is that. And that is the threat which the Congress party and all the secular parties will have to face with totally single-minded sense of purpose.

Q. How would you bring back the minorities? The fact is that the pendulum has swung to the other extreme. Would it not be better to have a broad-based thing?

A. It has to be of a broad-based nature. If the pendulum has swung tragically, as you have said, to one extreme, I don't think a tragic swing to the other extreme is the answer. And that is only underlines the fact that not mere words but all efforts will have to be put in, to make people believe that we have a certain basic faith, and that faith will have to be stuck to, in that secular cosmopolitan approach and thinking.

Q. When you talk of re-building the mosque, is that necessary?

A. Well, that is a commitment which has been made. We have every intention of carrying it out.

Q. But is it not important not to allow the campaign by the BJP not to build a mosque?

A. You see, this is a democratic country and all these things will have to be decided basically in the hearts and minds of the people of this country. That is where the political programme has a certain importance and we have to go out and explain to the people as to what the issues are, how these people not only betrayed the Prime Minister, but they have actually betrayed the nation. That will be the central theme and the plank on which what we want to project will have to be projected.

Q. Then does the case of the three BJP State Govts. warrant their dismissal? They have shown their disinclination to respect the Constitution.

A. Coming to the point of dismissal of State Governments, I think the constitutional proprieties and the procedures involved should not be short-circuited and the basic requirement of action in a certain situation must be very carefully weighed and if that kind of action is called for under those circumstances, I am sure we are not going to shirk that.

Q. In Madhya pradesh, you talked about army being called in. Does it imply you are hinting...

A. No, I am not hinting at anything; I went there to see for myself, as desired by the Prime Minister, how the situation exists on the ground and what I saw on the ground was that the people's faith in the impartiality of the civil administration had been greatly eroded. Now, I am not going into what was right and what was wrong, but at this moment of time, our first priority is to save life and property. And in that context, I came to the conclusion that perhaps in the circumstances prevailing only an effective intervention by the army could help that, and that is why I made that suggestion. I put it to the Chief Minister also. It is not that I made this suggestion behind his back. I met him and told him also that you are responsible to achieve, perhaps will be better achieved by this.

Q. Coming back to the question of Central Government, don't you think the credibility of the government leadership has been undermined given that the government did not anticipate the challenge of demolition of the mosque?

A. Well, I would not say that the eventuality of demolition of the mosque was never coneived of. That is not correct.

Q. So the whole incident at Ayodhya has convinced the members of your party of the need for a much more assertive and confrontationist line against communal forces as compared to July.

A. Well, if I can understand the Congress party haveing been in it for 35 years, the heart and mind of this party on this issue has always been clear and is clear - that the Congress party can never think of any other situation where we compromise with these elements. That is absoultely out of the question. Now when such a vexed issue came up where passions had been aroused and deep divisions had been made, the Congress, as a mature and as a responsible organisation, tried to explore the route where perhaps, without making these divisions more deep and sharp, we could have arrived at an amicable solution. Now because of the perfidy of the parties concerned, it has again been proved that our evaluation about them is correct and this they have been doing time and again, but the manner in which they have done this now I think, reinforced the party's resolve to give them no quarter politically now at all.

Q. Would it be correct to say that after July, by your subsequent support to the PM to find an amicable solution you were giving a chance to the alternative route?

A. I am nobody to give somebody any chance. As a member of the party and democratic functioning of the party being as it is, I saw my duty at that time to express my view on this matter. It was not expressed against anyone. And as I said, as a party in Government, as a

mature party, if there is a route available to end this division, to end this sharp focus and come to a solution about an issue, I see no reason why that should not have been followed.

Q. But that route was not there eventually.

A. Well, what happened eventually, that all of us know. That doesnot mean that the effort to go that route was itself basically wrong. No, it was not wrong.

Q. How do you explain, coming back to your letter of July, the strong reaction of the party in political terms as that being some sort of an attack on the P.M.? Do you think that the response of the party or within the party was that fair?

A. I don't think I should pass a judgement on that. So far as Prime Minister did not misread what I had written, what other people say, let us bear with it. He has never said - not said, nor endorsed what these people said at that time. And I think it is not proper now to harp on all these things. There are much more serious problems with which the party has to contend with. The time is for solidarity, determination. That is what we must all work to promote and work for.

Q. Some sort of argument is being made that if strong action is taken against the BJP, it will give some room for a backlash and some political mobilisation on their part. Do you think that there is any reason to delay strong action aginst the BJP and communal forces?

A. You see, if you are convinced that the communal forces have done something which they should have not done and it is because of that that this strong line is being taken, then the very natural corollary is that you cannot stop halfway just because there is a backlash from them on their side. The backlash should have been and has been taken into account in the very first instance when the action was contemplated and announced. I don't think the Government can afford now in any way to soft pedal this action and the government, the country and the party will have to take them on. After all they are not the final arbiters of public opinion.

मंदिर मस्ज़िद को सियासत में मत घसीटो

13 दिसम्बर 1992 को नई दुनिया (उर्दू) तथा नई जमीन (हिन्दी) के श्री शाहिद सिद्दीकी के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

प्र. श्री अर्जुनसिंह, कॉंग्रेस पार्टी ने वायदा किया था कि वह बाबरी मस्ज़िद की हिफ़ाज़त करेगी। राम मन्दिर भी बनाएगी और मस्ज़िद को भी महफ़ूज़ रखेगी। मस्ज़िद पर कोई आँच नहीं आने देगी। कॉंग्रेस के सारे लीडरों ने बहुत खुल कर इस बात को कहा था, हम किसी हालत में भी मस्ज़िद की ईंट नहीं गिरने देंगे। लेकिन आज मस्ज़िद जो बिल्कुल मिटा दी गई है तो इस पर कॉंग्रेस कोई बहुत ज्यादा शर्मिन्दा भी नज़र नही आ रही है?

उ. ऐसा कौन आदमी होगा जो इस बात से आज इन्कार कर सकता है कि हमने बाबरी मस्ज़िद को बचाने का वायदा नहीं किया था और उस वायदे को हमने नहीं निभाया है। ऐसा कहना हक़ीक़त के खिलाफ होगा। अब यह कहना कि उसका असर हमारे पर क्या हुआ, हम शर्मिन्दा है या खुश है, या कि बुरी तरह से जिसको

कहते है अनकंसर्ड है, मैं तो यही मानकर चलूँगा कि केवल काँग्रेस के चंद लोगों को छोड़ कर जो इस पूरे मसले को केवल अपने लिए वोट की गिनती से तोलते हैं, उनको छोड़ कर भारत का प्रत्येक नागरिक शर्मिन्दा है।

प्र. शर्मिन्दा से आगे बढ़कर जो राजनीतिक ज़िम्मेदारी है काँग्रेस की उस ज़िम्मेदारी के बारे में आप क्या समझते है?

उ. वह ज़िम्मेदारी यह है, जो समय से रिलेट होती है, सबसे पहली ज़िम्मेदारी यह है कि जब इस वक्त चारों तरफ आग लगी हुई है, उस आग को बुझाने के लिए सब का सहयोग लेकर हम हर तरह की कोशिश करें। दूसरा यह है कि काँग्रेस की तरफ से अब यह साफ आवाज ही नहीं, एक प्लान ऑफ एक्शन आना चाहिए जो इस बात को जाहिर करे और लोगों को विश्वास दिला सके कि इन साम्प्रदायिक शक्तियों से लड़ने का हमारा न केवल इरादा है, बल्कि उस इरादे को पूरा करने के लिए हमने कोई योजना भी बनाई है। क्योंकि अगर योजना बन जाएगी और उस पर अमल नहीं होगा तो इरादा वैसे ही साफ हो जाएगा। लेकिन जब योजना ही नहीं रहती हो, बयान रहते हैं तो फिर आप कहीं कुछ पकड़ भी नहीं सकते हैं कि आप चाहते क्या थे, और क्या करना था, आपने क्यों नहीं किया? दुःख की बात यह है कि अभी तक हमने ऐसा कोई प्लान ऑफ एक्शन नहीं बनाया था और उसका भी खमियाजा पार्टी को भुगतना पड़ेगा। लेकिन अब ऐसा न हो यह हमें देखना पड़ेगा। 17 तारीख को जो वर्किंग कमेटी की बैठक हो रही है। उस वर्किंग कमेटी की सार्थकता तभी होगी जब उस वर्किंग कमेटी के अंदर सारे देश को यह हम बता सकें कि हमारा यह फैसला है और उस फैसले के द्वारा हम देश में केवल अमन-चैन कायम ही नहीं रखना चाहते, वह तो हमारी ज़िम्मेदारी है ही, लेकिन भारत का जो ज़म्हूरियत का तकाजा है, वह पूरा हो और जो देश का नक्शा गाँधी जी ने, जवाहरलालजी ने, मौलाना आजादजी ने, सरदार पटेलजी ने, जितने भी हमारे नेता रहे हैं, उन्होंने जो तस्वीर देखी हम उस तस्वीर को बरकरार रखना चाहते हैं। अगर उसमें कुछ खामियाँ आई हैं, कुछ टूटी हैं उसको दुरूस्त करना चाहते हैं। अगर यह साफ़तौर से जाहिर नहीं होता तो फिर काँग्रेस का कोई मतलब नहीं।

प्र. आप भी सरकार में हैं और केबिनेट के सदस्य हैं। सरकार ने कहा था उसके पास कंटिनजेन्सी प्लान तैयार है अगर आवश्यकता होगी तो एक्शन लिया जाएगा। लेकिन 6 दिसम्बर की रात को जब कि मस्जिद टूट चुकी थी और उसके बाद यू.पी.की सरकार को डिसमिस कर दिया गया, 18 घंटे तक कोई एक्शन नहीं हुआ, कोई कंटिनजेंसी प्लान नजर नहीं आया, लोग आज यह कह रहे हैं, क्या यही कंटिनजेंसी प्लान था?

उ. मैं इसका उत्तर पूरी तरह से नहीं दे सकता। लेकिन यह सवाल ज़ायज़ है और निश्चित रूप से सरकार को इसका खुलासा देना चाहिए।

प्र. यह बताइए कि सरकार कहती है विश्वासघात हुआ है उसके साथ, तो यह किस ने विश्वासघात किया? क्यों विश्वासघात हुआ, कैसे विश्वासघात हुआ?

उ. यह तो प्रधानमंत्री ने साफ शब्दों में कहा है कि यह विश्वाघात बीजेपी ने किया, आरएसएस ने किया, वीएचपी ने किया। स्वाभाविक है जो लोग उनके विहाफ़ पर बात कर रहे थे, उन्होंने किया और किस को मैं कह सकता हूँ।

प्र. आपके जमाने में डाकुओं से आपने हथियार डलवाए थे, मध्य प्रदेश में तो अगर वे डाकू हथियार डालने के बाद कोई ऐसा काम करते, कत्ल कर देते वहाँ लोगों का, जहाँ हथियार डालने आए थे तो वह विश्वासघात

जो होता उसकी जिम्मेदारी आप पर आती क्या?

उ. बहुत से लोग होते हैं। डाकुओं के आत्मसमर्पण की इससे न तो कोई तुलना की जा सकती है और न ऐसा कुछ है। सवाल यह है डाकुओं ने आत्मसमर्पण किया कुछ बातों पर विश्वास करके, जो हमने एज ए चीफ़ मिनिस्टर उनसे कहा था, तो उन्होंने विश्वास दिलाने की बात कही थी।

प्र. इससे पहले कि मैं आगे जाऊँ, मैं एक बात कहूँगा कि अल्पसंख्यक, मुसलमान खासतौर से, जो हैं उनमें यह भावना आई है कि जब-जब इम्तहान की घड़ी आती है, काँग्रेस उन्हें फेल करती है और खासतौर से इस अयोध्या वाले मामले में तो शिलान्यास हुआ, ताला खुला और अब यह सवाल आया कि काँग्रेस ने वह रास्ता अपनाया जो संविधान का नहीं था, जो उसके अपने आदर्शों का नहीं था बल्कि जो बहुतसंख्यक साम्प्रदायिकता का तुष्टिकरण करता था, वह अपनाया। यह एक विश्वास एक भावना उनके बीच आई है?

उ. अगर ऐसी भावना हैं, जैसा आप कहते हैं तो मैं इसको contest नहीं करता हूँ। अब हमारा यह कर्तव्य है कि हम इस feeling को दूर करें, अगर हम इस feeling को दूर नहीं कर सकते तो फिर हमें Secularism की बात, धर्म की बात करने का कोई अधिकार नहीं है।

प्र. मैंने सवाल इसलिए पूछा कि क्या काँग्रेस ने जो इतनी लड़ाई लड़ी है तो खुद काँग्रेस के अंदर यह विश्वास है कि वह Secularism की यह लड़ाई पूरी ताकत से लड़ सकेगी, क्या काँग्रेस के अंदर नीचे तक यह भावना है?

उ. अब इसमें तो मैं अपने ही विश्वास के बारे में कह सकता हूँ।

प्र. क्या कोई National Government बनाने की बात हुई?

उ. मैं नहीं समझता National Government बनाने की जरूरत है।

प्र. इसमें जनता दल और लेफ्ट पार्टीज के साथ मिल कर ....

उ. पॉलिटिकल पार्टीज जितनी भी हैं उनके बाहर भी जाकर। मैं इसीलिए पार्टी को नाम से नहीं जोड़ना चाहता, वे शक्तियाँ जो ऐसा सोचती हैं उसमें हमारी पार्टी भी आती है।

प्र. यह बताइये कि खुद काँग्रेस के अंदर इतना बड़ा एक development हुआ है तो खुद काँग्रेस में लीडरशिप में परिवर्तन की कोई बात है?

उ. लीडरशिप के परिवर्तन की बात काँग्रेस का अपना अन्दरूनी मामला है। लेकिन सवाल इस वक्त परिवर्तन का उतना नहीं है, जितना कि काँग्रेस को, जो हमारा फर्ज़ है, उसको निभाने में आगे बढ़ने का सवाल है।

प्र. जो गलतियाँ हुई हैं उसकी जिम्मेदारी किसी को तो लेनी पड़ेगी?

उ. अपने तरीके से पार्टी के अंदर जो लोग इस बारे में सोचते हैं मैं समझता हूँ यह उन पर छोड़ना चाहिए और यह बात अपनी जगह बहुत साफ है काँग्रेस के क्राइसेज़ के समय में हमारा पहला ध्यान जिस पर जाना चाहिए उस क्राइसेज़ की वज़ह से उस पर फोकस कम हो जाए ऐसा करना उचित नहीं है।

प्र. आप मध्यप्रदेश में भोपाल गए वहाँ पर आपने क्या देखा?

उ. वहाँ तो जो मैंने देखा वह तो आलरेडी छप चुका है। प्रश्न इस वक्त केवल यह है कि जहाँ तक ये तीन भाजपा शासित राज्य हैं, वहाँ पर केन्द्रीय शासन ने आर.एस.एस. को बैन कर दिया है। unlawful organisation हो गया है तो वहाँ तो वह घटना हुई थी उनका तो अपना अलग महत्व है और उनको मूल्यांकन करके होना है, अपनी जगह सही है। लेकिन आज स्थिति यहाँ यह बनी हुई है जिस संस्था को हमने unlawful declare

किया हुआ है, उस संस्था में इन तीन मुख्य मंत्रियों ने घोषणा की है कि वे उसके सदस्य हैं। इसलिए उन्हें तो अपने शासन में बने रहने का कोई अधिकार है ही नहीं।

प्र. जो बैन लगाया गया है, विश्व हिन्दू परिषद् पर और दूसरे दलों पर इससे आप क्या समझते है किसको फायदा होगा और स्थिति को सँभालने में कितनी सहायता मिलेगी?

उ. इसमें तो हरदम दो राय रहती है लेकिन अगर आप अमल ठीक से करें तो निश्चित ही उसके अच्छे परिणाम निकलेंगे।

प्र. अबतक यह दिखावा ही है और कोई कार्रवाई इस बारे में नहीं हो रही है?

उ. ऐसा तो मै नही मानता कि दिखावा है, लेकिन अगर कार्रवाई ठीक से नहीं होगी तो उसके परिणाम तो अच्छे नही निकलेंगे।

प्र. इसमें बैन के साथ और क्या कुछ होना चाहिए? ऐसी इनकी तो बहुत सारी कनेक्टेड आर्गेनाइज़ेशंस हैं जिनके द्वारा काम करती हैं। इसलिए बैन जो है इसको इम्पलीमेंट करना बहुत मुश्किल काम है।

उ. काम कोई मुश्किल नही है। बैन इस तरह से होना चाहिए कि इस तरह की गतिविधियों पर रोक लगे। इन सब को जेल में बंद करना है यह तो कभी कोई डेमोक्रेसी में एक मात्र पर्याप्त काम नहीं होता है। जो एक्टीविटीज़ हैं वे बंद होनी चाहिए और जो रक्षा पर आड़े आ रहे हैं उन पर कानून के हिसाब से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए।

प्र. माइनॉरिटीज़ के सवालों पर कहना चाहता था। अब यह जो कुछ हुआ है, दंगे हो रहे हैं उससे जो हालात बने हैं उसमें लोगों को बसाने के लिए, उनकी हालत को फिर से सँभालने के लिए आपके ख्याल में क्या स्टैप्स होने चाहिए?

उ. एक चीज खुले और दुःखी मन दोनों से कहना चाहता हूँ समय आ गया है कि मन्दिर और मस्जिद, गुरूद्वारे और गिरजाघर इनकी सीमाओं से सियासत को निकाला जाना चाहिए। बहुत हो चुका है। मन्दिर तोड़े जा रहे हैं वह भी बहुत गलत है, मस्जिद तोड़ी गई वह भी बहुत गलत है। अभी गनीमत है सारे देश में गुरूद्वारे और गिरजाघरों की बारी नहीं आई है। लेकिन अगर यह मानसिकता चलती रही और एक दिन वह भी होना शुरू हो जाए तो फिर ताज्जुब नहीं करना चाहिए। इसलिए देश में जितने भी समझदार लोग हैं जिनकी संख्या बहुत बड़ी है उनके दिल और दिमाग को इस वक्त छूने की जरूरत है। अगर ईमानदारी से कोई ऐसी कोशिश करेगा तो मैं समझता हूँ देश को बचाया जा सकता है। यह जो घटना हुई है यह घटना इतनी भयानक है कि शायद हम लोग इतने नजदीक हैं समय के कि अभी हम अहसास नहीं कर पाए हैं।

सरकार और काँग्रेस नेतृत्व भाजपा के जाल में फँसे

17 दिसम्बर 1992 को इलेस्ट्रेटेड वीकली के श्री रामचन्द्रन के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

Mr. Arjunsingh : We will have to be precise. Can't be rambling - neither you, nor me.

Q: Yes, very precise. Mr. Arjunsingh, demolition of the Babri mosque was an affront to the State as well as the constitutional order. Why did your Government fail in its constitutional responsibility?

A: I would like to add one word to what you have just said. It is also an affront to the conscience of India.

The prevention of the demolition could not take place because all the logistics worked out could not be brought in to operation at the last moment and the BJP, VHP and all the other people with them, including the Government of Uttar Pradesh led by Shri Kalyan Singh, cynically betrayed the Supreme Court of India, the Prime Minister of India as also the people of India. The only thing you can say is that they perfected the act of betrayal meticulously and the result was the demolition of the mosque.

Q: Why did your Government and the Congress leadership in office fail in upholding the Constitution and the guarantees it had explicitly given at the National Integration Council?

A: I just told you the reason. This is the reason. We are part of it - the betrayal part of it includes us.

Q: What in your assessment was responsible for the Congress leadership and Government being trapped into such inaction and, let us say, self-defeating faith?

A: Well, you can use whatever language you want to condemn this, but the fact is what I have told you. And this can always happen once to anybody. But we are careful now that it does not happen second time.

Q: This is not the first time, Mr. Arjunsingh that this has happened to the Congress Government. The Congress joined hands with the BJP when the earlier Government was fighting on this very same issue, the V.P. Singh Ministry. The Congress struck a compromise during July. The Congress Government accepted terms for a way out in January during the Ekta Yatra. Do you think there has been a misreading of the political character of the forces the party was dealing with?

A: Well, to some extent what you say is correct. But so far as the question of July' 91 is concerned, if you are referring to that, we did not seek an alliance with the BJP. The acts of commission and omission of the VP Singh Government were so patent that there was a no-confidence motion which we supported and the BJP supported for its own reasons. But there was no link or nexus between us.

Q: Has not the Congress successively been blind to the character of these forces?

A: No, I don't think so. The Congress party and its leadership has never been blind, or in any way supportive in the remotest manner of the ideas, ideals and principles which actuate the activities of the BJP, and RSS.

Q: I would like to refer to your petition. When there was petition before the Election Commission seeking to disqualify the BJP as a secular party worthy of parliamentary participation, neither your party nor your government there the whole weight of its resources behind your petition. They are talking of reviving the same petition now.

A: I was never seeking any resources because that was an action which was impelled by my own

deep belief in this matter. The action was initiated in fact at a time when I was down with a heart attack in the Bhopal hospital. It was from the hospital that I had petitioned the Election Commission originally. May be that the petition then had not been documented, or whatever documentation was there, it was not sufficient for the Commission to come to the conclusion as I had prayed for. I think now after what has happened in the last two or three months, more so since first week of December, '92, I don't think any more documentation is needed to confirm, if any confirmation was still desired, that the BJP has only a narrow religious plank on which it wants to win political support through the democratic process. This is totally alien to the principles enunciated in our Constitution, totally contrary to the election law of the land and also a very cynical attitude which they have in their ruthless pursuit of power. Maybe now even the Election Commission would give it a second thought.

Q: Even In the aftermath of what happened on December 6, the party has been found to be hesitant, halting, unsure on how it should proceed against these people.

A: Well, I don't think you can accuse us of any reservation or second thoughts. All the steps that have been taken do not support this theory. Maybe somebody could say that perhaps this should have been done on that I think is not because of lack of will, but because we had to proceed very cautiously in such matters so that there could be no avoidable fall-outs.

Q: The RSS, VHP, the Bajrang Dal and the Jamait-e-Islami and the ISS have been banned; the BJP governments have been dismissed. What more needs to be done to isolate these forces in your opinion?

A: You see, all these are government actions which any constitutional government would take under these circumstances. But the real battle will have to be fought politically in the minds and hearts of the people across the country because in a democracy, the people are the final arbiters. I think that battle has to be joined very steadfastly and with conviction and meticulously planning, taking together all those who believe in a common objective - that is to strengthen and protect the secular and democratic credentials of this country.

Q: Will this method succeed? I am asking you this because you yourself have said that these are governmental actions. Will this restore the basis of secularism in our polity? For instance, the BJP and others still have their political place in parliament.

A: Maybe, but as I said the final and really ultimate battle in a democracy is always fought before the people of this country and their endorsement or non endorsement decides the result of this battle. At least till now in these two battles of 1989 and 1991, nation wide, have given a clear signal that the people of this country are not in favour of diluting the principles of secularism and they consider secularism to be the bedrock of Indian democracy. Both cannot be separated from each other. That was the message of the results of 1989 and 1991 general elections. I am confident that whenever the elections in India are held again, this will be the result once again.

Q: For the last six years, the Congress has been at various points joining hands with these forces and one has seen during these developments the character of the bureaucracy as well as sections of those who were supposed to be the order-keeping forces and security forces. They too, one could see, have been saffronised in their attitudes and actions. Do you think an authoritarian bureaucracy and mentally corrupt security force can be trusted as a wing of the political action?

A: Well, I think it is too sweeping a remark against both. There may be some people who might be subscribing to this kind of thing. But in my view, it will not be correct to say that the entire bureaucracy or the police force has been, what you have termed, saffronised. We should not paint a very very big majority in both the bureaucracy and the police who have been doing their duty consciously as the arm of the government.

Q: You think that they will do it as an arm of the government consciously. Again, given its secular credentials, you have justified that the Congress had to take these measures, but how do you exclude the trend towards authoritarianism? Today you might exclude the BJP. Tomorrow you might say, the Janta Dal is casteist, and the day after you might say that the leftist parties do not believe in parliamentary constitutionalism. So you might end up reducing the space for genuine secular forces instead of the fascist forces.

A: Well, I think, as a purely sterile argument you can say what you have said, but nobody with an understanding and faith in the democratic system of this country can think of this kind of an attitude or this kind of scenario. We may or may not agree on every thing, but the Congress Party will never go this route, and given the opportunity and chance the BJP will not hesitate to go that route has been proved even now. And that is why the danger that it presents to the democratic system of the country has to be effectively fought.

Q: The Congress does not have the record of such adherence if you recall what happened during the Emergency. The National Security Act and MISA had been used against trade union leaders like Shankar Guha Neogi and other progressive and secular sections in the past.

A: Well, by all accounts, even by those who had imposed emergency in 1975, the Prime Minister herself admitted her mistake publicly and asked forgiveness from the people of this country. It is a matter of record. So with all sincerity I can say that the Congress will never go that route. Once an aberration took place, all of us have learnt our lessons— the Congress and I think all the political parties.

हम इतिहास से सबक लें

17 दिसम्बर 1992 को बी.बी.सी. के श्रीमार्क टुली के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

Q: Mr. Arjunsingh, the Prime Minister has said that he does not have on his shoulders the responsibility for the destruction of the mosque. As a senior member of the Cabinet, do you

really believe that your Government bears no responsibility for this?

A: Well, the people were trying to pin the responsibility on him personally and therefore what he replied was absolutely correct. I have already maintained and said so that no government can say that we cannot bear any responsibility, but to say that an individual has all the responsibility is not correct. But the circumstances in which all this happened, the background in which all this happened, it is very obvious that the forces who were bent upon taking this route had decided to mislead the Prime Minister, the Government, all the political parties and shades of opinion represented on the National Integration Council, the Supreme Court. So in the face of this massive act of perfidy, If I may call it, yes, something happened and it is a matter of great anguish for all of us.

Q: You must have known that something could have gone wrong. Precaution could have been taken once you knew the size of crowd to prevent the security forces from being in a position where they had no alternative than either to let the laws go or allow the massacre.

A: You see, if you argue backwards, then you come to one conclusion. But if you look at the progression of events, then you come to a different conclusion. The progression of events was, as I said, that they were able to get away with practically every organ of the State legislative the executive, the Parliament and the Judiciary.

Q: You say that this is an act of perfidy, but many eye witnesses say that Mr. Advani, for instance, was very upset at what had happened and was trying to stop it.

A: Well, Mr. Advani individually, I don't know what he was doing, you are a witness, I would believe you, but this cannot be said of the entire apparatus which was involved in this, and to which Advaniji and all the members/leaders of the BJP seem to be giving authority and discretion beyond all reasonable measures.

Q: Now the Government have decided to dismiss the State Governments of the BJP. This has been interpreted as a victory of the hard-liners against the BJP in the party led by you. Is that correct?

A: Well, I know a lot of misconceptions have been raised and are nurtured for various reasons. I do not lead anything and nobody .... What I believe is that the BJP is thinking that it represents something which is going to undermine both the democratic and secular credentials of this nation and I think anybody who wants to look at the whole thing closely cannot but come to the conclusion that democracy in India cannot thrive without secularism, in the pluralistic society that we have, and therefore one is supportive of the other. The Congress party, its philosophy, its thinking and its total ethos has been one of strengthening both, because we want democracy to flourish in this country. The Congress party at least has the satisfaction of being instrumental in this country becoming independent and the freedom struggle was not

only a struggle against a colonial power but it was a struggle to establish certain principles and ideals in this country.

Q: Can I back to the immediate past? You yourself in the past have expressed concern about the Union Government's attitude towards the BJP not being hard enough. Is it not sure enough true that you have led this campaign to take hard action against the BJP after the Ayodhya mosque destruction?

A: Well, I have, with many other friends, said that now we cannot afford to be betrayed a second time over and it is no secret that my views about them have been quite clear and candid. But as a member of this Government and a member of this party, I publicly deferred to the decision of the Prime Minister, which I thought was the correct decision, to pursue a line of negotiation so that this whole thing could be resolved amicable. This is now the situation. Therefore the logical thing is that we should not take any chances further.

Q: Did you at any time warn the Prime Minister that there could be a disaster or an accident in the days leading up to Ayodhya?

A: Well, there were many discussions and all the information that has come up it was discussed.

Q: Supposing what happened at Ayodhya was in a sense not deliberate but an accident, then it was a folly on your part as well, wasn't that? And it was folly on your part to even give the option of destroying the mosque if it was deliberate.

A: Well, you know the working of a Cabinet system of Government. We are there to aid and advise the Prime Minister to run the Government and to the extent we have that responsibility and also the opportunity. But the ultimate decision normally is what the Prime Minister says and we have to go along with it, or if we don't agree to even that, then we have to get out of the Government. But I also believe that when the Prime Minister is getting so categorical assurances from these people and is pursuing that line, we should go along with him.

Q: The Prime Minister has now been described as a "lame dog Prime Minister", a man with his authority undermined by what had happened, do you think that he can lead the campaign which you say is so necessary against the BJP?

A: Well, I know a lot of people want to read too much into the present situation, but let us not forget that the Prime Minister is first an old staunch Congressman and reasons of the situation might have required him to take a certain line of action, but when now the fight is on with a very determined and, I would say, unscrupulous political party, I have no hesitation in saying that this fight will be led by him with determination.

Q: How do you personally cope with the general impression that you are a rival or challenger for the Prime Ministership?

A: By the simple reason that I don't believe in it. Somebody else is saying it. I am not believing it.

Q: The BJP have said that they are going all out to bring down their Government and that they will use the card of Hindu nationalism. What political philosophy does the Congress have to fight that because your secularism just does not seem to be working?

A: You see, that is the difference. You have been a very old observer of Indian scene. Excuse me for introducing this personal factor. You see, in India -- that is how I look at it and that is why these people have not succeeded so far. It is not that they have not used this Hindu card time and again. After artificially creating an atmosphere where the card becomes credible and perhaps the only card that can be played -- the same thing happened when the rath yatra was taken out. You see, basically, in India, Hindus are in majority -- 80 to 90 percent approximately. People seem to forget that Hindus, by nature and instinct, are secular. It is not something which we have acquired after we became free. It is an ingrained sense of responsibility in society which gives them that attitude of catholicity of tolerance. Yes, it is put to test, it is put under strain by events now and then. But till now, Thank God, I would say, the Hindus of this country have never gone berserk. I am not talking of small sections of people who are excited or frenzied. That is all right. Therefore, I do not see the democratic system being undermined or subverted by somebody playing the Hindu card, or for that matter the Muslim card.

Q: Thank you very much. Just a minute, sir. Just can I have one more question?
It is being said that by dismissing the BJP State Governments, you are making martyrs of BJP and that this is a great mistake. Do you believe that there is a possibility of BJP gaining from this?

A: Well, martyrdom does not fit easily on heads who have plotted practically the dismemberment of this country. I don't think they are going to get any hallo of martyrdom. The final arbiters will be the people of this country. When the next elections come round, first they will come for the States and three years hence for the Parliament, you will see. I am not taking any political mileage out of these dismissals.

Q: Thank you.

फासिस्टवादी और प्रजातांत्रिक विचार धारा के बीच संघर्ष

29 दिसम्बर 1992 को इन्दौर प्रेस क्लब में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश —

Q: Mr. Minister...

A: Please call me by my name.

Q: Mr. Arjunsingh...

Another pressman : Let him speak first and then we can ask questions.

A. I have nothing to say. You start.

Q. Your announcement that the elections to the State Assemblies will be held within a year at the Press Club of India the other day, has gone into the press. It has been widely said by many sections, including your enemy No. 1, BJP that you have overruled the authority of the Election Commission as well as the prerogative of the Prime Minister, by announcing this. Your comments, please.

A. I can only refer to whoever you are referring to kindly look up the Constitution.

Q. It gives 6 months' time.

A. And what am I supposed to have said? Within one year.
वहाँ पर सिक्स मंथ पहले भी पीरियड वही आता है।

It has to be read between the lines.

प्र. प्राइम मिनिस्टर ने केबिनेट ने यह डिसाइड किया है कि उसी स्थान से जहाँ से मस्ज़िद तोड़ी गई थी उस स्थान से ही मन्दिर और मस्जिद दोनों बनाई जाएँ। इसकी कोई आउटलाइन दी कि मन्दिर कहाँ बनेगा, मस्ज़िद कहाँ बनेगी और उसका स्वरूप क्या होगा?

उ. मैं समझता हूँ इसके बारे में कहा गया है, ट्रस्ट बनेंगे और फिर सब चीजें देख कर तय करेंगे।

प्र. राष्ट्रपति शासन जिस उद्देश्य के लिए लगाया गया कि कानून और व्यवस्था बनी रहे, प्रतिबन्धित संगठन ठीक से काम करें, प्रतिबन्धित लोगों पर कार्रवाई हो सके तो जिस प्रकार राज्यपाल और उसके सलाहकारों के बीच में जो मतभेद चल रहे हैं उससे क्या उम्मीद करते हैं कि स्वच्छ प्रशासन दे पाएँगे?

उ. इस पर मैं कोई टिप्पणी तो नहीं करना चाहूँगा लेकिन यह अपनी जगह सही है कि इस वक्त शासन में चुस्ती लाना और जो कुछ वर्ड डिक्शनरी में नहीं है इसके लिए इसलिए यह कहूँगा जो कुछ कबाड़ा किया गया उसको दुरुस्त करना पहली प्राथमिकता है और मैं उम्मीद करता हूँ इस पर पूरा ध्यान दिया जाएगा।

प्र. आपको ऐसा लगता है कि वामपंथी दल आगामी चुनावों में काँग्रेस के साथ सहयोग करेंगे?

उ. चुनाव के प्रश्न को अभी मद्देनजर रख कर किसी बात को सोचने, और कहने का सवाल नहीं है। अभी तो सवाल केवल साम्प्रदायिक शक्तियों के खिलाफ एक व्यापक अभियान चलाने की बात है। उसमें कैसे और कौन किस प्रकार से सहयोग देगा यह अपनी जगह है। इस पर कुछ मामलों में एक साथ भी हो सकता है और कुछ में अलग-अलग भी हो सकता है। चुनाव के बारे में न किसी ने विचार किया है न उसका अभी समय ही है।

प्र. साम्प्रदायिक शक्तियों के खिलाफ जो अभियान की बात है वामपंथियों को साथ लेकर चलने की, तो एक तरफ तो वामपंथियों को साथ लेकर चलने की बात है और दूसरी तरफ दूसरों को साथ लेकर चलने बात हो रही है। मध्य प्रदेश का जो नक्शा काँग्रेस का है, उसके वह बिल्कुल विपरीत रहा है। आपके खिलाफ़ सारे काँग्रेसी नेता एक हो गए हैं और ऐसा कहा जा रहा है कि आपको आइसोलेट कर दिया जाएगा?

उ. मेरी इस मामले में कोई प्रतिक्रिया नहीं है, जो हमारा सदैव आचरण रहा है इस मामले में बिना किसी अपवाद के कि मैं कभी काँग्रेस के अन्दरूनी मामलों में सार्वजनिक रूप से कोई टिप्पणी नहीं करता हूँ। इतना ही मैं आज जरूर कहना चाहूँगा कि किसी को भी आइसोलेट करने का दृष्टिकोण इस समय काँग्रेस के लिए उचित नहीं है। यह समय एकता का है और एकता के साथ जो चुनौती प्रधानमंत्री जी ने काँग्रेस सैशन में स्वीकार

की है और जैसा उन्होंने अपने भाषण में काँग्रेस वर्किंग कमेटी में कहा है, उस चुनौती का मुकाबला हम सब मिलकर कैसे करें यह प्राथमिकता है। यह तो अपने-अपने विवेक की बात है। इससे ज्यादा मैं क्या कह सकता हूँ।

प्र. कोई योजना या प्रोग्राम बनाया आपने?

उ. एक्शन प्लान जो बनाया है वह काफी व्यापक है। इसमें जहाँ-जहाँ अलग-अलग प्रदेशों में जो कुछ यहाँ की काँग्रेस कमेटियों को करना है उसमें उनको छूट दी गई है। शायद 6 तारीख को मीटिंग है।

प्र. ऐसा नहीं लगता कि राजनीतिक दृष्टि से जो निर्णय लिए गए हैं, अयोध्या की घटना के बाद काँग्रेस द्वारा उससे भाजपा को अनचाहा लाभ मिला है? स्वयं श्री पटवाजी ने प्रेस में कहा कि काँग्रेस ने हम को सिर उठाने का मौका दिया अन्यथा हम तो स्तब्ध हो गए थे, शर्म आ गई थी?

उ. और कोई बात कहता तो मैं एक दफा सोचता। लेकिन पटवा जी स्तब्ध होंगे उनको शर्म आएगी यह तो मैं नहीं सोच सकता।

प्र. आप खुद राज्यपाल रहे हैं। आपको ऐसा नहीं लगता कि मध्य प्रदेश के राज्यपाल की भूमिका खुद को एक चीफ मिनिस्टर की तरह पोज़ करने की है?

उ. राज्यपाल के ऊपर व्यक्तिगत टिप्पणी करना मेरे लिए सम्भव भी नहीं और उचित भी नहीं है। वैसे भी मैं उनका सम्मान करता हूँ।

प्र. आप राज्यपाल भी रहे हैं....

उ. ऐसा है यह तो हमने भी किया चंडीगढ़ में तो मैं कैसे उसको गलत बताऊँ।

प्र. क्या भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए?

उ. बीजेपी पर कोई प्रतिबंध लगाने की जरूरत नहीं है। इससे पालिटिकली मीट करना चाहिए।

प्र. शिव सेना पर?

उ. जिन पर लगा है उन पर लगा है। और किसी पर मैं नहीं समझता लगाने की जरूरत है।

प्र. इन्दौर में पिछले 6 वर्षों से लगातार सेन्ट्रल स्कूल खोलने की बात चल रही है तो क्या आप इन्दौर को नया तोहफा देंगे?

उ. यह तोहफे वाली बात तो नहीं लेकिन यहाँ के काफी लोगों ने इस बारे में कहा है, मैं कोशिश करूँगा जो हमारा बजट होगा उसमें कुछ प्रावधान करूँ लेकिन आज उसके बारे में कोई घोषणा तो नहीं कर सकता हूँ।

प्र. इन्दौर के काँग्रेस विधायक .... ने आप पर यह आरोप लगाया कि आप अवसरवादी हैं जिस तरह से भारतीय जनता पार्टी द्वारा शासित राज्यों को बर्खास्त किया गया है वह प्रधानमंत्री ने आपके दबाव में आकर निर्णय लिया तो क्या आप इससे सहमत हैं? कोई ऐसी घटना है?

उ. अगर अब कोई प्रश्न नहीं पूछना रह गया है, तो इस का उत्तर देना मैं आवश्यक नहीं समझता।

प्र. आप 5 तारीख को अयोध्या गए। आपने एक बयान दिया कि कोई दैवी चमत्कार ही अयोध्या को बचा सकता है, तो केन्द्रीय मंत्री होने के नाते, वरिष्ट केन्द्रीय मंत्री की हैसियत से, आपने जो बयान दिया था उसके परिप्रेक्ष में इस मामले में आप अपना भविष्य किस रूप में देखते है?

उ. मेरी कोई भविष्यवाणी नहीं है। मेरी अनुभूति थी और अब तो हम सब मिलकर ऐसा चमत्कार करें कि देश बच जाए और अगर ढाँचा नहीं बचा सका तो कम से कम देश तो बच जाए।

प्र. भाजपा के बारे में यह कहा जा रहा है कि इनका जो 6 दिसम्बर का प्लान था वह मस्ज़िद ढहाने का था ही नहीं, विवादित ढाँचे को तोड़ने का था तो इस पर कोई टिप्पणी करेंगे?

उ. प्रधानमंत्री ने लोक सभा में ही इसको स्पष्ट कर दिया था इसलिए मेरे लिए टिप्पणी करने की क्या बात है। उन्होंने स्वयं कहा कि यह वैल आर्गेनाइज्ड, प्री प्लांड था। इसके बाद मैं क्या कहूँगा।

प्र. आपको ऐसा नहीं लगता कि बाबरी मस्ज़िद फिर वहाँ बनाने का जो प्लान है, प्रधान मंत्री की घोषणा है, वह प्री मैच्योर थी, उन्हें कुछ रुककर घोषणा करनी चाहिए थी?

उ. मै फिर से कहता हूँ यह बात कोई मैं आपके सामने कह रहा हूँ ऐसी बात नहीं है, जहाँ-जहाँ भी गया हूँ यह कहा है। इस वक्त अगर हम चाहते हैं हमारे देश के अंदर जो संतुलन बिखरा है वह फिर से संतुलित हो जाए तो मेहरबानी करके मन्दिर और मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारे की बात प्रतिस्पर्धा के रूप में हम लोग करना बंद करें। अगर हम चाहते हैं कि आग लगी है थोड़ा घी हम भी डाल दें, मिट्टी का तेल डाल दें, जो ऐसा चाहते है वह करें, मैं इसमें क्या कह सकता हूँ।

प्र. राज्यपालों का स्थानान्तरण करने के बारे कोई योजना है? कोई नीति तय की है राज्यपालों को स्थानान्तरित करने के बारे में मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश के?

उ. मुझे उसकी कोई जानकारी नहीं है।

Q. There were some countries, especially Pakistan, where hundreds of temples were destroyed. But Pakistan Government has taken the initiative to re-build those temples. But I think our government is lagging behind and Pakistan has taken the initiative.

A. I think what has happened in Pakistan is very very unfortunate and what is still happening is more unfortunate. Their desire to interfere in the internal affairs of India has to be condemned and we cannot accept that proposition.

So far as repairing the places of worship is concerned, you might have heard of the statement of the Prime Minister that all over the country all those places of worship which have been damaged will be repaired. We have already taken a stand and we are seeing that everywhere this work is taken up very expeditiously. So it is not as if we have overlooked that.

प्र. देश के शीर्ष पदों पर बैठे हुए व्यक्ति यह कहें. कि उनके साथ विश्वासघात किया गया है क्या आप इसे राजनीतिक असफलता नहीं मानते?

उ. मैं तो यह मानता हूँ कि जिस तरीके से प्रधानमंत्री समस्या के समाधान में लगे हुए थे वह उचित ही था शायद उसके अलावा कोई विकल्प भी उस समय नहीं था और जिस प्रकार से इन लोगों ने सभी मर्यादाओं को भंग करके विश्वासघात किया है उस पृष्ठभूमि में यह कहना कि वे ही जिम्मेदार हैं, उचित नहीं है।

प्र. आपने पहले से यह आशंका जाहिर की थी, और आपकी सारी आशंकाओं को प्रधान मंत्री ने नकार दिया तो इस बारे में आप क्या कहेंगे? उन्होंने अपनी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं पर विश्वास करने के बजाय बीजेपी के उन लोगों पर विश्वास किया जिनकी आदत रही है प्रधान मंत्री पर आरोप लगाने की?

उ. जिसको अँग्रेजी में कहते हैं आफटर द इवेन्ट, ज्ञान सब लोग देते हैं। सवाल यह है, जिस समय उन्होंने बातचीत के जरिए इस समस्या का हल खोजने का प्रयास किया था, जैसा मैंने कहा वह उचित प्रयास था, उस समय और उस प्रयास में सफलता नहीं मिले, इसमें पूरी तरह से बीजेपी इन्टरेस्टेड थी। वरना कोई कारण

नही था जब बैठक चल रही थी, आदान-प्रदान हो रहा था, उस समय अचानक तारीख घोषित करके कारसेवा करने की बात कहना स्पष्ट दीखता है कि उनकी मंशा क्या थी और इरादा क्या था। अब हमें जग मूल विषय पर जाना चाहिए और इन सब बातों में क्या रखा है कि किसने क्या कहा, किसने क्या नहीं कहा?

प्र. प्रधानमंत्रीजी दूसरी बार गोता तो नहीं खा जाएँगे? आपकी बात सुन रहे हैं या नहीं सुन रहे हैं यह भी बता दीजिए?

उ. मेरी बात तब भी सुन रहे थे और आज भी सुन रहे हैं।

प्र. काँग्रेस में भी युवकों का एक तबका माँग कर रहा है कि रामलल्ला की जहाँ मूर्तियाँ हैं वहाँ मन्दिर बनना चाहिए। काँग्रेस में अंदरूनी यह चल रहा है, युवकों ने भी माँग की है?

उ. फिर इसी मन्दिर और मस्ज़िद में आ गए। मैं कह रहा हूँ इस पर चुप रहें क्या दो महीने बाद वह कहीं चली जाएगी।

प्र. पिछले दिनों राष्ट्रीय लैवल पर प्रतिबंध लगाए गए हैं, आर.एस.एस. और बजरंग दल पर और अन्य संगठनों पर तो इस सवाल को लेकर न्यायालय में बार-बार... इस संबंध में आपका क्या कहना है?

उ. न्यायालय की प्रक्रिया में मैं क्या टिप्पणी करूँ? न्यायालय के माध्यम से जो होगा वही होगा।

प्र. तमिलनाडू में जयललिता ने जिस तरह से रूख अपनाया है, उस बारे में आपकी क्या राय है?

उ. जयललिता से कल भी प्रधान मंत्री ने बात की है। प्रधानमंत्री स्वयं कहते हैं कोई हमारा गठबंधन कमजोर नहीं है। हम उस ओर नहीं जा रहे हैं। पार्टियों में अन्दरूनी कुछ बातें होती हैं उसकी वजह से बाहर से लगता है लेकिन अन्नाडीएमके और काँग्रेस का नेतृत्व स्पष्ट ही है। अपनी बात कह रहा हूँ इसमें मुझे नहीं लगता कोई इसमें खतरा है।

प्र. प्रतिबन्धित संगठनों पर जिन कारणों से प्रतिबंध लगाया गया है आर.एस.एस. पर तो क्या प्रतिबंध सफल होगा क्या उन लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेगा जिनके लिए प्रतिबंध लगाया गया?

उ. अकेले प्रतिबंध से कुछ नहीं होगा, बात साफ है। प्रतिबंध तो किसी संदर्भ में लगाया जाता है जो बात स्पष्ट होती है कि देश की मान्यताएँ हैं, जो नियम हैं, कानून हैं, कायदे हैं, उनके परे जाकर कोई काम करना चाहता है, उसे नजरअंदाज करके काम करना चाहता है, तो फिर प्रतिबंध लगाते हैं, लेकिन असली उसके बारे में तो राजनीतिक स्तर पर काम होना चाहिए क्योंकि एक बात बड़ी विनम्रता से बल्कि थोड़ी झिझक से भी कहना चाहता हूँ, मैं समझता नहीं कि ऐसी बात कहूँ लेकिन अगर किसी के मन में इस बात का भ्रम है यह जो संघर्ष है, वह किसी और संदर्भ में हो रहा है तो यह साफ अपने दिल और दिमाग में रखिए कि यह संघर्ष एक फासिस्टवादी प्रवृत्ति और पार्टी के बीच में और देश की प्रजातांत्रिक विचारधारा और शक्तियों के बीच में है। एक की पराजय दूसरे की विजय का देश पर क्या असर होगा, यह बुद्धिजीवी वर्ग और जो कम से कम समझने वाले लोग हैं उनको दिक्कत नहीं। इस बात को और लोगों के बीच में ले जाने का काम हमारा और आपका है।

प्र. आपके संसदीय क्षेत्र में काँग्रेसजनों में आपसी विवाद है, आपको क्या कहना है?

उ. सब को अधिकार है। अच्छा हुआ आपने प्रश्न पूछ लिया वरना मैं दिल्ली जाकर उस मामले को अटेंड करता लेकिन क्योंकि आपने पूछ लिया है मैं आज ही दिल्ली में प्रदेश काँग्रेस अध्यक्ष को चिट्ठी लिखने वाला हूँ

जिन लोगों ने भी मेरे बारे में कुछ कहा है, हो सकता है किसी वजह से उन्होंने ऐसा किया हो, लेकिन केवल इसलिए कि उन्होंने मेरी आलोचना की है, यह समय ऐसा नहीं है कि हम उनके खिलाफ कार्रवाई करें। सब कॉंग्रेस भाइयों को यह जोड़ने समय है। मैं पी.सी.सी. के प्रेसीडेंट से रिक्वेस्ट करूँगा कि जो कुछ भी कार्रवाई उन लोगों पर की गई है उसे वापस ले लें। सब को एक साथ मिल कर आज काम करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। इससे हम को बल मिलेगा, सहायता मिलेगी।

प्र. भाजपा प्रचारित कर रही है कि मध्यावधि चुनाव अगले दो-तीन-चार महीने में हो रहे हैं?

उ. इसी खुशफ़हमी में जीने दीजिए।

यह हमारी उदारता है। यह भारत का अपना स्वयं का दृष्टिकोण है, जिससे हम दुनिया को देखते है और उस समय हिन्दुस्तान में आज की तरह अस्सी प्रतिशत लोग हिन्दू थे। जो राजा थे वे हिन्दू थे और जो प्रजा थी वह भी हिन्दू थी, लेकिन उन्होंने यह कभी नहीं सोचा कि दूसरे धर्म के लोगों पर जुल्म करके, उनको प्रताड़ित करके हम उनको यहाँ से भगा दे। यह परम्परा उनकी अपनी नहीं थी, स्वयं हिन्दू धर्म की परम्परा थी।

—श्री अर्जुनसिंह,
17 फरवरी 1993

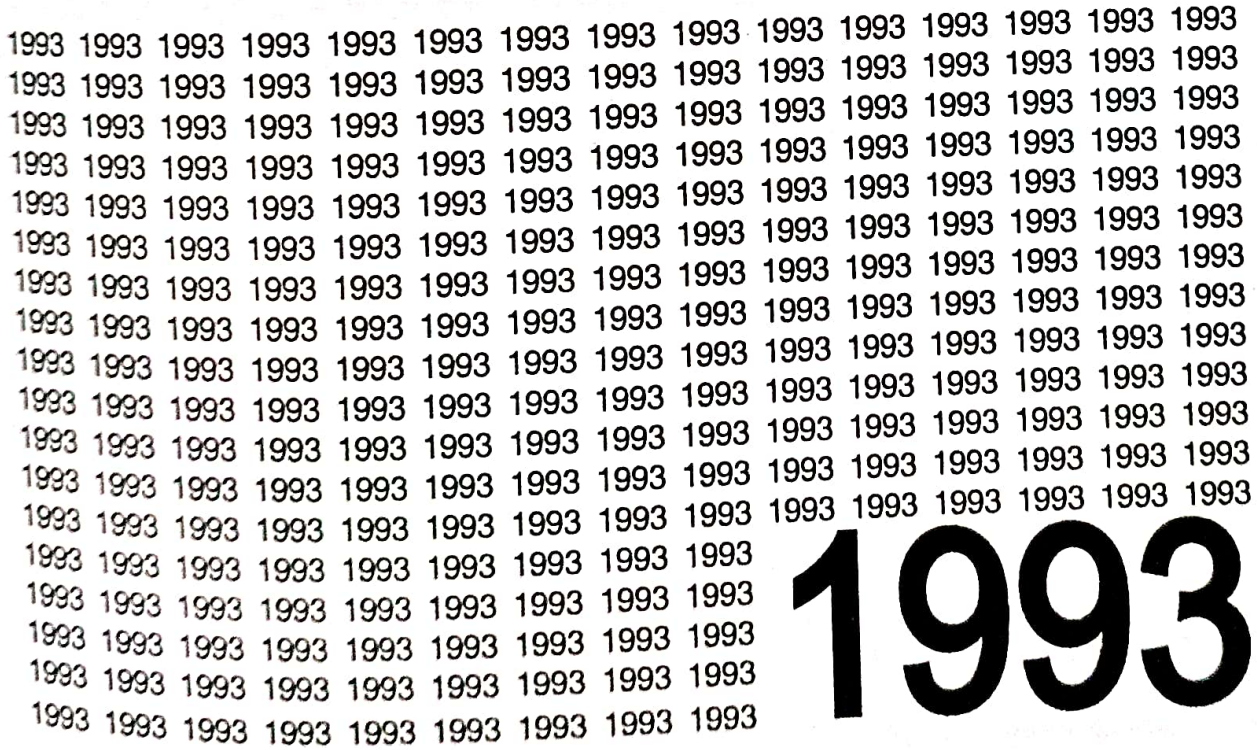

1993

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

गलत लोगों को संरक्षण

16 फरवरी 1993 को सरगुजा जिले के बसदी गाँव में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश —

माननीय दिग्विजयसिंहजी, यहाँ पर पधारे हुए आदरणीय माताओं, बहनों और भाइयों, धूप में आप सब लोग पधारे, इतनी बड़ी संख्या में पधारे हम को अपना आशीर्वाद देने के लिए तो सबसे पहले मैं सभी बहनों और भाइयों को हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ।

सरगुजा जिला मध्य प्रदेश का बहुत बड़ा जिला है जहाँ पर मुख्य रूप से हमारे गरीब आदिवासी भाई और बहन रहते हैं, समाज के कमजोर वर्ग के लोग भी रहते हैं। इसलिए इस जिले के लिए जो कुछ भी विकास की गतिविधियाँ होती हैं उनका एक विशेष महत्त्व होता है। मैं आपको इस बात की याद दिलाना चाहता हूँ कि कई साल पहले जब भयंकर अकाल पड़ा था तो देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी यहाँ पधारी थीं और जगह-जगह जाकर उन्होंने अपनी आँखों से यहाँ की दुर्दशा देखी थी। उसके बाद राहत तो दी ही गई लेकिन सरगुजा जिले के विकास की अलग से योजना भी उन्होंने बनवाई जिसके तहत सिंचाई के और दूसरे काम हुए। इन सब का एक योजनाबद्ध कार्यक्रम बना। उस कार्यक्रम को काँग्रेस की सरकार ने शुरू भी किया। यह दुर्भाग्य है कि पिछले ढाई-तीन सालों में भाजपा सरकार ने विकास की बात तो अलग छोड़ दी और जो कुछ हो रहा था सामान्य रूप से वह भी बंद कर दिया गया। इससे सबसे ज्यादा फायदा बिचौलियों को हुआ। जो केवल धन के आधार पर गरीब लोगों के हक पर प्रहार करते हैं और अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए उनके हितों को नजरअंदाज करके धन कमाते हैं। कोई अपना व्यापार करता है। सही ढंग से करता है उससे किसी को कोई शिकायत नहीं है। लेकिन जो नाजायज तौर से लोगों की कमजोरी का फायदा उठाकर अपना घर भरते हैं, वह समाज का कभी भी भला करने की बात नहीं सोच सकता। वहाँ और परेशानी बढ़ जाती है जब प्रशासक ऐसे लोगों के ऊपर बजाय अंकुश लगाने के बजाय रोकने के जब उन्हें सहायता देने लगते हैं तब प्रशासन की छत्रछाया में ऐसे लोगों का, गरीब लोगों को नुकसान पहुँचाने का हौंसला बढ़ जाता है।

मुझे यह सुनकर बहुत दुःख हुआ कि सरगुजा जिले में भी यही हाल है। प्रधानमंत्री जब यहाँ आए थे, मैं भी उनके साथ आया था। उनके सामने जो यहाँ की स्थिति आई उसको देख कर उनकी भी आँखें खुल गई और उन्होंने बहुत सी बातें यहाँ पर करने के लिए निर्देश दिए। उस वक्त तो पटवाजी भीगी बिल्ली की तरह उनके आगे-पीछे घूमते रहे थे, लेकिन जैसे ही वह यहाँ से गए तो जो उन्होंने कहा था, जनता की भलाई के लिए, उनके दुःख दर्द दूर करने के लिए, उसमें तो कोई काम उन्होंने नहीं किया और यही वजह है कि दो महीने के अंदर यहाँ स्थिति ऐसी बनी कि दिग्विजयसिंहजी को यहाँ अनशन पर बैठना पड़ा। यह इस बात का प्रमाण है कि यह प्रशासन जो भारतीय जनता पार्टी के तहत था, वह जनता के प्रति अपनी वफ़ादारी या जिम्मेदारी नहीं समझते थे, वह जिम्मेदारी केवल बीजेपी नेताओं के प्रति थी, काँग्रेस ने भी कई वर्षों तक इस प्रदेश में शासन चलाया, हम लोग कल्पना नहीं कर

सकते ऐसी स्थिति की जहाँ आम लोगों की भलाई का रास्ता एक हो और चंद लोगों की भलाई का रास्ता दूसरा हो, तो हम उस रास्ते पर, जहाँ चंद लोगों की भलाई का रास्ता नहीं चले। आखिर काँग्रेस ने कुछ ही लोगों के लिए काम नहीं किया। सरगुजा एक रियासत है, इस रियासत को काँग्रेस ने प्रदेश के अंदर समाहित किया। कोई लड़ाई नहीं थी, दुश्मनी नहीं थी, महाराजा सरगुजा से इसलिए रियासत के लिए सब काम होना शुरू हुआ। जमींदारी भी समाप्त की गई और इसी वजह से की गई। किसानों को अधिकार दिए गए वह भी इस वजह से दिए गए कि जो जोतेगा वही उसका मालिक होगा। यह सब काम काँग्रेस आम लोगों की भलाई के लिए, उनकी रक्षा के लिए, उनके अधिकारों को आगे बढ़ाने के लिए करती आई है। लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने उन सब पर इल्जाम लगाकर साबित कर दिया कि वे केवल किसी भी प्रकार से कुर्सी पर बने रहने के लिए लालायित हैं, कुर्सी पर पहुँच कर वह क्या करेंगे इसका नजारा आपने और हमने देख लिया है।

अब अपनी स्वयं की करतूतों से उन्होंने आप सब की आँखें खोल दी। हमें जनता के दुःख दर्द के लिए काम करने है। इन लोगों को मिट्टी के तेल की जरूरत है, गरीब लोगों को राहत का कार्य देने की जरूरत है तो इस तरफ ध्यान देने की जरूरत होगी। इस तरफ ध्यान नहीं दिया गया तो जब एक प्रदेश में इसका शासन था उसका नजारा हम लोगों ने देख लिया जिस दिन सारे देश में इनका शासन हो जाएगा भारत किधर जाएगा, यह आप पर निर्भर है। इसलिए इस बारे में बहुत संजीदगी से आप सब को सोचने की जरूरत है। जहाँ तक विकास का सवाल है इस अंचल के विकास के लिए कई कदम उठाए गए हैं और आज का यह जो शिलान्यास है, यह शिक्षा के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा अनुपम प्रयोग राजीव गाँधीजी ने सारे देश में किया, उन्हीं की कल्पना थी कि जिस तरह से स्कूल बड़े-बड़े शहरों में, बड़े-बड़े धनी लोगों के बच्चों को पढ़ाने के लिए रहते हैं यानी जिसके पास पैसा ज्यादा रहता है, वह उन स्कूलों में अपने बच्चों को भेज सकते हैं ऐसे ही स्कूल हर जिले में खोले जाने चाहिए जहाँ ग्रामीण अंचल में रहने वाले बच्चों को भी उसी प्रकार की शिक्षा दी जाए जो देहरादून, इलाहाबाद और बड़े-बड़े शहरों में दी जाती है।

वह है नवोदय विद्यालय की योजना। यह ऐसे स्कूल नहीं है जैसे पहले बनते थे कि दो साल बाद उसकी बिल्डिंग का ही पता नहीं चलता। यह समूचा खर्च केन्द्रीय शासन वहन करेगी। भवन निर्माण का कोई भी खर्च लड़कों से नहीं लिया जाएगा और पूरी तरह से उनको वे सुविधाएँ दी जाएगी जो सभी सुविधाएँ अच्छे से अच्छे स्कूल में दी जाती हैं और यहाँ पर भरती होने वाले बच्चों पर इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि हरिजन, आदिवासी, समाज के कमजोर वर्गों से निश्चित रूप से यहाँ बच्चे पढ़ने आएँ ताकि उन बच्चों को आगे बढ़ने के लिए ऐसी शिक्षा मिल सके जो उनको यहाँ से दूरदराज जाकर मिलने में बड़ी दिक्कत होती है। यहाँ के बच्चे न रायपुर जा सकते हैं, न बिलासपुर जा सकते हैं, और न किसी और बड़े शहर में जा सकते हैं। आसपास के पूरे जिले के इस वर्ग के बच्चे यहाँ स्कूल में पढ़ने आएँगे तो उनको वह शिक्षा भी मिलेगी, दीक्षा भी मिलेगी और वे इस जिले के होनहार नागरिक के रूप में आकर इस जिले की तरक्की में कोशिश करने में सक्षम हो सकेंगे। यह योजना इस स्कूल के द्वारा हम यहाँ पर देना चाहते हैं। मैं उन भाइयों को जिन्होंने जमीन दी है और जिन्होंने इसके लिए समय दिया, धन दिया उनको बहुत-बहुत अपनी ओर से धन्यवाद देना चाहता हूँ।

जहाँ तक राहत कार्य का सवाल है, सभी काँग्रेसजनों ने मुझे इसके बारे में बताया है। और भी लोगों ने इस बारे में बताया है। मैं निश्चित रूप से सरगुजा की जो हालत है इससे प्रधान मंत्रीजी को अवगत कराऊँगा। यह भी बताऊँगा कि जब आप गए थे तो आपने अपनी आँखों से देखा था उससे कोई बेहतर स्थिति आज नहीं है। इसलिए जरूरी है कि जो कुछ भी किया जाए तत्काल किया जाए, पर्याप्त किया जाए। प्रशासन के अधिकारियों से मैं एक

ही बात कहना चाहता हूँ पटवाजी ने तो न जाने किस प्रकार के आँकड़े देकर सब को अलग-अलग बातें समझा दीं अब हम को समझ जाना चाहिए कि राष्ट्रपति शासन है, जो केन्द्रीय शासन के तहत शासन है। यहाँ पर काँग्रेस का शासन नहीं है मध्यप्रदेश में, राष्ट्रपति का शासन है लेकिन केन्द्रीय शासन के तहत काँग्रेस का शासन है। अगर कहीं पर ऐसी कोई गफलत होगी, कहीं भी भुखमरी से किसी व्यक्ति की मृत्यु होगी तो जो अधिकारी इसके लिए जिम्मेदार है उनको बख्शा नहीं जाएगा, यह मैं जरूर साफ-साफ कहना चाहता हूँ। यह मौका है नाजुक स्थिति को पहचान कर काम करने का और जनता की भलाई जिसमें हो वहीं कदम आगे लें। हम यह नहीं कर सकते कि किसी एक व्यक्ति की बात करें या दो व्यक्ति की बात करें। आम जनता की भलाई की बात करनी है और इसमें किसी भी राजनीतिक दल को हमें सहारा नहीं देना है या किसी एक को काम नहीं देना है। भुखमरी सब को बराबर सताती है। उस भुखमरी को दूर करने के लिए जो इंतजाम करना चाहिए वह राजनीति से परे होना चाहिए। आज मुझे कुछ लोगों ने बताया राहत के लिए जो पैसा आया है वह एक राजनीतिक दल के कार्यकर्ताओं को इस्तेमाल करने के लिए दिया जा रहा है।'

आम जनता के लिए इस्तेमाल हो यह बात यहाँ सोची जा सकती है, लेकिन किसी एक राजनीतिक दल के माध्यम से जनता को राहत पहुँचाने का क्या तात्पर्य है? यह कर्तव्य तो अधिकारियों का है। मुझे लगा इसमें जो भी ऐसा काम कर सकता है उनको सहारा देने के लिए, उनको मौका देकर जो राजनीतिक खेल खेलने का जो इंतजाम हो रहा है, यह बहुत ही गलत है, इसे कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मैं आप सब लोगों को इस बात के लिए आश्वस्त करना चाहता हूँ, यहाँ की परिस्थितियों पर पूरी नजर रखी जाएगी। मैं आप सब लोगों को यह भी बताना चाहता हूँ जनता के हितों को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा और कोशिश होगी महीने-डेढ़ महीने में एक दफा फिर आऊँ और जो कुछ यहाँ हो रहा है, उसका जायजा लूँ। उसको और अच्छी तरह से करने में आप सब की मदद करूँ। आपने जो स्वागत किया, आपने जो स्नेह दिया और आशीर्वाद दिया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

नवोदय विद्यालय राष्ट्रीय एकता के प्रतीक

17 फरवरी 1993 को खरसिया जिला रायगढ़ की आम सभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश —

माननीय सांसदजी, आदरणीय माताओं, बहनों और भाइयों, खरसिया विधान सभा क्षेत्र में पुनः आने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ और इस सौभाग्य के अवसर पर यहाँ के नागरिकों के प्रति एक सेवक की हैसियत से जो भेंट करने का अवसर मुझे मिला है, उसके लिए मैं आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ। रायगढ़ जिले में और विशेषकर के ग्रामीण अंचल में शिक्षा के अच्छे अवसर हमारे ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले किसान भाइयों को, आदिवासी, हरिजन और पिछड़े वर्ग के भाइयों और बहनों को उस तरह से नहीं मिल पाते हैं, जैसे कि बड़े-बड़े शहरों में बच्चों को मिलते है, इन्हीं सबको ध्यान में रखकर 1986 में जब हमारे आदरणीय नेता, देश के प्रधानमंत्री, स्वर्गीय राजीवजी ने जो शिक्षा नीति बनाई उसमें उन्होंने यह प्रावधान रखा कि देश के प्रत्येक जिले में कम से एक एक ऐसा विद्यालय श्री जवाहरलाल नेहरूजी के नाम से खोला जाए, जो पूरी तरह से संपन्न हो ऐसी शिक्षा देने के लिए, जो हिन्दुस्तान के अच्छे से अच्छे स्कूलों में दी जाती हो और उसमें प्रवेश के लिए प्राथमिकता समाज के कमजोर वर्ग, किसान और अन्य लोगों के बच्चे को रहे, जो बड़ी जगह जाकर अभावों की वजह से, ऐसी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते है। मुझे खुशी है कि रायगढ़ जिले में यह स्कूल भूपजैपुर के पास स्थापित हो रहा है। यह स्कूल निश्चित ही समूचे जिले के

लिए एक वरदान साबित होगा क्योंकि यहाँ पर इस जिले के बच्चे और आस-पड़ोस के बच्चे भी भरती होंगे। इसमें होस्टल भी है, उनको पूरी तरह से शिक्षित और जीनियस बनाने का प्रावधान है। उनका फ़ायदा उठाकर के यहाँ के गरीब और पिछड़े लोग राष्ट्र के निर्माण में, प्रदेश के निर्माण में और जिले के नव-निर्माण में अपना योगदान शिक्षित होकर दे सकेंगे। यह है भारत को बनाने की एक योजना।

इन स्कूलों में भी उनका यह सिद्धांत रहा है कि उत्तर, दक्षिण, पश्चिम और पूरब में बने यह स्कूल अपने-अपने प्रदेशों के अपने-अपने जिलों के ही नहीं देश के अन्य भागों के छात्र भी आएँगे और यहाँ से भी कुछ छात्र अन्य भागों में जाएँगे तो वह समूचे भारत की तस्वीर को समझने में सक्षम हो सकेंगे। राष्ट्रीय एकता का यह एक माध्यम होगा। इन स्कूलों की यही एक कल्पना थी। कई स्थानों पर मैं गया हूँ, जहाँ यह स्कूल चल रहे हैं। तमिलनाडू के, कर्नाटक के, आँध्र प्रदेश के छोटे-छोटे बच्चे अपने घरों से हजारों मील दूर आकर उत्तर में बोर्डिंग में रहते हैं और उत्तर भारत के लोगों से मिलते हैं। यहाँ के रीति-रिवाजों से, यहाँ के रहन-सहन के तरीकों से, यहाँ के बोलचाल से परिचित होते हैं और फिर उनको अहसास होता है कि भारत कितना बड़ा देश है। इससे हमें कैसे प्यार करना है। इसी तरह से उत्तर भारत के कुछ बच्चे दक्षिण में है और वह भी अपने नए वातावरण में रहते हैं, यह सही है कि कुछ समय लगता है अपने को पूरी तरह से वहाँ एडजस्ट करने में, लेकिन एक दफ़े जब वह रम गए तो उसके बाद छुट्टियों में ही अपने घर आना चाहते हैं। इस तरह वह भारत के दूसरे कोने में भी भारत की तस्वीर देखते हैं। यह हैं छोटी बातें, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की, आप लोगों के सामने।

आज देश की जो हालत है, वह आप लोगों से छिपी हुई नहीं है और इन परिस्थितियों में हम सबका क्या कर्तव्य है, यह भी आप लोगों से छिपा नहीं है। लेकिन, दिक्कत वहाँ महसूस होती है, जहाँ अपने कर्तव्य का पालन करने की दिशा में हम यह भूल जाते हैं कि भरपाई कहाँ से होगी। चूँकि आज देश में काँग्रेस ही ऐसी संस्था है, जो देश की आजादी की लड़ाई लड़कर देश को आज़ाद करवाने में सफल हुई, भारत में एक मज़बूत प्रजातंत्र की नींव रखकर उसे आगे बढ़ाने की कोशिश की, देश के विकास को चहुँमुखी रूप देकर सारे हिन्दुस्तान के आर्थिक आधार को मजबूत किया, इसलिए आज भी जो नई चुनौतियाँ सामने आई हैं, देश की कट्टरवादिता की, सांप्रदायिकता की, उन चुनौतियों का सामना भी काँग्रेस को ही प्राथमिक रूप से करना होगा। यह सामना हम तभी कर सकते हैं, जब हम कुछ मर्यादाओं का पालन करें, जब हम कुछ अपने घर को भी सुधारने की कोशिश करें क्योंकि कभी भी कमजोर संस्था देश की सेवा नहीं कर सकती और कमजोरी के जो लक्षण हैं वह है आपस की फूट। हम काँग्रेस के अंदर कभी भी, किन्हीं भी परिस्थितियों में फूट को जन्म न लेने दें और एकता के साथ जो हमारा आदर्श है देश का, काँग्रेस का, उन आदर्शों को पूर्णतया समझने की कोशिश करें, चाहे वह जिला काँग्रेस हो, चाहे वह प्रदेश काँग्रेस हो, चाहे ब्लॉक काँग्रेस हो, सब काँग्रेस एक परिवार है और उस परिवार में विभाजन की रेखा नहीं खींची जाना चाहिए। अगर ऐसा किया जाता है तो काँग्रेस के प्रति अन्याय है।

आज मैं आपसे कहना चाहता हूँ, शायद आपको मालूम नहीं है, कितने बड़े मनसूबे हैं सांप्रदायिक शक्तियों के। वह ऐसा समझते हैं कि देश के अंदर उन लोगों को जो अभी तक देश को एक संगठित रूप में दुनिया के नक्शे पर लेकर बढ़ाना चाहते हैं, वह समझते हैं, यह लोग अब भाग जाएँगे, काफी दिन हो गया है और अब इन थके-माँदे लोगों को सांप्रदायिक आँधी से वह उड़ा देंगे और देश की बागडोर अपने हाथों में छीन लेंगे। प्रजातंत्र में हरेक को जनता का विश्वास प्राप्त करके सत्ता में आने का अधिकार है और इसमें किसी को कोई शिकायत नहीं हो सकती, लेकिन प्रजातंत्र में सत्ता प्राप्ति का एक तरीका है और वह तरीका हमारे देश के कानूनों में, संविधान में स्पष्ट है। उसके

आधार पर कोई भी जनता का विश्वास प्राप्त करके सत्ता की बागडोर सँभाल सकता है, लेकिन जो पार्टियाँ और व्यक्ति संविधान को बलाए-ताक रखकर देश के कानूनों को तोड़कर हर मर्यादा का उल्लंघन करके सत्ता में जाने की कोशिश में लगे, ऐसा प्रयास न तो देश के हित में है, न प्रजातंत्र के हित में। सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसा प्रयास इस देश के करोड़ों-करोड़ गरीब लोगों के हित में नहीं है। यह आप मानकर चलिए।

मेरी आपसे प्रार्थना है कि देश के हित में, प्रदेश के हित में और स्वयं अपने हितों में आप यह फैसला करें कि आप इन सांप्रदायिक शक्तियों से कोई समझौता नहीं करेंगे, इन निहित स्वार्थियों से कोई समझौता नहीं करेंगे। खास तौर से मैं युवकों से कहना चाहता हूँ, वह काँग्रेस में हों या काँग्रेस के बाहर, कि यदि आप अपनी जिम्मेदारी इस समय निभाना चाहते हैं तो आपको एकता का परिचय देना होगा, आपको संयम का परिचय देना होगा, अनुशासन का परिचय देना होगा। अनुशासन के बगैर कोई संघर्ष नहीं चल सकता। यदि अनुशासन से, संयम से सब के साथ मिलकर आज की तरुणाई ने इस संघर्ष को शुरू किया तो कोई ताकत नहीं कि उनको सफलता से रोके। इसलिए इस जिले से एक आत्मीय संबंध होने के नाते मैं आपसे यह प्रार्थना करना चाहता हूँ कि यह मौका है, जब आप देश की रक्षा के लिए, भारत के प्रजातंत्र की रक्षा के लिए जो आपकी जिम्मेदारी है उसको निभाने में न हिचकिचाएँ, किसी प्रकार के भ्रम में न पड़ें और जो धर्म का आवरण ओढ़ कर राजनैतिक पार्टियाँ भ्रमित करना चाहती हैं, उनके छलावे में न आएँ। यह मेरी आपसे प्रार्थना है, खास तौर से माताओं और बहनों से, क्योंकि उनके ऊपर ज्यादा प्रभाव डालने की कोशिश होती है।

भगवान राम तो मर्यादा के पुरुषोत्तम है, वह अखण्डता के प्रतीक हैं, करुणा के प्रतीक हैं, भाईचारे के प्रतीक हैं। किसी ने उनके बराबर भाईचारे का उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया। भले ही अपने भाइयों के लिए ही किया हो? उनका भाईचारा तो मनुष्यों से परे जाकर पशु-पक्षियों तक पहुँच गया। आखिर, हनुमानजी की याद किस रूप में की जाती है? एक भक्त तो हैं ही, लेकिन साथ ही साथ भगवान राम के काम को करने के लिए किस प्रकार वह तप कर सकते थे, इसलिए भगवान के भक्त के रूप में उनको प्रतिष्ठा मिली। मैं इन लोगों से इतना ही कहता हूँ और कुछ नहीं, भगवान राम के जो काज हैं वह समझो, जिसको हनुमानजी ने कहा था— "राम काज कीजे बिना, मोहि कहाँ विश्राम"। राम का काज क्या है? लोगों के घरों में आग लगाना, बेकसूर लोगों को कत्ल करना, माताओं- बहनों को विधवा बनाना, बच्चों को यतीम बनाना, यह तो राम काज नहीं है। अगर यही राम का काज वह समझते हैं, तो इस देश की करोड़ों करोड़ जनता... उनको धिक्कारती है। जय हिन्द।

सब मिलजुल कर काम करें

29 मार्च 1993 को भोपाल में मध्यप्रदेश काँग्रेस के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधन के प्रमुख अंश —

सम्मानित साथियों, सबसे पहले तो मैं आप सब को इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ कि आप लोगों ने इस ऐतिहासिक मौके पर यहाँ आकर काँग्रेस पार्टी के प्रति अपनी निष्ठा और प्रतिबद्धता जाहिर की। आप में से बहुत से लोग काफी वर्षों से हम सब लोगों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। काँग्रेस के सिपाही की हैसियत से और उन बहुत सी लड़ाइयों में जो काँग्रेस ने मध्य प्रदेश में लड़ी हैं, अलग-अलग मौके पर आपने उसमें संघर्ष भी किया है और अपना-अपना योगदान दिया है। इस समय हमारा देश एक बहुत ही निर्णायक दौर से गुजर रहा है। और जब भी देश निर्णायक दौर से गुजरता है तब-तब काँग्रेस पार्टी को भी उस निर्णायक दौर से गुजरना पड़ता है। पिछली

शताब्दियों में भारत में जो कुछ भी हुआ है राष्ट्रीय निर्माण के क्षेत्र में या देश के अस्तित्व को उजागर करने के क्षेत्र में, उस सब में काँग्रेस पार्टी ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है इसलिए हमारी जिम्मेदारी ज्यादा है। यह निर्णायक दौर इसलिए है क्योंकि जो मान्य प्रक्रियाएँ हैं, मूल्य हैं, तौर तरीके हैं उन सब को बलाए ताक रखकर और राजनीतिक खेल खेलने का सिलसिला जो देश में पिछले 3-4 सालों से शुरू हो गया है, किस ने यह सिलसिला शुरू किया है मुझे बताने की जरूरत नहीं है। पहले तो इसमें बहुत से लोग शामिल थे जो कि समझ नहीं पाए कि इस खेल में कितना बड़ा खतरा वह देश के लिए पैदा कर रहे हैं।

सन् 80 से लेकर और 89 तक यही हुआ। श्रीमती गांधी की हत्या ने बहुत बड़ा झटका पार्टी को दिया। लेकिन क्योंकि उनका भी योगदान था इस संस्था की जड़ों को मजबूत करने में, इसलिए वे अलग जरूर हो गईं भौतिक रूप से राष्ट्र के परिदृश्य से लेकिन उनका जो हम सबके ऊपर प्रभाव था और देश के ऊपर जो प्रभाव था उसकी वजह से काँग्रेस को धक्का लगा लेकिन काँग्रेस गिरी नहीं। श्री राजीव गाँधीजी ने बहुत मजबूती से साथ देश का नेतृत्व अपने हाथों में लिया। यह मैं थोड़ी बहुत पृष्ठभूमि इसलिए आपको बता रहा हूँ क्योंकि तभी आप आज के हालात को सही ढंग से समझ पाएँगे। क्योंकि अक्सर राजनीतिक उथल-पुथल में जो लोग हकीकत को पहचानने की गलती कर जाते हैं और जो ऐसी गलतियाँ हो जाती हैं तो व्यक्तियों को नहीं समूची पार्टी को नुकसान होता है और समूचे देश को नुकसान होता है।

राजीव गाँधीजी के कार्यकाल में हम सब बहुत उत्साह से उनके नेतृत्व में काम कर रहे थे। उनके खिलाफ और कुछ कहने के लिए नहीं था इसलिए एक शगुफा बोफोर्स का उठाकर उनकी छवि को धूमिल करने की कोशिश की गई। उसका असर हुआ, और पार्टी की साख कुछ हद तक गिरी। सन् 89 के चुनाव में हमारी जो पराजय हुई उस के लिए राजीवजी के खिलाफ जो दोष लगाया गया था केवल वही जिम्मेदार नहीं था। जब कोई कठिन संघर्ष होता है तो उस संघर्ष के दौरान जो निर्णय लिए जाते हैं उन निर्णयों को बहुत सोच समझ कर लेना चाहिए। और इस बात को मैं आज नहीं कह रहा हूँ, इस बात का सबसे पहले स्वयं राजीवजी ने एहसास किया था। उन्होंने केवल एहसास ही नहीं किया था, वरन् सन् 89 के चुनाव परिणामों के बाद जो उनके दौरे हुए सारे देश में और जो बात उन्होंने कही, अगर आप स्मरण करें, तो उन्होंने यह एहसास सारे देश के काँग्रेस कार्यकर्ताओं को और देश को भी दिलाया था कि उनसे कुछ भूलें हुई जिसकी वजह से यह स्थिति पैदा हुई। उनमें जो सबसे बड़ी भूल उन्होंने स्वयं स्वीकार की वह यह थी कि किन्हीं कारणों से या किसी संयोग से या अप्रत्याशित रूप से हुई हो काँग्रेस पार्टी के जो मूल्यों में और सिद्धान्तों में गहरी आस्था थी, वह एक छाप धर्म निरपेक्षता की थी वह समाप्त हो गई। वह एक सामाजिक न्याय देने की बात हो या हर तरह से समाज को ऐसे व्यक्तियों से, ऐसी धाराओं से, ऐसे विचारों से सुरक्षा देने की हो, वह संकीर्ण हो, जातीय आधार पर हो या अन्य प्रकार से देश हित के खिलाफ चलने वाली हो, उनके बारे में कहीं न कहीं आम लोगों के मन में यह शंका पैदा हो गई है कि किस हद तक उन मूल्यों और आदर्शों के प्रति समर्पित है या कहीं शायद उसका अस्थाई राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश कर रहे हैं। यह मेरी समझ में कोई उनकी आत्मग्लानि नहीं थी। यह एक सबल नेतृत्व की पहचान थी कि अपनी गलतियों को कमजोरियों को वह पार्टी के नेताओं के बीच में और देश के बीच में खुल कर कह सकते थे।

यह स्वाभाविक था कि उस दौर में कुछ ऐसे लोग जो राजीवजी से अपने को खतरा महसूस करते थे, विरोधी पार्टी के लोग और हो सकता है कुछ ऐसी विदेशी, शक्तियाँ भी रही हों जिन्होंने भी षड्यंत्र का सूत्रपात किया जिस षड्यंत्र का शिकार राजीवजी श्रीपैरम्बुदूर में हुए, यह एक अलग दुःखद चेप्टर है हमारे इतिहास का। हम तो इतनी

है आशा कर सकते हैं कि किसी न किसी दिन उस षडयंत्र से पर्दा उठेगा और उन ताकतों के जिन्होंने हम से अपने देश के लाड़ले नेता को छीना उनके चेहरे बेनकाब होंगे। हमारे लिए तो इतना ही कहना पर्याप्त है कि उनके न रहने से जो रिक्तता पैदा हुई हमारे भारत के, राजनीतिक प्रभामंडल में उसको भरना मुश्किल है। लेकिन किसी देश का इतिहास थमता नहीं है और जैसे समय नहीं थमता है वैसे ही इतिहास नहीं थमता, फर्क इतना है कि कुछ लोगों के कर्णधार बनने से इतिहास की गति तेज होती है और ऐसे महापुरुषों के न रहने से कभी-कभी इतिहास की गति धीमी हो जाती है।

सन् 91 के चुनाव में यह बात स्पष्ट हो गई कि एक तरह से अपना बलिदान देकर राजीवजी ने काँग्रेस को नए प्राण दिए। सरकार बनी, नरसिंहरावजी प्रधानमंत्री बने और सब ने मिलकर यह कार्य शुरू किया कि जिन परिस्थितियों में देश फँस गया था, अस्थिरता की वजह से और उन लोगों की कार्रवाइयों की वजह से जो काँग्रेस के विरोध को ही अपना राजनीतिक आधार बनाकर चलते थे, आर्थिक रूप से, राजनीतिक रूप से जिन परिस्थितियों में ले जाकर उन्होंने फँसा दिया वहाँ से बाहर निकलने की कोशिश की तो पूरी निष्ठा के साथ और ईमानदारी के साथ शुरू हुआ। भारतीय जनता पार्टी को बड़ा झटका लगा क्योंकि वह तो समझते थे उन्होंने उस मुद्दे को इतना उठा दिया कि अब उस मुद्दे की वजह से किसी और राजनीतिक दल को और खास तौर से काँग्रेस को भारत में अपना राजनीतिक वर्चस्व कायम करने का मौका कभी नहीं मिलेगा। इसलिए उनके मन में जो बेचैनी थी उनके मन में जो उतावलापन था उसको उन्होंने अपने कार्यक्रमों के माध्यम से स्पष्ट करना शुरू कर दिया। 92 में जुलाई में जो कार-सेवा शुरू करने की बात की गई वह कोई अचानक बात नहीं थी वह बात सोची समझी थी और उसकी पृष्ठभूमि सोची समझी थी और उसको कार्य रूप में परिणत करने की जो योजना थी वह भी बहुत सोची समझी थी।

तिरुपति में हमारा जो अधिवेशन हुआ उस अधिवेशन में इन सब बातों का अंदाज लगाकर ही काँग्रेस का राजनीतिक प्रस्ताव पास हुआ। वह राजनीतिक प्रस्ताव एक प्रकार का दस्तावेज है जो दस्तावेज समय का मूल्यांकन भी करता है, राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण भी करता है और काँग्रेस के लिए एक कार्यपद्धति या कार्यसूची भी तैयार करता है, उस अधिवेशन में बाकी सब बातें स्पष्ट हैं। उससे हम विचलित हों यह भारतीय जनता पार्टी के लिए बहुत जरूरी था। इसीलिए अचानक जुलाई में एक नई बात शुरू की गई क्योंकि देश में कुछ अस्थिरता थी और देश में एक तरह से मैं कहूँगा बहुत सी अलग-अलग प्रकार की विचारधाराएँ पनप रही थीं, इसलिए लाजिमी और उचित था कि हम इस समस्या के समाधान के लिए कोई न कोई रास्ता ढूँढने की कोशिश करें। और वही प्रयास प्रधानमंत्रीजी ने बीजेपी और वीएचपी और जितने भी उनके परिवार के सदस्य थे, उन सब लोगों के साथ जो नेगोसिएशन या जो कुछ कहिए उसकी पृष्ठभूमि यह थी। उन्होंने बड़ी खूबी के साथ उसका नज़ायज़ फायदा उठाया। वह नाजायज़ फ़ायदा उठाकर उन्होंने ऐसी स्थिति का निर्माण कर दिया जहाँ हमारे राजनीतिक इतिहासकारों ने भारत के अस्तित्व को उभारने की बात की है। सैकड़ों साल पहले क्या हुआ, नहीं हुआ इसके हम और आप प्रत्यक्षदर्शी नहीं थे, केवल इतिहास के पन्नों में ही पढ़ते हैं, लेकिन आजादी की लड़ाई जहाँ से शुरू होती है और जहाँ समाप्त होती है यह हमारे आधुनिक भारत का इतिहास है और उसके बाद का इतिहास देश के नवनिर्माण का इतिहास है। इस इतिहास के दौरान ऐसी कोई घटना नहीं हुई जो 6 दिसम्बर की घटना के बराबर हो। लेकिन देश का बँटवारा स्पष्टरूप से खुले रूप से कुछ लोगों की गलत मानसिकता की वजह से हुआ।

अँग्रेज चाहते थे भारत कमजोर रहे आजादी के बाद भी कमजोर रहे और इसलिए देश के दो टुकड़े किए। यह दुःख की बात है कि हमारे देश के कुछ लोगों ने राजनीतिक पार्टियों ने, मुस्लिम लीग ने, जिन्ना साहब ने उसका

राजनीतिक इस्तेमाल करके अपनी राजनीतिक मंजिल पाने में सफलता पाई। लेकिन वह संघर्ष का खुला रूप था। 6 दिसम्बर की जो घटना है वह घटना जिसको कहते हैं, पीछे से आकर सारे भारत में उन चीजों पर से विश्वास उठाने वाली घटना थी जो विश्वास जरूरी होते हैं किसी कौम के लिए, किसी मुल्क के लिए अपने आप को संगठित करके आगे चलने के लिए और इसीलिए उसकी अपनी जो एक स्थिति है, वह बिल्कुल भिन्न है। इसके पीछे बीजेपी का स्पष्ट इरादा था। जब तक इन विश्वासों को धक्का न पहुँचे या इन विश्वासों से आम लोगों का मन उचट न जाए तब तक एक साम्प्रदायिक और कट्टरपंथी विचारधारा को भारत की मानसिकता कभी स्वीकार नहीं कर सकती।

अभी जो सूरजकुंड में सम्मेलन हुआ एआईसीसी का, मैं तो इसे इसी परिपेक्ष्य में देखता हूँ जहाँ से हम तिरुपति की यात्रा शुरू की थी और किन्हीं कारणों से बीच में हम थमें थे और 6 दिसम्बर की घटना घटित होकर यह झटका हम को लगा था, आज हमने उसका एहसास भी किया और उस एहसास को करके एक नए संकल्प के साथ आने वाले समय में इन शक्तियों के खिलाफ एक संघर्ष छेड़ने का पुन: संकल्प लिया है। यह है सूरजकुंड की एआईईसीसी की सही, न केवल पृष्ठभूमि बल्कि भविष्य में उतरने वाली परिणति है। अब जरूरी यह है कि हम सब लोग पृष्ठभूमि को भी समझें और भविष्य को भी समझने की कोशिश करें। क्योंकि इस बीच में जैसा अक्सर होता है जो कुछ राजनीतिक कोलाहल बचता है बहुत से लोगों के कानों में सही बात नहीं पहुँचती है और कोलाहल के वह शब्द पहुँचते हैं जिनका समाज से कोई मतलब नहीं है। जिसका देश के हित से कोई मतलब नहीं है। मध्य प्रदेश में हमने सदैव आप सब लोगों के साथ मिलकर कभी भी इस कोलाहल की आवाज़ से भ्रमित होकर, प्रभावित होकर, कार्य नहीं किया है।

मैं आप लोगों से इतना ही निवेदन करना चाहता हूँ आज यह संघर्ष जिस सतह पर आ गया है, इस सतह पर संघर्ष एकता के साथ समर्पण की भावना के साथ और बिना किसी प्रकार की हिचक के ही लड़ा जा सकता है। अगर हिचकिचाहट होगी तो हिचकिचाहट तो फिर ऐसे लोगों की होती है जिन्हें विश्वास न अपने ऊपर होता है न सिद्धांतों के ऊपर होता है, न पार्टी के ऊपर होता है., यह हिचकिचाहट का समय नहीं है। यह दृढ़ निश्चय का समय है। क्षितिज आपका है, हमारा है, पार्टी का है। उस क्षितिज तक पहुँचने के लिए थके पाँव की जरूरत नहीं है और सहमे दिल की जरूरत नहीं है, आत्मविश्वास की जरूरत है अपने आदर्शों और उद्देश्यों पर पूरे विश्वास की जरूरत है और उस विश्वास को हिम्मत के साथ हम सारे देश में काँग्रेस पार्टी पर जो दायित्व है उस दायित्व को निभाने के लिए मध्य प्रदेश के अंदर जो हमारा रोल है उनको अच्छी तरह से अदा करें। हमारे बीच में आप सब साथी हैं, यहाँ प्रदेश के अध्यक्ष बैठे हैं, कमलनाथ जी और हमारे प्रदेश के अन्य नेता है, मुझे पूरा विश्वास है हम सब मिल कर इन सब परिस्थितियों में काम करेंगे। जो हम से अपेक्षा है काँग्रेस के सिपाही की हैसियत से उस अपेक्षा को हम पूरा कर सकेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि सदैव की भाँति कंधे से कंधा मिलाकर अपने कर्तव्य को आप पूरा करेंगे। पुन: आप सब का बहुत-बहुत धन्यवाद।

सब लोगों में देशहित की भावना हो

12 मई 1993 को इन्दौर की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश —

माननीय सांसद भाई अहलुवालिया, यहाँ पर पधारे हुए काँग्रेस के सम्मानित साथियों, बहनों, ग्रामीण अंचल से पधारे हुए हमारे किसान भाइयों, और इन्दौर शहर के आदरणीय नागरिक बंधुओं, झुग्गी-झोपड़ी से आए हुए बहनों

और भाइयों। आज से लगभग दो साल पहले राजीवजी के साथ इन्दौर आने का सौभाग्य मिला था, चुनाव के तुरंत पहले। और वह काँग्रेस अध्यक्ष की ऐसी शोभा यात्रा थी जो इन्दौर से शुरू हुई, और उसका विस्तार मऊ तक हुआ। एक जन सैलाब उमड़ा जो केवल उनका स्वागत नहीं करना चाहता था वरन उनको हौसला दिलाना चाहता था कि भारत की बिगड़ी हुई स्थिति को सम्भालने के लिए वह आगे बढ़ें और देश को बर्बादी से रोकने में सफल हों। आज मंच पर उनमे से कुछ लोग हैं जो उस शोभा यात्रा में शामिल थे। अहलुवालियाजी, पचौरीजी और राजीव गाँधी की संदेश यात्रा मे जुड़े हुए अन्य सभी साथियों का, मध्यप्रदेश के काँग्रेसजनों और नागरिकों की ओर से इन्दौर के नागरिकों की ओर से स्वागत करना चाहता हूँ और उन्हें इस बात के लिए साधुवाद देना चाहता हूँ कि हमारे दिवंगत नेता की स्मृति जो हम सब के हृदय पटल पर अमिट रूप से लिखी हुई है उसे ताजा करने के लिए दिल्ली से निकले हैं और 21 मई को श्री पेरम्बुदूर पहुँच कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। यह कहते हुए जहाँ मुझे एक ओर इस बात का आभास हो रहा है, इस विशाल भारत की यात्रा स्वतंत्रता संग्राम की और फिर राष्ट्र निर्माण की लगभग सौ साल पहले शुरू हुई थी, तब से आज तक काँग्रेस के कई पड़ाव इन्दौर में रुके। हमने जवाहरलालजी की बेचैनी का आभास किया, श्रीमती इन्दिरा गाँधी की ममता का स्पर्श पाया, श्री राजीव गाँधी की प्रेरणा की चिनगारियों से भी इन्दौर को स्पर्श मिला। इसलिए आज मैं अपने को बहुत सौभाग्यशाली समझ रहा हूँ, इन्दौर के सम्मानित नागरिकों के बीच में आकर खड़ा हो कर अपनी दो-चार बातें उनसे करने के लिए आया हूँ। हमारे साथियों ने जो बातें कहीं हैं मैं उनको दोहराना नहीं चाहता। और न हम किसी की बुराई करने यहाँ पर आए हैं और न कोई राजनीतिक लाभ उठाने की गरज से यहाँ आया हूँ। लेकिन अगर इन्दौर के सम्मानित नागरिकों को, किसानों को, बहनों और भाइयों को आज भारत की स्थिति से अवगत करा नहीं सका तो मैं अपने कर्तव्य को पूरा नहीं करूँगा और केवल उतना ही कर्तव्य पूरा करने के लिए मैं आपके बीच में हाजिर हुआ हूँ।

सन् 1952 में जब पहला चुनाव हुआ तब गो-रक्षा की बात आई। जब दूसरा चुनाव आया गंगाजल की बात आई और जब तीसरा चुनाव हुआ तो फिर धर्म की रक्षा करने की बात आई, लेकिन सन् 52 से लेकर सन् 84 तक अपने बलबूते पर इस विचारधारा के लोग जिनका प्रतिनिधित्व भारतीय जनता पार्टी करती थी, पहले जनसंघ नाम था, किसी भी राज्य में अपने बलबूते पर जनता का विश्वास नहीं प्राप्त कर सकी। जहाँ तक केन्द्र का सवाल था वहाँ तो कोई अस्तित्व ही नहीं था। 1984 में सारे भारत से केवल दो सीटें लोकसभा में, जिसकी संख्या 500 के आस पास है, वहाँ पा सके। उस समय इनको ऐसा एहसास हुआ यदि हमने कोई और रास्त नहीं चुना तो शायद हमारा राजनीतिक अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा और उस समय उनकी यह साजिश हुई कि अब धर्म के नाम पर हम लोगों को भड़काने की कोशिश करें और उसके नाम पर समर्थन माँगने की कोशिश करें। चूँकि काँग्रेस पार्टी सब धर्मो का आदर करती है, जैसा कि विवेकानन्दजी ने कहा : 'हमारा यह विश्वास है कि अगर एक धर्म के सिद्धांत सही हैं तो दुनिया के हर धर्म के सिद्धांत सही हैं क्योंकि सभी धर्म एक ही दिशा की ओर मनुष्य को ले जाने का प्रयास करते है।' इसलिए इस मुद्दे को राजनीतिक रूप देने की कभी कोशिश काँग्रेस पार्टी ने नहीं की। अयोध्या में शिलान्यास भी हुआ फिर भी कोशिश होती रही कि मिलजुलकर इस मसले को हम हल कर सकें। यह बात पहले कही है काँग्रेस की ओर से और आज मैं उसको दोहराना चाहता हूँ कि किसी भी समय काँग्रेस पार्टी ने अयोध्या में भगवान राम का मन्दिर बनाने की खिलाफत नहीं की, न आज की, न कल करेंगे। कोशिश केवल यह थी कि यदि यह विवाद का मामला है तो उस मामले को आपस में मिल बैठकर सुलझा कर हम आगे बढ़ें। राजीव गाँधी ने वही कोशिश की और प्रधानमंत्री श्री नरसिंहराव ने भी वही कोशिश की। लेकिन मिलजुलकर बातचीत के जरिए किसी मामले का हल अगर हो जाएगा

तो उससे भाजपा राजनीतिक लाभ नहीं ले सकेगा इसीलिए चर्चा के दौरान ही इन्होंने उस बातचीत के सिलसिले को समाप्त कर दिया और घोषणा कर दी 'कार-सेवा' करने की।

सवाल यह है कि क्या देश के विकास का रथ, उसका पहिया साम्प्रदायिकता के कीचड़ में फँस कर हम इस दुनिया में भारत के अस्तित्व को समाप्त करना चाहते हैं? क्या हम कट्टरवादिता के आगे घुटने टेक दें? वह कट्टरवादिता चाहे मुस्लिम कट्टरवादिता हो, हिन्दू कट्टरवादिता हो, चाहे सिख कट्टरवादिता हो, अगर कट्टरवादिता के आगे हम घुटने टेक देंगे तो भारत का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

इसलिए इन मुद्दों को हमें गहराई से अपने सामने रख कर, अपने दिल पर हाथ रख कर सोच समझ कर काम करने का मौका है। सबसे पहले हमें इन भावनाओं को शांत करना है। सबसे पहले जो लोगों के मन मे द्वेष, ईर्ष्या की भावना घर कर गई है उसको शांत करने की जिम्मेदारी है। आज कुछ लोग अपना-अपना पक्ष रखने में बहुत महारथ दिखाना चाहते हैं। बीजेपी अपना पक्ष रखा रहा है, कोई अपना पक्ष दिखा रहा है, मैं तो आपसे यह प्रार्थना करने आया हूँ कि मेहरबानी करके एक भारतमाता का पक्ष भी है, इस पर भी विचार करिए। क्योंकि भारतमाता का पक्ष इस देश मे रहने वाले किसी भी समुदाय का पक्ष नहीं है, किसी भी एक धर्म के मानने वाले लोगों का पक्ष नहीं है, किसी भाषा के बोलने वाले लोगों का पक्ष नहीं है, भारतमाता के विशाल आँगन में जो करोड़ों लोग खेलते हैं, कूदते है, अपना जीवनयापन करते हैं, भारतमाता तो उन सभी पक्ष को अपना समझती है। काँग्रेस यही सोचती है और काँग्रेस का यही कर्तव्य और हमारा यही सिद्धांत है कि हर हालत में हम भारतमाता के पक्ष को भी मजबूत करें और उन सब कामों में लोगों का हाथ बटाने के लिए उनसे प्रार्थना करें जो देश को मजबूत करते हैं, हमारे समाज को मजबूत करते हैं, उन विचारधाराओं को मजबूत करते हैं जो भारत की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बना कर आगे ले जाना चाहते हैं। यह राजनीतिक पक्ष का महत्त्व है।

एक सामाजिक पहलू भी है। वह है सामाजिक न्याय का पहलू। काँग्रेस पार्टी ने सदैव, चाहे वह राजनीतिक, आर्थिक या सामाजिक पहलू हो, उसमें सामाजिक न्याय को बहुत बड़ा महत्त्व दिया है। क्योंकि जब तक देश के अंदर रहने वाले प्रत्येक वर्ग और समुदाय को यह विश्वास नहीं होगा जो कुछ भी साधन जुटाए जा रहे हैं उसमें उनका बराबर का अधिकार है। जो भी राजनीतिक प्रक्रियाएँ हैं, संरचना है उसमें उनका पूरा-पूरा हक है और इतना भर ही मत कहिए, यह सचमुच में होना चाहिए और जब तक हम देश की एकता को मजबूत नहीं कर सकते। गरीबी के खिलाफ लड़ाई, भारत में एक ऐसी लड़ाई जो लड़ाई केवल जीती जा सकती है, कोई भी समझौता इस लड़ाई के बीच में नहीं किया जा सकता।

इसका यह मतलब हुआ कि गरीब को गरीबी से उठाने के लिए शोषण का अंत करने के लिए, धर्म-निरपेक्षता के आधार पर देश की व्यवस्था को बनाने के लिए, जो कुछ भी प्रयास हो वह प्रयास होना चाहिए और उस प्रयास में काँग्रेस पार्टी की प्रतिबद्धता है, हमारी तरफ से उस सिद्धान्त के प्रति वफादार हैं, और हर परिस्थिति में इस देश के अन्दर इन सिद्धांतों को लागू करने के लिए काँग्रेस प्रयत्नशील रहेगी। यह बात अपनी तरह बिल्कुल सही है। बहुत सी कमियाँ अभी देश में है। जो नहीं होनी चाहिए, जो गलतियाँ हमने की हैं, इस रास्ते पर चलते-चलते उन गलतियों में भी सुधार करना चाहिए। काँग्रेस पार्टी ने कभी यह रुख नहीं अपनाया कि हम यह अहम के साथ कहें, घमण्ड के साथ कहें कि हमने सब कुछ कर दिया है और जो कुछ होना था हो चुका है इसके अलावा और कुछ नहीं हो सकता।

जहाँ तक मध्यप्रदेश का सवाल है हम जानते है, हमारे साथी जानते हैं यह प्रदेश, इसकी तरक्की, इसकी

खुशहाली इस बात पर भी निर्भर करती है कि इस प्रदेश का सर्वहारा वर्ग जो अनेक विषमताओं के बीच जी रहा है, जब उसकी भलाई होगी तो मध्यप्रदेश की भलाई होगी, उसके बाहर मध्यप्रदेश की भलाई नहीं होगी और इसमें किसी तरह की शंका करने की गुंजाइश नहीं है। भारतीय जनता पार्टी ने अपने दो साल के शासनकाल में ऐसा कोई एक भी कदम नहीं उठाया जिससे इस प्रदेश के सर्वहारा वर्ग को यह विश्वास हो सके कि उसके हितों का संरक्षण किया जा रहा है। झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगों को राहत नहीं मिली बुलडोजर जरूर उनको मिला। दूर-दूर तक गाँव में रहने वाले किसान जो थे उनको छला गया ऋण मुक्ति के मामले में, उनको छला गया उनके उत्पादन मूल्यों के मामले में, उनको छला गया पंचायतों के चुनाव के मामले में, कोआपरेटिव के चुनाव के मामले में। ऐसा कोई भी एक क्षेत्र नहीं है जहाँ धोखा धड़ी की राजनीति, भूल-भलैया की नीति भारतीय जनता पार्टी ने न की हो।

काँग्रेस ने यह संकल्प लिया है साम्प्रदायिकता से संघर्ष, केवल साम्प्रदायिकता के विचारों से संघर्ष नहीं है, भारतवर्ष में साम्प्रदायिकता से संघर्ष निहित स्वार्थों के साथ उतना ही कड़ा संघर्ष है क्योंकि निहित स्वार्थ आज असाम्प्रदायिक आवरण में अपनी रक्षा करना चाहते हैं, अपने को बचाना चाहते हैं, शोषण और आतंक के सहारे इस प्रदेश की गरीब जनता पर प्रभाव डालना चाहते हैं, इस बात को काँग्रेस पार्टी कभी बर्दाश्त नहीं करेगी और अंतिम क्षणों तक लड़ेगी। हम जानते हैं इस प्रदेश के लाखों, करोड़ गरीब लोग जानते हैं, समझते हैं असली लड़ाई किसकी है और किसके लिए है। क्योंकि काँग्रेस ने अपनी हर लड़ाई में दरिद्र नारायण को केन्द्रित करके अपनी सब योजनाएँ चलाई हैं, अपने सब आदर्शों को रखा है, अपनी नीतियों को बनाया है इसलिए काँग्रेस की लड़ाई दरिद्र नारायण के हितों की लड़ाई है उसके खिलाफ चाहे कितना भी शक्तिशाली स्वार्थ आगे खड़ा होगा हम काँग्रेस को कभी भी विचलित नहीं कर सकते हैं। अंतिम क्षणों तक उस संघर्ष में काँग्रेस के लोग लगे रहेंगे। यह आश्वासन इन्दौर की जनता के माध्यम से मैं सारे भारत में ही नहीं मध्यप्रदेश के कोने-कोने में पहुँचाना चाहता हूँ क्योंकि हमारा संघर्ष ही हमारा कर्तव्य है। आप क्या चाहते हैं यह आपको देखना है। कौन किस को क्या बनाता है यह जनता के हाथों में है। हमारा कर्तव्य है और हमें करना है। उस कर्तव्य के पालन में हम आप का केवल सहयोग चाहते हैं, आशीर्वाद चाहते हैं आप ही के लिए चाहते हैं और किसी के लिए नहीं चाहते हैं। इस समय बहुत ही कठिनाई के दौर से देश गुजर रहा है।

ऐसा मत समझिए कि जो कुछ पिछले दो सालों में उपब्धियाँ शासन ने की है, आर्थिक ढाँचा मजबूत हुआ है लेकिन खतरे अभी खत्म नहीं हुए। इतनी तेजी से दुनिया बदल रही है, इतने परिवर्तन की सीमाएँ लाँघी जा रही है कि जब तक सतत सतर्कता नहीं रहेगी, एकता नहीं रहेगी तब तक वे खतरे किसी वक्त देश के आगे चुनौती बन कर खड़े हो जाएँ इसको कहा नहीं जा सकता और यह इसलिए जरूरी है कि हम सब कंधे से कंधा मिला कर चलें, इसलिए जरूरी है कि हमारे दिल और दिमाग की खिड़कियाँ खुली रहें, इसलिए जरूरी है कि हमें इंसानियत के धर्म को बचाना है। यह तभी संभव है जब हम अपना कर्तव्य भारतमाता के प्रति निभाने में कहीं भी किसी प्रकार से कोई हिचकिचाहट न दिखाए।

आपने कुछ अपनी समस्याओं के बारे में भी यहाँ जिक्र किया। भाई गुलाम नबी आज़ाद ने एयरपोर्ट के बारे में कहा, कल इसका वह शिलान्यास करेंगे। नर्मदा के पानी का जहाँ तक सवाल है, मैं इतना ही आप से कहना चाहता हूँ, अगर पहला और दूसरा चरण काँग्रेस पार्टी ले आए इन्दौर के लिए तो तीसरा चरण तो काँग्रेस ले ही आएगी। यह भरोसा आप को पूर्व के अनुभव के आधार पर होना चाहिए। जिन लोगों ने लाने का वायदा किया था दो साल तक सब जगह पानी समेट कर कहाँ ले गए, पता नहीं है। काँग्रेस करेगी इस काम को, कठिनाइयाँ हैं। लेकिन जिस प्रकार

की कठिनाइयों के बीच काँग्रेस ने प्रदेश के हर शहर की जरूरतों को पूरा करने के लिए कोशिश की है, इसी प्रकार यह काम भी होगा। मिलों का जहाँ तक सवाल है उनको भी चलाने में अगर कोई कामयाबी हासिल की तो केवल काँग्रेस पार्टी ने की। आज जो परिस्थिति मिलों की हो रही है — उज्जैन में हो, इन्दौर में हो या और किसी शहर में हो, एक आर्थिक संकट के दौर से हम गुजर रहे हैं और कुछ ऐसे सवाल भी खड़े हैं जिन को हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। लेकिन आप इतना भरोसा करिए कि भारत के मजदूरों के हितों का हर पहलू से और हर परिस्थिति में काँग्रेस ही संरक्षण करेगी उनके हितों के खिलाफ कोई भी कदम काँग्रेस पार्टी की तरफ से नहीं उठेगा और इस रास्ते पर चल कर इस समस्या का समाधान करने की भी कोशिश की जाएगी।

लेकिन आज की सभा में जैसा कि मेरी जानकारी है, बहुत बड़ी संख्या में किसान भाई और हमारे मछुआरे भाई भी यहाँ आए हुए हैं। मछुआरे भाइयों के संबंध में मैं क्या कहूँ। सबसे पहली बात तो उनको आर्थिक मजबूती प्रदान करने की है। 1983 में इन्दिराजी के गरीबी हटाओ कार्यक्रम के अन्तर्गत एक फैसला हुआ था कि जितने भी तालाब और नदियाँ हैं प्रदेश की जिनमें बड़े-बड़े ठेकेदार ठेका लेकर मछली मारने का काम करते हैं इन सब को मछुआरों की सहकारी समितियों को दिया जाए ताकि छोटे-छोटे मछुआरे अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकें। यह काँग्रेस का निर्णय था। भारतीय जनता पार्टी सरकार बनते ही इस फैसले को पलट देगी मुझे मालूम नहीं था। पटवाजी तो जैनी हैं उनको मछली माँस से मतलब नहीं होना चाहिए। इस फैसले को क्यों पलट दिया? इसलिए कि बड़े-बड़े ठेकेदारों के हाथ से लेकर यह अधिकार कमाई का, गरीबों के हाथों में चला गया था इसलिए मछली मारने का अधिकार पटवाजी को बदलना जरूरी था ताकि वह अधिकार भी उन लोगों के हाथ में पहुँच जाए जो बड़े-बड़े लोग हैं और ये गरीब बेचारे बिलखते रहें।

किसानों के लिए हमने पहले ही कहा कि उनके ही श्रम से भारत आज आत्मनिर्भर हुआ है खाद्यान्न के मामले में। उनके उत्पाद का उन्हें सही मूल्य मिलना जरूरी है। न्यूनतम मूल्य की सीमा काफी बढ़ा दी गई है। उससे भी ज्यादा बड़ी बात यह है कि सरकार ने यह फैसला कर दिया है कि अब किसान अपनी उपज को कहीं भी ले जाकर बेच सकता है। किसी भी प्रकार की रोक उस पर नहीं लगेगी। फर्टिलाइजर महँगा हुआ है, उसकी सब्सिडी कुछ कम है। लेकिन फिर से उस सबसिडी को बहाल करने का निर्णय हुआ है। कम से कम फॉस्फेट के बारे में और जितनी राहत दिलाने की संभावना होगी किसानों को इस मामले में पूरी राहत दिलाई जाएगी।

मैं आप से इसके पहले कि बिदा लूँ एक ही बात कहना चाहता हूँ कि हमारे बीच में बहुत से साथी हैं, कुछ काँग्रेस के भी हैं, कुछ काँग्रेस के नहीं भी हैं, कुछ नागरिक हैं, माताएँ हैं, बहनें हैं, भाई हैं। आपसे मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि जब भी आप किसी दूसरे की आँखों में अपनी आँख डालेंगे, जब भी आप किसी के चेहरे की ओर देखेंगे तो यह अहसास करके देखें कि आप अपने भाई, बहन का चेहरा देख रहे हैं और उस चेहरे पर कोई शिकन नहीं आनी चाहिए। अगर हमारे और आपके किसी काम से किसी भाई और बहन के चहेरे पर शिकन आती है तो हम में कुछ कमी है और उस कमी को दूर करने की जरूरत है। यही धर्म है, यही आदर्श है और यही भारत की परम्परा है। हम तीनों की रक्षा अपनी तरफ से करें यह हमारा संकल्प हो, निश्चित रूप से इन्दौर की गौरवशाली परम्पराएँ न केवल कायम रहेंगी बल्कि नए-नए कीर्तिमान स्थापित होंगे ताकि यह मध्यप्रदेश का सबसे अग्रणी शहर एक दिन भारत का अग्रणी शहर बन कर हम सब को प्रेरणा दे सके। इन शब्दों के साथ मै आप सब लोगों के प्रति अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। अपनी तरफ से आपके प्रति अपनी सद्भावना देता हूँ। धन्यवाद, जय हिन्द।

किसान को उसकी पैदावार का उचित मूल्य मिले

29 अगस्त 1993 को बिलासपुर के किसान सम्मेलन में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश —

इस सभा में पधारे हुए आदरणीय बंधुओ, अभी हमारे साथियों ने आपके समक्ष किसानों से सम्बन्धित कुछ बातें रखीं। किस दिशा में किसानों के हित में काम करना चाहिए उसका भी उल्लेख किया। काँग्रेस पार्टी ने आजादी मिलने के पहले से यह समझ लिया था कि हिन्दुस्तान की आजादी का कोई मतलब नहीं होगा यदि भारत के लाखों गाँवों में बसे हुए किसानों को अपने पैरों पर खड़ा होने लायक नहीं बनाया जाएगा। इसलिए आजादी की लड़ाई के समय ही गाँधीजी ने, पंडित जवाहरलालजी ने और सरदार पटेल ने बहुत से ऐसे मुद्दे, देश के सामने, किसानों के सामने काँग्रेस के सामने लाकर रखे, जब देश आजाद नहीं हुआ था, मैं तब की बात कर रहा हूँ। पंडित जवाहरलालजी ने सन् 37 में उत्तर प्रदेश में किसानों की परिस्थितियों को देखने के लिए और क्या करना चाहिए इस बारे में समझने के लिए सारे उत्तर प्रदेश का दौरा किया। जो कुछ हालत उन्होंने गाँवों में देखी उसको देखकर उन्होंने यह बात काँग्रेस के सामने रखी कि सबसे ज्यादा परेशानी यदि गाँव में किसानों को है तो मालगुजारों से है, जमींदारों से है जो जमीन पर कब्जा किए हुए बैठे हैं। उनकी मर्जी पर ही किसानों को मेहनत करने के बावजूद पूरा-पूरा लाभ नहीं मिलता। पंडितजी के इसी विचार के कारण काँग्रेस के अंदर यह कार्यक्रम स्वीकार किया गया कि आजादी मिलते ही जमीदारियाँ समाप्त होंगी, जो खेत जोतेगा उस किसान को उस खेत का मालिक बनाया जाएगा।

यह सब तुजुर्बे के आधार पर देश के अंदर उन्नत बीज लाए गए, सिंचाई की सुविधा बढ़ाई गई, उर्वरक लाए गए। उस वक्त भी लोग कहते थे, ये तो बे-पढ़े-लिखे लोग हैं, गाँव के किसान पढ़ना-लिखना जानते नहीं है। यह जो नए बीज हैं, इसको कैसे बोएँगे और कैसे काटेंगे यह इनकी समझ में ही नहीं आएगा। फर्टिलाइज़र कैसे इस्तेमाल करेंगे यह इनको मालूम नहीं है। ये सब बातें आपने सुनी होंगी, उस वक्त हम लोगों ने भी सुनी थी। लेकिन जो किसान पढ़े-लिखे न भी हों,वह अपनी खेती की हालत जानता है, खेती में पैदावार कैसे की जाए यह जानता है और पैदावार करने में जो रुकावटें हैं उसको भी जानता है। यही वजह है कि वह अनपढ़ किसान अच्छे बीज का भी इस्तेमाल कर सका, फर्टिलाइज़र का भी कर सका, सिंचाई और पानी का भी कर सका और आज यह स्थिति है कि जहाँ पहले देश के अंदर लोगों के खाने के लिए करोड़ों-करोड़ रुपये का सोना-चाँदी बेच कर अनाज बाहर से मँगाना पड़ता था आज एक दाना भी अनाज बाहर से मँगाने की जरूरत नहीं है, वैसे भले ही हम आयात कर लें सुरक्षा की दृष्टि से। यह किसने किया? यह नेताओं ने चौराहे पर या रास्ते पर खड़े होकर भाषण देकर नहीं किया। यह काम किसानों ने अपने खेत खलिहानों में काम करके किया।

काँग्रेस ने केवल इतना ही किया कि उनको सुरक्षा दी, उनके हाथ में साधन पहुँचाए। अब समस्या दूसरा स्वरूप ग्रहण कर रही है। अब किसानों को पैदावार बढ़ाने के लिए काम करना है, यह सिखाने की जरूरत नहीं है। वह सब सीख गए। अब उनकी पैदावार का क्या इस्तेमाल हो, उनको क्या कीमत मिले उसके आधार पर कौन से उद्योग धंधे लगाए जाएँ, अब इसका समय आया है। इस दिशा में भी इन्दिराजी ने और राजीवजी ने खास तौर से एक बहुत लम्बी योजना बनाई कि अब किसानों की हालत को और बेहतर करने के लिए केवल उनके अनाज को मंडी या बाजार में ले जाकर बेचने से ही काम नहीं चलेगा अब उस पैदावार से क्या नए धंधों को लगाया जा सकता है, क्या इंडस्ट्री लगाई जा सकती है, इस के ऊपर खोज हो ताकि उनको अपनी पैदावार की ज्यादा कीमत मिले। इस अवसर पर किसानों को सहयोग की जरूरत है, सहायता की जरुरत है, मार्गदर्शन की जरूरत है और सबसे ज्यादा उनको बचाव करने

की जरूरत है। मुश्किल यह है कि आज जो भारतीय जनता पार्टी का शासन है वह केवल नारों पर विश्वास करती है। उन्होंने सोचा कर्ज माफी का नारा देकर किसानों को साथ कर लेंगे। कुछ लोगों ने दे भी दिया कि हमारा कर्ज माफ हो जाएगा। जब साल भर बीत गया। दो-तीन साल बीतने को आ गए, अपने-अपने गाँवों की तरफ नजर दौड़ा कर आप देख लीजिए, आपके गाँव में कितने कर्जदार थे और कितनों का कर्जा माफ हुआ। क्या यह सही नहीं है कि जो बड़े-बड़े लोग थे जिनका कर्जा शायद माफ नहीं होना चाहिए था सबसे पहले उन्हीं का कर्जा माफ हुआ। जो सबसे गरीब था उसका कर्जा आज भी बरकरार है। तो यह एक दृष्टिकोण और देखने का नजरिया, काम करने का नजरिया है। वह इस सरकार के पास है। यह तो धोखा धड़ी से किसी प्रकार से समर्थन प्राप्त करना चाहते हैं ताकि इनका कोई आदमी विधायक बन जाए, सांसद बन जाए, मंत्री बन जाए और मुख्यमंत्री बन जाए।

किसानों के खेत में न सासंद पैदा होते है न मंत्री पैदा होते हैं, किसानों के खेत में तो अन्न पैदा होता है। उस पैदावार की उसको कीमत कैसे दिलाई जा सके, उसका कैसे उपयोग कराया जा सके यह देखने की जरूरत है और इस दिशा में काँग्रेस पार्टी ही आपकी मदद कर सकती है। जो योजनाएँ बनी हुई हैं गरीब सीमांत किसानों की मदद करने के लिए, जैसा अभी साथियों ने कहा जवाहर रोजगार योजना है और योजनाएँ हैं, राजीवजी ने तो सीधे पंचायतों को वह पैसा भेजना शुरू कर दिया क्योंकि बीच में वह पैसा कुछ लोग इधर-उधर किया करते थे। अब इन्होंने जो किसानों की, गाँव की चुनी हुई पंचायतें थीं उनको भंग करके अपने-अपने आदमियों को वहाँ बैठा दिया। यह कहा कि यह पैसा तुम लो। सौ रुपये में 50 रुपये खर्च कर दो और बाकी 50 रुपये भारतीय जनता पार्टी के फंड में दे दो। आज यह हो रहा है पूरे प्रदेश में। इन सब चीजों को देखते हुए अब किसानों को खड़ा होना पड़ेगा अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ाई के लिए और यह लड़ाई किसी और के लिए नहीं होगी, यह लड़ाई आपके अपने लिए होगी। अपने हितों के लिए होगी। इस लड़ाई में काँग्रेस आपके साथ कंधे से कंधा मिला कर चलेंगी, आपको इस लड़ाई में विजय दिलाएँगे। ताकि जो आपको अपनी किस्मत पर आपका अधिकार सदियों के बाद पंडित जवाहरलालजी ने वापस दिलाया था, उस अधिकार का आप सही रूप में उपयोग कर सकें और एक बेहतर जिन्दगी की ओर बढ़ने के लिए सक्षम बन सकें, यह आज के समय का तकाजा है और काँग्रेस के साथ जुड़ कर आप इन सब चीजों को पा सकते हैं। यह हमारा आप से निवेदन है और मैं पूरा विश्वास करता हूँ काँग्रेसजन गाँव-गाँव में किसानों की समस्याओं को, उनकी दिक्कतों को नजदीक से देख कर उसके लिए संघर्ष करने के लिए उसमें मदद करेंगे उनके साथ होंगे, यही मैं आप से प्रार्थना करना चाहता हूँ। आप सब यहाँ पधारे और मुझे सुनने का आपने कष्ट किया इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशों में

नवजवान हतोत्साहित नहीं हों

14 जनवरी 1993 को संसदीय सौध, दिल्ली में युवकों के सामने उद्‌बोधन के प्रमुख अंश:

माननीय श्री बगरजी, हमारे सम्मानित सहयोगी श्री मणिशंकरजी एवं यहाँ पर विराजे हुए सभी युवक बंधुओं, मुझे यह तो मालूम नहीं है कि हमारे सामने जो चेहरे हैं वे किस संस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं, किस जमात के पदाधिकारी हैं, इसकी जानकारी मुझे नहीं है। लेकिन मुझे इस बात की जानकारी जरूर है कि आप जो सब यहाँ इकट्ठे

हुए है आपके दिलों में इस देश के लिए धड़कन है। आप युवा हैं और इस देश के भविष्य के लिए चिंतित भी हैं और कुछ करने का हौसला भी रखते हैं। इसलिए मैं अपने को आज बहुत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि आपके समक्ष आकर मुझे कुछ दो शब्द कहने का मौका दिया गया है।

श्री बरार ने बहुत व्यापक समीक्षा आज के समय की कर दी है। मैं उन बातों को दोहराना नहीं चाहता। कुछ ऐसी बातें आपके सामने रखना चाहता हूँ जिससे आप भलीभाँति समझ सकें, अच्छी तरह समझ सकें कि वे कौन से खतरे है जो आज हमारे सामने हैं और वे खतरे कौन पैदा कर रहे हैं उनकी पहचान कर सकें और फिर उन खतरों से देश की रक्षा करनी है, इसके बारे में विचार करके कुछ फैसला कर सकें।

आपने पिछले 4-5 सालों में देखा होगा किस प्रकार से धीरे-धीरे कुछ व्यक्तियों ने, कुछ पार्टियों ने भारत के गणराज्य को एक ऐसी दिशा में मोड़ने की कोशिश की है जो दिशा हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानी की दिशा नहीं है, जो हमारे संविधान के रचयिताओं के मन के मुताबिक दिशा नहीं है और जो संविधान में दिए गए अधिकार, आदर्श और उद्देश्य हैं उनसे भी कोई मेल नहीं खाते हैं। फिर ऐसी दिशा देने की जरूरत क्यों पड़ी? यह पहला सवाल है। इस संविधान में भारत के प्रत्येक व्यक्ति को जो बालिग है पहले 21 साल था, राजीव जी ने उसे घटाकर 18 साल की उम्र कर दिया, उस व्यक्ति को मत देने का अधिकार है और उसी अधिकार के द्वारा ही यह फैसला करते हैं कि हमारे देश के अंदर कौन सी व्यवस्था हो, कौन सी राजनीतिक पार्टी को हम अधिकार दें, देश का कामकाज चलाने के लिए, कौन लोग असेम्बली में और लोकसभा में चुनकर जाएँ। जनता के प्रतिनिधि के रूप में, अर्थात् सारे अधिकार संविधान के उसी अधिकार से निकलते हैं जो बालिग मताधिकार का अधिकार संविधान में स्वीकृत है।

कम से कम भारतीय गणतंत्र में कोई भी स्रोत किसी और कारणों से और तरीकों से इस देश के कामकाज के चलाने का रास्ता नहीं है, हम उसे स्वीकार करते है और उसी के अंदर हम सब को रहना है यदि हम प्रजातंत्र में विश्वास करते हैं। इसलिए उन लोगों के लिए जो इस बात को अच्छी तरह से समझते थे और समझते हैं कि इस मताधिकार के आधार पर वे कभी भी संविधान के अन्तर्गत देश के करोड़ों-करोड़ मतदाताओं को यह विश्वास नहीं दिला सकते थे, उनको नहीं समझा सकते थे और उनका समर्थन प्राप्त नहीं कर सकते थे। स्वयं सत्ता में पहुँचने के लिए उनके लिए जरूरी था यह सब काम, ये सब कोशिशें उसके बाहर ले जाई जाएँ। आज हमें इस बात को स्वीकार करना पड़ेगा, क्योंकि हकीकत अच्छी लगे या बुरी लगे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

जो पीढ़ी, जो देश, जो समाज हकीकत को पहचानने में गफलत करता है केवल इतिहास के कूड़े खाने में ही नजर आता है, बीच में उसके लिए कोई स्थान नहीं होता है। यह हकीकत है कि पिछले 5 सालों में ऐसी शक्तियों ने, ऐसी पार्टियों ने काफी हद तक सफलता पाई, हमारे प्रजातंत्र को, हमारे संवैधानिक अधिकारों को उस परिधि और सीमा के बाहर ले जाने में जहाँ ले जाने का उनको कोई अधिकार नहीं था। हमारे कानून हैं, चुनाव के कानून हैं, संविधान में दिए गए अधिकारों के कानून हैं, हमारी बहुत सी प्रक्रियाएँ हैं, जिनके माध्यम से हम देश का काम चलाने की कोशिश करते हैं। आज यह सब उनके लिए कोई महत्त्व नहीं रखते। धर्म के नाम पर चुनाव कानूनों में रोक है। उस आधार पर हम वोट नहीं माँग सकते। यह देश का कानून है, पार्लियामेंट के द्वारा पास किया हुआ है और उसी के तहत पिछले 45 सालों से चुनाव होते रहे, लोग चुने जाते रहे, सरकार बनती रही, सरकारें बर्खास्त की जाती रहीं। लेकिन अब यह जरूरी नहीं है कि चुनाव के इस कानून को हम अमल में लाएँ, या हम पालें। क्योंकि कुछ लोगों ने यह तय किया कि अगर हम इस कानून का पालन करते हैं तो फिर हम को चुन कर आना बड़ा मुश्किल होगा। चुनकर इसलिए आना मुश्किल होगा कि चुनाव के लिए जो मुद्दे देश के सामने रखे जाते हैं, मतदाताओं के सामने रखे जाते हैं ऐसे हमारे

पास कोई मुद्दे नहीं हैं। क्योंकि ऐसे मुद्दे नहीं है इसलिए हमें ऐसा मुद्दा सामने लाना पड़ेगा जिसका सीधा संबंध हमारे प्रजातांत्रिक देश के संचालन से न हो, उसका संबंध हमारे धार्मिक जजबातों से हो और वह संबंध इन्होंने जोड़ दिया।

हमारी लड़ाई और कठिन हो गई। बहुत से लोग सोचते होंगे कि इस लड़ाई से फायदा ही क्या है? आपने-अपने घर बैठो, कोई न कोई शासन तो बनाएगा ही देश में, जो बन जाएगा हम उसकी जी-हुजूरी में लग जाएँगे। लेकिन मैं समझता हूँ यहाँ जो हमारे सामने युवा बैठे हैं, चाहे वे किसी धर्म के हों, किसी सम्प्रदाय के हों, किसी राज्य के हों, कम से कम आप लोगों के दिल में न तो ऐसी दहशत है और न ऐसी कोई निराशा है। इसलिए मैं आपके सामने यह बात कह रहा हूँ आप जैसे इस देश में करोड़ों-करोड़ लोग हैं, नौजवान हैं, वयस्क हैं, माताएँ हैं, बहनें हैं, उनके दिल में भी वही जजबात हैं। लेकिन शंकाएँ बहुत घर कर गई हैं।

अब उनकी कोशिश यह होगी कि जो हमारे संविधान और प्रजातंत्र की मानी हुई संस्थाएँ है उनको तोड़ा जाए। और उनको तोड़ने का रास्ता एकदम से सीधा हमला नहीं होगा। बल्कि उनके बारे में शंका पैदा की जाए फिर उनको नाकाम सिद्ध करने की कोशिश की जाए। आखिरी पड़ाव पर फिर उनको बदलने और समाप्त करने का अभियान चलेगा। कितनी खूबसूरत बात की जा रही है उसका अंदाजा इसी से लगा लें कि भारत की चुनी हुई संसद यहाँ से 500 गज पर बैठती हैं पार्लियामेंट हाउस में लेकिन आज इस संसद के हाथ में यह अधिकार नहीं है कि वह सारे राष्ट्र के बारे में सोच समझ कर फैसला करके उस फैसले को इस देश में मनवाने के लिए लोगों से अनिवार्य रूप से उसका पालन कराएँ। उसका फैसला कौन कर रहा है, आज राष्ट्र में क्या हो रहा है, यह धर्म संसद बन गई है, नाम उसका भी संसद है, लेकिन वह संसद हमारे देश के संविधान से गवर्न नहीं होती, हमारे कानून से गवर्न नहीं होती, हमारी उन आस्थाओं से प्रभावित नहीं होती जिन आस्थाओं के सहारे इस देश ने हजारों साल का अपना इतिहास बनाया। वह संसद न तो चुनी हुई संसद है, न किसी प्रजातांत्रिक मोहर उस पर लगी हुई है। वह ऐसे चुनिन्दा लोगों की संसद है जिनको भारतीय जनता पार्टी ने सांसद बनाने की घोषणा कर दी है। मैं आप से कहूँ अगर कोई चाहे तो एक दफा जैसे पार्लियामेंट के मेम्बरों की 'हूज-हू' निकलती है, हम लोगों से लम्बा चौड़ा क्वेश्चनेअर पूछा जाता है, अगर ऐसा एक क्वेश्चनेअर इस धर्म संसद के सदस्यों के पास भेज दिया जाए, तो शायद दो परसेंट भी उसका जवाब नहीं दे पाएँगे। लेकिन अगर जवाब दे न दें, जानकारी ली जाए या न ली जाए, उनको तो इस संसद का विजिटर पास भी नहीं मिल सकता है, सदस्यता की तो बात छोड़ दीजिए। ऐसे लोग आज इस देश के भविष्य के बारे में फैसला कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी ने बड़ी खूबसूरती से भिन्न-भिन्न कार्य क्षेत्र बाँट दिए हैं। क्योंकि वे राजनीतिक दल बने हैं, दल के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए उन्होंने एफिडेविट दिया है इलेक्शन कमीशन के सामने, वह एफिडेविट का अर्थ भी उनकी नजरों में कोई नहीं है। लेकिन फिर भी कानून को मानने की बात भी चलनी चाहिए और उसके तोड़ने का तरीका भी निकलना चाहिए, यह उनका उद्देश्य है। हलफ़नामा तो दिया है, इलेक्शन कमीशन में कि हम डेमोक्रेसी और सेक्युलरिज्म पर विश्वास करते हैं। इसलिए उससे बचने के लिए कुछ और संस्थाएँ साथ में चाहिएँ जिन्होंने हलफनामा कमीशन को नहीं दिया है। वे संस्थाएँ हैं विश्व हिन्दू परिषद्, आर.एस.एस. और बजरंग दल।

जब प्रधानमंत्रीजी ने इस मसले को हल करने के लिए एक रास्ता चुना, बातचीत का रास्ता, जो रास्ता सदैव किसी सभ्य समाज में देश में सबसे पहला रास्ता वही होता है। इन्होंने इसका स्वागत किया जुलाई में और जुलाई में ही इन्होंने कार-सेवा रोक दी ताकि सब की नजरों में दिखाई दे कि कितने समझदार लोग हैं, कितने रीजनेबल लोग हैं, कितने मिलजुल कर काम करने की कोशिश करने वाले लोग हैं। बातचीत चलती रही, सब अपना प्रमाण देते रहे, तर्क देते रहे लेकिन सहसा जब बात किसी किनारे पहुँचने की उम्मीद हुई तो घोषणा हो गई, धर्म संसद की घोषणा

कि 6 दिसम्बर को कार-सेवा शुरू हो जाएगी। आखिर इस घोषणा के पीछे कौन से राज हैं? क्या उस बातचीत में लगे हुए सब लोगों की आम सहमति से फैसला हुआ था? यह फैसला इस लिए हुआ क्योंकि उनको यह नजर आने लगा यह जो रास्ता हम लोगों ने अपना लिया है, प्रधान मंत्री के कहने से कहीं धोखे से भी ऐसी स्थिति न बन जाए कि कोई हल निकल आए।

इसमें अदालत भी बीच में आ गई सुप्रीम कोर्ट, कोई मजिस्ट्रेट नहीं। लेकिन जो 18 या 19 नवम्बर को पहला हलफ़नामा उत्तर प्रदेश सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में दाखिल किया है जरा उसे पढ़ने की कोशिश करें। उसी हलफनामे में उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से यह कहा गया कि 30 नवम्बर तक हम को समय दिया जाए तो हम कोशिश करके, सब को मिलाजुला कर कोई ऐसा रास्ता निकालेंगे जिससे किसी प्रकार का लड़ाई-झगड़ा न हो। तारीख महत्त्वपूर्ण है। 6 को कार-सेवा शुरू करनी है 30 नवम्बर तक का उनको समय चाहिए, अर्थात् 30 नवम्बर के बाद कुछ करने का मौका ही नहीं मिलेगा यह रास्ता उन्होंने शुरू से ही बता दिया। ऐसा नहीं कि बीच में उन्होंने बदला हो। और जब सुप्रीम कोर्ट इस मामले में अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए समय-समय पर उनसे बातें पूछती रही तो एक के बाद एक न जाने कितने हलफनामे सब को भ्रम में डालने के लिए देते रहे। आखिर मामले को ले गए 5 दिसम्बर तक। उधर हजारों लोगों को वहाँ आने का आमंत्रण मिल गया। सरकार ने इंतजाम किया, राज्य की सरकारों ने पूरा मोबिलाइजेशन किया, पैसे दिए, सब को ला कर अयोध्या में इकट्ठा कर दिया। उसके बाद न उत्तर प्रदेश सरकार के हाथ में फैसला रहा, न केन्द्रीय सरकार के हाथ में फैसला रहा। फैसला उन लागों के हाथ में करने का अधिकार पहुँच गया जो धार्मिक जजबातों से पूरी तरह से प्रभावित थे और जिन्हें एक ही लक्ष्य दिया गया था कि बाबरी मस्ज़िद को तोड़ना है। न जाने कितनी मस्ज़िदें टूट जाती हैं, न जाने कितने मन्दिर खंडहर हो जाते हैं इस देश के अंदर और न जाने कितने ऐसे धर्म के स्थान हैं, जहाँ आज परिंदा भी पर नहीं मारता है और हम लोग जो हिन्दू है, मुसलमान है, सिख हैं, उनकी नजरें तो वहाँ पहुँचती ही नहीं हैं, कि वहाँ कोई झाड़ू लगा रहा है या नहीं, कोई पुताई भी कर रहा है या नहीं।

जैसा बगरजी ने कहा जिस देश में करोड़ों लोगों के पास केवल आसमान ही छत हो उनके लिए बहुत जरूरी नहीं है कि वे आज ही कहीं मस्ज़िद मन्दिर या गुरुद्वारा बनाएँ। जो बने हैं वह बने रहें। लेकिन पहले उन गरीब के लिए आसमान के अलावा एक छोटी सी छत दे। उनका ध्यान वहाँ कैसे लाया जाए इसके लिए यह पूरा कार्यक्रम बना। अब जब हम उस स्थिति में पहुँच गए हैं, तो आगे का कार्यक्रम आप सब को साफ नजर आ रहा है। संसद को उन्होंने अपनी तरफ लाकर रख दिया। अब संविधान के बारे में सवाल उठने शुरु हो गए। एक संविधान तो गायब ही कर दिया गया। पता नहीं आपने पढ़ा या नहीं पढ़ा जो असली संविधान बताया जाता है, जो कंस्टीट्युएंट असेम्बली ने पेश किया है वह असली संविधान नहीं है, असली संविधान वह है जिसका प्रकटोत्सव वाम देवजी ने किया, कौन इस तरह का नाम है, मैं सब के नाम भी नहीं जानता। वह प्रचारित किया जा रहा है। कि असली संविधान तो यह है, आप लोग कहाँ भटके पड़े हुए हैं। संसद की अवमानना कर दी, अब संविधान की भी अवमानना करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है और फिर यह उनका दुर्भाग्य है कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इस देश के लाखों लोगों ने भारत माता के कदमों में पड़ी हुई गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए, कुर्बानी देने के लिए प्रेरित हुए थे, बलिदान किया था, उन लोगों को भी किस तरह से बेइज्जत किया जाए इसका लेटेस्ट प्रमाण हम को 5 दिन पहले मिल गया।

माता टीला से दिल्ली पहुँचते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष श्री सिंघल ने घोषणा कर दी की 6 दिसम्बर को जो कुछ हुआ है, वह देश की आज़ादी के बराबर ही है और उसका उसी प्रकार से हमे सेलिब्रेशन करना चाहिए

जैसे 15 अगस्त को सेलिब्रेट करते है। कल्पना नहीं की जा सकती। 15 अगस्त को जिन्होंने अपनी आँखों से देखा होगा, मै भी उन दुर्भाग्यपूर्ण लोगों में से एक हूँ। सिंघल साहब के नजरिए में हम जैसे दुर्भाग्य से परिपूर्ण और कौम होंगे जिन्होंने अपनी आँखो से 15 अगस्त देखा है। लेकिन जिन्होंने नहीं देखा है उनके लिए यह सलाह है, उनके लिए यह मशविरा है, उनके सामने यह प्रस्ताव है कि भूल जाओ 15 अगस्त को, तिरंगा चढ़ा होगा लाल किले पर, असली आजादी तो 6 दिसम्बर, 1992 को मिली है जिस दिन बाबरी मस्जिद गिराई गई है। हम सब हाथ पर हाथ रखे बैठे है। ऐसा लगता है जैसे कोई फिल्म देख रहे हो, बीच-बीच में आँखें झपक जाती है, एक सीन निकल जाता है, दूसरा सीन आ जाता है, फिर देखने लगते है। क्या यह विवशता आज भारतवर्ष में है? क्या मजबूरी है आज की तरुणाई में? इसलिए उम्मीद से कह रहा हूँ भारत की तरुणाई अभी नहीं सोई है, अभी पूरी तरह से हतोत्साहित नहीं हुई है, उसने हथियार नहीं डाले है, गोली बन्दूक वाले हथियार नहीं, अपने सिद्धांतों के, आदर्शों के हथियार जो किसी कौम की रक्षा कर सकते है, करते आए है और जिस शस्त्रों के साथ ही भारत ने अपने हजारों साल के इतिहास को बनाया भी है, उसकी रक्षा भी की है।

इसलिए आज की यह बैठक अपना एक अलग महत्त्व रखती है। यहाँ पर जो लोग आए हैं, जैसा मैंने पहले कहा, मै नही जानता, 10-5 लोगों को मैं पहचानता हूँ बाकी सब नए चेहरे नजर आ रहे हैं जिनमें मैं बेचैनी देखता हूँ जिनमें थोड़ी सी चिंता देखता हूँ और उत्साह भी मुझे आपकी आँखों से नजर आ रहा है। सब बंधनों को तोड़ दिया जाए जैसा स्वामी विवेकानन्द ने कहा — "शेर की तरह जब नौजवान उठेगा तब देश बनेगा, उसकी रक्षा होगी।" हम इस बात से कतई सहमत नहीं हैं कातिल का खंजर हमारे राष्ट्र का प्रतीक बने। हमारे राष्ट्र का प्रतीक है हमारी सद्भावना, सहिष्णुता, सब धर्मो को समान समझने की हमारी परिकल्पना, वह हमारे प्रतीक हैं और प्रतीक ही कौम के, राष्ट्र के, भविष्य को, वर्तमान को प्रभावित करते हैं और बनाते हैं और बिगाड़ भी सकते हैं। यदि हमने यह पहचानने में गफ़लत की तो फिर हमारी तरुणाई भी बेकार है, हमारे ज़ज़्बात भी बेकार हैं। मैं अपनी बात केवल दिनकरजी के उन शब्दों से समाप्त करना चाहता हूँ जो उन्होंने देश के आजाद होने के पहले कही थी जो आज भी गूँज रही है :

"जग मशाल जलाओ बड़ा अंधेरा है"।

एकता में शक्ति है

4 मार्च 1993 को दिल्ली में पंजाब के नवयुवकों के समक्ष दिए गए भाषण के प्रमुख अंश —

आदरणीय नौजवान साथियों, इतनी दूर से चलकर आप सब लोग यहाँ आए इस के लिए मैं आप सब भाइयों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। कुछ दिन पहले भाई साहब ने कहा पंजाब के नौजवान साथी यहाँ आना चाहते है। मुझे बड़ी खुशी हुई यह सुनकर इसलिए कि केवल पंजाब ही नहीं सारे मुल्क में अब नौजवानों को ही अपने मजबूत कंधों पर इस देश के भविष्य की जिम्मेदारी लेनी है। वैसे तो समय के तकाजे के मुताबिक यह जिम्मेदारी अपने आप एक दिन आपके कंधों पर आएगी लेकिन जिस माहौल से आज देश गुजर रहा है उसमें जिम्मेदारियाँ इंतजार नहीं कर सकती क्योंकि फिरकता कुछ लोगों ने ऐसा कर लिया है कि हिन्दुस्तान की विरासत को हमारे देश के उन मूल्यों को, आदर्शों को, सिद्धांतों को, जिसके सहारे चल कर हमने अपने हजारों साल के इतिहास की रचना की है, आज उन सब को बलाए ताक रख कर और अपने स्वयं के हित के लिए अपने राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए कुछ करने

पर उतारू हुए हैं।

हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई सारी दुनिया के देशों की आज़ादी की लड़ाई से भिन्न थी, हमारी आज़ादी की लड़ाई का कहीं कोई मेल नहीं है। कई मुल्कों ने गुलामी के खिलाफ जंग छेड़ी, कुछ जंग में जीते, कुछ हारे लेकिन जंग का तरीका एक ही था कि गुलामी करने वाला देश शक्ति और बल के आधार पर उस देश को अपने कब्जे में रखे था उसी शक्ति और बल के आधार पर ही उनसे छुटकारा पाने के लिए वह लड़ाई भी लड़ी गई। केवल हिन्दुस्तान ही एक ऐसा देश था जिसमें तलवार, बंदूक उठाकर नहीं अपने देश के अंदर एकता और उस एकता से उत्पन्न शक्ति का उपयोग करके ब्रिटिश हुकूमत जैसी एक साम्राज्यवादी ताकत से लोहा लिया। चाहे वह पंजाब की गदर पार्टी हो या तमिलनाडु के लोग हों, चाहे वह केरल के लोग हों, गुजरात के हों, सारे मुल्क में एक जुनून था उन लोगों का जो गुलामी के खिलाफ केवल लड़ना चाहते थे और परिणाम की परवाह नहीं करते थे। उस समय के कुछ नौजवानों ने उतावलेपन में यह भी फैसला किया कि वे उन शांतिपूर्ण लड़ाई के माध्यम से आगे नहीं बढ़ना चाहते थे। लेकिन दिल के अंदर सब की तमन्ना यह थी कि भारतमाता की गुलामी की जंजीरों को तोड़ा जाए।

शहीद सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस, अनेक ऐसे नाम हैं जिन्होंने अँग्रेजों से दूसरे तरीके से लड़ाई लड़ी। वे सब परिवार के ही सदस्य थे। लेकिन राष्ट्र के लिए जो सही और अच्छी बात है उसमें मतभेद हिन्दुस्तान में नहीं रहे। इसीलिए अँग्रेजों को घुटने टेकने पड़े, देश आजाद हुआ और हम और आप एक आजाद मुल्क में साँस ले रहे हैं। इसलिए खतरा जो आज पैदा हुआ है वह यह है कि अब देश के बारे में फैसला ऐसा हो मानकर कुछ लोग नहीं चलना चाहते हैं, वे अपने लिए फैसला कैसा हो उस आधार पर आगे बढ़ना चाहते हैं।

कुछ फिरकापरस्त लोग सब नियम, कानून, कायदे, संविधान, मर्यादा सब को लाँघ कर अंतिम लड़ाई लड़ना चाहते हैं कि किस प्रकार से देश की राजनीतिक सत्ता को हथियाया जाए। इससे मुकाबला अगर कोई करेगा वह देश के नौजवान ही करेंगे। सभी राजनीतिक पार्टियाँ जो इनके खिलाफ हैं अपने-अपने तरीके से कोशिश करेंगी। काँग्रेस भी उसी में जुटी हुई है। लेकिन जिसको आर-पार की लड़ाई कहते हैं वह देश के नौजवान ही लड़ेंगे। एक तो यह बात आपको समझ लेनी चाहिए और इसके लिए दो-तीन चीजें बहुत जरूरी हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि हम खतरे को पहले समझने की पूरी कोशिश करें। अगर खतरे को बिना समझे हुए हमने केवल सतही तौर पर, क्योंकि हम किसी पार्टी से जुड़े हुए हैं, किसी व्यक्ति से जुड़े हुए हैं इसलिए हम नारा लगाकर कुछ करना चाहते हैं यह लड़ाई आप कभी जीत नहीं सकते।

दूसरी बात जो जरूरी है वह एकता की है। मैदान में शक्ति एकता से बनती है। यह दुर्भाग्य की बात है कि कुछ लोग इस एकता के महत्त्व को नहीं समझते हुए कुछ ऐसी बातों का सहारा लेते हैं जिससे हम आपस में बँटते हैं। यदि हम इस लड़ाई में नहीं जीते तो कोई पार्टी, कोई नेता, कोई व्यक्ति की किस्मत दाँव पर नहीं लगी हुई है, इस वक्त देश की किस्मत दाँव पर लगी हुई है। तीसरी बात यह है हमें इस लड़ाई में अपना उद्देश्य दिखाना चाहिए। उद्देश्य एक ही है कि हम इस देश में ज़म्हूरियत की रक्षा कर सकें और डेमोक्रेसी ही हमारे देश में उन करोड़ों लोगों के लिए जो बेसहारा हैं, गरीब हैं, असहाय हैं, भूखे और नंगों में जिनकी गिनती होती है, उनकी रखवाली केवल डेमोक्रेसी में हो सकती है, अधिनायकवाद और फ़ासिज़्म के अंदर नहीं हो सकती और जिस दिन इस देश के गरीबों का विश्वास हमारी ज़म्हूरियत से उठ जाएगा देश के अंदर ज़म्हूरियत जिंदा नहीं रह सकती।

आज चारों तरफ देश में दंगे हो रहे हैं, किस लिए हो रहे है। इन बेगुनाह बच्चों ने, माताओं ने किसी का

कुछ बिगाड़ा नहीं है, लेकिन जो उनको मार रहे हैं, उनके घरों को जलाया जा रहा है, गरीबों की बस्तियों में आग लगा रहे हैं, उनकी एक ही मंशा है एक ही इरादा है कि यह करके वह सारे देश में दहशत फैलाते रहें ताकि उस दहशत के मारे गरीब फैसला लेने में हिचकिचाएँ। खड़े होने में हिचकिचाएँ तब उनको मौका मिले एक छत्र अपना राज कायम करने के लिए, अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिए और दूसरों पर रोब गालिब करने के लिए। यह है इसके पीछे मंशा। यह चीज आपको और हमको बदलना है। जय हिन्द।

राजीव गाँधी सच्चे देश भक्त थे

25 मई 1993 को लखनऊ में युवक काँग्रेस कार्यकर्तोओं के बीच भाषण के प्रमुख अंश —

उत्तरप्रदेश युवा काँग्रेस के अध्यक्ष, हर जिले से आए हुए युवा काँग्रेस के सम्मानित भाइयों और बहनों, आज हम राजीवजी की द्वितीय पुण्यतिथि पर यहाँ एकत्रित हुए हैं। सहसा विश्वास ही नहीं होता है कि राजीवजी हमारे बीच में अब नहीं हैं क्योंकि उनके प्रत्येक क्षण की गतिविधियाँ, कुछ छोटे से अंतराल में जब वह राष्ट्रीय रंगमंच पर विराजमान थे, ऐसी श्रुति की लकीरें बन गई हैं, जो हमारे, आपके जीवनकाल में तो मिटने का सवाल ही नहीं उठता, सदियों तक भारतीय मानस पटल से वह मिट नहीं सकतीं।

राजीवजी ने राजनैतिक क्षेत्र में कोई बहुत लंबा समय नहीं बिताया था, फिर क्या कारण है कि वह प्रतीक बन गए युवाओं की आशाओं के, आकाँक्षाओं के और युवाओं के आक्रोश के भी। जिन्होंने उन्हें अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के शताब्दी अधिवेशन में सुना होगा, उनका जो भाषण है जिसे मैंने अभी देखा, भाई विनोद चौधरी ने उस प्रस्ताव में शामिल किया है उसके कुछ अंश, जो आज यहाँ पर पास किया जाएगा, उसमें अकुलाहट थी, उसमें बेताबी थी, उसमें समर्पण की भावना थी और ऐसी विचारधाराओं को, ऐसे तत्वों को चुनौती देने का साहस था। जब हमारी राजनैतिक संरचना को अपने स्वार्थ के शिकंजों में कसकर रखना चाहते थे। यह बात अलग है कि उनकी स्पष्टवादिता ने उनके लिए भारत में बहुत से दुश्मन पैदा किए। जब वे अपना भाषण बना रहे थे तो सौभाग्यशालियों में मैं भी एक साधारण व्यक्ति था, जिससे उन्होंने उसके बारे मे प्रतिक्रिया ली थी भाषण देने के पूर्व। मैंने उनसे यह निवेदन किया था — आप तो इक्कीसवीं सदी में भारत को ले जाने की बात कर रहे हैं, कहीं ऐसा न हो कि आपकी इस मंशा को हम जैसे लोग समझ न सकें। और, यह भी मैंने शताब्दी सम्मेलन में उनकी अनुमति से भाषण देते हुए कहा था कि आज जो कुछ हमारे अध्यक्ष ने कहा, वह केवल हमारा अतीत नहीं है, अतीत का वर्तमान में दर्शन है और भविष्य को बनाने का संकल्प है। लेकिन, मैंने यह शंका जरूर पैदा की थी कि भाषण होने के बाद और यह अधिवेशन होने के बाद बहुत से लोग इस देश में राजीवजी के खिलाफ वातावरण बनाने के लिए, लग जाएँगे, जुट जाएँगे उनकी भावनाओं को दूषित करने के लिए, उनके मनोबल को असफल करने के लिए। क्योंकि एक-एक शब्द जो उन्होंने उस अधिवेशन में कहा था, अगर उस पर राजीवजी को अमल करने में कोई अड़चन हम लोग न डालते; जब मैं "हम सब" कहता हूँ तो मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहता हूँ, नाम लेने का कोई मतलब ही नहीं है क्योंकि हम सब बराबर उसके जिम्मेदार है; तो आज काँग्रेस का भी और भारत का भी नक्शा बदल गया होता। जो कुछ उनके साथ हुआ, जो कुछ उनके खिलाफ वातावरण झूठा बनाया गया, वह उनके उस भाषण की सत्यता की तीखी, प्रखर और निर्भीक वाणी का असर था। सत्ता के दलालों को उन्होंने ललकारा था। वे सब जुट गए। काँग्रेस पार्टी को जो अपनो हितों का साधन बनाए हुए लोग बैठे थे, उनको उन्होंने फटकारा था। वे सब उनके खिलाफ हो गए। सांप्रदायिक

शक्तियों को जो उन्होंने चेतावनी दी थी, आगाह किया था कि भारत के भविष्य से खिलवाड़ नहीं कर सकेंगे, वे उनके खिलाफ सब एक जुट हो गए।

यह जो निहित स्वार्थियों का गठबंधन बना, जिनका मैंने अभी आपसे जिक्र किया, कुछ राजनीतिक निहित स्वार्थी थे, कुछ आर्थिक निहित स्वार्थी थे और कुछ वैचारिक निहित स्वार्थी थे, जो कभी खुली हवा के सामने जिन्दा रहने की उम्मीद नहीं करते है। अकुलाहट होती है उनको उनका गठबंधन ही हमारे उस लाडले नेता के लिए बहुत बड़ी चुनौती बनी लेकिन आप देखिए, सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँचने के बाद पराजय की पीड़ा से ग्रसित इस देश के काँग्रेसजनों के सामने संकोच से भरे हुए, उन्होंने एक क्षण भी गफ़लत नहीं की और चुनाव में जो पराजय हुई 1989 में, काँग्रेस की, उसके लिए पूरी जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली। इतना ही नहीं उन्होंने मुश्किल से तीन मिनट का, प्रधान मंत्री पद से बिदाई लेते हुए, अंतिम एक भाषण उन्होंने टेलीविजन में दिया और जो समूचे राष्ट्र से उन्होंने अपने सही या गलत, गलतियों के लिए क्षमा माँगी। समूचा राष्ट्र उनकी इस महानता को पहचान गया कि जो व्यक्ति उँचाई के उच्चतम शिखर पर पहुँचकर भारत की जनता से माफ़ी माँग सकता है, वह सच्चा वफादार है, इस देश का वह सच्चा व्यक्ति है, जो देश की भलाई चाहता है और देश की भलाई करने मे हर चुनौती का सामना करना चाहता है। उसी निश्छलता और निर्भीकता की आज जरूरत है।

कितने लोग होंगे इस दुनिया में, जो माता के वियोग में बहने वाले आँसुओं को भी न पोछ सकें और सारे देश की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठा लें? यहाँ तो एक परिवार की जिम्मेदारी उठाने में अकुलाहट हो जाती है। जब परिवार का मुखिया, माता, पिता अपने से बिछुड़ते है तो क्या स्थिति होती है? लेकिन राजीव गाँधी ने वह करके दिखाया कि जो राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत था। वह अपने परिवारजनों से तो जुड़ा हो सकता है, लेकिन भारत से, भारतमाता से अपने को जोड़ने की शक्ति हरदम अपने बीच में रखता हो, ऐसे उदाहरण अगर हमें आधुनिक भारत के इतिहास में मिला है तो केवल श्री राजीव गाँधी में देखने को मिला है। युवकों को भारत के उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक युवक और युवतियों को जो उनका स्नेह और आशीर्वाद मिला है, आज वह स्नेह और आशीर्वाद आपको पुकार-पुकार कर आवाज दे रहा है कि जो विरासत राजीवजी हमारे और आपके लिए छोड़कर गए है, वह विरासत कोई मामूली विरासत नहीं है, कोई रुपये पैसे की विरासत नहीं है, धन दौलत की विरासत नहीं है। वह एक राष्ट्र की विरासत है। ऐसा राष्ट्र, जो अपने मूल्यों, आदर्शो और सिद्धांतों के सहारे हजारों साल के इतिहास की रचना की है, वह विरासत अगर आज के नौजवान सुरक्षित नहीं रख सकेंगे तो कैसे आने वाली पीढ़ी को एक और समृद्ध विरासत दी जाएगी? इस बात की चिंता, और इस बात की जिम्मेदारी आप सब निभाएँगे।

अलग-अलग शक्तिशाली राष्ट्रों ने भारत को अपनी तरफ मोड़ने की कोशिश की, कहीं शक्ति प्रदर्शन से तो कहीं धन के लालच से, कहीं मजबूर करके। हर वह कोशिश हुई कि भारत किसी न किसी का पिछलग्गू बन जाए, लेकिन ऐसा न तो पंडितजी ने होने दिया, न ऐसा श्री लालबहादुर शास्त्री ने होने दिया, न श्रीमती इंदिरा गाँधी ने होने दिया और श्री राजीव गाँधी ने भी नहीं होने दिया और मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि ऐसा आज का नेतृत्व भी नहीं होने देगा, चाहे कोई भी कुर्बानी इस देश को क्यों न उठानी पड़े।

अभी बात बहुत साधारण सी दिखती है, लेकिन संकेत ऐसे भी मिलते हैं। कहा जा रहा है कश्मीर में समूचे कश्मीर का भूभाग अभी विवादग्रस्त है। आप कल्पना करिए, जिस कश्मीर की घाटी और मैदानी हिस्से को भारत के अविभाजित अंग बनाकर रखने के लिए भारत के नौजवानों ने हजारों की संख्या में अपने खून से हिमालय के पर्वत को रंग दिया, आज 45 वर्ष बाद क्या कोई यह कह सकता है कि यह संदेह है कि यह कश्मीर भारत का अंग है

कि नहीं? इस बारे में अगर आज भी कोई संदेह पैदा करता है तो मेरे मत में वह भारत की मानसिकता को और भारत की, एक तरह से, गैरत को ललकारता है। हम कभी भी ऐसी बात को बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं। यह बात मामूली नहीं है। यह गहराई से सोचने की बात है। कोई भी मुल्क अपनी आज़ादी को, अपनी इज्ज़त को केवल उस वक्त तक सुरक्षित रख सकता है, जब तक वह कौम, वह देश अपने बीच में ऐसी शक्तियों को पनपने नहीं देता है जो हमारी एकता की भावना को किसी प्रकार से कमजोर करे।

नौजवानों के हाथों से ही क्राँतियाँ होती है। आज की क्राँति देश को आज़ाद कराने की नहीं है, आज की क्राँति भारत के भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए है। यह क्राँति भी उन्हीं नौजवानों की तरह हो, जिन्होंने आज से 50 वर्ष पूर्व महात्मा गाँधी के "करो या मरो" के नारे के तहत सब कुछ बलिदान करके हमारे राष्ट्र को आज़ाद कराया। आज का नौजवान इसी 'करो या मरो' की भावना से ही आज के भारत को सुरक्षित रखेगा, देश को सुरक्षित रखेगा, देश की एकता को बचाकर रखेगा और राजीवजी के सपनों को अपने जीवनकाल में ही साकार करने की कोशिश कर सफलता पाएगा। यही आज का संदेश है, यही आज क़ा हमारा संकल्प है और यही हमारे अपने उस लाड़ले नेता के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि है। जय हिन्द।

भारत के सामने चुनौतियाँ

21 अगस्त 1993 को कुरुक्षेत्र में श्री राजीव गाँधी की वर्षगाँठ के अवसर पर आयोजित समारोह में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश—

मैं बहुत आभारी हूँ डॉ. ओमप्रकाशजी का, और उन सब साथियों का जिन्होंने यहाँ पर आज हमारे उस महान नेता राजीव गाँधी की 50वीं वर्षगाँठ की शुरूआत में इस आयोजन को किया और मुझे इस योजना में बुलाकर अपने नेता के प्रति श्रद्धा के दो शब्द कहने का मौका दिया।

राजीव गाँधीजी की छवि उनका हँसता हुआ चेहरा, सब के प्रति उनका सद्भाव, स्वभाव और सबसे ज्यादा काँग्रेस के साथियों के प्रति उनके मन में अपार प्रेम, श्रद्धा और उनके सुख, दु:ख में भाग लेने की तमन्ना, यही एक नेता की सच्ची पहचान होती है। कोई भी नेता हर व्यक्ति को जो उसके साथ चलता है कुछ नहीं दे सकता है और ऐसी आशा करना भी किसी कार्यकर्ता के लिए उचित नहीं है। लेकिन हर कार्यकर्ता को अगर इस बात का एहसास और विश्वास बना रहे कि उसका नेता भले ही उसकी आँखों के सामने न हो, भले ही वह उससे रोज मुलाकात न कर सकता हो लेकिन अगर किसी आड़े दिन पर किसी मुसीबत के समय किसी आवश्यकता के समय वह उसके कंधे पर हाथ रखेगा तब कार्यकर्ता समर्पित होकर उसके पीछे चलेंगे। आज काँग्रेस पार्टी को सबसे ज्यादा जरूरत इस बात की है कि हम राजीव गाँधी को श्रद्धांजलि दें वह केवल एक औपचारिकता बनकर न रह जाए, एक जलसा और जुलूस करके उनकी तस्वीर को माला पहना कर और भाषणों से उनके प्रति आदर व्यक्त करके ही केवल राजीवजी जैसे नेता को श्रद्धांजलि नहीं दी जा सकती। अगर श्रद्धांजलि देनी है तो हम में से प्रत्येक अपनी सीमित शक्ति के मुताबिक, बुद्धि के मुताबिक, उनके उन गुणों का जिनका मैंने अभी वर्णन किया है उनको ग्रहण करने की कोशिश करे और जितना भी ग्रहण कर सकें उस पर अमल करने की कोशिश करें यह श्रद्धांजलि राजीवजी के प्रति सच्ची होगी।

अगर आप एक नजर उठा कर देखें हमारे देश के इतिहास के उन क्षणों की ओर जब श्री राजीवजी को एकाएक अचानक भारत की बागडोर उनके हाथों में सौंपी गई, रोमांस हो उठता है। बिल्कुल राजीवजी इच्छुक नहीं थे, राजनीति

में आने के। हम में से बहुत लोगों को यह निजी तजुर्बा है। संजयजी की मृत्यु के बाद हम में से बहुत लोगों ने जाकर उनसे यह निवेदन किया था कि काँग्रेस के लिए और विशेष कर श्रीमती इन्दिरा गाँधी की मदद के लिए आपको काँग्रेस के साथियों के बीच में आना चाहिए। उन्होंने 'नही', कभी नहीं कहा केवल मुस्करा कर, हम सब को वापस कर दिया। धीरे-धीरे इन्होंने इस बात को समझा कि जो कुछ हमसे कहा जा रहा है हजारों हजार देश के हर कोने से आने वाले लोग कह रहे है, इनके मन में और कुछ नहीं है केवल काँग्रेस के प्रति जो उनकी निष्ठा है, ममता है, श्रद्धा है, उसकी वजह से यह हमें ऐसी सलाह दे रहे हैं और फिर वह काँग्रेस में आए। लेकिन तब भी उन्होने हर दम यह कोशिश की कि वह एक साधारण कार्यकर्ता की हैसियत से हिन्दुस्तान का भ्रमण करके भारत दर्शन के बाद ही वे किसी सक्रिय पद पर काम करने को तैयार होंगे और ऐसा उन्होंने अपने कई भाषणों में कहा भी।

विधि का विधान कुछ और ही था। राष्ट्र माता श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या ने एक बहुत ही लोमहर्षक दर्दनाक परिस्थितियाँ निर्मित कर दी। वे तो दिल्ली में थे ही नहीं, वे अपने भारत दर्शन पर निकले हुए थे, बंगाल के किसी दूर के गाँव में उस दिन सभा कर रहे थे। जब उन्हें इस बात की सूचना दी गई कि श्रीमती इन्दिरा गाँधी पर हमला किया गया है और उन्हें तुरन्त वापस आना चाहिए। उन्होंने स्वयं हम लोगों को बताया कि रास्ते भर मैं पूछता रहा कि क्या स्थिति है, कैसी हालत है। लेकिन किसी ने सही-सही उनको यह खबर नहीं दी कि इन्दिराजी की हालत कैसी है। दिल्ली पहुँच कर सीधे अस्पताल में गए। वहाँ उनको इस बात की जानकारी हुई कि इन्दिराजी अब नहीं रहीं। ऐसे मौके पर क्या हालत होती है किसी परिवार के उस एक मात्र व्यक्ति की। वह विह्वल भी हो उठता है, खेद, दुःख और शोक से डूब जाता है। भविष्य के बारे में अनेक प्रश्न चिह्न दिखाई पड़ते हैं। यह हमारा और आपका तजुर्बा है। हम सब भी परिवारजन के लोग हैं और ऐसी घटनाएँ और ऐसा समय हम में से प्रत्येक ने झेला है। हम सब जानते है कि उन क्षणों में क्या होता है लेकिन राजीव गाँधी ने आँसू नहीं बहाए और अपने आँसू पोंछने के लिए उन्होंने किसी से रूमाल नहीं माँगा और जब शाम को राष्ट्रपतिजी ने उनको प्रधान मंत्री की शपथ दिलाई तो उनकी आवाज में कोई कम्पन नहीं था, कोई हिचकिचाहट नहीं थी और कोई शंका नहीं थी। भारत के ऐसे नौजवान के रूप में जो शाश्वत है, सदियों से जिसके हाथों में सदैव मशालें आती रही हैं और दूसरों के हाथों में जाती रही हैं ऐसे एक नौजवान के रूप में सारे भारत की जिम्मेदारी उन्होंने अपने कंधो पर उठाई। एक तरफ भारत की जिम्मेदारी कंधों पर और दूसरे कंधे पर माँ की अर्थी।

आज हिन्दुस्तान के प्रत्येक व्यक्ति को और खासतौर से नवयुवकों को यह समझना चाहिए चाहे अपना परिवार हो, चाहे अपना समाज हो, चाहे अपना प्रदेश हो, चाहे देश हो थके हुए पाँवों से सहमते दिलों से हम उनकी रक्षा नहीं कर सकते है। हमें वैसा ही हौसला जुटाना पड़ेगा, हमें वही साहस दिखाना पड़ेगा जो प्रेम से, करुणा से भर कर 30 जनवरी 1948 को महात्मा गाँधी ने दिखाया था। जो देश के प्रति पूर्ण समर्पित भावना से 31 अक्तूबर को श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने दिखाया था और 21 मई को हँसते-हँसते सब कुछ चढ़ा देने की तमन्ना से राजीव गाँधीजी ने उठाया। आज भारत को उस चीज की आवश्यकता है। यह मैं केवल औपचारिक रूप से नहीं कह रहा हूँ मुझे इस बात का पूरा आभास है कि मैं देश की, भारत की उस पुण्य और ऐतिहासिक भूमि पर खड़ा हूँ जहाँ पर सिंहासन के लिए ही नहीं, जमीन जायदाद के लिए ही नहीं, न्याय और धर्म की विजय के लिए महाभारत हुआ था। आज भारतमाता जुड़ी हुई है, आज देश के सामने इस प्रकार की चुनौतियाँ खड़ी कर दी गई हैं जिनको ध्यान में रखकर ही भगवान कृष्ण ने कहा था — जब-जब भारत पर संकट आएगा उस संकट को दूर करने के लिए मै अवतरित होता रहूँगा। आज भगवान कृष्ण के अवतार का इंतजार करने की जरूरत नहीं है।

आज भारत में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिख हो, ईसाई हो, किसी धर्म का मानने वाला हो, किसी जाति का हो, भारत के किसी कोने में रहता हो, वह सब भगवान कृष्ण के उस उपदेश के उत्तराधिकारी है। आज उनकी जिम्मेदारी है कि भारतमाता पर जो संकट है उस संकट को दूर करने के लिए आगे बढ़ें कुर्बानियों के लिए तैयार रहे ताकि भारतमाता की जो मुस्कान कोई भी शक्ति, कोई भी विचारधारा छीन न सके। अपनी माँ के लिए अगर हम ऐसा नहीं कर सकते तो फिर हमें अपने लिए कुछ माँगने का अधिकार नहीं है। आज प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ अपने लिए चाहता है, स्वाभाविक है, उससे एतराज नहीं किया जा सकता है। लेकिन पाने का हकदार तो तभी हो सकता है जब उसने माँ के लिए कुछ दिया हो। भारत की परम्परा तो यही रही है। उस परम्परा को हमें निभाना पड़ेगा।

जिन वेद वाक्यों में सारे विश्व को अपना कुटुम्ब कहने की बात कहने की हिम्मत की गई हो, जिस देश में दुनिया का कोई ऐसा धर्म न हो जिसको पनाह न मिली हो और इज्जत के साथ उसका यहाँ पर स्वागत न किया गया हो। दुनिया में हमारे मुल्क के सिवाय। ऐसा कोई मुल्क नहीं है जिसमें दुनिया के सारे धर्म हों। इसमें किसी न किसी रूप में उसको वरिष्ठता न मिली हो। भारतवर्ष में सारी दुनिया के सताए हुए लोग अपनी आस्थाओं और विश्वासों को समेटे हुए, किस्मत के मारे हुए, सब लोगो को भारतमाता की भूमि में शरण मिली। आज अनेकों धर्मों को मानने वाले लोग भारतमाता को अपनी माँ कहते हैं।

उस अन्नदाता किसान की जो परिस्थितियाँ हैं, जो उसके आज के विचार हैं, जो उसकी आज की कठिनाइयाँ हैं उसको दूर करने के लिए ही काम करना हमारा सबसे पहला कर्तव्य है। इन्हीं सब बातों की ओर राजीवजी ने हम सब का ध्यान अपने पाँच वर्षो के प्रधानमंत्रित्व काल में और उसके बाद काँग्रेस के एक महान नेता के रूप में हमारे और आपके सब का ध्यान आकर्षित किया था और उस कर्तव्य का पालन करने के लिए हमें प्रेरित किया था।

उन गाँवों में उन लोगों के हाथों में जो अपना भविष्य स्वयं निर्माण करना चाहते हैं पंचायती राज के माध्यम से ..... ग्रामीण लोगों के हाथ में अधिकार भी दिए और साथ ही साथ जवाहर रोजगार योजना के माध्यम से उनको साधन भी दिए ताकि वे अपने अधिकारों का उपयोग करके गाँव की तरक्की का काम कर सकें। उन्होंने देश में किसानों को और खुशहाल बनाने के लिए जहाँ एक ओर उनकी उपज का सही मूल्य दिलाने की कोशिश की, जैसे तिलहन हिन्दुस्तान के करोड़ों रुपये देकर आयात हुआ करता था उस तिलहन की उपज में हम 5 साल के अंदर पूरी तरह से अपने ऊपर निर्भर हो जाएँ यह मिशन 1988 में राजीव गाँधी ने चलाया था, जो 1993 में पूरी तरह से सफल हुआ है और जो तिलहन लगभग 15 सौ करोड़ रुपये का आयात हुआ करता था, वह अब भारतवर्ष आयात नहीं करता है। हम आत्मनिर्भर हो गए हैं।

यह ऐसा उदाहरण है जो स्पष्ट बताता हैं कि राजीव गाँधी का सपना जैसा वह कहा करते थे कि मैंने भी एक सपना देखा है भारत के लिए और इस सपने को पूरा करने के लिए हम कोशिश करेंगे। इन सपनों में बहुत बड़ा सपना था देश की साक्षरता का। 1988 में सारे हिन्दुस्तान के अंदर साक्षरता के अभियान को शुरु करने के लिए 30 मई को उन्होंने एक दीप जलाया था, एक लौ जलाई थी और यह संकल्प लिया था कि 20वीं शताब्दी के अंत तक हम सारे भारत से निरक्षरता को दूर करेंगे और हर वयस्क व्यक्ति को, महिला को, पुरुष को, बच्चों को हम पढ़ने लिखने लायक बना देंगे, साक्षर बना देंगे। आज यह अभियान सारे देश में जनता का अभियान बन चुका है।

ये सब बातें हैं जो हमें आज राजीवजी के जन्म दिन पर याद रखनी हैं और उन्हें याद करके उन्हें फिर से समर्पण की भावना से लगने की जरूरत है। और जो व्यवधान पैदा होते हैं, छोटी-बड़ी गड़बड़ियाँ पैदा होती हैं,

परेशानियाँ पैदा होती हैं उनका सामना करना है।

यह मैं आप से निवेदन करने आया हूँ। यह रास्ता कठिन है। यह रास्ता दिक्कत का है। इस रास्ते में बहुत सी बाधाएँ पड़ेंगी पर इन कठिनाइयों का हमें सामना करना पड़ेगा, उनसे जूझना पड़ेगा तभी भारतमाता को हम अपने उस लक्ष्य तक ले जा सकते है, जहाँ पहुँचाने का संकल्प भारत के लाखों स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने सब कुछ बलिदान करके लिया था। वह संकल्प पूरा हो यह राजीव गाँधीजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। आपके बीच में यह श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं बहुत गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ। आप सब को बहुत-बहुत धन्यवाद।

पंजाब की दर्द भरी कहानी

19 सितम्बर 1993 को दिल्ली में पंजाब के काँग्रेस कार्यकर्ताओं को सम्बोधन के प्रमुख अंश —

यहाँ पधारे हुए सभी आदरणीय साथियों, आपने इतनी दूर से चलकर यहाँ आने का कष्ट किया, सबसे पहले तो मैं आपको इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। आप पंजाब से आए हैं इसका और भी ज्यादा महत्त्व है क्योंकि पंजाब में ही काँग्रेस पार्टी ने सचमुच में एक संघर्ष किया है, लड़ाई की है। एक तरफ काँग्रेस के सिद्धांतों के लिए, उसूलों के लिए और दूसरी तरफ जो देश को चुनौतियाँ थीं उग्रवाद से, मिलिटेंसी से, फ़िरकापरस्त ताकतों से, ऐसी लड़ाई देश के और किसी सूबे में नहीं है। और न जाने कितने लोगों को बलिदान होना पड़ा। लेकिन अंततः आपका हौंसला, आपका विश्वास और काँग्रेस के प्रति आपकी वफादारी में वहाँ पर एक इतिहास का नया पन्ना जुड़ता है। यह पन्ना पुलिस ने नहीं बनाया, लेकिन यह पन्ना पलटा है आप सब के दिल की मजबूती ने, आप सब के विश्वास ने और देश के उन आदर्शों के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा ने।

जब आने वाली शताब्दियों में देश का इतिहास लिखा जाएगा उस बीच में पंजाब में जो कुछ हुआ है उसकी दर्द भरी कहानी भी लिखी जाएगी और इंसान के हौंसले की जुबानी भी लिखी जाएगी। उसमें काँग्रेस के छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं ने, नेताओं ने जो कुछ भी किया है, उसका भी एक सुनहरा पृष्ठ जुड़ेगा। उसके लिए मैं आप सब को बधाई देता हूँ। जहाँ तक आज के संदर्भ में देश के अंदर जो परिस्थितियाँ निर्मित हुई हैं, ये परिस्थितियाँ केवल इसलिए निर्मित हुई हैं क्योंकि कुछ सियासी ताकतों ने यह फैसला कर लिया है कि वह हर कीमत पर सत्ता में जाना चाहती है। प्रजातंत्र में सत्ता के लिए कोशिश करना, पावर के लिए कोशिश करना पार्लियामेंट में, असेम्बली में यह बिल्कुल जायज है इससे किसी को कोई एतराज नहीं है क्योंकि प्रजातंत्र में आखिरी फैसला तो जनता के हाथ में रहता है। लेकिन अगर यह कोशिश ऐसी हो जाए जो समाज को, देश को, पूरी कौम को खतरे में डालने वाली हो और उस खतरे को सामने खड़ा करके कोई कहे कि इसके बावजूद भी हम सत्ता की लड़ाई लड़ना चाहते हैं तो फिर देश के लोगों को यह सोचना पड़ेगा कि ऐसी ताकतों से हम किस प्रकार से सामना करें।

काँग्रेस पार्टी का सौ साल से ज्यादा का इतिहास इस बात का गवाह है कि जब-जब ऐसे मौके आए हैं तब-तब काँग्रेस पार्टी के अंदर से वह जज़्बा निखरा है; जिस जज़्बे के आधार पर हमने इतिहास को एक दूसरा मोड़ दिया है। आज ऐसा ही मौका है जब काँग्रेसजनों को देश की जनता के साथ जुड़ कर और संस्था को उनके नज़दीक ले जाकर उनको इस बात का विश्वास दिलाना है कि हम केवल एक राजनीतिक पार्टी के सदस्य नहीं है, हम केवल अपने लिए कुछ चाहते नहीं है, जनता को यह भरोसा दिलाना होगा कि काँग्रेस वही चाहती है जो देश का होता है। एक दफा यह विश्वास हम दिला सकें तो फिर काँग्रेस को कोई कमजोर नहीं कर सकता।

अभी हमारे एक भाई ने एक बहुत सीधी बात कही कि अगर काँग्रेस बिखरती है तो देश बिखरता है। जब इतनी मोटी बात हम सबके समझ में आ गई है तो चाहे कोई भी हो, कार्यकर्ता हो, नेता हो, कोई भी हो, यह बात सब को याद रखने की है कि हम में से किसी के द्वारा ऐसा कोई काम नहीं होना चाहिए जिससे काँग्रेस के अंदर किसी तरह का बिखराव पैदा हो। मतभेद होते हैं, नजर भी अलग-अलग होती हैं, एक डेमोक्रेटिक पार्टी में यह होता ही है। कम्युनिस्ट पार्टी के रीतिरिवाज तो काँग्रेस में है नहीं। आपस में बैठ कर चर्चा होती है, दूसरे के मत से सहमत होते है, सहमत नहीं होते हैं, फिर कोई फैसले होते हैं। इसलिए आज काँग्रेस की एकता को मजबूत करते हुए हमें काँग्रेस के सिद्धांतों के लिए हर तरह के संघर्ष के लिए तैयार रहना है और यह संघर्ष ही काँग्रेस को एक रख सकता है, काँग्रेस को मजबूत बना सकता है।

आज इस मौके पर हम इतनी ही आप से प्रार्थना करते हैं और आपने जो चुनावी संघर्ष में जगह-जगह जाकर अपने साथियों का हौसला बढ़ाने के लिए अपनी इच्छा जाहिर की है। मैं विभिन्न प्रदेश काँग्रेस के अध्यक्षों तक इस बात को पहुँचाऊँगा कि हमारे पंजाब के काँग्रेस के साथी इस लड़ाई में कंधे से कंधा मिलाकर हमारे साथ लड़ना चाहते हैं। आपको इस प्रकार का मौका मिला ताकि आप अपने जोश-खरोश को भी पार्टी के उन कार्यकर्ताओं के साथ जोड़ सकें जिन को मुख्य रूप से इस लड़ाई में उतरना है। मैं पुनः आप सब को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ। यह कहना चाहता हूँ कि अक्तूबर और नवम्बर तक तो शायद मेरे लिए संभव नहीं होगा लेकिन दिसम्बर में जैसे ही चुनाव पूरे हो जाते हैं मैं जरूर पंजाब में हाजिर रहूँगा। क्योंकि मैं यह कह सकता हूँ अपने 34 साल के अपने सार्वजनिक जीवन में जो 9-10 महीने मैंने पंजाब में बिताए उससे बढ़ कर मुझे कोई समय अच्छा नहीं लगा, यह मैं आप से कह सकता हूँ। इसलिए जब-जब मुझे वहाँ जाने का मौका लगता है तो ऐसा लगता है एक नई संजीवनी, एक नई प्रेरणा, एक नया जोश फिर से हमें आत्मसात करने का मौका मिलता है। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

काँग्रेस, अवाम से गलतियों के लिए माफी माँगे

4 नवम्बर 1993 को जयपुर की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश—

यहाँ पर विराजे हुए, नौज़वान साथियों, काँग्रेस पार्टी के आदरणीय साथियों, आज आपके सामने मुझे दो शब्द कहने का मौका मिला है और मैं आपके सामने चंद ऐसे मुद्दे रखना चाहता हूँ, जिसका सीधा संबंध हमारे देश की किस्मत से है। वैसे तो चुनाव हर पाँच साल में हुआ करते हैं, और उन चुनावों में बहुत से ऐसे मुद्दे विकास के होते हैं, जरूरतों के होते हैं लेकिन यह चुनाव कुछ उससे हटकर है। उससे हटकर इसलिए है कि इस चुनाव में हमें अपने स्थानीय मुद्दों पर विचार करना ही है, कोई भी क्षेत्र होगा अपने क्षेत्र की प्रगति की बात करेगा, विकास की बात करेगा, उस को आगे बढ़ाने की बात करेगा। लेकिन यह सब तो तभी होगा जब हमारी आज़ादी बरकरार रहेगी, हमारा मुल्क बरकरार रहेगा और इस देश में जम्हूरियत बरकरार रहेगी। यह कोई खुशी की बात नहीं है। हम सब को इस बात का बहुत अफ़सोस है कि हिन्दुस्तान के अंदर फिरकापरस्त ताकतों ने, पार्टियों ने ऐसा माहौल पैदा कर दिया है जहाँ इन सब चीजों के सामने प्रश्नचिह्न लग गया है।

देश को आज़ादी दिलाई, है मैं आप से यह नहीं कहता हूँ कि काँग्रेस से कोई गलतियाँ नहीं हुईं। मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ, हम से गलतियाँ हुई हैं। और उन गलतियों के लिए जहाँ स्टेज पर हमें उनको सुधारने के लिए

कोशिश करनी चाहिए वहीं आम जनता के सामने इस बात को तसलीम करना चाहिए कि गलतियाँ हुई हैं और अवाम जो ज़म्हूरियत में सबसे ऊँचा ओहदा रखता है उन गलतियों के लिए काँग्रेस को माफ करने को इज़ाजत लेनी चाहिए। अगर हमने ऐसा नहीं किया तो वातावरण सही नहीं होगा और वातावरण सही नहीं होगा तो उस गलत वातावरण में हमारा फैसला भी निश्चित ही गलत होगा।

आखिर जो अधिकार आज देश के करोड़ों मतदाताओं को मिला है वह अधिकार ज़म्हूरियत का अधिकार है, गरीब हो, मध्यम वर्ग हो, बड़ा हो, सब को समान अधिकार है। उस अधिकार का उपयोग करें। इस देश को चलाने का तौर-तरीका हम ने और आप सब ने मिल कर अपने संविधान में रखा है और उस संविधान को देश के कानून को अगर हमने नजरअंदाज करके चलने की बात की, जैसा कि भारतीय जनता पार्टी ने किया है, अगर हमने देश के गरीबों के हितों को, अल्पंख्यकों के हितों को, हरिजन अदिवासी और पिछड़े वर्ग के लोगों के हितों को नजरअंदाज करके आगे बढ़ने की कोशिश की जैसा कि भारतीय जनता पार्टी ने किया है, तो फिर हिन्दुस्तान का भविष्य अंधकारमय भविष्य में परिणत होगा। उसको रोकने का यह मौका है। इसलिए मैं आपसे दर्ख्वास्त करने आया हूँ कि इन सब चीजों को सोच समझ कर अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए आप काँग्रेस के चुनाव चिह्न पर निशान लगाकर भाई कालाजी को अपना समर्थन दें। आप के सेवक के रूप में एक कड़ी से बँधेंगे जो काँग्रेस की कड़ी है जो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक जुड़ी हुई है। वह कड़ी जितनी मजबूत होगी, देश के अंदर जम्हूरियत उतनी ही मजबूत होगी, देश की एकता मजबूत होगी, साम्प्रदायिकता के खिलाफ आवाज लगाने की ताकत मजबूत होगी। उस ताकत को अपने हित में इस्तेमाल करें। यह मेरी आप से प्रार्थना है। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकारवार्ता

समाज के कमजोर वर्ग को ध्यान में रखकर आर्थिक नीति बने

7 फरवरी, 1993 को कलकत्ता में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश —

Q: Most of the announcements come from Delhi. For us the outstation people it is very difficult to put it on the front page.

A: Well, I don't know, you can put it on the last page. What I thought I have written down in a small statement which I have not yet given anywhere. First have this, please publish it on Sunday. I was to come here for this Mahoatsava festival.

Q: What are the goings-on in Delhi?

A: Well, first go through it. In two minutes, I will let you know to the extent I can. Please correct the mistakes. It is done as a rough job.

Q: You say that the Congressmen are not happy about the way things are being run. And you also say that the Congress leadership have a tendency of backing out at the last moment.

A: With all due respect, I would not like to start whatever I have to say with commenting on whatever somebody else has said. I think that is not fair to me. What I have to say I have said in the statement which is the first statement that I have issued in recent times. And I have said very

clearly what I think is the need of the hour. The point is not a general commentary on Congressmen; the issue is that at this hour of time, Congressmen have to create determinedly that atmosphere which will enable the party to checkmate these forces which I have named in the statement. I am very confident that the Congress is capable of doing it.

Q: In your statement you have said that there is indecision and the vast majority of the Congressmen are confused about their role in the crisis that has overwhelmed the country. Do you think that there should be a change in leadership?

A: Well, I think if we can see whether this stops, and with the participation of Congressmen both in the discussions and ultimately in the plan of action, it is formulated in a manner which instils confidence that is what is needed. I have not said anything about the leadership.

Q: For supporting the line of action which you want the party to take up, in the present context you will have to focus on what happened in the country. The whole problem started with the tackling of the Ayodhya issue by Central Government. My question exactly was about the white paper and its contents.

A: I would like to make it very clear that so far as internal discussions at a meeting of the Cabinet are concerned, I will never like to violate that propriety which prohibits disclosure of that discussion and therefore, I would only say that time now is to involve Congressmen into the effort to strengthen the party and that we could not do it in the last 8 months, in my view, has led to or been instrumental in weakening of the party. Let us not continue with it. This is what I am saying.

Q: You say that the threat of fascist forces is great. Why is it that you don't have the support of most of the Congressmen, number one. Number two, don't you think that by dividing the party at this stage, you are only helping such elements?

A: Number one, I would not agree with your assessment that the rank and file or majority of the Congressmen are not interested in this battle. Number two, I think more, what I would call, a deeper understanding of the forces that fighting is necessary if we want to make this fight meaningful. I see no threat of division in the party. I would be the last person to lend myself to any effort which will divide the party. I have spent 35 years in this party as a humble and loyal Congressman and I would like to see my role in the future also in the same capacity.

Q: In the beginning of the conference, some people were complaining that you don't make any announcements in Calcutta. I want to know why are you making this announcement in Calcutta?

A: Because of that complaint.

Q: But you had completed the statement before you came here.

A: I prepared it when I came here. That is why the rush.

Q: Are you going to meet Mr. Jyoti Basu?

A: Yes, I am scheduled to.

Q: Then what is the agenda and what are the issues you are going to discuss with him?

A: Well, there are one or two departmental matters. Rest is what he wants to talk to me.

Q: In your fight against the fascist forces, while you have support of others, you are not sure of Mr. Basu's support. Could that be the possible reason?

A: No, no that has not anything to do. What decision they have taken is the decision they have taken on their own. In the last meeting of the Working Committee, If you remember on 24th December to be precise, this was also brought out that we must form a broad alliance with all the democratic and secular parties. This is a part of the Working Committee resolution. So if that matter comes up, I shall certainly discuss it because that is a party's decision. If it does not come up, I will not discuss.

Q: Some of the senior members of your party have asked for the AICC session, before the BJP rally on 25th. What do you think is the urgency of that?

A: You see, I have not made demand. What I have said is, some Congress AICC members feel that this meeting should be held before 25th so that we could discuss the possible strategy that the BJP might announce/declare on the 25th and start evolving our own strategy. This is the essence of what is behind my demand. And what I said was that this could be considered. There is nothing wrong in saying that. But if the working committee feels, no, the AICC has to be held in March, I see no harm in that.

Q: But you don't support the demand of others for resignation of the Prime Minister as party President.

A: Well, that is an issue on which I can only comment in a party forum, not publicly,

Q: Various demands have been raised in different quarters even to ban BJP. What is you opinion about that?

A: I am against the ban on any political party. A political party has to be fought politically. But it must be clearly understood that being a member of a political party does not invest anyone with a special privilege to act against or beyond the law and if anybody, to whatever party he may belong, breaks the law or violates the law, he should be taken care of according to the provisions of the law.

Q: When you are talking of a decision, you say that there should be a cogent discussion. You are possibly referring to a political decision. Is there any decision which is administrative and parallel?

A: The Congress party is a political party and the issues that we have to deal with are political issues. Therefore, our views have to be firmed up and a plan evolved to act in that respect. The administration will obviously follow that.

Q: No, the handling of that. For instance, the Bombay riots.

A: Well, I have already said in Bombay, which I have no hesitation in repeating it in Calcutta, that what we have seen in the Bombay riots is a ruthless execution of a plan by RSS, Shiv Sena and the BJP to brutalise and terrorise the people, thereby create such deep divisions in society which could make rational action and decision almost impossible. They feel only in that kind of atmosphere, their views and suggestions or the kind of polity that can not be acceptable. This is my view, it was then and it is still now.

So for as the handling part is concerned, I said that perhaps there were certain aspects which could have been done much better and there was some failure in that and which I think even the Chief Minister of Maharashtra feels that.

राष्ट्र निर्माण के कार्य में धर्म का उपयोग उचित नहीं

18 फरवरी, 1993 को बिलासपुर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश —

प्र.: साम्प्रदायिकता के खिलाफ वर्किंग कमेटी ने कुछ कदम उठाए हैं क्या?

उ.: वर्किंग कमेटी ने जिनको जिम्मेदारी दी है उन्होंने जो कदम उठाए है उनसे मैं पूरी तरह से सहमत हूँ। इसमें कोई पूछने की बात नहीं है।

प्र.: वैसे जो साम्प्रदायिकता के खिलाफ आप जो कर रहे है, वह क्या है?

उ.: प्रश्न इस वक्त, जैसा मैंने कल भी मीटिंग में कहा, शुरू में साम्प्रदायिकता का थोड़ा संकीर्ण अर्थ लगाया जाता था। जैसे कोई एक पार्टी उसका सहारा लेकर उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्यरत है। अब तो समूचे भारतीय राजनीतिक तंत्र को ही विकृत करने का अभियान चल रहा है। हमारे गणतंत्र की जितनी मान्य संस्थाएँ हैं, उन सब की साख को समाप्त करने का बहुत होशियारी से लेकिन सुनियोजित ढंग से प्रयास हुआ है। गणतंत्र में सर्वोच्च संस्था संसद होती हैं क्योंकि वह लोगों द्वारा चुनी हुई संस्था है। इसलिए उस संस्था की साख को भी समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। देश के संबंध में इस चुनी हुई संसद के निर्णायक मत को समाप्त करने के लिए भाजपा ने एक मनोनीत लोगों की संसद बनाई है, जिस को इन्होंने 'धर्म संसद' की संज्ञा दी है, जिसका कोई उत्तरदायित्व जनता के प्रति नहीं है, देश के प्रति नहीं है। वह फैसला करेंगे और वही फैसले देश को प्रभावित करेंगे। दूसरी संस्था केन्द्र में न्यायपालिका है। न्यायपालिका के बारे में क्या उनकी मान्यता है, क्या उनका आचरण है, इसमें मुझे कहने की जरूरत नहीं है। हर तरह से उसकी अवमानना करने की कोशिश वे कर रहे है और इसका तो एक ही सबसे बड़ा प्रमाण है कि सर्वोच्च न्यायालय ने भाजपा के मुख्यमंत्री को ही उस अदालत की अवमानना के संबंध में नोटिस दे रखा है। उसका क्या फैसला होगा वह अदालत ही जाने।

नोटिस वापस लेंगे?

प्र. देखिए अदालत क्या फैसला करेगी यह तो मै नहीं कह सकता हूँ लेकिन आज की स्थिति यह है कि अदालत

उ. और सर्वोच्च न्यायालय की अवमानना का नोटिस उनको दिया जाएगा। इससे यह परिलक्षित होता है कि अदालत के बारे में उस पार्टी का क्या दृष्टिकोण है केवल उस संदर्भ में इस बात को कह रहा हूँ। फिर रहा प्रजातंत्र की अन्य जो विधाएँ है। उसके मूल में है चुनाव पद्धति। क्योंकि चुनाव पद्धति ही प्रजातंत्र की शुरुआत करती है। वह नियम, कानून और कायदों से परिभाषित है। उन सभी नियम, कानून कायदों को बीजेपी पूरी तरह से उल्लंघन करके चुनाव में शामिल होती आई है और उसका लाभ लेती रही है। भले ही बाद में कई हाई कोर्ट के निर्णयों से उस आधार पर चुने हुए लोगों को उनका चुनाव रद्द किया जाता रहा है।

प्र. भाजपा ने एक सवाल उठाया था कि सब के लिए एक जैसा कानून होना चाहिए लेकिन इन्कमटेक्स की तरह हिन्दू अनडिवाइडेड फेमिली को दूसरी कम्युनिटीज़ की तरह से स्पेशल बेनिफिट मिलता है, इस बारे में आप कुछ कहना चाहते हैं?

उ. हर विषय को विवाद का विषय बनाना मैं उचित नहीं समझता। इसमें दो राय हो सकती हैं कि भारत में अलग-अलग प्रकार के रीति रिवाज़, कानून अपने-अपने संदर्भों में अभी तक चलते आए हैं। एक कानून बने यह तो हमारा उद्देश्य हो सकता है, वहाँ कैसे पहुँचेंगे इसमें कोई ज़ल्दबाज़ी करने की जरूरत नहीं है। सब को साथ में लेकर फैसला होना चाहिए ताकि उस फैसले को सब मान्य करें। यह विवाद का विषय नहीं बनना चाहिए।

प्र. हिन्दुओं को नाराज किए बगैर मुसलमानों को कैसे साथ रखा जा सकता हैं?

उ. यह मानसिकता ही आज की सब परेशानियों की जड़ है। जो इस प्रकार की सोच दिमाग में रखते हैं वह शायद भारत की तस्वीर को समझ नहीं पाए हैं। भारत हिन्दू-मुसलमानों का नहीं है, भारतीयों का है।

प्र. कश्मीर में धारा 370 को रद्द करने की माँग करते हैं। सिमिलर कानून हिमाचल प्रदेश में है, जो हिन्दू बहुल क्षेत्र है, या मध्यप्रदेश में है जो आदिवासी बहुल क्षेत्र है इस बारे में पटवाजी ने कुछ नहीं किया। इस पर आप कुछ बोलेंगे?

उ. मैं इसलिए कह रहा हूँ ऐसे मुद्दों को, विवाद को इस समय उभारना शायद उचित नहीं है। अपनी-अपनी जगह हर एक का औचित्य है और उस औचित्य को नकारने का और इन सब चीजों को कहने का यह मौका नहीं है।

प्र. आप क्या मानते हैं जो कट्टरता है, धर्मान्धता है उनका मुकाबला धार्मिक तरीके से किया जा सकता है। जैसे आप अश्वमेघ यज्ञ में शामिल हुए। अश्वमेघ यज्ञ का जो आयोजन था उसमें शामिल होना चाह रहे हैं तो धर्मान्धता का मुकाबला क्या धार्मिक तरीके से होगा?

उ. धार्मिक तरीके से नहीं। धर्म को समझ कर, धर्म की व्याख्या और धर्म का उपयोग राजनीतिक उद्देश्यों के लिए तोड़-मरोड़ कर किया जाता है। वह धर्म का रास्ता है ही नहीं। हम अगर किसी धर्म से जुड़े हैं तो हमें उसमें लज्जित होने का क्या सवाल है। लेकिन हम उस धर्म के सही मूल्यों को समझने की कोशिश करें। जो धर्म व्यक्ति को सामाजिक आचरण में सही दिशा में ले जाने में सहायक हो, अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को सही ढंग से पालन करने में हमें मदद करे वही सही धर्म है। जहाँ तक यज्ञ में शामिल होने का सवाल है वह इसलिए शिरोधार्य हैं क्योंकि वह हमारे देश के एक अत्यंत प्रतिष्ठित और बहुत ही तेजस्वी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आचार्य श्री श्री राम शर्मा जी की संस्था द्वारा आयोजित था।, उनकी यह कल्पना थी कि राष्ट्र

के निर्माण के लिए धर्म का उपयोग कैसे हो यह उसकी पृष्ठभूमि है। मैं नहीं समझता इसमें कोई त्रुटि मैं कर रहा हूँ। मेरा अपना फैसला है। राष्ट्र निर्माण में यदि धार्मिक भावनाओं का उपयोग होता है और उनसे प्रेरित होकर अपनी सही जिम्मेदारी निभा सकें तो निभानी चाहिए।

प्र. जहाँ तक अश्वमेघ यज्ञ की बात है वह किसी एक सफलता के बाद पूर्ण सफलता के लिए किया जाता है।

उ. आप ही लोगों ने जो छापा है उसे पढ़ लीजिए। अश्वमेघ यज्ञ का वह मतलब नहीं जो पुराने राजा-महाराजा करते थे। इसी वजह से मै आपसे एक बात कहना चाहता हूँ कि सही दिशा में बढ़ती हुई धार्मिक प्रवृत्तियों को जब गलत तरीके से समझा जाता है तब ऐसे लोगों को प्रोत्साहन मिलता है जो धर्म के सही सिद्धांतों को भ्रष्ट करके अपने राजनीतिक हितों के लिए इस्तेमाल करते हैं क्योंकि वह समझते हैं सही दिशा में कोई जाना नही चाहता, उस दिशा में बढ़ना नहीं चाहते। यह भी उसका एक पहलू है।

प्र. अन्नाद्रमुक गठबंधन वास्तव में टूटा है या तोड़ने की धमकियाँ हैं?

उ. मै कोई भविष्यवक्ता तो हूँ नहीं लेकिन जो कुछ वहाँ परेशानियाँ पैदा हुई हैं उनको दूर करने की हर चंद कोशिश कर रहा हूँ। क्योंकि व्यापक हित में इस वक्त जो समझौता अन्नाद्रमुक का काँग्रेस से है उसे बरकरार रहना चाहिए।

प्र. मध्यप्रदेश मे राष्ट्रपति शासन के बाद क्या स्थिति है? क्या इससे बदलाव आएगा?

उ. अब स्थिति स्पष्ट है। आप लोग सब जगह देख रहे हैं वह अपनी जगह है और मैं समझता हूँ गवर्नर साहब काफी कोशिश कर रहे हैं। इस संदर्भ में जो विकृतियाँ पैदा हो गई थीं पिछलें दो ढाई सालों में उनको दूर करने का और खासतौर से जो गरीबी हटाने के कार्यक्रम है यह मैंने कल अपने भाषण में कहा भी है कि राष्ट्रपति शासन के लिए यह बहुत बड़ी कसौटी है। जो इस प्रदेश में श्रीमती इन्दिरा गाँधी, श्री राजीवजी और काँग्रेस ने गरीबों के संबंध में जो कुछ कार्यक्रम चलाए थे और उन कार्यक्रमों को पूरी तरह ध्वस्त करने के लिए जो भारतीय जनता पार्टी ने प्रयास किए थे उनके संदर्भ में सही कदम उठाए जाने चाहिए, तीन इसमें मुख्य हैं। आदिवासी अंचलों में शराब के ठेकेदारों का प्रवेश बंद कर दिया गया। दूसरा है तेंदू पत्ते के संबंध में जो नीति बनाई थी उसका सीधा लाभ इस प्रदेश के लगभग 30 लाख लोगों को, गरीब मजदूरों को नहीं मिल रहा है। मिला भी कुछ को तो उसमें 113 करोड़ बाकी है, वह उनको बटना चाहिये। साथ ही मार्च के अंत में अप्रैल के शुरू में नया सीजन शुरू हो रहा है तेंदू पत्ते का उसके पहले जो नीतियाँ निर्धारित की गई हैं उनमें जो अपवाद पैदा कर दिए गए हैं, विकृतियाँ आ गई हैं उनको सुधार कर ही पुरानी नीति के अनुसार इस नए सीजन में काम होने चाहिए।

तीसरी बात समाज का एक बहुत कमज़ोर वर्ग है जिन को हम मछुआरे कहते हैं। सारे प्रदेश में लाखों की संख्या में है और ये पूरी तरह से शोषित होते थे बड़े-बड़े ठेकेदारों से। बहुत ही कम कीमत पर उनसे मछलियाँ खरीद कर कलकत्ता और बम्बई भेज कर करोड़ों रुपये की कमाई करते थे। यहाँ भी यह फैसला किया गया था चाहे वह तालाब हो, चाहे नदी हो, मछुआरों की ही समितियों को, को-आपरेटिव सोसाइटी को मछली मारने का अधिकार दिया जाएगा, ठेकेदारों को वहाँ से अलग किया जाएगा। देखने में यह मिला कि इन ढाई सालों में इन सोसाइटियों का कहीं पता नहीं है, हर जगह ठेकेदार आ गए, ऐसे लोग आ गए जो कभी मछली का धंधा करते नहीं थे। क्योंकि उसमें आमदनी ज्यादा है इसलिए घुस आए उसमें। मुझे मालूम नहीं आपके जिले में क्या हाल है। आप लोग ज्यादा जानते होंगे लेकिन पूरे प्रदेश में यही हाल है।

प्र. अशोक सिंहल जी ने आपको राजनीति से सन्यास लेने की सलाह दी?

यह नौबत तो नहीं आएगी कि मैं सिंहलजी की सलाह मानूँ।

25 तारीख की रैली है इसको रोकने के लिए केन्द्रीय शासन क्या-क्या तैयारी कर रही है?

देखिए, जिनको जिम्मेदारी दी गई है वह पूरी कोशिश कर रहे हैं। मैं उसमें अलग से क्या व्याख्या करूँ।

फैसला तो मंत्रिमंडल ने दिया, जैसा मैंने कहा सभी संदर्भों को देखकर किया गया।

धर्मनिरपेक्षता भारत के जन-जन में व्याप्त है

3, मार्च 1993 को पायनियर के श्री कुलदीप कुमार के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Q: What is the effect of banning the BJP rally?

A: I think the successful implementation of the ban has sent one message very clearly that the exercise in which the BJP wanted to go into could not succeed, number one, and that it did not generate that kind of feeling of what you call opposition, or that kind of reaction that something had been done which was not right. The public cooperation part was also lacking. So everything taken together sends a clear message that the common people of India want peace and stability and they don't want factional issues to be brought at the centre of the national political agenda.

Q: Do you think it will be wise to hold elections say after 6 months?

A: I think on the election point, there is still some time to consider it. It is too early to assess even that.

Q: On question of secularism, sometimes we unconsciously inherit certain viewpoints and sometimes we make a conscious effort to arrive at certain conclusions. Did you inherit it in your adolescent years or childhood, or because of the situation prevailing in the 50's in the country, you make a conscious attempt to.....

A: You see, after I become mature I was conscious of my surroundings just after the age of say 20, normally, the perception naturally is sinking, but this did not start then. Even when I was in my teens..... the partition of India took place when I was seventeen ---- and before that also, in my upbringing, in my education and my surroundings in the family, there was total catholic outlook about all the major religions. As private tutors or guardians, we had a Muslim, we had a Hindu and we had a Christian.

Q: The assessment nowadays is that the BJP is on the road to power. What is the real position?

A: I don't think it is straight on the road to power. But you must accept one thing that even though it has been achieved in a most unscrupulous and improper manner, they have been able to acquire a certain edge in the political battle. It is an edge which can be very easily blunted provided we take up the challenge in real earnest. So I don't think that they have got everything made out, No, it is not correct.

Q: So far you have been to various places, you have held so many posts in the party as well as in the Government. What kind of assignment gave you the most satisfaction?

A: When I was the leader of opposition in Madhya Pradesh from 1977 to 1980. If you ask me what I would like to relive though it is not possible to relive the past. But it was something which was both a challenge and an opportunity and because I was able to see many things at close quarters and when the party came back to power in 1980, I think most of the things that we could do under the guidance of Mrs. Gandhi were because of this experience between 1977 to 1980.

Q: I am told that you read a lot. What kind of books do you really enjoy most?

A: Political biographies and now of course I am trying to catch up on the Economics because I was an economics student in my graduation but sometimes what I learnt in 1948 to 1950 is no longer relevant; so I am trying to catch up. And some of these books by Toffner, the latest is that "Power Shift." It has some very interesting and intriguing theories that the present world situation is facilitating a real power shift not only between parties but between generations and ideas and many of the basic premises are being challenged and where people will stand at some given point of time may decide what the world may be like in the future. These are the things which, stimulate thinking.

हमें साम्प्रदायवाद के खिलाफ लड़ना है

30 मार्च, 1993 को न्यूज़ट्रेक के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Q: Mr. Singh, it is being repeated that you are pursued advocating, fighting with the B.J.P. in handling policy against the B.J.P. Is it the policy of Congress party in general?

Shri Arjunsingh : Well, I am not doing anything special and this impression I think what I may call created by some people who want to make some other inference by that impression. The fight against communalism, fundamentalism have always been the basic policy of the Congress party and in Tirupati this was reiterated in a very forceful manner and that is definitely programme of the party. All I am saying just we must go ahead for it.

Q: Are you fully satisfied with the way the Govt. has been tacking all the issues including communalism so far, Would you like hardline to be taken?

Shri Arjunsingh : You see, hard or soft is not the point. The point is that we should be aware of their designs fully and you should also be taking into account. In that position that they have been doing all the time. At the same time certain fundamental

things must be decided about propaganda in which they are indulging how to counter that and the basic precepts of separatism should not become sort of just anti-thinking you must be able to translate the correct meaning of separatism to the people.

Q: What were your goals at the A.I.C.C. meeting?

Shri Arjunsingh : My goal was simply this that after effect of the demolition of the Babri Masjid that divide, that is being sort to be created in the Babri politics of the country, Congress must address itself to that and it must come out very categorically. Yes, we were betrayed O.K. But now we have to take them on such a manner that country is not betrayed second time and I think that exhibition it has come in Surajkund is very much on those lines and I am fully satisfied.

Q: What is your own personal impression about the dissident activity was seen in the Congress because many people have seen that this time the country is facing a difficult time?

Shri Arjunsingh : Well, I don't think it is very healthy thing to happen. But I feel it could have been avoided also within a few more responsiveness shown on our sides.

Q: What is your future, action plan?

Shri Arjunsingh : I think very detailed resolution has been passed. I am sure something more specific will be spelled out. At the moment we have to sort out a very determine programme to implement that policy. This is what I am going to do.

सामाजिक क्रांति लाना है

20 अप्रैल, 1993 को राजस्थान पत्रिका के श्री गोपाल शर्मा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

श्री गोपाल शर्मा: कौन से संकट आपको ज्यादा गंभीर लगते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, संकट तो दोनों हैं, लेकिन हर संकट जो अंदर से होता है उसके परिणाम ज्यादा खराब रहते हैं। इसलिए इस संकट को प्राथमिकता देने के लिए प्रत्येक विवेकशील नागरिक क़ा कर्तव्य है।

बाहर के जो संकट हैं, उनका स्वरूप काफी समझ में आता है और पहचान भी आसानी से हो सकती है इसलिए कुछ हद तक इसका मुकाबला करने में सहूलियत होती है, यह स्थिति है।

श्री गोपाल शर्मा: आंतरिक संकट के रूप में आप किन-किन लोगों को देखते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: एक तो यह जो साम्प्रदायिकता का माहौल बन रहा है, इस समय तो सबसे बड़ा यही संकट है। इस संकट का जो एक पहलू है वह ज्यादा नजर अंदाज़ हो जाता है, कि जब इसके इर्द-गिर्द संकीर्ण राजनीति घूमने लगती है, तो अंततः इसका नुकसान सबसे ज्यादा समाज के कमजोर वर्गों को उठाना पड़ता है। क्योंकि भारत जैसे देश में जो विकासशील है, विकास कर रहा है, फिर भी बहुत

से अभावों से ग्रस्त है और वे अभाव सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं समाज के कमजोर वर्गों को। उन अभावों को दूर करने के लिए जो श्रम-समय और शक्ति, की आवश्यकता है उसका उपयोग कहीं और होने लगे तो फिर सफर उन्हीं को करना पड़ेगा। जब यह स्थिति बनेगी और इन लोगों की समस्याएँ और जटिल होती जाएँगी धीरे-धीरे इन का विश्वास प्रजातांत्रिक प्रणाली मे हटता चला जाएगा।

देखिए, इन पैंतालीस वर्षों में यह कोई नहीं कह सकता कि जो कुछ होना चाहिए था, वह सब कुछ हो गया और हर एक गरीब के आँसू पोंछ दिए गए हैं। अगर यह कोई दावा करे तो बिल्कुल अतिशयोक्ति होगी, लेकिन इन गरीबों को इस बात का भरोसा होता रहे, इसी पद्धति में हमारा भला हो सकता है और धीरे-धीरे होता चला जा रहा है। जिस दिन उनका यह भरोसा हट जाएगा वह प्रजातंत्र के लिए बहुत बुरा दिन होगा।

श्री गोपाल शर्मा: सामाजिक समरसता की जिम्मेदारी तो मुख्य रूप से आपके ऊपर ही है। आपके ऊपर यानी काँग्रेस पार्टी के ऊपर है।

श्री अर्जुनसिंह: क्यों नहीं है, जरूर है जिम्मेदारी। यह मैं नहीं कहता कि जिम्मेदारी नहीं है, लेकिन काँग्रेस के ऊपर अकेले नहीं है। देखिए सामाजिक समरसता किसी शून्य में तो बनती नहीं, वातावरण के अंदर बनती है और वो वातावरण पैदा करने में सब का हाथ होता है। कोई भी पोलीटिकल पार्टी क्यों न हो, अगर वो इसको महत्व देगी तो किसी न किसी हद तक सहायक होगी। अगर कोई पालीटिकल पार्टी इसको महत्व नहीं देगी, केवल जाति या धार्मिक आधारों पर ही पालीटिक्स को चलाना चाहेगी उस हद तक उन वर्गों के अंदर यह भावना उठेगी कि इनको इससे मतलब नहीं है। इनको केवल एक दूसरी चीज से मतलब है, जो कि हमारा समर्थन चाहिए।

श्री गोपाल शर्मा: आप काँग्रेस के उपाध्यक्ष रहे हैं। कमलापति त्रिपाठी उस समय कार्यकारी अध्यक्ष थे, लोगों को यह लगा कि काँग्रेस का पूरा संचालन राजीव जी ने आप के ऊपर छोड़ दिया है। उस स्थिति में आपस में तालमेल नहीं बैठ पाया, कमलापति जी को त्यागपत्र देना पड़ा, आपको हारना पड़ा। ऐसी स्थितियाँ जब कि ताजा ताजा सामने आई हैं यह नहीं लगता कि काँग्रेस में केन्द्रित व्यवस्था रहने के, कार्यकर्ता सब आदी हो गए हैं?

श्री अर्जुनसिंह: कुछ हद तक आपकी बात सही है। कुछ लोग इसमें अच्छाई देखते हैं। कुछ लोग इसमें पूरी तरह से अच्छाई नहीं देखते। मैं उनमें से हूँ जो इसमें पूरी तरह से अच्छाई नहीं देखता। केन्द्रित अधिकार होने चाहिए, इसमें कोई दो राय नहीं है, लेकिन उस अधिकार के प्रयोग में जो विचार शब्द आए हैं, वो केन्द्रित नहीं होने चाहिए।

श्री गोपाल शर्मा: मंत्रिमंडल में रह कर के आप को नम्बर दो माना जाता था और समय-समय आप जो विचार भी व्यक्त करते थे वह बहुमत का निर्णय माना जाता था। तो आपका यह मानना था कि बहुमत अगर किसी बात को कहता है तो उसको हमेशा मानते रहेंगे।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, बहुमत मानने की बात तो प्रजातंत्र की आधारशिला है। आधारशिला को आप रोज तोड़ते रहेंगे तो एक दिन तो वो समाप्त ही हो जाएगी, लेकिन अगर, कभी कोई ऐसा मौका आए जब भी बहुमत का निर्णय आपको बिल्कुल ही मानने में दिक्कत आए तो व्यक्ति तो स्वतंत्र रहता ही है। लेकिन ऐसे अवसर नहीं आएँ तो ही अच्छा है और बहुत ही कम आने चाहिए।

श्री गोपाल शर्मा: आप से जुड़ी निजी बात यह है कि आपको बहुत समाचार पत्रों में 'शातिर और घाघ' राज नेता के रूप में पूरे देश में मान्यता मिली हुई है, तो फिर आप इतने योजनाबद्ध रूप से धीरे-धीरे जिस तरह से बात कहते हैं इससे आपके मन में कहीं पर चोट होती होगी और मन कचोटता भी होगा। क्या आपको खुलकर के बात नहीं कहनी चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, अपनी बात जो मैं कहना चाहता हूँ, वो मैं कभी दबाकर नहीं कहता और जब नहीं कहना चाहता हूँ तो मुझसे कोई कहलवा भी नहीं सकता। क्योंकि बहुत सी बातें हैं, जो आदमी को नहीं कहना चाहिए। लेकिन जो मैं समझता हूँ जो कहना चाहिए, उसमें तो मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि कोई रोक सकता है, या किसी ने रोका भी नहीं।

श्री गोपाल शर्मा: मुस्लिम मुसाफिर सभा में जो कुछ भी आपने कहा कि 6 दिसम्बर की घटना के लिए हम लोग माफी माँगते हैं। आपको कहने की ऐसी आवश्यकता क्यों पड़ी?

श्री अर्जुनसिंह: इसलिए पड़ी कि एक ऐसी घटना अप्रत्याशित ढंग से घटी और हमारी हर चंद कोशिश के बावजूद वो घटी, यह ठीक है कि बी.जे.पी. के और आर.एस.एस. के लोगों ने धोखा दिया हमें, सरकार को दिया, प्रधानमंत्री को दिया। बात अपनी जगह सही है, लेकिन वो तो हुआ। अब लोगों को हम लम्बी चौड़ी बात समझा पाएँगे कि नहीं, ये पता नहीं। लोगों के मन में इस वक्त आवश्यकता इस बात की है कि रोष और द्वेष दोनों कम होना चाहिए। उसके रहते देश की भलाई नहीं है। चाहे वो किसी धर्म को मानने वाले लोग, हों। इस पर काबू पाना ही, सामान्य स्थिति लाना ही, सबसे पहली आवश्यकता है।

श्री गोपाल शर्मा: तो माफी माँगने की बात तो तब आती है जब आपकी उसमें जिम्मेदारी होती?

श्री अर्जुनसिंह: जिम्मेदारी तो सरकार की कैसे नहीं है? मैं तो शुरू से कहते आया हूँ। उसी वक्त मैंने कहा था कि सरकार पूरी तरह से अपनी जिम्मेदारी से पल्ला कैसे झाड़ सकती है? परिस्थितियाँ ऐसी रहीं कि चाहने के बावजूद भी हम रोक नहीं सके। हमें धोखा दिया गया। अपनी जगह सब सही है लेकिन सरकार पूरी तरह से कहे कि हम से कोई वास्ता नहीं है, यह तो हो नहीं सकता।

श्री गोपाल शर्मा: क्या देश की नई आर्थिक नीतियों से गरीबों को कोई दिक्कत आपके हिसाब से नहीं होगी?

श्री अर्जुनसिंह: दिक्कत होगी और हुई भी है। वो दिक्कत उनको होगी आज कोई नहीं कह सकता कि कोई दिक्कत गरीबों को नहीं होगी लेकिन कम से कम प्रभाव उनके ऊपर पड़ेगा। यह देखना जरूर शासन का काम है, कि उनके ऊपर कम प्रभाव पड़े।

श्री गोपाल शर्मा: शेयर घोटाले में कुछ लोगों को अलग रखने की बातचीत सामने आई है। जैसे हर्षद मेहता, हितेन्द्र दलाल, इन लोगों का तो नाम आ रहा है और दूसरी तरफ शाह, अंबानी बगैरह को अलग रखा जा रहा है।

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो अखबार में जिनके नाम पढ़ता हूँ कौन कहाँ रखा जा रहा है ये तो हमारी जे.पी.सी. जाने और मिर्धा साहब हमारे बहुत बड़े श्रद्धा के पात्र हैं वे उसके अध्यक्ष हैं, सभी संसद सदस्य, उसमे जो शामिल हैं, बहुत ही गंभीरता से विचार विनिमय कर रहे है और उस पर मैं अलग से टिप्पणी करूँ यह कतई उचित नहीं है। रिपोर्ट जब आएगी उस वक्त बात जरूर कही जा सकती है।

श्री गोपाल शर्मा: एक चीज आप यह बताइए कि अमेरिका में बाईबल के नाम से शपथ लेते है और ब्रिटेन के महारानी

चर्च के नाम पर वहाँ शासन के अध्यक्ष हैं और भारत के जड़-जड़ में धर्म घुसा हुआ है। ऐसी स्थिति में धर्म को राजनीति से अलग करने की आप कैसे सोचते हैं।

श्री अर्जुनसिंह: धर्म को, मैंने ईश्वर के नाम से शपथ ली है।

श्री गोपाल शर्मा: जी।

श्री अर्जनसिंह: राष्ट्रपति ने भी ईश्वर के नाम से शपथ ली है, लेकिन इस प्रकार से धर्म हमसे दूर नहीं है। सवाल यह है कि धर्म का इस्तेमाल कैसे होता है?

श्री गोपाल शर्मा: हाँ, बिल्कुल।

श्री अर्जुनसिंह: मैं कह रहा हूँ धर्म का उपयोग राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए नहीं किया जाना चाहिए यह न ब्रिटेन में होता है और न अमेरिका में।

श्री गोपाल शर्मा: क्या धर्म की बात करना गलत है?

श्री अर्जनसिंह: धर्म तो गलत नहीं है। मैं हिन्दू हूँ। मैं तो गौरव मानता हूँ अपने लिए हिन्दू होना और हिन्दू के नाते मेरे जो कर्तव्य हैं धर्म के, धार्मिक क्षेत्र में उन कर्तव्यों का मैं निर्वहन करता हूँ। उसमें मुझे कहीं भी कोई दिक्कत नहीं होती। लेकिन एक दफे किसी ऐसे पद पर मैं आ जाऊँ जो हमारे संविधान के द्वारा प्रदत्त पद है, उस पद पर हमारा जो आचरण होना चाहिए, वो आचरण मैं न हिन्दू के नाते करूँगा, न ईसाई के नाते करूँगा, वह आचरण शुद्धतः संविधान की परिधि में जो जिम्मेदारी हम को दी गई है, उसके अनुरूप होना चाहिए।

अब अगर मैं यह कह दूँ कि नहीं, हिन्दुओं की बात मैं ज्यादा महत्वूपर्ण मानूँगा या मुसलमानों की ज्यादा महत्वपूर्ण मानूँगा, क्योंकि मैं हिन्दू हूँ, मुसलमान हूँ वही वर्जित है।

साम्प्रदायिक भावना दूर करें

15 मई, 1993 को अकबरपुर (उत्तर प्रदेश) में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्नकर्ता: मान्यवर, इस अकबरपुर संसदीय क्षेत्र के चार विधानसभाई क्षेत्र अकबरपुर, जलालपुर, जहाँगीरगंज और बाँडा में बहुत बुनकर परिवार हैं। यह बुनकर परिवार इस वक्त दुःखी हैं, क्योंकि आजकल धागे की कीमत अचानक तेज हो गई और उसका कारण, आपके द्वारा जो एस.टी.सी. मिले चल रही है, उन्होंने अचानक दाम बढ़ाए हैं। इस पर फिर से अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई, जबकि बुनकर त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। इस संबंध में आपके क्या विचार हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, बुनकरों के लिए अभी 10-15 दिन पहले लोकसभा में एक वक्तव्य शासन की ओर से दिया गया था। मुझे उसके सब पहलू तो याद नहीं हैं, लेकिन जो बात आपने कही, वह अभी हमारे साथियों ने भी बताई है। मैं इसके बारे में जरूर टेक्सटाइल मिनिस्टर साहब से बात करूँगा। उसमें कारण क्या है, उसको देखेंगे।

प्रश्नकर्ता: किस्सा यही है कि बुनकरों के हितों की पूरी रक्षा की जाए।

श्री अर्जुनसिंह: ऐसी स्थिति कैसे निर्मित हुई? मैं उनसे बात करूँगा।

प्रश्नकर्ता: साहब, मजेदार बात तो यह सामने आती है कि जो आपकी एन.टी.सी. मिले हैं, जो एस.टी.सी.

मिले हैं, जिसमें मेरठ है, बाराबंकी है, नैनी, इलाहाबाद है, आपका मोमनाथ मंजन है, यह जौनपुर है, मनहर है, बस्ती है, यह तो टोटल आपकी देखरेख में धागे का इस्तेमाल कर रहे हैं।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, नहीं, देखिए, आपने जो कहा, वह बात अपनी जगह है, लेकिन उसके और पहलुओं पर भी तो बात होनी चाहिए कि ऐसा क्यों हुआ?

प्रश्नकर्ता: मैं एक सवाल और करना चाहता हूँ, साहब, कि अमेठी अधिवेशन हो रहा है, अभी सुनने में आ रहा है। उसके बारे में आपका क्या दृष्टिकोण है?

श्री अर्जुनसिंह: यह अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी का अधिवेशन है। हम सब लोग उसमें, भाग लेंगे यही दृष्टिकोण है, और क्या दृष्टिकोण होगा।

प्रश्नकर्ता: अर्जुन सिंह जी, कहा यह जा रहा है कि यह जो आपका उत्तर प्रदेश का अकस्मात टूर हो रहा है, यह अमेठी अधिवेशन के पहले ही हो रहा है, सपोर्ट कायम करने के लिए। इसके बारे में आप कुछ कहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: मेरे इस टूर से और अमेठी के अधिवेशन से कोई संबंध नहीं है और वास्तविकता यह है कि हमारे टूर तो अधिवेशन के फैसले के पहले ही बन गए थे। इसका उससे क्या तात्पर्य हो सकता है।

प्रश्नकर्ता: आपकी कांशीराम जी से बातचीत हुई है, उसमें उनके साथ सीटों के तालमेल से संबंधित भी कोई कार्यक्रम है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, कोई सीटों की तालमेल संबंधी बातचीत का प्रश्न ही नहीं उठता। मैं उनसे ऐसी बात करने को कैसे तय कर सकता हूँ। बातचीत मेरी केवल इस संदर्भ में हुई कि आज देश में, खासतौर से उत्तर भारत में कांशीराम जी का एक प्रभाव क्षेत्र है, कुछ मुद्दे वह उठाते हैं, मैं ऐसा समझता था कि बजाय इधर-उधर से सीधे उन्हीं से बातचीत करके हम समझे भी कि वह क्या चाहते हैं। यहीं तक सीमित है, इसके अलावा और कोई नहीं है।

प्रश्नकर्ता: सर, अभी पूर्व में दिए गए वक्तव्य में, उसके अनुसार उत्तर प्रदेश में जो भा.ज.पा. का प्रभाव रहा है वह निरक्षरता के रहते ही है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं-नहीं, इस निष्कर्ष पर आप कैसे पहुँच गए। यह बिल्कुल निरक्षरता तो नहीं है, लेकिन गलत तरीका है उस निष्कर्ष पर पहुँचने का। उस संदर्भ में जो मैंने कहा था, उसको उसी संदर्भ में समझिए।

प्रश्नकर्ता: मेरा सवाल यह था कि अयोध्या फैजाबाद जिले में होने से पूरे जिले में ऐसा माहौल है, उसको आपने पोलिटिकल कर दिया, उसको सोल्व करने में क्या प्रोब्लम है?

श्री अर्जुनसिंह: प्रोब्लम तो हर ऐसे इशू में, जिसमें इतनी ज्यादा बातें जुड़ गई हों और जिसमें भावनाएँ उत्तेजित कर दी गई हों तो स्वाभाविक है कि उनके हल की दिशा में थोड़ा समय तो लगेगा ही।

प्रश्नकर्ता: यह बात स्पष्ट बताने में क्या अड़चन है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं इसमें आपसे एक ही बात कहता हूँ और यह मैंने सभी जगह कही है इसलिए यहाँ भी कहने में मुझे कोई हिचकिचाहट नहीं है। यह मेरा मत है, मेरा अपना मत है कि यह प्रश्न महत्वपूर्ण है, प्रश्न भावनात्मक रूप से बहुत लोगों से जुड़ा हुआ है। देश के हित में इस वक्त सर्वोच्च प्राथमिकता यह है, जो एक कम्युनल डिवीजन हो गया है और भावनाएँ थोड़ी विकृत हो गई है, चाहे किसी के पक्ष से भी क्यों न हो, हम सब का ध्यान अभी केन्द्रित होना चाहिए इस स्थिति

को सामान्य लाने में। फिर उसके आगे क्या होगा, किस प्रकार से होगा, उसका रास्ता भी मिल बैठकर निकल आएगा, लेकिन अगर इस स्तर पर हम सब लोग अकर्मण्य बने रहेंगे तो फिर कोई रास्ता निकालना भी मुश्किल होगा। मेरी ऐसी मान्यता है।

प्रश्नकर्ता: स्थिति बिगाड़ने की कोशिशें दोनों ओर से हो रही हैं। यह माहौल बना रहे, यह कोशिशें जो है एक तरह से अयोध्या को केन्द्र बिन्दु में रखकर दोनों पक्षों से हो रही हैं। वह अपना कर रहे हैं और इधर यज्ञ का भी कुछ चल रहा है। रोज-रोज कुछ न कुछ होता रहता है। अब यह चन्द्रा स्वामी का यज्ञ है, उसको लेकर काँग्रेस पार्टी के बहुत से लोग लगे हुए हैं, ऐसा कहा जा रहा है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, हाईकमान यज्ञ कराने के लिए तो नहीं है। इतना तो समझ लीजिए। बाकी कौन यज्ञ कर रहे हैं, नहीं कर रहे हैं, उसमें हमारा क्या लेना-देना।

प्रश्नकर्ता: साहब, आपकी पार्टी के बड़े-बड़े नेता लोग लगे हुए हैं। क्या उनका कोई संबंध नहीं है इस यज्ञ से?

श्री अर्जुनसिंह: मैं नहीं समझता कि काँग्रेस का संबंध किसी यज्ञ से हो सकता है। बाकी सब फ्री है जो भी यज्ञ करना चाहे वह करें। उसमें क्या है?

प्रश्नकर्ता: आपकी पार्टी के जिम्मेदार नेता भी इससे जुड़े हुए हैं।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, कोई नेता यज्ञ में जाना चाहता है तो क्या उसको रोका जायगा? लेकिन, इसका यह मतलब नहीं कि काँग्रेस यज्ञ करा रही है। अभी हम ही गए थे आपके हरिद्वार में गायत्री पीठ के यज्ञ में वह तो अपनी हमारी मान्यता है, हमारी आस्था है, हम किस यज्ञ में जाएँ। इसे हम पार्टी से कैसे जोड़ें।

प्रश्नकर्ता: साक्षरता अधिक जरूरी है या अनिवार्य?

श्री अर्जुनसिंह: अब यह अनुभव से दिख रहा है कि दोनों पूरक हैं एक दूसरे के। जहाँ-जहाँ यह साक्षरता अभियान सफलता से हुए हैं वहाँ पर अनिवार्य शिक्षा की माँग है। अनिवार्य शिक्षा की माँग दुगुनी, तिगुनी गति से बढ़ी जहाँ पहले लोगों को समझाने जाना पड़ता था, कि अपने बच्चों को स्कूल भेजिए और शिक्षा बहुत जरूरी है, क्योंकि कानूनन जबरदस्ती तो करने का प्रश्न नहीं उठता, इसलिए मैंने चेतना शब्द इस्तेमाल किया। इस साक्षरता से कई क्षेत्रों में चेतना फैली है, शिक्षा के क्षेत्र में भी फैली है, हमारे जो स्वास्थ्य के कार्यक्रम हैं, परिवार-नियोजन के कार्यक्रम हैं, बच्चों को बीमारियों से अलग रखने के कार्यक्रम हैं, इन सब में रुचि बढ़ी है क्योंकि जब एक दफे वह समझ गए कि यह बात है तो फिर सचमुच एक स्वैच्छिक परिस्थिति ही उभर कर सामने आती है। एक तरह से पूरक है। एक दूसरे के पर्याय नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता: अभी साहब, आपने एनागरल एड्रेस में यह कहा कि साक्षरता का जो अभियान है यह जरूरी है, इसमें अधिक से अधिक शैक्षणिक संस्थाओं को कार्य दिया जा रहा है। जब इतना बड़ा कार्य हो रहा है, तो उसमें गड़बड़ियाँ न हों, इसको चेक करने के लिए वर्तमान में आपका कोई मोनेटरिंग सेल है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इसके लिए यह रखा गया है कि इसको एक तरह से कहते हैं कंटीन्यूअस मोनेटरिंग की एक प्रक्रिया, जो चली हो और इस मोनेटरिंग में केवल विभाग के लोग नहीं है, कई ऐसी संस्थाएँ, जैसे टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज है और भी इस तरह की बहुत सी संस्थाएँ है, उनके

माध्यम से अलग-अलग राज्यों को असेसमेंट का काम दे रखा है और जहाँ भी ऐसी चीज उभर कर सामने आती है, कोई बात गलत होती है तो हम उस पर कार्रवाई करते हैं।

प्रश्नकर्ता: विवाद तो मात्र इसका है कि मन्दिर यहीं बने, और कहीं तो अयोध्या में मन्दिर और मस्जिद बनाने पर कोई प्रतिबंध है नहीं। फिर वह ट्रस्ट वगैरह की बात भी खाली वही कही जाती है यहीं, विवाद जिसके बारे में है।

श्री अर्जुनसिंह: वह विवाद तो उसके बाद ही हल होगा, उसके पहले नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता: नहीं होगा। बताया यह था कि मन्दिर या मस्जिद के लिए ट्रस्ट बनेगा, जो भी सुप्रीम कोर्ट निर्णय करेगा। दोनों ट्रस्ट बनेंगे, वह कह रहे हैं यानी अगर मन्दिर न हुआ तो जबरदस्ती मन्दिर बनेगा और मस्जिद नहीं हुई तो कहीं न कहीं ज़बरदस्ती मस्जिद बनेगी यानी दोनों बनाना है।

श्री अर्जुनसिंह: आप समझते हैं कि इन दो में से कोई चीज ज़बरदस्ती हो सकती है। एक बहुत कॉमन सेन्स की बात है, कोई चीज ऐसी ज़बरदस्ती नहीं होगी।

प्रश्नकर्ता: नहीं, अगर सुप्रीम कोर्ट यह कहता है कि वहाँ मन्दिर नहीं था तो फिर भी मन्दिर बनाएँगे क्या?

श्री अर्जुनसिंह: भाई, सुप्रीम कोर्ट के मामले में "अगर" "मगर" से मैं बात नहीं कर सकता हूँ। आप लोग कर सकते हैं, लेकिन मैं तो नहीं कर सकता हूँ। जो भी हो। जो स्थिति आएगी, उसको देखेंगे। हाँ, आप क्या कह रहे थे, भाई साहब?

प्रश्नकर्ता: ऐसा कहा जाता है कि राष्ट्रपति शासन इन चार राज्यों में इसलिए बढ़ाया गया कि काँग्रेस की हालत पतली है।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, देखिए, यह तो जैसा मैंने पहले कहा कि मुख्य रूप से तो हमें यह जो कम्युनल और इमोशनल डिवाइड है उसको एक सामान्य स्तर पर लाने की बात थी। उस दिशा में अलग-अलग प्रदेशों के गवर्नर की जो राय थी, उसके तहत यह बात की गई है। और, मैं समझता हूँ कि एक व्यापक संदर्भ में वह बात सही है। आखिर, चुनाव तो होना ही है नवम्बर में, उसके आगे तो बढ़ाने का सवाल ही नहीं, जब भी छह महीने पूरे होंगे, शायद नवम्बर एण्ड होगा या दिसंबर पूर्व, मध्य।

प्रश्नकर्ता: सर, साम्प्रदायिकता के खिलाफ आप लड़ रहे हैं और मुलायम सिंह यादव जी लड़ रहे हैं। क्या आप दोनों में इसके बारे में तालमेल हुआ है?

श्री अर्जुनसिंह: इसमें तालमेल की जरूरत नहीं। अगर 15 लोग ऐसे एक तरह से सोचते हैं, कोई जरूरी नहीं कि उनमें सब में तालमेल हो।

काँग्रेस में फूट नहीं

19 मई, 1993 को ग्वालियर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्न: काँग्रेस पार्टी में मतभेद है उसका निदान कौन करेगा?

श्री अर्जुनसिंह: काँग्रेस इतनी बड़ी पार्टी है उसमें विचार भिन्नता हो सकती है। काम करने के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन काँग्रेस के अन्दर ऐसी फूट कभी नहीं हुई जो पार्टी के अस्तित्व को खतरा पहुँचाए। देश के किसी भी निर्णायक दौर में काँग्रेस पार्टी का जो दायित्व है, उस दायित्व को निभाने में कभी-कभी अड़चन हो सकती है। आज इस तरह का सबसे बड़ा सवाल यही है कि मध्य प्रदेश

में सांप्रदायिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाली भारतीय जनता पार्टी, काँग्रेस के लिए एक चुनौती है और हम उसे स्वीकार करते हैं। उस चुनौती का सामना करने के लिए यह आवश्यक है कि हम लोग सामूहिक रूप से एक होकर इस राष्ट्रीय अभियान में जुटे और उसी का यह आयोजन है। इसका यह कतई मतलब नहीं है, कि पहले कुछ और था अब कुछ और हो रहा है।

प्रश्न: आज का जो आयोजन हो रहा है क्या यह काँग्रेस हाईकमान के निर्देश पर हो रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: इसके बारे में जहाँ तक मेरी जानकारी है कि यह किसी के भी निर्देश पर नहीं हो रहा है। हम सब लोगों ने आपस में यह तय किया कि यह होना चाहिए और यह आयोजित किया गया है।

प्रश्न: क्या इस तरह के आयोजन मध्य प्रदेश के अन्य स्थानों पर भी होंगे?

श्री अर्जुनसिंह: जरूर होंगे।

प्रश्न: क्या यह आयोजन आगामी चुनावों के मद्देनजर किए जा रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: चुनाव की संज्ञा तो मैं नहीं दूँगा लेकिन अब तो चुनाव दिसम्बर से पहले-पहले होना है। अभी तक तो अनिश्चितता थी। विशेष रूप से चुनाव के मसले को नजर में रखते हुए आप उसको युटिलाईजेशन कह सकते हैं।

प्रश्न: आप अपने मंत्रालय के बारे में कुछ बताना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: हमारा मंत्रालय तो बड़ा लोकप्रसार मंत्रालय है। सभी गुरुजनों को नमस्कार करते हैं सुबह, बच्चों को खुश रखने की कोशिश करते हैं, स्पोर्टस में भी गतिविधियाँ परिलक्षित हुई हैं क्योंकि भारत अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्धा में पिछड़ते जा रहा है, सांस्कृतिक क्षेत्र में भी एक सांस्कृतिक नीति बनाने का काम चल रहा है। उसमें अंतिम रूप से संसद में उस पर बहस होना बाकी है।

प्रश्न: भारत भवन का क्या हो रहा है। राष्ट्रपति शासन में भी इस पर कोई नियंत्रण नहीं है।

श्री अर्जुनसिंह: हमारे मंत्रालय से उसका कोई संबंध नहीं है।

प्रश्न: अभी इंका का अधिवेशन हो रहा है उसमें मुख्य मुद्दा क्या रहेगा?

श्री अर्जुनसिंह: पंचायती राज का मुद्दा है, उस पर विचार होगा। क्योंकि ये विषय 1984 के जो लोकसभा चुनाव हुए थे उसमें व्यापक स्तर पर ग्रामीण अंचलों पर उठाया गया। उनको राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक अधिकार दिए जाने को पंचायतों को माध्यम बनाया जाना चाहिए। जो वायदा किया था वह वादा अब जाकर पूरा हुआ क्योंकि बीच में ही संविधान संशोधन रखा था, वह संशोधन सदन में पारित नहीं हो सका। अब सभी पार्टियों की सहमति से हो गया है। अब उसको अमल में लाने की कोशिश की जाएगी।

देश के ग़रीब और कमज़ोर वर्ग के हितों को संरक्षण जरूरी

25 मई, 1993 को लखनऊ में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

Q: Don't you feel that there is need for cooperation among the like-minded parties?

A: Well, that is a question which will have to be decided not by an individual or set of individuals. That has to be decided at the proper, and appropriate party level. I cannot give my personal view on this. But this is very obvious that the danger of the threat which is being posed to the

country, the Congress party has itself realised that, and it is a part of the resolution of 24th December, 1992, that we should try to seek a broader cooperation and a broader front to fight these communal forces.

What kind of cooperation?

That will emerge when the matter comes to that stage. At the moment this is the decision of the working committee.

अर्जुन सिंह जी, यह एक बुनियादी सवाल है, सारे लोग कह रहे हैं कि यह विचारधारा की लड़ाई नहीं है, मौजूदा जो परिस्थितियाँ हैं वह देश की जो नई आर्थिक नीति आप लोगों ने बनाई हुई है, उसके हिसाब से काँग्रेस को क्या अभी भी आप मध्यमार्गी या लेफ्ट आफ द सेंटर पार्टी मानते हैं?

अर्जुनसिंह: देखिए, लेफ्ट आफ द सेंटर, मध्यमार्गी है, कि लेफ्टिस्ट है, कि राइटिस्ट है, यह महत्वपूर्ण सवाल नहीं है। काँग्रेस ने हरदम देश की आवश्यकताओं को ही केन्द्रित करके अपनी पोलिसी बनाई है और एक आइडोलाज़िकल ढाँचे में पॉलिसियों को चलाने की कोशिश नहीं की क्योंकि काँग्रेस की प्रतिबद्धता और प्राथमिकताएँ सदैव देश के कमजोर और गरीब वर्गों के हितों को संरक्षित करने और उनको बढ़ाने की रही। तो वह कभी राइटिस्ट तो हो ही नहीं सकती। साथ ही साथ देश के अंदर जो आर्थिक विकास की बातें थी उसमें जिस स्टेज पर आजादी मिली, हमारी जो स्थिति थी उसको देखते हुए काँग्रेस ने यह नीति बनाई कि ऐसे उद्योग, जिनमें भारी कैपिटल फोरमेशन की जरूरत है, चूँकि देश में वह कैपिटल नहीं है, इसलिए सरकार उसको चलाएगी और खासकर जो 'की' उद्योग है पब्लिक सेक्टर के अंदर रहेगें, जैसे- मशीन प्रोडक्शन, पावर प्रोडक्शन कोल इत्यादि साथ ही साथ समय-समय पर पार्टी ने यह भी महसूस किया कि सब कुछ गवर्नमेंट कंट्रोल में नहीं हो सकता, इसलिए एक्टिव प्राइवेट सेक्टर को काम करने देना चाहिए और उस प्राइवेट सेक्टर को बजाय कमजोर करने के मजबूत करना चाहिए। अब स्थिति यह है कि अब सारी दुनियाँ के अंदर जो एक आर्थिक वातावरण बना है, भारतवर्ष अपने को पूरी तरह अलग करके नहीं चल सकता। इसलिए हमारा एक इंटीग्रेशन का जो प्रोसेस है उसमें अपने देश की परिस्थितियों के अनुकूल हम फैसला करेंगे कि कहाँ पर हमको किस हद तक किस दिशा में जाना चाहिए और मैं समझता हूँ कि आज के संदर्भ में इसके अलावा कोई दूसरा चारा नहीं है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि हम राइट और लेफ्ट और इनके प्रभाव में आकर कुछ काम कर रहे हैं। जैसा कि हमने कहा काँग्रेस ने सदैव एक मूल उद्देश्य सामने रखकर अपनी दिशा बनाई है। हाँ, कहीं गलतियाँ हो सकती है, उसको कोई सुधारने की बात हो तो उसको सुधारा जा सकता है।

प्रश्नकर्ता: एक सवाल करना चाहता हूँ, कल अटल बिहारी वाजपेयी जी ने यहीं पर इस बात की घोषणा की कि अगर अगले चुनाव तक अयोध्या का इशू सेटल नहीं होता है तो उसको वह इलेक्शन इशू बनाएँगे। आप लोग जो हैं, सांप्रदायिकता के खिलाफ लड़ाई लड़ने की बात कर रहे थे, उनकी इस बात पर कैसे विचार करेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: अब अटल जी का तो मैं बहुत सम्मान करता हूँ, इसलिए मैं कोई टिप्पणी उस तरह की तो नहीं करना चाहता, लेकिन अगर अटल जी यह कहते हैं कि अगले चुनाव में इसको लिया जाएगा तो

शायद वह आऊट आफ टच हैं अपनी ही पार्टी से क्योंकि उनकी पार्टी तो सुबह से शाम तक, 24 घंटे, उसी मुद्दे को ले रही है। वह कहाँ इंतजार कर रहे हैं, अगले चुनाव का? नहीं, यह सब तो एक कला है और अटल जी इसमें माहिर हैं।

प्रश्नकर्ता: लेकिन, अर्जुन सिंह जी, यह इंडियन एक्सप्रेस के जार्ज जोजफ के सवाल के संदर्भ में थोड़ा और स्पष्टीकरण दें, काँग्रेस वर्किंग कमेटी के मैम्बर होने के नाते क्या आपको यह अहसास है कि इस वक्त देश पर और आपकी पार्टी पर जो एक सबसे बड़ी चुनौती है, भारतीय जनता पार्टी के रूप में? उसको हराने के लिए कोई राष्ट्रीय रणनीति के बारे में प्रधानमंत्री न सही, कम से कम आप क्या विचार कर रहे हैं यह बताए?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, मैं पार्टी का अंग हूँ और पार्टी से बाहर जाकर कोई विचार करने का और रणनीति बनाने का प्रश्न उठता नहीं है और जो भी इस संबंध में बातें तय हुई है उनमें काफी अमल हुआ है। अगर कोई और आवश्यकता है तो उस आवश्यकता को भी पूरा करने की कोशिश की जाएगी।

प्रश्नकर्ता: कश्मीर के मामले में जो पहला अमरीकी हस्तक्षेप हुआ है, उसके बारे में आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, वैसे तो "अमरिकी" प्रवक्ता ने काफी बातें कही हैं, एक पहलू जरूर बहुत उभर कर सामने आया है, जिसमें कि मिस्टर मेलट ने यह कहा है, जो तीन सिद्धांत, उन्होंने तीन विषय बताए हैं, जिनके ऊपर विचार विमर्श होना जरूरी है। पहला यह है कि अमरीकन सरकार का यह दृष्टिकोण है कि कश्मीर, अंग्रेजी में जिसको उन्होंने कहा— "द एण्टायर वैली आफ कश्मीर इज ए डिस्प्युटेड एरिया"। यह मैं समझता हूँ कि बिल्कुल आपत्तिजनक है, खासतौर से इस संदर्भ में कि कश्मीर के मामले में सारे हिन्दुस्तान की सभी राजनैतिक पार्टियों ने आज से नहीं 1947 से, जबसे यह समस्या हमारे सामने आई है, एक मत रहा है और उस एक मत होने के जो मुख्य आधार हैं, वे यह है कि कश्मीर का एकसेसन जो इंडिया में हुआ है वह फायनल और इररिवोकेबल है, कोई भी टेरेटरी कश्मीर, जम्मू और कश्मीर की, हमारे दृष्टिकोण में जम्मू कश्मीर के बाहर नहीं है और भारत की सार्वभौमिकता समूचे जम्मू और कश्मीर पर है। इस विषय को लेकर कई दफे पाकिस्तान से आक्रमण भी हुए और हिन्दुस्तान ने पूरी मजबूती के साथ उन आक्रमणों को विफल किया। भारतीयों का खून पहाड़ों और घाटियों में बहा है, वह इसलिए नहीं कि किसी वक्त कोई यह कह दे कि सारे कश्मीर में आज भी अनिश्चितता है कि कश्मीर का कौन सा अंग भारत का है और कौनसा भारत का नहीं है। इसलिए इस बात का तो जोरदार खण्डन होना ही चाहिए।

दूसरा संदर्भ उसका यह भी है कि भारत और अमरीका के बीच में संबंध प्रगाढ़ होने चाहिए, मैत्रीपूर्ण होने चाहिए और परस्पर हितकारी होने चाहिए। हिन्दुस्तान और अमरीका के बीच में कई ऐसे आदर्श और मूल्य है, जो सामान्य है, प्रजातांत्रिक मूल्य हैं, समाज के अंदर दृष्टिकोण है, इन सबमें मतैक्य होने की वजह से बहुत सी बातें ऐसी हैं, जिनकी वजह से बहुत अच्छे संबंध अमरीका के और हिन्दुस्तान के हो सकते है, हुए है और आगे भी होंगे। मैं इनका हिमायती हूँ, लेकिन कश्मीर के मामले में ऐसे किसी भी विचार को कि आज कश्मीर के किसी अंग पर भारत की सार्वभौमिकता नहीं है या वह डिसप्यूटेड है, इसे पूरे जोर से हमें नकारना चाहिए और बातचीत का कोई आधार बनाने के लिए मजबूर नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता: सिंह साहब, आपने फरमाया था कि अभी काँग्रेस को युनाइट करने के लिए और खासतौर से उत्तरप्रदेश में ज्यादा जोर देना है क्योंकि उत्तरप्रदेश में अगर काँग्रेस मजबूत होती है तो हिन्दुस्तान को पूरी मजबूती मिलेगी। मैं एक छोटा सा सवाल करना चाहता हूँ, खासकर यू.पी. वालों के लिए, कि 6 दिसंबर को जब इस रियासत के कई शहरों में अकलियतों को बुरी तरह से मारा, सताया और लूटा जा रहा था तो उसके बाद उनके जख्मों पर मरहम लगाने के लिए दूसरी पार्टियाँ, सेकुलर पार्टियाँ तो सामने आई, लेकिन काँग्रेस पार्टी यहाँ यू.पी. के मामले में सामने क्यों नहीं आई? उसको कौनसा ऐसा काबिले जुर्म था कि वह चुप कर बैठी रही?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, आपकी भावना का मैं बहुत आदर करता हूँ और यदि आप जानना चाहते हैं तो मैं समझता हूँ, यह थोड़ी हमसे गफलत हुई है। मैं काँग्रेस की बात कह रहा हूँ, किसी एक व्यक्ति की बात नहीं कह रहा हूँ, और इस मामले में अब दुगुने, कद के साथ हमें उत्तरप्रदेश के, सारे भारत के अल्पसंख्यक भाइयों को इस बात का पूरा अहसास कराने की जरूरत है कि उनकी सुरक्षा और उनके हितों की रक्षा काँग्रेस सदैव से करती आई है और अब भी करेगी। यदि उनके मन में इस बारे में कोई शंका आई है तो उस शंका को हमको दूर करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता: अर्जुन सिंह जी, कुछ पार्टियों का आरोप है कि भारत में लगभग एक करोड़ बांगलादेशी घुसपैठिए सीमावर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ बनाए हुए हैं, जो तमाम जगहों पर ऐसी स्थिति में है कि चुनाव हरा जिता सकते हैं। क्या इस ओर सरकार कोई ध्यान दे रही है? उनको आईडेंटिफाई करने की या उनको हटाने की या उनको पुनर्वासित करने की क्या कोई योजना सरकार की है?

श्री अर्जुनसिंह: उनकी यह योजना निरंतर चल रही है, उसकी जानकारी कई दफा लोकसभा में दी गई है, लेकिन उसकी तो एक प्रक्रिया है। ऐसा तो नहीं है कि राह चलते हम किसी को पकड़ कर कहें, तुम बाहर जाओ। यह तो संभव नहीं है। जो एक प्रक्रिया है, उससे हमें चलना होगा।

प्रश्नकर्ता: अर्जुन सिंह जी, कश्मीर के मामले में जो अमरीका की राय है, उस पर अभी आपने बात की। पिछले कुछ दिनों से ऐसा लग रहा है, जैसे भारत की फॉरेन पॉलिसी पुरानी पॉलिसी से कुछ हट रही है और जब भी इसराइल का ज्यादा दखल-वखल हुआ, तब से अमरीका भी कुछ ज्यादा बात कहने लगा है। आपका इस पर क्या कहना है, क्या इसकी वजह से है या कोई और बात है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, कण्ट्री की फॉरेन पालिसी हरदम सिचुएशन के अनुसार डेवलप करती है। उनका उस पर असर है, यह मैं नहीं कहता। कुछ ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर हिन्दुस्तान की फॉरेन पॉलिसी किसी भी परिस्थितियों में कोई दूसरा रुख नहीं अपना सकती। इनमें से एक कश्मीर का मुद्दा है। इस मामले में आपने देखा ही, बीच में कई सरकारें आईं, जनता पार्टी की सरकार आई, लेफ्ट फ्रण्ट की सरकार आई, किन्हीं ने भी इस मुद्दे पर कोई दूसरा रुख अख्तियार नहीं किया। इसलिए कश्मीर का मसला है, जिसमें जो हमारी फॉरेन पॉलिसी एप्रोच है, वही है। उसमें कोई अन्तर नहीं है।

संयोजक: अब चूँकि काफी समय हो रहा है, अर्जुन सिंह जी को जाना भी है, एक निवेदन है, हमारे पाल साहब की ओर से दावत है, आप सबका स्वागत है। एक सवाल मुझे अन्तिम पूछना है और वह मानव संसाधन विकास मंत्री होने के नाते, धौलपुर हाऊस, दिल्ली में, यू.पी.एस.सी. आफिस के सामने कई वर्षों से हिन्दी को माध्यम बनाने के लिए एक आंदोलन चल रहा है। जवाहरलाल नेहरू

की बात अलग थी, वह हिन्दीज़ादा नहीं थे, लेकिन बाकी जब आपके लोग प्रधानमंत्री बने और आप खुद मंत्री बने तो क्यों नहीं हिन्दी की उपेक्षा को खतम करने के प्रयास किए गए और क्यों नहीं इस साजिश के खिलाफ संघर्ष किया गया?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, हिन्दी की स्थिति देश में जो होनी चाहिए, कई लोगों की ऐसी धारणा है कि, वह पूरी तरह से वैसी नहीं है। लेकिन, हिन्दी की उपेक्षा की जा रही है और जानबूझकर की जा रही है, यह कोई साजिश है, शायद यह इतनी दूर तक जाना न्यायपूर्ण नहीं होगा। यह जरूर है कि हर स्तर पर जहाँ यह आवश्यक है, हिन्दी के चलन, हिन्दी के काम करने के बारे में, वह स्पष्ट निर्देश है, उनका पालन होना चाहिए। लेकिन, आप उस बात से भी परिचित है कि भारत के अंदर लगातार भाषा को लेकर, भाषा से बाहर जाकर, प्रश्न खड़े कर दिए जाते हैं और इसीलिए यह एक आश्वासन है राष्ट्रीय स्तर पर, जो अहिन्दी भाषी क्षेत्र है वहाँ पर कभी हिन्दी लादने की बात नहीं आयगी, वहाँ लोगों को हिन्दी के संबंध में पूरी तरह से अवगत कराके, उनको उसका ज्ञान दिलाकर और एक समतल स्तर पर लाने की कोशिश हो रही है। आप सबको अच्छी तरह ज्ञात होगा कि आज कर्नाटक में, आंध्र में और तमिलनाडू में हिन्दी के बारे में शायद कई मायने में उत्तर आए हैं, ज्यादा लोग चिन्तित हैं, उस काम में लगे हुए हैं और इसलिए इस विषय को एक संतुलन और संयम के साथ ही देखना चाहिए। इसमें षडयंत्र की खोज करना शायद अपने उद्देश्यों की पूर्ति में ही बाधक हो जाएगा।

वर्तमान सरकार का कार्य प्रशंसनीय

16 जून, 1993 को गया (बिहार) में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

एक प्रश्नकर्ता: माननीय मंत्री जी, आप देश की सरकार में हैं, इतने ऊँचे पद पर हैं, फिर भी आपने कई मामलों को, सीधे प्रधानमंत्री या वित्तमंत्री को लिखा है। चाहे सरकारी कामों में शेयर खरीद बिक्री का जरूरी मामला हो, या हर्षद मेहता को कानूनी संरक्षण देने का मामला हो, इस पर आपने सीधे प्रधानमंत्री को पत्र लिखा इसलिए मैं यह समझता हूँ कि आपकी भूमिका एक डिसिडेंड लीडर के रूप में तेजी से उभर रही है और नेतृत्व को यह खुली चुनौती है। इस पर आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: यह कुछ लोगों का ऐसा सोचना है, लेकिन किसी तरह से किसी को चुनौती देने का न मेरा आशय है, न कोई उद्देश्य है। जो प्रश्न जिस रूप में आते हैं, उस रूप में आते ही हैं।

Q: On this small matter, Narasimha Rao government has taken years. How do you assess and are you satisfied with his performance?

A: I am very much satisfied and this government has done some very good work in the last two years. The fact, from where we started, needs to be recollected now, otherwise, we forget a lot of things in between. At this time, in 1991 the country was on the verge of bankruptcy. We were about to default on our international payments. Our foreign exchange reserves were down and they were only sufficient for a fortnight. The authority of the government was being challenged

in the North East, Punjab and Kashmir.

Economically and industrially, the situation was very bad. Inflation was running at bout 13. something percent. If you look back at these two years, you will see that today inflation is down to 6 point something percent. Our foreign exchange reserves are not only comfortable, but in a very, very strong position.

The situation in the North East and Punjab has normalised; Kashmir is yet to be normalised.

The country's economy has been liberalised; certain policy decision of far reaching consequences have been taken.

The agricultural front has stabilised and one of the biggest reasons for import on the food front, that is, oilseeds, the production has overtaken the demand and we will no longer be importing edible oils.

These are some of the things which one can count on one's fingers. There are so many other initiatives that have been taken and the country is now well set on the course of economic revival. The next couple of years will be very, very crucial. I am quite confident that our objective to stabilise the country and take it further on the road to development will be realised in the next two years. The things I have said are only illustrative. There are so many other things, which we can easily recount.

Q: What are the shortcomings, what you could have achieved, you have not achieved?

A: Well, one of the very important things that is causing anxiety is the situation in Kashmir.

Q: Ayodhya issue is not causing you anxiety?

A: Well, it is causing anxiety. In the Ayodhya issue we have tried our level best. Two things have gone bad in certain respects and the communal divide, which some parties wanted to create, that danger is a little less today than it was, say, five months ago.

Q: Well, there were a number of bomb blasts at Bombay and also trouble in Ayodhya in the two years of Mr. Narasimha Rao.

A: Well, these are incidents that have happened. Who can deny them? But that is not because the Government could not do something. Yes there may be some shortcomings somewhere, some defaults some where, but you must look at the approach of the Government. We have done whatever was desired in all these fields. Maybe, in some people's eyes it may not be enough or not sufficient, but the action has been quick.

प्रश्नकर्ता: मंत्री महोदय, देश के कोने-कोने में आप दौरा कर रहे हैं, बिहार में भी आपने दौरा किया है। तो इसका उद्देश्य क्या है? क्या अगामी राजनीति की रणनीति तय की जा रही है या दूसरा कुछ है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, कोई रणनीति नहीं तय की जा रही, न इसका कोई और विशेष उद्देश्य है। कॉंग्रेस पार्टी जनतंत्र में अहम् भूमिका निभाने वाली पार्टी है और सभी लोगों को हर संदर्भ में कॉंग्रेस की

विचारधारा से, यानी काँग्रेस क्या सोचती है विषयों पर, इससे अवगत होना जरूरी है। क्योंकि जब हम इस तरह के संवाद स्थापित करेंगे तो ही उस मौके पर जब कोई प्रजातांत्रिक फैसला होता है हम अपनी भूमिका स्पष्ट कर सकेंगे। यही उद्देश्य हैं, और कोई दूसरा उद्देश्य नहीं है।

प्रश्नकर्ता: बिहार में वर्तमान में लालू प्रसाद यादव की सरकार के बारे में प्रदेश इंका का नेतृत्व, बिल्कुल चिंता का विषय है। मतलब जो उनके खिलाफ एक जोर ज़बरदस्त मूवमेंट खड़ा होना चाहिए था, ऐसा मूवमेंट नहीं चलाया जा रहा है। इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो उसी का सुझाव दे रहा हूँ। यह तो उस पर अमल किस रूप में करना है, यह तो हमारे साथी ही तय करेंगे, मैं थोड़े ही तय करूँगा।

Q: Do you know that there is not a single Central University in Bihar and IIT, nor Central Medical College?

A: There are many States where there is no Central University.

Q: But what about Bihar, which is the second most populous State?

A: Well, I did not mean to say that Bihar does not have a case for a Central University. That is not my point. Bihar certainly has a case for a Central University.

Q: Especially, when Uttar Pradesh has now a big Central University.

A: At this point of time, in this plan there is no provision for a Central University. So we will have to wait till the end of this Plan for that.

Q: What is your opinion about Charwaha Vidyalaya?

A: Well, I have gone on record and I have no hesitation in repeating it again that the concept of Charwaha Vidyalaya is a very good concept. The point is that it must be thought out fully as to what you want to do.

I have, in fact, written to the Chief Minister many months ago that we would like to have a fully worked out concept of this scheme and if it fits with the National Policy on Education, then we would like to adopt it and help it. I have not yet received anything, but as soon as I get it, we will examine it.

प्रश्नकर्ता: माननीय मंत्री जी, आपके विभाग द्वारा सेंट्रल साक्षरता अभियान बड़े जोरों से चलाया गया था दो वर्ष पहले, आज उसकी क्या स्थिति है? जरा आप यह साफ लफ्जों में बताएँगे।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, साक्षरता अभियान सारे देश में चल रहा हैं, बहुत अच्छी तरह से चल रहा है और बहुत ही उत्साहवर्धक परिणाम सामने आ रहे है। मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार में और थोड़ा बहुत राजस्थान में भी अभियान धीमा है। हमारी कोशिश है कि इन राज्यों पर विशेष ध्यान देकर और यहाँ भी उस अभियान को वही गति दी जाए। पिछले दो-तीन महीनों में प्रयास हुए भी है और काफी उत्साह भी दिखा है। मेरा अपना मत है कि अगले कुछ महीनों में आपको दिखेगा कि इन राज्यों में भी यह अभियान उसी स्तर पर आ जाएगा, जैसे कि देश के अन्य प्रांतों में है।

प्रश्नकर्ता: कश्मीर में कब तक चुनाव करा देंगे आप?

श्री अर्जुनसिंहः चुनाव की कोई तिथि तो, भाई साहब, नहीं निर्धारित की जा सकती हैं, लेकिन ऐसे हम लोग आशा करते है कि जिस प्रकार से सब तरफ से प्रयास करने की चेष्टा है, वह हो सकता है कि काफी जल्दी स्थिति बने, यहाँ चुनाव हो जाएँ, लेकिन नोवन केन पुट ए डेट ओन इट।

भाजपा के विरुद्ध संघर्ष

2 सितम्बर, 1993 को फ्रंट लाइन के श्री एस.के. पाण्डे के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

Q: Mr. Arjun Singh, there have been various forms of fascism. You had the Nazi variant, you had an Italian variant. RSS-VHP variant is also potential fascism. How would you characterise this and do you think it can be fought with kid gloves?

A: Well, fascism, in whatever shape it comes, will have to be fought and fight with fascists cannot be with kid gloves.

Q: How do you envisage the fight against the RSS-VHP Combine? Do you think it should be pursued as it is being pursued when elections in four States are round the corner?

A: Well, the Congress is trying to do it.

Q: What initiatives have been taken to salvage whatever is there in the Congress with elections coming and people talking of stifling of dissent, daggers drawn, and succession wars in the Congress and there seems to be stifling of voices which are clamouring for a change? What have you to say for that?

A: You see, there is no question of stifling anything. We are trying to bring about a collective effort.

Q: What is your assessment of the ground realities in these four States with elections just 1-½ months away?

A: The ground reality is that the party is fully aware of it that we have a difficult task ahead. No complacency is called for and we have to set right the distortions in the perceptions that have occurred in certain sections of the people about the party and that is what will be done.

Q: You talked of welcome initiative by Karunakaran in your statement to pressmen some time back. Now there has been Karunakaran initiative, Sharad Pawar initiative or some other initiative to try to salvage the situation. What concretely has been achieved and what are these initiatives really?

A: Well, I think this question should better be addressed to Karunakaranji. I have certainly welcomed what he was doing but whether he has or has not succeeded is entirely how he looks at it.

Q: Without getting into a controversy, what would you say is the ground reality? Is it dark, is it not very good?

A: I did not say it is dark. I said the fight will be quite difficult. I never used the word "dark".

Q: Other than the action plan, could you give the broad contours of what ought to be done in a very broad manner?

A: I think there should be a very strong campaign to expose the basic features of the BJP-RSS combine's efforts and how they are totally out to divide and brutalise the democratic process and gain electoral benefits there from.

Q: Do you think the Bill to separate religion and politics goes far enough?

A: Well, the objective of the Bill is quite clear. But somehow instead of being perceived as an effort to stop the misuse of religion in politics, some people are trying to give it the connotation as if it intends to interfere with religion. That is far from the objective. This kind of impression will have to be removed and the effort for arriving at a consensus is the right way to go about it.

हमें अपनी पार्टी के प्रति वफ़ादार होना चाहिए

15 सितम्बर 1993 को जेन्टलमेन के संवाददाता के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

Q: After the Ayodhya controversy and after you had sent your first letter to the Prime Minister in relation to the Ayodhya controversy, there has been a lot of speculation that you have been trying to project yourself as the rallying point for the anti BJP forces in the Congress (I) as well as a potential alternative to Prime Minister Rao. What do you feel about this speculation?

A: Well, normally I don't deal in speculation. I deal in realities. So, the speculation whatever the shape it may take, hardly merits any attention from me. What purpose I had in writing the letter, I can certainly say; it was only to draw the attention of someone who had been entrusted to initiate a certain process by the Congress President in the working committee itself to the fact that that process had not begun yet.

The second point was that the issues that had to be discussed and had to be debated upon and a certain position taken, those issues in their sequence were stated. One was the question of the attitude of congress party vis-a-vis the BJP and all that it stands for. The second was about the situation in those States where non-congress governments were in power as to how the congressmen have to function there and also as to how they have to be given protection for their own personal self and number three, the well calculated camaign of calumny that the BJP has launched since one and half years. It was doing it previously also, but now there is a greater sharpness in it against the established leaders of the Congress party, notable Gandhiji, Jawaharlalji, Indiraji and Rajivaji.

These were the three issues which had to be brought to the fore front for a debate. Now that according to the letter that I have received all these issues are going to be placed before the working committee for discussion. So far as I am concerned, this chapter is closed.

Q: But are you hurt by the fact that many Congress leaders, seem to have taken this letter as a personal attack on the Prime Minister. People like Rajesh Pilot and others.

A: I am not hurt by misconceived notions. Nothing like that was intended. If somebody has a wrong impression, well I think, gradually he will correct himself or herself.

Q: But don't you think, dissent in any case is a healthy sign in a democracy?

A: Dissent is one thing; accusing somebody else is a different thing.

Q: Is that why you wrote a second letter to the Prime Minister?

A: Well, that is also a letter I wrote to the Congress President.

Q: But in any case, the issue obviously does not end here because it will be discussed again, I think, in the CWC meeting in September some time. So, do you anticipate any trouble from your onus in the party itself.

A: Well, I think, if the issue is discussed, there will be trouble for the BJP, not for me. I don't anticipate any trouble for me.

Q: But was there any sense of let when even something like the Defence Minister, Mr. Sharad Pawar publicly came out in support of the Prime Minister's stand on Ayodhya and with whom you are supposed to have forged some kind of an understanding.

A: Well, there was no let down because the Defence Minister endorsed what I had said previously. He did not strike a new note in that.

प्र. आपने अभी-अभी रियलिटी की बात की कि you always believe in reality. Talking of realities देश में आज के पॉलिटिकल सेनेरियों में बीजेपी के बारे में काँग्रेस की क्या मान्यता है? काँग्रेस की राइवलरी या काँग्रेस का सामना सिर्फ बीजेपी से है या दूसरी पार्टियों से भी है?

उ. यह तो ऐसी रियलिटी है जो मुझे कहने की जरूरत नहीं है। जो थोड़ी भी राजनीति समझते हैं वह इस बात को जानते हैं कि आने वाले समय में कम्युनिस्ट पार्टी भारत के कुछ हिस्सों में और कहीं-कहीं रीजनल पार्टीज का भी हो सकता है लेकिन मुख्य रूप से बीजेपी से ही काँग्रेस की राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता रहेगी।

Q: As a rallying point for congressmen.

A: That is not the question of rallying point. Congress is a political party apart from the fact that it is also something beyond a political party, but it is basically a political party which is functioning in the democratic set up of this country. Now a political party has to project what it stands for, what it wants to achieve for the country and when the election come round, to seek the mandate of the people for that stand. Now if the Congress party won't do this, how can it survive.

Q: But what about issues like poverty, I think, that is prominent for India.

A: That is one of the prominent issues in the congress party.

Q: You seem to have provoked a rather unhappy reaction in U.P. by trying to establish a base for yourself over there. Since Mr. Narayan Dutt Tiwari is supposed to be the legitimate leader of the Congress in U.P., why you are trying to get a base in Uttar Pradesh.

A: I think, this is a free and a democratic country and so far as the question of seeking base by anyone anywhere else, it is not something which is available just for the grabbing. I have no intention and I have made it very clear when I went to UP that neither do I want to contest an election from there nor do I want to enter the Congress party as a delegate from there. I had gone there because I was concerned like any other congressman that in UP, the BJP must be challenged and the support I got, the encouragement I got was from the congressmen there. There was no question of having any anti-Tiwariji or anti-Anybody bias and to put the record straight, practically all of them, in one meeting or the other attended a meeting on the same problems. So, where is that point at all.

Q: Talking about, well, general politics, apparently there is a move among some congressmen to re-induct Arun Nehru.

A: Well, I don't know whether there is a move or not, but the admission of any person in the party has to go through a certain procedure.

प्र. एक समय तो चव्हाण साहब ने लगभग कह दिया था कि अगर कोई रास्ता नहीं निकला, दूसरी सरकार ने हमें सहयोग नहीं दिया तो उसको बर्खास्त करने की बात सोची जा सकती है। उसके राजनीतिक परिणाम क्या होंगे इस पर क्या कुछ सोचा गया है?

उ. वह गृह मंत्री हैं और गृह मंत्री की हैसियत से उनको बहुत सी बातें मालूम हैं, जो मुझे मालूम नहीं है। उन्होंने जो बात कही वह किसी संदर्भ में कही होगी।

प्र. उत्तर प्रदेश की राजनीतिक स्थिति का आपको ज्यादा अंदाजा है।

उ. ऐसी स्थिति अबतक निर्मित हुई नहीं। जब कभी दुर्भाग्य से ऐसी बात होगी तो मैं नहीं समझता कोई बहुत बड़ा समर्थन बीजेपी को वहाँ मिलेगा। यह जनरल इम्प्रेशन है हमारा। लेकिन बहुत सा परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है।

Q: But people can change and they are under a propaganda.

A: Under a democracy, people have a right, but then you have certain belief and faith in them. I am confident that under intense pressure in 1981 and 1991 , If they withstood that propaganda and voted against the BJP, I see no reason normally for that thing to be happening now.

Q: Why you are such a controversial figure right from the time you went in politics. Your career has a lots of ups and downs; You have reached the top, but then you have gone down and this seems to be repeating itself like a pattern and you are always embroiled in some or the other

controversy.

A: Well, life won't be worth living if all these ups and downs and challenges were not to come.

Q: So, you welcome it.

A: Well, I won't welcome it, but if it comes I am prepared to face it.

Q: Now with this Emperor Akbar's 450th Anniversary celebrations, again there is another controversy, people are saying much over this. Another point raised is how come other people's Anniversary, for instance, Ishwarchander Vidyasagar, has not merited any importance.

A: Well, we have been celebrating these anniversaries, not only the question of Akbar. The planning is for Ashoka, the planning is for Maharana Pratap, the planning is for Rahul Sankritayayan, literature history, all these people who have made some significant contribution to the ethos of this country. So, it is not focusing on Akbar alone.

Q: No. I want to raise a point that you raised earlier, I have to go back to it; you said you are a devout Hindu and it is a fairly well known fact that you are a follower of Moni Baba of Ujjain and I think you want and had his Darshan regularly on Mahotsava and Parvas. Does he give you any guidance, political guidance or any kind of property guidance to do your work.

A: No., I would like to tell you that I am not his follower. So, don't mistake something which is not there. I know him and I know him for the last fifteen years. I know him as a very devout person, as a spiritual person, who has some innate qualities of spirituality, which he is able to transmit to people, who would like to get close to him. That is the only relationship I have had with him. And till now, he has never asked me to do anything, either politically or otherwise and he knows that he should not ask me to do anything and if ever any such request comes, which will never come I know, I will not act on it unless it is something which is just and proper.

Q: So, that is when you take political decisions, you are guided by your own conscience basically.

A: Basically, I think, I believe in what President Kennedy once said: 'A man must do what he must, for that is the basis of all morality.'

Q: But do you set any limit to your political ambition? What are the limits?

A: Well, political ambition and one's own work should always at some place, a point of time join together. We are all workers in the political field and in the process of our working, naturally, we have certain goals set for us by the organisation, the leaders to which we belong, whom we follow. In that process, I have got into this stream nearly 36 years ago and in these 36 years, I have seen a lot; I have suffered a lot and I have gained a lot in terms of what may be called gaining in politics and I think one should continue with certain basic things, rest follows. That is, one has to be absolutely true to the real needs and demands of the people whom I want to serve. I mean I should not be manufacturing them and I should not be trying to project some-

thing, which is not there. I mean that is an effort. I don't say that I succeed all the time; which is not there.

Second is that the party you belong to, it must claim your total loyalty. I mean we should not play ducks and drades with the party that as long as the going is good, we are with the party, the moment some problem arises, the party gets out of power, we switch on to some other party to gain temporary relief or temporary power. Some people have changed parties for getting a house.

प्र. Coming back to politics राजीव जी का अचानक जाना काँग्रेस के लिए बहुत फर्क लाने वाली बात होगी। पहला सवाल यह है राजीव जी अगर होते तो आज के पॉलिटिकल सिनेरियों में क्या फर्क होता, वह कैसे टैकल कर रहे होते? हालाँकि यह हाईपोथेटीकल सवाल है लेकिन इस बात को ध्यान मे रखते हुए.... It is a hypothetical situation, but it should be interesting to know your answer to this.

A: Well, I think, as you say, it is a hypothetical question, but I cannot claim to be the only one, but I was fortunately one of those who had the opportunity to work with him closely and I can say that he had instincts - I won't say dislike but aversion for anything narrow, whether it was religion, whether it was politics or whether it was any issue. He had a certain broad outlook in matters. So far as the secular ideal is concerned, I think he was totally wedded to it as far as I know him and his reactions naturally were governed by that.

The third thing which I found, which I think, he had inherited from his mother and his grand father was a basic belief in the people of India and to see that the country was never put in a position where it was looked down upon by anyone else.

काँग्रेस के आपसी संघर्ष से चुनाव में पार्टी को नुकसान

4 नवम्बर 1993 को जयपुर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

Q: Congress infighting is a major factor in hampering the Congress prospects. You are contesting a large number of rebels in Rajasthan. There have been last minute changes in allotment of tickets. How do these thing reflect on party's prospects?

A: There is a process and a stage in political activity and there is nothing peculiar to this election. This is a phenomenon of every election. To some extent this situation does hamper the prospects of some parties, but ultimately this factor does not influence beyond a certain limit. I think the same phenomenon you can see now also in the case of practically all the parties, why only the Congress party. But basically it will boil down to a contest at least in Madhya Pradesh and Rajasthan between the BJP and the Congress with minor parties thrown in. And in this, the Congress party, in spite of all that is apparent, I have faith that it will not damage in that way

where it could be stopped from getting the majority in the State legisature. Yes, some rebels might affect some decision here and there. The reason why I am saying this is that in both these States ---- also in Uttar Pradesh ---- the Congress workers have had the experience of two years of totally unscrupulous and totally anti-people government of BJP and when the BJP went out to harass, oppress and victimise the Congressmen, they did not make any distinction about factions in the Congress party that which Congressman belongs to whose group. Each and everyone was victimised. There fore that feeling is bound to come and it is already surfacing, that all right, between us there might be some differences but we cannot allow government of B.J.P. to come back to power.

Q. There is already an indication that the Congress has not been able to modify the Muslim sentiment in favour of the party. How do you assess the situation so far as Muslim votes are concerned for the party?

A: You see, the emotional reaction is definitely not yet entirely over. But I see a very distinct realisation amongst our minority voters that emotion alone hope that ultimately they will also think on national issues and the threat of communal menace that is before us and they will cast their vote very cautiously.

Q. You are such a seasoned man. You cannot just say hope. What is your feed back so far? Where is the vote going?

A: Well I think some people venture to go more than what they should. I am only saying that I have every hope that this will happen.

Q. What are the strong points in favour of that opinion?

A: One is the total lack of performance of the previous BJP governments on every single front on which a government is judged. Number two, their failure to project any coherent policy or programme for the specific States for which they are fighting. Number three, the realisation amongst the common man that the danger of divisive politics is real and it could totally destroy the democratic fabric of this country. It is on these three specific things that I am basing my assessment.

प्र. अभी-अभी जो सवाल पूछा कि कॉंग्रेस के पास ऐसे क्या इशूज हैं जिन पर वोट चाहिए?

उ. एक तो कॉंग्रेस ने जो कुछ भी विषम परिस्थितियों में पिछले दो सालों में राष्ट्रीय स्तर पर किया है, इन प्रदेशों में तो कॉंग्रेस शासन नहीं था, इन प्रदेशों में हमने क्या किया वह तो हम बता नहीं सकते, इन प्रदेशों में इतना ही बता सकते हैं जब कभी और जहाँ भी भारतीय जनता पार्टी ने वहाँ के नागरिकों को और खासतौर से समाज के कमजोर वर्ग को प्रताड़ित करने की कोशिश की कॉंग्रेस खड़ी हुई है, उसने संघर्ष किया है। वहाँ तो हम इतनी ही बात कह सकते हैं- चाहे राजस्थान हो, चाहे मध्यप्रदेश हो, चाहे उत्तर प्रदेश हो और चाहे हिमाचल प्रदेश हो। जहाँ तक पोजिटिव साइड है हम राष्ट्रीय स्तर पर कह सकते हैं कि देश की आर्थिक व्यवस्था को बिल्कुल विनाश के कगार पर ले जाकर खड़ा कर दिया था। वहाँ से हम आज जहाँ हैं, वह कोई मामूली उपलब्धि नहीं

है। खासतौर से देश के अंदर जो टेररिज़्म है उनका एक दलदला फैला था उसमें काफी कमी आई है। पंजाब, फिर से प्रजातांत्रिक प्रक्रिया में पूरी तरह से आ गया है, नार्थ-ईस्ट में काफी हदतक स्थितियाँ सुधरी हैं, एक-दो प्रदेशों को छोड़कर। अब सब का ध्यान स्वाभाविक कश्मीर पर रहेगा क्योंकि वहाँ पर काबू पूरी तरह से नहीं हो सका है। दूसरे देश के अंदर राजनीतिक प्रक्रिया को चलाने के लिए जो स्वस्थ और स्वाभाविक आधार होना चाहिए मैं समझता हूँ काफी हद तक उन पर अमल भी हुआ है। और आगे चलने की कोशिश भी हम कर रहे हैं। मैं समझता हूँ इन्हीं सब कारणों से एक तरफ भारतीय जनता पार्टी की स्वेच्छा चारिता से संचालित राजनीति और काँग्रेस पार्टी की पोजिटिव चीजों का मूल्याँकन जनता जरूर करेगी।

हिन्दुस्तान को आप देखेंगे तो आपको दिखेगा कि यहाँ वे सब चीजें हैं जिससे यह कौम मज़बूत बनती और आगे बढ़ती है। यहाँ न जाने कितने धर्मों को मानने वाले लोग हैं? मुसलमान हैं, हिन्दू हैं, सिक्ख हैं, ईसाई हैं, पारसी हैं, और भी बहुत से धर्म के लोग है। धर्म हमारा निजी मामला है, कौन किस धर्म को मानता है, इसमें किसी दूसरे को दखलन्दाजी करने का अधिकार नहीं है। मुझे हरदम यह कहते हुए गर्व होता है कि मैं हिन्दू हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि मैं सच्चा हिन्दू तभी हो सकता हूँ जब मैं सारे धर्मों को उतना ही सम्मान और आदर दूँ जितना मैं हिन्दू धर्म को देता हूँ। यही भारत की खासियत हैं।

—श्री अर्जुनसिंह

21 नवम्बर 1994

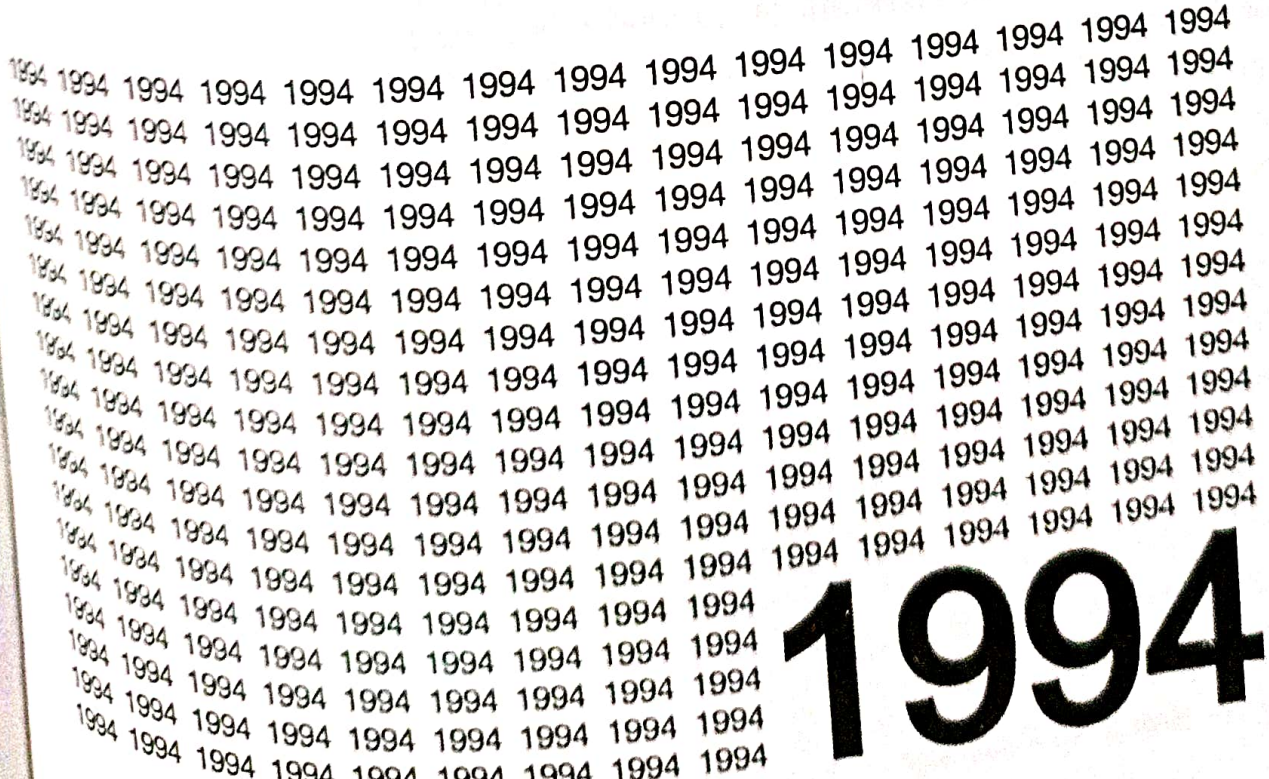

1994

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

भारत माता के बारे में सोचें

5 मार्च 1994 को टी.आर.एस. कॉलेज रीवा में सम्बोधन के प्रमुख अंश—

आदरणीय प्राचार्य महोदय, छात्र संघ के अध्यक्ष महोदय और अन्य सभी पदाधिकारीगण, सभी छात्र बंधुओं और छात्राओं। सबसे पहले तो हम सब उन साथियों को जो गेट के पास अपनी माँग बड़े जोर-शोर से रखना चाह रहे हैं, उन्हें धन्यवाद देना चाहते हैं और उनकी उन सब बातों को सुनकर एकाएक 1952-53 की स्मृति ताजा हो आई। वो भी इतना परेशान हमको नहीं करती थी लेकिन कुछ यहाँ ऐसे लोग विराजे हैं जो उस वक्त छात्र रहे पर आज यहाँ अध्यापक हैं। हम इतना ही कहना चाहते हैं कि आज के समय में ही जो न्यायोचित माँग हैं या अन्य कोई आवश्यकता हैं उसके बारे में किसी प्रकार की कमी न रखी जाय और उसको पूरा करना चाहिए। साथ ही साथ इस चीज की सुध रखने की जरूरत थी कि आज देश को कौन सी चीज की आवश्यकता हैं। कुछ भारत माता की माँग हैं, वो किसके पास जाय। उनका पहला हक इस देश के नौजवानों पर हैं और अगर ये देश के नौजवान युवक और युवतियाँ इन सब चीजों से अपने को दूर कर लें या कि महत्व नहीं दें तो इस देश का भविष्य बहुत अंधकारमय हो जाएगा।

हमारा सबसे यह कहना है कि बाकी सब चीजें हो लेकिन देश को क्या चाहिए। उस पर कभी दो मिनट का ही सही, ध्यान जरूर जाना चाहिए। आज सबसे ज्यादा जरूरत इस बात की है कि हम चाहे किन्हीं परिस्थितियों में हो, जहाँ भी हो कोई भी काम करते हो, छात्र हो या छात्र न हो, नौकरी में हों हर समय हर क्षण यह बात अपने दिमाग में रखना चाहिए कि हमारे किसी काम से ऐसा कुछ न हो जिससे समाज में किसी प्रकार से विध्वंशकारी परिस्थितियाँ निर्मित हो। कोई तालमेल गड़बड़ हो, किसी भी भावना को धक्का लगे। देश को जोड़कर रखने की आज सबसे बड़ी आवश्यकता है।

जहाँ तक माँगों का सवाल हैं, थोड़ा फर्क हैं, मध्यप्रदेश या कि राज्य सरकार के काम के तौर तरीके में और केन्द्र सरकार के काम करने के तौर तरीके में। आपके आशीर्वाद से जब हम यहाँ के शिक्षामंत्री के रूप में आते थे, तो जो समझ में आता था वो यहाँ घोषणा कर देते थे। आज वह काम हम यहाँ खड़े होकर नहीं कर सकते। लेकिन यह संस्था किसी पक्षपात के रूप में नहीं लेकिन यह अंचल की प्रमुख संस्था के रूप में हैं। महाविद्यालय के रूप में आगे बढ़ने के लिए जिन चीजों की आवश्यकता हैं जिनका उल्लेख इसमें किया गया है। हम प्राचार्य महोदय से यह निवेदन करते हैं कि अपने महाविद्यालय के एक अध्यापक और छात्र संघ के अध्यक्ष महोदय को दिल्ली भेजने का कष्ट करें, किराया हम दोनों ओर का दे देंगे और हमें उम्मीद है कि वो खाली हाथ नहीं लौटेंगे। धन्यवाद, जयहिन्द।

खेल प्रतिभाओं की खोज योजनाबद्ध तरीके से हो

6 दिसम्बर 1994 को इन्दौर के खेल प्रशाल के उद्घाटन के अवसर पर सम्बोधन के प्रमुख अंश —

सम्माननीय मुख्यमंत्री श्री दिग्विजयसिंह जी और माननीय उप मुख्यमंत्री श्री सुभाष यादवजी, श्री अभय छजलानीजी, मध्यप्रदेश मंत्रीमंडल के सभी सम्माननीय सदस्यगण, टेबलटेनिस ट्रस्ट के सभी सम्माननीय सदस्यगण, तथा नागरिक बन्धुओं, मैं अपने को गौरवान्वित महसूस करता हूँ कि आज इन्दौर की एक ऐसी उपलब्धि के अवसर पर मैं आप सबके बीच में हूँ, जिसके पीछे कल्पना, निष्ठा और कार्य करने की अभूतपूर्व क्षमता बनी हुई थी।

श्री छजलानी ने शायद बहुत सी बातों को इस वक्त स्मरण करना उचित नहीं समझा और मैं भी उन बातों का उल्लेख करना उचित नहीं समझता। लेकिन हम सब को यह आभास है, जानकारी है कि इस प्रशाल के निर्माण में केवल लोहा और लकड़ी नहीं लगी है। अगर इस निर्माण की परिकल्पना को समझे बिना, भावना से, और समर्पण से प्रयास नहीं किया जाता तो ये विशाल प्रशाल आज 14 वर्षों में भी तैयार नहीं होता। इन्दौर के सभी नागरिक बन्धुओं ने जो अपने नगर की उन्नति के लिए नगर में आवश्यक साधनों को बनाने के लिए सदैव उत्सुक रहते हैं, ये उनके सहयोग और उनके समर्थन का परिणाम है।

आज खेल जगत में भारत के अन्दर लोगों के मन में काफी कुछ आशाएँ है और साथ ही साथ कुछ आशंकाएँ भी है। इतना बड़ा देश है, लेकिन जब अन्तर राष्ट्रीय खेल प्रसंगों में उपलब्धि का प्रश्न आता है तब हम न्यूनतम उपलब्धि की श्रेणी में आते है। इस परिस्थिति को बदलना जरूरी है। यह केवल भाषण से नहीं हो सकता, केवल पैसों से भी नही हो सकता। यह तो सुविधाओं को उपलब्ध कराके जैसा ये प्रशाल है, हो सकता है। और हर स्तर पर ग्रामीण अंचल में, आदिवासी अंचल में, छोटे-छोटे कस्बों में, शहरों में उन प्रतिभाओं की खोज से हो सकता है, जो छिपी पड़ी है सारे भारत में, लेकिन उनको अवसर नहीं मिलते, साधन नहीं मिलते है, सुख सुविधाएँ नहीं मिलती हैं। एक नहीं अनेक मंगाराम हमारे देश के जंगलों में, बीहड़ो में, है। उनको केवल खोजने की जरूरत है। इस दिशा में एक योजनाबद्ध तरीके से सारे भारत में कार्य शुरू हुआ है। हर स्तर पर प्रशिक्षण देने का कार्य, उनको सक्षम बनाने का कार्य संजीदगी से पूरा करने की चेष्टा की जा रही है, और हमारा विश्वास है कि आने वाले दिनों में जो अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाएँ होगी उनमें भारत अपना नाम फिर से उस अग्रणी क्रम में लिख सकेगा, जहाँ वह सदैव उपस्थित रहता आया है, और उस दिशा में इस प्रयास में यह प्रशाल एक महत्वपूर्ण योगदान देगा।

मैं अभी दिग्विजयसिंह जी से कह रहा था कि आने वाली जो उनकी राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाएँ होगी उनमें से कुछ खेलों के बारे में हम इस प्रशाल में उनका आयोजन करने की जरूर कोशिश करेंगे। उनके सहयोग से, विश्वास है कि ये अच्छी तरह से किया जा सकता है, इस प्रशाल की विशेषताएँ और इसके बारे में जो जानकारी थी वो तो आपको मिलचुकी है। मैं उसे दोहराना नहीं चाहता। मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूँ इन्दौर के सभी आदरणीय नागरिक बन्धुओं का कि उन्होंने अपने गौरव के इस क्षण पर अपने बीच में खड़े होने का अवसर दिया। मैं बहुत आभारी हूँ और छजलानी जी से इतना ही कहना चाहता हूँ कि जब कोई काम करना पड़ता है और करने की इच्छा होती है तो उसके नतीजों को ध्यान में रखना चाहिए। बीच में सफर कितना लम्बा है, चुनौतियाँ कितनी है, सहायक और अवरोधक कौन है, इन सबको अपने स्तर पर समझते हुए अपने प्रयास जारी रखना चाहिए। उन्होंने ऐसा ही किया, इसलिए भले ही 14 वर्ष लग गए लेकिन इन 14 वर्षों में जो उनकी उपलब्धि हुई है, उन सबके लिए हम सब उनको आभार देना चाहते है और उनको बहुत-बहुत बधाई भी देना चाहते है, और इन्दौर के नागरिकों की और से उनको शुभकामनाएँ भी देना चाहते है। धन्यवाद।

मनोरंजन के क्षण भी शिक्षाप्रद हो

6 दिसम्बर 1994 को इन्दौर में एक मनोरंजन पार्क का उद्घाटन करते हुए सम्बोधन के प्रमुख अंश—

माननीय मुख्यमंत्री श्री दिग्विजयसिंहजी, माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री सुभाष यादवजी, इन्दौर के आदरणीय नागरिक बन्धुओं मैं बधाई देना चाहता हूँ रमेश मंगल जी को कि उन्होंने ऐसे पहलू पर निगाह डाली है जो प्रायः अनदेखा रह जाता है। आधुनिक युग की आपाधापी में जैसा कहते है, मनोरंजन के क्षण ढूँढना लोग समय की बर्वादी मानते है। लेकिन एक समन्वित व्यक्तित्व की बनावट के लिए और खास तौर से बच्चों के लिए, कुछ ऐसे आकर्षण होने चाहिए, जहाँ जाकर वो अपने आपको भुला दें, खेल कूद में, मनोरंजन में, लेकिन साथ-साथ ही कुछ ऐसा भी बना रहे जिसे देखने पर उन्हें अपनी दुनिया को समझने का भी एक मौका मिले। जितने भी मनोरंजन पार्क बड़े-बड़े शहरों में बने है उनका यही आधार है।

इन्दौर मध्यप्रदेश का सबसे अग्रणी नगर है और यहाँ इस बात की कमी रही है। मनोरंजन के सिलसिले में ये आम धारण है कि मनोरंजन में समय बर्वाद होता है। लेकिन ये यथार्थ नहीं है, बहुत सी बातें जो बहुत ही संजीदगी से नहीं समझाई जा सकती है वे मनोरंजक पार्क में खेलते कूदते समझ में आती है। और इसीलिए मैं ये निवेदन भी करूँगा, आशा भी करता हूँ कि कुछ विज्ञान की बातें, कुछ भारत के इतिहास की बातें कुछ समाज की उन मूल्यों की बातें, जिनकी बजह से हमारा देश हजारों साल के अपने इतिहास की विरासत पा सका। दुनिया में भाई चारे की बातें इनको समझाने के लिए किसी न किसी पटल पर यहाँ पर उल्लेख होना चाहिए तथा यह भी हो कि हमें एक दूसरे के प्रति सहजता रखना चाहिए ताकि बच्चे उसे देखे, समझे और हमसे आपसे ज्यादा उसे अपने जीवन में उतारने की कोशिश करे। इन्दौर में इस पार्क का निर्माण यहाँ एक नई उपलब्धि होगी। यहाँ के नागरिकों के लिए, यहाँ के बच्चों के लिए, मुझे पूरा विश्वास है कि पूर्ण होने तक ये मंनोरंजन पार्क एक अनुपम पार्क बनेगा। और हमारी भावी पीढ़ी इसका पूरा-पूरा उपयोग करके अपने जीवन में उल्लास घोल सकेगी यही मेरी शुभकामना है। धन्यवाद। जयहिन्द।

धर्म पर आचरण करो

8 दिसम्बर 1994 को रायपुर में काँग्रेस सेवादल की धर्मयात्रा का शुभारम्भ करते हुए आशीर्वचन के प्रमुख अंश—

आदरणीय धृतलहरेजी, सेवादल के सभी सम्मानित साथी और आदरणीय नागरिक बंधुओं, मुझे जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि रायपुर के हमारे साथी इस यात्रा पर निकलने वाले हैं, जो यात्रा काँग्रेस के सभी लोगों द्वारा धर्म यात्रा के रूप में की जा रही हैं। इस देश का हर धर्म हमें प्रेम, भाईचारा एक दूसरे की सहायता करना, अमन चैन रखना और समाज में गरीबों की मदद करना सिखाता हैं। जो इस धर्म को जानते हैं वो सब खुदा को प्यारे होते हैं क्योंकि वही उनकी मर्जी हैं। इस मर्जी के खिलाफ जो लोग आचरण करते हैं। ऐसे लोगों से समाज को हरदम खतरा रहता हैं। इंसानियत बिरादरी को जो कायम रख सकें, मजबूत बना सकें उसी को हमें धर्म मानना चाहिए। हम अपनी अलग भावना और विश्वास के मुताबिक अलग-अलग इबादत करते जाएँ, लेकिन जब ईश्वर की तरफ देखने का मौका आएगा वो सब रास्ते एक हैं। वो केवल दिल का रास्ता हैं, प्यार और बलिदान का रास्ता हैं, भाईचारे का रास्ता है। आज हिन्दुस्तान के सामने बहुत सी मुसीबतें हैं। इसीलिए ये इंसानी बिरादरी को मजबूत करने में जुट गए हैं। और

इस बारे में हम सबको ध्यान रखने की जरूरत है। मैं इन सेवादल के साथियों को बहुत बधाई देना चाहता हूँ कि उनकी यात्रा मंगलमय हो। यही मेरी शुभकामना है। जय हिन्द।

अयोध्या मामले का निर्णय शीघ्र हो

10 दिसम्बर, 1994 को रायपुर की एक आमसभा में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश—

आदरणीय बंसीलालजी धृतलहरे, तथा सभी आदरणीय बंधुओं मैं आपका शुक्रगुजार हूँ कि आपने मुझे यहाँ आने का निमंत्रण दिया और आप सभी भाइयों से मिलने का और आपसे विचार विनिमय करने का मौका दिया। हिन्दुस्तान एक बहुत बड़ा मुल्क है जिसमें न जाने कितने अलग-अलग रीति रिवाजों को मानने वाले, धर्मों को मानने वाले लोग बसते है। यहाँ 14 तो मुख्य भाषाएँ हैं और उसके अतिरिक्त भी न जाने कितनी बोलियाँ हैं। फिर भी यह बात बिल्कुल सबको साफ समझनी चाहिए कि इस मुल्क में विभिन्नता होते हुए भी सभी एक रह सकते हैं। जब हम इस प्रकार की फिजाएँ बनाकर इस देश में रखें, इस प्रकार से कानून और नियम बनाकर रखें जिनके द्वारा जितने भी लोग यहाँ रहते है वह इस बात का विश्वास करें कि वो न केवल इस देश के नागरिक होने के नाते सुरक्षित हैं, बल्कि साथ ही साथ जो भी अपने धर्म, रीति रिवाज और कानून कायदे हैं, उन पर वो बिना किसी हिचक के अमल कर सकते है। उसमें किसी दूसरे की दखलंदाजी नहीं होगी।

इसलिए हमें यह मानकर चलना चाहिए कि सेक्युलरिज्म ही एक रास्ता हैं जिस पर चलकर हम मुल्क को एक रख सकते हैं। अब इसमें जो अलग-अलग लोगों की राय जाहिर होने लगती हैं, कुछ लोग तो शायद उसको समझते नहीं है। इसलिए राय जाहिर करते हैं। एक तबका ऐसा हैं इस देश में, एक विचारधारा ऐसी भी हैं जो समझते हुए भी उसके विपरीत बात इसलिए करती हैं कि उसका वो राजनीतिक लाभ ले सकेंगे। ऐसा उनका भरोसा हैं। पिछले 4-5 सालों में बहुत जोर-शोर से ये कोशिश की गई और बहुत कुछ इस देश में गुजरा। बाबरी मस्जिद भी शहीद हुई, खून खराबा भी हुआ, लोगों की जायदाद नष्ट हुई, बच्चे यतीम हुए, माताओं और बहनें विधवा हुई।

उन सरकारों को भंग किया गया वो लाजिमी था क्योंकि सरकारों में बैठे हुए लोगों ने उन लोगों की मदद की जिन लोगों ने बाबरी मस्जिद को गिराया तो ऐसे लोगों की सरकारें बने रहना तो उचित था ही नहीं। लेकिन फिर तो जनता की अदालत में बात गई और जनता ने भी उनको बहुमत नहीं दिया। किसी एक भी प्रदेश में जहाँ उनके मंसूबे थे, उत्तर प्रदेश हो, मध्यप्रदेश हो, राजस्थान हो, हिमाचल हो, ये चार प्रदेश थे, चारों के चारों में अवाम ने उन ताकतों को शिकस्त दी।

मेरा व्यक्तियों से कोई मतलब नही हैं। इससे एक बात का भरोसा होता हैं और साहस भी जुटता हैं कि देश के आम लोगों के मन साफ और शुद्ध हैं। वे समझते हैं कि मुल्क के हित में क्या हैं? और मुल्क के हित में क्या नहीं है और आखिर जम्हूरियत के द्वारा और होता क्या? अगर सब लोग जो मत डालते हैं जिनको मत डालने का अधिकार है उसमें बहुमत सही ढंग से सोचेगा तो नतीजे सही निकलेंगे।

बाबरी मस्जिद को गिराने का जो मसला है, आपका यह कहना वैसे जायज हैं लेकिन हमें ये बात किस तरीके से करनी चाहिए उस पर बहुत सोच समझकर कदम उठाना चाहिए। देखिए ये मसला करीब 40 सालों से अदालत में चल रहा है और पहले तो माँग यही है कि अदालत में बहुत देरी हो रही हैं कोई ऐसा रास्ता निकाला जाय कि 2-3 साल में ये हल हो जाय। इस प्रकार की अदालती कार्रवाई की जाय उसके अलग-अलग सुझाव भी आए।

इस प्रक्रिया को, इस तरीके को और तेज करने के बारे में जो कुछ भी सोचा जा सकता है वह किया जाना चाहिए। लेकिन मेरी आपसे एक इल्तजा है कि इसको न्यायिक दायरे से बाहर निकालकर फैसला करने की नहीं सोचना चाहिए क्योंकि अगर यह हुआ तो यह उतनी ही बड़ी गलती होगी जितनी बड़ी गलती उन्होंने की थी। और अगर ये अविश्वास की खाई गहरी हो गई तो फिर मिल बैठकर विचार विमर्श करके भाईचारे के आधार पर जो फैसला करने की जो गुंजाईश है, वह भी समाप्त हो जाएगी। इसलिए इस न्यायिक प्रक्रिया को और तेज किया जाय जैसा कि पहले कहा गया था कि बजाय नीचे की अदालत से चलते-चलते 20 साल में मामला सुप्रीम कोर्ट में पहुँचे। ऐसे कुछ उपाय किए जा सकते है कि ऊपर की अदालत में ही जल्दी से जल्दी ये बात फैसले के लिए लाई जाय और फिर जो भी फैसला हो उनके आधार पर, आपस के भाईचारे के आधार पर हम इस चीज का निर्णय करें, तो यो चीज स्थाई हो फिर उसमे किसी को दखलंदाजी बाद में करने की गुंजाईश नहीं होगी। मै इस बात को इसलिए कह रहा हूँ कि क्योंकि मै इसमे विश्वास करता हूँ कि किसी को खुश या नाराज करने की गरज से मैं कोई बात कभी करता नहीं।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशों में

सभी धर्मों का सम्मान करें

13 फरवरी 1994 को जीन के होडा मैदान में विशाल रैली में सम्बोधन के प्रमुख अंश—

सम्मानित अध्यक्ष, माननीय भूपेन्द्रसिंहजी होडा, दिल्ली की आदरणीय बहन शीला दीक्षितजी, और इस क्रॉंति रैली में आए हुए लाखों बहनों, भाइयों, नौजवान साथियों, यह सही मायने में क्रॉंति रैली है और इस क्रॉंति का आह्वान, इसकी प्रेरणा उस क्रॉंतिकारी व्यक्तित्व से मिली है, जिसे हम सब लोग सम्मान और श्रद्धा से श्रीमती सोनिया गाँधी संबोधित करते हैं।

हिन्दुस्तान का इतिहास जब, करवट बदलता है, तो ऐसे ही नजारे सामने आते हैं, जो आज हम सब को देखने को मिल रहे है। श्रीमती सोनिया गाँधी ने हिन्दुस्तान को, कॉंग्रेस को, उन मुद्दों, मूल्यों आदर्शों से फिर से जोड़ने का संकल्प लिया है, जो मूल्य आदर्श और संकल्प भारत के सदैव गौरव रहे हैं। भाईचारा, सभी धर्मों का बराबर सम्मान, गरीबों के हित के काम, हर प्रकार से माताओं, बहनों को सम्माननीय स्थान देकर उनके अधिकारों की रक्षा करने का काम, यही सब भारत की पहचान रहे हैं और आज श्रीमती सोनिया गाँधीने वही संकल्प किया है और उनका संकल्प देश के करोड़ों लोगों के मन में बैठ गया है, उसका एक जीता-जागता प्रमाण आज इस विशाल रैली में हरियाणा प्रदेश में हम सब देख रहे हैं।

आज हरियाणा के लाखों नागरिकों को हम सब अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। उन्हें धन्यवाद देते हैं और प्रदेश कॉंग्रेस अध्यक्ष के साथियों को बहुत-बहुत बधाई देते हैं कि उन्होंने हरियाणा की इस जागृति को इस मैदान में लाकर उड़ेल दिया है। हरियाणा की प्रगति नारों से नहीं हुई है। हरियाणा की तरक्की ठोस काम से हुई है। आज सारे मुल्क मे हरियाणा का अपना स्थान है। आज उस स्थान को भी धक्का लगने की नौबत आई है और इसलिए यहाँ के किसानों का, नौजवानों का आज यह फर्ज है कि कॉंग्रेस के पीछे मजबूती से खड़े हों, ताकि, यहाँ की सरकार जो केवल अपने लिए काम करती है, उस सरकार को बदलकर जनता के लिए काम करने वाली सरकार को हरियाणा में लाया जा सके।

यह बात हम सब इसलिए जानते हैं, क्योंकि हरियाणा के जागरूक लोगों ने वो सब काम करके दिखाए हैं मौके-मौके पर जिससे काँग्रेस की शान बढ़ी है और हिन्दुस्थान की शान बढ़ी है। यह मौका है एक साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने का। यह मौका है एक ऐसा वातावरण बनाने का, जिसमें कमजोर से कमजोर तबके के लोग सुख शांति से रह सकें, अपनी तरक्की कर सकें। यह मौका है, जब साम्प्रदायिक शक्तियों का दृढ़ता के साथ मुकाबला करके उन्हें परास्त किया जाए।

आज इस मौके पर हम काँग्रेस के साथियों का सम्मान और अभिवादन करते हैं और उन्हें बधाई देते हैं उन्होंने वह मशाल अपने हाथों में सम्हाल ली है जो मशाल हिन्दुस्थान को इक्कीसवीं सदी में ले जाएगी। सोनिया जी के नेतृत्व में और श्री राजीव गाँधी जी की प्रेरणा से। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

मुझे गर्व है कि मैं हिन्दू हूँ

21 नवम्बर 1994 को उत्तरप्रदेश के एक शहर में भाषण के प्रमुख अंश —

क्षेत्र के सांसद महोदय, और काँग्रेस के उम्मीदवार श्री निसार अहमदजी, यहाँ पर पधारे हुए काँग्रेस के सभी साथियों, युवक काँग्रेस के साथियों, हमारे सामने बैठे हुए सभी बुजुर्गगण, बहनों और भाइयों, मुझे आप के बीच में आने का आज आप से मुलाकात करने का, मुखातिब होने का एक मौका मिला है, जो मैं अपने के लिए बहुत खुश - किस्मती समझता हूँ।

सारे हिन्दुस्तान में वो तस्वीर हमारे देश के भविष्य की बन सकती है सुंदर भविष्य की, वो तभी होगा, जब हम एक-दूसरे के कंधे से कंधा मिला कर चलें और अपने दिल और दिमाग में इस बात को साफ रखे कि भारत के अंदर ज़म्हूरियत का तकाजा है कि जब भी चुनाव हों, तो हम केवल अपने नजरिए से, छोटे-छोटे नजरिए से देखने की कोशिश न करें। वैसे तो अपना निजी नज़रिया कुछ हद तक असर करता है और होना भी चाहिए, लेकिन जो मुद्दे हैं, वे मुद्दे सिमट कर केवल दो-चार लोगों तक सीमित नहीं हो जाना चाहिए, क्योंकि ज़म्हूरियत का यह तकाजा है कि आप का फैसला तो आप का फैसला है, लेकिन वो फैसला ऐसा होना चाहिए, ताकि हिन्दुस्तान में जम्हूरियत की जड़ें और मजबूत होती चली जाएँ।

यही एक शासन की प्रणाली है, तौर-तरीका है, जिस में आम-आदमी को बिना किसी भेद-भाव के अपने फैसले से किसी प्रदेश का, किसी क्षेत्र का या देश के बारे में फैसला करने का अधिकार है और ये अधिकार जो आप का है, वोट डालने का, इस को हमारे देश के संविधान में सब से बड़ा और महत्वपूर्ण अधिकार माना गया है। अगर आप सब लोग इस नजरिए से देखेंगे तो जो भी फैसला आप का होगा, वह आप का हक है। वह फैसला देश के हक में होगा, जम्हूरियत के हक में होगा।

हिन्दुस्तान को आप देखेंगे तो आपको दिखेगा कि यहाँ तो सब चीजें हैं, जिस से यह कौम मजबूत बनती है आगे बढ़ती है। यहाँ न जाने कितने धर्मों को मानने वाले लोग हैं? मुसलमान हैं, हिन्दू हैं, सिक्ख हैं, ईसाई हैं, पारसी हैं, और भी बहुत से धर्म के लोग हैं। ये धर्म हमारा निजी मामला है। कौन किस धर्म को मानता है, इस में किसी दूसरे को दखलन्दाजी करने का अधिकार नहीं है।

साथ ही साथ हम चाहे जिस धर्म में विश्वास करते हों। यह हमारा भी फर्ज़ है कि हम दूसरे धर्म के मानने वाले लोगों की भी उतनी ही इज्जत करें, जितना अपनी धर्म की करते हैं। मुझे हर दम यह कहते हुए गर्व होता है कि मैं हिन्दू हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि मैं सच्चा हिन्दू तभी हो सकता हूँ, जब सारे धर्मों को मैं उतना ही सम्मान

और आदर दूँ, जितना मैं हिन्दू धर्म को देता हूँ। यही भारत की खासियत है।

इसीलिए पिछले पैंतालीस-छियालीस वर्षों से जो ज़म्हूरियत का एक नक्शा सारे भारत में बना, मजबूत हुआ है, उस के पीछे यही सोच यही नज़रिया है। इस में जब-जब कमजोरी आती है और छोटे-छोटे फिरका-परस्ती के विचारों में पड़ कर लोग फैसले करने लगते हैं, तो उस से देश भी कमजोर होता है, देश के अंदर फितरत भी पैदा होती है और तबाही भी पैदा होती है।

यदि कभी कोई गलती हो जाए। कोई गफ़लत हो जाए, जो इंसानों से ही होती है तो इस को सुधारने की जरूरत है। उस को सही रास्ते पर लाने की जरूरत है। और मैं आप को यह यकीन दिलाना चाहता हूँ कि काँग्रेस पार्टी जरूर खामियों को दूर करने की कोशिश करेगी। गलतियों को सुधारने की कोशिश करेगी और साथ ही साथ जो हमारी विरासत है, हम इस विरासत के डोरे से ही बँधे हैं। उस को छोड़ कर काँग्रेस की पहचान और नहीं हो सकती।

मैं यह नहीं कहता कि देश किसी एक व्यक्ति की वजह से बढ़ा है, किसी एक पार्टी की वजह से बढ़ा है, लेकिन देश आगे बढ़ा है और उस के पीछे कारण यही है कि आजादी हासिल करने के बाद जो हमारे उस समय के रहनुमा थे, जिन के हाथ में अँग्रेजों ने देश की बागडोर छोड़ कर यहाँ से गए। उन्होंने सारे देश की बात सोची। हर रास्ते पर चलने के लिए सब को साथ चलाने की कोशिश की। आज रोज़गार को देखें, बड़े-बड़े कारखाने लगे। इस्पात के कारखाने लगे। बिजली की योजनाएँ बनीं। सिंचाई की बनीं। बिजली घर बनाने की फैक्ट्रियाँ बनी। मशीन टूल्स के कारखाने बने। ये सब किसलिए था? इसलिए था कि इन चीजों को अगर हम कर लेंगे तो किसी समय पर जब हमें तेजी से आगे बढ़ना होगा तो यह सब हमारे काम आएँगे।

आज वो स्थिति देश के सामने आई है। जब कि तेजी से आगे बढ़ने के सब साधन जुट गए है, इस देश के अंदर और अब हमारे और आप के ऊपर निर्भर करता है, कि हम इन साधनों का उपयोग करके बेरोजगारी दूर करने के लिए आगे रोज़गार पैदा करे यह केवल सरकारी नौकरी से तो नहीं हो सकता। रोज़गार देना और बेरोज़गारी को दूर करना देश की पूरी तरह से तरक्की पर निर्भर करता है। रोज़गार खुलेंगे तो कारखाने लगने चाहिए खुद अपने हाथों से रोज़गार करने वालों को सहायता मिलनी चाहिए।

अगले दस वर्षों में भारत दुनिया के तीन या चार जो सब से महत्वपूर्ण और शक्तिशाली देश होंगे, उन की कतार में जाकर खड़ा हो जाएगा। अगर इस वक्त हमने गफलत की और छोटी-छोटी बातों में उलझ कर अपनी एकता कमजोर कर दी, अपने देश में रहने वाले लोगों को आपस में लड़ाने के लिए उतर आए, अपने ही स्वार्थ के लिए कहीं धर्म का नाम ले कर, कहीं भाषा का नाम लेकर और कहीं जाति का नाम ले कर तो हमारा ध्यान भी बँट जाएगा और हमारा काम भी बँट जाएगा।

तो इस मौके का फायदा अगर देश नहीं उठा पाएगा तो हम फिर दुनिया में पिछलग्गू बन जाएँगे। इसलिए यह जरूरी है कि इस समय बहुत सोच-समझ कर आपको फैसला करना है और यह फैसला आप ही करेंगे। हम लोग तो केवल आपके सामने दरख्वास्त कर सकते हैं। अपनी राय आप के सामने रख सकते हैं। अंतिम फैसला तो आपको करना है।

यह तब ही तक और अच्छी तरह से होता रहेगा, जब तक अवाम भी इसबात को ध्यान में रखेगी और जम्हूरियत की कसौटी पर जब फैसला करने का मौका आए, तो उस समय आप के दिल और दिमाग में आप इस बात को रखेंगे तो फिर कोई खतरा इस देश को पैदा नहीं हो सकता। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह ज़ज़बात जो आप के सामने हैं, उस पर आप गौर करेंगे और एक दरख्वास्त यह भी है कि आप के यहाँ जिस दिन वोट पड़े, आप इन सब बातों पर विचार कर के काँग्रेस के हाथ के पंजे के निशान पर अपना वोट देने की मेहरबानी करें।

मैं यह कहता हूँ कि कॉंग्रेस को कुछ बातों के बारे में अपने आप को सुधारने की भी जरूरत है। जो शक और सुबहे पैदा हो गए हैं, उस को दूर करने की जरूरत है और वो दूर किए जाएँगे, किए जा रहे हैं क्योंकि हम जानते हैं कि जब तक हमें पूरा विश्वास नहीं मिलता है, देश के लोगों का, हर धर्म, हर जाति के, हर वर्ग के लोगों का, तब तक देश का काम नहीं हो सकता है और कॉंग्रेस केवल देश के काम को करने के लिए पैदा हुई थी और जिंदा रहना चाहती है।

मुझे आशा है कि मेरी इस अर्ज को आप ध्यान में रखेंगे। सोच-समझ कर फैसला करेंगे। जो फैसला आप के इस क्षेत्र के हक में हो। अपने क्षेत्र से एक सच्चे प्रतिनिधि चुनने के लिए हो और साथ ही साथ पूरे देश के लिए हो। यही मेरी आज आपसे दरख्वास्त है। आपने मेरी बातों को सुना, इस के लिए मैं बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। आप सब के अच्छे और सुंदर भविष्य के लिए मंगल कामना देता हूँ। जय हिन्द।

सत्ता की लड़ाई में भ्रष्टाचार का बोलबाला

दिसम्बर 1994 को पंजाब के एक शहर में भाषण के प्रमुख अंश—

सोढ़ी समाज के आदरणीय शरण साहब, मंच पर बिराजे हुए हमारे अन्य साथियों और इस रमजान के पवित्र महीने में आप यहाँ पर इकट्ठे हुए हमारे सब भाई सबसे पहले तो मैं आप सबसे इस बात के लिए माफी चाहता हूँ कि प्लेन लेट होने की वजह से मैं समय पर नहीं आ सका और आप सब लोगों के साथ इस कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सका उसका मुझे भी दुःख है। इसकी वजह से आपको तकलीफ हुई इसलिए हम माफी चाहते हैं। यहाँ बहुत कुछ आप लोगों से कहा गया हैं। मैं उन बातों को दोहराना नहीं चाहता हूँ।

मैं कॉंग्रेस का एक बहुत साधारण सा सिपाही हूँ। मैंने जो अपना फर्ज समझा वो फर्ज अदा करने की कोशिश की। कुछ लोगों ने ऐसा सोच लिया कि जैसे हमसे कुछ छीना जा रहा हैं, जैसे कुछ अदावत हो रही है। क्या कोई अपनी मातृ संस्था से पलायन करता हैं? माँ से बराबरी नहीं होती। जब किन्हीं कारणों से ऐसे माहौल में थम जाय जहाँ उसका परिवार रहने लगे तो हर चलते इंसान का, हर बच्चे का यह फर्ज है कि वो माँ को सजदा करें। हाथ जोड़े, आज कॉंग्रेस हिन्दुस्तान की एक महत्वपूर्ण सियासी पार्टी है जिसकी आधारशिला नारों से नहीं बनी है।

मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ 30 जनवरी 1948 के दिन जब गोडसे ने गाँधीजी के ऊपर गोली चलाई और गोड़से से पूछा गया बाद में कि तुमने ऐसा क्यों किया तो और कारणों के साथ-साथ उसने यह भी कहा कि गाँधी जी ने जो पाकिस्तान का हक बनता था, 20 करोड़ रुपये उस जमाने की बात थी, वो 20 करोड़ रुपये देने के लिए सरकार पर दबाव डाला। लेकिन भाई-भाई के बँटवारे के होने के बाद भाई का फर्ज बनता हैं वो कॉंग्रेस ने किया, यह है कॉंग्रेस का इतिहास। लोग विश्वास, आस्था और समर्पण की भावना से शामिल हुए हैं, वे संस्था के भटकाव को रोकने के लिए संस्था को कमजोर नहीं होने देने के लिए कोशिश करते रहेंगे। हम जिऐंगे भी और मरेंगे भी संस्था के लिए।

यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसा अधिकार हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने हमारे हाथ में रखा है, जिस अधिकार का प्रयोग करके इस देश का छोटा से छोटा, गरीब से गरीब अपने देश की सियासत को चलाने की कहा करता है। अगर वो उनका हक है किसी भी वजह से हमसे छीन लिया गया या हमने उसका इस्तेमाल सही रूप से नहीं किया, तो देश में जम्हूरियत कमजोर होगी और देश में जम्हूरियत कमजोर होगी तो इसका मतलब ये होगा कि गरीब का

अधिकार कम होगा। काँग्रेस के जो हमारे साथी है, वो इसको समझने की कोशिश करें। आप अंदाज करिए 20 हजार करोड़ रुपये का गोलमाल पिछले दो साल में इस देश में हो गया और ऐसा लगता है कि किसी के काम रूके नही। आज तक एक शब्द यहाँ तक की चार्टशीट में भी, आप पढ़ने की कृपा करें, धोखे से भी गोलमाल का जिक्र नहीं किया गया। जैसे उसका जिक्र करने से ही मामला आपके हाथ से निकल जाएगा। एक केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि इस मुल्क को चाहिए कि वह पूछे कि वह कौन व्यक्ति है जो इसमें शामिल है।

प्रधानमंत्रीजी से मैं उम्मीद करता हूँ कि वे स्वयं वक्तव्य देकर या तो इस प्रस्ताव को माने और अगर नहीं मानना चाहते हैं, तो उसके कारण इस मुल्क को बताए कि वो किस वजह से इस बात को नहीं करना चाहते, कौन सा खतरा है, इस काम को करने से और किसको बचाने की कोशिश हैं। ये बातें आप और हमारे लिए अहम इसलिए है क्योंकि आने वाला जो समय हैं उसमें हमारा मुल्क नाजुक दौर पर चल रहा हैं और इतिहास के बहुत नाजुक दौर पर किनारे आकर खड़ा हैं।

अभी जो जेलसिंह भाई ने बहुत सी बातें बताई। आज अखबार में निकला है कि राजेश पायलट जी ने एक बयान दिया हैं 4 दिसंबर को, क्या संयोग हैं, कि अड़वाणी जी भी वही, वाजपेयी जी भी वही, प्रधानमंत्री जी भी वही, और लोकसभा के स्पीकर भी वही, उनके सामने पायलट जी ने यह बात कही और उसका जवाब क्या दिया गया कि आपको मंत्री होने के नाते इस प्रकार की बातें नहीं करना चाहिए। अगर बात है भी, मैं तो चाहता हूँ कि हम पर मुकदमा चलाया जाय हमें दबा नहीं सकते। वो चाहते हैं कि मुकदमा चलाया जाय उस मुकदमे के डर से मैं अपनी बात बंद कर दूँ या दूसरी बात करने लगूँ। मैं तो कहता हूँ कि जो कल चलने वाला हैं वह आज चलाया जाय क्योंकि जिस वक्त मुकदमा चलेगा तो वो पूरी कहानी जो-जुलाई, 91 से शुरू होती हैं और दिसंबर 92 में जाकर खत्म होती है उसकी सिलसिलेवार सब चीजें सामने आएगी तब लोगों को मालूम होगा कि किस प्रकार से हमारे विश्वास पर विश्वासघात किया गया हैं।

अभी एक भाई ने पूछा कि 91 पृष्ठ का पत्र क्यों लिखा, पत्र तो हमारा 11 पन्नों का ही था लेकिन उस पत्र के साथ वो सब कागज जिससे ये बात उजागर होती है कि किस प्रकार से जुलाई से चलकर जब पहली दफा वहाँ इक्ट्ठा होने की बात कही तब का और जनवरी, जब व्हाईट पेपर बनाने की बात आई, सिलसिलेवार ब्योरा वो सब मैं चाहता था कि उनके पास भी जाय उनको भी पुरानी बातें याद आ जाय क्योंकि वह तो देखी परखी चीजें हैं, जबानी तो नहीं हैं और सब बातें साफ-साफ हो जाय कि किस प्रकार से गफ़लत में पड़कर, माफ़ कीजिए वो कहते हैं कि हम इंतजार कर रहे थे, कौन सा ऐसा विश्वास था और इस तरह से हमारे देश के इतिहास में एक ऐसा झटका दिया है जिस झटके से देश को निकालना बहुत मुश्किल है और यही मेरी इल्तजा थी कि आज हिन्दुस्तान में अक़लियत के मन में गम और गुस्सा हैं तो काँग्रेस की हैसियत से एक हिन्दुस्तानी की हैसियत से, हमारा फर्ज़ है कि हम उनके दिल से ये गम और गुस्सा निकाले और इंसानों के बीच में जो रिश्ते होते हैं उनको ध्यान में रखकर अगर इस के लिए माफ़ी भी माँगना पड़े तो माँगना चाहिए। ये बातें हम सबको केवल अपने लिए नहीं और पार्टी के लिए भी नही इस मुल्क के लिए करना जरूरी है क्योंकि भारत का संविधान हिन्दुस्तान के करोड़ो लोगों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इसलिये इस मौके पर मैं आप सबसे केवल एक ही इल्तज़ा करूँगा एक ही प्रार्थना करूँगा कि हम सब मिलकर आज अपने मुल्क की बात सोचें, देश की बात सोचे, हम कही जाकर घुटने टेकते हैं, कही जाकर इबादत करते हैं, ये हमारा निजी मामला हैं। इसमें किसी को दखल करने का कोई अधिकार नही है लेकिन जब इबादतगाह से बाहर आते है तब हम इल्तज़ा हिन्दुस्तानी है। अगर इस बात को हमने ध्यान में रख लिया तो दुनिया की कोई ताकत नहीं

हैं जो हमको आगे बढ़ने से रोक सकें। दुनिया की कोई ताकत नही है जो देश में रहने वाले करोड़ों लोगों को आगे बढ़ने में सफलता न दिला सकें। जब तक हम इस काम को नही कर सकेंगे तब तक भारत आगे नहीं बढ़ सकता। सूफियों का हमारे देश के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा हैं उनके मुँह से जो कुछ निकला हैं वह दर्द पर मल्हम लगाने का काम करता है। जब कभी उन्होंने थोड़ी सी बैचेनी से कोई बात कही है तब बैचेन लोगों को दवा देने का काम किया हैं जब कभी हम भटके हैं उनके मुँह से जो निकला हैं वह हमारे भटकाव को रोकने में मददगार रहा है। आज उनके लिए इस महफिल में हम सब आए हैं। ये हमारे लिए सौभाग्य की बात हैं आप सबको मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकारवार्ता

साक्षरता अभियान का अच्छा प्रभाव

6 दिसम्बर 1994 को इन्दौर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्न: काँग्रेस को पुराना चुनाव चिन्ह नहीं मिला। क्या यह काँग्रेस की हार है? आपको क्या लगता है?

श्री अर्जुनसिंह: अब मुझे क्या लगता है? ये तो काँग्रेस का अन्दरूनी मामला है। ये तो मैने सुबह भी कहा था कि जो चुनाव चिन्ह नहीं दिया जा सका है, ये बहुत बड़ा खेद का विषय है। कभी-भी मध्यप्रदेश में ऐसी स्थिति नहीं आई। अब यह क्या कैसे हुआ ये तो ए.आई.सी.सी. देखे।

प्रश्न: श्यामा चरण जी कह रहे है कि ये सरकार की नीतियों की विजय है?

श्री अर्जुनसिंह: सार्वजनिक रूप से तो मैं इस बारे में कुछ नहीं कहना चाहूँगा अगर उसको काँग्रेस की विजय मानले तो यह काँग्रेस सरकार की वजह से हैं। हाँ अगर और किसी की विजय है तो मुझे नहीं मालूम। वैसे भारतीय जनता पार्टी वाले तो कह रहे है, कि उनकी विजय है।

प्रश्न: छह दिसम्बर की घटना का चुनावों पर कैसे प्रभाव पड़ेगा?

श्री अर्जुनसिंह: अब देखिए 6 दिसम्बर की घटना जो है वो तो है। वह हमारे देश के प्रजातंत्र के लिए बहुत ही दुःखद है। लेकिन सबसे बड़ी बात जो है मैं समझता हूँ कि आप जैसे लोगों की नजर से यह कैसे ओझल हुआ। परन्तु देश के प्रजातंत्र के लिए यह उत्साह वर्धक पहलू है कि जटिल समस्याओं के हल के बारे में भी हमारी भावनाएँ जुड़ जाती है। गलत अवधारणाएँ छिप जाती है। उनका भी प्रजातांत्रिक तरीके से इस देश के मतदाता हल करना चाहते है और उन्होंने हल करके दिखाया भी। ये हमारे देश के प्रजातंत्र की परिपक्वता है और मेरा दृढ़ विश्वास है चाहे जितनी इसके बारे में उठा पटक की जाए, भारत के अवाम का समर्थन इस काम के लिए है, और अब भारतीय जनता पार्टी पछता रही है। ये पछतावा बहुत दिन तक रहने वाला है।

प्रश्न: क्या लोकसभा चुनाव में भी?

श्री अर्जुनसिंह: बहुत दिन तक यह प्रभाव रहेगा। यह मै कह रहा हूँ। लोकसभा चुनाव तो अभी डेढ़ साल बाद ही है।

प्रश्न: एक साल पहले जो विधान सभा के चुनाव हुए थे उसमें काँग्रेस को शहरी क्षेत्रों में पराजय का सामना

करना पड़ा था। एक साल बाद हुए स्थानीय चुनावों में काँग्रेस ने शहरी क्षेत्रों में विजय प्राप्त की तो क्या इस चुनाव के परिणामों को आप शहरी जनता का सरकार के पक्ष में सकारात्मक जन आदेश मानते है?

श्री अर्जुनसिंह: ये प्रजातंत्र में जन आदेश ही तो निर्णायक होता है। इसको नकारात्मक तो मान नहीं सकते आप, लेकिन जो मैंने पहले बात कही ये अब उसी के लक्षण है, और ये अच्छे लक्षण है, शुभ लक्षण है।

प्रश्न: मतदाता किसको ठीक मानता है?

श्री अर्जुनसिंह: अब मतदाता की ओर से हम ना बोले तो ही अच्छा है। उन्हीं को बोलने दो। जब मौका आता है तो वे अपनी इच्छा प्रगट कर देते है। उन्होंने मंशा प्रगट की कि भारतीय जनता पार्टी विकल्प नहीं है।

प्रश्न: जन आदेश किसी शहरी क्षेत्र में काँग्रेस से मिले समर्थन से आँका जा सकता है तो चार राज्यों में चुनाव होगे तो उस संदर्भ में जन आदेश आएगा?

श्री अर्जुनसिंह: आने दीजिए।

प्रश्न: देश में शिक्षा के विकास की बात बहुत होती है, लेकिन सच यह है कि बजट का मात्र 6 प्रतिशत शिक्षा पर व्यय होता है?

श्री अर्जुनसिंह: शिक्षा परिषद् ने अभी जो 3.7 प्रतिशत व्यय था उसे बढ़ाकर 9 प्रतिशत कर दिया है।

प्रश्न: मानव संसाधन विकास विभाग की ओर से मध्यप्रदेश के लिए क्या नई योजनाएँ आपके द्वारा बनाई गई है?

श्री अर्जुनसिंह: क्या बताऊँ? अब ये तो आप लोग पता कर लें, बहुत सी चीजें हुई है, शिक्षा का लोक व्यापीकरण हुआ है।

प्रश्न: क्या आप इससे संतुष्ट हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए मुझे संतोष नहीं है अगर मुझे संतोष हो जाए तो काम ही बन्द हो जाएगा। सारांश में, मैं यह कह सकता हूँ कि ये जो नई शिक्षानीति में जो प्राथमिकता खुद राजीव जी ने शामिल कराई थी, उन प्राथमिकताओं को हम लोगों ने अमल में लाने की पूरी कोशिश की है और उसमें 3-4 बातें प्रमुख है। एक तो लिट्रेसी को। मैं समझता हूँ, अब लिट्रेसी प्रोग्राम को तो देश में प्रोत्साहित करने का प्रश्न ही नहीं रह गया। अब तो उसने एक अभियान की शक्ल हासिल कर ली है। अभी कुछ दिन पहले नए आँकड़े देखे। कितने लोग उसमें लगे है तो ताज्जुब हुआ यह देखकर कि करीब 40 मिलियन वॉलन्टियर इस कार्य में सारे देश में लगे हुए है।

प्रश्न: चार करोड़?

श्री अर्जुनसिंह: हाँ! चार करोड़ इतना बड़ा मोबिलाइजेसन् ऑफ मेनपावर हिन्दुस्तान में तो पहले कभी हुआ नहीं। और शायद दुनिया में भी कहीं नहीं हुआ हो। उसमें एक और फीचर है और वो ये है कि लगभग 50 प्रतिशत उसमें महिलाएँ है। इसकी सफलता होगी तो केवल इस बजह से होगी क्योंकि महिलाओं की भागीदारी केवल इस पीढ़ी को नहीं वरन आने वाली पीढ़ी को भी शिक्षित करेगी। उसका जो असर हुआ है, वह लोकव्यापी करण के मामले में भी हुआ है। क्योंकि लिट्रेसी अभियान जहाँ सक्सेसफुल हुआ, वहाँ हमारी ड्रापआउट कम हो गई। इनरोलमेन्ट के लिए ज्यादा लोग आने लगें।

बल्कि कहीं-कहीं तो हमारे पास साधन ही नहीं है इनरोल करने के। और भी जो कुछ कार्यक्रम है उन पर भी इसका असर पड़ा है। न्यूट्रीशन का है, हेल्थ डिपार्टमेन्ट के फेमली प्लान्स का है, मैं समझता हूँ कि ये एक-दूसरे से जुड़ी हुई बातें है। वोकेशनल एज्यूकेशन का जो इन्सटीट्यूट है, वो कुछ कोर्सेस तैयार कर रहा है वो भोपाल में है। उन्होंने अपनी एक रूप रेखा बना कर दी है। अभी तक वोकेशनलाईजेसन् की बात केवल हाईस्कूल के लेबल पर होती थी। अब इस साल से यूनीवर्सिटी ग्राँट कमीशन ने कॉलेजों में भी वोकेशनल एज्यूकेशन के कोर्सेस दिए है जिनका की बहुत स्वागत् हो रहा है। बाकी फिर उर्दू के लिए राजीव जी का विशेष आग्रह था। उर्दू के प्रोमोशन में अभी तक एक उर्दू ब्यूरो के नाम से संस्था थी। ऐडमिनिसट्रेटिव लेवल पर उसे नेशनल काउंसिल फॉर प्रोमोसन् फॉर उर्दू के नाम से एक ऑटोनोमस् संस्था का रूप दिया गया है। उर्दू की उन्नति के लिए और खास तौर से उर्दू भाषी जो स्कूल है, उन मदरसों में एक योजना ली गई है। जिसमें साइन्स, सोशलिटी और मेथेमेटिक्स के कोर्सेस पढ़ाने की एक योजना बनी है। शुरू में तो ये प्रचार भी कुछ लोगों ने किया कि ये तो मदरसों में दखलन्दाजी करना चाहते है। लेकिन अन्ततः मुस्लिम समुदाय को इस बारे में समझाया गया कि हम उनके मदरसों की रूपरेखा में दखलन्दाजी नहीं कर रहे है। उनकी जो इच्छा है, जो वे कर रहे है, वो करते रहे, साथ-साथ ये भी उसमें समावेश हो जाए। और अब तो उसके लिए इतनी माँग आ रही है कि शायद आगे चल कर कोई प्रॉबलम न हो जाए, हमें ये शक है। दूसरी बात यह है कि उर्दू जरनलिस्ट अपने बहुत सशक्त माध्यम है, उर्दू के प्रचार-प्रसार और उसके उन्नति के लिए। लेकिन उर्दू जरनलिस्ट बहुत कठनाईयों में है। क्योंकि समाचार पत्र छोटे है उनकी ऐकोनोमिक वाईबिलिटी नहीं है। अब मैं सार्वजनिक रूप से मुख्यमंत्री जी से निवेदन करूँगा कि मध्यप्रदेश में समाचार पत्रों को जो प्रोत्साहन देते है उसका थोड़ा-सा हिस्सा इन लोगों को भी दे और दिलाएँ।

प्रश्नः उर्दू के साथ संस्कृत को भी आप प्रोत्साहित करेंगे क्या?

श्री अर्जुनसिंहः संस्कृत तो अभी-भी है, उर्दू का इतना नहीं था इसलिए मैंने उसे महत्त्व दिया है।

प्रश्नः क्या प्राईमरी एज्यूकेशन मातृ भाषा में ही होनी चाहिए?

श्री अर्जुनसिंहः हाँ वो तो हो ही रहा है।

प्रश्नः क्या कारण है कि निजी क्षेत्र में चलने वाले स्कूलों का जो स्तर है, वो सरकारी स्कूलों के क्षेत्र के हिसाब से बेहतर है, और पिछले दिनों मेडीकल कॉलेज में?

श्री अर्जुनसिंहः इसमें अंदर जाने का सवाल नहीं है। अभी जो इस्लामाबाद में काफ्रेंस हुई उसमें ये मुद्दा उठा था कि राज्य की जिम्मेदारी क्या रहनी चाहिए शिक्षा के क्षेत्र में। अंततः ये इस तरह से निर्णय हुआ है कि प्रस्ताव पारित हुआ है कि निजी क्षेत्र में शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो उसको रोकने की जरूरत नहीं है। लेकिन जो विकासशील देश हैं, वहाँ शिक्षा अधिकांशतः सरकार पर निर्भर है। इसके लिए राज्य की जिम्मेदारी पूरी तरह से हटाने के लिए कोई सवाल ही नहीं उठता।

प्रश्नः आज कोई पसंद नही करता कि उनके बच्चों को सरकारी स्कूल में भर्ती किया जाए?

श्री अर्जुनसिंहः सरकारी स्कूलों के स्तर को बढ़ाने की कोशिश करना चाहिए उसको मैं मानता हूँ। और इस दिशा में प्रयास व्यापक नहीं हो सकते क्योंकि स्वाभाविक है कि कमी है सोर्सेस, रिर्सोसेस की। लेकिन जैसे सेन्ट्रल स्कूल है, नवोदय स्कूल है इसी दिशा में तो प्रयास है।

परन्तु शिक्षा स्टेट का सबजेक्ट हो सकता है। राज्य सरकार फीस लेने में उनपर कोई नियंत्रण लगा सकती है अब तो ये दुकानदारी का धन्धा हो गया है?

प्रश्नः

श्री अर्जुनसिंहः दुकानदारी वाली बात तो नहीं होना चाहिए। उसमें पहले से तो काफी कमी आई है।

प्रश्नः ये विदेशी पत्र-पत्रिकाओं को देश में आमंत्रण देने के मामले में आपका क्या मत है?

श्री अर्जुनसिंहः मेरा मत तो जो था वो मुझे केबीनेट में देना है। क्योंकि वो केबीनेट में चर्चा के लिए आएगा, क्योंकि मुद्दे जो है वो तो बता ही चुके है बार-बार नहीं बताएगे।

प्रश्नः नार्थ और साउथ के कई प्रायवेट कॉलेज म.प्र. में अपनी ब्राँच खोल रहे है, आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंहः नार्थ और साउथ का तो कोई प्राईवेट कॉलेज का सवाल ही नही है प्राइवेट कॉलेज यहाँ भी खुल रहे हैं। मध्यप्रदेश में भी खुल रहे है। अब तो यू.जी.सी. की यहाँ ब्रान्च भी खुल गई है, अब तो इसका पूरा फायदा लेना चाहिए। जो था वो तो था उसका क्या करेंगे?

प्रश्नः काँग्रेस के हल्ला बोल आन्दोलन के बारे में आपके क्या विचार है?

श्री अर्जुनसिंहः लेकिन हल्लाबोल तो हमारी प्रजातांत्रिक कल्पना के अन्दर तो आता नहीं है। वो चाहे उसको हल्ला बोल कहें या उनकी मर्जी है। लेकिन वहाँ जो काँग्रेस की ओर से कोशिश हो रही है प्रदेश काँग्रेस के जन आधार को मजबूत करने की कोशिश है, और वह बहुत अच्छी कोशिश है।

प्रश्नः क्या सरकार के खिलाफ इसे नहीं मानते आप?

श्री अर्जुनसिंहः नहीं सरकार के खिलाफ कैसे कह सकते है? काँग्रेस मजबूत हो इसे किसी दूसरे के खिलाफ कैसे कह सकते है। देखिए ये बात बहुत स्पष्ट है कि देश और काँग्रेस दो ही महत्वपूर्ण बातें हम लोगों की हैं क्योंकि ये संयोग हो सकता है लेकिन आज तो निश्चित है कि काँग्रेस की मजबूती भारत के भविष्य से जुड़ी हुई है, क्योंकि काँग्रेस पार्टी ही एक सेन्ट्रल पोलीटिकल फोर्स सारे देश में फैली हुई है उसकी कमजोरी देश को कमजोरी में ला सकती है। ये सीधा एक स्टेटमेंट है, इसलिए काँग्रेस को मजबूत करने के लिए जो कुछ भी किया जाए वो गलत नहीं है।

प्रश्नः उत्तर प्रदेश में काँग्रेस को मजबूत करने के लिए आप जो कदम उठा रहे है, तो हाई कमान को इस मजबूती भरे कदम को लेने में इतना विलंब क्यों हो रहा है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए काँग्रेस को मजबूत किया जाए, इसके लिए, हाई कमान को फैसला लेने की जरूरत नहीं है। क्योंकि हाई कमान खुद ही उसके खिलाफ हैं। प्रश्न केवल यह था कि मुलायम सिंह सरकार से समर्थन वापस लिया जाए की नहीं। वो वर्किंग कमेटी ने काँग्रेस अध्यक्ष को बता दिया है। अब वो उचित समय पर फैसला लेगें।

प्रश्नः काँग्रेस वहाँ पर एक जिम्मेदार पार्टी है, और वैसे भी देश में जिम्मेदार पार्टी है। काँग्रेस के पास वैसे भी विगसत है, पंडित जवाहरलाल नेहरू जी की जिन्होंने कहा था, कि दबाव के बाद भी मैं एक स्वतंत्र प्रेस चाहूँगा। तो आप इस काँग्रेस को जो पत्रकारों को पीट रही है, उनके बारे में आप क्या कहना चाहेंगे क्या विचार व्यक्त करेंगे?

श्री अर्जुनसिंहः ये तो ए.आई.सी.सी. स्पोक्स मैन ने खेद प्रगट किया, वर्किंग कमेटी ने खेद प्रगट किया और क्या चाहिए।

प्रश्नः नहीं साहब जब लड़ाई सड़को पर लड़ी जा रही है, पत्रकारों को पकड़-पकड़ कर सरे आम पीटा

जा रहा है, काँग्रेस को इसके लिए एक कदम आगे बढ़कर कुछ करना चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: आप भी उन लोगों को पकड़-पकड़कर पीटना शुरू कर दीजिए और क्या?

प्रश्न: उर्दू सम्बन्धित एक सवाल है, अभी आपने कहा कि उर्दू का सम्मान करना चाहिए, लेकिन उर्दू को जब कभी कर्नाटक में सम्मान देने की बात होती है, तो वहाँ पर दंगे-फंसाद, मारकाट आदि चीजें शुरू हो जाते है, इस बारे में आप क्या कहना चाहते है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं इस बारे में बस इतना ही कहना चाहूँगा और कुछ नहीं कहूँगा कि ये संदर्भ बिल्कुल गलत है। धन्यवाद।

तेन्दू पत्ता तोड़ने वालों की समस्या

दिसम्बर 1994 को एक अंग्रेजी समाचार पत्र के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Q: Madhya Pradesh is a Backward State. What is the present position of literacy and economic development?

Shri Arjunsingh: Well, Madhya Pradesh is one of the backward state as compare to some other states in the country. There is no doubt about that. But to say that penury is large and nothing has been done in the last 30 Years is not correct. There has been a great improvement in the conditions of the people in certain respects. We might have done better in comparision to some other states. But as is the over all situation everywhere the rising population and all those other things that are done, are peculiar. Madhya Pradesh has not been able to do very well. Because of the illiteracy and backwardness but the relization now is coming around very fast and I think in many respect for example; Power Generation or Industrialization and all these things they made very remarkable progress.

Q: But you say that could have done better in Madhya Pradesh?

Shri Arjunsingh: That one should always feel, that is what impelled you to do the best.

Q: May be one reason why most satisfactory things could have been done because politicians and bureaucrats generally apathetic towards common man?

Shri Arjunsingh: Well, you see the Congress party because when you talk of politician I can only say that because they have been in power for most of the time except for four years in between, Congress has a programme and that programme is totally oriented towards the progress of the weaker sections of the society and tribal and backward classes. So, I will not say that the politicians have been apathetic. The effort may not have succeeded to the extent it was desired at the same time so far as the bureaucracy is concerned. Madhya Pradesh has certain problems. This was

the state that cowed out of many states in the coutnry. It was not a state that has been existing for hundred years or so. So many of the disparities and many of the shortcomings that was existing in the original states. They were brought together, so the first ten years of the state existence it was taken up totally in the process of integration laws. The services even the politicians they took time to come to believe that they are part of one big state, so the first ten years was practically devoted to that. Next twenty years I think everyone has put in his bit what has happened as the practical people we should not hold of it. The higher levels of the bureaucracy of Madhya Pradesh is not drawn form the people who belong to the state.

Q: During the third term as Chief Minister you started up to boost the poor people programmes what were these programmes and what probabilities were there to start them?

Shri Arjunsingh: I am quite sure that anybody who looks at the chart of the measures taken from 1980 onwards would be convinced that these programmes which you call poor peoples programmes and which affects directly the weaker section of the state were taken within one month of my taking over office. That started in 1980 and many of them have bore fruits and many of them still in the process and there are certainly not my programmes, these programmes existed, they were congress programmes. Only question was that giving them greater content and teeth and putting certain political will behind them. There was nothing noble aobut it. Now what you say about my third term when that is the 1988 February to 89 January. There again I did not go on spirit. All these things had been initiated for others. I was only to give them a little push and that was necessary because after all this is our political party and programmes are oriented towards the betterment of the people.

Q: Your land related Adhikar Abhiyan programme is said to have gave adverse effect on persons like Mr. Madhav Rao Scindia?

Shri Arjunsingh: What has Mr. Madhav Roa Scindia got to do with that he is not using anybody's land. You see the Adhikar Abhiyan was aimed against that section of the people who had been allotted land or given land under some programme or the other by the Congress. party. The land was allotted on paper to them but actual position in the field they could not get or they would dispossess after getting it. This was targeted for this section of the people and I don't see why Mr. Madhav Rao

Scindia comes into the way. He never tried to take away anybody's land.

Q: How many families were benefited from this programme?

Shri Arjunsingh: I think the Adhikar Abhiyan targeted for about one-lakh families.

Q: How did you plan the correct monitoring of the implementation of this land reform?

Shri Arjunsingh: We had a very detailed plan of action right from the village level to the district level in the state and the very fact that I have seen from figures recently. This Abhiyan was started on 14th November 1988 and then this was April, 1989. I think a good section of the people have got the possesion of the land it have been a successful. It needs continuous monitoring. You see the vested interest was against it at the very primary and basic level. Where it is sometime difficult to checkmate them. But by and large I think it has been successfull and I am sure Congress will make it a successful programme.

Q: You have long experience of working with two Prime Ministers Indira Gandhi & Rajiva Gandhi why dissidents in Congress today..?

Shri Arjunsingh: I had the proud privilege of serving under pandit Jawaharlalji Indiraji and Rajiavji to see one can't compare everything totally from this set to that set of circumstances the total political atmosphere, the attitudes, and also the motivation of political activity. Whether it is a decision or whether it is a governance whatever it may be and this applies to whole range of political parties not only the Congress party, so there have been a change. But I don't see that there is any such degeneration in that there is little sharpeness many thing which didn't take place then people use to stop at certain points but nowadays a little less inhibition is forthcoming on that's score.

Q: Do you think the party today is playing top priority to power?

Shri Arjunsingh: There can not any tight compartments in the democratic set up between achieving and sharing power and doing service through that power. They flow out and flow together so I will not say that.

Q: When you were in power, you favoured persons on caste basis?

Shri Arjunsingh: I don't and I have never thought or acted on caste or communal angles. And this is born out by 29 to 30 years of my service in the political field. If anyone were to point out one single instance where I have everything else being equal only on the caste or communal angle did favour didn't do a favour to anyone. I will accept the charge. I am saying, I don't believe in this and whether it is any Brahamin or

any caste. I think one should take all these as part of polity it is true that I am of the view and have not made secret of it that those who come from the less privileged class they can be Brahimin, they can be Thakur, they are Harijan & Backwards and Tribals. They must get the larger share and the state power must be at the back and call. Instead of the state power being at the back and call of the better lot to exploit these people there we agree that somebody takes as something against anyone then it can be taken by Thakur also it can be taken by Brahamin also. Because that is a political belief but on the caste line this is absolutely not.

What is even the advent of Shri V.P. Singh lead Janta Dal, which is trying to emerge?

hri Arjunsingh: Well, they are trying to emerge certainly but have what nobody knows and in politics you wish to be something may be strong. But the vehicle to get those things has to be much more coherently define and your idelogies and your programmes have to more sharply focussed which should be seen not where I mean what is Shri V.P. Singh and Janta Dal accept a very poor carbon copy of the Congress. So I don't think they might win two seats here and there I don't say that in General Election many things take place. But they are not going to make any visible dent on the political scene what to say sizeable you not even visible dent.

यह हमारा, आपका, सबका दुर्भाग्य है कि देश के अंदर कुछ ऐसे लोग है जो देश की खुशहाली को नष्ट करके अपनी खुशहाली लाना चाहते हैं। जब जब ऐसा होता है, तब तब काँग्रेस ने अपनी जिम्मेदारी को, अपनी ऐतिहासिक जिम्मेदारी को निभाया है।

—श्री अर्जुनसिंह

5 जनवरी, 1995

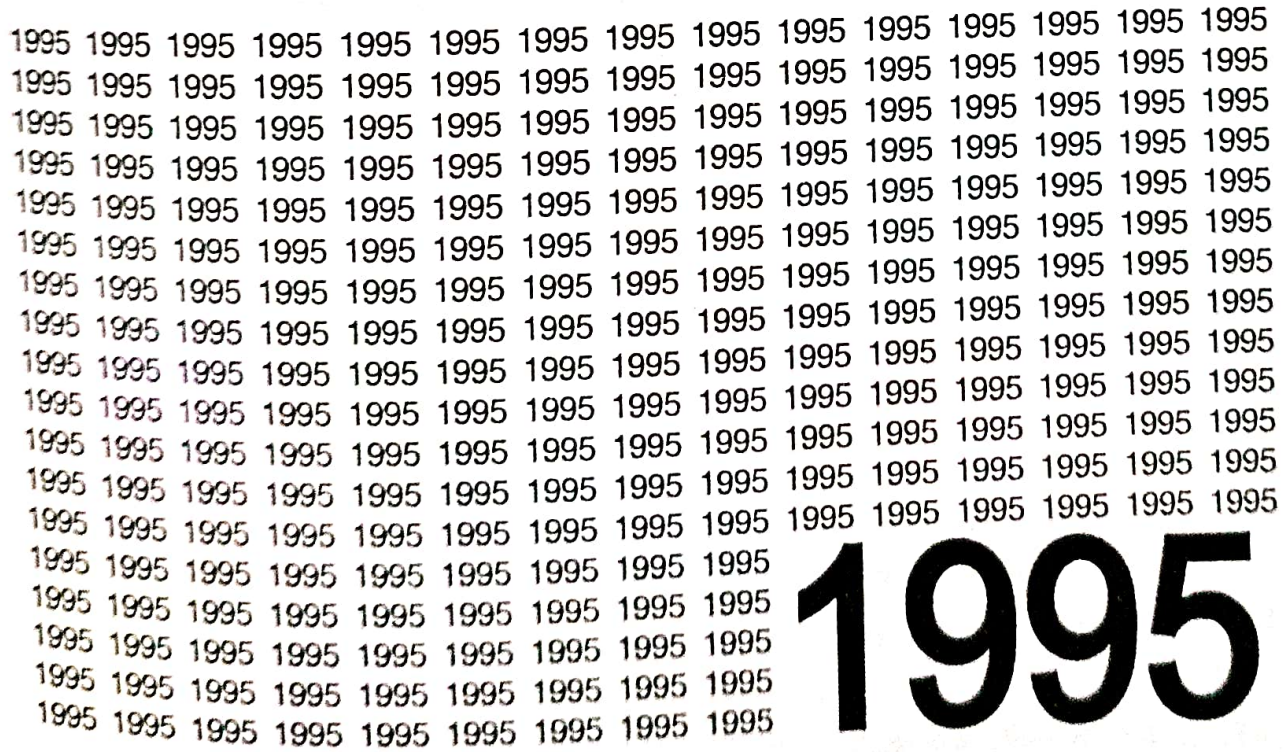

1995

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

प्रजातंत्र की महिमा

5 जनवरी 1995 को ग्वालियर की आम सभा में सम्बोधन के प्रमुख अंश—

बहनों और भाइयों, काँग्रेस पार्टी के सभी वरिष्ठ साथियों, युवक काँग्रेस के सदस्य और नव युवक साथियों, आज मैं सब से पहले आप सब को जो यहाँ उपस्थित है और जो यहाँ पर नहीं भी उपस्थित हैं, उन सबको नए वर्ष की शुभकामना देना चाहता हूँ। यह वर्ष भारत के राजनीतिक इतिहास का एक निर्णायक वर्ष होगा।

कभी-कभी इतिहास के उतार-चढ़ाव ने हमें गफलत में डाला और उस का परिणाम सारे देश ने भोगा। कभी-कभी हम ने खतरों को पहचानने में गलती की और उस का इंतकाम सारे देश को भुगतना पड़ा था। दो सौ साल की अँग्रेजों की गुलामी के बाद काँग्रेस ने गाँधी जी के नेतृत्व में एक अनोखा स्वतंत्रता संग्राम लड़ा था। जिस में संग्राम शब्द तो जुड़ा था, लेकिन लड़ाई के सब औजार गायब थे। न कहीं तलवार थी, न बंदूक थी और न तोप थी। गाँधी का आत्म बल था और उस आत्म बल के सहारे देश के करोड़ों लोगों ने बिना हथियार रखे, उस लड़ाई में शामिल हो कर भारत माता की गुलामी की जंजीरों को 15 अगस्त, 1947 को तोड़ा। मैं इस का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि हमें किसी वक्त यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारी विरासत क्या है? जो व्यक्ति और जो राष्ट्र अपनी विरासत को नहीं पहचान सकता है, उस व्यक्ति और राष्ट्र को जिन्दा रहने का कोई हक नहीं मिलता है। आज वहीं काँग्रेस पार्टी पिछले 46-47 वर्षों से आजादी के बाद इस देश के नव-निर्माण करने में लगी है।

हिन्दुस्तान बहुत बड़ा देश है। हम कहते हैं- कश्मीर से कन्या कुमारी तक, बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक यह इस का भौगोलिक वर्णन है। लेकिन उस की उँचाई, उस की गहराई, उस की लम्बाई, और उस की चौड़ाई से कहीं ज्यादा है क्योंकि 100 करोड़ इंसान इस देश में रहते हैं। अगर हम उन के चेहरों को ढूँढ़ें, उन की आँखों में झाँक कर देखें, तब हमें पता चलता है कि कितना विविध, कितना सुंदर और कितना एकता के सूत्र में बँधा हुआ है यह देश। यह हमारा, आप का, सब का दुर्भाग्य है कि देश के अंदर कुछ ऐसे लोग हैं, जो देश की खुशहाली को नष्ट करके अपनी खुशहाली लाना चाहते हैं और जब-जब ऐसा होता है, तब तब हर दम काँग्रेस ने अपनी जिम्मेदारी को, अपनी ऐतिहासिक जिम्मेदारी को निभाया है।

आज देश ऐसे ही दौर से गुजर रहा हैं। असीम संभावनाएँ विकास की हमारे सामने हैं, और असीम संभावनाएँ भविष्य को सँवारने की है, लेकिन चुनौतियाँ भी उतनी ही बड़ी और असीम हैं, क्योंकि अब दुनिया को यह नजर आने लगा है कि अगले पाँच-छः-सात वर्षों में जिस रफ्तार से देश आगे बढ़ रहा है, उस रफ्तार से अगर आगे बढ़ता चला गया तो दुनिया के एक बहुत शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में भारत का उदय हो जाएगा।

आप ने अखबारों में बहुत कुछ पढ़ा होगा। मेरे बारे में बहुत-से लोगों ने, बहुत बातें कहीं है। काफी तीखी

बातें कहीं हैं। कड़वी बातें कही है। लेकिन मैं समझता हूँ कि ये बातें उन्होंने जरूर कही है, लेकिन इस की वजह से उन में से किसी के बारे में हमें अपने मन में कोई छोटापन नहीं लाना चाहिए। हम सब का सम्मान करते हैं। सब के प्रति आदर रखते हैं। लेकिन जहाँ कर्तव्य की रेखा खींचने का सवाल आता है, जैसा कि मैं समझ सकता हूँ, किसी दूसरे की समझ से आदमी एक सीमा तक ही काम कर सकता है। उस के बाद उसे अपने दिलो-दिमाग पर ही भरोसा करना पड़ता है। मैंने यह समझा कि कारण कुछ भी हों लेकिन काँग्रेस की नीतियों के बारे में, काँग्रेस के बारे में काँग्रेस के विरोधियों ने आम लोगों के मन में कुछ भ्रातियाँ पैदा कर दी हैं। कुछ गलतफहमियों ने स्थान पा लिया है। इस की वजह से काँग्रेस की साख को खतरा पैदा हो गया है। इसलिए मैं ने यह जरूरी समझा कि एक साधारण कार्यकर्ता की हैसियत से इस प्रदेश में, मैं ने प्रदेश की जनता की सेवा करने की कोशिश की थी, मुझे अपने साथियों की कतार में पुनः आ कर खड़ा हो जाना चाहिए और उन के कंधे से कंधा मिला कर, काँग्रेस के माध्यम से देश की सेवा करनी चाहिए।

मैं ने किसी के ऊपर कोई आरोप नहीं लगाया। किसी की ओर ऊँगली नहीं उठाई। मेरा किसी में कोई अविश्वास नहीं है, और न मैं किसी के पद को छीनना चाहता हूँ। सवाल यह है कि आज इस देश के हालात ऐसे बन गए हैं कि यदि काँग्रेस कमजोर हो गई, हमारा संगठन छिन्न-भिन्न हो गया, तो उस की वजह से भारत का बिखराव शुरू हो जाएगा।

सब से बड़ी बात जो प्रजातंत्र में होती है, वह आम जनता के बीच में हम अपने लिए आस्था और विश्वास पैदा कर सकें, वरना हम अपने घर में बहुत मजबूती का अहसास कर सकते हैं। बड़े-बड़े लोगों के हाथ में यह नहीं हैं। साधारण और आम लोगों के हाथ में होता है और वो क्या सोचते हैं? उस हैसियत से वो फैसला करते हैं। यही प्रजातंत्र की महिमा है। यही प्रजातंत्र की महानता है, और इसीलिए प्रजातंत्र ही एक ऐसा तरीका है, जहाँ आम आदमी के विश्वास पर देश का कामकाज चलता है।

वहाँ हमारी कमजोरी न हो, उस के लिए जरूरी है कि आत्म मंथन हो, विचार-विमर्श हो और विचार-विमर्श करके हम ऐसा रास्ता निकालें कि हम जनता की सेवा में काँग्रेस को और दूनी ताकत से उन के बीच में उतारें।

ईर्ष्या न रखें, वैमनस्यता न रखें और सभी साथियों को साथ में रख कर चलने की कोशिश करें। और फिर यदि कोई गलमफहमी पैदा करता है, कुछ करता है, तो यह समझ लीजिए अँग्रेजी में एक कहावत है— वेजेज् ऑफ ड्यूटी अर्थात कर्तव्य की तनख्वाह है। जब कोई, कर्तव्य करते हैं तो उसकी अच्छाई-बुराई दोनों मिलती है। उसको मान लेना चाहिए कि उसी का यह उपहार है। मैं व्यक्तिगत स्तर पर काँग्रेस को कमजोर नहीं देखना चाहता हूँ। उसमें किसी प्रकार के विभाजन की रेखाएँ नहीं खींचना चाहता हूँ।

जो लोग नाराज हैं, किन्हीं भी कारणों से नाराज हैं। उन की नाराजगी के लिए मेरे मन में दुःख है और मैं ने कहा है कि अगर कुछ लोगों को ऐसा लगता है कि मेरा काँग्रेस में रहना अच्छा नहीं है, तो काँग्रेस तो क्या मैं मृत्यु दण्ड सहने को तैयार हूँ। लेकिन काँग्रेस को, देश को कमजोर करने की बात पर कभी भी, किन्हीं भी परिस्थितियों में मैं झुकने को तैयार नहीं हूँ। यही ग्वालियर के लोगों को मेरा संदेश है। मेरा कहना है। एकता के साथ, भाई-चारे के साथ हमें पार्टी को मजबूत बनाते हुए आगे चलना है और इस काम में ग्वालियर ने सदैव अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाई है उस ऐतिहासिक भूमिका को निभाने के लिए नौजवान, बहनें, भाई खुलकर सामने आएँ। यही मेरी आप से प्रार्थना है। धन्यवाद! जय हिन्द।

असली काँग्रेस बनाम नकली काँग्रेस

29 मई 1995 को उज्जैन में इंदिरा काँग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश—

आदरणीय माताओं, बहनों ओर भाइयों आज आपके बीच में आकर मुझे प्रसन्नता भी है गौरव भी है और साथ ही साथ आपसे प्रेरणा लेने का यह अवसर हैं। मैं कोई लंबी-चौड़ी तकरीर नहीं करना चाहता। क्योंकि यह सभा थोड़ी जल्दी में बुलाई गई सभा हैं और उज्जैन के काँग्रेस के हमारे साथी शायद इससे संतुष्ट नहीं होगें। इसलिए मैं अगले महीने जब यहाँ का दौरा होगा उसमें उज्जैन हाजिर होऊँगा। और फिर आपसे लंबी बातचीत करूँगा।

आज मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि हम सब इस देश के नागरिक हैं, और उसके बाद काँग्रेस से जुड़े हुए सिपाही हैं। यह हमारे ऊपर जिम्मेदारी हैं, एक नागरिक की और फिर एक काँग्रेस के सिपाही की, हम उस जिम्मेदारी के बारे में क्या समझते हैं, क्या नहीं समझते हैं। आज के समय में यह महत्वपूर्ण हैं क्योंकि हमारा देश एक ऐतिहासिक चौराहे पर जाकर खड़ा हैं। हमें किधर जाना चाहिए किस तरह से जाएगें ये सब कुछ सबको साथ में मिलकर तय करेंगे। कौन से मसलों को हल करने की दिशा में पहल करेंगे। भारत के अवाम को उसकी स्वयं की शक्ति का किस प्रकार से एहसास दिलाएँगे, इस पर हमारे देश का भविष्य निर्भर करता है। जब मैं देश और काँग्रेस की बात करता हूँ तो मैं किसी व्यक्ति की बात नहीं करता। देश सबसे बड़ा हैं। उसका हित सबसे ऊपर हैं। उसके पश्चात काँग्रेस पार्टी हमारी मातृ संस्था हैं। उससे हम कई दशकों से जुड़े हैं, नौजवान जुड़े हैं। आने वाली पीढ़ी जुड़ेगी लेकिन ये दोनों बातें इस समय संयोग से जुदा हैं और इसलिए काँग्रेस की स्थिति को सुधारने का एक प्रयास हमें करना हैं।

सवाल असली और नकली काँग्रेस का नहीं हैं। सवाल काँग्रेस का है। काँग्रेस को असली या नकली नेता नहीं बना सकते। इस देश की जनता बना सकती है। जिस जनता ने आँध्र प्रदेश में, बिहार में, कर्नाटक में, महाराष्ट्र में, गुजरात में काँग्रेस को राजनैतिक रूप से किनारे लगा दिया आज उसी को कुछ लोग असली काँग्रेस कह रहे हैं वो कौन सी काँग्रेस हैं जिसको जनता का समर्थन प्राप्त नहीं हैं। जनता का विश्वास प्राप्त नहीं हैं।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि बहुत सी चालें चली जाएँगी। किसी को दबाया जाएगा, किसी को लुभाया जाएगा, किसी को और प्रकार से प्रभावित करने की कोशिश की जाएगी। मैं काँग्रेस के साथियों से कहना चाहता हूँ कि नेताओं से नहीं अवाम से जुड़ने की कोशिश करें। अगर अवाम के हितों की बात आपके कानों तक नहीं पहुँचेगी, आप नहीं पहचान पाएँगे तो हो सकता हैं कि हम लोग चारों तरफ चक्कर लगाते रहे। जब तक हम कुर्सी पर बैठे हैं, कोई ट्रांसफर पोस्टिंग में फायदा हो जाएगा लेकिन देश और काँग्रेस को उससे कोई फायदा नहीं होगा।

श्रीमती इंदिरा गाँधी एक महान व्यक्तित्व थी। उस संकट के समय जब वो देश में प्रचार के लिए निकली तो एक नई आँधी आई, एक नई राजनीतिक चेतना आई, लोगो ने समझा कि हो सकता है, हमसे गलती हुई हो, जिसको उन्होंने कबूल भी किया क्योंकि प्रजातंत्र में प्रधानमंत्री हो, मंत्री हो, कोई भी हो, वो जनता से ऊपर तो नहीं है। अगर कोई गलती हुई हो तो माफी माँगने में श्रीमती गाँधी ने कोई शर्म नहीं की। लेकिन आज के लोग तो इतने शक्तिशाली हैं, इतने बड़े है कि अपनी गलतियों की माफी माँगने के लिए भी शर्तें लगाते है। जब श्रीमती इंदिरा गाँधी पर जुल्म होने लगे तो पाँच लाख लोगों ने सारे देश में आन्दोलन किया और हिन्दुस्तान की जेलों में बंद हो गए। इतनी बड़ी संख्या में लोग स्वतंत्रता संग्राम के समय भी जेल नहीं गए थे जितने उन तीन-चार महीनों में गए और

जनता ने अपने मन से अपने देश की रहनुमाई करने के लिए इंदिरा गाँधी को वापस लाए। आज किसी को बागडोर सौंपने का सवाल नहीं है और न आज श्रीमती इंदिरा गाँधी के बराबर कोई उस वर्चस्व को कायम रखने वाला कोई नेता है। इसलिए काँग्रेस के कार्यकर्ताओं ने बीड़ा उठाया और हमें समझना चाहिए कि काँग्रेस के कार्यकर्ताओं ने जो बीड़ा उठाया है, वे उसे नीचे नहीं रखेंगे। अगर ये बात लोगों के समझ में आ जाय तो बहुत अच्छा हैं अगर नहीं आए तो अवाम इस बात को समझाएगी। क्योंकि जिन कारणों से हम इतना नीचे गए हैं जब तक उन कारणों की जड़ों तक जाकर कुछ करने की हिम्मत नहीं जुटाएँगे तब तक हम काँग्रेस को सुधार नहीं सकते।

जिस प्रजातंत्र में व्यक्ति की आज़ादी न हो, उसकी जान माल की रक्षा न हो, वो कैसा प्रजातंत्र हैं। क्या संविधान इसीलिए बना था, क्या स्वतंत्रता संग्राम में लाखों लोगों ने इसीलिए बलिदान दिया था, कि भारत का नागरिक चारों तरफ से बेसहाय होकर जकड़ दिया जाय? कानून बनते हैं, गलत-सलत लोगों के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए जिस प्रकार टाडा का दुरूपयोग हुआ हैं, चाहे वो बम्बई हो, चाहे वो गुजरात हो, चाहे वो पंजाब हो, आम नागरिक को विश्वास करने में दिक्कत होती हैं कि वह सचमुच में प्रजातंत्र में केन्द्रबिन्दु हैं या कि किनारे पर खड़ा रहने वाला तमाशबीन हैं। उसको जब चाहे वहाँ से निकलने वाला जो देश का सिपाही हैं, डंडा मारकर वहाँ से भगा देता है।

ये चीजें लोगों के दिमाग में वहम करती जा रही है। इसके इतने बुरे परिणाम होंगे ये समझने की बात हैं। प्रजातंत्र चलता हैं आम लोगों के विश्वास से अगर वो विश्वास किसी दिन टूट गया तो देश में प्रजातंत्र कमजोर हो जाएगा तब तुम्हारे पास मजबूती नहीं रहेगी। समूचा देश एक मुट्ठी में बँधा हैं क्योंकि सब समझते हैं कि इस देश में उनका भी हक हैं। वो जो भी कहेंगे उस बात को भी सुनना पड़ेगा, मानना पड़ेगा और फैसला होगा। जब वो विश्वास खत्म हो जाएगा तो देश की एकता खत्म हो जाएगी, एकता कमजोर होगी, आजादी खतरे में पड़ेगी और फिर से हम गुलामी के एक लंबे दौर में प्रवेश करेंगे। ये हैं आज वक्त की नजाकत जब भ्रष्टाचार की बात की जाती हैं तो किसी खास आदमी के खिलाफ ऊँगली उठाने की बात नहीं है, जिम्मेदारी उठाने की बात हैं।

मैं आशा करता हूँ कि उज्जैन के नागरिक और खास तौर से यहाँ के हमारे काँग्रेस के साथी और उनमें भी नौजवान साथी, समय की नजाकत को समझने की कोशिश करें। अवाम से जुड़ने की कोशिश करें, काँग्रेस को एक फायदा उठाने का जरिया न बनने दें। नौजवान ही इस देश की रक्षा कर सकते हैं, काँग्रेस को मजबूत कर सकते हैं लेकिन थोड़ा आत्मसंयम ओर अनुशासन लाना पड़ेगा। जय हिन्द।

राजीव गाँधी हत्याकाँड की जाँच सही तरीके से हो

31 मई 1995 को भोपाल में इंदिरा काँग्रेस कार्यालय के उद्घाटन समारोह में उद्बोधन के प्रमुख अंश —

मध्यप्रदेश इंदिरा काँग्रेस के अध्यक्ष, भाई बंशीलालजी, माननीय भेडियाजी यहाँ पर प्रदेश के कोने-कोने से आए हुए आदरणीय कार्यकर्ता बहनों और भाइयों, यहाँ तो आज इस प्रदेश के कार्यालय की विधिवत स्थापना हुई। मैं केवल इतना ही इस कार्यालय के बारे में कहना चाहता हूँ कि मध्यप्रदेश में एक जमाना ऐसा आया जब इसी प्रकार संगीनों के साए में काँग्रेस को अपंग बनाने की कोशिश की गई थी। लेकिन मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूँ कि दिल, दिमाग और जबान पर ताले नहीं लगाए जा सकते और इन तालों की चाबियाँ पुलिस या प्रशासन या बड़े-बड़े नेताओं के पास नहीं है। इन तालों की चाबियाँ मध्यप्रदेश की जनता के पास हैं जो समय आने पर इस ताले को खोलने के लिए हाथ में चाबी देती है।

आज मैं आपसे चूँकि पूरे प्रदेश से आप लोग आए हैं कुछ बातें बताना चाहूँगा। 19 तारीख को आप में से कई लोग दिल्ली भी पधारे थे। काँग्रेस पार्टी को फिर से शक्तिशाली बनाने का संकल्प कार्यकर्त्ताओं ने लिया। ये संकल्प नेताओं की मेहरबानी पर लेने वाला संकल्प नहीं रह गया हैं। क्योंकि यह क्षमता देश के कार्यकर्ताओं ने प्रकट कर दी है, प्रदर्शित कर दी हैं कि नेता उनके बनाए हुए हैं और अगर बने हुए नेता काँग्रेस के कार्यकर्ताओं को नजरदांज करके चलने की कोशिश करेंगे तो ये काँग्रेस के कार्यकर्ता जो संस्था के सर्वेसर्वा हैं, वे मूल्यांकन करना भी जानते है, और फैसला करना भी जानते हैं। इसी संदर्भ में फैसला 19 मई को हुआ था न जाने कब से इन सब बातों पर जिन पर कि निगाह डालनी चाहिए जिनकी वजह से सारे देश में काँग्रेस की साख घटी। किसी भी समय उन पर विचार करने के लिए जरा भी चेष्टा किसी ने नहीं दिखाई। जो काम नेतृत्व का था वो काम अंततः काँग्रेस के कार्यकर्ताओं को करना पड़ा। ये अपने आप में हमारे देश के उन नेताओं के ऊपर टिप्पणी हैं। आज नहीं तो कल इस देश की जनता उन पर अपने विचार व्यक्त करेगी और आने वाला इतिहास निश्चित रूप से इसको देखेगा। मैं इसलिए कहना चाहता हूँ कि हमें दूसरे सोच के मुताबिक काँग्रेस का संगठन भी प्रदेश में करना होगा। जुलाई अंत तक मेम्बरशिप की जाएगी उसके बाद जो प्रजातंत्रिक प्रक्रियाएँ काँग्रेस में समाप्त हो गई हैं उन्हें फिर से चालू किया जाएगा और अक्टूबर के पहले या दूसरे सप्ताह में चुनाव प्रक्रिया पूरी करके चुने हुए लोग प्रदेशों में बैठेंगे।

ए.आई.सी.सी. नई बनेगी और चुना हुआ ढाँचा दिल्ली में भी बनेगा लेकिन यह सब कह देने के बाद बात वही आकर रूकती हैं, जहाँ आज है। मैं कल बहुत से साथियों से मिला, आज भी मिलूँगा। मैं बहुत प्रभावित हुआ कि सैकड़ों लोग जो आए शायद किसी एक ने भी कहा हो कि साहब मुझे ये पद आप दिला दीजिए। जिन बातों का संदेश भेडिया जी ने दिया हैं वही सही है और मैं आपसे प्रार्थना करना चाहूँगा कि हर हालत में चाहे कितना भी दबाव आए कितनी भी परेशानी हो, अभी तो मध्यप्रदेश में वह दौर सही ढँग से शुरू नहीं हुआ। लेकिन और प्रदेशों में आपको आश्चर्य होगा कि किस हद तक प्रशासन का उपयोग लोगों की भावनाओं को दबाने के लिए खास तौर से काँग्रेस के कार्यकर्ता और जो काम कर रहे हैं, उनको परेशान करने के लिए हो रहा हैं। कई संसद सदस्यों ने मुझ से कहा कि आपसे बात करने के बाद जो हम आपसे कहकर आए वह हमको वहाँ सुनने को मिलता हैं। मैंने कहा इसमें आपको आश्चर्य क्यों होता हैं?

अभी यहाँ भेडियाजी ने चर्चा की और धृतलहरे जी ने भी कहा कि सन् 1977 में ही हमारा कार्यालय मालवीय नगर में इंदिरा जी के नेतृत्व में जवाहर भवन में खुला था। इस जमीन को तो जनता पार्टी ने अपने कब्जे में लेकर वहाँ तार खींच दिया था। बहुत पुरानी बात नहीं हैं मुश्किल से 16-17 साल पुरानी बात हैं। इस जमीन को पुनः काँग्रेस के वर्चस्व में लाने के लिए कम से कम 700-800 लोग यहाँ सत्याग्रह करके जेल गए थे तो जवाहर भवन की भूमि को इस प्रदेश के काँग्रेस कार्यकर्ताओं ने उस जमाने में अपने खून और पसीने से सींचा हैं। जब बहुत से बड़े-बड़े नेता सुविधा की तलाश में अपनी महत्वाकांक्षा की खोज में किनारे खड़े थे। ठीक हैं कानूनी कार्रवाई हुई हैं। उसको चलने दीजिए लेकिन जवाहर भवन को काँग्रेसजनों से कोई छीन नहीं सकता। अगर ये किसी को गलतफ़हमी हैं तो वह गलमफ़हमी जल्दी दूर हो जाय तो अच्छा हैं। इसलिए आज जहाँ यह कार्यालय खुला हैं, मैं धृतलहरे जी से निवेदन करूँगा कि वह इस प्रदेश के काँग्रेसजनों को पूरी तरह से विश्वास में लेकर अपना काम करें। जिस तरह से भी काँग्रेस की घोषित नीतियों और कार्यक्रमों को चलाना चाहिए उसकी निगरानी करें और यदि कही ऐसा दिखे कि बावजूद कहने सुनने के भी बात नहीं हो रही है तो मैं धृतलहरे जी से निवेदन करूँगा कि प्रदेश के किसी कोने में जहाँ इस प्रकार की परिस्थिति निर्मित हो, वो अपने साथियों को स्वयं संघर्ष के लिए उतारे। ये बात बहुत स्पष्ट भी होनी चाहिए कि

कहीं कोई हिंसा या अन्य प्रकार की अव्यवस्था नहीं फैलना चाहिए काँग्रेस का मूलमंत्र सत्याग्रह का हैं।

अंत में मैं इतना ही कहना चाहता हूँ जो मैंने 19 तारीख की रैली में कहा था।

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याघ्र

जो तटस्थ है समय लिखेगा उनका भी अपराध।

एकता तो वह होनी चाहिए जिसकी वजह से हम एक साथ मिलकर जनता के बीच में जाकर अपनी बात कहें, उस पर जनता को विश्वास हो। प्रजातंत्र में आखरी अस्त्र उनके पास हैं। हम सब एकता करके एक एयरकंडीशन कमरे में जाकर बैठ जाय और जब चुनाव हो तो वही कमरा हमसे छिन जाय, उस एकता से क्या मतलब हैं। एकता जरूर होना चाहिए, कोई उसके खिलाफ नहीं हैं। लेकिन ऐसे मुद्दे हैं जिन पर अमल हो, तो एकता की बात हो।

राजीव जी की हत्या के सिलसिले में जो इंक्वायरी हो रही हैं, मामला चल रहा हैं, कभी एक मंत्री बना दिए जाएगें, कभी दूसरे मंत्री बना दिए जाएगें तो कभी अखबार में निकल जाएगा, आज मैं फिर से कहता हूँ और दोहराता हूँ कि जो कॉसंप्रेसी की जाँच हो रही हैं, उसको कुछ लोग लीपापोती करके दबाना चाहते हैं। अगर किसी की हिम्मत हो तो खुलकर इसका खण्डन करें फिर मैं बताता हूँ कैसे दबाना चाहते हैं। राजीव जी के संबंध में ये बातें हैं, तो फिर हम और आप किस गिनती में आते हैं। बस 31 मई और 20 अगस्त दो-चार, दस लाख खर्च होंगे उसमें भी कोई आधा रूपया पहले खींचकर अपनी जेब भर लेगा और बड़ी-बड़ी सभाएँ हो जाएगी श्रद्धांजली हो जाएगी, राजीव जी को हम याद कर लेंगे इस तरह का ढकोसलापन जिसको हम अंग्रेजी में हिपोक्रेसी कहते हैं, तो राजीव जी के संबंध में तो अब खत्म होना चाहिए।

आप सब जब यहाँ से जाए तो मेम्बरशिप की बात पूरी करें, चुनाव कराएँ, एक नई चुनी हुई काँग्रेस पार्टी अक्टूबर में उभरकर कर आए, काँग्रेस वहीं हैं, जहाँ काँग्रेस के सिद्धांत हैं। अगर हम धर्म निरपेक्षता पर विश्वास नहीं कर सकते, उस पर अमल करने के लिए हिचकिचाहट हैं, अगर हम उनके कदम को भ्रष्टाचार की छाया से दूर नहीं कर सकते, तो समूची पार्टी पर ही ऊँगली उठेगी। आखिर महाराष्ट्र में काँग्रेस बहुत मजबूत थी, तो अखबारों में यही निकलता था कि चुनाव का नतीजा जो कुछ भी हो मुख्यमंत्री शरद पवार ही बनेंगे। अब वो बने हमारे मित्र हैं उसमें हमें कोई ऐतराज नहीं लेकिन लोगों ने समझने की कोशिश नहीं की या समझ में आया नहीं, कि आज जनता का रवैया ही कुछ दूसरा हैं। राजनीति में हिंसा और क्राइम को मिलाकर कोई वर्चस्व बनाना चाहे तो जो आँध्रा, कर्नाटक, महाराष्ट्र गुजरात और बिहार में हुआ हैं, वो सारे देश में घटित होगा।

मैं आपसे इन सब बातों का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि आप सबको उसकी जानकारी होना चाहिए। प्रदेश के राजनैतिक सम्मेलन की तिथियाँ विचाराधीन हैं। एक दो दिन में स्पष्ट हो जाएगी। जबलपुर में होगा हमारा सम्मेलन आप सब वहाँ पधारें 20 जून के बाद ही होगा। पहले नहीं होगा और वहाँ आकर प्रदेश के काँग्रेसजन इस देश की जनता को यह विश्वास दिला सकें कि कुर्सी की जोड़ तोड़ में, काँग्रेस पार्टी की खरीद फरोख्त में, काँग्रेस वालों की दिलचस्पी नहीं है और जब आप सब लोग मिलकर यह संदेश देंगे तो इस प्रदेश और प्रदेश की जनता काँग्रेस पर विश्वास करना शुरू करेगी। वरना अभी भी सब यही समझते हैं कि ये जो कुर्सी पर बैठे हैं वो बैठे रहना चाहते हैं। बाहर जो है वो अंदर घुसकर बैठना चाहते हैं। अन्दर घुसकर बैठने की कोई आवश्यकता नहीं है। अगर काँग्रेस जीवित रहेगी, अगले चुनाव के बाद हम काँग्रेस का प्रधानमंत्री देखना चाहते हैं। भारतीय जनता पार्टी का समर्थक प्रधान मंत्री नहीं देखना चाहते हैं।

उत्तर प्रदेश में 85 सीटें हैं। अब निश्चित है मुलायमसिंह जी कहेंगे कि आधी सीटें हमें दीजिए तो हम आपकी आधे में मदद करेंगे। मैं जानता नहीं कि मिलेंगे या नहीं वो भी जीतकर आएँगे तब न मदद मिलेगी। उत्तर प्रदेश में आज की हालत में कोई जीतकर आता दीखता नहीं। कोशिश पहले हो कि इस प्रदेश में काँग्रेस मजबूत हो ताकि अपने बलबूते पर आ जाय।

जो राजनीतिक दस्तावेज और आर्थिक दस्तावेज 19 तारीख को कार्यकर्ता सम्मेलन में स्वीकृत हुआ हैं मैं उसकी प्रिण्टेड कॉपीज, यहाँ तो हिन्दी ही चलेगी, 10-5 हजार धृतलहरे जी के पास भेज दूँगा और मैं उनसे प्रार्थना करूँगा कि काँग्रेसजनों को जिले-जिले में उनको भेजे। जब आप पूरे देश के बारे में काँग्रेस का मूल्यांकन करेंगे तो निश्चित रूप से जो आप कदम उठाएगे वो काँग्रेस के पक्ष में होंगे। अवाम के नजदीक पहुँचने के रास्ते ढूँढ रहे होंगे। यही हमारा उद्देश्य हैं और यही हमारा कर्तव्य हैं। यह मालवीय नगर का कार्यालय इन उद्धेश्यों और कर्तव्यों की निरन्तर आवाज उठाता रहे, सेवा और संघर्ष के मार्ग को प्रेरित करता रहे और मध्यप्रदेश के काँग्रेस जनों को अपनी भूमिका निभाने के लिए सक्षम करता रहे। यही मेरी शुभकामना हैं और मुझे आशा हैं हम आप सब मिलकर इन उद्धेश्यों की पूर्ति करेंगे। धन्यवाद। जयहिन्द।

राजनीति का अपराधीकरण हुआ है

17 अक्टूबर, 1995 को रोटरी क्लब, रायपुर में सम्बोधन के समय किए गए प्रश्नोत्तर के प्रमुख अंश—

प्रश्न : प्रजातांत्रिक ढाँचे में अपराधियों के खिलाफ क्या और कैसे कार्रवाई की जाए इस संबंध में सरकार ने क्या एक रपट जारी की हैं?

श्री अर्जुनसिंह : हमारे प्रजातांत्रिक ढाँचे में प्रशासन शक्ति का प्रतीक हैं और अगर यह नहीं होता है तो उसका परिणाम अच्छा नहीं होता, ये अपनी जगह साफ हैं। मैंने वो बात यहाँ पर कही क्योंकि वह तो पोलिटिकल आलोचना का विषय बन जाता हैं, उस रिपोर्ट के साथ भी यही हुआ है। आप रिपोर्ट में देखें उसमें तारीख 5.10.93 लिखी हैं। पाँच अक्टूबर को यह रिपोर्ट गृह सचिव ने लिखी है। तीन कापियाँ उन्होंने बनाई। एक अपने पास रखकर, एक गृह मंत्री को और एक गृह राज्य मंत्री को दी और उनसे निवेदन किया कि इस पर प्राथमिक चर्चा जल्द करें। इसमें वित्तमंत्री को भी बुलाएँ और फिर रास्ता निकाले, कैसे इस पर कोई कार्रवाई शुरू की जा सकती है? कारण कुछ भी हो सकते हैं लेकिन ये यथार्थ हैं। गृहमंत्री ने इस बात को लोकसभा में स्वीकार किया कि 5 अक्टूबर, 93 से लेकर 23 अगस्त, 95 तक कुछ भी कार्रवाई इस पर नहीं की गई, तो आपका कहना सही है। ऐसे कैसे हम काम कर सकते हैं।

प्रश्न : कुछ लोगों में ऐसी धारण है कि कई अपराधी राजनीतिज्ञों की कृपा से राजनीति में वर्चस्व रखते हैं। राजनीति में उनकी सीधे साझेदारी संजय गाँधी के समय से शुरू हुई आप क्या इससे सहमत है?

श्री अर्जुनसिंह: ये तो मैं समझता हूँ संजय गाँधी जी को बदनाम करने की जितनी भी कोशिशें हो सकती थी, उनमें से एक यह भी है। संजय जी ने कभी अपराधियों को कोई प्रोत्साहन देने की ऐसी कोई बात नहीं की, जैसे कि अपराधियों को अपनी ओर से प्रोजेक्ट कर रहे हैं। संभव है कोई ऐसे व्यक्ति रहे हो

जिसके साथ ये बातें जुड़ी हो। लेकिन मुझे मालूम हैं दो-तीन घटनाएँ, जबकि इस बात की जानकारी उनके नालेज में आई तो उन्होंने उसी वक्त दूध में मक्खी की तरह उन्हें निकाल कर बाहर फेंक दिया। इसलिए उनको दोषी मानना मैं समझता हूँ कि सर्वथा अनुचित है।

प्रश्न : अपराधी का राजनीतिकरण हुआ है, या कि राजनीति का अपराधीकरण हुआ है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, एक दूसरे के किसी रूप में पोषक बन जाते हैं। फिर ये कोई महत्व नहीं रखता कि कौन क्या कर रहा है। और अगर पोषक बनना अनिवार्यता की परिधि में आ जाय जैसे वोटिंग करने के लिए अगर बूथ केपचर के बगैर काम नहीं चल सकता तो बूथ केपचर तो वैसे ही लोग करेंगे और जब बूथ केपचरिंग से हम चुनाव जीतेंगे तो हम उनसे कैसे पीछा छुड़ा सकते हैं। इसलिए ये एक दूसरे से कोई अलग-अलग हैं, मैं तो नहीं समझता। ये तो दोनों का संबंध जब बनता हैं, तो इस संबंध को तोड़ने की बात जरूर मैं समझ सकता हूँ कि वह जिम्मेदारी अपराधी के ऊपर नहीं हो सकती। वह जिम्मेदारी राजनीतिज्ञ के ऊपर हो सकती है।

प्रश्न : माफ कीजिए? अगर राजनीति, राजनीति की तरह हो और अपराधी राजनीति में अगर आ जाते हैं तो यह हमारी मजबूरी बन जाती हैं। आम आदमी की मजबूरी बन जाती हैं। हम उसे नहीं चाहते हुए भी वो हमारे सिर के ऊपर आकर बैठ जाता हैं। ऐसी स्थिति में हमको क्या करना चाहिए? आप क्या एडवाईज देंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए डेमोक्रेसी में और कोई तरीका नहीं है। सिवाय इसके कि आप अवर्नेस पैदा करके जब दूसरा मौका आए, सिर पर बैठने वाला हो तो उस अवसर का अच्छी तरह इस्तेमाल करें।

प्रश्न : सब लोग सहमत हैं, इस बात के लिए लेकिन पाँच साल का उनका बहुमत हैं। तो पाँच साल उसका कुछ नहीं कर सकते?

श्री अर्जुनसिंह: उसका भी तरीका है, जरूरी नहीं है कि आपने कहा कि हम क्या करें? इसलिए मैंने कहा। पाँच साल के पहले भी बहुत सी ऐसी प्रक्रियाएँ है, जिनके द्वारा ऐसी बातें जो सामने आई, उनसे निपटने के लिए राह खोज सकते हैं।

प्रश्न : मैं नहीं कहना चाहता लेकिन जैसा मुझे कहा गया है कि जन प्रतिनिधि को वापस बुलाने की बात जय प्रकाश जी ने कही हैं, तो इस बात से आप सहमत है कि नहीं?

श्री अर्जुन सिंह: देखिए इस बात में और बहुत भी पेचीदगियाँ है क्योंकि चुनना और वापस बुलाना ये प्रक्रियाएँ प्रजातंत्र में होती है। लेकिन शायद व्यावहारिक रूप में अपने यहाँ अभी यह संभव न हो। जब हमारे देश में साक्षरता का स्तर बहुत बढ़ जाएगा, फिर यह बात भी हो सकती है, इसमें कोई हर्ज नहीं हैं।

प्रश्न : चन्द्रास्वामी को आप राजनीतिज्ञ मानते हैं या अपराधी?

श्री अर्जुनसिंह: आप व्यक्तिगत बात पूछने लगे। आप जो उसको मानते हैं, उससे 2 डिग्री आगे बढ़कर मैं मानता हूँ।

प्रश्न : अगर आप यह मानते है कि जैसा 1949 में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी कहा था कि किसी भी व्यक्ति को एक पद पर दो बार से ज्यादा नहीं बैठने दिया जाए। मैं समझता हूँ कि आपका ध्यान इस ओर गया होगा। आप कहाँ तक इससे सहमत है?

श्री अर्जुनसिंहः ये भी एक रास्ता हैं उसमें क्या शक है।

प्रश्न : मेरा प्रश्न है कि राजनीतिज्ञ आज अपराधियों के सहारे सर्वेसर्वा बन जाते है। क्या व्यक्तियों का इतना महत्व बढ़ गया हैं, डेमोक्रेसी में? इसका क्या कारण है?

श्री अर्जुनसिंहः इसका कारण अपराधीकरण हैं, यह तो मैं नहीं मानता लेकिन यह बात सही है कि जो सामान्य रूप से मतदाता का मत बनाने के लिए ऐसे बिन्दू होना चाहिए वह नीतियाँ, सिद्धांत और कार्यक्रम उनका अभाव है। ये भी सही है कि व्यक्ति का भी अपना प्रभा मण्डल होता हैं। एक क्षेत्र होता हैं उसका असर तो पड़ता हैं लेकिन जब प्रशासन को चलाने के लिए, देश को चलाने के लिए कोई बात सामने आती हैं, तो उसमें उन नीतियों, सिद्धांतों और कार्यक्रमों को प्राथमिकता तो देना चाहिए और सही बात यह है कि पूरी तरह से हम व्यक्तियों पर बहुत निर्भर हो गए हैं।

प्रश्न : श्रीमान जी, मैं आपसे दो छोटे-छोटे प्रश्न करना चाहता हूँ। एक तो पहचान किस तरह की जाय जो आपके पास बैठा हुआ हैं, वह राजनीति में हैं वह अपराधी हैं या नही है और यदि अपराधी हैं तो कितना अपराधी हैं। मेरा दूसरा प्रश्न हैं?

श्री अर्जुनसिंहः मुझे आपसे असहमति व्यक्त करते हुए कोई खुशी नहीं है। लेकिन मैं ये कहना चाहता हूँ कि आदमी चूहा नहीं है। अगर इस देश का नागरिक अपने को चूहा समझने लगे तो फिर बिल्लियाँ ही राज करेंगी और बिल्ली को राज करने देना मैं किसी तरह से उचित नहीं मानता। जहाँ तक आपका पहला सवाल हैं ये सही बात है कि ये बात एकदम से प्रकट होना थोड़ा मुश्किल काम है। लेकिन ये बातें छिपती भी नहीं हैं। कहीं न कहीं किसी न किसी प्रकार से बात विदित होने लगती हैं। कितने व्यक्ति अपराधी का संरक्षण पाए हुए हैं, कितने दे रहे हैं या स्वयं कौन अपराधी हैं। ये बात छिप नहीं सकती हैं। कभी-कभी समय थोड़ा लग सकता हैं। इसलिए तो मैं कह रहा हूँ कि जो नागरिक समितियाँ आप बनाएँ, वे इस जिम्मेदारी को निभा सकती है, क्योंकि जब उनमें नागरिकों का प्रतिनिधित्व रहेगा उनके पीछे कोई पोलिटिकल एप्रोच नहीं रहेगी कि ये नागरिक समितियों ने अगर मेरे ऊपर प्रश्नचिह्न लगा दिया हैं तो ये कॉंग्रेस के कहने से लगाया हैं या बी.जे.पी. के कहने से लगाया हैं या कम्यूनिस्ट पार्टी के कहने से लगाया हैं।

प्रश्न : क्या आपको ज्ञात था कि राजनीति के अपराधीकरण की रपट गृहमंत्री के दराज में बंद हैं?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए अगर भनक भी पड़ गई होती कि ऐसी रिपोर्ट आकर गृह मंत्री के दराज में बंद हैं तो बहुत कुछ हो गया होता। किसी को भी इस बात की जानकारी नहीं हैं। केबीनेट में किसी को इस बारे में बताया भी नहीं गया कि ये जो शिकायत हैं वह यही है। ये तो एक बात हैं और बहुत सी चीजें ऐसी होंगी तभी तो मैं जहाँ हूँ वहाँ हूँ, और वे जो वहाँ हैं, वहाँ है।

प्रश्न : आप एक बात जरूर मानते हैं कि ये अपराधीकरण जो हैं उसके मूल में कारण है नैतिक मूल्यों का निरंतर ह्रास होना। यदि मानवीय स्वभाव में ऐसे मूल्यों का ही नैतिक पतन होता रहेगा.... तो हम खुद भी अपराधी हो जाएंगे।

श्री अर्जुनसिंहः ये बात आपने बिल्कुल सही कही कि हमारी शिक्षा और दीक्षा दोनों में हमारे बीच में मूल्यों का पतन हुआ है और इसलिए बहुत हद तक ऐसी परिस्थिति निर्मित हुई है। इसलिए यह तथ्य जिम्मेदार है

और जो हमारा शैक्षणिक माध्यम हैं उसमें उसको प्राथमिकता नहीं दी जा सकी।

प्रश्न : आप पूरे देश का भ्रमण कर रहे हैं और कई जगह दौरे पर गए हैं, आपको क्या लग रहा है देश का माहौल इस वक्त कैसा है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं अपनी बात कहूँगा तो लोग फिर कहेंगे कि अपना विचार थोपना चाहते हैं। कम से कम आप पर तो कोई ये आरोप लगा नहीं सकता कि मैं आप पर अपने विचार थोपूँगा। लेकिन ये प्रश्न पूछकर आपने मुझे एक अवसर जरूर दिया हैं। मेरा ऐसा सोचना है कि जो कुछ मैं आँकलन कर सका हूँ कि आने वाले चुनाव जो होंगे अगले वर्ष अन्य चीजों, मुद्दों के अलावा लोगों को अपनी राय बनाने में दो महत्वपूर्ण मुद्दे भी जुड़ेंगे, एक भ्रष्टाचार का और एक अपराधीकरण का। मैं ऐसा मानता हूँ कि मतदाताओं के मन में ये बात आ गई हैं। शायद वह बहुत अच्छा अवसर होगा, कुछ हद तक शुद्धिकरण करने का। अब वह किस हद तक होता हैं, नहीं हो सकता है यह बात समय बताएगा लेकिन ये एक ऐसा विषय हैं जो लोगों के मन में धीरे-धीरे बैठता जा रहा हैं जिसे हमें दूर करना हैं और हमको दूर करने का अवसर मिलेगा, हमारे पास वह अधिकार है।

प्रश्न : अंतिम प्रश्न है अभी तो पार्टियाँ कह रही है कि हम अपराधियों को टिकट नहीं देगे लेकिन जिन पर ऋण बकाया हैं, आयकर बकाया हैं क्या वह अपराधी नहीं है? क्या जन-प्रतिनिधि कानून में संशोधन कराएँगे?

श्री अर्जुनसिंह: जरूर संशोधन होना चाहिए और जो इलेक्ट्रोल रिफ़ार्मस् की बात करके सक्रिय तौर पर बात की जाती है। अब उसकी गइराई में जाने की जरूरत है और निश्चित रूप से ऐसे प्रावधान होने चाहिए। यह स्पष्ट बात हैं कि ऐसे लोगों को किसी चुने हुए पद पर जाने का अवसर नहीं मिलना चाहिए। मैं बिल्कुल सहमत हूँ, आपसे।

प्रश्न : एक छोटा सा सवाल हैं। आपने अपने उत्तर में यह बात कही थी कि अधिकांश पार्टियाँ कैसा आचरण करती है, इस पर बहुत कुछ निर्भर करेगा। हम देख रहे हैं देश में राजनीतिक पार्टियों को, एक पार्टी ऐसी थी जिसके बारे में समझा जाता था कि वह बड़ी ट्रेडिशनल पार्टी हैं और बहुत ज्यादा निष्ठावान लोग उसमें हैं। आपको क्या लगता हैं कि अभी भी कुछ ऐसे दल हैं जो आपके विचार से सहमत हो सकते हैं और आपके साथ आ सकते हैं।

श्री अर्जुनसिंह: मैं अपना मत किसी पार्टी पर टिप्पणी करने के लिए इस्तेमाल नहीं करना चाहता। कुछ कहना होगा तो पब्लिक मीटिंग में कहूँगा लेकिन जहाँ तक इस विषय का प्रश्न हैं अपराधीकरण से राजनीति को बचाने का इसमें तो मैं समझता हूँ कि जिस स्थिति में भी पोलिटिकल पार्टी हैं, अच्छी हैं, बुरी है अगर वह कुछ कदम उठाने के लिए सहमत हैं तो कम से कम उतने कदम तो उठा लिए जाय। जिस हद तक भी जा सकें मैं समझता हूँ आज एक ऐसा वातावरण बना हैं जिसमें वह कदम उठाए जा सकते हैं। इसके लिए सभी राजनीतिक दलों को साथ में रखना आवश्यक है और मैं ऐसा समझता हूँ कि आने वाले समय में जब यह इलेक्ट्रोगेल रिफ़ार्मस की बात स्पष्ट होने लगेगी तो सभी पार्टियाँ इसमें अपना-अपना रोल अदा करेगी, जनता के बीच में उनका असर है, नहीं है, यह अलग प्रश्न है।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशों में

हिन्दुस्तान की एकता और अखण्डता बरकरार रहे

30 जनवरी, 1995 को जयपुर की आमसभा में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश—

आदरणीय माथुर साहब, राजस्थान काँग्रेस के सभी आदरणीय भाइयों और बहनों, युवक काँग्रेस और एन.एस.यू.आई. के नौजवान साथियों और इस प्रदेश के कोने-कोने से पधारे हुए किसान भाइयों, साथियों और बहनों।

अभी हमारे बड़े भाई भगवत झा साहब ने जो यहाँ पर भाषण दिया, वह सचमुच में एक दस्तावेज है आधुनिक भारत की नई करवट का। यह अवसर है जब हम ठहरकर, रुककर पीछे मुड़कर देखना चाहते हैं कि जिस रास्ते पर चलकर हम जहाँ पहुँचना चाहते थे, जहाँ हमारे देश के रहनुमाओं ने हमें ले जाने के लिए आज़ादी की लड़ाई में कुर्बानियाँ दी, क्या हम उसी रास्ते पर चल रहे हैं या किसी ऐसे चौराहे पर किसी ऐसी ओर मुड़ तो नहीं गए जहाँ उस मंज़िल पर पहुँचना तो दूर इतिहास के भटकाव में हम चले जाएँ। यह देखना हमारा फ़र्ज़ ही नहीं है, वरन हमारा धर्म है, क्योंकि हम ऐसी महान संस्था से जुड़े हुए हैं जो संस्था दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक संस्था है। इससे बड़ी कोई राजनीतिक संस्था दुनिया में नहीं है।

हमारे बीच में बहुत फ़र्क़ हैं, भाषा का फ़र्क़ है, वेशभूषा का फ़र्क़ है, धर्म का फ़र्क़ है, लेकिन हिन्दुस्तानी ज़ज़बात में कोई फ़र्क़ नहीं है। आज इस जजबात को बाँटने या कमजोर करने की जो कोशिश हो रही है अगर हम उसके बारे में सतर्क नहीं रहेंगे तो हिन्दुस्तान की एकता कभी बची नहीं रह सकती और एकता कमज़ोर होगी तो इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत वर्ष फिर से गुलाम होगा। इसकी तकवारी करने की सबसे पहली ज़िम्मेदारी काँग्रेस पार्टी की है।

आज दुनिया में हर देश, अपने आर्थिक ढाँचे को मजबूत करके चलना चाहता है। दुनिया में आर्थिक सामंजस्य बैठाने की कोशिश चारों तरफ हो रही है, वह अकेले भारत में नहीं हो रही है। अगर हम भी वही करना चाहते हैं तो कोई बुरी बात नहीं है। लेकिन हमें यह सोचकर चलना चाहिए कि भारत के आर्थिक ढाँचे का मतलब केवल उन लोगों के हितों से नहीं जुड़ा रह सकता है जो मुश्किल से भारत के 10% लोग हैं। जो 90% सर्वहारा वर्ग हैं जो दोनों वक्त के भोजन का कभी-कभी मोहताज रहता है, उनके आर्थिक ढाँचे के भी सामंजस्य की उतनी ही जरूरत है, जितने की हमारे बड़े-बड़े उद्योगपतियों के ढाँचों का है और उसी बात को कहना आज गुनाह बन गया है।

हम यह जानते हैं कि आज देश में लाखों टन अनाज का भंडार भरा पड़ा है, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दक्षिण के राज्यों में चावल, गेहूँ का भंडार है फिर भी आज कीमतें गेहूँ और चावल की गरीब की पहुँच के बाहर क्यों हो रही है। क्या यह करोड़ों टन अनाज जो गोदामों में सड़ रहा है, उनके पास तक नहीं पहुँचाया जा सकता है? क्या बीच में जमाखोर, ब्लैक मार्केटियर्स, मुनाफ़ाखोर इसमें आड़े आ रहे हैं? तो यह पूछना कि ऐसे लोगों के खिलाफ़ कार्रवाई क्यों नहीं हो रही है क्या यह पूछना एक गुनाह है?

मैं इसलिए आपसे ये बातें कह रहा हूँ क्योंकि हम सब चाहते हैं कि काँग्रेस पार्टी मजबूत हो, हम सब चाहते है कि हम सब मिलकर इस पार्टी की सेवा करें और संघर्ष के 108 साल के इतिहास को अभी कम से कम एक शताब्दी और चलाने की कोशिश करें क्योंकि हम चाहते हैं कि हमारे वे नौजवान जो आज काँग्रेस से जुड़े हुए हैं, कोई विधायक है, तो कोई एम.पी. हैं, कुछ मंत्री हैं और कुछ वैसे ही इस पार्टी के कार्यकर्ता हैं, जिनका पूरा राजनीतिक भविष्य आगे पड़ा हुआ है, कम से कम उन्हें विरासत में एक मजबूत और जनता की भलाई करने वाली काँग्रेस मिले। ऐसी

कांग्रेस न मिले जिसको लेकर वे चार कदम भी आगे न चल सकें और अपने भविष्य को वहीं पर समाप्त कर दें। इसके लिए यह जरूरी है कि हम बिना किसी डर के, निर्भीकता से एक प्रजातांत्रिक देश में जो मुद्दे होते है उनको जनता के बीच में ले जाएँ। अपनी संस्था के माध्यम से ले जाएँ और जनता का विश्वास अर्जित करें। अगर जनता का विश्वास हमको नहीं मिलेगा तो हम कितनी ही हेकड़ी भरते रहें, जिस दिन चुनाव होगा हम औंधे मुँह गिरकर समाप्त हो जाएँगे। ऐसी परिस्थिति न आए यह हम सब की सोचना है और इसी के लिए हम काम करना चाहते है।

आज उस कर्तव्य पथ पर चलने के लिए आप लोगों ने जो इतनी बड़ी संख्या में आकर हमें संबल दिया है हमें आशीर्वाद दिया है, मैं उसके लिए आप सबका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। हमें यहाँ पर हमारे कुछ नौजवान भाइयों ने एक तलवार दी, तलवार राजस्थान की आन और मर्यादा की प्रतीक है। यह तलवार इज्जत रक्षा के लिए, बेसहारों की रक्षा के लिए, आतंक करने वालों के खिलाफ लड़ने में, देश की रक्षा करने के लिए यह तलवार हरदम निकली है। आपने यह तलवार कृपा करके मुझे दी है। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि इस तलवार की मर्यादा रखने की, अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य से कोशिश करूँगा। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

कांग्रेस धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त को नहीं छोड़ेगी

4 फरवरी, 1995 को किशनगढ़ (राजस्थान) की आमसभा में उद्बोधन के प्रमुख अंश—

परम आदरणीय श्री नारायणदत्त तिवारीजी, मंच पर विराजे हुए कांग्रेस के सभी आदरणीय साथियों और इस किसान सम्मेलन में दूर-दूर से आए हुए आदरणीय माताओं, बहनों और भाइयों।

आज के इस जलसे में मुख्य तकरीर हमारे अध्यक्ष आदरणीय श्री नारायण दत्त तिवारी जी की होगी। मैं सब भाइयों और बहनों को रमजान के इस पावन महीने की बहुत-बहुत मुबारकबाद देता हूँ और इस बात का एहसास आपको दिलाना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान में सचमुच में वही भावना ऊपर है जिसका कि जिक्र हमारे एक गाँव के, दिखने में साधारण लेकिन जज्बातों में बहुत धनी भाई इस्वार जी ने अपनी कविताओं में किया है। निश्चित ही हिन्दुस्तान को जरूरत है काबिल इंसानों की, उसूलों से जुड़े हुए इंसानों की, मेहनतकश इंसानों की जो देश को हरदम सबसे पहले रखकर ही अपनी बाकी सब बातों के बारे में सोचें। हमारे देश की आजादी ऐसे ही इंसानों की बदौलत हमको मिली है। आज हमें भारत के चारों तरफ खतरे नजर आ रहे हैं। ऐसी चुनौतियाँ नजर आ रही हैं जिनकी वजह से अवाम को एक बहुत बड़े खतरे से गुजरना पड़ रहा है तो केवल इसीलिए है कि इस प्रकार के इंसान अपने फर्ज को अदा करने में या तो गफलत कर रहे हैं, या कमजोरी दिखा रहे है या उनको अपना फर्ज अदा करने से रोका जा रहा है।

आखिर भारत वर्ष किसका है? भारत वर्ष इस देश में रहने वाले उन करोड़ों-करोड़ों लोगों का है जो अपनी मेहनत की कमाई खाते है। उनका है जिन्हें गाँधीजी ने दरिद्र नारायण कहा था, उन लोगों का है जो गाँवों में रहते है, खेत जोतते है, मजदूरी करते है, शहरों में रहते है दोनों समय का भोजन अपनी मेहनत से पैदा करते है। फैक्ट्रियों में काम करते है। आज उस हिन्दुस्तान को ही आगे बढ़ाने की बात करनी चाहिए, इसके अलावा और किसी हिन्दुस्तान की बात करना मैं नहीं समझता कि देश के प्रति न्याय है। आज इस हिन्दुस्तान की हालत क्या है? महँगाई उस सीमा को पार कर गई है, जब यह सोचने की गुंजाइश ही नहीं बची कि कैसे इससे मुकाबला किया जाएगा? हमारे नौजवानों के हाथों को बेकार घर में बैठाने की कोई साजिश हो रही है और वह साजिश बड़े-बड़े सरमायेदारों के द्वारा की जा रही है। पहले कांग्रेस ब्रिटिश हुकूमत से लड़ी, फिर राजे रजवाड़ों से लड़ी और फिर ऐसे भी आन्दोलन इस देश में चले, जहाँ किसानों को अधिकार दिलाने के लिए, कांग्रेस के लोगों ने सत्याग्रह किया, जेल भरे, गोलियाँ खाईं। आज

उन लोगों के अधिकार के लिए लड़ने के लिए, हमारे पास समय नहीं है, हमारा समय बड़ी-बड़ी विदेशी कंपनियों की ताबेदारी में जा रहा है, कैसे हम उनकी सेवा करें, लेकिन जो सच्चे मालिक हैं, इस देश के उनकी सेवा करने के लिए हमको क्या करना चाहिए? इसे सोचने की हमारे पास फुर्सत नहीं है और इसलिए इस बात को दुरुस्त करना पड़ेगा और उसके लिए हमें वह कदम भी उठाने पड़ेंगे जिससे लोगों के बीच में इस बात का विश्वास हो कि इंदिरा कॉंग्रेस, कॉंग्रेस के सही उसूलों पर चलकर ही आम लोगों की, गरीबों की, सबके हितों की रक्षा करेगी।

दूसरी पहचान जो कॉंग्रेस की कमजोर हुई है वह धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त को छोड़ने की वजह से हुई। अक्लियत हिन्दुस्तान के सारे नक्शे का अंग है, अगर कोई यह सोचे कि कुछ लोगों को अलग रखकर हम हिन्दुस्तान की तस्वीर बना सकते हैं। इससे बढ़कर कोई गलत बात नहीं हो सकती। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई ये सब मिलकर ही भारत माता के आँगन की शोभा बढ़ाते हैं। ऐसा कुछ हुआ है जिसकी वजह से लोगों के मन में अविश्वास पैदा हुआ है।

भाई शायत ने जो बात कही, मैं इससे सहमत हूँ, हमें इस चीज को रोज कहकर के उन घावों को हरा करने की जरूरत नहीं है। लेकिन गुनाहगार की पहचान करने में गफलत करना भी ठीक नहीं है। हमें तो अब मिलकर कोई न कोई रास्ता ऐसा निकालना चाहिए जिससे यह मसला एक दूसरे की बातचीत से, सहयोग से और अदालत में जो बात चल रही है, वह जल्दी से जल्दी समाप्त हो और फिर हम सब मिल बैठकर कोई रास्ता निकालकर अपने देश के लिए जो सबसे सरल रास्ता हो, अच्छा रास्ता हो, हर कौम के लिए, हर जाति, धर्म के लिए वह रास्ता हम सब मिलकर निकालें आज समय का यह तकाजा है।

यह किसान सम्मेलन, राजस्थान के उन किसानों की समस्याओं को जिनका प्रस्ताव में जिक्र किया जाएगा सरकार के, सामने रखेगा और मैं माथुर साहब जो सदर हैं हमारे राजस्थान प्रदेश कॉंग्रेस के, उनसे यह निवेदन करना चाहूँगा कि अभी समय आ गया है कि इस प्रकार की जो समस्याएँ जगह-जगह पर किसानों की हैं, अब हम केवल प्रस्ताव पास करके अखबारों में बयान देकर अपनी बात को समाप्त न करें उनके लिए संघर्ष करें।

हर जगह पर जहाँ इस तरह की समस्या है और सरकार नजरअंदाज कर रही है, किसानों के हितों पर कुठाराघात हो रहा है, हमें कॉंग्रेस की अपनी उस जानी मानी परम्परा के अनुसार सत्याग्रह आन्दोलन चलाने की जरूरत है। आप करिए सत्याग्रह का कार्यक्रम यहाँ पर, हम लोग आएँगे, तिवारी जी आएँगे, प्रदेश के किसानों के हितों में जो होना चाहिए उसके लिए एक जबरदस्त जन आन्दोलन की जरूरत है, याचक बनने से या मेहरबानी के लिए किसी से प्रार्थना करने से किसानों के हित और हक-हकूक की रक्षा नहीं हो सकती। मुझे विश्वास है कि इस प्रदेश के भाई और बहन इंदिरा कॉंग्रेस के नेतृत्व में एक ऐसा वातावरण बनाएँगे और ऐसे आन्दोलन को जन्म देंगे जो किसानों के हकों की रक्षा कर सकेगी और जो लोग किसानों के हकों पर डाका डाल रहे हैं, एक सशक्त प्रजातांत्रिक तरीके से हम उनके ऊपर अंकुश लगा सकेंगे।

आज यह किसान सम्मेलन अपना इस प्रकार का फैसला करके यहाँ से जाए, यही हम सबकी अपेक्षा है और हम सब आपके इन हितों के साथ जुड़े हैं और आपको विश्वास दिलाना चाहते है कि इंदिरा कॉंग्रेस केवल इंदिरा जी के नाम को अपने साथ नहीं जोड़ना चाहती है, हम इंदिरा जी के उस व्यापक व्यक्तित्व का, वह व्यक्तित्व जो समाज के कमजोर से कमजोर व्यक्ति की चिंता से जुड़ा था, माताओं, बहनों के हक और हकूक से जुड़ा था, नौजवानों के लिए आने वाले समय की चुनौतियों से जुड़ा था, देश हित से राष्ट्र भक्ति से, हर प्रकार से ओत-प्रोत था। आप सब उसमें सहयोग के साथ आगे आएँ ताकि ये शक्ति जनता की शक्ति के रूप में उभरकर सामने आए। यही मेरी

आपके विनम्र प्रार्थना है, आप सबने यहाँ आकर इतनी देर तक हम सब लोगों की बातें सुनीं, इसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ, धन्यवाद। जय हिन्द।

हम सब मिलजुल कर भारत को आगे बढ़ाएँ

29 मार्च, 1995 को हैदराबाद की एक सभा में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश—

आदरणीय शहाबुद्‌दीन अहमदजी, आदरणीय श्री नारायणदत्तजी तिवारी, यहाँ पर पधारे हुए सभी आदरणीय साथियों से पहले तो मुझे इस बात के लिए माफी माँगनी चाहिए कि मैं काफी देरी से आपके आदेश का पालन कर पा रहा हूँ। इसका मुझे दुःख है। यह हम सब का सौभाग्य है कि हम हिन्दुस्तान जैसे देश के नागरिक हैं। देश में इतने हजारों साल के हमारे देश के इतिहास से यह बात सारी दुनिया के सामने साबित हो चुकी है कि फिरकापरस्ती किसी भी समय इस देश में रहने वाले लोगों का आदर्श नहीं रही। यही हमें देखने और सीखने को मिला है कि अपने घर की हर खिड़की और दरवाजे को खुला रखों, ताकि दुनिया के हर तरफ से विचार, आदर्श और सिद्धांत से हम कुछ सीखें। हम सबके सामने यह आदर्श था कि दुनिया भर के सारे धर्म एक हैं। अदब करने का रास्ता अलग-अलग हो सकता है, लेकिन धर्म का मूल एक है। इंसान को बेहतर इंसान बनाने का समाज के अन्दर इंसान को अपनी जिम्मेदारी बेहतर तरीके से निभाने की बात सब धर्म एक ही तरह से हमें सिखाते हैं और मुझे यह कहते हुए गर्व है कि आज भी हमारे देश के अन्दर दुनिया का कोई धर्म ऐसा नहीं है, जिसको स्थान, उसको सम्मान दोनों इस देश में न मिलता हो।

दुर्भाग्य की बात है कुछ वर्षों से हिन्दुस्तान के अन्दर कुछ इस प्रकार की विचारधाराएँ उभरकर सामने आई। हमारी आपकी विरासत को स्वीकार कराने की बजाय अलग-अलग तारीखों में बाँटने की कोशिश करने लगे। हर एक की विरासत एक है। हमारी संस्कृति एक है। इसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, पारसी और जितने धर्म के लोग हो सकते हैं उन सबकी मिली जुली यह विरासत है।

इस नाजुक दौर से हम गुजर रहे हैं। यह हमारा फर्ज हैं कि हम अपने दल के अन्दर दल के बाहर सबको जोड़ने की कोशिश करें। सबको एक साथ लेकर चलने की बात करें और उन कमजोरियों को जिनकी वजह से अवाम का विश्वास, अकलियत का विश्वास काँग्रेस से उठ रहा है उनको पूरी तरह से समझकर उनको दूर करने की कोशिश करें। इस तरह जो अलग-अलग प्रदेशों में जाने का कार्यक्रम हैं, इसका यही उद्देश्य हैं। तिवारी जी आपके सामने और भी बहुत सी बातें करेंगे।

हैदराबाद जैसे शहर के लोगों ने हर तरीके से ज़माना देखा भी है और जमाना बनाया भी है। आप लोगों से ही हम उम्मीद करते हैं कि इस काम में आप सबका आशीर्वाद और सहयोग हम लोगों को मिलेगा आप सबके प्रति अपने दिल की गहराइयों से मैं बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करता हूँ। जय हिन्द।

एक दिन भारतीय जनता पार्टी की सरकार होगी

4 अप्रैल, 1995 को सूरतगढ़ (राजस्थान) की एक सभा में भाषण के प्रमुख अंश—

आदरणीय श्री माथुरजी, यहाँ मंच पर विराजे हुए साथियों, आदरणीय माताओं, बहनों और ग्रामीण बंधुओं आप काफी देर से यहाँ पर विराजे हैं। सर्वप्रथम शौर्य बलिदान और निश्चल भक्ति से ओत प्रोत राजस्थान की पवित्र भूमि

को मै नमन करता हूँ। जिसमें महाराणा प्रताप जैसे राष्ट्रवादी व्यक्ति को जन्म दिया। जिसने मीरा जैसी कृष्ण भक्त को जन्म दिया। यही भारत की असली भूमि है। उस भूमि को मैं नमन करता हूँ। ये बातें केवल इतिहास के लिए नहीं है ये बातें हमारे आपके लिए हैं, राजस्थान के लोगों के लिए हैं।

जलियाँवाला बाग में सैकड़ों लोग भून दिए गए और उस भाग की धरती लाल हो गई। किसलिए? विरासत को बढ़ाने के लिए। वो विरासत किसी की व्यक्तिगत जायदाद की विरासत नहीं हैं, वो विरासत इस देश के करोड़ों उन इंसानों की विरासत है जिनके पास दो वक्त का भोजन नहीं था, जिनकी झोपड़ियों का अँधेरा सुबह सूरज की किरणें दूर किया करती थी। उन सबके मन में जो लालसा थी, जो तमन्ना थी, इंसानियत थी, जिन्दगी जीने के लिए वो विरासत उनके हाथ में सौंपने के लिए वो संघर्ष था। और जब हम आजाद हुए हमारे नेताओं ने देश के लोगों के साथ ये वादा किया कि अब हम इस देश को उस तरह से बनाएगें जिसके लिए हम सभी ने मिलकर संघर्ष किया है।

विगत 50 साल के अन्दर तीन दफे देश पर आक्रमण हुआ। बेड़ा भेजकर हमको आँखें दिखाने की कोशिश की गई। अपने ही देश के नौजवानों, सैनिकों और हथियारों के बल पर भारत ने अपनी आजादी की रक्षा की। और इस महाद्वीप के राजनीतिक भूगोल को ही बदल दिया। बंगलादेश पैदा हो गया। आखिर ये विरासत हम बचा सकते हैं, तो हम बचाने की कोशिश करें। जब लुटाना हैं हम मजबूर हैं तो फिर इस बात को पूछने का अधिकार हमको होना चाहिए कि ऐसा क्यों हो रहा है?

उदारीकरण की बात आई, क्या हम नहीं चाहते कि देश के उद्योग न बढ़े? हम चाहते हैं कि नए-नए कारखाने बने, जो बंधन लगाए गए हैं, उद्योगों पर वह हटाए जायँ, लेकिन उसके साथ-साथ यह भी जरूरी है कि जो देश का बहुमत गरीब हैं, सर्वहारा हैं उसके लिए भी तो कुछ होना चाहिए और केवल इतना नहीं कि हम कह दें कि आपका वजीफा 50 रुपये से 100 रुपये कर दिया। इतना ही नहीं कि काम के लिए आपकी मजदूरी 25 रुपये से 50 रुपये कर दी गई है। क्या ये देश का गरीब, हरिजन, पिछड़ा वर्ग अन्य जो गरीब लोग हैं, वह हरदम जिन्दगी भर केवल मजदूर बने रहेंगे? क्या केवल कुछ टुकड़े उनकी तरफ फेंककर हम महज अपनी जिम्मेदारी पूरी कर देंगे? क्या उनको अधिकार नहीं हैं कि भारत की आर्थिक प्रगति की कमाई में वो हिस्सेदार बने? केवल मजदूर नहीं बने रहे जो किसी की मेहरबानी पर मजदूरी करते हैं और कमाई करते हैं? ये सोच जब तक इस देश में नहीं आएगी तब तक जो भी प्रगति देश की होगी वो एकांगी होगी और उसके प्रति लोगों का विश्वास नहीं बन सकता। इसकी जिम्मेदार हम किसी और पार्टी को नहीं मानते हैं। ये ऐतिहासिक जिम्मेदारी काँग्रेस पार्टी की है।

अब जरूर यहाँ वहाँ बातें होने लगी हैं कि हम गरीबों का भी ध्यान रखेंगे। ये मन को बहलाने वाली बातें है, ध्यान कोई नहीं रखेगा। महात्मा गाँधी ने तो कहा था कि हिन्दुस्तान की तस्वीर पर ही जिन्दा रहेंगे तो जब कोई काँग्रेस की बात सोचेगा तो दरिद्रनारायण की तो सोचेगा ही, लेकिन उस दरिद्रनारायण की दरिद्रता दूर करने की कोई सोच, सामने लाए तो बात समझ में आती है। आज ये प्रश्न है जिनकी वजह से देश में काँग्रेस पार्टी की साख कम हो रही है। इन सब बातों को लेकर जब बात सामने लाई जाती है तो नेताओं को बुरा लगता है कि शायद ये खतरा पैदा हो, तो जो कुछ हमारी कमाई है, कहीं यों न चली जाय।

अटलबिहारी वाजपेयी ने एक झुनझुना लटका दिया है, हमारे सामने कि अगले साल लोकसभा के चुनाव में बहुमत नहीं आया तो भा.ज.पा. काँग्रेस को मदद कर सकती है, सरकार बना सकती है। आप कभी कल्पना करते है कि यदि पंडित जी, इंदिरा जी, राजीव जी प्रधानमंत्री रहते तो क्या भारतीय जनता पार्टी का कोई व्यक्ति इस तरह

[illegible] था? पर अब हम चुपचाप सुनते रहते हैं। भारतीय जनता पार्टी के नेता जानते हैं कि आज [illegible] इतनी पद लोलुपता हो गई है कि अगले साल इनको बहुमत नहीं मिलेगा तो उस हालत में भी कॉंग्रेस [illegible] बहुत से ऐसे लोग हैं जो कहेंगे कि मंत्री पद मिल जाय, प्रधानमंत्री पद मिल जाय, तो कोई हर्ज नहीं भारतीय [illegible] पार्टी के गठबंधन करने में, मैं आज के कॉंग्रेसजनों से पूछना चाहता हूँ क्या वो दिन देखना चाहते हैं?

[illegible] आज ये लोग नहीं चेतेंगे, आज यदि कॉंग्रेस का शुद्धिकरण नहीं होगा, यदि कॉंग्रेस अपने सिद्धांतों से [illegible] के लिए कटिबद्ध नहीं होगी तो वो दिन भी हमें देखने को मिलेगा जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार दिल्ली [illegible] दिल्ली।

हम सब मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाना चाहते हैं एक ऐसा माहौल बनाना चाहते हैं जहाँ कॉंग्रेस का साधारण से साधारण कार्यकर्ता अपनी जिम्मेदारी संस्था के प्रति और देश के प्रति अच्छी तरह से समझ सके। और मैं जानता हूँ कि ऐसे क्षण जब आते हैं और आएँ हैं, हरदम सामान्य कार्यकर्ता ही कॉंग्रेस की रक्षा करता है। आने वाले दिनों में मैं कॉंग्रेस के साथियों से यह प्रार्थना करता हूँ कि अब कार्यकर्ताओं को कॉंग्रेस की रक्षा करने की जरूरत है। क्योंकि नेता अपने-अपने स्वार्थ में पड़े हुए हैं क्योंकि उनको तो एक ही चीज दिखती है कि कितने दिन और बने रहेंगे लेकिन कार्यकर्ता ही कॉंग्रेस की रक्षा करें, ये मेरी आपसे प्रार्थना है।

कॉंग्रेस को आज उन पाँच लाख ऐसे कार्यकर्ताओं की जरूरत है जो कॉंग्रेस के आदर्श को समझ सकें, गरीबों की पीड़ा को समझ सकें, भारत के भविष्य को समझ सकें, अपने दल के भविष्य को समझ सकें, आज उन्हें आगे आकर इस महान संस्था की रक्षा करनी होगी। उन्हें आगे आकर एक नया नेतृत्व प्रदान करना होगा और नेतृत्व न केवल कॉंग्रेस को बचाएगा बल्कि आने वाले समय में देश की रक्षा करेगा। क्योंकि खतरे देश के सामने बहुत बड़े-बड़े हैं। यहाँ बैठे हुए हम लोगों को अंदाज नहीं है। वैसे आप लोगों को सीमा से कुछ न कुछ तो आहट मिलती होगी। देश के अन्दर वो आहट भी नहीं मिलती। लेकिन जिन तरीकों से देश मजबूत हो सकता है, देश के वैज्ञानिक अपनी सूझबूझ और हुनर से जो शस्त्र तैयार कर सकते हैं, चाहे वह 'पृथ्वी' हो या 'अग्नि' हो, आज उन पर रोक लगा दी गई। किसको खुश करने के लिए रोक लगाई? कौन सी कमी है हमारे यहाँ अगर देश की रक्षा करने में ही हम कमजोर हो जाएँगे तो फिर बाकी सब चीजों का मतलब ही क्या है? जो कुछ हो रहा है कश्मीर में हो या उत्तर पूर्व का इलाका हो इतनी चीजें अस्थिर करने वाली हो रही हैं जिनकी कल्पना भी हम यहाँ बैठकर नहीं कर सकते हैं। देश के लोगों को इसकी जानकारी होनी चाहिए।

आज इन सब चीजों को दूर करना निहायत जरूरी है। बहुत से हमारे साथी छोटे-छोटे गाँवों में काम करने वाले हैं। उनसे धौंस दपट की जाती है। हमारी रैली में भाग लेने वाली औरतों को निकाल दिया गया। हमारी बहनें हैं उनको लगातार तीन महीने से परेशान किया जा रहा है। हम सब लोग शांतिपूर्ण तरीके से सब काम करना चाहते हैं। ये प्रजातंत्र है हमारा अधिकार है लोगों के बीच में जाना। लोगों को बुलाना। अपनी बात कहना। लेकिन अगर हमारे साथियों को किसी प्रकार से प्रताड़ित किया जाएगा, धौंसदपट दी जाएगी, उनको परेशान किया जाएगा, तो ये बाकी काम होते रहेंगे। हमें उन लोगों की हरकतों के खिलाफ एक संघर्ष छेड़ना पड़ेगा। उसके लिए जेल जाना पड़े तो जेल जाएंगे। ऐसी हरकतें तो प्रजातांत्रिक तरीके के बिल्कुल विपरीत है। अगर इस देश में ऐसी हरकतें होती है, तो जो भी उसके लिए जिम्मेदार है उसको अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए।

मैं आपसे ये निवेदन करना चाहता हूँ कि यहाँ से जो आवाज उठेगी वो आवाज राजस्थान की सीमाओं तक नहीं सारे भारत के कोने-कोने में जाएगी। प्रजातंत्र के मालिकों से मैं प्रार्थना कर रहा हूँ। अगर आपने इन बातों पर गौर करके अपने फैसले नहीं किए तो आने वाले समय में केवल हम ही लोग दोषी नहीं माने जाएंगे, भारत का अवाम

दे देंगे माना जाएगा। क्योंकि लोग यही कहेंगे कि प्रजातंत्र में जिनके पास हथियार था, उन्होंने ही अपने अधिकारों का उपयोग ठीक ढंग से नहीं किया तो देश का तो ये हाल होना ही था। उसमें कैसे किसी को दोषी माने। जितने भी लोग हैं जिन्होंने यह आयोजन किया जो उनके सामने दिक्कतें आईं। उन सबके बावजूद जो उनका जनाधार है, जिसकी वजह से आपने उनकी बात सुनी हम आप सबको अपनी ओर से और साथियों की ओर से धन्यवाद देना चाहते हैं। जय हिन्द।

प्रजातांत्रिक पद्धति में अटूट विश्वास है

6 अप्रैल, 1995 को धूलिया (महाराष्ट्र) में माताजी के अमृत महोत्सव में दिए गए उद्‌बोधन के प्रमुख अंश—

परम आदरणीया माताजी, सभा में पधारे हुए सभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानीगण, काँग्रेस पार्टी के वरिष्ठ साथियों, धूले के सम्मानित नागरिक बंधुओं, माताओं और बहनों। मैं आज अपने को बहुत सौभाग्यशाली अनुभव कर रहा हूँ कि आदरणीया, मेरे मुँह से तो माताजी ही निकलता है, क्योंकि जो व्यक्ति अपने परिवार की सीमा को पार करके सम्पूर्ण वात्सल्य का प्रतीक बन जाय वे बिरले ही होते हैं। आज जिनका हम अमृत महोत्सव मना रहे हैं। वे ऐसी ही भारत की एक महिला हैं। सेवा की भावना प्रत्येक हृदय में रहती है, लेकिन उस भावना को कर्तव्य का रूप दे देना उतना आसान नहीं है।

महाराष्ट्र की इस पवित्र भूमि पर जहाँ शौर्य, शक्ति और भक्ति का उद्‌भूत सम्मिश्रण है, हम सब ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि माताजी को दीर्घायु प्रदान करें और उन्होंने जो असहायों की, अबलाओं की, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा और अन्य तरीके से उन्हें समाज का एक प्रभावी अंग बनाने का अनुष्ठान कर रखा है, वह उनका अनुष्ठान दिनों दिन सफलता की ओर बढ़ता जाय और चारों ओर से हम सब यही बात सुने की यह अनुष्ठान दूसरों के लिए समर्पित है वह एक प्रतीक बनकर सारे भारत में फैल जाय। भारत में सदैव से इस प्रकार की उत्कंठा, अभिलाषा के व्यक्ति जन्म लेते रहे हैं, और यही वजह है कि हमारे देश को अनेकों झंझावातों के बीच से गुजरते हुए भी अपने मौलिक स्वरूप को अक्षुण्ण बनाकर रखने का एक उद्‌भूत साहस मिलता है। कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक, बंगाल की खाड़ी से लेकर अरब सागर तक, भारत का केवल एक भौगोलिक स्वरूप नहीं है, वो संस्कृतियों का सम्मिश्रण चेतनाओं का एक अनुपम मेल और धर्म और निष्ठा की अनेक धाराओं का एक मिलन रहा है। इस बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी देश को, देश की आजादी के बाद में एक नए स्वरूप में परिणित करने का; जो आत्मनिर्भर हो, आत्म विश्वास से भरा हो, जो दलितों के गरीबों के पिछड़ों के अकलियतों के हितों के संरक्षण करने में सक्षम हो प्रयास हमारे नेताओं ने किया।

अभी माताजी ने और सुरेश जाधवजी ने काँग्रेस के 110 साल के इतिहास का जिक्र किया। यह इतिहास केवल पन्ने उलटकर नहीं लिखा गया, इतिहास तो पन्नों में ही लिखा जाता है, और किताब पन्नों की होती है। 100 पन्ने की हो या 500 पन्ने की हो, ये तो लिखने वाले पर निर्भर करता है। लेकिन कुछ इतिहास ऐसे होते हैं, जो जीवंत इतिहास होते हैं। जिसको गेज जीया जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है और उससे सबक लिया जा सकता है। काँग्रेस पार्टी का ऐसा ही इतिहास है, सेवा और संघर्ष का है। जैसा मैंने अभी कहा कि व्यक्ति को उन क्षणों में अनेक प्रकार की शंकाएँ, उसके स्वयं की महत्वकांक्षाएँ, उसके स्वयं के स्वार्थ, धूमिल कर देते हैं, परिदृश्य को उस समय ऐसी ही संस्थाओं के सहारे कौन और देश का इतिहास बनाने में व्यक्ति सफल होता है और उसे मार्ग दिखता है और उस मार्ग पर चलने का वह साहस बटोर सकता है।

मैं तो यह कहता हूँ कि काँग्रेस की बात जब आती है, इस संस्था ने इसके महान आदर्शों ने हम सबको क्या नहीं दिया है। हम जैसे सामान्य लोग भी आज चार लोगों के बीच में बैठने लायक बन गए। आज अवसर हैं जब हम ये सोचें और निश्चय करें कि हम इस संस्था को इस एवज में क्या-क्या दे सकते हैं इसका उत्तर हमें किसी दूसरे से पूछने की जरूरत नही है। इसका उत्तर हमें किन्हीं पुस्तकों में पढ़ने को नहीं मिलेगा। इसका उत्तर हमारा स्वयं का विवेक हमारा स्वयं का मन और हमारी स्वयं की कल्पना वर्तमान और भविष्य के बारे में वही निर्धारित करेंगे। आज जिनका हम अमृत महोत्सव मना रहे हैं, उन्होंने इन प्रश्नों का उत्तर जीवन के उन मोड़ों पर अपने विवेक से दिया है। इसीलिए आज समाज में वो पूज्य हैं, वही आदर्श हम सबको अपने लिए स्वीकार करने की जरूरत है। मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ कि मुझे इस अवसर पर महाराष्ट्र के इस महत्वपूर्ण अंचल में आकर आप सबका सानिध्य और स्नेह पाने का अवसर मिला। जय हिन्द।

उदारीकरण नीति में गरीबों का भी प्रावधान हो

23 अप्रैल, 1995 यमुना बिहार (नई दिल्ली) की आम सभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश—

आदरणीय भगवत झा आजाद, साहब, आदरणीय बहन श्रीमती शीला दीक्षित, यमुना विहार के सभी काँग्रेस के साथियों और यहाँ आज हमारे दल में शामिल होने वाले समाजवादी पार्टी के साथियों, नौजवान भाइयों, लगभग डेढ़ घण्टे से आपने जिस संजीदगी और जिस ध्यान से हमारे साथियों की बात सुनी, वो इस बात का प्रमाण है कि जैसा हम सबको पहले से मालूम था कि यमुना बिहार के नागरिकों को जानकारी है पूरी तरह से कि देश में क्या हो रहा है? और क्या होना चाहिए? इसमें न केवल दिलचस्पी है, बल्कि वे अपनी जिम्मेदारी को भी अच्छी तरह से समझते हैं।

मैं आपसे केवल दो-चार बातें ही कहना चाहता हूँ और मैं उनका जिक्र यहाँ पर इसलिए करना चाहता हूँ, क्योंकि उनका संबंध केवल सियासत से नहीं है, उनका संबंध केवल काँग्रेस पार्टी से नहीं है। उनका संबंध हमारे मुल्क से है, हमारी ज़म्हूरियत से है, हमारे भविष्य से है, आने वाली पीढ़ी के भविष्य से है।

इस देश में ज़म्हूरियत एक बहुत बड़े ज़द्दोजहद के बाद मिली है और उस ज़म्हूरियत में सब से बड़ा अधिकार अवाम को और अवाम में सबसे गरीब व्यक्ति को मिला है। वह अधिकार आज खतरे में पड़ता जा रहा है। अगर एक दफे इस देश की ज़म्हूरियत कमजोर हो गई, तो फिर हम यह नहीं कह सकेंगे कि इस देश में हमारा राज है? फिर हमको किसी न किसी तरह दूसरे का मुँह ताकना पड़ेगा।

ज़म्हूरियत विश्वास पर टिकी हुई होती है। बंदूक और तलवार से नहीं, विश्वास से ज़म्हूरियत चलती है। आज वो विश्वास फीका पड़ता जा रहा है, कमजोर पड़ता जा रहा है और अगर एक दफे वो विश्वास की कड़ी टूट गई तो फिर हिन्दुस्तान को एक ऐसे दौर से गुजरना पड़ेगा, जिसके अंजाम कल्पना करना भी मुश्किल है।

मैं अभी कल भिलाई में था। आपने सुना होगा भिलाई स्टील प्लाण्ट हिन्दुस्थान का सबसे बड़ा और सबसे पहला स्टील बनाने का कारखाना बना था। आज वो दुनिया के बड़े कारखानो में गिना जाता है। उस कारखाने में बेलाडीला की लोहे की खदानों से खनिज आता है और वहाँ लोहा और इस्पात बनता है। मुझे कल भिलाई के मजदूरों ने यह बतलाया, अभी दिल्ली में कानों-कान इसकी खबर नहीं है, लेकिन भिलाई के मजदूरों को इस बात की जानकारी है कि बैलाडीला की इस खदान को, जो लोहे की हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी खदान है जिससे करोड़ों रुपया का मुनाफा देश को हर वर्ष होता है। इस खदान को किसी प्रायवेट कंपनी को बेचने का सौदा हो रहा है। उन्होंने तो नाम भी बताया

है, लेकिन मैं नाम आज इसलिए नहीं लेना चाहता हूँ कि मैं भी कुछ जानकारी ले लूँ कि उनकी जानकारी सही है या नहीं। आज लोहे की खदान बिकी है, कल भिलाई स्टील प्लाण्ट का सौदा शुरू हो जाएगा।

आखिर कौन सी मजबूरी है। केवल इसलिए कि इस सौदे में कुछ लोगों को कमीशन मिल जाएगा और यदि ऐसा किया जा रहा है, तो यह तकाजा है इस देश की जनता का कि पार्लियामेन्ट में इसकी पूरी-पूरी जानकारी रखी जाए और पार्लियामेंट के लोग देखें कि यह सौदा करने की मजबूरी क्यों पैदा हुई और किसलिए सौदा किया जा रहा है?

हम आप सबके बहुत शुक्रगुजार हैं कि आपने यहाँ पर इतनी बड़ी संख्या में आकर और इतनी देर बैठकर हम सब लोगों की बातें सुनीं। भारत हमारा, आपका, सबका देश है। इस विशाल देश में न जाने कितने अलग-अलग धर्म के मानने वाले लोग हैं। दुनिया का ऐसा कोई धर्म नहीं है जिसे इस देश में स्थान और सम्मान न मिला हो। अलग-अलग भाषा के मानने वाले लोग हैं। अलग-अलग रीति रिवाज के मानने वाले लोग हैं। यही तो वह गुलदस्ताँ है जिसमें अलग-अलग रंग के, खुशबू के फूल लटके हुए हैं और जिसकी खुशबू भारत की हर इंसान की पहचान बनती है। उस गुलदस्ते को बरकरार रखने की जिम्मेदारी आप सबकी है। जय हिन्द।

सामाजिक न्याय सबके लिए हो

9 अगस्त, 1995 को लखनऊ में निकली विकास रेली में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश—

परम आदरणीय तिवारीजी, उत्तर प्रदेश काँग्रेस के सभी आदरणीय साथियों, और विकास रैली में पूरे प्रदेश के कोने-कोने से आए हुए आदरणीय माताओं, बहनों और भाइयों, मैं कुछ बातें आप को याद दिलाने के लिए यहाँ खड़ा हुआ हूँ।

पहली बात तो यह है कि आज भारत के आधुनिक इतिहास का बहुत महत्वपूर्ण दिवस है, 9 अगस्त, जब गाँधी जी और राष्ट्र के सभी नेताओं की प्रेरणा से भारत के इतिहास ने एक करवट बदली थी और अंग्रेजों को हिन्दुस्तान छोड़ने पर मजबूर करने का संकल्प काँग्रेस ने व्यक्त किया था, जो पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालिस को पूरा हुआ।

इसका जिक्र इसलिए करना चाहिए ताकि हमें याद रहे। धीरे-धीरे ऐसा महसूस होने लगा है, जैसे भारत की आजादी की जो एक घटना थी वह घट गई और अब हम यह भूल करते हैं और मन की बातों से उलट करते हैं कहीं अपने निजी स्वार्थ के लिए। लेकिन मैं याद दिलाना चाहता हूँ कि इस नौ अगस्त के बाद हमें पीछे घूम कर ये देखना पड़ेगा कि इन पचास वर्षों में इस देश में क्या हुआ और उस को करने में हम स्वयं कितनी दूर तक सहभागी रहे और क्या कहीं पर हम उसके विकास को, उस की प्रगति को रोकने के लिए जिम्मेदार रहे?

अगर यह सिंहावलोकन पचास वर्षों के बाद नहीं होगा तो आगे किस ओर हम जाना चाहते हैं, यह कैसे जाना जा सकता है? ये फैसला होना संभव नहीं है। आज जो लोग केवल किसी को मुख्यमंत्री बनाने के लिए लाखों रूपया रैली में खर्च करते है, आज इस रैली में किसी को उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाने की घोषणा नहीं होने वाली है न हमारी इस में दिलचस्पी है। मुख्यमंत्री होते है प्रजातांत्रिक प्रक्रिया के मुताबिक जनता जिस को बहुमत देती है, उस को मुख्य मंत्री बनेगा।

अगर मैं आपको यह याद नहीं दिलाऊँ तो यह मेरी गलती होगी। विकास की बात स्वयं तिवारी जी करते है, इसलिए करते है, क्योंकि सियासत, राजनीति जिस को कहते है, उस का कुछ उद्देश्य हुआ करता है। अगर वो उद्देश्य

यहीं तक सीमत हो कि सतपाल महाराज को, या नारायणदत्त तिवारी को उत्तर प्रदेश का मुख्य मंत्री बना दिया जाय तो उस से तो राजनीति समाप्त नहीं होती। देश का काम तो उस से पूरा नहीं होगा। पानी नहीं, बिजली नहीं। सड़कें नहीं, स्वास्थ्य नहीं, चिकित्सा नहीं, तो फिर एक मुख्य मंत्री बन कर क्या करेगा? सिवाय इस के कि तबादला करके लोगों को फायदा पहुँचाएगा और लम्बी रकमें इकट्ठा करेगा।

सामाजिक न्याय, वो एक ऐसी बात है, जो इस देश के अंदर। निहायत जरूरी है, लेकिन सामाजिक न्याय केवल कहने में नहीं होगा। सामाजिक न्याय के लिए आधार शिला सही ढंग से तभी रखी जा सकती है, जब देश की प्रगति हो, देश का उत्थान हो, हमारे पास किसानों को देने के लिए कुछ हो, किसानों की प्रगति हो, व्यापारियों की प्रगति हो, नौजवानों को रोजगार मिले, तो सामाजिक न्याय का स्वरूप उभर कर आता है।

जहाँ तक देश के अंदर बदलती हुई तस्वीर है। मैं उस का जिक्र करना चाहता हूँ कि केन्द्र में सरकार बनी है, संयुक्त मोर्चा की। यह संयुक्त मोर्चा बनाने की आवश्यकता इसीलिए पड़ी, क्योंकि कुछ लोगों ने, किसी एक व्यक्ति को प्रधान मंत्री बना कर इस देश को सब कुछ चीजें मिल जाएँगी, इस प्रकार का एक वातावरण बनाया था। ऐसी शक्तियों को तब बल मिलने लगा, जब देश के अंदर ऐसा वातावरण बना कि भारतीय जनता पार्टी को दिल्ली में राज करने का देश से जनादेश मिल गया है, और उनकी सरकार बनना चाहिए। आप तो जानते हैं कि भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, ये सब अफवाह फैलाने के बहुत माहिर हैं। जहाँ कुछ न हो, वहाँ मुद्दा खड़ा कर दें।

इस संयुक्त मोर्चा सरकार का उद्देश्य किसी को भी परेशान करने का नहीं है। हमारा उद्देश्य किसी को नाजायज फायदा पहुँचाने का भी नहीं है। यहाँ पर सब चाहते हैं कि देश की प्रगति हो। देश आगे बढ़े और जिन लोगों ने भी गलत काम किया है, उनके खिलाफ़ कानून अपना रास्ता लेगा। न किसी को परेशान करने की जरूरत है और न किसी को नाजायज तरीके से बचाने की जरूरत है।

आज इंदिरा काँग्रेस को क्या करना है? ये रैली सतपाल महाराज के प्रयास से, हमारे काँग्रेस के भाई और बहनों के प्रयास से आज आयोजित की गई, इसलिए यह जरूरी है कि हम यहाँ यह कहने की कोशिश करें कि अखिल भारतीय इंदिरा काँग्रेस की आगे की क्या भूमिका होगी? हम क्या करना चाहते हैं? हमारी कोई सार्थकता भी है या नहीं? कोई कहते हैं कि आखिर आप चार सीटें जीते हैं हिन्दुस्तान में। क्या बोलेते हैं आप? चार सीटें जीतें या दो सीटें जीतें। एक बात ध्यान में रखिए। इस प्रजातंत्र में वो लकीर गहरी होती चलेगी, जो उसुलों, सिद्धातों और उद्देश्य को साथ रख कर आगे चलेगी। वो लकीर गहरी नहीं हो सकती, जो अपने चारों तरफ खींच ली जाय, केवल यह दिखाने के लिए कि हम बहुत महत्वपूर्ण है।

इंदिरा काँग्रेस को चार सीटें मिली हों? हमें कम मत मिले हो, लेकिन आज हमारी नजर में, उस काँग्रेस की जो काँग्रेस वाले अपने को काँग्रेसी कहते आए हैं, जिन्होंने जरा भी ध्यान नहीं दिया, देश की आजादी के बाद उनकी साख क्या थी? जनता उनके बारे में क्या सोचती थी? और आज कहाँ धरातल में आ गए हैं।

आज वह संकल्प फिर से दोहराने की जरूरत है। और वह संकल्प उत्तर प्रदेश में इन लोगों के मन में आ गया तो इस प्रदेश की इज्जत को वापस लाने के लिए, यहाँ के लोगों ने प्रण कर लिया तो जाति, पाँति और भाषा के भेदों को भुला कर फिर से उत्तर प्रदेश सारे भारत का शिरोमणि बन कर देश को संचालित करेगा। इस में कोई दो राय नहीं।

मैं पुनः सतपाल महाराज जी को बहुत-बहुत धन्यवाद अपनी ओर से भी देता हूँ और सम्मान भी व्यक्त करता हूँ। जय हिन्द।

परिस्थितियाँ लोगों को आतंकवादी बनाती हैं

1 नवम्बर, 1995 को गुरदासपुर (पंजाब) की एक आम सभा में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश—

युवक कॉंग्रेस के सम्मानीय अध्यक्ष भाई कुलबीरसिंहजी, और हमारी बहन जिन्होंने अभी अत्यंत ओजस्वी वाणी से इस धरती का संदेश आप सब लोगों तक पहुँचाया है। गुरदासपुर जिले के और पंजाब के अलग-अलग जिलों से यहाँ पर आए हुए स्वतंत्रता संग्राम सेनानीगण माताओं और बहनों। तकरीर तो असली हमारे अध्यक्ष की होने वाली है।

हम लोग तो केवल उनके लिए समाँ बाँध रहे हैं। मैं आपसे बहुत विनम्रता से पहले तो ये कहना चाहूँगा कि जब भी मुझे मौका मिलता है, पंजाब की धरती पर आने का बहुत सी यादें ताजा हो जाती हैं। वो यादें जो आपके प्रेम से जुड़ी हैं। आपकी कठिनाइयों से जुड़ी हैं और आपकी बहुत सी आशाओं से जुड़ी हैं। जिन्हें एक मंजिल पर पहुँचाने का सौभाग्य मुझे भारत के युवा प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के नेतृत्व में और प्रेरणा से मिला था और कुछ तब्दीलियाँ पिछले 10 सालों में हुई हैं। एक खतरनाक दौर पंजाब के अन्दर आया था। आतंकवाद का, हिंसा का और उसको रोकने का भी काम इसी धरती में हुआ।

आज हमारे पत्रकार बंधु कुछ देर पहले मुझसे पूछ रहे थे कि आप किस पार्टी को जिम्मेदार समझते हैं पंजाब में आतंकवाद के लिए, मैंने उनसे जो कुछ कहा था वो आपसे इसलिए कहना चाहता हूँ क्योंकि वो राय मेरी बंद कमरे में देने की नहीं है। वो राय मैंने संत लोंगोवाल जी से भी कही थी और आपसे भी आज कहना चाहता हूँ। अपने आपमें कोई आतंकवादी नहीं बनता। जब अवाम को किन्हीं भी कारणों से ऐसा महसूस होता है कि जो उसके हक और हकूक है और जो उसकी कठिनाइयाँ हैं, उन पर नजर नहीं जा रही है, और आपके हितों के बारे में सोचा नहीं जा रहा है, तो प्रजातंत्र में और तो कोई रास्ता होता नहीं। जैसे फोतेदार जी ने कहा कि 5 साल बाद समय आता है। लेकिन 5 साल बाद भी वो समय न आए तो लोगों का गुस्सा, उनकी कुण्ठा, उनकी निराशा, केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं दुनिया के हर कोने में उसने आत्मघाती स्वरूप ग्रहण किया है। इसलिए अगर हमें अपने देश के अन्दर जो देश के बाहर थे आतंकवादी शक्तियों को मदद मिलती है। जो लोग भेजे जा रहे हैं उनके साथ तो हमें दृढ़ता से निपटना चाहिये लेकिन देश के अन्दर कोई ऐसी स्थिति पैदा न हो उसके लिए हमें लोगों के बीच में जाकर उनके दिलों को टटोलना चाहिए। उनकी जरूरतों को समझना चाहिए।

दुःख की बात है कि पंजाब में चुनाव तो हो गए सरकार तो बन गई, लेकिन राजनीतिक षड़यंत्रों का सिलसिला चलता रहा। क्या वजह है, जिस प्रकार सरदार बेअंतसिंह ने कोशिश की, इस प्रदेश की जनता के सहयोग से आतंकवाद को काबू में करने के लिए वो क्यों नहीं रुके? वो इसलिए शहीद हुए क्योंकि जो समय उनको मिला लोगों के दिलों को टटोलकर उसके मुताबिक काम करने का, जो पंजाब की रियाया, थी जो उनके हक थे, हकूक थे, जिनको केन्द्र से उनको दिया जाना चाहिए था, वह सब नहीं हो सका।

प्रधानमंत्री यहाँ आकर हजारों करोड़ रुपये की योजनाओं की घोषणा करते थे, सब कुछ हो गया और जब सरदार बेअंतसिंह दिल्ली जा रहे थे, तभी उनकी हत्या हो गई। शायद ऐसा आदेश निकलवा दिया गया, तो जब कहा तो उन्होंने कहा कि मैंने ऐसा कहाँ कहा है। ये चीजें हैं जो लोगों के जेहन में चुभती है। आज भी यह संयोग नहीं है। 1985

में स्वर्गीय राजीव जी ने और स्वर्गीय लोंगोवाल जी के साथ जिस समझौते पर दस्तखत किए थे, आज तक उसका कोई दूसरा विकल्प नहीं पाया जा सका। ये मैं मानता हूँ कि उस पर अमल पूरी तरह से नहीं हो सका। वो एक अलग कहानी है। वो भी किसी दिन दुनिया के सामने आएगी। लेकिन इतना जरूर है क्योंकि वो दिल की गहराइयों से ईमानदारी से पंजाब को आगे ले जाने के लिए जहाँ से उनके दिल पर मलहम लगाने के लिए यहाँ के नौजवानों को एक प्रेरणा देने के लिए दो व्यक्तियों ने अपने सब विवादों को पीछे रखकर समझौता किया था। संत लोंगोवाल के सामने क्या कम मुसीबतें थी और श्री राजीव गाँधी जैसी तो कोई मिसाल ही नहीं है दुनिया के अन्दर। कम से कम मैं तो नहीं जानता। उन्होंने अपनी माँ की हत्या के दुःख और गम में भी अपने ही लोगों के बीच में न्याय और देश के हित की बात की है। इसलिए आज लोगों को उनका विकल्प नहीं मिला।

जनता को न्याय, सम्मान और सुरक्षा मिलना चाहिए

21 दिसम्बर, 1995 को दिल्ली में सिटीजन मार्च की सभा में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश—

परम आदरणीय तिवारीजी, और इस मार्च में सम्मिलित होने के लिए आए हुए आदरणीय माताओं, बहनों और भाइयों, आप काफी देर से यहाँ विराजे हुए हैं। कुछ लोग आ रहे हैं, कुछ लोग जा रहे हैं, अब हमारा मार्च तिवारी जी के भाषण के बाद शुरू होगा। इसके पहले कि मैं और कुछ कहूँ आपसे यह प्रार्थना करना चाहता हूँ कि यह नागरिक मार्च अपने तरीके का बिल्कुल अलग मार्च है। जैसे ही सड़कों पर हम लोग पहुँचेंगे एक भी नारा कोई नहीं लगाएगा। किसी के पक्ष में या किसी के विपक्ष में कोई बात नारे के रूप में नहीं कही जाएगी। हम अनुशासनबद्ध तरीके से शांतिपूर्ण तरीके से वहाँ तक जाएँगे जहाँ तक पुलिस हमें जाने देगी। जहाँ हमें रोका जाएगा हम वही पर रुक जाएँगे। कानून को तोड़ने का आज कोई भी कार्यक्रम नहीं है। आपमें से प्रत्येक भाई और बहनों को मैं साफ तौर से बताना चाहता हूँ कि एक ज्ञापन राष्ट्रपति महोदय को, तिवारी जी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल जाकर देगा। आदरणीय राष्ट्रपति जी आज दिल्ली में नहीं हैं। रात को वापस आएँगे। कल प्रतिनिधि मण्डल उनसे मिलकर उन्हें आप सभी लोगों की तरफ से ज्ञापन देगा। जिसमें उन मुद्दों का उल्लेख होगा जिन मुद्दों को लेकर आज का नागरिक मार्च आयोजित किया गया है। आप यह पूछ सकते हैं कि यह चुपचाप मार्च करने का क्या मतलब है। क्योंकि पहले तो हरदम नारेबाजी हुआ करती थी और पुलिस के घेरे को तोड़कर अंदर घुसने की कोशिश हुआ करती थी, गिरफ्तारियाँ होती थी। ऐसा नहीं कि हम लोगों ने वो नहीं किया।

पिछली 9 अगस्त को आपने एक जंगी आन्दोलन यहाँ पर किया वो उसका सबूत है। शांतिपूर्ण और नारों से रहित मार्च करने का एक कारण है और वो कारण आपको अच्छी तरह से समझना चाहिए। हम तीन मुद्दों को लेकर यह मार्च कर रहे हैं। न्याय, सम्मान और सुरक्षा। न्याय किसके लिए, न्याय उनके लिए जिनके लिए कोई बोलने वाला नहीं है। जो आज यहाँ पर मौजूद नहीं है। हम और आप तो सक्षम हैं इकट्ठे होने के लिए और हुए हैं आज, लेकिन जो नागरिक आज हिन्दुस्तान में न्याय नहीं पाता है क्योंकि ऐसी परिस्थितियाँ सरकार ने बना दी हैं कि वो उससे वंचित है। किसान हो, मजदूर हो, सामान्य नागरिक हो, घर के लोग हो, परिवार के लोग हो, आज वो यहाँ उपस्थित नहीं है। इसलिए हम उनकी आवाज को शांत रहकर सारे देश का ध्यान उसकी ओर आकर्षित करना चाहते है।

सम्मान किसका? तिवारी जी का और हमारा सम्मान नहीं या और जो हमारे साथी मंच पर बैठे है उनका, उनके सम्मान के लिए यह मार्च नहीं हो रहा है। हमें सम्मान दिखाना है भारत के करोड़ों-करोड़ों सर्वहारा वर्ग के लिए हरिजन, आदिवासी, पिछड़े वर्ग, हर धर्म के मानने वाले लोगों के लिए जिनके सम्मान को आज भारत में वर्तमान सरकार

ने एकदम से समाप्त कर दिया है। अब मैं किस शब्द का इस्तेमाल करूँ। उनकी नजर में केवल उनका स्वयं का सम्मान है और किसी नागरिक का सम्मान कोई मायने नहीं रखता है। उन नागरिकों के सम्मान की रक्षा करने के लिए हम आज मौन रहकर अपनी आवाज उठाएगे। और सुरक्षा, सुरक्षा किस की करनी पड़ती है। वो या तो कमजोर हो या जिसको कोई खतरा हो या जिसको इस प्रकार से प्रताड़ित कर दिया गया हो, परेशान कर दिया गया हो या फिर अंतिम रूप से जिसको नष्ट कर दिया गया हो उसकी सुरक्षा की बात। यह सुरक्षा का सवाल भारत के लोगों का हमारे नेताओं का, राजीव जी का हम देश के सामने रखना चाहते हैं। जिसके लिए हमें कोई नारे लगाने की जरूरत नहीं है। हमारी मौन की आवाज सारे भारत में गूँजेगी। इसलिए यह मौन जुलुस है। और इसलिए हमें नारे नहीं लगाने हैं। मेरी इतनी सी बात आप लोग याद रखें। अब मैं एक दो और बातें कहकर अपनी बात समाप्त करूँगा। मुख्य भाषण तो हमारे अध्यक्ष महोदय जी का होगा।

दूसरी बात जो मैं कहना चाहता हूँ वो भारत की सुरक्षा और सम्मान से संबंधित है। आज हिन्दुस्तान जो दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है जो एशिया के अन्दर अपनी नीतियों और कार्यक्रमों की वजह से हरदम सारे विश्व में अव्वल रहा है। आज हमारा सर झुक जाता है, यह देखकर कि आए दिन हमें धमकियाँ दी जाती हैं, हमारी नीतियों में हस्तक्षेप किया जाता है। भारत की सुरक्षा के बारे में, हम दूसरों से उपदेश सुनते हैं और जो हमारा कर्तव्य है उसके बारे में हमारी सरकार, हरदम मौन रहती हैं। आज भारत के इस सम्मान को फिर से बहाल करने की जरूरत है, फिर से स्थापित करने की जरूरत है और ये बहुत बड़ी जिम्मेदारी आज देश की तरुणाई पर है।

आज के इस मार्च के बाद हम प्रयास करेंगे कि एक जनचेतना सारे भारत के अन्दर फैलाई जाए। सब परिस्थितियों के बारे में परेशानियों के बारे में, कीमतें, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार इन सब के बारे में हम एक अभियान देश में चलाएँ और उस अभियान के अन्तर्गत लोगों तक पहुँचकर उनको जानकारी दें ताकि वो अपना मत बना सकें। आने वाले चुनाव में सही प्रतिनिधियों को चुनने का ताकि भारत का भविष्य सुरक्षित रह सके, ताकि भारत के अन्दर गरिमा अपने जीवन को चला सकें ताकि भारत के अन्दर माताओं, बहनों का सम्मान सदैव बरकरार रहे। यह हमारा आपका सबका सामूहिक कर्तव्य है और इस कर्तव्य की ओर हमारा संकल्प है, आगे बढ़े, यही हमारे लिए एकमात्र कार्य है। धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकारवार्ता

भ्रष्टाचार का मुद्दा अहम है

14 जनवरी 1995 को माया के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

प्रश्न: आपके इस्तीफे के बाद कॉंग्रेस में बहुत ही तनाव और विभाजन जैसी स्थिति पैदा हुई है, क्या आप समझते है कि यह सही है?

श्री अर्जुनसिंह: विभाजन होने का तो कोई सवाल नहीं है और मेरी ओर से तो न इस प्रकार की कोई मंशा है न प्रयास है। सवाल यह है कि कॉंग्रेस पार्टी अपनी स्थिति का सिंहावलोकन करके कुछ मुद्दों पर अपनी राय बना कर के कदम उठाए। मेरा प्रयास तो केवल यहीं तक सीमित है। मै तो किसी भी हालत में न तो पार्टी में कोई मतभेद चाहता हूँ न कोई confrontation चाहता हूँ।

प्रश्न: मान लीजिए अगर आपके जो मुद्दे है उन पर कोई विचार नहीं होता, यही स्थिति चलती रहे, तब

पार्टी की क्या स्थिति होगी?

श्री अर्जुनसिंह: उससे पार्टी को बहुत बड़ा नुकसान होगा।

प्रश्न: मुसलमान जो हैं, वे अब काँग्रेस से अलिप्त हो गए हैं। अब इस पर यह भी कहा जा रहा है कि राव साहब के जमाने में ही यह नहीं हुआ, यह राजीव जी के जमाने से ही चल रहा है, उससे पहले भी चल रहा था। यह कि 6 दिसंबर 1992 जो है it is the climax malediction.

श्री अर्जुनसिंह: हाँ, हो सकता है। कुछ पहले भी रहा हो, लेकिन उसका यह मतलब तो नहीं कि अगर पहले कुछ थोड़ा रहा है, तो हम उनको टोटल कर दें और अगर हो गया हो तो उसको समाप्त करने के लिए कोई प्रयास ही न करें।

प्रश्न: आपने अपने इस्तीफे का यह समय क्यों निर्धारित किया है, क्या परिस्थितियाँ बन गई थी?

श्री अर्जुनसिंह: बात यह थी कि जो राजनीतिक घटनाक्रम दक्षिण के चुनावों में घटित हुआ, आने वाले पाँच चुनाव में जो फिर से एक नई चुनौती आई थी। मेरे मत में अगर हमने इन बातों पर तत्काल चर्चा करके कोई कार्रवाई नहीं की तो उसके दुष्परिणाम इन चुनावों में भी होते, ऐसा मेरा मानना है। अगर हम कुछ कर सकते हैं, तो उसका अनुकूल असर भी पड़ सकता है। इसीलिए मैंने यह कदम उठाया और जब लोग कहते हैं कि मुद्दे ठीक है, समय ठीक नहीं है। तो फिर मैं सोचता हूँ कि क्या इसका यह मतलब है कि जब पार्टी को इतना नुकसान हो जाय कि कुछ करना ही संभव न हो तब मुझे कहना चाहिए, तो फिर तो लोग कहते कि आपने पहले क्यों नहीं किया। तो मेरे मत में इसी वजह से यह समय मैने चुना।

प्रश्न: नहीं, आपने समय तो चुना लेकिन आपके resignation के बाद बाइस दिन बीत चुके है। बाइस दिन के अंदर ऐसा कुछ भी indication नहीं मिल रहा है, सिवाय इसके कि व्यक्तिगत स्तर पर जो आक्षेप लग रहे हैं, इसका क्या मतलब है?

श्री अर्जुनसिंह: अब इसको मैं क्या कह सकता हूँ। यह तो जो बात आप कह रहे हैं हकीकत हैं, लेकिन मैं अभी भी उम्मीद करता हूँ कि किसी न किसी समय पर यह महसूस किया जाएगा।

प्रश्न: इससे एक सवाल और निकलता है, आपका कहना था कि इस वक्त जो मुद्दे उठाए थे अगर उनको adjust कर दिया जाता, उनको देख लिया जाता तो उससे इसके प्रतिकूल असर नहीं पड़ते। अनुकूल असर पड़ते। लेकिन आप क्या समझते हैं कि बिलकुल eleventh अवर्स पर, आपका रेज़िगनेशन और पाँच स्टेट में इलेक्शन जो हैं बहुत जुड़े हुए हैं। इस वक्त काँग्रेस पार्टी अगर कोई कदम उठाती भी है, तो क्या असर पड़ेगा?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, असर क्यों नहीं पड़ेगा? आप एक ही मुद्दा ले लीजिए। जो भ्रष्टाचार का मुद्दा है, स्केम से जुड़ा हुआ जो मुद्दा है, अगर आज भी जो लोगों के मन में धारणा है कि 8 हजार करोड़ रुपये या सात हजार करोड़ रुपये जो भी है। इस पूरे मामले में क्योंकि काँग्रेस की सरकार है, इसलिए काँग्रेस नरमी बरत रही है, किन्हीं कारणों से, और कुछ लोग इसमें शामिल होंगे यह शंका अपोजीशन फैला रहा है। अगर हम सुप्रीम कोर्ट के जज की अध्यक्षता में एक judicial enquiry आज appoint कर दें और जो भी तथ्य है वे उनको सौंप दें तो एक दिन में यह बात फैल जाएगी कि इसमें काँग्रेस का कुछ लेना नहीं था, नहीं तो ऐसा कदम क्यों उठाती। जो भी दोषी हो उसे पकड़ा जाएगा। तो जो लोगों को बीच में एक धारणा बनाने की कोशिश हो रही है उस पर जरूर विराम लगेगा, क्यों

नहीं लगेगा। ऐसे खास और मुद्दे हैं, जैसे राजीव जी की हत्या से जुड़े हुए सवाल हैं, उसमें तो कोई किसी के खिलाफ कोई आरोप तो नहीं, है, सिर्फ यह है कि ऐसा दिखता है कि उसमें पूरी तरह से कार्रवाई नहीं हो रही है, कुछ रूकावटें डाली जा रही है। उसका पता लगाने के लिए एक फैसला हो जाए कि हम पता लगाते हैं और जो रूकावट हो रही हैं उसको दूर करेंगे। तो ऐसा नहीं है कि कुछ असर नहीं होगा।

प्रश्नः आपने साम्प्रदायिक तत्वों से लड़ने की बात कही। श्री एन.डी. तिवारी यू.पी. में मुलायम सिंह से लड़ रहे हैं। मुलायम सिंह के पक्ष में एक बात जाती है कि वो बी.जे.पी. जैसी साम्प्रदायिक पार्टी को हरा कर के आए हैं और इसी बेसिस पर आप लोगों ने, आपकी कार्यसमिति ने उनको समर्थन दिया। तिवारी जी, मुलायम सिंह से टकरा कर मुलायम सिंह को हरा कर के साम्प्रदायिक तत्वों को और उभार रहे हैं। जब आप साम्प्रदायिकता से लड़ाई लड़ रहे हैं तो वो कहाँ पर हैं?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए कई चीजें एक साथ जोड़ने का यह प्रयास है। ये इस प्रकार का सवाल है कि काँग्रेस पार्टी आज से नहीं सदैव से एक ऐसा मंच है, जो समाज के हर वर्ग के लोगों को पूरी तरह से साथ में लेकर चलती आई है, सबके हितों का ध्यान रखा जाता है, सबकी आशाओं का ध्यान रखा गया है, नीतियाँ उस तरह से बनाई जाती हैं, चाहे वो minorities हों, चाहे वो हरिजन हों, चाहें आदिवासी हों, चाहे पिछड़े वर्ग के हों, और यहीं काँग्रेस की विशेषता थी। अब किन्हीं वजहों से यह जो मंच था उस पर अलग अलग वर्ग के लोगों का विश्वास थोड़ा कम हुआ। वरना कोई कारण नहीं था कि कांशीराम के साथ लोग जाते, कोई कारण नहीं था कि minorities काँग्रेस के खिलाफ जाती। कुछ न कुछ तो हुआ जिसकी वजह से यह बिखराव आया हैं। हम लोगों की मान्यता यह है कि काँग्रेस को अपना वह स्थान पुनः प्राप्त हो। इसमें हम किसको खिलाफ कर रहें हैं किसको गलत कह रहे हैं, या किसका साथ दे रहे हैं, यह क्षणिक हो सकता है लेकिन अंततः तो काँग्रेस की उस image को फिर से वापस लाना पड़ेगा, वही काँग्रेस के हित में होगा और वहीं काँग्रेस का असली स्वरूप निखर के सामने आएगा। अब इसमें अगर हम हरदम यह सोचते रहें कि हम अमुक का सहयोग लेगे क्योंकि उसकी ऐसी छबि है, इसलिए उस छबि का हम फायदा उठाए, कोई एन्टी साम्प्रदायिक है, कोई प्रो बेकवर्ड है, तो यह तो फिर काँग्रेस के बिखराव को स्थाई बनाने वाली बात हुई।

प्रजातंत्र में अंतिम निर्णय जनता करती है

15 जनवरी 1995 को न्यूज टाइम्स के श्री सूर्यप्रकाश के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

Q: When did you begin to feel uncomfortable in the Union Cabinet you have raised very serious issue?

Shri Arjunsingh : I have had the privilege to work as a Cabinet Minister at the State level, at the Central level, also a Chief Minister and as Governer, I always felt that on issues which affect the common people or public interest, there has to be some parameter within which discussion has to take place and decision has to be

arrived at. That neither can be endless and there is a certain thing which require very serious conversation and obviously much more prompt decision.

What has been experienced that many issues just derived on something has been considered half measures taken and naturally one tries to go along with system as part of it. But slowly destablisation came that now the public perception is also changing about the party. Because of these factors and most dramatic example was the election of the South. After that I thought that if I keep quiet now perhaps the party could be put to great loss and the Congress party will become weak. My view is that only times could live to destablisation of the country as of now may be 10 years later there may be other national party on the scene. That is why I thought that I should get out of the Govt, and serve the nation and the party forcefully.

Q: Now saying the last three weeks, since your exit from the Cabinet. Do you see the purpose of your decision, do you see any positive outcome of that?

Shri Arjunsingh : Certainly, because the first thing is after all democratic polity in the people perception which ultimately matters and I see a lot of indication that is brought to support for issue being addressed. I am not saying for all against. But people want that this issue must be addressed and some kind of decision taken.

That there is very broad support amongst Congressmen specially at the grass route and district level again that is an emergent consensus on this account.

Q: Do you find that the Prime Minister extrange away from the Indira, Rajiva line in the Congress?

Shri Arjunsingh : This is a generality. I can't think generality are of that consequence The point is that the Congress right before independence and certainly after independence. The scenario was different.

For example, the liberalisation policy. Now that the liberalisation policy has not been framed and brought out as a departure from Nehru-Indira economic development concepts, rather if you see the policy framework and the document it is only a progression of what went ahead now we have the opportunity to innovate on it. Because of the basic infrastructure it was built up during those periods this is the basic thing. He has not made any departure from it, but the perception has gone that perhaps this liberalisation regime takes into account the concerns of the elite and not only common man.

Q: Suppose you have a new president of the Congress with Shri Narsimha Rao continue as Prime Minister somebody else in charge of the party, point is whether that would help to rejuvenuate the party in the present circumstances?

Shri Arjunsingh : Well, I am sure it will certainly make a different.

Q: Mr. Gulam Navi Azad's statment, you must have seen. You see some of the issues which you have raised the attempt of your last three weeks to chip away at those you know?

Shri Arjunsingh : No. Not chip away at the issues, welcome any attempt to commenting on the issues. I think this is unfortunate trend just like rejecting the envelope instated of the letter. So I don't want to go into that and I don't want to join issue personally with anyone.

Q: I have one last question Sir, In all situations like that there are lot of people thereby thinks to a point of no return. Do you see this whole problem reaching a point of no return?

Shri Arjunsingh : I don't hope so, I don't think so, and I hope not so at least I am amenable to be eggon so what I have not said I am not restraining from it but should be eggon to do something by somebody else.

Q: You would still think that some kind of response?

Shri Arjunsingh : Yes, response on the basis of people sitting together and seen what can be done about these things. We can certainly sit together and come to a conclusion that what has to be done on these issues.

Q: Sir, you would not rule out the changes of response

Shri Arjunsingh : No, I want this question of ruling it out I would actively persue that objective but it has to be on these points. I think just patch up or manuring or bargain those things are not relevant at the moment. Some response you always say you take this, you take that and you will be satisfied.

मैं प्रधान मंत्री पद की दौड़ में नहीं

26 जनवरी, 1995 को परख के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

प्रश्न : यह जो कहा गया है कि आपके वक्तव्यों से कॉंग्रेस की छवि खराब हुई है, इससे आप कहाँ तक सहमत है?

श्री अर्जुनसिंह: भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए कदम उठाने के लिए कहना, गरीबों के हकों को ध्यान में रख कर नई आर्थिक नीति को लागू करने की बात कहना, राजीव जी की हत्या से जुड़े प्रश्नों को जल्दी से जल्दी जनता के सामने साफ, उजागर करना, ब्लेक मार्केटियर्स के खिलाफ कार्रवाई करने की बात कहना, समाज के कमजोर वर्ग, विशेषकर आदिवासी, हरिजन और पिछड़े वर्गों के लिए ठोस आर्थिक कार्यक्रम बनाकर उनको अमल में लाना, यह कहना, अगर पार्टी के हितों के खिलाफ है, तो मैंने जरूर पार्टी के हितों के खिलाफ बात की है, लेकिन मैं नहीं समझता कि इस तरह की किसी बात को कहना कॉंग्रेस पार्टी के हित के खिलाफ हो सकता है।

प्रश्न: लेकिन आप ने यह भी कहा था कि प्रधानमंत्री असलियत से मुँह चुरा रहे है?

श्री अर्जुनसिंह: मैंने उनका नाम तो नहीं लिया। मैंने तो यह कहा था कि हम सबको असलियत से मुँह नहीं हटाना चाहिए। मैंने प्रधानमंत्री के लिए नहीं कहा, मुश्किल आज यही है कि क्या कहना है? क्या कहा गया? क्या नहीं कहा गया? अपने मन से जिसको मान ले कि हमारे लिए है, वो बात हो जाती है। मैंने इतनी बात कही है। वो आज भी कहता हूँ।

प्रश्न: इस बीच में सुलह की काफी कोशिशें हुई। वो किस तरह की थीं और क्यों नाकामयाब रहीं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, जिन साथियों ने सुलह की बात की, मैं उनका बहुत सम्मान करता हूँ और उन्होंने बड़ी ईमानदारी से जो कुछ भी वो प्रयास कर सकते थे, करने की उन्होंने कोशिश की। अब वो सफल क्यों नहीं हुए यह तो वही बता सकते हैं। कम से कम मेरी ओर से तो कोई ऐसी बाधा नहीं डाली गई। उनके प्रयास असफल हों, मैंने तो ऐसा कोई काम नहीं किया।

प्रश्न: कहा जा रहा है कि आप कुर्सी की दौड़ में हैं, प्रधानमंत्री का पद चाहते हैं तो इसलिए यह साग बखेड़ा खड़ा कर रहे हैं।

श्री अर्जुनसिंह: अब सबसे सरल कहना यही है। मैं तो यह कहता हूँ कि कुर्सी काँग्रेस के लिए बचेगी, तब तो न होड़ होगी, दौड़ होगी। आज जो स्थिति है, वो यह है कि काँग्रेस के लिए कुर्सी बचने ही नहीं वाली है। जो परिस्थितियाँ दक्षिण में निर्मित हुई, सफाया हो गया। अगर वही परिस्थितियाँ, रही और उनमें कुछ कार्रवाई नहीं की गई, सोचकर कुछ कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले समय में जब लोक सभा के चुनाव होंगे, तब यही परिस्थिति सारे देश में होगी। तब कौन सी कुर्सी रहेगी? जिसके लिए दौड़ रहेगी। मैं किसी कुर्सी की दौड़ में नहीं हूँ। दस साल और प्रधानमंत्री नरसिंहराव जी रहें। मुझे कोई ऐतराज नहीं है। काँग्रेस के प्रधानमंत्री रहें। इस पर मेरा जरूर जोर है।

प्रश्न: अब सुलह की क्या गुँजाईश है? क्या कोई .....

श्री अर्जुनसिंह: अब मैं तो नहीं- समझता कि क्या हो सकता है। जो भी हो सकता है, पार्टी के हित में कुछ भी हो, मैं तो इसलिए कोई कहे कि मैंने जो बातें उठाई हैं, मैं कह दूँ कि सब बेकार थी और मैं उनको वापस ले लूँ। ये तो मैं नहीं समझता कि यह कोई आधार बन सकता है। वैसे कुछ लोगों ने आकर मुझसे यह कहा था और उससे मुझे बेहद दु:ख हुआ कि यदि मैं राजीव गाँधी वाले मसले को हटा दूँ, इन सब चीजों से तो बाकी चीजों पर बात हो सकती है। अगर राजीव गाँधी की हत्या को लेकर मैं सौदे बाजी करूँ, इस से बढ़कर शर्मनाक चीज और क्या हो सकती है। यह कोई आधार नहीं बनता है, इस तरह से कोई सुलह नामे का।

प्रश्न: कहा जा रहा है कि आपके एलीगेशन और फिर आप के निलंबन से, आम आदमी में, आम कार्यकर्ता में यह संदेश पहुँचा है कि काँग्रेस अंदर से टूट रही है, बिखराव आ रहा है। उन के जो वरिष्ठ नेता हैं, आपस में लड़ रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, काँग्रेस नहीं टूट रही है जिन बातों का असर आम आदमियों के दिमागों पर जिसकी वजह से काँग्रेस को खतरा पैदा हो सकता है और कुछ हद तक हो भी गया है। दक्षिण में हुआ है और भी दूसरी जगह हुआ है। केवल उनकी तरफ ध्यान ले जाने वाली बात है। न कोई टूटन का सवाल है और न कोई स्प्लीट की वजह। अब अगर कोई समझे कि नहीं, ये सब फालतू की चीजे हैं, केवल मैं जो सोचता हूँ, कहता हूँ, वही जायज और उचित है, तो फिर इसका कोई उपाय नहीं।

क्या आगे चलकर, कॉंग्रेस विभाजन की नींव नहीं पड़ जाएगी?

प्रश्न:

श्री अर्जुनसिंह: विभाजन न हो आखिरी दम तक हम सबकी कोशिश यही रहेगी। और आप यह मानकर चलिए कि अगर विभाजन की दर्दनाक स्थिति पैदा होती है तो वो मेरी वजह से नहीं होगी।

इसकी वजह कौन होगा? कौन नेता जिम्मेवार होगा?

प्रश्न:

श्री अर्जुनसिंह: अब जो लोग पार्टी के हितों को नजरअंदाज कर के चलना चाहते हैं, वे ही लोग जिम्मेदार होंगे।

और पार्टी के अनुशासन की?

प्रश्न:

श्री अर्जुनसिंह: अनुशासन तो इसके साथ जुड़ा है न। अगर पार्टी के हित में बात करना अनुशासनहीनता है तो उसकी परिभाषा क्या होगी? पार्टी से संबंधित होना चाहिए न। किसी की व्यक्तिगत खुशी और नाखुशी का सवाल तो नहीं उठता।

प्रश्न: जिन छह राज्यों में चुनाव होने हैं उन पर आपके निलंबन का क्या असर पड़ सकता है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं इसके बारे में कुछ नहीं कह सकता यह तो वहाँ के साथी जाने, वहाँ की स्थिति जाने। मैं तो सोचता हूँ, कि मैं एक बहुत साधारण व्यक्ति हूँ। मेरे निलंबन से कोई असर नहीं पड़ेगा।

प्रश्न: क्या आप आगे चलकर अपनी अलग पार्टी बनाना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: हरगिज नहीं। और इस चीज को आप अण्डरलाइन कर लीजिए हरगिज नहीं।

प्रश्न: अगर आपके साथ और नेताओं को निकाल दिया गया तो भी?

श्री अर्जुनसिंह: अब वो तो क्या होगा, उसके बारे में नहीं कह सकता। मैं कोई पार्टी बनाने नहीं जा रहा हूँ।

प्रश्न: आखिरी सवाल। आपका भावी कार्यक्रम क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं सारे देश में जाकर अपने कॉंग्रेस के साथियों को और अन्य नागरिकों को यह बताना चाहूँगा कि क्या मुद्दे हैं? क्या उनका संबंध है पार्टी के हित से, देश के हित से? केवल यही बताने का मेरा कार्यक्रम है, और मेरा कोई कार्यक्रम नहीं है।

प्रश्न: आप यह घोषणा करना चाहेंगे कि आप प्रधानमंत्री पद कभी स्वीकार नहीं करेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, यह घोषणा की चीज, स्वीकार करना या पाना या लेने की कोशिश करना कोई महत्व नहीं रखता। धन्यवाद।

उदारीकरण नीति में समय और आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन, संशोधन हों

30 जनवरी 1995 को जयपुर में पत्रकारवार्ता के प्रमुख अंश —

प्रश्न: जो कुछ कॉंग्रेस पार्टी में हो रहा है उससे ऐसा दीख रहा है कि पार्टी जैसे टूट जाएगी, आपका क्या मानना है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं टूटेगी, मेरा तो यह मानना है।

प्रश्न: जिन चार राज्यों में चुनाव हो रहे हैं, उनमें प्रचार के लिए क्या आप जाएगें?

श्री अर्जुनसिंह: अगर इन राज्यों की पी.सी.सी. या जो केंद्रीय अभियान समिति है, वह हमें कहेगी तो मै जरूर जाऊँगा, नहीं कहेंगे तो नहीं जाऊँगा।

प्रश्न: कल कार्यकारिणी में जो कुछ हुआ आपके निलंबन को लेकर जैसा कि आपने कहा कि लगता है कि

जो फैसला उनके मन में है वे करके बैठे हुए हैं उस दृष्टि से यह सोचा जा रहा है कि अब आपका क्या कदम होने वाला है?

श्री अर्जुनसिंह: लेकिन कल क्या हुआ? यह तो मुझे नहीं मालूम, मेरे निलंबन की पुष्टि हुई यह तो समाचार पत्रों से पता चला। उसके बारे में मैंने बता ही दिया कि क्या position है। मेरा कार्यक्रम सारे देश में जाने का है, काँग्रेस के साथियों से मिलने का है। आम लोगों से मिलने का है, जो मैं यहाँ करने आया हूँ और जो मैं बताना चाहता हूँ उस तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ, वह करूँगा।

प्रश्न: अगर आपको निष्कासित कर दिया जाता हैं तो आप किस हैसियत से बात करेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: मुझे निष्कासित किया ही नहीं जा सकता किस चीज से निष्कासित करेंगे। मैं वही तो आपसे कह रहा हूँ।

Q: Will you work with Shri N.D. Tiwari and join his Satyagrah?

Shri Arjunsingh: देखिए scenerio का obvious conclusion निकालना चाहते हैं तो निकाल सकते हैं। Now I am with Tiwariji and we will and be working together. Our respective position makes no difference to that approach because he also wants the party to be strengthened and so that issues that I have raised to be answered which he has said publicly and discussed in the party. So I see no problem there. I am going tomorrow to join the Satyagrah.

प्रश्न: दिल्ली में काँग्रेस ने गवर्नमेंट बनाई और श्री पी.व्ही. नरसिंहराव प्रधानमंत्री बने। आप मंत्रिमंडल में थे। काँग्रेस ने liberalisation की बहुत बड़ी policy introduce की। अब इतना समय गुजरने के बाद जबकि इतने सारे महत्त्वपूर्ण निर्णयों में आप शामिल थे, मंत्रिमंडल के एक वरिष्ठ साथी होने के नाते यह understading कहाँ गड़बड़ हुई। किस लेवल पर मतभेद आपके उभरें? कहाँ पर आपने जाहिर करना शुरू किया?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, liberalisation की policy हम लोगों ने मंजूर की इसमें कोई दो मत नहीं हैं, और उसके बहुत से मुद्दों पर अमल भी हुआ। लेकिन धीरे-धीरे यह प्रेक्टिकल चीज़ सामने नज़र आई कि बहुत से मुद्दे हैं जिन पर कि अभी काफी wrong perception में जा रहे हैं। Specially weaker section के मामले में और इसको लेकर कई बार बातचीत भी हुई। ऐसा नहीं है कि बातचीत नहीं हुई, उसमें ऐसा कदम तो नहीं उठा लेकिन बातचीत जरूर हुई फिर जो दक्षिण के दो चुनाव हुए इसमें साफ़ नज़र आया कि Weaker section धीरे-धीरे हमसे अलग होते चले जा रहे हैं। इसका कितना बड़ा दुष्परिणाम पार्टी के लिए हो सकता है, और फिर चुनाव के तत्काल बाद जो वर्किंग कमेटी की बैठक हुई, उसमें यह सवाल direct उठा और यह बात की गई कि इस संबंध में कुछ विचार किया जाए कि क्या करना है? दुःख की बात है कि विचार, विचार ही रहा। कुछ किया तो गया नहीं, मैं समझता हूँ कि इस हालत में कम से कम यह तथ्य जो चुनावों के नतीजों से और ज्यादा रेखांकित हुआ है, उसको हम as a worker बाहर जाकर articulate करें ताकि पार्टी को उसका पूरी तरह से लाभ हो और कुछ pressure built up हो।

प्रश्न: राजीव गाँधी की हत्या की जाँच के संदर्भ में आपने शंका उठाई थी, चन्द्रास्वामी के नाम पर।

श्री अर्जुनसिंह: Don't put the word in my mouth मैंने किसी का नाम नहीं लिया है, किसी स्वामी का नाम नहीं लिया है मैंने।

लेकिन आप इस संबंध में कुछ खुलासा करेंगे?

प्रश्न:

श्री अर्जुनसिंह: अगर मुझे मालूम ही होता कि किसने किया है, क्या हैं उसके पीछे तो जरूर करता। उसी की जाँच तो मैं चाहता हूँ कि हो।

प्रश्न: आपने जो मुद्दे उठाएँ हैं, उनका जगह-जगह जनता ने विपुल समर्थन कर अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं। लेकिन लगता है आप काँग्रेस के हाईकमान से भयभीत हैं? आखिर आप कब तक कठघरे में खड़े रहकर अपना मुँह बंद रखेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इस प्रकार के provocation पर मैं react करने लगूँगा तो फिर तो मैं समझता हूँ कि सही नहीं होगा। ये जनता का समर्थन या जो आम कार्यकर्ताओं की समझ है इससे मेरा संबल जरूर मुझे मिलता है लेकिन मेरी कोशिश यही होगी कि इन सबका दबाव काँग्रेस के अंदर ही बढ़े और वही अंततः इस दिशा में सही चलने के लिए हम सबको प्रेरित करें।

प्रश्न: आपने यहाँ भी कहा, बाहर भी कहा कि मैं काँग्रेस से अलग नहीं होना चाहता हूँ, काँग्रेस को मजबूत करना चाहता हूँ। आपका जो अभियान विभिन्न राज्यों में हो रहा है इससे यह स्थिति बन रही है कि काँग्रेस में दो गुट बन रहे हैं, चाहे आप एक अच्छे purpose के लिए काम कर रहे हों। पर ऐन ऐसे मौके पर यह स्थिति हो रही है जबकि कुछ राज्यों में चुनाव हो रहे है। इन चुनावों में हो सकता है कि आप यह सोचकर काम कर रहे हो कि काँग्रेस ताकतवर बनेगी लेकिन अगर ताकतवर नहीं बन करके उसकी स्थिति और ज्यादा खराब हुई तो क्या उसकी जिम्मेदारी आप नहीं लेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: वैसे तो बिना किए हुए जिम्मेदारी दी जा रही है और आपका एक और सुझाव उसमें जुड़ जाएगा।

प्रश्न: राजनीति में कोई भी मुद्दा सत्ता संघर्ष से अलग नहीं होता है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, कोई मुद्दा प्रजातंत्र में सत्ता से पूरी तरह से अलग नहीं होता, यह तो आपका कहना ठीक है कि पूरी तरह से अलग नहीं हो सकता। लेकिन कुछ ऐसे भी मुद्दे होते हैं जो तात्कालिक सत्ता के प्रश्नों से ऊपर भी होते हैं और उनको भी तात्कालिक संदर्भ में जोड़ देने से शायद उचित नहीं होगा, ऐसा मैं मानता हूँ।

प्रश्न: इंदिरा जी ने काँग्रेस का विभाजन होने के बाद सन् 78 में सबसे पहले जयपुर के रामलीला मैदान में भाषण दिया था, वह जनवरी के प्रथम सप्ताह में आई थी और आप भी जनवरी के अंतिम सप्ताह में आए हैं, और आपने भी रामलीला मैदान से शुरुआत की है तो क्या इन दोनों में कोई समान बात है?

Shri Arjun Singh: And there the comparison ends.

प्रश्न: आप माइनारिटी की बात कर रहे हैं। और इसके लिए कह रहे हैं कि माइनारिटी काँग्रेस से अलग हो गई है। आपके पास कौन-सा अल्लाउद्दीन का चिराग है कि माइनारिटी आपके पास वापस आ जाएगी? दूसरा प्रश्न मेरा यह है कि जो elected मुस्लिम हैं, वह तो आपके साथ खुलकर नहीं है, और यदि है तो क्या आपकी अंदरूनी उनसे कोई बातचीत है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, जहाँ तक आपका पहला सवाल है, परस्पर विश्वास कायम करने के लिए अल्लाउद्दीन के चिराग की जरूरत नहीं होती है। There is another chemistry that makes it. मेरे पास किसी चीज़ के लिए अल्लाउद्दीन का चिराग नहीं है। जहाँ तक आपका दूसरा सवाल है जो हमारे कलिग्स

है; who belong to the minority and are elected representatives. मैं समझता हूँ कि वह भी जो सोचते होंगे सही सोचते होंगे। अब मैंने कोई agreement उनसे नहीं किया है। But I am sure at a proper time they will also say what they think properly. I can't be speaking for anybody else.

प्रश्न: समाचार यह आया है कि यू.पी. काँग्रेस में यह तय किया जा रहा है कि वहाँ जो अध्यक्ष है उनको हटाकर दूसरा अध्यक्ष चुन लिया जाए, आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

श्री अर्जुनसिंह: मुझे इसके बारे में मालूम नहीं है।

प्रश्न: क्या आप महसूस करते है कि काँग्रेस में जब से inner-democracy को दबाया गया है और दिल्ली से मुख्यमंत्री और प्रदेशाध्यक्ष नामिनेट होने लगे हैं, तब से काँग्रेस की दुर्दशा होनी शुरू हुई है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, inner-democracy definitely essential है और उन हालातों में और भी essential है, जब काँग्रेस के पास कोई charismatic leader नहीं हैं, जो इन innner-contradictions को cope up करके उनको manage कर सके।

प्रश्न- आप जिस तरह नई आर्थिक उदार नीतियों का विरोध कर रहे हैं, पहले आप पार्टी के अंदर कर रहे थे?

श्री अर्जुनसिंह: मै विरोध नहीं कर रहा हूँ। आप थोड़ा इसको समझने की कोशिश करें। यह गलत perception नहीं होना चाहिए। मैं आर्थिक नीति का विरोध नहीं कर रहा हूँ। मैं यह कह रहा हूँ कि आर्थिक नीतियों के संबंध में जो perception आम आदमियों के दिमाग में जा रहे हैं और जिससे उनको यह लगता है कि जैसे अब poorer section के उसमें अब कोई समावेश नहीं है। हमें उसे correct करना है विरोध नहीं करना है।

प्रश्न: यदि आपका निलंबन वापस नहीं होता तो क्या आप अर्जुन सिंह की हैसियत से ही संघर्ष करते रहेगें या कोई मंच बनाएँगे? आगे आपकी महत्वाकांक्षाएँ क्या होंगी?

श्री अर्जुनसिंह: अर्जुनसिंह, काँग्रेस कार्यकर्ता यहीं एड्रेस है मेरा।

प्रश्न: क्या आपका संघर्ष यही होगा कि काँग्रेस के लोगों को फिर से एक करें या उनके बीच में अपने लिए संघर्ष करते रहें?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, मैं अपने लिए कोई संघर्ष नहीं कर रहा हूँ। काँग्रेस पार्टी के भीतर इस बात की चेतना प्रबल होती जायगी जैसा कि मैं विश्वास करता हूँ, होगी, वह अपने आप में एक प्रेशर बनाएगा जिससे कि सब चीज़ों पर गौर होगा।

प्रश्न: आपको नहीं लगता कि जब यह प्रेशर बनेगा तो इससे दूसरी पार्टियों को लाभ होगा?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो अपने-अपने सोचने की बात है, मैं तो ऐसा नहीं समझता।

प्रश्न: कई लोग इस मुल्क के हालात की तुलना सोवियत संघ के विखंडन से करते हैं आप इस बात से किस हद तक रज़ामंद हैं, और हैं तो इसके लिए इस मुल्क के नेतृत्व को किस सीमा तक जिम्मेदार मानते है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इस प्रकार की तो कोई समानता नहीं है। क्योंकि सोवियत संघ तो एक communist country थी, और वहाँ विचारों की अभिव्यक्ति और उसकी स्वतंत्रता नहीं थी। जबकि भारत एक

डेमोक्रेटिक कन्ट्री है और functioning democracy है, तो यहाँ बहुत सी चीजें जो असंतोष के रूप में या कोई ऐसी गलत दिशा में जाने की वजह से होती है इसके लिए एक तो बहुत अलर्ट और फ्री प्रेस है। वह उसको हरदम नोटिस करता रहता है। और हर पाँचवें साल चुनाव होते रहते है। तो जनमत भी अपनी excercise में किसी न किसी तरीके से correctives देता है। केवल अगर आज के संदर्भ में देखें तो एक ही बात है कि जो काँग्रेस पार्टी है वही एक मेजर सेंट्रल पोलिटिकल फोर्स है, इस देश में और कोई दूसरी पार्टी आज नहीं है। Five years hence, ten years hence it is possible लेकिन as of today नहीं है और इसलिए यह जरूरी है कि काँग्रेस किसी प्रकार से कमजोर न हो ताकि वह सेंट्रल पोलिटिकल फोर्स बनी रहे।

प्रश्न: जो वैचारिक मतभेद आपका नेतृत्व से चल रहा है इसमें आप इसका समाधान नेतृत्व परिवर्तन में देखते हैं या कि बातचीत में?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो अभी इस चीज़ को realisation की सतह पर लेता हूँ। यह Realisation होना चाहिए कि कुछ चीज़ें हैं जिन पर ध्यान देना जरूरी है पार्टी के तथा ओवर ऑल कन्ट्री के interest के लिए।

प्रश्न: पिछले सत्र में चीनी पर बहुत बड़ी चर्चा हुई थी और चीनी के भाव बहुत बढ़ गए थे, इस घोटाले पर आपने अभी तक कुछ विचार नहीं बताए? यह क्या घोटाला था इसकी जानकारी दें?

श्री अर्जुन सिंह: मैं तो समझता हूँ कि जिनको इस घोटाले के संबंध में सबसे ज्यादा प्रताड़ित किया गया है, श्री कल्पनाथ राय को उन्होंने स्वयं इस बारे में judicial inquiry माँगी है मैं उनकी इस माँग का समर्थन करता हूँ।

प्रश्न: सीधा सवाल यह है कि आपके निष्कासन के बाद क्या किसी दूसरे दल ने आपको निमंत्रण दिया है।

श्री अर्जुनसिंह: न तो मुझे निमंत्रण दिया है न मुझे निमंत्रण की जरूरत है। धन्यवाद।

काँग्रेस को साम्प्रदायिक ताकतों से लड़ना है

15 फरवरी 1995 को संडे आब्जरवर के श्री मोहम्मद सईद मलिक के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

Q: You have firmly ascertained rightly and everybody agreed with that the future of the democracy in the country is in danger, the congress party has to save it. Then you have also said that it has to be a broad platform, and then you call out to diagnose why the congress has got culminated from the rare section of minorities, backwards. You have also expressed your anguish that not much was being done in this regard. What exactly would be done to regain confidence in these sections of minorities, weaker sections, right now in the present situation.

Shri Arjunsingh : This has happened not by accident. Specially in the last three and half years and careless attitude emerged in the party about these section and gradually this led to the belief among these people that the congress can be able to be at the centre of

the authority in this country for so long and now this seems to have developed this kind of attitude. And therefore, that elimination which took place were so deep and quick that the events leading up to the demolition of the Babri Masjid only accentuated and provocative to a stage where actually it was not irreconcilable at that moment as seems to be in the case. And after that also no positive or specific steps were taken and even the realisation could not be shown that yes we feel that something has happened. This should not have happened and that to some extent perhaps we can not escape the responsiblity. Even if this kind of had... gone by words realisation had gestures from the top leadership of the congress party, perhaps things would have not gone out of hand.

Q: What exactly, having expressed your anguish feelings.?

Shri Arjunsingh : The party needs certain drastic action to be taken at the party level, at the programme level, and at organisational level will have to be in some way or the other admit its mistake or failure to prevent the demolition of the Babri Masjid. Because that is one thing that lies in the heart of the minorities. Whether it is right or wrong may be history. Let them feel it. Now how it is to be done is a matter which can be debated, discussed. But if people feel that it is not necessary to be done. Then of course you go up with a block. I feel that this is at the moment be the perception of the leadership. That nothing needs to be done it will go on or go off gradually.

Q: This is what exactly the point I was raising before you that certain things are to be changed in the congress party. Now the whole phenomenon of the conduct of the party, the popularity of the party, the status of the party, the position of the party is related to the leadership. The relationship between the leader and the followers, supporters, the workers, down below, certain things have to be changed. How can that change come about?

Shri Arjunsingh : You see there is little more time left with. And if the leadership is not able to perceive the imperative of change in this regrad. Then there is no other option but to have another leadership.

Q: You see, yesterday only U.S. Power Secretary, has said that you are aware of what BHEL, NTPC saying that if you give us the same treatment probably we will do, not less of them, but better than them. But they are not being given. For instance this kind of guarantee assuring them 16% terms on their investment. Yesterday she said that let Indian power sector compete with market forces but yet when out side investment is there, first make sure that 16% guarntee to them. This is what extactly cronic.. and secondly the price.

For the first time congress parliamentary party, the Prime Minister.... that means your meassage has gone home. Two things one is the prices.. and another is liberalisation had in fact induced a boom in the capital market with middle class participation. That appears to be subsiding now. Do you also link it with what you have called the distructive perception of the economic reform, though they need some correction?

Shri Arjunsingh: It will be unfair. It is not a question of my views. And one could not be over enthusiastic in pushing ones views, on others because after all I am also a human being. I am not being an economist or an expert on high finance. All I can say that the ground realities in this country where even today a majority of the people for them the economic, social and political parameters are entirely different from people who are at the helm of politics, economics whatever it is. Now if that is a reality and I don't think anybody can dispute that, then whatever approach we make has to take into account their concern, their requirements also. I am not saying that It has not been attempeted. But perhaps that kind of balance has not been struck. And that is why all these destortion seem to be coming. And that is why I have said and I will maintain it that on these matters we should really seek a consensus. This should not be deduce to a political issue between one party and his. Because after all the economic well being of the country has to be achieved. It has to be achieved, not for the congress, or the BJP or the Communist or anybody else. And if in this process we are able to arrive at certain rational then everyone will be pleased I made a humble attempt in this case at that time. I went to the Prime Minister. He agreed that yes, I shall be pleased to call every one. Don't do this debate in the parliament. Let every one sit down and say alright now this is the treaty, this is the negotiation that we have conducted, where do you want anything to be changed or given a different stance or whatever it is, But ultmately he did not call. Now, then it became a political issue. I said even in the United States There were deep division on this between the Democratic and Republicans but then they took the initiative sat together and they came to a certain decision. Why can we not do the same thing. These are the things which gives you the impression as if some other forces are impelling us. They are working as watch words. So this is what is happening.

Q. You have also talked about public sector disinvestment in this regard and you have said how demoralising, the whole thing has been ultimately the CAGS pointed

out and then created all sorts of doubt, the whole case of transparency has been told.

Shri Arjunsingh : Yes, not only the CAG, the latest is the standing committee Powers and Industies Ministry, and the report was submitted on 20th December. They have taken the figure from 3000 crores which the CAG pointed out to ten thousand crores. And it is the total imperviousness of the system. Eight thousand or 10,000 God knows till now even the final figure yet to come.

Q: Going back to your statement subsequently about Babri Masjid, that you have given a sort of advance information of what you had got form Faizabad to Godbole and Rajgopal. Now exactly your critic say that you should have as well told it to the Prime Minister also, why did you not informed him.

Shri Arjunsingh : He was absolutely aware of everything that is why I have made that offer, when some very eminent people said that I should be tried for this. I want, that I should be prosecuted for the perceived offences by some people. Let the nation come to know. I am prepared to face that.

Q: If I remember correctly, while white paper was being prepared this was your stand that you should put the whole incident and scenario but it was not done.

Shri Arjunsingh : Absolutely, that is why I dis-associated myself from the committee, which was preparing the white paper.

Q: And secondly, coming to present one now, All that they have been saying that you were trying the split of the party, you are firm about this thing that you are in the congress as you say. There is no question of forming any other party. Because you think that congress itself has to be re inforced.

Shri Arjunsingh : You have put the words in my mouth. I could not have put it in a better way, Thanks.

भारत में तीसरी ताकतें सत्ता की दौड़ में

25 मार्च 1995 को नवभारत टाइम्स के श्री उमेश कुमार सिंह के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

प्रश्न: इस समय देश में क्या सिनेरियों है?

श्री अर्जुनसिंह: अब सिनेरियों तो दिख ही रहा है।

प्रश्न: जिस तरह से भारतीय जनता पार्टी एकाउन्ट करती जा रही है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए भारतीय जनता पार्टी और जितने भी उस विचारधारा के लोग है, चाहे वे शिवसेना के हो या राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के हो, इन लोगों का एक निश्चित दृष्टिकोण है, एक निश्चित योजना है। और वह योजना यह है, कि भारत में विशेषाधिकार के रूप में स्थापित हो करके यहाँ की राजनीति

को संचालित किया जाए। उसका जिकर वे बहुत साफ शब्दों में अभी नहीं, न जाने कितने वर्षों से करते आ रहे हैं। कोई दूसरी जाति, धर्म का व्यक्ति हो तो उसे मान के चलना पड़ेगा की वो हमारे नीचे है। हमारे वर्चस्व को मानना पड़ेगा। ये सब जो दृष्टिकोण है, ये पूरी तरह से भारतीय परम्परा, संविधान और जिसको अँग्रेजी में 'ऐथोस' कहते है, हिन्दी में उसका शब्द मैं अभी नहीं कह सकता, उसके प्रतिकूल है।

इन लोगों ने राम जन्म भूमि के विषय को लेकर काफी उत्तेजित वातावरण पैदा कर दिया और अन्ततः बाबरी मस्ज़िद के ढाँचे को गिरा दिया। उसके बाद भी जो चुनाव हुए उसमें इस देश के मतदाताओं ने जहाँ चुनाव हुए, वहाँ ये स्पष्ट संकेत दे दिया कि वो इस तरह की शक्तियों का साथ नहीं देना चाहते हैं। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान कहीं भी उस विचारधारा को बहुमत का समर्थन नहीं मिला। अब जो स्थिति निर्मित हुई है, उससे ऐसा लगता है, कि कम से कम गुजरात और महाराष्ट्र के चुनावों के बाद वे इस हद तक तो सफल नहीं हुए जिन लोगों के मानस में उनके प्रति सहानुभूति का जो सवाल ही नहीं होना चहिए। उन लोगों का भी उनको समर्थन मिल गया और वे इन दोनों राज्यों में चुनाव जीत गए।

प्रश्नः आप किस जन मानस की बात कर रहे है?

श्री अर्जुनसिंहः जन मानस नहीं, ऐसे वर्ग का, जिनके मानस उनके प्रति कभी समर्थन नहीं रहा। माइनोरीटीज़ का उनका भी समर्थन उनको मिल गया और दोनों प्रदेशों में उन्होंने चुनाव जीतकर सरकारें बना ली।

प्रश्नः आप क्या सोचते है कि माइनोरीटीज़ के पास कोई विकल्प नहीं बचा था।

श्री अर्जुनसिंहः नहीं इसका मतलब ये है, पहली बात कि जो वर्चस्व वाला उनका सिद्धांत था उसको मजबूरी में स्वीकार किया गया। मैं व्यक्तिगत अभी नहीं जाना चाहता। जो मूल बात है, ये बहुत खतरनाक डेवलपमेंट है।

दूसरा इसका पहलू यह है कि काँग्रेस पार्टी जो सदैव इन मूल्यों और आदर्शों के लिए संघर्ष करती थी, रक्षा करती थी, और उसके लिए कुर्बानी भी करती थी। उस पार्टी के बारे में ये धारणा बन गई कि ये पार्टी स्वयं इन सिद्धांतों और आदर्शों से दूर हट गई है। उनकी रक्षा करने का तो सवाल ही नहीं उठता। जो दूसरा महत्वपूर्ण विषय है जिसकी वजह से मैं समझता हूँ, कि भारत के भावी राजनैतिक भविष्य में खतरनाक मोड़ आ सकते है। और इसी चीज को बचाना ही आज के संदर्भ में मेरे छोटे से मत में महत्वपूर्ण कदम है। आपने पूछा कि वातावरण क्या है उसके लिए मुझे इतना कहना पड़ा।

प्रश्नः इन परस्थितियों में आजकल जैसे जिसको तीसरी ताकते कहते है, वो बिखर गई है, और काँग्रेस अपने को पुराने मूल्यों के उसमें ढाल नही पा रहीं है, तब तो भारतीय जनता पार्टी का ये खतरा बढ़ता ही जाएगा तो आप इसको कैसे रोकना चाहेगे?

श्री अर्जुनसिंहः भाई, मैं तो कोई अकेले किसी चीज को नहीं रोक सकता हूँ और न कर सकता हूँ। मैं तो प्रयास कर ही रहा हूँ, लेकिन मेरा ऐसा मानना है कि काँग्रेस का कार्यकर्ता या आम काँग्रेस जन किसी भी प्रकार से पीछे नहीं है और यदि ऐसी स्थिति बनी है तो उसका कारण उनका कमिटमेंट या उनके विचारों में तबदीली नहीं है, हमने लीडरशिप की तरफ से उनको ये प्रेरणा या कहिए मार्गदर्शन उस ढंग का नहीं दिया, जिसके वजह से इस परस्थिति से बचा जा सके। उस चीज को अब जो काँग्रेस

के अंदर लोग है, पार्टी में उनकी ही भावनाओं और उनकी ही धारणा को मजबूत करने से पार्टी के अंदर वो दबाव बनेगा कि हम उन चीजों से जो हटे है या जो लोग देख रहे है, उनकी नजर में उसे हम दुरूस्त करे और मैं समझता हूँ वो हो सकता है।

प्रश्न: तीसरी ताकतों के बारे में क्या कहना है? क्या वो भी लड़ाई में भाग ले सकते है? जब आप दोनों लड़े तो वो साथ आ सकते है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए तीसरी ताकतों में, राजनीति में consistency जिसको कहते है, कि लगातार प्रतिबद्धता, किन्हीं चीजों के बारे में नही है यह बड़े दुःख की बात है कि हिन्दुस्तान में जो तीसरी ताकतें बनना चाहते है, उन लोगों ने सत्ता हथियाने के लिए उस प्रतिबद्धता से मुँह मोड़ा है। 1977 में 1989 में इन सब शक्तियों ने उन साम्प्रदायिक शक्तियों के सहयोग से साझेदारी में सत्ता पाई और चलाई। इसमें कोई ऐक्सेप्सन् नहीं है। इसलिए पूरी तरह से उन्हें हर परिस्थिति में लोग विश्वसनीय नहीं मानते। और इसीलिए कही थोड़ा-सा वातावरण अंकुरित हुआ तो कुछ पा गए और नहीं हुआ तो बिखर गए।

प्रश्न: क्या लगता है काँग्रेस इन परिस्थितियों में अपने को खड़ा कर पाएगी?

श्री अर्जुनसिंह: अब देखिए ये तो विश्वास की बात है।

प्रश्न: तो आप जैसे वो कहते है कि काँग्रेस से आपको निष्कासित करने की बात है?

श्री अर्जुनसिंह: अब हो गया उन्होंने हमें काँग्रेस की सदस्यता से निष्कासित कर दिया, लेकिन काँग्रेस से कैसे कोई हमको निष्कासित कर सकता है।

प्रश्न: क्या काँग्रेस कुछ चुनावी गठबंधन से चुनाव लड़ेगी या इस बार अकेले ही लड़ेगी?

श्री अर्जुनसिंह: ये तो मैं नहीं कह सकता हूँ, वैसे काँग्रेस को तो अपने आप को ही मजबूत करके लड़ना चाहिए। अगर हम वैशाखियों के सहारे शुरू से ही सोचना शुरू कर देगे तो पार्टी कहाँ रहेगी।

प्रश्न: मध्यावधि चुनाव होने के आसार शायद नहीं दिखते?

श्री अर्जुनसिंह: कोई कारण नहीं है, मध्यावधि चुनाव होने के और जो देश और काँग्रेस का हित सोचेगे दोनों मैं एक साथ कह रहा हूँ, वो मध्यावधि चुनावों को प्राथमिकता नहीं देगे, लेकिन इसलिए मैं कोई आवश्यकता नहीं समझता की मध्यावधि चुनाव हो।

प्रश्न: आप कबसे यात्राएँ शुरू कर रहे है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो जा ही रहा हूँ। अब 29 को हैदराबाद, मेरा तो लगातार कार्यक्रम है। फिर विजयबाड़ा, इसके बाद राजस्थान, इसके पहले हिमाचल, फिर महाराष्ट्र, बम्बई, धूलिया। चुनाव खत्म हो जाएगे तब तक बिहार जाऊँगा।

प्रश्न: यदि काँग्रेसजनों का प्रेसर बढ़ता है, तो क्या मध्यावधि चुनाव करा सकते है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं वही तो आपसे कह रहा हूँ, मैंने इतना सब क्या कहा था तो मध्यावधि चुनाव कर देगे, तब ही तो प्रश्न आ जाएगा कि केवल अपने हितों के लिए देश और काँग्रेसके हितों को तलाक दे दिया। ऐसा कौन काँग्रेस का व्यक्ति होने देगा, न सांसद, न विधायक न और कोई।

विभिन्न प्रदेशों में काँग्रेस की हार के कारणों का विश्लेषण ज़रूरी है।

25 मार्च 1995 को जी.टी.वी. के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

प्रश्न: सर सबसे पहले मैं आपसे ये पूछना चाहूँगा के मध्यप्रदेश के कुछ एम.एल.ए. ने श्री दिग्विजय सिंह को कुछ ज्ञापन दिया है, उस ज्ञापन के बारे में आप कुछ कहना चाहेगें?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो उसमें क्या कहूँगा ये तो विधायकों की, मंत्रियों की अपनी-अपनी सोच और इच्छा है, और उन्होंने मुख्यमंत्री जी से आग्रह किया है, और ये उनके ऊपर है, कि वह क्या निर्णय करते है।

प्रश्न: आपकी विजयबाड़ा में अभी एक रैली है उसमें अहमद सर ने बोला है, कि वहाँ के जो काँग्रेसी है उनको मना किया है, वहाँ पर आने के लिए, इस पर आप क्या कहना चाहेगे?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो ये समझ नहीं पा रहा हूँ, कि इस तरह की रोक लगाने का तात्पर्य क्या है? यह स्वतंत्र देश है या फिर अभी-भी हम ब्रिटिश राज्य में रह रहे है। किसी के भाषण मत सुनों, किसी से मिलने मत जाओं, ये तो बिल्कुल अप्रजातांत्रिक दृष्टिकोण है, और मेरा ख्याल है की इस पर कोई विचार भी नहीं करेगा।

प्रश्न: आपकी तीनों रैलियों में ऐसा हुआ, भोपाल रैली में दिग्विजय सिंह ने कुछ कहा था, कटरा रैली में बलराम जाखड़ ने कुछ व्यवधान उत्पन्न किया, और विजयबाड़ा में अहमद सर ने भी वहाँ के लोगों को रोका था, इस पर आप क्या कहना चाहेगे?

श्री अर्जुनसिंह: अब मैं यही तो कह रहा हूँ आपसे की ये पूरी तरह से अप्रजातांत्रिक दृष्टिकोण है, और एक प्रजातांत्रिक देश में, और भारत जैसे देश में इस प्रकार की रोक लगाने की बात करना, मैं समझता हूँ, काँग्रेस का अंततः इससे हित नहीं होना है।

प्रश्न: सर, अभी असम के results आए है, इससे आप क्या प्रेरणा लेतें हैं या फिर मध्यप्रदेश सरकार के प्रयास में भी देखा जाए, महाराष्ट्र में उड़ीसा से देखे तो ऐसा क्यों है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए अगर हम केवल मध्यप्रदेश सरकार के प्रयास का विश्लेषण करेगे तो शायद ये एकाँगी होगा कुछ हद तक। लेकिन कुछ और भी महत्तवपूर्ण बातें उभकर सामने आई है। मैं नहीं समझता कि हम गुजरात और महाराष्ट्र में जो कुछ उसको इतना सहज तरीके से ले। इस पर बहुत गंभीरता से सोचने की बात है कि गुजरात, जिस भूमि ने राष्ट्रपति महात्मा गाँधी को जन्म दिया, वहाँ पर उन साम्प्रदायिक विचार धाराओं का वर्चस्व हो गया है, जिससे पीड़ित होकर गोडसे ने गाँधी जी की हत्या की थी, ये कोई मामूली चीज नहीं हैं अब चाहे तो आप इसको नजर अंदाज कर दीजिए, लेकिन मैं समझता हूँ, ये बहुत ही गंभीर बात है और आने वाले दिनों में भारत की सियासत पर इसका बहुत ही दूरगामी असर होगा।

प्रश्न: क्या अपनी ही कमजोरी की वजह से आज काँग्रेस को इस तरह से सामना करना पड़ रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: अब कारण तो यही है, मेरे समझ से एक तो परस्पर विश्वास कायम करके काम करने की कोशिश नहीं की गई। केवल वर्चस्व की राजनीति के आधार पर हर मसले को देखने का प्रयास करते रहे। वर्चस्व व्यक्ति का हो सकता है लेकिन सिद्धांतों के वर्चस्व के ऊपर नहीं हो सकता, और जब कभी-भी व्यक्ति ने अन्य मूलभूत आधारों को नजर अंदाज करके व्यक्तिगत् वर्चस्व कायम करने की कोशिश की है, हर दम नुकसान हुआ है। उसका नुकसान व्यक्ति को भी हुआ है, और पार्टी को भी उठाना पड़ा है।

प्रश्नः क्या नेतृत्व के बदल जाने से स्थिति सम्हाली जा सकती है?

श्री अर्जुनसिंहः अब वही एक मात्र विकल्प रहेगा, तो पार्टी जरूर सोचेगी। धन्यवाद।

प्रधानमंत्री की इच्छा तथा आदेश का पालन होगा

29 मार्च 1995 को हैदराबाद में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्नः मंत्री पद से हटने के बाद लगातार आप खामोश रहे हैं। जबकि कई ऐसे मौके आए, मध्यप्रदेश में या इसके बाहर भी जहाँ पार्टी के सिपाही होने के नाते आपको बोलना चाहिए था। आपकी इस खामोशी को लोग दूसरे रूप में देख रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंहः आवश्यकता पड़ने पर मैं बोलने में नहीं हिचकता। लेकिन रोज कुछ न कुछ बोलना अनिवार्य नहीं है। ऐसी मेरी मान्यता रही है और जितने ऐसे विषय आए हैं, मैंने जरूर टिप्पणी की है।

प्रश्नः क्या आपकों नहीं लगता कि आपके बारे में पार्टी हाईकमान को कुछ इस तरह से कान भरने की कोशिश की गई जिसमें आपका दुराव शामिल हैं और पार्टी हाईकमान इसी को स्थाई सत्य मानकर निर्णय लेने पर आमादा हैं। एक तरह से आपकी उपेक्षा जैसे हो रही है।

श्री अर्जुनसिंहः मेरी यह मान्यता नहीं हैं। जो कुछ लोग मेरे शुभचिंतक हैं उन लोगों का ये प्रचार हो सकता हैं, लेकिन इसमें कोई सच्चाई नहीं हैं।

प्रश्नः पोलिटिकल आबज़रवर कहते हैं कि मध्यप्रदेश में मोतीलाल वोरा और आपके बीच लंबे अर्से से चले आ रहे मतभेदों को भुलाकर जो ज्वाइंट दौरे की बात कही गई थी तो फिर आप इसका रिज़न बताईए?

श्री अर्जुनसिंहः ज्वाइंट टूर जिस मंशा से सुर्पुद किए गए थे उसमें कोई फ्लाप नहीं हुआ हैं। वो तो सीमित दायरा था, पंडित नेहरू के शताब्दी समारोह के संबंध में। अब उसके बाद दौरे फिर से शुरू होंगे। इन दौरों को प्रदेश काँग्रेस कमेटी आयोजित करेगी। मैं समझता हूँ उसमें कोई फ्लाप का सवाल नहीं है।

प्रश्नः नहीं उसमें एक और प्रश्न था कि लोगों को यह लगे कि लोगों के मन में जो दरार की स्थिति बन रही थी, उनके लिए अब दोनों के बीच में संबंध मधुर नहीं हैं। ऐसा लोगों को लगता हैं। इसमें इतना ही कह सकते हैं लेकिन दरार अभी खत्म नहीं हो पाई हैं।

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, कितनी व्यक्तिपरख राजनीति लोगों ने बनाने की कोशिश की हैं। इसकी वजह से इस तरह कि बातें उठती हैं। मैं कभी व्यक्तिपरख राजनीति का आदी नहीं रहा हूँ कि एक व्यक्ति के बारे व्यक्ति के रूप में हम सोचते आए हैं और सोचते रहेंगे। जो हमारे दल के नेता हैं, पंडित जी थे, इंदिरा जी थी और राजीव जी थे उसके बाद वो सब समान रूप से काम करने के लिए हैं। और मैं तो सदैव नीति और सिद्धांतों पर चलने का आदी रहा हूँ। इसलिए किसी व्यक्ति से मेरा दुराव व लगाव नहीं हैं। यहाँ व्यक्तिगत किसी का संबंध हो सकता हैं। लेकिन मैंने कभी वोरा जी के संबंध में इस रूप में सोचा ही नहीं और जहाँ तक पार्टी के हितों का सवाल आएगा, नीतियों का सवाल आएगा उसमें हम उनके साथ काम करेंगे और कहीं सुझाव देने की बात आई तो सुझाव भी देंगे। ऐसा होना चाहिए।

प्रश्नः अभी आपने कहा कि सी.ए.जी. की रिपोर्ट कोई कोर्ट की रिपोर्ट नहीं है और उसमें पी.एम. के खिलाफ कोई टिप्पणी भी नहीं की गई है। मैं मानता हूँ टिप्पणी नहीं की गई हैं तो तीन दिन तक सब कहते रहे राज्य सभा में, अगर मैं होता सी.ए.जी. में तो रिपोर्ट को खारिज कर देता?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए दूसरों के मत से मैं कोई उनकी पुष्टि करना या उसको चैलेंज करना मेरा मतलब नही है। मैं तो अपनी बात कहता हूँ। सी.ए.जी. की रिपोर्ट एक सामान्य रिपोर्ट हैं और आपोजिशन ने उसको एक मुद्दा बनाकर उस पर चर्चा करने की कोशिश की। तो उनको दिखा की चर्चा में ये सब बातें सही स्तर पर आ जाएगी तो वो चर्चा से विमुख हो गए। और केवल पार्लियामेण्ट को रोकने से और हल्ला गुल्ला करने के सिवाय उनको कुछ और दिखा नहीं। इसलिए तथ्यों पर या कि मेरिटस् पर बात ही कहाँ हुई। मैं समझता हूँ कि अपोजिशन ने जो ये बात की हैं, इसमें प्रजातांत्रिक प्रक्रिया को बहुत बड़ा आघात पहुँचेगा। ये आज दोषारोपण या पोलिटिकल चार्जेस लगाना अलग बात हैं। लेकिन अंततः यह तो प्रजातांत्रिक प्रक्रिया को अपोजिशन ने नजरअंदाज करके दूसरा रास्ता चुना हैं। मैं तो नहीं समझता कि यह सही बात है।

प्रश्नः मध्यप्रदेश में खास तौर से दो तबका हैं। कुछ लोगों की नजर में आप अत्यंत भ्रष्ट अवसरवादी है और न जाने क्या-क्या हैं। लेकिन एक तबका ऐसा हैं जिसकी नजर में आप चमत्कारिक नेता हैं। इस बारे में आपका क्या कहना हैं? ऐसा मानने के पीछे क्या कारण है?

श्री अर्जुनसिंहः मैं समझता हूँ कि इन दोनों बातों के बीच में फैसला करने का अधिकार न हमें है, न आपको, न किसी समाचार-पत्र को न कुछ लोगों को हैं। ये तो अंतिम फैसला प्रदेश की जनता करेगी। इस समय मेरा किसी से कोई विरोध नहीं है।

प्रश्नः उनका कोई स्पष्ट मत होगा?

श्री अर्जुनसिंहः होगा तो उसमें मैं क्या करूँ। मैं सबके पीछे थोड़ी भाग सकता हूँ। मैं ये जानता हूँ कि मैं मध्यप्रदेश में वहाँ से सर्वहारा वर्ग की सेवा करने में जो कुछ भी मुझ में सीमित बुद्धि और शक्ति थी, मैंने उसका उपयोग किया। अब इसके बाद कौन क्या समझता हैं, मुझे इससे मतलब नहीं। जैसा मैंने कहा प्रजातंत्र में अंतिम निर्णय तो जनता का होता हैं। अगर कोई प्रजातंत्र की बात को माने और यदि यह हैं कि नहीं हमारा पूर्वाग्रह ही अंतिम बात हैं, फिर तो क्या कहना। मुझे इसमें कुछ नहीं कहना।

प्रश्नः आपके माधवराव सिंधिया और मोतिलाल वोरा के बीच किस तरह के मतभेद हैं।

श्री अर्जुनसिंहः नहीं हमारा कोई मतभेद नहीं हैं। उनसे पूछिए कि उनके क्या मतभेद है।

प्रश्नः आपको लगता हैं कि वो किस चीज पर मतभेद बनाकर बैठे हुए हैं।

श्री अर्जुनसिंहः इसका जवाब वो देंगे न मेरे तरफ से कोई है नहीं तो मैं क्या जवाब दूँगा।

प्रश्नः आप जैसा राजनेता जो बराबर बिज़ी रहा हो, आप जब फाईलों और लोगों के बीच में घिरे हो, इस व्यस्तता की तुलना आज से करें?

श्री अर्जुनसिंहः मैं तो समझता हूँ कि व्यस्तता किसी दूसरे पर निर्भर नहीं करती। व्यस्तता को अपने स्वयं के कार्यक्रम को निधार्रित करने में होती हैं। मुझे तो ऐसी परिस्थिति सामने नजर नहीं आई जिससे मैं ऐसा करूँ। ठीक हैं दूसरे संदर्भ में काम कर रहा हूँ, इसमें क्या है।

प्रश्नः मध्यप्रदेश की सरकार के प्रयासों से क्या लगता है आपको कि अगले चुनाव में आपकी पार्टी की सरकार बनेगी?

श्री अर्जुनसिंहः ऐसा न सोचने का तो कोई आधार है नहीं, जितने प्रयास हो रहे हैं वो जनाधार को मजबूत करने के लिए हो रहे है, प्रयास कर रहे हैं। इसके अच्छे परिणाम आएगें। धन्यवाद।

काँग्रेस मजबूत होगी तो देश भी मजबूत होगा

6 अप्रैल, 1995 को धूलिया (महाराष्ट्र) में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

आयोजकः धूलिया जिले में हमारे श्रद्धेय अर्जुनसिंह साहब को आमंत्रित किया हैं। वो खासकर हमारे और उनके जो कौटुम्बिक संबंध हैं, उसके आधार पर माताजी का जो अमृत महोत्सव समारोह मनाना था आमंत्रण स्वीकार करके उन्होंने यहाँ आना कबूल किया हैं। ये हमारा डेढ़ महीने पहले का निमंत्रण हैं उसके बीच राष्ट्रीय वातावरण में काफी तब्दीली आगई है। जब हमने निमंत्रण दिया था, तब आप मिनिस्ट्री में थे। और इतफाक से फिर इन्होंने इस्तीफा दे दिया और आज हमारे और आपके बीच में आम जनता की तरह, एक आम आदमी की तरह, हमारे सामने पेश हैं। तो जो भी आप पूछना चाहते हो पहले आप पूछ ले, तो ज्यादा ठीक रहेगा।

प्रश्नः चलिए बताइए कि काँग्रेस पार्टी को मजबूत बनाने के लिए क्या-क्या कदम उठाए जाने चाहिए?

श्री अर्जुनसिंहः अभी तो वर्किंग कमेटी की बैठक ही हो रही हैं उससे क्या निष्कर्ष निकलता है। मेरे ख्याल से तो हमें बहुत संजीदगी से और गहराई से विचार करना चाहिए कि वो कौन से कारण हैं, जिनकी वजह से, काँग्रेस की साख अवाम के बीच में कमजोर हुई है। क्योंकि प्रजातंत्र में जब तब हर वक्त विश्वास पाने के लिए अवाम को अपना बनाकर नहीं रखेंगे, तो प्रजातंत्र में कोई भी पार्टी या कोई भी व्यक्ति नहीं चल सकता है। उसमें कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिससे कि एक तो पिछड़े वर्ग के लोग हैं, हरिजन हैं, आदिवासी हैं, दलित हैं इन लोगों के बीच में जो पार्टी का पहले स्थान था, इसमें काफी कमी आई है।

यह केवल महाराष्ट्र की बात नहीं कर रहा हूँ। यह तो पूरे देश की बात कर रहा हूँ। अकलियत के अन्दर, मायनारिटिज के अन्दर, अविश्वास की भावना बहुत बढ़ गई है। आर्थिक उदारीकरण की जो कोशिशें हो रही हैं वाज़िब हैं, ठीक हैं लेकिन उससे एक ऐसी धारणा फैल गई कि जो समाज का एक कमजोर और गरीब तबका है, उसको यह अहसास नहीं हो पा रहा है कि इस आर्थिक ढाँचे में उसका भी कहीं पर या उसके लिए भी कोई प्रावधान है। इस वजह से गलतफ़हमी पैदा हो गई है कि आर्थिक उदारीकरण केवल चंद बड़े-बड़े लोगों के लिए हैं और जिससे देश की साधारण जनता को कोई लेना देना नहीं है। लोगों के मन में यह संदेह पैदा होता जा रहा है। जिस पर ध्यान देना चाहिए और हमें कठोर फैसले करने चाहिए ताकि काँग्रेस पार्टी की जो स्वाभाविक साख है, स्थान है, पार्टी का, सदैव देश के लोगों के मन में, वापिस प्राप्त कर सकें जो ऐतिहासिक दायित्व पार्टी को मिला है। देश की आजादी की लड़ाई स्वराज्य की प्राप्ति और राष्ट्र निर्माण का जो काम है, वही काँग्रेस का दायित्व है। संक्षेप में तो मैं इतना ही कह सकता हूँ।

प्रश्नः पार्टी ने तो आपको निष्कासित कर दिया फिर भी पार्टी के प्रति आपका प्रेम है?

श्री अर्जुनसिंहः भाई मैं तो काँग्रेस का एक कार्यकर्ता हूँ इसीलिए किसी के रहमोकर्म पर थोड़ी हूँ। काँग्रेस से जुड़ा हुआ हूँ।

प्रश्नः आपने मंत्री परिषद से इस्तीफ़ा दिया और बाद में काँग्रेस ने आपको निकाल बाहर किया? इसके बाद भी आप काँग्रेस के हित की बात करते हैं। इस घटना पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

श्री अर्जुनसिंहः अब ये तो आप लोग जाने, मैं तो नहीं जानता।

प्रश्नः अभी जो काँग्रेस की हार हुई है, उसके लिए काँग्रेस वर्किंग कमेटी की जो मीटिंग हुई, कल रात को, उसमें कहा गया है कि इसके लिए आपको और तिवारी साहब के जो बयान हैं, उनको जिम्मेदार माना गया?

श्री अर्जुनसिंहः अपना-अपना मत हो सकता है। मैंने कहा न कि उस पर मैं अभी कुछ टिप्पणी करना नहीं चाहता। जरा पूरा हो जाय उसके बाद जो कुछ कहना होगा कहूँगा।

प्रश्नः आपने पार्टी के शुद्धिकरण की बात कही थी तो इसके डिटेल्स क्या हैं?

श्री अर्जुनसिंहः शुद्धिकरण कोई पवित्र जल से नहलाने का मतलब नहीं है। शुद्धिकरण का तो मतलब यही है कि अगर हम असलियत को देखने की कोशिश करें और अपनी तरफ से कुछ कदम उठाए जैसा मैंने शुरू में कहा प्रजातंत्र में और क्या होता है, एक परस्पर विश्वास की बात रहती है।

प्रश्नः आपके सुझाव माने नहीं जा रहे हैं, तो क्या पार्टी के टूटने की संभावना है।

श्री अर्जुनसिंहः मेरी वजह से तो पार्टी के टूटने का सवाल नहीं है। लेकिन अगर सब लोग मिल बैठकर कोई ऐसा रास्ता निकालने की कोशिश नहीं करेंगे तो पार्टी के बुरे हाल होंगे। जैसे अभी हुए हैं। इससे भी बदतर हो सकते हैं। और आने वाले लोकसभा चुनाव में तो अब जो चुनौती है, वह केवल काँग्रेस पार्टी की नहीं है। अब जो चुनौती है इस देश के सिद्धांतों और आदर्शों को पैदा हो गई है जिनके आधार पर ये गणतंत्र बना था, आजादी के बाद सेक्युलरिज़्म है, डेमोक्रेटिक सिस्टम है, सोशल जस्टिस हैं, ये सब चीजें अब दाँव पर लगी हैं। देश के जिन आदर्शों में विश्वास हट गया तो फिर तो दूसरा हिन्दुस्तान होता, वो तो नहीं होगा जो 15 अगस्त, 1947 को गठित हुआ था।

प्रश्नः हालाँकि गोवा में हाल ही में बी.जे.पी. की जो मीटिंग हुई उसमें सेक्युलरिज़्म को मान्य किया गया?

श्री अर्जुनसिंहः खैर, अब सेक्युलरिज़्म की बात कहने लगे बहुत बड़ी बात है। अभी तक तो उनके मुँह से सेक्युलरिज़्म शब्द निकलता ही नहीं था दूसरों को शेडो सेक्यूलर जरूर कहते थे, वो खुद क्या हैं इससे तो सेक्युलरिज़्म का कहीं छुवाता दूर-दूर तक नहीं था। लेकिन अब कहने लगे हैं, लेकिन ये भी दिखावा है।

प्रश्नः भविष्य में आपका जो कार्यक्रम है, वह अभी भी उसी आधार पर है। आप अपने बलबूते पर कुछ करना चाहते हैं?

श्री अर्जुनसिंहः मैं अकेला तो कुछ नहीं कर सकता हूँ। लेकिन देश में काँग्रेस के बहुत से साथी हैं जो काँग्रेस को शक्तिशाली बनाने में और खतरों से बचाने में दिलचस्पी रखते हैं। इन सबका सामूहिक फैसला होगा। धन्यवाद।

सन् 1996 के संसदीय चुनाव निर्णायक होंगे

अप्रैल, 1995 को भोपाल में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्न: आप ने आज सुबह की सभा में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह वर्ष देश के लिए निर्णायक वर्ष साबित होगा। निर्णायक से आप का मतलब क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: मेरा मतलब यह था कि अब से लेकर संसदीय चुनाव 96 में होंगे। यह चुनाव देश में निर्णायक होंगे, क्योंकि अगर साम्प्रदायिक और अलगाववादी शक्तियों का वर्चस्व नहीं कायम होगा और देश की जनता उन को नकार देगी तो भारत के भविष्य को उज्जवल बनाने में बहुत बड़ी सहायता होगी, और एक नए विकास का इतिहास भारत में बनेगा और यदि आम लोगों को भ्रमित करने में ये साम्प्रदायिक शक्तियाँ सफल हो गई तो मेरी यह मान्यता है, क्योंकि काँग्रेस पार्टी ही केवल इस देश में केन्द्रीय राजनीतिक शक्ति है, अगर उस का ह्रास होता है तो देश के बिखराब के खतरे बढ़ जाएँगे।

प्रश्न: दलित, पिछड़े और अल्प संख्यक लोगों के लिए आप की भावी रणनीति क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, मेरी रणनीति अलग से कुछ नहीं होगी। यह भ्रम कम से कम मुझे तो नहीं है और लोगों को हो तो मैं क्या कर सकता हूँ? काँग्रेस का अपना जो सोच और जो कार्यक्रम है। जब मैंने केन्द्रीय राजनीतिक शक्ति कहा, तो उसका तात्पर्य मेरा यही है कि सदैव काँग्रेस की नीतियों, कार्यक्रमों में समाज के, इस देश के हर वर्ग का पूरा-पूरा प्रतिनिधित्व रहा और उन के हितों की रक्षा करने का और आगे बढ़ाने का प्रयास रहा। किन्हीं कारणों से ऐसा सभी समझ रहे हैं। इस परस्पर विश्वास में कहीं कोई कमी आई है तो मायनार्टीज़ की तरफ से आई है, हरिजनों की तरफ से आई है, तथा पिछड़े वर्गों की तरफ से आई है। अब यह नितान्त आवश्यक है कि यह जो कुछ भी कमी है, इसे दूर किया जाए और फिर से काँग्रेस जो केन्द्रीय शक्ति है, उस को उस रूप में जिसमें सब का विश्वास हो, उस को प्रतिष्ठित किया जाए, मैं समझता हूँ कि यह हो सकता है। इस के लिए मैं अकेले रणनीति नहीं बना सकता। सबको मिल बैठकर बनाना होगा। इस तथ्य को स्वीकार कर के फिर जो कुछ किया जा सकता है, किया जाना चाहिए।

प्रश्न: आप जो मुद्दे उठा रहे हैं, विपक्ष के मुद्दे ही है। आप जो अभियान चलाएँगे, क्या उसमें विपक्ष को साथ में लेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, इस में विपक्ष को साथ में लेकर चलने का तो प्रश्न ही नहीं है। और कई लोग भी उस बात को कह रहे हैं, उस में कोई ऐतराज तो हो नहीं सकता। लेकिन उदारीकरण की नीति को बंद करना या उस को रिवर्स करना, ऐसा मेरा कतई सुझाव नहीं है और इसके पीछे मेरी कोई मंशा नहीं है। मंशा यह है कि भारत जैसे देश में कोई भी आर्थिक नीति की सार्थकता तभी प्रतिपादित होगी, जब देश के अधिकांश सर्वहारा वर्ग का, उन के हितों का इसमें कहीं न कहीं उल्लेख होगा। या जो कुछ भी होना है, उसमें इस बात का उन लोगों को विश्वास हो कि हमारे लिए भी यह हो रहा है, जिस को लिबरेलाइजेशन आफ ह्यूमेन फेस की संज्ञा दी जा रही है, यही बात है और तो किसी पक्ष - विपक्ष का तो प्रश्न है नहीं। यह बात मैं ही नहीं कह रहा हूँ, यह बात तो स्वयं प्रधान मंत्री कह रहे हैं।

प्रश्न: उत्तर प्रदेश में क्या आप नारायणदत्त तिवारी जी का साथ देंगे?

श्री अर्जुनसिंह: क्यों नहीं देंगे? नारायण दत्त तिवारी उत्तर प्रदेश में काँग्रेस को मजबूत करने की भरसक कोशिश कर रहे है। बिलकुल उस में साथ देंगे।

प्रश्न: मुलायम सिंह सरकार को किन बातों में सहयोग देंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, उस बारे में एक निर्णय काँग्रेस वर्किंग कमेटी का हो गया है। काँग्रेस प्रेसीडेण्ट इस बारे में निर्णय करें, यह मैं जरूर कहना चाहूँगा। उन का निर्णय हो जाने दीजिए।

प्रश्न: निर्णय टालने की बात हो रही है। हमेशा होता है कि जो थोड़ा विवादास्पद मामला होता है, काँग्रेस उस को छोड़ देती है और वह ठण्डे बस्ते में चला जाता है।

श्री अर्जुनसिंह: ठण्डे बस्ते में नहीं जाना चाहिए। वही तो मैं कह रहा हूँ।

प्रश्न: ठण्डे बस्ते में तो अब तक जाता रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: और काहे के लिए मैं उठा-पटक कर रहा हूँ यही न कि यही सब चीजें नहीं होनी चाहिए।

प्रश्न: आप के मुख्यमंत्री ने यहाँ मध्य प्रदेश के पिछड़े वर्गों को चौदह परसेण्ट रिजर्वेशन दिया, जो प्रेक्टीकली यह पिछड़े वर्ग के खिलाफ रहा, उनका कहना है कि हमारी डिमाण्ड सत्ताइस परसेण्ट की थी। इस आंदोलन में क्या आप सहयोग देंगे?

श्री अर्जुनसिंह: कैसा सहयोग?

प्रश्न: क्या पिछड़े वर्ग के नाम का केवल उपयोग होता रहेगा? क्या एक्चुअली कोई सहयोग उन्हें नहीं मिलेगा?

श्री अर्जुनसिंह: इतनी जानकारी मुझे नहीं है, अगर कोई काम करने के लिए तय हुआ है, तो वास्तविक रूप से होना चाहिए।

प्रश्न: भोपाल में राजमणि पटेल की अध्यक्षता में पिछड़ा वर्ग सम्मेलन हुआ था, वहाँ भी सत्ताइस परसेण्ट की माँग उठाई गई थी।

श्री अर्जुनसिंह: उस कारण से या कुछ अन्य कारणों से, फिफ्टी परसेण्ट से ज्यादा वाली बात उठाई गई थी।

प्रश्न: आप को ऐसा नहीं लगता है कि आप के जो मुद्दे हैं, उसमें आप अकेले पड़ गए हैं? आपको काँग्रेस के अन्य नेताओं का पूरा-पूरा सहयोग नहीं मिल रहा है।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, नहीं, यह आपको गलतफ़हमी है।

प्रश्न: कुछ लोगों का ऐसा मानना है कि आपके विद्रोही तेवर से भाजपा को लाभ होगा?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, भा.जा.पा. को हमारी वजह से मजबूती मिले, यह तो फिर ऐसी बात हो गई जिस का कोई आधार नहीं है। भा.ज.पा. को मजबूती मिलती तो उत्तर प्रदेश में सरकार बना न लेती।

काँग्रेसी मर्यादाओं में रहकर बोलें

21 अप्रैल 1995 को भिलाई/रायपुर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्न: एक ओर श्यामाचरण जी का यह आरोप है कि जो लोग आप के साथ जुड़ रहे है, आम सभा और रैली में शामिल हो रहे हैं, वो लोग आप से उपकृत होंगे या आप से उपकृत हो चुके है, इस कारण।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, मैं व्यक्तिगत टिप्पणियों पर तो कभी कोई टिप्पणी करता नहीं, लेकिन श्यामाचरण जी ने इतनी बड़ी टिप्पणी कर दी है, मैं केवल उन को स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि वो भी अगर इस बात को याद रखते तो बहुत अच्छा रहता, क्योंकि काँग्रेस ने उनको बहुत उपकृत किया था। स्वयं इंदिरा गाँधी ने उपकृत किया था। क्या सलूक किया, उन्होंने श्रीमती इंदिरा गाँधी के साथ? काँग्रेस के कार्यकर्ताओं को इस प्रकार से कहना, काँग्रेस के किसी व्यक्ति को शोभा नहीं देता है। और खास तौर से ऐसे लोगों को तो बिलकुल नहीं, जिन्होंने स्वयं किन्हीं भी मर्यादाओं में बँध कर काम नहीं किया हों।

प्रश्न: कुछ लोग जो आप के साथ लम्बे समय से जुड़े रहे, उनको आपके साथ आने से जैसे रोक लगा दी है और वे इसलिए नहीं आ पा रहे हैं। ऐसा लगता है कि वो लोग आप से आप के कार्यक्रम से कटते जा रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, कोई व्यक्तिगत जुड़ने और कटने का सवाल नहीं है। सवाल यह है कि काँग्रेस से न कटें और काँग्रेस के प्रति उनका जो कर्तव्य है, वह पूरा होता रहे। मुझसे जितना दूर रहना है, उतनी दूर रहें, मुझे इस में कोई ऐतराज नहीं है। लेकिन अगर वहाँ से कट जाएँगे तो फिर जनता से भी कट जाएँगे। फिर तो वही हाल होगा, जो आज महाराष्ट्र में हुआ है। सब जुड़े तो थे, क्या हुआ वहाँ पर?

प्रश्न: आप के समय में यहाँ पाँच सौ बिस्तर वाले अस्पताल के निर्माण का कार्य शुरू हुआ था तो नाम को लेकर विवाद चल रहा है। आप ने एनाउंस किया था कि डा. अम्बेडकर की स्मृति में रखा जाएगा और सरकारी दस्तावेजों में वो इंदिरा गाँधी के नाम पर है।

श्री अर्जुनसिंह: यह दस्तावेजों की बात तो मुझे नहीं मालूम। अच्छा हो दस्तावेजों को सामने रख कर कोई हल निकाल लिया जाए।

प्रश्न: आप को याद आता है, कि आप ने कोई ऐसा एनाउंसमेंट किया था।

श्री अर्जुनसिंह: मैं जल्दी भूलता थोड़े ही हूँ। जो लोग इसको श्रीमती इंदिरा गाँधी बनाम अम्बेडकर बनाने के पक्ष में हैं, उसका तो कोई मतलब है ही नहीं। और न उसमें मेरी कोई दिलचस्पी है।

प्रश्न: प्रदेश शासन के बारे में कल राहुल जी ने टिप्पणी की है कि इस सरकार का परफार्मेंश अच्छा नहीं है। आप भी ऐसा मानते हैं क्या?

श्री अर्जुनसिंह: मैंने कहीं ऐसा पढ़ा नहीं।

प्रश्न: सभी अखबारों में छपा है।

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो समझता हूँ कि अण्डर द सरकम्स्टांसेज़ परफ़ार्मेंस ठीक है। अब हर चीज तो परफ़ेक्ट नहीं हो सकती है।

प्रश्न: क्या कारण है कि यहाँ के पी.सी.सी. चेयरमेन आपके अस्तित्व को नकार रहे है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इन सब फालतू चीजों के लिए मेरे पास समय नहीं है। यह मुबारक हो उन्हीं को। जो कहना है सो कहें।

प्रश्न: भिलाई से पहले रायपुर में सभा होने वाली थी। अचानक भिलाई में सभा करने का क्या कारण है?

श्री अर्जुनसिंह: ऐसा तो नहीं था। वो तो चूँकि राजनाँदगाँव, दुर्ग और रायपुर को मिला कर था। इसलिए भिलाई, लोगों ने सोचा कि यह सेण्टर में है और तो कोई बात नहीं है। अब तो जो आर्गेनाइज़ करते हैं, यह उनका फैसला है। धन्यवाद।

काँग्रेस का विकल्प

8 मई, 1995 को दिल्ली में पत्रकार वार्त्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्न: वर्तमान परिस्थिति में क्या काँग्रेस पार्टी, देश को सही नेतृत्व प्रदान कर सकती है?

श्री अर्जुनसिंह: इस समय जो परिस्थितियाँ देश में उभरकर आई हैं, उन सब से आप सब भलीभाँति परिचित हैं। हम लोगों के मत में परिस्थितियाँ कुछ ऐसा मोड़ ले रही हैं, जिनसे इस देश में उन शाश्वत मूल्यों को, आदर्शों को और उन संवैधानिक मान्यताओं को एक चुनौती खड़ी हो गई है। एक प्रजातांत्रिक देश में इन परिस्थितियों में प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक राजनीतिक दल, अपनी-अपनी भूमिका निभाता है। भारत में काँग्रेस पार्टी एक केंद्रीय राजनीतिक शक्ति रही है और अभी ऐसा कोई विकल्प नहीं दिख रहा है जो उसका स्थान ले सके। इसलिए यह नितांत आवश्यक है कि काँग्रेस पार्टी की ओर से इन परिस्थितियों में उन चुनौतियों का सामना करने के लिए कोई सोची समझी कार्यप्रणाली, कार्यक्रम, नीति का निर्धारण हो। ये दुर्भाग्य की बात है कि इस दिशा में जिस प्रकार से हमें बढ़ना चाहिए, वह नहीं हो रहा है और एक तरह से सारे देश में काँग्रेस की साख के सामने एक बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह लग गया है।

प्रश्न: जो काँग्रेस का मौजूदा स्वरूप है वह कब तक बना रहेगा?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इसके बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता। यह तो जो काँग्रेस कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में कार्यकर्ताओं की ओर से जो बातें आएँगी उनके आधार पर आगे का कार्यक्रम तय होगा।

प्रश्न: आज की स्थिति में चुनाव होते हैं, तो काँग्रेस की स्थिति कैसी रहेगी?

श्री अर्जुनसिंह: ये अटकलबाजी तो मैं नहीं करना चाहता लेकिन आज की जो स्थिति है, वह आप भी समझते हैं कि काँग्रेस को अच्छे परिणाम नहीं मिलेंगे।

Q: Will you form a new political party?

Shri Arjunsingh : Certainly not what is on our agenda. I must tell you very frankly. That the decision what is to be done, will be taken by the Congress workers who will assemble there in Delhi. Their decision will be their's not mine or anybody's else.

प्रश्न: जो भी Situation अभी इस वक्त बन रही है और दो ग्रुप आमने सामने खड़े हैं, क्या इसका फायदा किसी को होगा? जिसको आप खत्म करना चाहते हैं वही फोर्सेज़ इस वज़ह से ताकत में आ जाएगी?

Shri Arjunsingh : Our view in this point is very clear. That if the correctives that are desirable, are taken and the issues that have become of conern to the people of this country, are addressed. The Congress will regain its strength and will defeat B.J.P. That is what is desirsble and I think the Congress workers of this country have the capacity to do it.

Q: Do you have faith in the present leadership?

Shri Arjunsingh: I am only requesting you because all of us are conditioned that we address to

leaders ask them to tell us what they want to do. I think this is what has in my view, distorted many things in Congress party. That is why I am not saying anything what is to be done. I have full faith in the Congress workers of this country who will assemble from all states of the country and they will take this issue.

प्रश्न: क्या आप अभी भी अपने आपको काँग्रेस का नेता मानते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: मैं नेता नहीं मानता, कार्यकर्ता हूँ।

प्रश्न: नेता के रूप में आप किसको स्वीकार करते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, नेतृत्व के बारे में एक स्टेज़ तक काँग्रेस के सर्वमान्य नेता होते थे, जब तक राजीव गाँधी थे, वे हमारे नेता थे। अब एक कलेक्टिव लीडरशिप है अगर उस कलेक्टिव लीडरशिप को कोई मानता है तो माने, नहीं मानता है तो नहीं माने, मैं तो कलेक्टिव लीडरशिप मानता हूँ।

प्रश्न: यह जो परिपाटी है, इंदिरा जी और राजीवजी के टाइम पर भी चली, तब भी एक ही लीडर, एक ही प्रधानमंत्री और वही पार्टी अध्यक्ष हुआ करता था, यह कोई नई बात नहीं थी?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इंदिराजी हो, राजीव जी हो या पंडित जवाहरलाल नेहरू हों, सवाल यह है कि इन लोगों की इनसे कोई तुलना तो है नहीं, अगर आज मैं इंदिरा गाँधी की तुलना में बनने की कोशिश करूँ तो मेरा दिमाग ही खराब माना जाएगा और तो कोई दूसरा उसका अर्थ निकलेगा नहीं।

प्रश्न: काफी समय बाद पार्टी के इलेक्शन जो हैं वे राव साहब ने ही करवाए?

श्री अर्जुनसिंह: हाँ, इसलिए सब इलेक्टेड को नामीनेटेड कर दिया।

Q: Is Charismatic leader is neccssary in democracy?

Shri Arjunsingh : If you are equating a charismatic leader with democracy. You are saying it.

Q: No, I am saying if the charismatic leader is there then the democracy goes.

Shri Arjunsingh : That is what I am saying. I think you have totally misread the whole thing. Charisma does not mean negation of democracy. All the leaders who had charisma from Pt. Jawaher Lal Nehru, Shastri ji, Indira ji, Rajiv ji, they were all subject to all the democratic belongs in this country. Mrs. Gandhi was defeated, what the great democracy do you want, Rajiv Gandhi was defeated and yet they were able to rise up again.

प्रश्न: राजस्थान से 35 विधायक होते हैं, जिन्होंने तिवारी जी का समर्थन किया, लेकिन आज जब आप जयपुर पधारे तो आपसे मिलने के लिए सिर्फ चार विधायक आए, ऐसी स्थिति क्यों बन रही है? खुलासा क्यों नहीं हो रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: किसी दूसरे के व्यवहार के बारे में मैं उत्तर नहीं दे सकता।

प्रश्न: 19 मई के सम्मलेन में पार्टी अध्यक्ष को, कार्यकर्ताओं को संबोधित करने के लिए आप क्या इनवाइट करेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: सभी ए.आई.सी.सी. मेम्बर्स को इन्विटेशन है।

प्रश्न: क्या श्री नरसिंहराव जी को भी?

श्री अर्जुनसिंह: He is a member of A.I.C.C.

प्रश्नः आपको ए.आई.सी.सी. का इलेक्टिव मेंबर से हटाकर नामिनेटेड मेंबर क्यों बनाया गया?

श्री अर्जुनसिंहः आप किस हिस्ट्री में इन्ट्रेस्टेड है?

प्रश्नः आप संसद में विराजे हुए थे और 10 घरानों को 200 करोड़ रु. नरसिंहराव सरकार ने दिया खुले बाजार के नाम पर, तो उसमें राजीव गाँधी जी की, इंदिरा गाँधी जी की सारी नीतियाँ एक तरफ. करके दस घरानों को दो सौ करोड़ रुपया दिया गया?

श्री अर्जुनसिंहः कब कैसे दिया गया?

प्रश्नः दस घरानों को लोन दिया गया है, अखबारों ने छापा उसको?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, उसका पूरा संदर्भ नहीं है तो मैं उसका उत्तर कैसे दूँ सब के बारे में मैं पहले पता तो कर लूँ।

प्रश्नः आम नागरिकों की यह सोच है कि जो हस्ताक्षर अभियान, रैलियाँ निकाली गई, इससे क्या इंका को मजबूती मिलने की आशा है?

श्री अर्जुनसिंहः अवाम में, इंका को मजबूती ही मिलेगी इससे।

प्रश्नः काँग्रेस साहब, एक प्रश्न मैं आपसे करना चाहता हूँ। आप अर्जुन सिंह जी के साथ बहुत अर्से से हैं और राजस्थान का दौरा कर रहे हैं, अगर आपके खिलाफ भी disciplinary action लिया गया जो शायद लिया जाए, तो आप क्या करेंगे?

श्री काँग्रेसः देखिए, मैं तो इन नीतियों के बारे में आज से नहीं तीन साल से कह रहा हूँ। एकानोमिक पालिसी की बात कहने वाला सबसे पहले मैं था। गेट के बारे में प्रधानमंत्री जी को लंबा नोट मैंने लिखा। मैंने कहा कि ये देश के हित में नहीं है। अपनी conditions पर ही उसको स्वीकार कीजिए, हमारे देश में अपनी सामर्थ्य को पैदा करने की कोशिश कीजिए। उसके बाद में जो चीज यहाँ नहीं हो, उसको बाहर से आप लाइए उसमें स्वतंत्रता है। इसको मैं आज से नहीं, मैं तो तीन साल से कह रहा हूँ। 1991 के उत्तरार्ध में मैंने सबसे पहले एक सभा में यह बात कही थी और प्रधानमंत्री जी को चिट्ठी भी लिखी थी और वे चिट्ठियाँ मैं रिलिज करूँगा। कम से कम दस-बीस चिट्ठियाँ मैंने प्रधानमंत्री जी को लिखी, उसकी प्राप्ति जरूर आती थी, मैंने उसका हिंदी अनुवाद करवा लिया है, मैं आप लोगों को दूँगा। इसके अलावा कई दफे जवाब ही नहीं आते थे, अंत में 28 दिसंबर को मैंने आपके (श्री अर्जुनसिंह के)इस्तीफे के बाद एक चिट्ठी लिखी थी, उसमें बतलाया था कि देश के हालात में आज क्या जरूरी है, मैं आपसे उम्मीद करता हूँ कि आप ये कीजिएगा और चूँकि आपने मेरे पत्रों का अभी तक जवाब नहीं दिया है, इसलिए मेरी मजबूरी है कि मैं ये पत्र प्रेस को रिलिज करवा दूँ। मैंने उस पत्र को प्रेस को रिलिज किया। नेशनल पेपर में वह छपा है। हमारे रिजनल पेपर में भी वह छपा है। अगर उस पर disciplinary action लेते हैं तो लें, मैं तो तीन साल पहले से यह बात कह रहा हूँ। मैं महसूस करता हूँ, काँग्रेस की हमारी पालिसी आजादी की लड़ाई के वक्त में जो थी, उससे आजादी हमें मिली और आजादी के बाद में हमने जो देश का निर्माण किया उसकी एक continuity रही है। अब उस continuity में ब्रेक लग गया है और जबरदस्त ब्रेक लगा है और उसका नतीजा यह है कि जनादेश जो काँग्रेस को मिला है, यह उसका नतीजा है। हम इस बात को बहुत पहले से कह रहे हैं।

प्रश्नः टाडा को खत्म करने की बात चल रही है, केंद्र सरकार नहीं चाहती कि टाडा खत्म हो, ये पेपर

में छपा है, आपकी क्या राय है?

श्री अर्जुनसिंह: मेरी राय में टाडा को समाप्त करना चाहिए और उसके स्थान पर चूँकि आजकल का जो माहौल है देश में, और अंतर्राष्ट्रीय जिसमें बहुत से ऐसे खतरे हैं जिनसे देश की रक्षा करनी पड़ती है तो सभी राजनीतिक पार्टियों से विचार-विमर्श करके उसका विकल्प बनाना चाहिए कि दोनों बातें हो जाएँ। देश की रक्षा भी की जा सके और सामान्य नागरिक को प्रताड़ित किए जाने की गुंजाइश भी न रहे, उससे एक कदम आगे मैं यह कहता हूँ कि टाडा के दुरुपयोग की जो घटनाएँ हुई हैं जिनके सामान्य नागरिकों को ही सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है, उसकी जाँच होनी चाहिए और जो लोग उस के दुरुपयोग के जिम्मेदार हैं उनके खिलाफ कानूनन कार्रवाई होनी चाहिए।

प्रश्न: कश्मीर के बारे में आप कुछ कहना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: कश्मीर में चुनाव होना सैद्धांतिक रूप से तो बहुत अच्छा है लेकिन आज वहाँ कि परिस्थितियाँ उसके अनुकूल है कि नहीं, उसको जरा गहराई से देखना चाहिए और तभी वह कदम उठाना चाहिए।

प्रश्न: अभी आपने कहा कि टाडा खत्म होना चाहिए आपकी राय में ये माँग पाकिस्तान वाले कर रहे हैं कि टाडा खत्म होना चाहिए तो इसी बात को लेकर लोग कह रहे हैं कि इसे पाकिस्तान की जीत माना जाएगा तो क्या इस समय ऐसी बात कहना ठीक होगा?

श्री अर्जुनसिंह: अगर भारत कुछ सही कदम उठाता है, जो सब लोगों के मत में सही कदम है, इससे किसी दूसरे देश का क्या लेना-देना। क्या हम किसी के मुखापेक्षी होकर इस देश में काम करेंगे।

प्रश्न: जम्मू कश्मीर में चुनाव कराने के बारे में आपकी क्या राय है?

श्री अर्जुनसिंह: अभी सरकार ने सभी को कनविन्स तो किया नहीं इस मामले में।

प्रश्न: तमिलनाडु में मुख्यमंत्री और राज्यपाल के बीच जिस तरह से विवाद चल रहा है...

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, यह जो संवैधानिक जो पद है उनके बीच में इस प्रकार का विवाद नहीं होना चाहिए, इतना तो मैं कह सकता हूँ। लेकिन उसके बारे में और कुछ ज्यादा टिप्पणी करना मैं समझता हूँ उचित नहीं है।

प्रश्न: सेटेलाइट चैनल का कितना राजनीतिक उपयोग होगा?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, means of communication बंद कमरे में तो नहीं कर सकते। देश की जो सांस्कृतिक धरोहर है, वह सुरक्षित रहे और जो सामान्य जनों की धारणाएँ और मान्यताएँ हैं उन पर थोड़ा सा ध्यान रखना चाहिए बाकी जिसको कहते हैं एक information age तो down हो गया है इसको सेट तो नहीं किया जा सकता है।

इंदिरा काँग्रेस का भविष्य उज्ज्वल

29 मई, 1995 को इन्दौर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्न: दिग्विजय सिंह जी ने कहा है कि राव काँग्रेस ही असली काँग्रेस है। क्या आप इससे सहमत हैं?

श्री अर्जुनसिंह: कौन क्या कहता है उससे मेरा कोई लेना देना नहीं है।

प्रश्न: दिग्विजय सिंह जी ने कहा है कि मध्य प्रदेश की राजनीति में इंदिरा काँग्रेस कोई मायने नहीं रखती?

श्री अर्जुनसिंह: एक बात समझ लेना चाहिए। कौन क्या कहता है वो अपनी जगह है। वो उनका दृष्टिकोण है। काँग्रेस के इतिहास में पहली बार जो कार्यकर्ता काँग्रेस का है, उसने स्थिति का जायजा लेकर और निर्णय किया है। इसमें किसी का न योगदान है न कोई लेना है। वो फैसला 19 मई को दिल्ली में कार्यकर्ता सम्मेलन में किया गया। अब कुछ लोग काँग्रेस कार्यकर्ताओं को कीड़ा मकोड़ा समझते रहे तो इसके लिए असली नकली की खोज जारी है, जहाँ काँग्रेस कार्यकर्ता हैं वही असली काँग्रेस है और वह हैं अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी (इंदिरा)।

प्रश्न: आप मान रहे हैं उनका प्रभाव आपके साथ है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं कुछ नहीं मान रहा हूँ। बस इस मेरे तेरे में ही तो कबाड़ा हुआ है। मैं जो कह रहा हूँ, तो मैंने साफ ही कहा है। देख लीजिए आप उसको।

प्रश्न: उससे देखकर लगता नहीं है कि कई लोगों के स्वार्थ जुड़े हुए हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए थोड़ा बहुत Difference of vision किसी चीज को देखने से हो सकता है। जो लोग इंदिरा काँग्रेस में शामिल हैं, वो अच्छी तरह जानते हैं जो बात मैंने पहले भी की है, वह केवल एक औपचारिक बात नहीं है, वो प्रभाव जो उद्देश्य और दिशा निर्देश काँग्रेस कार्यकर्ताओं ने लिया, भले ही किसी बारे में थोड़े से मतभेद हो सकते हैं, उसको नजरदांज करके कोई नेता काम नहीं कर सकता। ये मोटी बात है।

प्रश्न: शुरू में जो कॉमप्लिकेशन कंफ्यूज़न हैं कि आपका ध्येय राव सरकार को गिराने का नहीं है, तो एक अलग तरह से दल बनाने का क्या मतलब है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए सरकार का गिरना न गिरना जुड़ा हुआ है मध्यावधि चुनाव से और मध्यावधि चुनाव का मतलब है, भारतीय जनता पार्टी के हाथ में सत्ता सौंपना। इस संदर्भ में वो बात कही और उसका कोई संदर्भ नहीं है।

प्रश्न: अभी तक 'भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस', के नाम से जो काँग्रेस है, वो भारतीय काँग्रेस (ई) के नाम से पंजीकृत है। तो अब तक आपने उसके खिलाफ क्यों नहीं बोला? क्या कभी आपने ये मुद्दा उठाया?

श्री अर्जुनसिंह: इसका फैसला तो अब इलेक्शन कमीशन करेगा। मुझे तो कुछ नहीं कहना है। जो कुछ था वह इलेक्शन कमीशन में पेश कर दिया गया है। शायद आप लोगों को भी इसका महत्व समझ में नहीं आ रहा है। जैसा हमारे नेताओं को नहीं आ रहा है। काँग्रेस की जो हालत पिछले तीन साल में जिस गर्त में पहुँचा दी गई है, उसकी जानकारी तो सबको है। उसमें मैं आपको कोई नई प्रक्रिया तो नहीं बता सकता हूँ। जो देखा है सबने देखा है। एक रास्ता तो ये था कि सब चुपचाप अपने घर बैठे रहते। अंतिम रूप से अगले लोकसभा के चुनाव में काँग्रेस का सफाया हो जाता और फिर ढूँढते रहते कारण कि क्यों हो गया, किसलिए हो गया? क्या सही था क्या गलत था? बजाय उसके इस देश के काँग्रेस कार्यकर्ताओं ने उसका मूल्याँकन किया कि हम काँग्रेस को बर्बाद नहीं होने देंगे। और इसलिए सब इकट्ठे हुए किसी ने उनको भाड़ा नहीं दिया। किसी ने उनके लिए कोई प्रबंध नही किया। अपने इंतजाम करके करीब 70 हजार लोग आए और 9 घण्टे बिना खाए पिए लगातार वहाँ बैठे रहे। चर्चा में भाग लेते रहे। ये जाहिर करता है कि एक नई स्फूर्ति और जिसको कहते है सेल्फ कांफीडेंश, काँग्रेस के कार्यकर्ताओं ने स्वयं अर्जित किया और अब वो इस पार्टी को गर्त में नहीं

जाने देंगे ऐसा उनका संकल्प है। उस संकल्प के साथ हम लोग भी जुड़े हैं। जो कुछ कर सकते हैं करने की कोशिश करेंगे। आपको बात इसलिए समझ में नहीं आती कि ऐसा कभी पहले हुआ नहीं है। आदेश होता था कि ऐसा किया जाय, वैसा किया जाय, कुछ लोग इस आदेश का पालन करते थे कुछ लोग उस आदेश का पालन नहीं करते थे।

प्रश्नः सांसदों से शपथ पत्र लिए जा रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंहः कुछ भी हो उससे क्या? मैं तो वही कह रहा हूँ? ए.आई.सी.सी. की बात है। शपथ पत्र और हस्ताक्षर लिए जा रहे हैं। ए.आई.सी.सी. का टर्म ही खत्म हो गया। अब उनके दस्तखत से क्या मतलब है। पी.सी.सी. का टर्म खत्म हो गया, ए.आई.सी.सी. का टर्म खत्म हो गया। स्वयं नरसिंहराव जी का टर्म खत्म हो गया।

प्रश्नः कश्मीर के बारे में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए कश्मीर के मामले में एक चीज तो स्पष्ट है। जब इलेक्शन कमेटी में यह बात सामने आई कि कोई सुविचारित नीति काँग्रेस के प्रधानमंत्री की कश्मीर के बारे में नहीं है। हर घटना से जुड़कर कोई न कोई एक्शन होता है, वो तात्कालिक उसका प्रभाव रहता है और फिर छः ह महीने के लिए सब भूल जाते हैं। इसी वजह से आज कश्मीर की ये हालत हुई है। और मैं इसलिए कह रहा हूँ मैंने पहले भी कहा है मैं उसको दोहराना चाहता हूँ। पिछले करीब तीन साढ़े - तीन साल में एक दफे भी बार-बार रिक्वेस्ट करने के बावजूद कश्मीर के मामले में केबीनेट में कोई बहस नहीं हुई। कोई पालिसी नहीं रखी गई, तो जब इस तरह का अनिश्चितता का वातावरण है वो भी ऐसे संवेदनशील क्षेत्र के लिए जिसके बारे में मुझे कुछ कहने की जरूरत नहीं है। जिसे सारा हिन्दुस्तान और दुनिया जानती है और हम लोगों ने फैसला किया है, तीन दिन के लिए हम लोग कश्मीर जा रहे हैं। हमारा प्रतिनिधि मण्डल वहाँ जा रहा है, 6, 7, 8 जून को।

प्रश्नः वहाँ चुनाव की स्थिति है क्या?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए जाने से पहले मैं कोई राय नहीं देना चाहता।

प्रश्नः आपकी पापुलरिटी कम हो रही है, आपको लगता है ऐसा कुछ?

श्री अर्जुनसिंहः आप मेरी फिक्र क्यों कर रहे हैं? मैं न अपनी पापुलरिटी से प्रभावित हूँ, और न किसी पद से, चिंतित हूँ काँग्रेस बनी रहे यह बड़ी बात है। आज उत्तर प्रदेश की जो हालत है वह आप सब जानते हैं, बिहार में काँग्रेस तीसरे नंबर पर पहुँच गई, कर्नाटक में तीसरे नंबर पर पहुँच गई, महाराष्ट्र में जो हालत है, वह देख ही रहे हैं। वहाँ तो सरकार ही बन गई बी.जे.पी. से मिलकर। यही हाल गुजरात का है। उसकी चिन्ता तो होनी चाहिए।

आर्थिक नीति में गरीबों के उत्थान का ध्यान हो

15 जुलाई, 1995 को मद्रास में तमिल साप्ताहिक कुमुदम के मुख्य संवाददाता श्री बालू के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Q: What is the impact of your leaving the congress party? Are the congress workers serious to form new party?

Shri Arjunsingh : First question says that there has been no great impact by our leaving the Congress party is it true? Well, I think what we are seeing everywhere is that the impact is very great on rank and file of the congress workers and in very large numbers they are responding to the initiative taken by the congress worker themselves on 19th May 1995 at Delhi, Talkatora, convention. Since this convention was of the congress workers themselves and they had taken the decision. It is not as if we took the decision and we are asking them to follow it. They have taken the decision, so the workers feel total involvement and that is why they are taking initative in all parts of the country and they want to restore the position of the congress party in the eyes of the people which has got down in the last two and half years.

मध्यप्रदेश में इंदिरा काँग्रेस को उचित स्थान मिलेगा

25 जुलाई, 1995 को नई दिल्ली टी.वी. के श्री श्रीनिवासन के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

प्रश्न: आपने रीयल लाइफ में इतने केरेक्टर्स देखें हैं। आपकी रीयल लाइफ में सबसे खतरनाक फ़िल्म कौन-सी रही?

श्री अर्जुनसिंह: रीयल लाइफ में? किसी की भावनाओं को आहत करना जरूरी है क्या?

प्रश्न: हमारे दर्शक भी तो देखें आप क्या कहना चाहते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: सब लोग अपने-अपने motivation से काम करते हैं, उसमें किसी को इंगित करना शायद ठीक नहीं होगा और ब्लेम अपने काम से कभी छिप नहीं सकते। मैं तो ऐसा किसी की ओर इशारा नहीं करना चाहूँगा।

प्रश्न: आज तक आपको सबसे अच्छा compliment क्या लगा?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए compliment तो मित्र और अन्य लोगों से मिलते ही हैं और उनका बहुत बड़ा मूल्य होता है। लेकिन जो मुझे हर दम याद रहता है वह compliment भोपाल में एक लेबर कॉलोनी में मिला, इस लेबर कॉलोनी को शहर के बाहर बसाया गया था। मैं वहाँ गया था और देखा था कि वहाँ उन लोगों के लिए आवास, सब चीज की व्यवस्था उचित नहीं थी, उसको उचित करने का निर्देश मैंने दिया और यह माना कि यह बातें हो जाएगी। मैं तब मुख्यमंत्री था। एक हफ्ते बाद उस कैंप से एक वृद्ध व्यक्ति हमारे घर पर आया और उसने कहा कि आपने उस दिन आकर ये-ये बातें कही थी, उसमें से केवल दो बातें हुई हैं, एक तो हम लोगों को अनाज मिलने लगा है और दूसरी वहाँ से एक बस चलने लगी जो शहर में कभी आना होतो वहाँ स्टापेज़ बन गया। बाकी कोई चीज नहीं हुई। मुझे बेहद तकलीफ हुई और मैंने उसी समय उसके सामने ही जो हमारे कमिश्नर थे, उनका मैंने Suspension order दिया। वह क्या जाने की इसका क्या मतलब है और कमिश्नर को यह काम करना था, यह भी उसको नहीं मालूम। लेकिन उसकी निगाहों से मैंने यह देखा कि उसको इस बात का अहसास हो गया कि जो कुछ काम नहीं हुआ उसके लिए किसी को जिम्मेदार ठहराया गया है। बाकी और कुछ नहीं समझ सकता था वह और उसकी वह निगाह compliment

तो नहीं लेकिन बहुत blessing की थी बाकी तो हम लोगों को compliment रोज बरसात की तरह मिलते हैं।

प्रश्नः आपकी नजर में खूबसूरती क्या है? Ideal beauty क्या है?

श्री अर्जुनसिंहः यह वैसे तो बहुत फैमस नहीं है, Beauty is basically poise and self-confidence, जिनसे यह रिफलेक्ट हो action से, character से असली beauty तो वही है क्योंकि नेचर तो संतुलन पर ही स्थापित करता है, जो स्वाभाविक हो, संतुलित हो वही सुंदर है।

Q: What is the programme of Indira Congress?

Shri Arjunsingh : You see, we are holding first national level demonstration on the 9th of August before Parliament and subsequent to that, this demonstration will be held in all the districts of the country and that will take place on 19th of August. And on 20th August we will be holding rallies in all the State capitals which will be the birth day of Shri Rajiv Gandhi and the masses pledge will be taken to implement the policies and programmes which were laid down in our manifesto which was drafted by him in 1991, and how for we have gone and how for we have not gone and also to focus attention on the fact that four years after his assasination the conspiracy behind this thruster react is yet to be unravelled.

Our membership drive is on, because we have decided to hold organisational, election also by the end of October, or early November. Our organisational election will be over then we will have our regular session.

Q: How do you feel in this regard that party base in Madhya Pradesh, which is your Home State, is not as strong as is could be. You think is it correct.?

Shri Arjunsingh : Well, I think so far as party base in the State is concern, which can be measured only when the elections to Parliament are held. I think that will prove demonstratively that the party has a very solid backing there and even now the public response and response of the Congress workers are overwhelming to say realist. So I don't see any occassion to say that we are anyway weak in Madhya Pradesh.

Q: Mr. Tiwari is going to Uttar Pradesh early next month?

Shri Arjunsingh: Yes, on the forth, fifth and sixth we are going to Mathura, Agra, Firozabad, Buland Shahar.

Q: What is your agenda?

Shri Arjunsingh: It has been turned as a Vikas Yatra and focus will be on the local problems of the State and of the National level.

Q: Would you like any meeting with regional parties in Uttar Pradesh?

Shri Arjunsingh: We won't be meeting anyone, there is no occassion to meet anyone. Our party programme will be public rallies, public meetings, workers meetings, I don't think

any other party figure in it.

Q: I mean quite categorical in terms of alliance, coalition something or that decision will be taken much later?

Shri Arjunsingh : Yes, much later, there is nothing on that level at the moment.

इंदिरा काँग्रेस के चुनावी मुद्दे, घोषणा पत्र से पता चलेंगे

1 अगस्त, 1995 को जी.टी.वी. के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

प्रश्न: पहला सवाल है कि बी.जे.पी. सोच रही है कि किसी भी वक्त चुनाव हो सकते हैं। जनता दल का कहना है कि छः महीने बाद चुनाव हों, आपकी पार्टी कब चुनाव मानकर अपनी तैयारी कर रही है?

श्री अर्जुनसिंह: सामान्य तौर से चुनाव मार्च, अप्रैल में होने चाहिए क्योंकि यह पहले ही बात कही गई थी कि मई जून में चुनाव मौसम की वजह से असुविधाजनक होता है, इससे एकाध महीने पहले होने चाहिए। हम लोग यही मानकर चलते हैं कि मार्च, अप्रैल में होगा।

प्रश्न: आपकी चुनावी तैयारियाँ क्या हो रही हैं?

श्री अर्जुनसिंह: अभी तो हम सारे राज्यों में संगठन की इकाइयों का गठन कर रहे हैं और साथ ही साथ हमारी Membership की तैयारी चल रही है, उसके बाद अगस्त के आखिर तक Membership होगी फिर संगठन के चुनाव होंगे जो नवंबर तक पूरे हो जाएँगे। उसके पश्चात् चुनाव की बात शुरू होगी क्योंकि संगठन का ढाँचा सारे देश में खड़ा हो जाएगा। लेकिन अभी भी साथ ही साथ हमारी गतिविधियाँ चल रही हैं। खासतौर से जन आंदोलन जो चलेंगे। नौ अगस्त से शुरू होकर उनसे एक जन चेतना पैदा करने के लिए कुछ मुद्दों पर और कुछ ऐसे विषयों पर जिन पर हमारा विश्वास है कि वे देश के लिए आवश्यक है और जनमत उस पर बनना चाहिए।

प्रश्न: काँग्रेस में जो फूट पड़ी है उससे मतदाता का विश्वास बिल्कुल उठ गया और मतदाता बी.जे.पी. की ओर देख रहे हैं। एक पार्टी है जो सत्ता में आ सकती है।

श्री अर्जुनसिंह: ऐसी बी.जे.पी. को गलतफहमी हो सकती है और बी.जे.पी. के जो समर्थक हैं वह ही ऐसा सोच सकते हैं लेकिन मैं समझता हूँ इस देश की जनता, सभी राजनीतिक पार्टियों से ज्यादा समझदार है और निश्चित रूप से जब चुनाव होंगे जिस वक्त तब तक ये मुद्दे बिल्कुल स्पष्ट होंगे कि देश में हमें एक साम्प्रदायिक वातावरण पैदा करना है या सौहार्द का वातावरण पैदा करना है। हमें आपसी टकराव से दूर रहकर एक स्वस्थ राजनीति की परंपरा कायम करनी चाहिए जिसमें समाज का हर वर्ग, हर जात, हर धर्म के मानने वाले लोगों का एक बराबर की हैसियत से उसमें भागीदारी हो सके। यह बी.जे.पी. कभी नहीं कर सकती है और अंततः इसी मुद्दे पर आज भले ही कितनी बढ़-चढ़कर बातें हो, देश की जनता फैसला उसी पर करेगी।

प्रश्न: एक स्थिर पार्टी का जो दावा था काँग्रेस का वह खत्म हो गया है और लगता है कि काँग्रेस का बिल्कुल सफाया हो गया है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, स्थिर पार्टी से मतलब अगर यह है कि पूरी तरह से अकर्मण्य और पूरी तरह से जड़ पार्टी बनना चाहिए इससे तो अच्छा है कि वह खत्म हो जाए। लेकिन जब तक चुनाव होंगे आप देखेंगे

कि काँग्रेस का एक नया स्वरूप उभरकर सामने आएगा और निश्चित रूप से काँग्रेस अपनी उस पुरानी परम्परा के अनुसार देश की जनता के सामने सेवा और संघर्ष करने के लिए तैयार होगी।

प्रश्नः कुर्सी पाने के लिए काँग्रेस को तोड़ा गया और क्या आपको लगता है कि कुर्सी पर अकेले के दम पर पार्टी काबिज हो सकती है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, कुर्सी के लिए काँग्रेस को तोड़ने का तो प्रश्न ही नहीं, कुर्सी के लिए कोई कार्रवाई नहीं की गई है। कुर्सी बचाने में ही जिनकी दिलचस्पी है, ये बात सामने आने पर काँग्रेस के कार्यकर्ताओं ने यह फैसला लिया और हममें से बहुत से लोग हैं जो कुर्सी छोड़कर आए हैं तो फिर तोड़ने का क्या सवाल है? वह तो बैठे ही थे, बने रहते कौन-सी हमारे ऊपर आफत आई थी। तिवारी जी वर्किंग कमेटी के मेंबर थे। यू.पी.सी.सी. के प्रेसिडेंट थे। सवाल यह नहीं कि कौन कहाँ बैठा है। सवाल यह है कि देश किधर जा रहा है और काँग्रेस पार्टी का स्वरूप विकृत होकर कहाँ जा रहा है, यह काम उसको सुधारने के लिए है और यह बात समझना जरूरी है कि यह काम भी हमने और तिवारी जी ने नहीं किया अपने मन से। यह काम सारे देश से जो कार्यकर्ता हैं 19 मई को दिल्ली में इकट्ठे हुए उनका फैसला है। यह उनकी सोच है, उनके अंतःकरण की यह बात है, इसलिए सबको तो कुर्सी नहीं मिलेगी वहाँ जो साठ-सत्तर हजार लोग आए उनको कौन सी कुर्सी मिलेगी। लेकिन वे काँग्रेस से जुड़े रहे और काँग्रेस का बिखराव देखकर ही उन्होंने कदम उठाया अब सबसे हम कहते जा रहे हैं, अकलियत से कह रहे हैं, गरीबों से कह रहे हैं, युवकों से कह रहे हैं।

दिल्ली के अखबारों में न छपे उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, आप जरा दौरे में हमारे साथ चलिए और वहाँ देखिए कि लोगों की तरफ से क्या प्रतिक्रिया है। उससे मुझे मतलब है और मुझे पूरा विश्वास है कि यह स्थिति अनुकूल बनेगी काँग्रेस के लिए और सांप्रदायिक शक्तियों को, जातिवादी शक्तियों को परास्त किया जाएगा।

प्रश्नः आपकी पार्टी यदि सरकार में आती है तो पहला काम क्या होगा?

श्री अर्जुनसिंहः अब हमारा मेनीफेस्टो जो रिलिज होगा तब आप देख लीजिएगा। मेनीफेस्टो बन रहा है।

प्रश्नः आपकी पार्टी किसको प्रधानमंत्री बनाना चाहेगी?

श्री अर्जुनसिंहः यह तो जो सांसद चुनकर आएँगे वे ही तय करेंगे, उनके मन के मुताबिक होगा।

प्रश्नः आपको और एन.डी. तिवारी जी को सशक्त दावेदार माना जा रहा है प्रधानमंत्री पद का।

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, ये तो खामखा की बात है न वे दावेदार हैं और न मैं हूँ। यह फैसला संसद के सदस्य करेंगे।

प्रश्नः वोटर्स को लुभाने के लिए चुनावी नारे क्या दिए जाएँगे?

श्री अर्जुनसिंहः अब वह समय आने दीजिए, नारे तो नहीं दिए जाएँगे, मुद्दे जरूर सामने लाए जाएँगे लेकिन अभी इस वक्त तो प्रीमेच्योर है सब।

प्रश्नः यूनीफॉर्म सिविल कोड का एक बड़ा मुद्दा माना जा रहा है। बी.जे.पी. ने इसे अपना मुद्दा बना लिया है वह कहती है इसे हम लागू करेंगे? काँग्रेस पार्टी का इस बारे में क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, यह प्रश्न ऐसा नहीं है जिस पर एकदम से कोई कानून बना दिया जाए। ऐसे मुद्दे जो लोगों के निजी ख़यालात और उनके पसर्नल ला से संबंधित होते हैं इन पर एक तरफा कानून नहीं बनाया जा सकता है। जब तक सबको विश्वास में लेकर उनको उसके लिए राजी करके चर्चा करके ये

वातावरण बनेगा कि सब लोग इसमें राजी हैं तभी ऐसे कानून को लागू किया जा सकता है। थोपा नहीं जा सकता और हम लोग भी थोपने के पक्ष में कतई नहीं हैं।

प्रश्न: कहीं इसलिए तो नहीं कि मुस्लिम वोट अपनी तरफ करने के लिए?

श्री अर्जुनसिंह: जी नहीं, यह तो बी.जे.पी. सोचती है कि अब मंदिर का विषय चला गया, बाकी सब चीजें चली गई, तो अब सिविल कोड का विषय लेकर वही टकराव और वही तनाव का वातावरण पैदा करके वे वोट लेना चाहते हैं हमको इससे क्या मतलब है? हम ऐसी बात क्यों करेंगे?

प्रश्न: कहा जा रहा है कि सुशील शर्मा का जो कांड हो गया। वे भी काँग्रेस के थे इसके लिए माना जा रहा है कि इससे काँग्रेस की छवि बिगड़ेगी?

श्री अर्जुनसिंह: खैर इसमें शक नहीं है कि यह बहुत जघन्य अपराध हुआ है, और यूथ काँग्रेस के उच्च पदों पर रहने वाले व्यक्ति ने यह किया है उसका असर तो होगा।

प्रश्न: काँग्रेस दो भागों में बँट चुकी है, काँग्रेस (आई) और काँग्रेस (इंदिरा) तो उसमें हम ये मानते हैं कि आम वोटर को क्या पता चलेगा वह तो भ्रमित हो जाएगा कि मैं किसको वोट दूँ?

श्री अर्जुनसिंह: मैं आपसे कह रहा हूँ कि शहरों में बैठे लोग यह जो बात सोचते हैं कि वोटर भ्रमित हो जाएगा वोटर ऐसा कर देगा। यह Confusion वोटर के दिमाग में नहीं है यह जो आँकलन लगाते हैं, सर्वे करते हैं, उनके दिमाग में है, और इसका प्रमाण एक नहीं है आपको स्वयं मालूम है कि कितनी सर्वे रिपार्ट्स निकलती हैं ऐसा होने वाला है, वैसा होने वाला है और अंततः जब वोट पड़ते हैं वोटर फैसला अपना करता है तो मैं समझता हूँ कि कोई Confuse नहीं होगा। मुद्दे साफ होंगे उनका फैसला साफ होगा।

प्रश्न: हर पार्टी का कोई न कोई मुद्दा होता है तो ऐसा तो नहीं है कि काँग्रेस पार्टी के पास ऐसा कोई मुद्दा ही नहीं है जिनके द्वारा जनता को लुभाया जा सके?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो समय बताएगा और जनता को लुभाने का इरादा भी नहीं है, मैं समझता हूँ लुभाना गलत होगा। जो हमारी नीतियाँ हैं, कार्यक्रम हैं 19 तारीख को जो दस्तावेज पेश हुए थे राजनीतिक दस्तावेज और आर्थिक दस्तावेज उसमें काफी बातें लिखी हुई हैं वही रहेगी उसके अलावा भी कुछ रहेगा लेकिन चुनाव के लिए क्या रहेगा वह तो मेनीफ़ेस्टो से ही पता चलेगा।

आर्थिक उदारीकरण पर चर्चा जरूरी

20 अगस्त, 1995 को इंडिया टुडे के श्री जावेद अंसारी के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Q: Do you think that transparency was not observed in the agreement with foreign enterprenuers?

Shri Arjunsingh: You see, when you enter into an agreement which is so unequal and which,.... that transparency which is very important is... such decision making is deleberately bypass. All the objections raised by legitimate authorities finance, NMDC they are not answered but set right. A decision is taken a year ahead and only formalities are

observed subsequently. There is so much hatch in the final stages that a mendatory provision of the law that is, taking the prior permission of the state government before transfering a lease or entry into any agreement with the third party is ignored. Then what is the inference... that is there were concessions beyond all these things is left to the kind of situation and in the replies that came, I think to the general impression that the reply was silent on material point and evasing on every point. So this is what is that impression. I don't have that kind of proof that I can say look this is the documentary evidence. That all the attendence circumstances lead to only one conclusion...

Q: When this dicision was taken you were also a member of the cabinet?

Shri Arjunsingh : No, no you see, I was not a member of the cabinet when the decision in this case was taken and there is a lot of confusion also. These matter do not go to the full cabinet. They are placed before the cabinet committee on economic affairs of which I was never a member, any way. That is a fact point. This was decided in the cabinet this year in May 1995. I was never in the cabinet in 1995. They are saying that when the original decision of liberalisation was taken and the decision to open up certain facaulties for investment and resource mobilisation was taken, I was then a member. I don't deny that. But that decision did not include this kind of underhand dealing. That was not decision of the cabinet. Just having international competetive dealing and who ever is.... according to clear cut parameter laid down, there you just call up three parties and negotiate with them behind the curtain and one of them think is O.K. and you go ahead and do everything in such haste. That you can not call as a part of cabinet decision.

Q: Will P.A.C. will make on enquiry in this case?

Shri Arjunsingh : Well, I think there is an enquiry and the Public Account Committee could, if it so decide, atleast come out with certain aspects of the agreement. I don't know whether the PAC is going to go into it or not.

Q: Is Madhya Pradesh invoved in this case?

Shri Arjunsingh : Yes, certainly, in Madhya Pradesh particularly.

Q: What is the role of M.P. Government in this?

Shri Arjunsingh : Well, Madhya Pradesh Government was never consulted as it should have been. But I hope now that all the facts have become public knowledge. The government's stand on certain policies are known and they tried to protect the interest of the people of the State. Thank you, verymuch.

उदारीकरण पर विवाद

21 अगस्त, 1995 को बिजनेस टुडे के श्री प्रसून पारिजात के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Q: What are the issue on which you have raised objection on Beladila controversy?

Shri Arjunsingh : Well I think it was very well reported in the press, Parliament has discussed,. it in detail. What can I say to it?

Q: But do you think the government have banned several rules to...

Shri Arjunsingh : The undue haste and lake of transparency alongwith misrepresentation of facts to get all this deal approved itself shows some extrenious factors unrelated to public sector. Having become more important.. and this is the resson why it would be in the interest of the governemnt itself to wait till the public accouns committee examine the whole issue and submit its report to Parliament. So that no one can say that undue haste still remains the only motive of the government. I think rest all that everything has been said in Parliament.

Q: Do you think that the government will be able to handle this controversy properly?

Shri Arjunsingh : Well, I can not speak on behalf of the government What it will be able to do or not be able to do.

Q: But as a senior congress man what you say?

Shri Arjunsingh : You see the difficulty is that the entire process of liberalisation has been given a round image. Because of these actions of the government in case after two, where there neither transparency nor accountability is observed and the Prime Minister does not seem to be aware that these are two factors which go a long way in sustaining government action.

Q: Do you think this will become a major political issue in the coming election for the congress as well as for the opposition?

Shri Arjunsingh : It could be, why only this, the other things which will also become the issue in the election this will add one more to it.

Q: Do you think that it could be a minor stand behind this issue.

Shri Arjunsingh : Well, I don't want to speculate, see the things that they don't want the Public Accounts Committee to look at it than all kind of inferences will be drawn and the experience of the past is indicative. Whether it was the security scam, PSU disinvestment, sugar scandal and you can count a lot of them. So this will also join the chain of improprities.

Q: What do you think will be the out come?

Shri Arjunsingh : Well, if there is a sense of fair play and no one has other compulsion, then I am sure

the truth will come out, and I hope that the government will act, accordingly. But as I said experience points to the opposite.

काँग्रेस की लोकप्रियता घटी

5 अक्टूबर 1995 को आब्जरवर के श्री जयकृष्णन के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

Q: Is it ironical that the BJP is also feeeling the impact of Enron?

Shri Arjunsingh: No, No, it is not ironical, you see BJP also is not all clear on it. They are trying to renegotiate on it. As we understand from the media. Now what does that mean? First they said that question of renegotiation does not arise, this is end of the matter. Then suddenly we hear that somebody has gone and met so and so. Now renegotiation is under consideration.

Q: Are they taking advantage of the situation?

Shri Arjunsingh : Well, I think why shoud they not take advantage of it.

Q: How much this will effect the political situation?

Shri Arjunsingh : Well, it will have some effect can't say how much. It is bound to have some effect. So far as the political question that you have posed out, the question of Mayawati's allegation. I think that is a political manoeuvring. It is part of the political manoeuvring. The BJP has capitalised on the ambitions of the BSP and has come about and there is nothing classical about it. Now what will be the impact of that, is little early to say, because in any case a very tenuous arrangement and this is likely to rupture on the slightest protest as we are witnessing, So let us wait for a month or two more to assess what will be the long range.

Q: Do you see some conspirancy in this?

Shri Arjunsingh: I think that is a classical family drama which used to happen in the middle ages, it is not happening under the 20th century of course character has changed and nothing about these change. I don't think any consipiracy involved in it.

Q: In Tamil Nadu again..

Shri Arjunsingh: Tamil Nadu, the same scence is there. The surveys that have come out lately do not point a very rosy picture about the regime of Mrs. Jailalita and Rajnikant is breath of fresh air. That will have its own effect. There is no doubt about it. How far he is prepared to go, that is not clear.

Q: Why do you call as breath of fresh air.

Shri Arjunsingh: Because he was not there on the scene.

Q: Now we come to Punjab

Shri Arjunsingh: Punjab is a very tragic case, because when Singh did succeed in tamming the terrorist and he did bring about a sense of normalcy in the state though the elections were not very representative, because they bycott it. I feel it is because of that lake of balance politically during the election. That his administration became too pervasive to criticism and corruption came at a very very high level. It was therefore, everyone to see and it is unfortunate that he is no more. But suppose the elections have taken place under his ledership, the congress could have lost this seat. Only because, that is the incidence, can acquire.

Q: Some people are sayng that congress will fight again not because of you. They say the Akali Dal and BJP are coming togehter. Now because they are right in touch.

Shri Arjunsingh: I don't think that will happen. And I don't think that this is the begining of terrorism that way obtain their say two years ago. Yes, there is a sense of insecurity again, and the state needs strong leadership. I will say the country need strong leadership. Actually what is happening is that practically on the periphery of the country. Forces inimical to the country are niggling away and we are just watching you can't manipulate a country like India. You can maniputlate 10 people, 20 people and cares before them and all that. but you can not manipulate a country and what is happening in the north east. I think it is worst than what is happening in Kashmir? The army which is the strongest force for the protection of the state of Kashmir, itself having a doubt,that Pakistan had inducted foreign forces, there, alright people don't talk about it publicly, but however so much said that is enough.

Q: What prospects do you visualise about BJP coming to power?

Shri Arjunsingh: No no, that is immaterial whether it witnesses anybody's individual argument, I can't be talking against the interest of the country. and a strong centre is not something which has the BJP's monopoly, that is what the congress party has always stood for. Somebody wants to compromise and safe his own position at any cost. This is what is happening.

Q: Do you think BJP would ride to power?

Shri Arjunsingh: BJP will not ride to power, from my point of view for two simple reasons. One their only strong card was the religious card which is no longer relevant. They themselves are now saying well we will keep this on a back burner. They tried it in Mathura, they tried it in Kashi. And this is the aftermath of the Babri Masjid demolition. If you follow totally what happened electorally after that in all their strong holds, where they had their governments, which they were thinking would

return back to power, because they were dismissed, they say political rebound, but the opposite happened, in Himachal, Madhya Pradesh, Rajasthan and U.P., They did not get a majority.

Q: In Gujrat, Maharashtra.

Shri Arjunsingh: This is the post bat. This is post bat because, of what was happening in those states.

Q: You are locally dominating

Shri Arjunsingh: Yes, exactly, but that does not mean the communal party into power there, it is because of the amicable record of those two state governments and also Andhra Pradesh and also Karnataka that this thing happened. And we were percived as being soft this is what was percived there. The minority did not vote and also the weaker sections. In search of multinational and this and that consumer items. You see when these things becomes so obvious, the man on the street for whom all these things are beyond, how does he reacts.

Q: And the second is?

Shri Arjunsingh: And the second is, they don't have any coherent policy. They are reacting to everything. Economicaly they are reacting that instead of all this let us have swadeshi, they have not defined where, will be the lines be drawn. How will swadeshi and in what manner and to what extent it will replace liberalisation. On any other issue, you tell me what is the policy of the B.J.P. There is no policy.

Q: पर जो आपने कहा है रीलीज़न और स्वदेशी....

Shri Arjunsingh: Not on Swadeshi, I am saying lack of any obvious concerete conherent policy.

Q: लेकिन एक जगह आप पढ़े तो they say the congress reacted.

Shri Arjunsingh: There may be issues but they don't decide policy. I mean policy and issue of Enron is quite different thing. Had they laid down any policy on foreign investment? I have not seen, you have seen, that I don't know.

Q: But Sir, foreign investment as far as the layman is concerned is Enron..

Shri Arjunsingh: I think, that will be too simplicity suppose tomorrow something else has to be done, what does the BJP have to change. I don't know.

Q: O.K. Sir, now let us take up the third thing..... ऐसे सिनेरियो में आपका क्या रोल है?

Shri Arjunsingh: What is my role. I have no role for the national front. My role is to strengthen and consolidate our congress party led by Shri Narayan Dutta Tiwari.

Q: नहीं, what is your policy?

Shri Arjunsingh: No, our policy as we have said that question of reliance and all those things that is what you mean, is not something which we are considering at the moment at all. It is not on our agenda. On our agenda at the moment is to consolidate the party, which is being done, and I think by the end of October or November this process

will be completed, when we will be completing our elections also.

Q: You say you will do it alone.

Shri Arjunsingh: No, I am talking about my priority Now I am only saying this that by the end of November our organisational elections will be completed, that will be the consolidation of the party. That is our first priority. Then when the elections come, in the mean time we are also surveying the scene state to state about present electoral scenerio.

Q: But you are open to alliance.

Shri Arjunsingh: No, that is not something we are not open to, we tried to go it as we are, if we are strong enough, but that is the question, we will consider and decide only late.

कश्मीर में निष्पक्ष चुनाव कराने के पक्ष में हैं हम

17 अक्टूबर 1995 को रायपुर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्न: एक सवाल जो सबसे पहले पूछा गया था कि आपकी पार्टी लोकप्रिय नहीं हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, दो स्तर पर यह प्रश्न हैं। एक तो काँग्रेस के मैदानी कार्यकर्ताओं का जो सवाल हैं। वहाँ तो सारे भारत में हर प्रदेश में बहुत ही उत्साहवर्धक सहयोग हैं जो संगठनात्मक ढाँचा था, वो इस महीने तक सारे देश में तैयार हो जाएगा। अक्टूबर के आखिर तक और अगले दो ढाई महीने में जनता के बीच जाकर जो उनका दृष्टिकोण हैं, जो उनकी बात हैं, उस पर हम पूरा ध्यान केन्द्रित करेंगे और मुझे तो आशा हैं कि जिस प्रकार का वातावरण हैं, उससे लगता है कि जनसमर्थन भी हमको इसी प्रकार से मिलता रहेगा। अब आप लोग उसका मापदण्ड किसी विधायक या मंत्री या सांसद को मानते हैं। मैं नहीं मानता इतना ही फर्क हैं हमारे दृष्टिकोण में।

प्रश्न: अभी के हालात में क्या कश्मीर में चुनाव होना चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ कि चुनाव कश्मीर में हो इसके तो हम पक्षधर हैं, लेकिन चुनाव किसलिए होता हैं, इसको भूल नहीं जाना चाहिए। चुनाव होते हैं मतदाताओं को निर्भीकता से अपना मत व्यक्त करने का अवसर देने के लिए। अगर निष्पक्ष चुनाव नहीं हो सकते, तो संगीनों के साए में हुआ चुनाव प्रजातांत्रिक पद्धति का पोषक नहीं बन सकता, ये मेरा कहना हैं। अगर परिस्थितियाँ ऐसी बना दी जाय कि सब लोग निर्भीक होकर मतदान कर सकें, तो चुनाव जरूर होना चाहिए।

प्रश्न: क्या समस्याओं से निपटने के लिए सरकार की कोई स्थाई नीति नहीं है?

श्री अर्जुनसिंह: नीति तो कोई नहीं हैं, ये मैं कई दफे कह चुका हूँ। अब रवैया तो यह हैं कि आज कोई घटना होगी तो तीन दिन तक एक रवैया होगा, पाँचवे दिन कोई दूसरी घटना होगी तो इस घटना की पृष्ठभूमि में कोई तीसरा रवैया होगा। जब तक कोई स्थाई नीति न बने कि हम किस प्रकार से वहाँ की समस्याओं का समाधान करना चाहते हैं। क्या उसकी परिधि होगी? उस परिधि के अन्दर कौन-कौन सी बातों को रखा जायगा? किस प्रकार से उस पर चर्चा होगी? तब तक कैसे कहा जाय कि क्या रवैया रहेगा?

प्रश्नः अभी आप कह रहे है कि जो भी न्यायिक निर्णय हो उसे लागू करना चाहिए। अभी कुछ देर पहले आपने कहा जो परंपरा चली आ रही हैं। वहाँ पर यह काम नहीं कर सकती। अयोध्या के बारे में जो चीज चली आ रही हैं। वहाँ आप कहेंगे कि न्याय की बात को माननी चाहिए और तमाम तरह की बात आप कह रहे हैं कि परम्परा और न्यायिक निर्णय को ध्यान में रखना चाहिए दोनों चीजें क्या विरोधाभासी नहीं है।

श्री अर्जुनसिंहः कतई विरोधाभासी नहीं हैं। ये अयोध्या में न्यायिक प्रक्रिया आज से नहीं शुरू हुई हैं। इस न्यायिक प्रक्रिया को शुरू हुए लगभग 40-45 वर्ष हो गए। यह तो भारतीय जनता पार्टी ने न्यायालय के भीतर से इस विषय को उठाकर चौराहे पर ला दिया। यह सोचकर कि चौराहे पर लाने से उनको वोट मिल जाएगे। एक झटके में कुछ हो भी गया अब वो गले में फँसा हुआ हैं। अब क्यों नहीं बात करते क्योंकि इस देश के लोग चाहे वो किसी भी धर्म को मानने वाले हो, अतिवादी नही हैं, और अतिवाद के आधार पर वे कभी हिन्दुस्तान में सफल नहीं हो सकते।

प्रश्नः आप अब तक के अपने प्रयासों और गतिविधियों के बारे में बताएगे?

श्री अर्जुनसिंहः अब देखिए, मैं तो बहुत सामान्य व्यक्ति हूँ। लेकिन मैं जो कुछ कर सकता हूँ करने की कोशिश कर रहा हूँ। संतोष व्यक्त करना या उसके बारे में कोई औचित्य व्यक्त करना यह और लोगों का काम हैं, मेरा नहीं हैं।

प्रश्नः आपकी पार्टी का मुकाबला किससे हैं?

श्री अर्जुनसिंहः बी.जे.पी. से।

प्रश्नः लोकसभा चुनाव के लिए कौन सा समय उपयुक्त रहेगा?

श्री अर्जुनसिंहः अब इसमें उपयुक्तता का क्या सवाल हैं। जून के पहले हो जाना चाहिए। बस हो गया।

प्रश्नः ऐसा समझा जाता हैं कि सरकारी मीडिया आपके खिलाफ है?

श्री अर्जुनसिंहः किसका सरकारी मीडिया। अब मीडिया के बारे में अपने से कहने में मुझे संकोच था। इसलिए यह बात मैंने कही थी, क्योंकि उपयोग और दुरूपयोग हवा में तो हो नहीं रहा हैं, जमीन पर हो रहा है।

प्रश्नः ऐसा समझा जा रहा है कि आपके काँग्रेस से निकलने के बाद विद्याचरण जी का राजनैतिक प्रभाव बहुत बढ़ गया हैं।

श्री अर्जुनसिंहः चलिए, मेरी तरफ से भी उनको बधाई दे दीजिएगा। लेकिन अगर ऐसा होने लगता तो बहुत से लोग न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच जाते। यह अपने कर्तव्य पर निर्भर करता है। किसी का भी हो चाहे वो विद्याचरण जी का हो या किसी का भी हो।

बाबरी ढाँचे के लिए माफ़ी नहीं माँगना घमण्ड की पराकाष्ठा है

28 नवम्बर 1995 को ग्वालियर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश —

प्रश्नः फिर से ये बात चल रही हैं। काँग्रेस में वापस जाने की चर्चाएँ चल रही हैं तो इसमें कितनी सच्चाई है?

श्री अर्जुनसिंहः आपने सुना नहीं, मैंने क्या कहा वहाँ आप नहीं थे शायद। देखिए सवाल यह है कि एकता किसके

लिए होना है। अर्जुनसिंह के लिए होना है, नरसिंहराव जी के लिए होना है या काँग्रेस और देश के लिए होना है। इसका फैसला कर ले पहले तब तो काम बन पाएगा। अगर अर्जुनसिंह के लिए होना है, तो अर्जुनसिंह अपनी बात कहेंगे, नरसिंहराव जी के लिए होना है तो वह अपनी बात कहेंगे और काँग्रेस और देश के लिए होना है तो वो बातें सबसे पहले आएगी जिनकी वजह से आज जो कि 'क्राईसिस आफ कान्फिडेंस' कहिए लोगों के मन में, काँग्रेस के प्रति जिसकी वजह से काँग्रेस का पराभव हुआ है तो उस पर विचार करना होगा। व्यक्तिगत इशू को लेकर नहीं होगा। दोनों का तो सौदेबाजी का सवाल हो सकता है और उसी पर समझौता हो जाय लेकिन मैं समझता हूँ कि काँग्रेस और देश के नजरिए से देखना उचित है, इंडिविजल नजरिए से नहीं।

प्रश्नः अभी मध्यप्रदेश में स्थानीय निकायों के चुनाव परिणम की जानकारी आ रही हैं। क्या लगता हैं इससे आने वाले समय में?

श्री अर्जुनसिंहः बाकी सबके नतीजे नहीं आएँ लेकिन कुछ संतोषजनक नतीजे आएँ हैं

प्रश्नः ये एकता की बात इसलिए चलती है कि आपकी पार्टी का चुनाव आयोग में कोई रजिस्ट्रेशन नहीं हैं, कोई चुनाव चिह्न नहीं है।

श्री अर्जुनसिंहः नहीं-नहीं इसकी वजह से नहीं चलती। उसको चलाने के पीछे दूसरा उद्धेश्य हैं। किसी तरह चीज को करते रहो तो वातावरण भ्रम का बना रहे। लेकिन वो सब चीज कारगर नहीं होगी।

प्रश्नः म.प्र. में अभी बिजली संकट चल रहा है?

श्री अर्जुनसिंहः बिजली संकट तो अच्छी बात नहीं है।

प्रश्नः क्या इसके लिए सरकार दोषी है?

श्री अर्जुनसिंहः जो भी सरकार रहेगी वो तो उसके लिए दोषी रहेगी लेकिन इसका असली कारण एक और भी है। इनकी बदइंतजामी जो हैं वो तो है ही। ये संयोग की बात है कि 85 के बाद से कोई भी बड़ा संयंत्र लगाने की योजना मध्यप्रदेश में शुरू नहीं की गई। और बिजली एक ऐसी चीज हैं जिसका उत्पादन जैसे स्विच दबाने से रोशनी होती है उस तरह से नहीं होता। इसके उत्पादन में जितना समय चाहिए उतना समय लगता ही लगता है, लेकिन फिर भी जो अभी कुछ नई योजनाएँ लेने की बात थी। क्या हो रहा हैं? दो साल हो रहे हैं। अभी एम.ओ.यू. साइन हुए हैं। अब ये मुझे नहीं मालूम कि यह किस स्टेज में हैं।

प्रश्नः लोगों का ये मानना है कि जो पूर्व सरकारें रही जैसे आपकी सरकार के समय एक बत्ती कनेक्शन दिए गए थे, उसके कारण स्थिति खराब हुई।

श्री अर्जुनसिंहः देखिए एक बत्ती कनेक्शन का कितना बोझ है। ये तो कहने की बात ठीक है कि दुरूपयोग रोकना चाहिए। लेकिन उसके एवज से इनकी पूरी हालत खराब हो गई। यह तो गलत बात है।

प्रश्नः गुजनीति में अपराधीकरण के बारे में ज्यूडिशियल कमीशन बैठा है, उस पर सी.बी.आई. इंक्वायरी भी हो रही है।

श्री अर्जुनसिंहः सी.बी.आई. इंक्वायरी के साथ ज्यूडिशियल इंक्वायरी भी बैठी है। पहले जब हुआ था मेरे ख्याल से ज्यूडिशियल इंक्वायरी भी appoint हुई हैं अपराधीकरण के सिलसिले में एपाइंट, हुई है। इंक्वायरी होना चाहिए।

प्रश्नः पिछले दिनों भारत सरकार ने जम्मू-कश्मीर में चुनाव कराने के संबंध में घोषणा की थी। उस संबंध

में आपका क्या विचार है?

श्री अर्जुनसिंह: यह जो जम्मू-कश्मीर के चुनाव का मामला है वह कोई और देश होता तो बहुत सीरियस इशू था। कश्मीर जैसे सेन्सेटिव मामले पर देश का प्रधानमंत्री सारे देश को गुमराह करें, ये कहकर कि यहाँ की स्थिति चुनाव के लायक है, चुनाव होना चाहिए। पर जिस संस्था चुनाव आयोग को संवैधानिक अधिकार है कि वह चुनाव कराएँ या न कराएँ उसके तीनों मेम्बर जाकर वहाँ से लौटकर ये कहें कि वहाँ चुनाव की स्थिति नहीं है। अब उससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है?

प्रश्न: क्या वे नहीं चाहते कि वहाँ चुनाव हो?

श्री अर्जुनसिंह: सवाल ये है कि कहा चुनाव होना चाहिए। नूराकुश्ती हो न हो वो अलग चीज है। फेक्ट तो यही है न कि स्थिति है, होने लायक, नही तो कहते नहीं। दोनों तो सही नहीं हो सकते और कश्मीर के मामले में इतनी ज्यादा गलत राय लोगों को देना कोई मामूली बात नहीं है और एक चीज आपने मार्क की होगी जो अक्सर लोग नजरदांज कर देते हैं। ये सरकार की तरफ से चाहे होम मिनिस्टर ने कहा हो, चाहे प्राईम मिनिस्टर ने, उन्होंने केवल बार-बार यही कहा कि वहाँ चुनाव होने की स्थिति अनुकूल है और यही कहते रहे और इलेक्शन कमीशन ने यह कहा कि फ्री एण्ड फेयर इलेक्शन नहीं हो सकते। दोनों में फर्क है और चुनाव तो फेयर एण्ड फ्री ही माना जाएगा और अगर कश्मीर में चुनाव फेयर एण्ड फ्री नहीं होगा तो आज जो स्थिति है वह बिगड़ जाएगी। इतना संकीर्ण मामला नहीं है कि उसका एक्सप्लेनेशन देकर टाल दें। ये सीरिएस मेटर हैं ठीक हैं कोई नहीं उसको देखता वह अलग बात है।

प्रश्न: चुनावों को देखते हुए आपकी पार्टी ने क्या-क्या तैयारी की है आपका मेनिफेस्टो वगैरह क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए मैं समझता हूँ कि हमारा मेनिफेस्टो दिसंबर के महीने में निकलेगा।

प्रश्न: आपने सम्मेलन में मध्यप्रदेश सरकार को बड़ी गम्भीरता से लिया है। इस तरह की घटनाएँ जो बढ़ रही हैं इससे आपको ऐसा नहीं लगता कि मध्यप्रदेश की सरकार भी आतंकवाद और माफिया राज में प्रवेश कर रही है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए सरंक्षण दे रहे हैं। ये तो मैं अभी नहीं कह सकता लेकिन जिस तरह से घटनाएँ हो रही हैं तो लोगों के मन में ऐसी शंका तो उठना स्वभाविक है। यहाँ भिण्ड, मुरैना और दतिया तो दिल्ली के काफी नजदीक हैं। काफी लोग आते जाते रहते हैं। वहाँ से जो रिपोर्ट हमको मिलती है, वो थोड़ी चिंता वाली है।

काँग्रेस को साम्प्रदायिक ताकतों की चुनौती

19 दिसम्बर 1995 को सिद्धार्थ नगर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश —

प्रश्न: काँग्रेस को साम्प्रदायिक ताकतों से क्या चुनौती है?

श्री अर्जुनसिंह: मैंने उनको बताया कि साम्प्रदायिक ताकतें खुलकर चुनौती दे रहीं हैं और काँग्रेस को भी उनके खिलाफ संघर्ष करना पड़ेगा। उसका एक उदाहरण मैंने दिया कि मुम्बई में वहाँ के सब लोगों ने मिलकर मुस्लिम समस्याओं पर चर्चा की और काँग्रेस से वे लोग क्या उम्मीद करते हैं। इसके बारे में भी अपनी राय रखी, हमने भी अपनी तरफ से काँग्रेस की क्या सोच हैं उसको उन्हें बताया। इस पूरी कोशिश में

हमारे वहाँ के साथी प्रमुखता से हिस्सा ले रहे है और 23 तारीख की शाम को बिना किसी कारण के और कोई उसका बेकग्राउण्ड नहीं था उनकी हत्या कर दी गई। सांप्रदायिक ताकतों की इस तरह की हरकतों से हम कभी पीछे हटने वाले नहीं हैं और आपको इस बात से आगाह करना चाहते हैं मैंने न बी.जे.पी. का नाम लिया, न एस.पी. का, न पॅवार का नाम। मैंने किसी का नाम नहीं लिया।

प्रश्नः अगर आप यह कहते हैं कि मैंने कुछ नहीं कहा, दोनों की रिपोर्ट का उल्लेख किया?

श्री अर्जुनसिंहः सांप्रदायिकता के खिलाफ कुछ कहा होगा। मुलायमसिंह और शरद पवार का सांप्रदायिक ताकतों से तालमेल था। यह जिक्र किया गया लेकिन मर्डर से संबंधित उन दोनों के बारे में नहीं कहा।

प्रश्नः देखिए, ग्रास रूट लेवल वालों से आपने बात की क्योंकि आज भी मायनारिटी के लोग कॉंग्रेस की तरफ नहीं है।

श्री अर्जुनसिंहः मैं कहाँ कह रहा हूँ कॉंग्रेस की तरफ है। लेकिन मायनारिटी के रूप में ग्रास रूट लेबल पर इस बारे में क्या सोच हैं। कॉंग्रेस पार्टी, कम्युनल फोर्सेस के खिलाफ लड़ाई लड़ सकती हैं। खास तौर से सोनिया जी के अध्यक्ष बनने के बाद। इसकी वजह से विश्वास जगा हैं।

प्रश्नः देखिए कॉंग्रेस पार्टी के जो सिद्धांत हैं, वह बहुत अच्छे हैं। लेकिन कॉंग्रेस पार्टी कुछ हद तक उस लेवल पर यहाँ भी काम नहीं करती हैं। मायनारिटीज के साथ आपकी पार्टी के अन्दर भी बड़ी नाइंसाफी चलती रहती हैं।

श्री अर्जुनसिंहः इसकी अलग से बात करने जैसी कोई बात नहीं हैं।

देश का पहला आर्थिक प्रस्ताव पंडित जवाहरलाल नेहरू ने देश के सामने रखा। वह आत्म निर्भरता के आधार पर था, अपने साधनों से ही देश की प्रगति करने का था, विदेशों से सहायता लेने के साथ-साथ उनके वशीभूत न हो जाय, यह सतर्क करने की बात उसमें थी। किसी अन्तर्राष्ट्रीय गठबन्धन के शिकार होकर हम देश की आजादी को कमजोर न करें, यह संकल्प उसमें था और औद्योगिक विकास की रूपरेखा थी जिसमें पब्लिक और प्रायवेट दोनों का उसमें समावेश था।

—श्री अर्जुनसिंह

12 जनवरी, 1996



1998

1996

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

काँग्रेस कार्यकर्ता जनता से जुड़े

11 जनवरी 1996 सागर में इंदिरा काँग्रेस के राज्य स्तरीय प्रशिक्षण शिविर में किए गए सम्बोधन के प्रमुख अंश—

इंदिरा काँग्रेस के साथियों, सन् 1947 के बाद 1948 में जो पहला आर्थिक प्रस्ताव पंडित जवाहरलालजी ने देश के सामने रखा वह आत्म निर्भरता के आधार पर था, अपने साधनों से ही देश की प्रगति करने का था, विदेशों से सहायता लेने के साथ-साथ उनके वशीभूत न हो जाय, यह सतर्क रहने की बात उसमें थी। किसी अर्न्तराष्ट्रीय गठबंधन के शिकार होकर हम देश की आजादी को कमजोर न करें, यह संकल्प उसमें था और फिर औद्योगिक विकास की रूपरेखा थी जिसमें पब्लिक सेक्टर भी, प्रायवेट सेक्टर भी सबका समावेश करके आगे बढ़ने की बात थी।

मैं कहना चाहता हूँ कि आज काँग्रेस के अन्दर बहुत कुछ रूपये पैसे का खेल हो रहा हैं। रूपये पैसे से मेरा मतलब साधन से हैं। हमसे तो आज तक किसी ने एक पैसा नहीं माँगा क्योंकि किसी कार्यकर्ता ने यह नहीं कहा कि हम किसी जिले में तब काम करेंगे जब आप हमको 500 रुपये दे दीजिए।

एक बात और जो मैं कहना चाहता हूँ वो यह हैं कि मध्यप्रदेश के संदर्भ में ये बात हमें साफ समझनी चाहिए कि काँग्रेस की पहचान यहाँ इस प्रदेश के सर्वहारा वर्ग की सेवा से बनी हैं। हरिजन, आदिवासी, पिछड़ा वर्ग, गरीब मजदूर भाई, कमजोर गरीब वर्ग के लोग, मछुआरे हैं न जाने कितने छोटे-मोटे हमारे समाज के लोग हैं इन सबको मिलाकर मध्यप्रदेश में काँग्रेस का एक नाम जुड़ा हैं। लोगों के बीच में सारे भारत का भ्रमण करके मेरे दिल और दिमाग पर असर हुआ है। इसका जिक्र करना चाहता हूँ। इस देश के करोड़ो-करोड़ों नौजवान चिंतित हैं, अपनी स्थिति से चिंतित है और देश की स्थिति से चिंतित हैं। उतावले हैं, कुछ करने के लिए लेकिन आखिर आगे किसी को तो बढ़ना पड़ेगा। आगे किसी को तो आना पड़ेगा। अगुवाई करनी होगी साथ में लेना होगा और वही पहचान बनाएगा, प्रत्येक जिले में।

मेरी आपसे प्रार्थना हैं कि इस जनवरी के महीने का मौसम भी अपने अनुकूल हैं, अतः जन सम्पर्क अपने-अपने क्षेत्रों में करें आपको दस लोग सुनने आए कोई फर्क नहीं। एक हजार सुनने आए कोई फर्क नहीं। काँग्रेस कहाँ है, काँग्रेस क्या करना चाहती है, काँग्रेस का वजूद क्या हैं, अस्तित्व क्या हैं हम काँग्रेस को जिन्दा रखना चाहते है। आपके मुँह से लोगों को सुनना चाहिए और वही एक फिजा और हवा बनाएगा और फरवरी के महीने में सारे देश में एक आन्दोलनों का सिलसिला शुरू होना चाहिए। मैं अपने काँग्रेस के सभी साथियों से कहना चाहता हूँ कि वोट जब पड़ेंगे तब पड़ेंगे। हम गिनेंगे बाद में। मध्यप्रदेश के हर जिले में एक हजार सत्याग्रही जेल जाने की तैयारी कर लें। आप सारे प्रदेश का माहौल बदल लें। आन्दोलन किसी ऐसी चीज से नहीं वो गरीब लोगों के हितों से जुड़ा हुआ

है, नौजवानों के हितों से जुड़ा हुआ है, माताओं बहनों के हितों से जुड़ा हुआ हो। फरवरी का महीना पूरे प्रदेश में जन आन्दोलन का महीना हो। और फिर देखिए उसका क्या नतीजा आपके सामने नजर आएगा। मत परवाह करिए कि कौन आपके साथ आता है कौन नहीं? न मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री को परेशान करने की जरूरत हैं, न किसी मंत्री को परेशान करने की जरूरत है। ये तो उस वक्त अंतिम रूप से परेशान हो जाएँगे जब प्रदेश में चुनाव के नतीजे आएँगे और हमें तो अपना काम करना है। उस काम में जुटना हैं। जहाँ तक बार-बार एकता की बात उठती हैं, मुझसे भी सवाल किए जाते हैं, आपसे भी पूछते होंगे, कानों में फुसफुसा जाते हैं, कि भाई ये तो सब एक हो जाना हैं सब एक साथ ही रहना है। हमारे मुख्यमंत्री तो सबसे कहते हैं कि भाई हम तो साथ ही चलेंगे। कहाँ चलेंगे यह पता नहीं हैं लेकिन चलेंगे साथ ही। मैं कहना चाहता हूँ काँग्रेस की एकता के हम लोग विरूद्ध नहीं हैं। आखिर अपने घर को कौन बर्बाद कराना चाहता हैं। हमें देश की कल्पना सामने रखने के लिए और देश किसी भी प्रकार से कमजोर न हो इसके लिए हमारा समूचा सोच और हमारें समूचे प्रयास आपके माध्यम से होने चाहिए। ये नितांत आवश्यक हैं। मध्यप्रदेश में आप अपने काम को अच्छी तरह से कर सकते हैं। मुझे विश्वास हैं क्योंकि ऐसे ही लोगों के सहारे एक संघर्ष और युद्ध लड़ा जा चुका हैं। जीता जा चुका हैं।

यहाँ मैं अंत में एक चीज कहना चाहूँगा। मुझे जगह-जगह से इस तरीके की शिकायतें मिली हैं जो एक अच्छी चीज नहीं हैं। राजनीतिक स्तर पर मतभेद हो सकते हैं, लोगों के साथ संघर्ष भी हो सकता हैं। लेकिन राजनीतिक संघर्ष को व्यक्तिगत स्तर पर ले जाकर के कार्यकर्ताओं को प्रताड़ित और पीड़ित करना उनको परेशान करना यह किसी राजनीति का अंग नही हैं। और कम से कम प्रजातांत्रिक राजनीति का अंग नही हैं। मध्यप्रदेश में दुर्भाग्य से ऐसी कुछ घटनाएँ हो रही हैं। यह बहुत अच्छी बात नहीं हैं इसके अच्छे परिणाम नहीं निकलेंगे।

मुझे अभी छिंदवाड़ा जिले की महिला काँग्रेस की अध्यक्ष बहन सुयशा जी ने एक पत्र दिया हैं। इसमें सच क्या हैं, क्या नहीं हैं, इसपर मैं कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता। लेकिन अगर वहाँ की बहनों को ये शक हैं कि छिंदवाड़ा जिले के युवक काँग्रेस के अध्यक्ष की हत्या की गई है और उसे आत्म हत्या बनाने की कोशिश की जा रही हैं, सच्चाई का पता लगाना नितांत आवश्यक हैं। छोटे-मोटे तरीके से बहुत जगह ऐसी बातें की जा रही हैं, शहडोल में हो रही हैं, छत्तीसगढ़ में हो रही हैं। सबसे बड़ी बात यह हैं कि यह सब एक तरफ से हो रहा हैं दूसरी तरफ ये लोग हैं कि अपने बलबूते पर ही काँग्रेस के झण्डे को उठाकर सब कुछ करने के लिए तैयार हैं। वे भारत की रक्षा करेंगे, वे ही मध्यप्रदेश की करेंगे और ये शिविर उस दिशा में एक मार्गदर्शक बनकर रहेगा। इस आशा और विश्वास के साथ मैं आप सबको इस शिविर में आने के लिए बधाई देना चाहता हूँ और यहाँ से लौटकर अपनी जिम्मेदारी इन्हीं संदर्भो में दोहराने के लिए संकल्प लेकर परिश्रम करने के लिए प्रार्थना करता हूँ। धन्यवाद, जयहिन्द।

मध्यप्रदेश में बिजली की कमी

जून 1996 को रीवा हेलीपेड पर आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश—

सभी आदरणीय साथियों, सम्मानित बहनों हम सब को आपके सामने दो-तीन बातें रखनी है और उसी के आधार पर इंदिरा काँग्रेस का कार्यक्रम आगे चलेगा। पहली बात तो यह है, कि किन्हीं भी परिस्थितियों में हमें जनता के हित से जुड़ना होगा।

दूसरी बात यह है कि संगठन में नए लोगों को आने के लिए प्रेरित करना जरूरी है। जितने हमलोग है, बुजुर्ग है, बुजुर्ग नहीं है तो यह मान लीजिए कि सयाने है। हमें यह सोचना चाहिए कि यह जो नई पीढ़ी है आगे आने वाली,

अगर इस समय उन को अवसर नहीं मिलेगा तो वे भी प्रजातांत्रिक युग में जन हित से जुड़ कर उस को सार्थक बनाएँ अन्यथा जो सेकण्ड लाइन आफ लीडरशिप है, वह नहीं बन पाएगी।

तीसरी बात है जो यहाँ विकास की बात आप ने कही। जैसे कि आवागमन और उद्योग की, यही मुख्य आधार है विकास के। मुझे अब कुछ फुरसत मिली है, क्योंकि किसी एक चीज से बँध कर आदमी बहुत-सी अनिवार्यताओं में उलझा रहता है। अब यह समय मेरे लिए, इस अँचल के और मध्यप्रदेश के उन मुद्दों के साथ आगे बढ़ने का है, जो सीधे मध्य प्रदेश के विकास से संबंध रखते हैं।

इस अंचल में दो प्रमुख योजनाएँ है। एक तो बाण सागर की जो एक तरह से समूचे अंचल के भविष्य की एक मात्र योजना है, जो भविष्य हमारा बना सकती है। इस योजना के कार्यान्वयन में काफी विलम्ब भी हो गया है। कई चीजों में वह योजना उलझ भी गई है। सब से पहले मेरा यह प्रयास होगा और मुझे उम्मीद तो है कि मध्यप्रदेश की सरकार और यहाँ के जो जनप्रतिनिधि हैं, उन का सहयोग इसमें मिलेगा कि इस योजना को जितना जल्दी हो सके अगले दो-तीन साल के अंदर पूरा करवाया जाए। इस से सिंचाई का भी जो लाभ है, वह स्पष्ट मिले और बिजली उत्पादन का लक्ष्य है, वह भी स्पष्ट है, धीरे-धीरे इस से बहुत-से ऐसे उद्योग भी शुरू हो सकते हैं, जो अभी इस अंचल में नहीं आए हैं। मेरा मतलब केवल सीमेण्ट के कारखाने से नहीं हैं। सीमेण्ट के कारखाने तो चूने के पत्थर जहाँ मिलेंगे, वहाँ आ कर लग जाएँगे और सौ, दो सौ लोग उस में काम करने लगेंगे। लेकिन अगर यहाँ सिंचाई हो जाए तो इतनी अच्छी जमीन है, हमारे इस अंचल की, कि उत्पादन के द्वारा जो आज कल आधुनिक बहुत-से उद्योग हैं, उन को लगाने से सुविधा मिलेगी और विद्युत का जहाँ तक सवाल है वह भी मिलेगी।

मध्यप्रदेश एक समय बिजली में सरप्लस था। उड़ीसा को, महाराष्ट्र को यहाँ से बिजली दी जाती थी। ग्रामीण विद्युतीकरण काफी व्यापक स्तर तक हो चुका है। कई जिलों में तो पूर्णतः हो चुका है। लेकिन जब विद्युत का उत्पादन ही नहीं होगा, तो यह सब चीजें तो सिर्फ दिखावे के लिए होगी। उत्पादन क्यों नहीं हो पा रहा है यह मेरी समझ में नहीं आता। एक जो, जिस को वर्क कल्चर कहते हैं, वो पूरी तरह कहीं नहीं दिखता। जितना कम काम करके, आँख झुका करके, जी चुरा करके काम चल सके, उतना कम काम करो। यह कोई नहीं कहे कि कुछ नहीं हो रहा है। लेकिन यह भी किसी को कहने का मौका न मिले कि बहुत कुछ हो गया है। अब इस क्रम को तोड़ना पड़ेगा।

इस क्रम को तोड़ने के लिए सब को मिल कर काम भी करना होगा। जहाँ आवश्यकता होगी तो संघर्ष भी करना होगा। इन योजनाओं को आगे बढ़ाने में जहाँ कुछ भी कठिनाई हो रही है, उस में पूरी तरह से सक्रिय होने का हमारा इरादा है। और यहाँ आने के पहले मैं जानता था कि ये रेल्वे लाईन की बात तो सब से पहले कही जाएगी, तो मैं नए रेल्वे मंत्री रामविलास जी पासवान से चर्चा कर के आया हूँ। उन को पत्र दे कर आया हूँ और मुझे पूरा भरोसा है, क्योंकि वो संयुक्त मोर्चा के मंत्री हैं। उन्होंने कहा कि मैं कोशिश करूँगा कि 15 अगस्त से रीवा से भोपाल तक की एक एक्सप्रेस ट्रेन चले।

मैंने उनको नाम भी सुझाया है, वह भी उन्होंने मान लिया है। इस एक्सप्रेस का नाम 'बाँधव एक्सप्रेस' होना चाहिए। देखिए, अगले महीने रेल्वे का बजट पेश होगा। मुझे उम्मीद है कि शायद उस में ही उसका समावेश हो जाएगा।

इसी तरह से बहुत-सी और चीजें हैं, जिन पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है और इस में इंदिरा कॉंग्रेस के लोग इस विषय में सोच कर रहे हैं, ये महत्वपूर्ण है। जहाँ तक स्थानीय समस्याएँ है, स्थानीय समस्याओं के बारे में मैं क्या कहूँ? अब तो स्वयं इस प्रदेश के मंत्री मण्डल के वरिष्ठ, कनिष्ठ और हर स्तर के जो मंत्री है, उनके भाषण ही पर्याप्त है यह बताने के लिए कि मध्यप्रदेश कहाँ से कहाँ पहुँच गया है? हम लोगों को कुछ कहने की जरूरत ही नहीं है। लेकिन कह कर वो अपना संतोष कर लें, यह उनके लिए है। हमें आप को मिल कर संतोष करने का सवाल

नहीं है। हमें तो कदम आगे बढ़ाना है, जो रूकावटें हों, उन रूकावटों को दूर करने के प्रयत्न हमें आपको करना चाहिए।

पानी की हालत, तो एक छोटी सी बात है, और यह बात भी अपनी जगह सही है कि हर व्यक्ति के लिए पानी का इन्तजाम सरकार नहीं कर सकती है, लेकिन इस दिशा में कुछ करने का इरादा या कोशिश की जा रही है अभी तो उस का कोई प्रमाण नहीं मिल रहा है। सतना में कल मैं ने पूछा तो उन्होंने कहा कि इस संभाग को सब से कम पैसा मिला है। जैसे यहाँ के लोग दस इंच जमीन फोड़ कर चुल्लू भर पानी ले कर पी लेंगे। आखिर यह प्राथमिक जिम्मेदारियाँ हैं और जो कुछ निर्णय हुए हैं कि पंचायतों को दे दो कुछ पैसा दे दो, हैड पंप के लिए पर पैसा नहीं दिया जा रहा है तो पंचायतें कहाँ से काम करा पाएँगी, नहीं करा पाएँगी।

इन समस्याओं के समाधान के लिए सब को प्रशासन से सहयोग भी लेना चाहिए और दवाब भी डालना चाहिए। केवल सहयोग आज कल लोग समझ नहीं पाते हैं, आज संघर्ष करना है। 28 जून को भोपाल में सारे प्रदेश के इंदिरा काँग्रेस के साथी आएँगे। अध्यक्ष महोदय ने घोषणा की है, 'मैं भी आऊँगा'। पार्टी के पुनर्गठन और उस के संबंध में जो बातें होनी है, हम सब मिल कर वहाँ करेंगे।

इतना ही मुझे कहना है। रीवा में आप सब साथी समन्वित रूप से काम करें। यह हमारा आप से विनम्र निवेदन है।

गुढ़ का चुनाव हम समझते हैं महत्वपूर्ण होगा। उसमें हम सब को सक्रियता से भाग लेने की जरूरत है और संयुक्त मोर्चा का ही कोई प्रत्याशी यहाँ से जीत कर जाए, इस को सुनिश्चित करने की जरूरत है।

आप सब बहनों को, भाइयों को बहुत-बहुत आभार। जय हिन्द।

प्रदेश में प्रजातंत्र की जड़ें गहरी हैं

सितम्बर 1996 को उज्जैन में काँग्रेस सेवादल के स्वयं सेवकों को उद्‌बोधन के प्रमुख अंश—

जिला काँग्रेस समिति के अध्यक्ष और यहाँ पधारे हुए सभी आदरणीय माताओं, भाइयों और बहनों इस समय जिन हालातों से देश गुजर रहा हैं, इसके बारे में हम आपसे कहना कुछ चाहते हैं। इसलिए नहीं कि आप जानते नहीं हैं, या आप वाकिफ नहीं हैं लेकिन इसलिए कहना मैंने अपना फर्ज समझा कि हमें धीरे-धीरे जनमत के निर्माण की ओर बढ़ना हैं। प्रजातंत्र में जितनी भी चीजें होती हैं, पार्टी बनती हैं, पार्टी में लोग होते हैं, पार्टी में लोग बोलते हैं, नवयुवक होते हैं, माताएँ और बहनें भी होती हैं। ये सब अपनी-अपनी जगह ठीक हैं। आज भारत में वो निर्णायक दौर शुरू हो गया हैं। और इसमें निर्णायक भूमिका जनमत की होती हैं। अगर हमने उस जनमत को ठीक तरह से जागृत नहीं किया, उसे आभास नहीं दिलाया, उसे परिस्थितियों से, मुद्दों से, कार्यक्रमों से, नीतियों से अवगत नहीं कराया तो फिर फैसला तात्कालिक कारणों से हो जाया करते हैं। और इसलिए अब मैं जहाँ-जहाँ भी जा रहा हूँ, मेरी यह कोशिश है कि अपने साथियों से भी और अवाम से उनका रूझान हम एक ओर खींच लें। जिस रास्ते चलकर बीसवीं शताब्दी के अंत होने तक भारत देश का इतिहास एक नई करवट लेगा।

एक तो यह कि हमने धीरे-धीरे अपने देश में प्रजातंत्र की जड़ों को गहरा किया इसमें दो राय नहीं है। अब भारत के अन्दर किसी भी व्यक्ति या व्यक्ति के समूह का यह काम आसान नहीं है कि वह हमारे प्रजातंत्र को पूरी तरह से उलट दें, उसमें हेर फेर कर दें या उसको खत्म करने की कोशिश करें। सारा देश खड़ा हो जायगा कोई भी अधिनायकवादी शक्ति भारत वर्ष में डिक्टेटरशिप नहीं ला सकती।

सांप्रदायिकता के आधार पर राजनीति करने वाले लोग आज भुलावे में नहीं डाल सकते। जैसा कि 3-4 साल

पहले उन्होंने किया था। अब न धर्म की बात चलेगी, न यात्रा की बात चलेगी और न रामरथ चलेगा। अब चलेगा तो लोगों की भलाई का काम, देश को मजबूत करने की बात, महँगाई को कम करने की बात, बेरोजगार हाथों को काम देने की बात, और देश के आर्थिक ढाँचे को मजबूत करने की बात। इनकी तरफ नजर उठाकर हमें देखना हैं, और कोशिश करना है कि उस तरफ क्या सही हैं, क्या गलत हैं वो लोगों के बीच में ले जाए।

आज सरेआम लोग कहते हैं कि राजनीति का अपराधीकरण हो गया है, अर्थात हम लोग भी अपराधी बन गए। मै जानता हूँ कि राजनीति में काम करने वाले जो बहुसंख्यक लोग हैं, वे अपराधी नहीं हैं। वे सामान्य लोग हैं, वे राजनीतिक प्रक्रिया में रहकर जो कुछ कर सकते हैं करने की कोशिश करते हैं। लेकिन अगर कुछ लोगों ने इस प्रकार का अपना शिकंजा कस लिया हैं, हमारे देश के प्रशासनिक तंत्र पर तो उससे छुटकारा तो दिलाना ही पड़ेगा।

इस देश की हालत को सुधारने के लिए हम किसी भी ऐसी बहस में नही पड़ना चाहते जो तनाव पैदा करें, आगजनी करें, कत्लेआम कराएँ, बच्चों को यतीम बनाएँ, माताओं को विधवा बनाएँ? ऐसा कोई नहीं हैं सब शांति चाहते हैं, सब अमन चैन चाहते हैं। लेकिन उनको ये दिखे तो कि जो लोग उनके सामने काम करते हैं राजनीतिक रूप से वो भी यह चाहते हैं। अगर हम ही उनको उल्टा पाठ पढ़ाने लगेंगे तो कैसे हमारी बात बनेंगी। इसलिए यह जरूरी है कि हम जनता के बीच में जाकर इन सब बातों को अच्छी तरह से उनके बीच में ले जाकर उनको जागृत करें। जनमत को मजबूत बनाए ताकि इस निर्णायक दौर में काँग्रेस, तिवारी जी के नेतृत्व में आने वाले चुनाव में बहुमत प्राप्त करें और फिर से ऐसे हालात बनाए जा सकें जिसमें की जो हमारे मूल्य समाज से गायब हो गए हैं जो हमारे आदर्श जो करीब-करीब लुप्त हो गए हैं, धर्मनिरपेक्षता के, प्रजातंत्र के, भ्रष्टाचार से रहित कार्य ये सब फिर काँग्रेस के नाम पर सामने हम ला सकें, क्योंकि अगर काँग्रेस इन चीजों को नहीं हासिल कर सकी, तो जनता जो इस देश की है, वो क्या करेगी?

हमको विरासत में मिला हैं गाँधी जी का आशीर्वाद जवाहरलाल जी की प्रेरणा, श्रीमती इंदिरा गाँधी की तपस्या और श्री राजीव गाँधी जी का एक जोश जो कि हौसला पैदा करते हैं। आज उसी के सहारे हमें आगे बढ़ना हैं और निश्चित रूप से अपनी जिम्मेदारी को पूरा करना हैं। उज्जैन इसमें सबसे आगे रहेगा। आप सब को आज के इस आयोजन के लिए धन्यवाद देता हूँ। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रेदशों में

अर्जुन की प्रतिज्ञा: न दैन्यं न पलायनं

17 फरवरी, 1996 को झाँसी की आमसभा में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश —

परम आदरणीय नारायणदत्त जी और बुंदेलण्ड के कोने-कोने से, यहाँ आए लोगों का बहुत-बहुत स्वागत करता हूँ। जबसे देश में प्रजातंत्र कायम हुआ है, तब से सबको वोट देने का समान अधिकार मिला है। लोक सभा के दस चुनाव हो चुके है। विधान सभाओं के तो न जाने कितने चुनाव हो चुके है। हर चुनाव में जो भी परिस्थितियाँ बनी आखिर में जाकर गाँव का किसान, मजदूर और काम करने वाले लोग, माताएँ-बहनें, नौजवान, वे ही फैसला करते है, मुल्क में जो मुद्दे है उनके ऊपर कि क्या सही है और क्या गलत है?

अभी चुनाव की घोषणा तो नहीं हुई है। लेकिन स्पष्ट है कि अगले तीन-चार महीने के अंदर लोक-सभा के चुनाव निश्चित होंगे। आज तिवारी जी के साथ हम सब लोग इसलिए आए है कि बुंदेलखण्ड के बहनों और भाइयों के सामने

भी मुल्क की हालत का थोड़ा सा जिक्र होना चाहिए ताकि अभी से आप सोचना, विचारना शुरू कर दें और जब फैसला लेने का समय आए तो सूझ-बूझ के साथ फैसला करें।

वे कौन-कौन से सवाल हैं? सबसे बड़ा सवाल आम आदमी की परवरिश का है। उसकी रोजाना की जिंदगी किस प्रकार से गुजर रही है? आप नजर उठा कर कहीं भीदेखें। उत्तर प्रेदश हो, और भी कोई प्रदेश हो, शहर हो, गाँव हो। सबसे ज्यादा आज यदि कोई परेशानी में है, तो आम आदमी है। खास तौर से मेहनतकश जो है जो सुबह से शाम तक कमाकर अपने बाल-बच्चों को पालता है, आज वो समझ नहीं पा रहा है कि किस तरह से वो अपने परिवार को चलाए।

दूसरा सवाल है छोटा गाँव हो, कस्बा हो, शहर हो और बड़ा कोई बम्बई, कलकत्ता जैसे शहर हों। आम आदमी, खास तौर से माताएँ बहनें, आज सुरक्षित नहीं है। अपराधियों का इतना व्यापक जाल फैल गया है कि घर से कोई निकलता है तो वह शाम को सही सलामत वापस आएगा कि नहीं इसकी कोई गारण्टी नहीं है।

तीसरी बात जो देश के अंदर आर्थिक ढाँचा बनाने का सवाल है। कौन नहीं इस बात को समझता है कि जब तब्दीलियाँ होती है दुनिया के अंदर तो हर मुल्क को उन तब्दीलियों के साथ मिल जुलकर चलना पड़ता है। लेकिन दुनिया के हर मुल्क अपने देश की हालात को देखकर तब्दीली करते हैं।

हिन्दुस्तान की हालत क्या है? हमारे मुल्क में गरीबों की संख्या ज्यादा है। कमजोर वर्ग की संख्या ज्यादा है, जो आर्थिक रूप से मजबूत नहीं है, जो अपने बलबूते पर अपने पैरों पर खड़े होकर सब कुछ नहीं कर सकते और इसलिए हमें उन गरीबों के हितों की रक्षा के लिए काम करना है। कोई भी तब्दीली देश में आए, आना चाहिए। लेकिन सबसे पहले उनका ख्याल करिए, जिनके पास कुछ नहीं है, उनके पास कुछ न कुछ होना चाहिए, उन के साथ नाइंसाफी नहीं होनी चाहिए। कमजोर को सताने वालों को किसी तौर से बक्शा नहीं जाना चाहिए।

छोटे-छोटे उद्योगपति देश का उत्पादन बढ़ाएँगे तभी देश का आर्थिक ढाँचा मजबूत होगा। आज सबसे ज्यादा मजदूर हिन्दूस्तान के अंदर बड़ी-बड़ी फैक्टरियों में नहीं लगे हैं, जो छोटे-छोटे उद्योग हैं, झाँसी जैसे शहरों में और छोटे शहरों में लाखों लोग काम करते हैं। वे उद्योग बढ़ेगें, मजदूरी बढ़ेगी, तो खुशहाली बढ़ेगी। वे बंद हो जाएँगे तो बेकारी बढ़ेगी। इसके ऊपर ध्यान देकर हमें हिन्दुस्तान को मजबूत करने का सवाल है।

फिर मसला हमारे देश के मुसलमान भाइयों का है। मेरा यह स्पष्ट मत है कि हिन्दुस्तान के अंदर मुसलमान भाई हों, ईसाई भाई हो और अन्य धर्म के मानने वाले लोग हों। हिन्दू हों। यह सब भारत माता के आंगन के एक-एक फूल है। इस आँगन में खेलने वाले बच्चे हैं।

यह चीजें है जो आज इस मुल्क के लोगों को यह समझ लेने की जरूरत हैं, समझ के साथ अपने हाथों में इस देश की किस्मत को बनाने का काम लेने की जरूरत है और खास तौर से हमारे मुल्क के नौजवान साथियों, भाइयों और बहनों को यह बताने की जरूरत है कि यह मुल्क उनका है। वे इस मुल्क के हकदार होंगे। विरासत उनके पास आएगी। अगर वो विरासत सही सलामत उनके पास आएगी तो वे उसे और धनी और मजबूत करके आगे आने वाली पीढ़ी को सौंपेंगे। अगर वो विरासत उनके पास खोटी होकर आई तो न तो इसका खुद कोई फायदा उठा सकेंगे और न आने वाली पीढ़ी को देने के लिए कुछ बचेगा ही।

आज उनके ऊपर यह जिम्मेदारी दी गई है कि जिस कॉंग्रेस ने 110 साल में भारत की हर कठिनाईयों में अपना फर्ज अदा किया है। विदेशी आक्रमणों से देश की रक्षा की है, देश के अंदर कमजोर वर्ग के लोगों को हर प्रकार से सहायता दी है, चाहे वो किसी जाति का हो, किसी धर्म के मानने वाले लोग हों, हिन्दुस्तान के किसी कोने में रहते हों, कोई भी भाषा बोलते हो, सबको बराबर का हक कॉंग्रेस ने दिया। आज वह फर्ज हम सबको अदा करना है और

उसी फर्ज को अदा करने के लिए इंदिरा काँग्रेस के नाम से उस काँग्रेस की पहचान कायम करने की कोशिश की जा रही है, जो काँग्रेस आप पहचानते हों, जो काँग्रेस दिल्ली में बैठे हुए लोग अब भूल गए हैं।

बुंदेलखण्ड के भाई, बहनें और माताएँ, नौजवान, वो जानते हैं काँग्रेस क्या है? वो पहचान काँग्रेस की कायम करना आपकी जिम्मेदारी है? हम सब केवल आपके साथ चलकर देश को मजबूत करने के लिए एक दूसरे की मदद कर सकते है। साथ चल सकते हैं लेकिन मैंने शुरू में कहा यह काम हिन्दुस्तान के उन लोगों का है, जिनके हाथों देश की आखिरी सत्ता है। उनके पास आखिरी अधिकार है। प्रजातंत्र में जनता जनार्दन ही देश को बचाती हैं। देश को आगे बढ़ाती हैं यह मौका आपको अपने हाथों मे लेना है।

असली संदेश मैं जरूर देना चाहता हूँ और वह भी झाँसी के इस ऐतिहासिक किले की छाया में। यहाँ से नरसिंहराव जी को संदेश जाना चाहिए कि अगर उनके मन में इस बात की शंका हैं कि इस प्रकार के हथकंडों से हम जैसे सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को किसी प्रकार से वो आतंकित कर सकते हैं या प्रभावित कर सकते हैं तो इनको बहुत बड़ी गलतफहमी है। ऐसा कभी नहीं होगा। चाहे कोई भी कुर्बानी क्यों न देनी पड़े। इस देश के लिए हम लड़ेंगे। हम मर मिटेंगे और हर प्रकार से भारत की ऐसे लोगों से रक्षा करेंगे, जिन्होंने ईमान ताक पर रख दिया है, ऐसे लोगों से रक्षा करेंगे जिन्होंने इस देश की किस्मत को ताक पर रख दिया है। भारत की गरिमा और महिमा को ऐसे लोगों के साथ संघर्ष करने से किसी प्रकार से कोई कमजोरी नहीं आएगी और जो मैंने पहले एक शब्द कहा था जब यह अभियान शुरू हुआ था, आज उसे फिर से दोहराना चाहता हूँ। 'अर्जुनस्थ प्रतिज्ञेद्वै, न दैन्यं न पलायनं।

आज़ाद मुल्क का अपना सम्मान होता है

14 मार्च, 1996 को बहराइच (उत्तर प्रदेश) की सभा में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश—

परम आदरणीय श्री नारायणदत्तजी तिवारी, यहाँ काँग्रेस के सभी आदरणीय साथियों और बहराइच के सम्मानित नागरिकों, बंधुओं, माताओं और बहनों। मैं अपने को बहुत खुशनसीब मानता हूँ कि आपसे दो शब्द कहने का मुझे मौका मिल रहा है। इस समय अगर आप देश के चारों तरफ निगाह फेंके और ये जानने की कोशिश करें कि हम कहाँ पर खड़े है? किस ओर जाना चाहते हैं? कहाँ से चले थे? किस ओर जाना है? कोई भी कौम कोई भी मुल्क स्थिर खड़ा नहीं रह सकता। चलायमान रहने की नीयत सभी की होती है। फर्क इतना ही पड़ता है कि कोई कौमें, कोई देश अपने पैरों पर चलकर कहाँ पहुँचते हैं। और कुछ ऐसे देश, कुछ ऐसी कौमें भी होती हैं जो भटकते हुए भी अपनी मंजिल पर नहीं पहुँच पाती। हिन्दुस्तान की आजादी दुनिया के इतिहास में एक ऐसा मोड़ था जब ये साबित हुआ कि एक निहत्था देश, एक गरीब देश, ऐसे नेताओं की रहनुमाई में लड़ सकता है, संघर्ष कर सकता है और दुनिया के सबसे बड़े साम्राज्य को घुटने टेकने पर मजबूर कर सकता है।

यह हमारा दुर्भाग्य है कि आज हमारे मुल्क के अन्दर कुछ ऐसी ताकतें भी हैं, कुछ ऐसे लोग भी है जो मुल्क की तरक्की, मुल्क की बेहतरी को अपनी तरक्की और अपनी बेहतरी से कम महत्व देते है। इसी वजह से कुछ ऐसी शक्तियों ने भारत की राजनीति को खुरुच किया, फिरकापरस्ती के जहर को बोया केवल इस गरज से कि उन्हीं के लोग वो सत्ता की कुर्सी पर बैठे और संयोग से थोड़ी देर के लिए भटकाव भी आया लेकिन उस भटकाव को दूर करने की जिम्मेदारी काँग्रेस ने कभी छोड़ी नहीं। उस दिशा में हम जो भी कर सकते थे करने की कोशिश की गई और ऐसा स्पष्ट हो गया और जो भटकाव ऐसी शक्तियों की वजह से हुआ। उस भटकाव को रोकने का जो हमारा प्रयास था, काँग्रेस का वो प्रयास सफल होगा लेकिन ये दुःख की बात है कि जिनके कंधे पर ये जिम्मेदारी सौंपी गई थी, देश

को चलाने की, देश को आगे ले जाने की, वे खुद ही भटक गए और भटक किस बात के लिए गए अपनी खुदगर्जी मे भटक गए।

जहाँ तक काँग्रेस के सिद्धांतों का सवाल है जैसा मोहसिना जी ने कहा काँग्रेस अपनी पहचान केवल एक कागजी पार्टी के रूप में नही बनाएगी। इसकी पहचान तो उन उसूलों से बनती है जिनके सहारे लंबा 110 साल का इतिहास बना है। क्या हम इस मामले में गफलत में पड़ जाय? उदाहरण के लिए एक बहुत मोटा सिद्धांत काँग्रेस ने सदैव रखा। संविधान में भी इसका समावेश हुआ कि काँग्रेस के अन्दर रहने वाले हर जाति व धर्म के लोगों को बराबर का अधिकार मिलेगा। बराबर का सबको मौका मिलेगा। अवसर मिलेंगे साधन मिलेंगे। इस चीज को समझने का इसलिए महत्व है क्योंकि ये मुल्क बहुत बड़ा मुल्क है न जाने कितने प्रकार के लोग यहाँ रहते हैं, अगर इस प्रकार की सूझबूझ से सब प्रकार के सिद्धांतों से चलकर हम आगे बढ़ने की कोशिश नहीं करेंगे तो देश में बिखराब पैदा हो जाएगा।

मैं आपसे इतना ही कहना चाहता हूँ कि समय है संयम का, समय है धैर्य का, ये समय है विश्वास का। अगर धैर्य, संयम और विश्वास हमने रखा तो निश्चित रूप से हमारे सामने जो चुनौतियाँ हैं, जो खतरे हैं, उन पर हम धीरे-धीरे काबू पा सकेंगे और काँग्रेस एक ऐसी पार्टी में परिणित हो जाएगी जिसमें सबको बराबर का अधिकार देकर आगे ले जाने में सफल हो सकेंगे। यही हम आपसे प्रार्थना करना चाहते हैं। इंदिरा काँग्रेस के उन सिद्धांतों को आपका पूरा-पूरा सहयोग और समर्थन मिले और आपके सहयोग और समर्थन से देश के अन्दर एक मजबूत सियासी सरकार बने। जिससे कोई भटकाव न हो, अत्याचार न हो एक दूसरे के प्रति अविश्वास और अन्याय न हो। वही हिन्दूस्तान की एकता को कायम रख सकती है और इस दिशा में आपके सहयोग की निहायत जरूरत हैं। यही हमारी आपसे गुजारिश हैं। धन्यवाद। जय हिन्द।

जम्मू-कश्मीर में विश्वास का संकट

मई, 1996 को जम्मू-कश्मीर में एक चुनावी सभा को सम्बोधन के प्रमुख अंश—

श्री गुरुचरणसिंह चरखजी एवं उपस्थित साथियों। आज हिन्दुस्तान एक संघर्ष के मोड़ से गुजर रहा है। वैसे तो हमारे मुल्क ने आजादी का संघर्ष देखा है। आजादी का सबेरा देखा है। उस सबेरे को खून की नालियों से ढँकने के षडयंत्र भी देखे हैं। और उस षडयंत्रों को नष्ट करने वाले देश के वीरों को भी देखा है। यह सब हमारा अतीत है। बहुत पुराना है कुछ अभी का है, लेकिन सब मिला जुला है, हमारी विरासत में।

आज देश में जो विश्वास का संकट पैदा होता जा रहा है, उस का कारण यही है कि हम अपनी विरासत को खण्ड-खण्ड करके देखते है और देखने को प्रोत्साहित कर रहे हैं। हमारी विरासत हजारों साल की हैं, मुनियों की, तपस्वियों की है, बड़े-बड़े धार्मिक स्थानों की, मस्जिदों की, गुरूद्वारों की है।

दुर्भाग्य है कि जम्मू-कश्मीर, आज इस विश्वास के संकट से सब से ज्यादा गुजर रहा है। इस का एक पहलू हिंसा का भी है, वो भी उसी से जन्मा है और जब हिंसा नहीं भी है तो भी नौजवानों के बीच में इस विश्वास की कमी है इससे ऐसी परिस्थिति जम्मू कश्मीर में बनी है, और इस का अंतिम परिणाम यह हुआ कि विदेशी ताकतों को एक मौका मिला। पाकिस्तान भारत को मजबूत नहीं देखना चाहता, दुनिया की ताकतों ने, अपना खेल खेलना यहाँ पर शुरू कर दिया है।

सब से पहले आज हमें यही देखना है कि हम इस विश्वास के संकट को कैसे दूर कर सकते है। प्रजातंत्र में इस का एक ही तरीका है और वो है जनता की आवाज साफ तौर से सामने आए, चुनावों के माध्यम से या किसी

अन्य माध्यम से। जब तक जनता के मन में क्या है यह सामने नहीं आएगा, तो जो मुखौटा लगा कर सामने आएगा और जनता के नाम पर बात करेगा, उन के मत्थे कभी यह संकट दूर नहीं हो सकेगा और यही जम्मू-कश्मीर में हो रहा है, मुखौटा कुछ था और इरादा कुछ और था।

आज इस चुनाव में एक मौका आप को मिला है। एक तरह से ठीक भी है कि सारे मुल्क के चुनाव हो चुके है और अब आप के ऊपर यह कोई नहीं है कि आप किस को चुनेंगे, उस पर निर्भर करेगा कि हिन्दुस्तान में दिल्ली पर कौन राज्य करेगा? वो तो काम हो चुका है। आप की छः सीटें हैं। अगर छः की छः सीटें आप किसी एक पार्टी को देंगे तो भी दिल्ली में कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है क्योंकि किसी को वहाँ बहुमत मिला ही नहीं है और बहुमत की कमी जो है वह साठ सत्तर सीटों की है। तो छः सीट से कोई असर होता नहीं। लेकिन दिल्ली में उस की जरूरत हो या न हो, इस मौके का फायदा या सही उपयोग जम्मू-कश्मीर की माताओं, बहिनों और भाइयों को जम्मू के अंदर उन ताकतों को मजबूत करने में करना चाहिए, ताकि यह विश्वास का संकट खत्म हो सके। और उस का मेरे मत में एक ही तरीका है कि सब चीजें अलग रख कर, मैं किसी पार्टी की, किसी व्यक्ति की आलोचना नहीं करना चाहता। राजनीतिक पार्टियाँ या राजनीतिक नेता जिन की स्वाभाविक रूप से यह जिम्मेदारी होती है कि जब संकट का दौर आए, उस समय वे जनता के बीच में हों, ताकि अच्छा बुरा जो कुछ भी भुगतना हो, वो जनता के साथ भुगतें। ऐसे नेता का तो कोई मतलब है नहीं कि जब अच्छे दिन आएँ, तो आप के बीच में आ जाएँ और जब बुरे दिन आएँ तो सात समुंदर पार रहें या कि दिल्ली में रहें। यह चीज आप को सोचना है। जो आप के साथ में आपके बीच में नहीं खड़ा रहा है, जब संकट के दौर से आप गुजर रहे थे, मेरे मत में ऐसे व्यक्ति को आज आप के बीच में आ कर वोट माँगने का अधिकार नहीं है।

आज इस चुनाव में इन सब चीजों का महत्त्व है। जहाँ तक हमारी पार्टी का सवाल है उस का प्रतिनिधित्व श्री गुरुचरण सिंह चरख कर रहे हैं। इस के अलावा जम्मू और कश्मीर में जिन चीजों की सब से ज्यादा जरूरत है, किसी भी जनप्रतिनिधि में, मेरे मत में वह श्री गुरु चरण सिंह में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। असली बात तो यह है कि उस की छवि साफ होनी चाहिए। किसी प्रकार का आरोप-प्रत्यारोप उस के ऊपर नहीं होना चाहिए। दूसरी यह कि जनता के बीच में खड़े होने का उसमें माद्दा और हौसला दोनों होना चाहिए और यह तभी होता है, जब किसी प्रकार से आप अपने को नैतिक रूप से कमजोर नहीं मानते।

जिसका ज़हन साफ है और जहन से मेरा मतलब, जो सोच है, जम्मू-काश्मीर में ही नहीं, सारे हिन्दुस्तान में, हम तभी अपने देश को एक बना कर रख सकते हैं, जब इस देश में रहने वाले हर व्यक्ति को चाहे वो किसी धर्म को मानने वाला व्यक्ति हो, किसी जाति का हो, देश के किसी कोने में रहता हो, सब अपने को बराबर समझ सकें और देश के अंदर उस का बराबर का हक है, ऐसा उन को विश्वास हो सके। जिस दिन यह नहीं रहेगा, भारत का यह समूह जो आज है, नहीं रह सकता है। धन्यवाद। जयहिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकारवार्ता

काँग्रेस की एकता जरूरी

11 जनवरी 1996 को सागर में पत्रकारवार्ता —

प्रश्न: दोनों काँग्रेस में एकता के प्रयास क्या सम्भव है? अगर है तो अभी तक क्या प्रयास हुए हैं, वो थोड़ा सा बताएँ और जो बाधापूर्ण तथ्य हैं उनका थोड़ा सा खुलासा करें?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए ऐसा है कि केवल एक कोरी कल्पना के आधार पर एकता की बात करने का कोई औचित्य नहीं हैं। जो परिस्थितियाँ पिछले दो सालों में निर्मित हुई है विशेष तौर से जिनकी वजह से कॉंग्रेस का प्रभाव कम हुआ और ऐसी स्थिति आई हैं। अगर एकता का उद्देश्य ईमानदारी से कोई रखना चाहता हैं, तो इस स्थिति को सुधारने और सँभालने की बात हो सकती हैं। और जब उस दृष्टिकोण से किसी विषय को देखा जाएगा तो ही कुछ सार्थक नतीजा निकलेगा। अभी तो मुझे कहीं कोई ऐसा लक्षण नहीं दिखता कि नरसिंहराव जी की तरफ से कॉंग्रेस के पराभव के कारणों पर विचार करने का कोई भी संकेत मिला हो फिर ये पाँच और पाँच दस की एकता का कोई मतलब नहीं है।

प्रश्न: यदि आपको वापस पार्टी में शामिल करने बात कही जाय तो?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, मैं आपसे कह रहा हूँ यह सब बातें गौण हैं। मैंने इतनी बात कही आपसे। इससे ज्यादा और क्या कह सकता हूँ। कॉंग्रेस और देश को बचाने का सवाल हैं। अर्जुनसिंह को कहीं बैठाने के लिए या किसी की कुर्सी सुरक्षित रखने का सवाल नहीं हैं।

प्रश्न: इसका मतलब क्या हैं? आप समझ रहे हैं कि इंदिरा कॉंग्रेस इस चुनाव में विजयी होगी?

श्री अर्जुनसिंह: अब ये तो जो समझ रहे हैं, उनसे सवाल करिए जो स्थिति हैं वो मैं आपको बता रहा हूँ।

प्रश्न: आगामी लोकसभा चुनाव में तालमेल कि क्या स्थिति बनेगी, आपकी पार्टी की ओर से ओर आपका मुख्य नारा क्या होगा?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए नारा या मुद्दा तो तय करेगी हमारी वर्किंग कमेटी, और जहाँ तक तालमेल का सवाल हैं। अभी तक किसी भी दूसरे राजनैतिक दल से तालमेल की बात नहीं हुई हैं। एक दफे चुनाव की घोषणा हो जाय और उसके बाद फिर वर्किंग कमेटी इस समूचे विषय पर विचार करके जो उचित होगा निर्णय लेगी।

प्रश्न: इस बार आप कहाँ से लड़ेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: आपकी जहाँ से आज्ञा होगी। देखिए अब ये तो पार्टी तय करेगी। मैं तो तय नहीं करता। मैं जहाँ से एम.पी. हूँ वो जगह तो आपको मालूम हैं।

प्रश्न: अगर पार्टी टिकट दूसरी जगह से दे तो? क्या आप कांग्रेस को जितवा सकते है? क्या कांग्रेस कमजोर हुई हैं?

श्री अर्जुनसिंह: मेरी तो कोई ताकत नहीं हैं, जहाँ तक कॉंग्रेस की ताकत कमजोर होने का सवाल हैं, लेकिन प्रश्न यह हैं कि जब संपूर्ण एकता थी, लोग भूल जाते हैं, पब्लिक की मेमोरी काफी शार्ट होती हैं, जब संपूर्ण एकता थी 94 के नवंबर से लेकर मार्च 95 तक एक के बाद एक साथ बड़े प्रदेशों में कॉंग्रेस केवल हारी ही नही, सरकारें चली गई और तीसरे नंबर पर कॉंग्रेस आई, और बी.जे.पी. शासन में आई। ये जो एक यथार्थ हैं उस यथार्थ को नजरदांज करके कोई बात करना, मैं समझता हूँ न कॉंग्रेस के साथ न्याय हैं, न देश के साथ न्याय हैं।

प्रश्न: ऐसी स्थिति रही तो क्या लोकसभा चुनाव में कॉंग्रेस को और भारी स्थिति से गुजारना पड़ेगा?

श्री अर्जुनसिंह: बार-बार शब्द कॉंग्रेस आ रहा हैं। इसलिए मुझे कुछ कहना उचित होगा। कॉंग्रेस की पहचान जनता अंतिम रूप से तय करती हैं। यह भ्रम है कुछ लोगों को कि कोई किसी पद पर बैठा है, किसी ऑफिस में है तो वही तय करेगा। कॉंग्रेस की पहचान जनता से है, जनता की नजर में क्या है? यह भ्रम

कम से कम अभी पिछले 30 सालों में दो दफे दूर हो चुका हैं। 1979 और 1980 जब देश की जनता ने तय किया कि काँग्रेस क्या हैं? आप यकीन माने या ना माने मुझे विश्वास हैं कि इस समय भी जनता ही तय करेगी कि काँग्रेस क्या हैं? अपराधी तत्वों को संरक्षण देने वाली काँग्रेस नहीं हो सकती, भ्रष्टाचार को शिष्टाचार का स्वरूप देने वाली संस्था काँग्रेस नहीं हो सकती, देश की सुरक्षा को नजरदांज करने वाली संस्था काँग्रेस नहीं हो सकती, भारत के आत्म सम्मान और उसके गौरव के साथ समझौता करने वाले लोग काँग्रेसी नहीं हो सकते, और विदेशी कंपनियों के सामने घुटने टेकने वाली संस्था कांग्रेस नहीं हो सकती, वो पहचान जनता तय करेगी, मैं कौन होता हूँ।

प्रश्न: मुख्यमंत्री दिग्विजयसिंह की सरकार के काम काज से क्या आप संतुष्ट हैं?

श्री अर्जुनसिंह: अब मेरे संतुष्ट, असंतुष्ट होने का सवाल नहीं हैं। अब भारी भरकम मंत्रिमण्डल बन ही गया हैं। कल मैंने वहाँ जरूर यह कहा था कि भाई मंत्रियों से जनहित के काम लें। अपनी सभाओं को सुधारने के लिए उनका उपयोग करने की जरूरत नहीं हैं। एक चीज जरूर मैं कहूँगा कि छत्तीसगढ़ में निहित स्वार्थियों का जमावड़ा सदैव रहा हैं, तथा कथित नेताओं के संरक्षण में उस जमावड़े के खिलाफ लगता हैं कि थोड़ा बहुत मोर्चा लेने की हिम्मत दिग्विजयसिंह दिखाना चाहते हैं। बाकी सरकार कैसी चल रही हैं, आप सभी को मालूम हैं।

प्रश्न: अधिकांश मंत्री तो आपके समर्थक हैं जो सभाओं में जाएँगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए अब ये तो समर्थक और विरोधी का प्रश्न नहीं हैं, जो जहाँ हैं वो अपने विवेक पर हैं, कोई मैं किसी पर दबाव तो डालता नहीं, न किसी के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। मध्यप्रदेश में बहुत अग्रणी रोल अदा किया था 77 और 80 के बीच में काँग्रेस की पहचान को बनाने के लिए, मैं तो यही जानता हूँ और मेरी आशा यही हैं कि वही योगदान इस दफे मध्यप्रदेश की जनता करेगी।

प्रश्न: आपने किसी सभा में विदिशा में कहा हैं कि भा.ज.पा. सत्ता में नहीं आ सकती हैं, तो उसे रोकने के कौन से उपाय हैं?

श्री अर्जुनसिंह: और कोई उपाय नहीं हैं, सिवाय इसके कि जनजागृति करके और प्रदेश और देश की जनता को हम यह अवगत कराने मे सफल हो कि इन सांप्रदायिक शक्तियों को किसी प्रकार से बल और संरक्षण नहीं मिलना चाहिए और क्या चीज हैं। प्रजातंत्र में इसके अलावा तो और कोई चीज नहीं हैं।

प्रश्न: तेंदूपत्ते के दूसरे चरण का क्या हुआ?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए कल रायसेन की सभा में मैंने बहुत स्पष्ट कहा हैं कि मैंने पहले निवेदन किया था, मध्यप्रदेश शासन को कि जनवरी तक वे इस बारे में अपनी घोषण करें कि जो इंदिरा गाँधी जी की योजना थी उसको अंतिम रूप दें, बीड़ी पत्ता तोड़ने वाले जो 25 से 30 लाख मजदूर हैं इस प्रदेश में उन्हें तेन्दूपत्ता के ऊपर मालिकाना हक दिया जाय। ये योजना का स्वरूप शुरू से था। दूसरे चरण में खैर भा.ज.पा. तो किसी ऐसे विषय को ले ही नहीं सकती थी। अब मैं यह चाहता हूँ कि वो मालिकाना हक देने वाला निर्णय हो। मैंने कल रायसेन में कहा हैं। इस महीने के अन्दर हम घोषणा चाहते है। वरना हम फरवरी से सारे प्रदेश में एक आन्दोलन चलाएँगे और शासन को मजबूर करेंगे कि उन्हें मालिकाना हक दें।

नेताओं के व्यवहार से काँग्रेस पिछड़ी

18 जनवरी, 1996 को पटना में हिन्दुस्तान टाइम्स के संवाददाता के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Q: Will the unity of both the Congress party will benefit in the coming elections?

Shri Arjunsingh: Have unity for the benefit of the Congress party, If that is the intention then an honest attempt will have to be made to go into the reasons for the present situation in which the Congress finds itself and if that honest attempt is made some leaders are not interested in unity. All this talk is only to confuse people. But yes, If an honest attempt is made and the reasons removed for the lack of confidence of the people in the Congress party. Well, we are prepared to discuss it but not for the benefit of any individuals.

Q: What are the problems which the party is facing?

Shri Arjunsingh: Well, there are some problems which have a reason but I am sure it will be sorted out and there is no question of the party being in disarray. Some problems arise some times that's all.

Q: It is true that there is inner fight between you and Shri N.D. Tiwari?

Shri Arjunsingh: You see, some of these people asked fading all these false rumours Mr. Tiwari has himself categorically denied it that there is no substance in all these things.

Q: You are hopeful of majority of your party joining congress (I).

Shri Arjunsingh: It will depend on what ultimately is the assessment of the State units, which we will also have to decide as to how we go about it. But that is a decision, which will be taken at a high level meeting of the party. You see, it is not a question of going back or having come out. I think you must understand the facts I know Tiwari never opted to get out of the party. So the question of our getting out and going in doesn't arise. The question is that the Congress party because of what happened in the last two and a half years came to a very sorry phase in the country. You will please understand that when there was what you call to total unity in 1994 Nov-Dec. The party lost the two crucial States of the South, Karnataka and Andhra, the Home State of the Prime Minister. In the next three months it lost four important States in the North, there was no problem till then which means that something went seriously wrong with the perception of the people about the Congress party otherwise, why State after State were lost. It is in that background that I made the suggestion that I think something must be done to review and find out precisely what is going wrong and in that process I made the suggestion. So far as I am personally concerned I said that I would like to work in the organisation and then I resigned because of that from the Cabinet. I didn't resign from the Congress party. It is unfortunate that

some people took that to be something, which was not there, and unfortunate developments took place. Now whenever somebody says about the Congress party's interest, we must consider the Congress party's interest first. If you are genuine about it, if you say what is the interest of Mr. Arjun Singh and Mr. Tiwari then you will think of one thing. If you say what is the interest of Mr. Narsimha Rao then you will think of one thing but if you are really sincere about this organisation, You must think what is in the interest of the Congress party.

Now in our perception, if somebody is honest about improving the image of the party, condition of the party, then we have to make a sincere attempt to understand what went wrong and how to redress it. Now in that effort nobody is interested lot of mechanical things are being said, you have gone out, you come in, he will be adjusted, unity should occur, I mean all these are absolutely irrelevant for the basic interest of the Congress party.

Q: Why you formed Indira Congress?

Shri Arjunsingh: You see, what it means that the workers of the Congress party on 19 May, 1995 assembled together and decided that this leadership is not interested in the party. They said now we have to save the party and out of that decision of the Congress workers has formed the Indira Congress. So that is where we stand today. But as I said if somebody is honestly interested in the unity we certainly would like to talk about it.

हवाला प्रकरण में न्यायालय पर पूर्ण विश्वास है

14 फरवरी 1996 को टाइम्स ऑफ इंडिया अहमदाबाद के श्री गौतम मेहता के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Shri Guatam Mehta: What is Your Comment on Hawala Case?

Shri Arjunsingh : I have given my comments. I don't know profile. What is to be done, should be done in the proper manner.

Shri Gautam Mehta: In this case, you are legally involved.

Shri Arjunsingh : I said that is a legal matter. I am fully convinced that there is no basis for the allegation and court will exonerate. There is no need to shout about it.

Shri Gautam Mehta: What is your future plan?

Shri Arjunsingh : I think, our plans are to contest the elections on platform that our party has declared at the convention last year in May. Our manifesto will be ready withing this month. I think general condition in this country as the economic, political situation, security, environment, the international position of this country all these thing will be there.

Shri Gautam Singh: Do you see good future of your newly formed party?

Shri Arjunsingh : You will see, one thing I tell you that it is the people of this country who will identify what the congress has done in the past. So, I am quite sure that the banner of congress has been parctically whipped out because of the commission and omission of congress president we want to rehistoric and it is the people of this country who will decide and I will only give you an example in the last thirty years the congress faced this situation and on both occassions it was the people of this country who decided what the congress win in 1971, 1972, 1978 and 1980, First, this indicate then the organisation congress so, of course, we don't have a great leaders, Indiraji with us. But the values and ideals of congress party which identify the congress party will be endorsed by the people.

Shri Gautam Mehta: You have full support from Mrs. Sonia Gandhi?

Shri Arjunsingh : I don't know. She has to decide, I cann't say any thing on her behalf.

Shri Gautam Mehta: Even proposed to see her co-operation?

Shri Arjunsingh : Then, we never said that we are doing some thing, doing these objectives that is a decision which she has to take, we cann't impose any decision on her. She knows the situation. She is very well aware of the entire political situation and as to what she wants to do at what time is entirely her own discretion.

Shri Gautam Mehta: Sir, What is your action plan for particularly Gujrat promoting the activity of your party?

Shri Arjunsingh : You will see. I am not trying to say something just here that Gujrat will come on the forefront of the political situation in this country, so far as the Indira congress is concerned.

साम्प्रदायिकता देश के लिए खतरा

7 अप्रैल 1996 को अमेठी में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश —

प्रश्नकर्ता : साम्प्रदायिक शक्तियों से आप कैसे संघर्ष करेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: साम्प्रदायिक शक्तियों ने सब से ज्यादा नुकसान पहुँचाया है, कॉंग्रेस को। यदि वो सब बातें लोगों को पूरी नहीं बताई जाएँगी तो फिर तो बात कैसे लोगों के समझ में आएगी? संघर्ष तो मुख्यतः साम्प्रादायिक शक्तियों से है और साम्प्रादायिक शक्तियों से संघर्ष के लिए भी यह जरूरी है कि लोगों को यह स्पष्ट हो और उन का विश्वास हो कि इंदिरा कॉंग्रेस ही उन शक्तियों के खिलाफ संघर्ष करने में सक्षम है। इसलिए यह बातें कही जाती है।

प्रश्नकर्ता: मध्यप्रदेश में कॉंग्रेस की क्या हालत रहेगी? आप का क्या अनुमान है?

श्री अर्जुनसिंह: इंदिरा कॉंग्रेस की बहुत अच्छी हालत रहेगी।

प्रश्नकर्ता: क्या लगभग तीस सीटें मिलेंगी?

श्री अर्जुनसिंह: यह अटकलबाजी मैं कभी नहीं करता।

प्रश्नकर्ता: क्या त्रिशंकू सरकार बनेगी? किसी का बहुमत नहीं आ रहा है, तो आप भाजपा या काँग्रेस किस को समर्थन देंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इस मामले में तो किसी को समर्थन का सवाल है ही नहीं। लेकिन लोग मतदाता के ऊपर क्यों नहीं विश्वास करते हैं। जब इस तरह के सवाल ज्यादा लोग पूछते हैं तो ऐसा आभास होता है कि इस देश के मतदाताओं पर लोगों को भरोसा नहीं है। मतदाता को भी अपना फैसला करने दीजिए। फिर जो स्थिति बनेगी, उस में जो होगा, वो होगा।

प्रश्नकर्ता: आप को क्या लग रहा है? आप पूरे देश का दौरा करते रहे हैं और तमाम ....

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो इस मामले में हरदम पहले भी कहता रहा हूँ। आज भी कहता हूँ कि भारत का मतदाता देश के हित में ही फैसला करेगा। अगर हम यह मोटी बात मान लें तो ज्यादा अच्छा है। नहीं मानें तो आप जितनी अटकलबाजी करना है, वो करते रहिए।

प्रश्नकर्ता: भा.ज.पा. ज्यादा सीटें जीत गई तो क्या मतदाता का फैसला सही है।

श्री अर्जुनसिंह: जनता का फैसला हर हालत में सही है। यह कोई हमारे कहने की जरूरत नहीं है। प्रजातंत्र में जनता का, मतदाता का फैसला सहीं नहीं होगा, तो किस का होगा? लेकिन ऐसा फैसला होने वाला है नहीं। यह बात भी अपनी जगह है।

प्रश्नकर्ता: अगर किसी भी दल को पूर्ण बहुमत नहीं मिले, तो काँग्रेस, इंदिरा काँग्रेस (तिवारी) इन दोनों के साथ क्यों गठजोड़ कर सरकार बनाई जा सकती है?

श्री अर्जुनसिंह: इन संभावनाओं पर विचार तभी होगा, जब अभी मैं ने जो बात कही उस को नजर अंदाज कर दें।

एक चीज हम लोगों ने जरूर स्पष्ट कर दी है आज नहीं, हमारी लास्ट वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव है, जो 21 फरवरी को हुआ था। मुख्य रूप से वही आधार हमारे लिए है वो यह है कि देश के अंदर हम धर्म निरपेक्ष, समाजवादी, प्रजातांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने वाली, सामाजिक न्याय की लड़ाई को बढ़ाने वाली और भारत की अखण्डता और भारत के सम्मान को बरकरार रखने वाली, शक्तियों को ही बल देंगे। इन्हीं को ताकत देने का हमारा प्रयास रहेगा। अब इस परिधि में बाकी चीजें जो होंगी, सो होंगी।

प्रश्नकर्ता: साम्प्रादायिक ताकतों के खिलाफ जो लड़ाई आप ने शुरू की है, उस में जातिवादी राजनीति करने वाले दलों का समर्थन लेने में क्या आप को कोई परहेज नहीं है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, साम्प्रादायिकता अपने आप में अपने देश के संदर्भ में एक अलग तरह का खतरा है। मैं जातिवादी दृष्टिकोण का हामी नहीं हूँ। क्योंकि समाजवादी और जातिवादी दोनों एक साथ नहीं हो सकते। ये कण्ट्रेडिक्टरी टर्म्स है। मूलतः तो हमारा जो खतरा है वो वही है।

प्रश्नकर्ता: यह कामन सिविल कोड की बात हो रही है।

श्री अर्जुनसिंह: कामन सिविल कोड जो है, ये अपने आप में भले ही कितना ही, जिसको आप कहें कि अच्छा है, लेकिन इस पर अमल करने के लिए निश्चित रूप से मतैक्य देश में बनना चाहिए बिना उसके यह लागू नहीं किया जा सकता। इसे लोगों को स्वीकार करने की स्थिति में आना चाहिए। जब देश के

हर वर्ग और हर सम्प्रदाय के लोग इस को स्वीकार करने की स्थिति में आ जाएँ, तो उस वक्त जरूर होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता: जनसंख्या पर रोक, कामन सिविल कोड बनाना, इस पर मुसलमानों का डर तो आपको नही है, क्योंकि इससे मुसलमान नाराज हो जाएँगें?

श्री अर्जुनसिंह: इस में मुसलमानों के डर से क्या मतलब है?

प्रश्नकर्ता: जनसंख्या पर रोक तो कानूनन लागू होना चाहिए।

श्री अर्जुनसिंह: जनसंख्या पर तो रोक है ही। यह कार्य जबर्दस्ती से तो नहीं हो सकता। बाकी तो क्या मुसलमान फैमिली प्लानिंग में इंट्रेस्टेड नहीं है। ऐसा तो नहीं है। देखिए, छोटा परिवार का क्या अर्थ होता है, यह सभी समझते हैं। यह कोई धर्म के ऊपर निर्भर नहीं करता। यह तो बहुत जहरीला प्रचार है। आज अगर हमारे पच्चीस बच्चे हो जाएँगे, तो हम उन को क्या खिलाएँगे? क्या हम नहीं समझते कि पच्चीस नहीं तीन होना चाहिए। जितना हो सकता है, होता है। लेकिन उस को धार्मिकता से जोड़ना, गलत बात है, मेरे दृष्टिकोण से।

प्रश्नकर्ता: पार्टियाँ बहुत से फ़िल्मी स्टार, एक्टर्स का प्रयोग कर रहे हैं, और दो एम.पी. हैं।

श्री अर्जुनसिंह: ठीक है, स्टार भी तो सिटीजन हैं। नागरिक तो हैं ही वो। नागरिक की हैसियत से वो कोई अपना रोल अदा करना चाहते हैं तो इस में एतराज क्या होना चाहिए?

प्रश्नकर्ता: आप की पार्टी में कोई नहीं आया?

श्री अर्जुनसिंह: आया, नहीं आया। यह अलग बात है लेकिन आप ने सवाल तो दूसरा पूछा न। हो सकता है हमारे यहाँ भी कोई आ जाए। लेकिन इसलिए नहीं आएँगे कि वो स्टार हैं, वे नागरिक हैं और अपना प्रजातांत्रिक अधिकार, एक्सरसाइज करना चाहते हैं।

प्रश्नकर्ता: आप ने तीन सौ सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं, फिर आप कैसे सरकार बनाने का दावा करते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: यह तो नतीजों पर निर्भर करेगा।

काँग्रेस की असफलताएँ

8 अप्रैल, 1996 को एस.पी. टेलीविजन के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

प्रश्न: ऐसा माना जाता है कि राव साहब ने साम्प्रदायिक ताकतों के प्रति लापरवाही बरती है तो आपको क्या लगता है कि इस बार के चुनाव में उसका काफी असर होगा?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो मानता हूँ कि बात केवल लापरवाही की नही है बात उससे कहीं ज्यादा है और जिसकी वजह से इन शक्तियों के हौसले बहुत बढ़ गए है। उसी हौसले की वजह से उन्होंने बाबरी मास्जिद की भी शहादत कर दी। एक तरह से देश मे माहौल बनाने में ये कुछ हद तक कामयाब रहे कि अब आने वाले समय में वही शक्तियाँ देश में शासन मे रहेगी।

प्रश्न: आपको क्या लगता है कि जो लापरवाही की बात है उससे राव साहब को धक्का पहुँचेगा, जो उससे बिखरे है, वे आएँगे क्यो?

श्री अर्जुनसिंहः उनको इससे कोई लेना देना नहीं है, क्योंकि उनका गणित तो दूसरा ही है कि जिस तरह से भी हो जितने भी लोग उनके पक्ष में आ जाएँ या औरों के पक्ष में चले जाएँ, और अंततः फिर से गठबंधन करके वे प्रधानमंत्री बन जाएँ ये उद्देश्य है उनका, तो बाकी चीजें तो कोई महत्व नहीं रखती उनके लिए।

प्रश्नः लेकिन इस बार 1991 की तुलना में कोई उन्माद है नहीं, तो आपको क्या लगता है कि साम्प्रदायिक शक्तियों जैसे बी.जे.पी. को इसका लाभ मिलेगा क्या?

श्री अर्जुनसिंहः उस तरह की बात तो नहीं है यह बात सही है लेकिन ऐसी शक्तियों को जिसे अंग्रेजी में कहते हैं कि पहले आप रिस्पेक्टेबल बना लें, उसके बाद फिर वे एक्सेप्टेबल हो जाते हैं वह प्रक्रिया जरूर हुई है लेकिन मैं तो खुद भी मानता हूँ कि बी.जे.पी. को देश में इस प्रकार का समर्थन नहीं मिलेगा।

प्रश्नः क्या मंदिर-मस्जिद प्रश्न पर भारतीय जनता पार्टी को लाभ मिला है?

श्री अर्जुनसिंहः एक तो मंदिर-मस्जिद वाला मसला है जिसको अब वोट में परिणित नहीं किया जा सकता है। नए मुद्दे साम्प्रदायिक आधार पर अभी उतने सशक्त उभरकर सामने नहीं आएँ हैं, लेकिन बी.जे.पी. को जो फायदा मिला है वह अप्रत्यक्ष रूप से उसका लाभ मिला है। क्योंकि वही एक संगठित पार्टी है।

प्रश्न- दक्षिण की 129 सीटें है और उसका काफी महत्व है इस पर आपको क्या लगता है स्टेटवाईज किस तरह का फैसला होगा?

श्री अर्जुनसिंह- अब यह तो अटकलबाजी करना कोई मतलब नहीं रखता लेकिन अभी जो हालात सामने आए हैं उनमें काफी विभाजन होगा वहाँ की सीट्स में। किसको कितना मिलेगा यह कहना तो अभी जरा अर्ली है।

नर्मदा बाँध की ऊँचाई

3 सितम्बर, 1996 को भोपाल विधानसभा में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्नः अर्जुनसिंह जी आप तो क्रिमिनल फोर्सेस के खिलाफ हमेशा लड़ते रहे हैं। जिस गवर्नमेण्ट का आप सपोर्ट कर रहे हैं उसका लीडर जो हैं वह शिवसेना के चीफ के साथ स्टेटमेंट दे रहा हैं या फिर मिटिंग शिवसेना लीडर के साथ हो रही हैं। व्हाऊ डू यू फील?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए यह मीटिंग सामान्य शिष्टाचार की मीटिंग है, इसमें कोई राजनीति नहीं। हमें श्री देवगौड़ा की धर्मनिरपेक्षता पर पूर्ण विश्वास है।

प्रश्नः नरसिंहराव के बार-बार उनसे मुलाकात का क्या असर होगा?

श्री अर्जुनसिंहः अब वो सपोर्ट कर रहे है, नरसिंहराव जी तो उनसे मिलते है, उसमें क्या है क्या कोई और उसमें शंका है?

प्रश्नः वह बार-बार जाकर मिलें प्रधान मंत्री जी से इससे मैसेज क्या जाता है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए एक चीज है मैं इसमें बहुत साफ अपना दृष्टिकोण रखना चाहता हूँ। कॉंग्रेस वर्किंग कमेटी ने एनी अन कंडीशनल सपोर्ट यूनाईटेड फ्रंट को दिया। उस समय कोई भी स्पेशिफिक इश्यू को

सामने रखकर सपोर्ट नहीं दिया गया। ये बात शुरू में ही प्रधान मंत्री ने साफ कर दी थी कि जहाँ तक इंवेस्टीगेशन और एजेंसी और केसेस का सवाल है, वे किसी को टारगेट करने के फेवर में नहीं है लेकिन जो कार्रवाई होनी है, उसमें किसी तरह की रूकावट नहीं होगी। जो कार्रवाई होनी चाहिए होगी।

प्रश्नः क्या श्री माधवरावजी सिंधिया से आप मुलाकात कर रहे है।

श्री अर्जुनसिंहः नही ज्वाइंटली हम लोग चाय पर जरूर उपस्थित रहेंगे, जो महेन्द्रसिंह जी के यहाँ हो रही है, वहाँ और क्या कार्यक्रम हैं मुझे नहीं मालूम। महेन्द्र सिंह कल आए थे उन्होंने कहा तो मैंने कहा कि हाँ मैं कल आऊँगा।

प्रश्नः आपकी पार्टी और माधवराव जी की पार्टी में मध्य प्रदेश में को-आपरेशन के बारे में कोई बातचीत हुई है?

श्री अर्जुनसिंहः माधवराव सिंधिया जी से कई मामलों में बात हुई है। उनका और हमारा दृष्टिकोण एक है और मध्यप्रदेश में जो कुछ गलत हो रहा है उसके मूल्यांकन में भी हमारे उनके बीच में मतैक्य हैं। बाकी इसके आगे ऐसी कोई बात नहीं है।

प्रश्नः लीडर ऑफ अपोजिशन ने जो सवाल खड़े किए हैं, वक्तव्य को लेकर आपने भी सुना होगा उसके बारे में आपको क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंहः मैंने सुना नहीं पर आय डोंट थिंक इट नीड्स एनी कमेंटस फार मी।

प्रश्नः आप सिंधिया जी से कल मिलने वाले थे और उससे पहले जब सिंधिया जी आए थे तो आपके समर्थक काँग्रेस के विधायक उनकी अगवानी के लिए बैरागढ़ गए थे तो ये हम लोग माने कि आपकी पार्टी ओर विकास पार्टी के बीच में तालमेल की कोई संभावना है।

श्री अर्जुनसिंहः देखिए अगर ऐसा कोई तालमेंल होगा तो उसकी विधिवत घोषणा होगी। इसमें किसी निष्कर्ष पर किन्तु, परन्तु कर न पहुँचे, यही मेरा कहना है।

प्रश्नः संयुक्त मोर्चे के साथ लड़ेंगे?

श्री अर्जुनसिंहः अभी संयुक्त मोर्चे ने विधिवत यह फैसला नहीं किया है कि बाय इलेक्शन में किस प्रकार से कार्रवाई की जाएगी।

प्रश्नः बाय इलेक्शन को लेकर मेरा एक प्रश्न है, क्या काँग्रेस बी.एस. पी. से मिलकर यह चुनाव लड़ने वाली है?

श्री अर्जुनसिंहः अब यह दृष्टिकोण हैं, इसमें मैं क्या कह सकता हूँ?

प्रश्नः उत्तर प्रदेश में जो आपने पूर्व उदाहरण देखा। नारायण दत्त तिवारी ने मुलायमसिंह को समर्थन देने की बात की थी?

श्री अर्जुनसिंहः यह चीज तो हो गई हैं उसी चीज को बार-बार कहने में क्या रखा है? अब ये डिसाइड हो चुका है, संयुक्त मोर्चा लड़ रहा है, संयुक्त मोर्चे की तरफ से हम लड़ रहे है उसमें मुलायमसिंह भी है, उसमें जनता दल भी हैं, उसमें सी.पी.आई., सी.पी.एम. भी है। कोई इंडिविजवल वन टू वन तो किसी को है नही कुछ?

Question: Why your party was named as Congress (T) and not Indira Congress?

Shri Arjunsingh: You see the Congress Indira and refer it to "T", 'T' was added only because of the

Supreme Court insistence on last time. The Indira Congress was constituted by the Congress workers of the country because when you are witnessing drift of the leadership away from the basic taints of the congress party, ideas of the congress party and the relation of the party from the people. That objective was before us and we tried to keep those alive and our apprehension about the congress and its leadership proved to be correct from the result that we have seen now. So far as what happen to Indira congress our reconciliation procedure took very long time our symbol was allotted at the very last time, just before the election. So there were lot of handicaps in getting it across. But that is no cause for any disappointment. The task before us now is fairly clear that we should continue with what we have set out to do. And I am sure this is the proper time to win the confidence of the people.

Question: What about your meeting with Shri Devegauda?

Shri Arjunsingh : Well, I think, these are superficial matters and once he has very clearly categorically said that this meeting was purely a social meeting, no politics was discussed, I think that is where the matter rest. We have no doubt in the secular credential of Mr. Devegauda, that what he want to ask me and more over people who have had an open house for the RSS for so many years does not in any way concern for so many years does not in any way concern.

Question: देवगौड़ा सरकार के लिए बनाए गए कामन मिनिमम् प्रोग्राम में उन सब बातों का क्या समावेश है जिनके लिए आप अभी तक लड़ रहे है?

Shri Arjunsingh : The question is, it was to be accepted as a policy that was what is mentioned in the common minimum programme that those states who accept it, then the government of India will work out the financial and other details. So the acceptance of the policy was the first break visit. That is why I was insisting on that.

Question: Bye elections are declared in M.P. also, whether Cong. will contest on all 10 seats in M.P.

Shri Arjunsingh : See I said yesterday also, and day before yesterday on this issue that the state unit is already conducting a survey and I think they will be able to decide the seats where we have to be contested and those that have not to be contested.

Question: Are you satisfied with the functioning of the Devegauda government or have you any suggestions for improvement of its functioning

Shri Arjunsingh : You see we have a very frank discussion in our steering committee on policies, on individual and approach to problems. I think the Prime Minister is trying to do a very creditable job under certainly difficult circumstances. You can not go on from one item to another and go on saying that this is good this is bad, But I think in the totality we have to say is on the credit factor, individual step somebody

may feel that should have been done in a different manner, otherwise I think it is quite well.

Question: What should be done regarding Beladila issue? Minister of steel is visiting Beladila...

Shri Arjunsingh : Let him come, naturally I am very happy that he is coming. We have had a discussion on this and I think it is already made public. The Minister of Steel has given us a commitment that before taking any final decision to do something in the matter he will allow us to discuss matter with him. All the political parties who took objection to this deal in the 10th Lok Sabha and I am sure when the discussion takes place we will say what we have to say.

जम्मू-कश्मीर में प्रजातंत्र पूरी तरह लागू हो

12 सितम्बर, 1996 को जम्मू कश्मीर में पत्रकारवार्ता —

श्री अर्जुनसिंह : थोड़ी समय की कमी है, इसलिए मैं अनुमति चाहूँगा, आरम्भ करने की। सबसे पहले तो मैं इस बात के लिए जम्मू-कश्मीर के अवाम को और खास तौर से मतदाताओं को धन्यवाद और बधाई देना चाहूँगा कि उन्होंने भारत के प्रजातंत्र की प्रतिष्ठा को भी और उसकी महिमा को भी बरकरार रखने के लिए आगे कदम बढ़ाया है। हम लोगों की शुरू से ही मान्यता थी की इस देश के अन्दर ऐसा कोई हिस्सा अब नहीं रह सकता जो सारे मुल्क के साथ-साथ डेमोक्रेटिक सिस्टम में फिट न हो। पिछले नौ साल की घटनाएँ डेमोक्रेसी के लिए एक सेट बेक थी और आज इस बात का स्पष्ट प्रमाण दिख रहा है कि यहाँ के लोग इस बात के लिए उन्होंने मन बना लिया है कि वो फिर से जम्मू-कश्मीर को डेमोक्रेटिक सिस्टम में पूरी तरह से इंटीग्रेट करने की कोशिश करेंगे। यहाँ के बहादुर लोगों को इसके लिए बधाई देना चाहिए।

हम लोगों का भी इंदिरा काँग्रेस की ओर से पहला प्रयास यही होगा, कि हम इस प्रक्रिया में लोगों के साथ खड़े हों और मैंने अपने सभी भाषणों में पहली बात यही कही है कि हमारी पार्टी का पहला मकसद यही है कि ज्यादा से ज्यादा लोग वोट डालें और इस बात को रजिस्टर करें कि वे प्रजातंत्र के पक्ष में हैं और फिर उसके बाद हमने अपनी पार्टी के लिए अपील की क्योंकि हमारी यह मान्यताएँ हैं कि हमारी पार्टी ही इंदिराजी के उन उसूलों के लिए लड़ रही हैं जो सही मायने में काँग्रेस के उसूल रहे हैं लेकिन जिनसे बाहर हटकर काँग्रेस की जो दुर्दशा हुई है वो सब देख रहे हैं।

एक मुद्दा इस समय जम्मू-कश्मीर में ऑटोनामी की बात को लेकर है। इस मामले में प्रधानमंत्री ने घोषणा की है, हम उसकी ताईद करते हैं कि ऑटोनामी के ढाँचें के बारे में चुनावों के बाद जो चुनी हुई विधान सभा होगी उसी को बहस करनी चाहिए, उसी को फैसला करना चाहिए जिसमें केंद्रीय शासन का भी पूरी तरह से उसमें सहयोग रहेगा क्योंकि सिद्धांत रूप से यूनाईटेड फ्रंट ने इस बात को स्वीकार किया है कि जम्मू-कश्मीर में ऑटोनामी के मामले में हमें कुछ आगे बढ़ना चाहिए। जब ऑटोनामी की बात आती है तो साथ ही साथ यूनाईटेड फ्रंट का भी एक दृष्टिकोण साफ है, हमारी पार्टी का भी साफ है। जम्मू-कश्मीर के जो अलग-अलग रीजन्स हैं, जम्मू है, लद्दाख है, कारगिल है, वेली है, इन सब के अन्दर भी वहाँ के लोकल एसपेरेशन्स को, आशाओं को और वहाँ के विकास की संभावनाओं

को कैसे हम एक साथ जुड़कर आगे बढ़ सकें, ये ध्यान में जरूर करना पड़ेगा। मेरी समझ में बात तो इतनी ही है, बाकी अगर कोई और सवाल हो तो पूछिए हाँ एक और बात मुझे बताना था श्री एस.सी. रेखी जो हमारे स्पोक्स मेन है, उन्हे जनरल सेक्रेटरी का ओहदा भी जम्मू-कश्मीर प्रदेश इंदिरा काँग्रेस में दिया गया है।

प्रश्न: आपकी पार्टी के प्रास्पेक्टस क्या है?

श्री अर्जुनसिंह : देखिए पार्टी के प्रोस्पेक्ट्स बहुत क्लियर कट हैं और हमें तो डिटरमीनेशन के साथ पार्टी के कान्सालिडेशन में पूरी तरह से जुड़ना है और उस दिशा में हम काफी आगे भी बढ़ रहे हैं। आर्गनाईजेशन इलेक्शन भी शीघ्र एनाउन्स होंगे।

प्रश्न: पर वो लोग जिसके बारे में आपने काँग्रेस छोड़ी थी, अब वो इस कोशिश में है कि दूध का दूध और पानी का पानी हो। कौन जगह पर है और कौन असली काँग्रेस है उस स्टेज पर वो ही अगर मगर की बात है....

श्री अर्जुनसिंह : नहीं जो लोग सचमुच में काँग्रेस को सही दशा और दिशा दोनों देना चाहते हैं, मैं उन्हें शुभकामनाएँ दे सकता हूँ, प्रार्थना कर सकता हूँ कि वो लोग सफल हों।

प्रश्न: सोर्स आफ इन्सपरेशन नहीं होंगे उनके लिए आप।

श्री अर्जुनसिंह : नहीं, मैं बहुत साधारण आदमी हूँ। मैं क्या सोर्स आफ इन्सपरेशन होऊँगा?

प्रश्न: पार्टी में बहुत सीनियर हैं आप।

श्री अर्जुनसिंह : वो अलग चीज है, लेकिन बात तो सबको अपने दिल पर हाथ रखकर ही करना होगी न। अगर ऐसी बात चल रही है, तो मैं पार्टी के बारे में और क्या कहूँ सिवाय इसके कि हम आशा करते हैं कि वो सफल होंगे।

प्रश्न: जम्मू-कश्मीर के इलेक्शन्स के बाद सिनेरियो शिफ्ट होगा यू.पी. के तरफ, उस बारे में कुछ आप कहेंगे।

श्री अर्जुनसिंह : यूपी में एक चीज तो साफ उभरकर सामने आई है की एक्रास दी बोर्ड जो पालिटिकल स्पेक्ट्रम है उन सबके अन्दर ये ख्वाईश तो है कि कम्यूनल एलीमेंट्स को कन्डेम किया जाए। उस दिशा में यूनाईटेट फ्रंट वहाँ ज्वाइटली चुनाव लड़ रही है। हम लोगों ने भी यही ख्वाईश व्यक्त की है और पूरी कोशिश होगी जीतने की। चुनाव के नतीजे की घोषणा तो पहले से नहीं हो सकती। लेकिन जो ट्रेन्ड हमको दीख रहे हैं, उसके ख्याल से भारतीय जनता पार्टी का ये दावा कि वो बहुमत पाकर सरकार बना लेगें इसमें मुझे कोई खास जोर नहीं दिख रहा है।

प्रश्न: कितनी सीट्स गेन कर रहे हैं आप जम्मू-कश्मीर के इलेक्शन्स में।

श्री अर्जुनसिंह : हम लोग तो नौ सीट पर लड़ रहे हैं और हमें उम्मीद है कि मिलनी तो चाहिए, सब्सटेंशियल मिलनी चाहिए। धन्यवाद।

समाज सुधार की दृष्टि से शराब बन्दी आवश्यक

11 अक्टूबर, 1996 को न्यूज स्ट्रीट के श्री विश्वम्भर मिश्रा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

प्रश्नकर्ता: *सरकार के वर्किंग के बारे में तरह-तरह की कंट्रोवर्सी चल रही है तो यह सरकार कब तक चलेगी? आप का असेस्मेण्ट क्या कहता है?*

श्री अर्जुनसिंह: कोई सरकार किसी न किसी कण्ट्रोवर्सी में तो आती रहेगी। डिसीजन्स मीन्स कंट्रोवर्सी। नो डिसीजन्स मीन्स नो कण्ट्रोवर्सी। वो तो ठीक है। हर इशु को अल्टीमेटली लार्जर पब्लिक इंटरेस्ट को ध्यान में रखकर ही देखा जाएगा। जहाँ तक चलने का सवाल है, मुझे तो ऐसा नहीं लगता कि कोई कारण है कि जल्दी यह सरकार जाए। ठीक इसी तरह से चलती रहे जैसा कि बेसिक इशुज पर है। छोड़ दीजिए कण्ट्रोवर्सी को। इस पर इंटरेस्ट न लिया जाए, तो इट विल लास्ट फार फुल टर्म।

प्रश्नकर्ता: मेनका गाँधी जी ने तो उसी बात पर रिज़ायन किया है...?

श्री अर्जुनसिंह: मैं मेनका गाँधी जी से कुछ कहना नहीं चाहता।

प्रश्नकर्ता: पिछले दिनों लोक सभा अध्यक्ष पी.ए. संगमा ने कहा कि राष्ट्रीय सरकार दस साल तक कम से कम चलनी चाहिए तो राष्ट्रीय सरकार के बारे में आप की क्या राय है?

श्री अर्जुनसिंह: उन्होंने तो डिबेट के लिए कहा है। डिबेट कम से कम होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता: उन्होंने कहा कि कम से कम दस साल तक राष्ट्रीय सरकार चले।

श्री अर्जुनसिंह: सत्ताइस साल तक चले, लेकिन डिबेट तो हो, इसमें कोई सहमति या आम सहमति बने तब न। डिबेट के लिए ठीक है, डिबेट होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता: राष्ट्रीय सरकार के बारे में आप की राय अब तक क्या है? अगर डिबेट हो तो चल सकता है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, डिबेट हो फिर तो नतीजा आएगा न। सब लोगों को अपनी राय व्यक्त करने का मौका मिले।

प्रश्नकर्ता: पावर ग्रेबिंग करने में काँग्रेस आगे रही है, लेकिन इस बार ऐसा क्या हुआ कि काँग्रेस पीछे रह गई। आप तो पुराने काँग्रेसी हैं।

श्री अर्जुनसिंह: हाँ, लेकिन काँग्रेस का पावर ग्रेबिंग का सवाल नहीं है। काँग्रेस का समूचा चरित्र जो उस की स्थापना का औचित्य था, यदि वही खत्म कर दिया तो पावर तो इंसीडेंटल होता है न।

प्रश्नकर्ता: भाजपा के उभरते हुए युग, को रोकने के लिए आप की क्या रणनीति है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो यह मानता ही नहीं हूँ कि भाजपा का बढ़ता हुआ युग है।

प्रश्नकर्ता: उत्तर प्रदेश में अभी ऐसा हुआ कि भाजपा लार्जेस्ट पार्टी बन गई। लोकसभा में सिंगल लार्जेस्ट पार्टी बन गई। धीरे-धीरे तो प्रभाव बढ़ता जा रहा है...?

श्री अर्जुनसिंह: उत्तर प्रदेश में बढ़ी है? पार्टी की बात छोड़ दीजिए। अरे वो तो ठीक है संख्या वाली बात। न परसेंटेज बढ़े हैं, न सीट बढ़ी है। 93 की ही पोजीसन है?

प्रश्नकर्ता: पिछले दिनों पूरे देश में काँग्रेस की छीछलेदारी हुई है। काँग्रेस से लोगों का भरोसा उठता जा रहा है। सारा का सारा वोट बी.जे.पी. के पास चला गया। क्या आप ऐसा कोई प्लान तैयार कर रहे हैं या बना रहे हैं, जिस से पूरे देश में काँग्रेस फिर से सत्ता में आ सके।

श्री अर्जुनसिंह: कोशिश तो करनी चाहिए, लेकिन कोई अकेले मेरे प्लान से तो नहीं होगा। काफी लोगों का दिमाग अब इसमें लग रहा है। (हँसी)

प्रश्नकर्ता: हरियाणा में जैसे शराब बंदी हुई है तो फिर अपनी-अपनी दलीलों से लोग इसको सही ठहरा रहे है और कुछ लोग इसका विरोध कर रहे हैं। आप की नजर से क्या होना चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ कि शराब की खपत की बढ़त तो देश के लिए ठीक नहीं है और इसमें....

प्रश्नकर्ता: इसमें साढ़े छः सौ करोड़ का लास हुआ है।

श्री अर्जुनसिंह: वह तो रिवेन्यू की बात हुई।

यदि आप इस को बंद करेंगे तो लास तो होगा ही होगा, ऐसा तो कोई रास्ता है नहीं कि बंद हो जाए और रेवेन्यू की लास न हो। लेकिन सामाजिक रूप से और सोशल रिफार्म के व्यू से भी इस पर बंधन तो लगना चाहिए और जरूर ही ऐसा कोई रास्ता हो कि बहुत ज्यादा रिसोर्सेज की कमी भी न हो और रोक भी लग सके, क्योंकि इसकी सीमा बढ़ती जा रही है और सामान्यजनों के बीच में विशेष कर महिलाओं के बीच में बहुत ही तीव्र विरोध है इसका।

प्रश्नकर्ता: पिछले दिनों मैं फरीदाबाद जा रहा था। सब लोग कह रहे हैं, मतलब इससे अपर क्लास के जो लोग हैं, वो दिल्ली या कहीं भी जाकर खरीदेंगे, जहाँ बेन नहीं लगा है, लेकिन जो गाँव के लोग हैं, उन पर तो फर्क पड़ा।

श्री अर्जुनसिंह: क्या फर्क पड़ा?

प्रश्नकर्ता: मतलब यह कि लोगों को शराब मिलना बंद हो गई। क्राइम कम हो जाने से बहुत बड़ा फर्क पड़ा है।

श्री अर्जुनसिंह: फार द बेटर आर अदर?

प्रश्नकर्ता: फार द बेटर। दिल्ली में जैसा प्रधान मंत्री ने यह बात कही कि हम क्राइम कंट्रोल करेंगे तो दिल्ली में क्या चीफ मिनिस्टर या गवर्नर नहीं हैं, क्या कमी थी यहाँ जिससे प्राइम मिनिस्टर को यह स्टेटमैन्ट देना पड़ा।

श्री अर्जुनसिंह: हालत खराब हो तो कुछ न कुछ करना चाहिए। दिल्ली के हालत तो काफी खराब हैं?

प्रश्नकर्ता: ला एण्ड आर्डर, मतलब इतनी सारी सेण्ट्रल गवर्नमेंट काम कर रही है...

श्री अर्जुनसिंह: वो तो एम्फेसाइज कर रहे थे, उसकी इम्पॉर्टेन्स को। स्टेट गवर्नमेंट को रिप्लेस करने वाली बात नहीं है।

प्रश्नकर्ता: रिप्लेस करने की बात तो नहीं है, लेकिन ला एण्ड आर्डर की बात हो गई तो हमारे एडमिनिस्ट्रेशन में जो इतने सारे लोग काम कर रहे हैं, इसका मतलब यह नहीं है, कि प्रधान मंत्री को ऐसा कहना पड़े?

श्री अर्जुनसिंह: है भी तो एफेक्टिव उस हद तक तो नहीं है, वरना सब क्यों बढ़ता?

प्रश्नकर्ता: इतना करने के बाद भी रोज मर्डर हो रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: अभी कोई नई मशीनरी रिप्लेस नहीं की गई। मैं कह रहा हूँ वो तो उन को एम्फेसाइज़ करने के लिए था। एक ऐसा इशु है। चलिए, अब तो सभी सवाल हो गए आप के।

आम मतदाता के सहारे चुनाव जीते जाते हैं

22 नवम्बर, 1996 को ग्वालियर में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्न: आपने जब कॉंग्रेस छोड़ी थी तो इसी स्थान पर आपने कहा था कि यह एक लॉंग मार्च हैं। तो क्या आप मुकाम पर पहुँचे? आप क्या महसूस करते हैं कि इस मुकाम पर आपका लॉंग मार्च कहाँ तक पहुँचा?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, लॉंग मार्च मुझे याद है, मैंने कहा था उस संदर्भ में बहुत ठीक है, जिस संदर्भ में कॉंग्रेस और देश की स्थिति उस समय बनी थी, ये कहने में मुझे कोई बड़ी प्रसन्नता नहीं है। लेकिन करीब-करीब जो आशंकाएँ हम लोगों ने व्यक्त की थी। वह सब सही निकली और एक बहुत बड़े संकट में पार्टी फँस गई और पार्टी के फँस जाने से अपनी तरह से चिंता की बात थी। लेकिन उससे भी ज्यादा समन्वय उस वक्त भी साफ नजर आ रहा था, देश की स्थिति भी संकटमय थी।

प्रश्न: आप चुनाव की माँग कर रहे थे?

श्री अर्जुनसिंह: इसलिए मैं कह रहा हूँ कि व्यक्तिगत बात में मैं नहीं जाना चाहता कि मैंने क्या कहा और किसी ने क्या कहा क्योंकि वो फिर व्यक्ति परख बात हो जाती है।

प्रश्न: कॉंग्रेस और देश की परिस्थिति के बारे में आपके क्या विचार हैं?

श्री अर्जुनसिंह: यथार्थ का दर्शन हो जाना ही कोई कम छोटी बात नहीं है। और कम से कम यथार्थ का दर्शन हो गया है। इसमें तो कोई संदेह नहीं है।

प्रश्न: पार्टी को कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है?

श्री अर्जुनसिंह: पार्टी में जिन लोगों को कुछ बनाया जाता है, उनके बलबूते पर थोड़ी पार्टी चुनाव जीतती है, पार्टी की मजबूती तो होती है आम लोगों की सोच से। पार्टी के बारे में उनके क्या मत हैं, अलग-अलग समाज के लोगों के बीच में पार्टी के बारे में क्या दृष्टिकोण हैं। ये सब मिलकर कुछ होता है कोई दो-चार व्यक्ति मिलकर थोड़ी पार्टी को जिताते हैं।

प्रश्न: संयुक्त मोर्चा की सरकार के बारे में आपको क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: संयुक्त मोर्चा की सरकार तो अभी अपने आप में एक विलक्षण प्रयोग है। और मैं यही कहना चाहूँगा कि जिन परिस्थितियों में ये सरकार बनी है, अभी तक जो कुछ हो चुका है वह कोई कम नहीं है। दिशा भी दी है बाकी तो अभी छः महीने भी तो नहीं हुए।

प्रश्न: कॉंग्रेस से अलग होते समय आपने एक मुद्दा उठाया था। राजीव गाँधी हत्या काण्ड का, उस मुद्दे में शिथिलता की बात की थी और आप कॉंग्रेस से अलग होने के बाद उस मुद्दे को भी लगभग विस्मृत से कर चुके हैं। उस मुद्दे की जाँच की क्या स्थिति है? उन आरोपियों के नाम सामने क्यों नहीं आ पा रहे है?

श्री अर्जुनसिंह: ऐसी मेरी कोई आम सभा नहीं हुई, पिछले एक साल से ज्यादा समय में जिसमें मैंने यह विषय न उठाया हो। पार्टी की हमारी जितनी भी कॉंफ्रेंसेस हुई, जो प्रस्ताव आए उनमें सब में यह विषय है तो विस्मृत करने का सवाल ही नहीं है।

प्रश्न: नहीं लेकिन अभी जो सरकार है, उसमें आपकी पार्टी शामिल है तो सरकार पर कोई दबाव इस काण्ड की जाँच के लिए डाला गया।

श्री अर्जुनसिंह: इसके बारे में अभी तो कोई आवश्यकता इसलिए महसूस नहीं करता क्योंकि ये सरकार उस दिशा में उसका दृष्टिकोण पूर्व सरकार से बिल्कुल अलग है। जब कोई ऐसी बात सामने आएगी मै जरूर कहूँगा।

प्रश्न: देवभोग हीरा खदानें विदेशी कंपनियों को देने के बारे में आपकी राय क्या है?

श्री अर्जुनसिंह: जो निर्णय ऐसे विषयों पर हो वह पूर्णतः पारदर्शी हो और उस निर्णय को लेने में और लोगों को

भी शामिल किया जाय। और उस निर्णय का जो आधार हो वह प्रदेश के विकास को और गति देने में सहायक हो। उन मापदंडों से कोई निर्णय लिया जाय।

प्रश्न: नर्मदा बाँध की ऊँचाई का गुजरात विरोध कर रहा है।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, वह तो एक तरफा निर्णय हुआ गुजरात का शायद जो इस योजना की प्रगति में बाधक ही बनेगा और ऐसे मसलों पर तो एकतरफा निर्णय नहीं होना चाहिए।

प्रश्न: उत्तर प्रदेश के मसले पर लगातार तीन दिन से संसद में हंगामा हो रहा है।

श्री अर्जुनसिंह: ऐसा है कि हँगामा करके सदन की बैठक नहीं चलती। अगर ऐसी ही रूपरेखा किसी की है तो वह तो कोई भी 50 व्यक्ति जब चाहे तब ऐसी स्थिति पैदा कर दें। मेरे ख्याल से यह तो ठीक है कि प्रोटेस्ट करने का उनका अधिकार है। पर इस पर सीरियस डिबेट होना चाहिए क्योंकि यह केवल बी.जे.पी. का सवाल नहीं है। यह देश की बदलती हुई राजनीति का परिदृश्य है। उसमें इस तरह की परिस्थितियाँ निर्मित हो, उनका समाधान करने के लिए कोई व्यावहारिक आधार सबकी आम सहमति से बनें, यह ज्यादा महत्वपूर्ण है।

प्रश्न: आपकी काँग्रेस में वापसी की बात क्यों आ रही है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, काँग्रेस के मूल सिद्धांतों और आदर्शों से तो हम अलग नहीं हुए थे। अगर उनको मजबूत करने का कोई दूसरा भी विकल्प हो सकता है, तो उस विकल्प को अगर उचित परिस्थितियाँ बने तो उस पर विचार करने में क्या हर्ज है। हमारा व्यक्तिगत तो किसी से कुछ विरोध नहीं है।

प्रश्न: आपका स्टेण्ड बाबरी मस्जिद का था, दूसरा कौनसा था?

श्री अर्जुनसिंह: दूसरा करप्शन का था। करप्शन का क्या असर हो रहा है, जिस प्रकार से जो प्रमाणिक मान्यताएँ हैं, हमारी प्रजातांत्रिक पद्धति से कैसे खिलवाड़ हो रहा है? उसका क्या असर पड़ता है? वह भी साफ हो जाय।

प्रश्न: रीजनल पार्टियाँ पावरफुल हो रही हैं?

श्री अर्जुनसिंह: रीजनल पार्टी के पावरफूल होने की जो पृष्ठभूमि होती हैं, ये कोई नई बात नहीं है। लेकिन जब वो पार्टियाँ इस दृष्टिकोण को अपनाना शुरू कर दें कि जो उनका क्षेत्रीय दृष्टिकोण है, जो क्षेत्रीय हित है, वह राष्ट्र हित से भी ऊपर हैं, तो खतरा पैदा होता है। अभी तक मैं नहीं समझता कि कही भी यह स्थिति निर्मित हुई हो। इसलिए भारत जैसे विशाल देश में क्षेत्रीय समस्याएँ और क्षेत्रीय दृष्टिकोण अगर कहीं प्रबल होता है, अगर कहीं ज्यादा उभरकर आते हैं, उससे कोई चिंतित होने की बात नहीं है।

हम आने वाले 20-25 वर्षों में हिन्दुस्तान को दुनिया के सबसे मजबूत देशों के सामने ले जाकर खड़ा करेंगे, लेकिन यह होगा तभी जब हमारी नींव मजबूत हो। वह नींव कौन है, उस नींव का पत्थर जो है वह किसान है, समाज का सबसे गरीब और कमजोर वर्ग है, हरिजन है, आदिवासी है, पिछड़े वर्ग के लोग हैं, उन्हीं की संख्या तो देश में ज्यादा है। जब ये लोग मजबूत होंगें तो देश अपने आप मजबूत हो जाएगा।

— श्री अर्जुनसिंह

5 अक्टूबर, 1997



1997

श्री अर्जुनसिंहः मध्यप्रदेश में

तेंदू पत्ता नीति का कार्यान्वयन सही ढंग से हो

3 फरवरी, 1997 को सीधी में जिला वनोपज सहकारी संघ के कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों के शपथ ग्रहण समारोह में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश —

इस समारोह के अध्यक्ष माननीय इन्द्रजीतसिंहजी पटेल, कर्मचारी संघ के अध्यक्ष महोदय, सभी पदाधिकारीगण और अन्य सम्मानित नागरिक बंधुओं। यह बहुत ही सुखद संयोग है कि ये कर्मचारी संघ का शपथ समारोह हो रहा है, और लघु वनोपज सहकारी संस्थाओं के सान्निध्य में हो रहा है, क्यों कि वन कर्मचारी मूलतः मेरी नजर में वनवासियों के ही हितों के प्रमुख संरक्षक के रूप में काम करते हैं। जब ऐसा नहीं होता है, विसंगतियाँ होती हैं, तो परेशानियाँ बढ़ती हैं, लेकिन आज इस सहयोग का लाभ ले कर, जो आप ने शपथ ली है, उस का संदर्भ सदैव याद रखें, यह मेरी आप से प्रार्थना है।

भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक समीकरणों को आजादी के बाद से बदलते रहने का आप चाहे उसे परिस्थिति की वजह से कहें या उसे सामान्य रूप से समाजवाद की ओर बढ़ती हुई प्रक्रिया से जोड़े, लेकिन ये समीकरण बदलने का प्रयास और प्रेरणा, हमारे देश में ऐसे नेताओं से मिलती रही, जो सदैव समाज के समन्वित विकास में विश्वास करते थे और विशेष करके समाज के सब से गरीब और कमजोर वर्गों के हितों को निरन्तर ध्यान में रखते हुए उन को पूरा करने की चेष्टा करते थे।

अभी तो हम लोग इस बनते हुए इतिहास के बहुत निकट हैं। इसलिए शायद इस के सही मूल्य का आँकलन हम आप नहीं कर सकते। आज से पचास वर्षों बाद जब इन घटनाओं का इन कदमों का मूल्याँकन होगा, क्योंकि अभी तो बहुत कुछ होना बाकी है, तब पता चलेगा कि इस की शुरूआत करने वाले लोगों की क्या भावना और प्रेरणा थी? तेंदूपत्ते के मामले में श्रीमती इंदिरा गाँधी की सोच मौलिक थी।

मई, 78 में खण्डवा में लोक सभा का उप चुनाव हो रहा था। उस वक्त काँग्रेस से इंदिरा जी को निष्कासित कर दिया गया था। उन्होंने काँग्रेस (आई) का गठन किया था और उसी के उम्मीदवार को वहाँ खड़ा कर के उस के प्रचार के लिए वहाँ आई थीं खण्डवा। मई के महीने में गरमी तो वैसे ही बेतहाशा रहती है और खण्डवा की गरमी तो सारे हिन्दुस्तान में मशहूर है। वे दौरे पर जा रही थीं। मैं भी उन के साथ कार में बैठा था। जंगलों से हम लोग जा रहे थे कि एकाएक उन्होंने देखा कि बीस-पच्चीस औरतें सिर पर टोकरी लिए कार को निकल जाने के लिए खड़ी थी। उन्होंने गाड़ी रूकवा दी और उतरकर उन महिलाओं से पूछने लगी की आप इस समय कहाँ जा रही है। पहले तो वे आदिवासी महिलाएँ एक दम घबड़ा गई, कुछ जवाब नहीं दे सकीं। फिर हम लोग उतरे। मैं ने उन से कहा कि ये इंदिरा जी हैं। ये जानना चाहती हैं कि आप लोग कहाँ जा रहे हैं। मैं ने तो देख लिया था। कि उन की टोकरियों में किसी की टोकरी में बच्चा था और ज्यादा की टोकरियों में तेंदू के पत्ते थे। तो उन्होंने कहा कि हम लोग तेंदू पत्ता

तोड़ने जा रहे हैं और अभी एक घण्टे के बाद घर लौट जाएँगे। करीब एक बजे की बात है। उन्होंने कहा कि पत्ता तोड़ने का क्या मतलब है? तो मैं ने उन्हें बताया कि तेंदू का पत्ता इस सीजन में टूटता हैं। और चूँकि इस का सीजन बहुत थोड़ा रहता है। इसलिए दोपहरी में भी इन को यह काम करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि बच्चे क्यों लिए हैं? मैं ने कहा- बच्चों को कहाँ रख कर जाएँ। उन बच्चों को उन्होंने पत्ते का ही दोना बनाकर उड़ा दिया था। वे द्रवित हो गई और वहाँ से चलने के बाद विस्तार से मुझ से पूछने लगी की पूरी प्रक्रिया क्या है?

जो कुछ मैं जानता था वह मैं ने उनको बताया, और प्रधान मंत्री की शपथ लेने के बाद जो पहला आदेश इंदिरा जी का था, प्रधान मंत्री की हैसियत से उस में नई तेंदू पत्ता नीति को किस प्रकार से बदलना चाहिए उस का निर्देश था। उस प्रक्रिया को हम लोगों ने आगे बढ़ाने की कोशिश की। उस का विरोध तो स्वाभाविक था, क्योंकि जिस व्यक्ति को पाँच रुपए लगाने के बाद सौ रुपए का मुनाफा होता हो, कैसे वो मान जाए कि ये मुनाफा अब पच्चीस रुपए पर ला दिया जाए।

अब ये दो अध्यक्ष और उपाध्यक्ष बैठे हैं। मैं डी.एफ.ओ. साहब से चाहूँगा कि कभी बुला कर इन से बात करें। जब ये वनोपज की समितियाँ नहीं बनी थीं, तब इन के गाँव की महिलाएँ, जब पत्ता तोड़ कर फड़ पर लाती थी, तो उन पर क्या गुजरती थी और अब ये अध्यक्ष बन गए हैं। अब इन को क्या करना चाहिए और इन की मदद से कर्मचारियों को क्या करना चाहिए? क्योंकि मैं जानता हूँ अभी भी पूरे प्रदेश में वन विभाग ने तेंदू पत्ता की नीति को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया है। मजबूरी है। क्योंकि शासन की नीति है, करना है। लेकिन जैसे पेड़ों की कटाई की नीति भी तो शासन की नीति है। कूप बनते हैं। उन में अपना ठेका होता है। जिस तत्परता और जिस प्रकार से उस नीति का अनुसरण किया जाता है, उस प्रकार से तेंदूपत्ता की नीति का अनुसरण नहीं होता।

मजदूर से मालिक बनाने वाली बात सैद्धांतिक रूप से तो मध्यप्रदेश सरकार ने स्वीकार कर ली है और संयुक्त मोर्चा सरकार ने भी जो अपना कामन मिनिमम प्रोग्राम बनाया था, उस में इस को स्वीकार किया। इस के बावजूद कि जो इस के बहुत से घटक थे, उन को मालूम ही नहीं था कि तेंदूपत्ता व्यापार का क्या मतलब है? लेकिन सब लोगों ने मिल कर समझाया कि इस को कामन मिनिमम प्रोग्राम में रखिए। तो अब तो वो राष्ट्रीय नीति बन गई है। उस का किस प्रकार से क्रियान्वयन किया जाए। अब वो नीति केवल तेन्दू पत्ते से संबंध नहीं रखती, मजदूर से मालिक बनाने से संबंध रखती है। तो मध्यप्रदेश की सरकार ने उस को स्वीकार किया है और मुझे आशा है कि प्रदेश के मुख्य मंत्री इस नीति को कार्यान्वित करने में जो कुछ भी प्रक्रियाएँ करनी हैं, उन्हें कर के सचमुच में मध्यप्रदेश में मजदूरों को आदिवासी,हरिजन, पिछड़े वर्ग के जो गरीब लोग हैं, उन मजदूरों को मालिक बनाने में एक ऐसा प्रयास करेंगे, जिस से इंदिरा जी के उस सपने को हम लोग पूरा कर सकें।

इस अवसर पर मैं आप सब को साधुवाद देता हूँ। धन्यवाद देता हूँ और बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

आज़ादी के बाद राजनैतिक परिवर्तन

8 जून 1977 को भोपाल में काँग्रेस के प्रदेश प्रतिनिधियों को संबोधन के प्रमुख अंश—

आदरणीय साथियों, एक नए ऐतिहासिक मोड़ पर हमारे देश की एक महान संस्था आज फिर खड़ी है। और हम सब जो उस संस्था से जुड़े हैं, उनके लिए ये गौरव और संतोष का क्षण भी है। लेकिन इसके साथ ही साथ गहरी चिंता का भी समय है।

इस साल हम अपनी आजादी की 50 वीं वर्षगाँठ मना रहे है। तो इन 50 वर्षों में जो कुछ हुआ है, या जो

कुछ नहीं हो सका, उस पर नजर डालना बहुत जरूरी है, या जो कुछ नहीं हो सका, उस पर नजर डालना बहुत जरूरी है। और आपकी अनुमति से मैं उसी संबंध में दो-चार बातें कहूँगा। क्योंकि मेरे मत में वही महत्वपूर्ण हैं बाकी जो चीजें है वे हम सबके लिए औपचारिक हैं। जिन्हें हम पूरा करेंगे। इन 50 वर्षों में सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि देश की आजादी सुरक्षित रही। कोई खतरा देश की आजादी पर नहीं आ सका। खतरा आया लेकिन उसका मुकाबला हम सब कर सकें, ऐसी स्थिति भारत के साथ ज्यादा हुई और देशों को नहीं हुई। आप तो दूर न जाय, एशिया महाद्वीप में ही आप नजर दौड़ाएँ तो बहुत सारे देश जो भारत के साथ आजाद हुए थे, कहने के लिए आजाद है, पर सही मायने में आजाद नहीं है। सही मायने में भारत वर्ष अपने को आजाद बनाए रख सका। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

व्यक्तिगत किसी की आलोचना या किसी के बारे में कुछ कहना मैं उचित नही मानता हूँ लेकिन यदि हम अपने देश के विगत 7,8,10 वर्षों के घटनाक्रम को देखे तो कुछ चीजें बहुत साफ नजर आती है। इंदिरा जी की शहादत के बाद लोगों को यह अहसास होने लगा कि काँग्रेस के जो नेता थे जिनको आगे रखकर काँग्रेस चलती थी वे समाप्त होते जा रहे हैं। उसके बाद राजीव जी आए और उनके हाथों में बूझने के पहले मशाल थम गई और फिर काँग्रेस का कारवाँ चलने लगा। इस बीच में जो एक बहुत महत्वपूर्ण तब्दीली दुनिया के राजनीतिक रंगमंच पर आई, जो शीतयुद्ध, कोल्डवार बड़े-बड़े अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों का एक दूसरे के खिलाफ समाप्त हो गया। और जो एक तनाव था, अन्तर्राष्ट्रीय वह भी समाप्त हो गया। ऐसे मौके पर श्री राजीव गाँधी 1984 में इस देश के प्रधानमंत्री के रूप में सामने आए। उस समय यह कोशिश हुई कि अब संस्था जो भारत को पूरी तरह से अपने राजनीतिक प्रभाव में रखकर और इस देश को आगे बढ़ा रही है, उसे अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर उभरने नहीं दिया जाए।

नेहरू ने आजादी के बाद यही बात तो कही थी कि हम सबके दोस्त है, हमें किसी का गुलाम नहीं होना चाहिए। लेकिन जो कठोर सत्य होते हैं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में वह जंजीर पहनाकर गुलाम नहीं बनाते। अपने प्रभाव क्षेत्र में लोगों को लाकर रखने की एक प्रक्रिया होती है वह बराबर चलती रहती है। जवाहरलाल जी और मोरारजी भाई ने उसका मुकाबला किया। राजीव जी के आने के समय इस प्रभाव क्षेत्र को बनाने के हिमायती जो लोग थे उनको ऐसा लगा कि अगर श्री राजीव गाँधी का नेतृत्व इस देश में मजबूत हो गया तो कम से कम अगले बीस साल के लिए हिन्दुस्तान के ऊपर किसी को ऊँगली रखने का मौका नहीं मिलेगा।

आने वाले इतिहासकार बहुत सी बातें लिखेंगे, थोड़ी सी बातों से हम और आप परिचित है वह जानते हैं कि क्या कोशिश नहीं हुई। 1985 से बोफोर्स का सिलसिला चला कि 64 करोड़ की दलाली खा ली है और राजीव गाँधी ने खा ली है। 85 से लेकर अब हम 97 में हैं 12 साल बाद अब कहते हैं कोई प्रमाण नहीं कि राजीव गाँधी ने पैसा खा लिया। श्री राजीव गाँधी ने पार्लियामेंट में पहले दिन ही कहा था कि न तो मैं और न मेरे परिवार के कोई सदस्य इसमें शामिल है, लेकिन तब हम सब समझते थे कि यह केवल वक्तव्य है, बदनामी से बचने का। जब मिडिलईस्ट की लड़ाई शुरू हुई तो उस समय कोल्डवार समाप्त हुआ ही था तथा देशों का प्रभा मण्डल फिर से नहीं बना था। उस समय काँग्रेस के सहयोग से चन्द्रशेखर जी प्रधान मंत्री बने थे और आपको याद होगा कि अमेरिका के लड़ाकू विमानों के लिए भारत से जाने के लिए अनुमति देने के विषय को लेकर विवाद हुआ था पर काँग्रेस ने उसका विरोध किया कि हमारी कभी ऐसी नीति नहीं रही कि हम दो देशों के झगड़े में सहायक बने। लेकिन हम किसी के बन जाय ऐसा हमने कभी नहीं किया उस दिन से यह बात साफ हो गई कि भारत की वह आवाज जो 1947 से लेकर 84 तक उठती रही वह आवाज फिर से उठेगी, उसके बाद राजीव जी की हत्या कर दी गई और काँग्रेस का एक बिखराव शुरू हुआ। एक अंधकार का वातावरण बना, पर उस समय किसी तरह से लोगों ने मिल मिलाकर बात बनाई, सरकार

बनी, आगे बात चलाने की कोशिश हुई लेकिन यह कहने में मुझे जरा भी संकोच नहीं है कि वह जो प्रखर राष्ट्रीयता की ज्योति थी, जिसके प्रकाश और ज्योति से भारत का नेतृत्व प्रेरित होता था वह नहीं जग सकी।

अब सवाल यह है कि जिस दौर से गुजरकर हमने काँग्रेस का पराभव देखा उसके इतिहास में जो सबसे बड़ी पराजय हुई 1996 में लोकसभा के चुनावों में हुई। आज प्रश्न यह है कि यदि काँग्रेस को अपने पैरों पर फिर से खड़ा करना है तो हमें उन कारणों को निडरता से और कठोरता से देखना पड़ेगा। बिना किसी लाग लपेट के जिनकी वजह से जनता का विश्वास इस महान संस्था के ऊपर से उठता चला गया और जहाँ भी जो कमी है उस कमी को पूरा करना पड़ेगा। कल का आपका जो फैसला होगा वह इस पृष्ठभूमि में होगा। मैंने उन्हीं बातों की और ध्यान आकर्षित किया है। कुछ लोग नाराज हो गए हैं लम्बे-चौड़े बयान आ रहे हैं यह समझकर कि अभी-अभी तो अर्जुनसिंह को वापस लिया गया है फिर से डाट डपटकर इनको ठीक कर दिया जायगा। यह उनकी बहुत बड़ी गलतफहमी हैं। मैं डाँट डपट से डरने वाला आदमी नहीं हूँ। अगर हमारी वफादारी अपने देश और संस्था के प्रति नहीं रहेगी तो किस वफादारी से हम आगे चलेंगे। एक बड़ा खतरा जो पार्टी को है उस दृष्टिकोण से है कि हमारा काम चलता रहे हम आगे बढ़ते रहे, हमको सब कुछ मिलता रहे, काँग्रेस भले रसातल में चली जाय। अब ऐसे लोगों के सामने डटकर खड़ा होना है, जो उस संस्था को जो बेचना और खरीदना चाहते हैं चाहे वह कोई भी हो।

महाराष्ट्र को काँग्रेस का गढ़ माना जाता था। आखिर 94 में वहाँ सरकार चली गई। हमारे शरद पवार जी ही मुख्यमंत्री थे, आंध्रप्रदेश जहाँ के हमारे प्रधानमंत्री थे, 213 का बहुमत था 30 में सिमटकर हम रह गए। यह चिंता वाली बात थी, पर ऐसी चीजों के बारे में चिंता करना उस समय जुर्म था। आज फिर ऐसे ही लोग संगठन पर हावी होना चाहते है। इन सब चीजों को ध्यान में रखकर मेरे मन में आज काँग्रेस अध्यक्ष के रूप में श्री सीताराम केसरी को हमारा समर्थन मिलना चाहिए। भले ही वे 82 वर्ष के हो, उन्होंने अपने थोड़े से समय में काम करने का प्रयास किया है। 9-10 महीनें में आदमी कर ही क्या सकता है। लेकिन कम से कम उन्होंने दो एक चीजें करके यह विश्वास दिलाया है कि वे संस्था और देश के हित में कठोर निर्णय लेने मे हिचकिचाएँगे नहीं, निर्णय कुछ गलत हो सकते हैं और कुछ सही हो सकते हैं।

जहाँ तक मध्यप्रदेश का सवाल है अभी तो कल तक हमें इस बारे में कोई बात करनी नहीं है और न किसी की उम्मीदवारी की चर्चा करनी है, लेकिन काँग्रेस की चर्चा करनी है जिसको यहाँ के प्रतिनिधिगण चर्चा करना चाहेंगे वे करेंगे। मैं इतनी ही बात कहना चाहता हूँ कि मध्यप्रदेश में भी काँग्रेस की हालत अच्छी नहीं है। ईमानदारी से आज मध्यप्रदेश में अगर चुनाव हो जाय तो काँग्रेस के सदस्यों की संख्या एक सौ तक पहुँचनी मुश्किल है और ऐसा होना कोई अनिवार्य नहीं है। बात सुधारी जा सकती हैं मध्यप्रदेश में जो कुछ फैसला होना है हम व्यक्ति के आधार पर फैसला करने के हक में नहीं है, पूर्णरूपेण संस्था के हित में ही फैसला होना चाहिए।

कल एक वोट आपको बिना मन के भी देना हैं। मन से तो एक वोट देना है केसरी जी को, दूसरा जो वोट देना है वह राजेश पायलट जी को देना है। इसलिए नहीं कि राजेश पायलट हमारे यहाँ आए थे, इसलिए नहीं कि मै कह रहा हूँ लेकिन नियमों के मुताबिक अगर हम केवल एक ही वोट देंगे तो हमारा पूरा मत अवैध हो सकता है और इसलिए प्रथम मत जो हमारा है वह अवैध न हो इसलिए जरूरी है कि द्वितीय मत भी हम किसी को दें और जब देना ही है तो राजेश पायलट को ही दे, नौजवान है, तर्जुबा पा रहे हैं और बाकी सब चीजें तो ठीक ही है।

आप सब लोग जिस भावना और जिस समर्पण भाव से यहाँ आए है आप सबका पुनः-पुनः स्वागत करता हूँ। आने वाले दिनों में मध्यप्रदेश और देश में काँग्रेस के सिपाही के रूप में जो आपकी भूमिका शुरू हुई है, वह भूमिका

महत्वपूर्ण हो ऐतिहासिक हो। हम सब के लिए और प्रदेश और देश के लिए लाभदाई हो। यही हम सबकी मंगल कामना है। जयहिन्द।

भूमि बन्दोबस्त में भ्रष्टाचार

5 अक्टूबर, 1997 को मिसरोद (भोपाल) में किसान सम्मेलन में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश —

आज की सभा के अध्यक्ष माननीय पटेलजी, और सभी ग्रामीण साथियों, अभी जब आपकी ओर से किसानों से संबंधित प्रमुख समस्याओं का जिक्र हो रहा था तो मेरे मन में एक बात बार-बार आ रही थी कि जो कुछ किसानों से जुड़े हुए सवाल हैं, खेती बाड़ी से जुड़े हैं, चूँकि वे जीवन से जुड़े हैं उनकी आर्थिक व सामाजिक आवश्यकताओं से जुड़े हो, निश्चय ही उनको प्राथमिकता मिलना चाहिए थी।

हम अपनी आजादी की 50 वीं वर्षगाँठ इस साल मना रहे हैं। यदि हम पीछे नजर डाले तो खासकर हमारे बीच में जो बुजुर्ग हैं, सयाने लोग हैं, वो जरूर याद करेंगे कि आज से 50 साल पहले जो ग्रामों की हालत थी, उस समय और आज में कितना फर्क हैं। आज बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति बेहतर है।

यह जो परेशानियाँ नजर आ रही हैं, मेरी समझ में प्रशासनिक ज्यादा हैं और मौलिक कम हैं। एक ओर तो शासकीय अधिकारी इस बात से दु:खी हैं कि जो उनके हाथ में अधिकार थे, वह आज पंचायतों, जनपद पंचायतों, जिला पंचायतों को चले गए हैं। आपको जो अधिकार मिले हैं, उन पर अमल नहीं हो पा रहा हैं। इस चीज को दूर करने की जरूरत हैं। इस विषय पर मैं पहले भी मुख्यमंत्री जी से चर्चा कर चुका हूँ। उन्होंने आश्वस्त किया हैं, इस मामले पर, बहुत खुलकर आपसे बहस करके जो कठिनाइयाँ आ रही हैं उनको दूर करने की कोशिश करेंगे।

जो आपसे संबंधित प्रश्न हैं, न्यूनतम मूल्य की नीति का वह तो श्रीमती इंदिरा गाँधी ने 1968 में लागू कर दी थी। उनकी सोच यह थी कि हम किसान को जब तक आश्वस्त न कर दें कि वह जो मेहनत करता हैं, उसका उनको न्यूनतम मूल्य तो मिलें, वरना यह विडम्बना ही बनी रहेगी कि जितनी ज्यादा पैदावार वह करेगा उतनी ही कम कीमत उसको मिलेगी।

इस बात को श्रीमती इंदिरा गाँधी ने बहुत बारीकी से समझा था। हम इस बात को गर्व से कहते हैं कि अब हिन्दुस्तान किसी दूसरे देश के सामने हाथ पसारकर अपने देश के लोगों के लिए अनाज नहीं माँगता हैं। इसके पीछे कारण ही यह है कि इस आर्थिक पहलू को समझकर श्रीमती इंदिराजी ने यह नियम लागू किया कि ज्यादा पैदावार हैं, तो भी किसान को सस्ते दाम पर न बेचना पड़े और एक न्यूनतम स्तर पर उसकी पैदावार को खरीदा जा सकें और यही वजह है कि किसान ने पैदावार को बढ़ाया और आज सारा देश आत्मनिर्भर हैं। इस न्यूनतम मूल्य के सिद्धांत पर तो व्यापारी उसके ऊपर का मुनाफा तो कमा सकता है लेकिन किसान की मजबूरी पर आधारित मुनाफा नहीं कमा सकते।

एक दूसरी बात यहाँ सामने लाई गई जो एक प्रकार से किसानों से तो जुड़ी है लेकिन कैसे किया जाय? यह इस पर निर्भर करता है, उससे किसानों को कितना फायदा होगा, कितना नुकसान होगा? ग्रामीण अँचल में रिकार्ड का बनना बहुत जरूरी है ताकि लोगों को मालूम हो कि हमारी जमीन कहाँ से है और किसान अपनी उस जमीन का मालिकाना हक भी पाएँ और उसके आगे भी कुछ करना चाहे तो करें। लेकिन अगर बन्दोबस्त के दौरान बजाय किसान को अपने हक की रक्षा करने के उसे अपने हक की लड़ाई फिर से लड़ना पड़े तो इससे बढ़कर और क्या विडम्बना

हो सकती है कि काम करने गए एक चीज का और बात कहीं से कहीं पहुँच गई। अब इसी में भ्रष्टाचार छिपा हुआ है।

इस तहसील में या प्रदेश की अन्य किसी तहसील में इस पर पुनर्विचार होना जरूरी है। ताकि जो उद्देश्य हैं, रिकार्ड आफ राईट को दुरुस्त करने का वो उद्देश्य पूरा हो। किसानों के लिए एक नया बवाल पैदा न हो और इस संबंध में मैं मुख्यमंत्री जी से बात करूँगा और उनसे आग्रह करूँगा कि आप समीक्षा करें और इस विषय पर बिना किसी पूर्वाग्रह के बिना किसी प्रतिष्ठा के, किसी बात को सामने लाए हुए जो सही दिशा हैं, सही कदम उठने चाहिए क्योंकि एक व्यक्ति से संबंधित नहीं हैं। इस प्रदेश के लाखों किसानों से संबंधित हैं।

आपसे मैं अंत में एक ही बात कहना चाहता हूँ कि प्रजातंत्र में हम उसी हद तक आगे बढ़ सकते हैं, अपने हितों की रक्षा कर सकते हैं, जिस हद तक हम स्वयं तत्पर रहे। अब कोई दूसरा आपको कुछ लाकर दे नहीं सकता। अब जो कुछ लेना हैं, आपको अपने हक के बारे में वह आपको ही कहना भी हैं और लेना भी है। और जो लोग आपके साथ चलकर आपको हक दिलाने में दिलचस्पी नहीं रखते हैं, ऐसे लोगों से फिर जरा दूर ही रहने की जरूरत हैं।

आज हिन्दुस्तान केवल अपनी आजादी की पचासवीं वर्षगाँठ नहीं मना रहा हैं, अब हमारा देश अपने इतिहास की उस मंजिल पर पहुँच गया हैं, जहाँ आने वाले 50 वर्ष नहीं मैं तो उससे पहले की बात सोचता हूँ। हम आने वाले 20-25 वर्षों में हिन्दुस्तान को दुनिया के सबसे मजबूत देशों के सामने ले जाकर खड़ा करेंगे। लेकिन यह होगा तभी जब हमारी नींव मजबूत हो। वह नींव कौन हैं, उस नींव का पत्थर जो हैं, वह किसान हैं, समाज का सबसे गरीब और कमजोर वर्ग हैं, हरिजन हैं, आदिवासी हैं, पिछड़े वर्ग के लोग हैं, उन्हीं की संख्या तो देश में ज्यादा हैं। जब ये मजबूत होंगे तो देश अपने आप ही मजबूत हो जाएगा।

आज प्रदेश की राजधानी हैं भोपाल, इसी के आसपास के गाँवों में इतनी बड़ी समस्याएँ हैं, यह तो वह कहावत हुई "दिया तले अँधेरा"। निश्चित रूप से जो आपके जनप्रतिनिधि हैं, वह किसी भी पार्टी के हो, मुझे उससे कोई मतलब नहीं है। इस विषय पर हम सब लोगों को मिलकर पहल करना चाहिए और राजधानी का सम्पर्क ग्रामीण अंचल से जुड़े। ये कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं है। इसमें कोई करोड़ों रूपये खर्च होने वाले नहीं है। ये जो ग्रामीण स्तर पर काम चलते हैं, उसी से काम चल सकते हैं। जवाहर रोजगार योजना से हो सकता है।

मैं काँग्रेस के साथियों से यह प्रार्थना करूँगा कि वे इन मसलों को लेकर इन समस्याओं को लेकर वे आगे आए। ग्रामीण अंचल के भाइयों और बहनों से सम्पर्क करें उनकी समस्याओं को दूर करने के लिए अपनी ओर से पहल करें और उनकी जो पहल होगी जो कुछ थोड़ी बहुत मुझ में क्षमता हैं, मैं पूरी तरह से उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर उनकी मदद करूँगा।

मैं आशा करता हूँ कि काँग्रेस के हमारे साथी आज जो जिम्मेदारी इस प्रदेश में काँग्रेस के कंधों पर हैं, उस जिम्मेदारी को निभाने में सक्षम होंगे। आपने मुझे यहाँ बुलाकर जो स्नेह आदर और आर्शीवाद दिया हैं, मैं उसके लिए आप सबका हृदय से धन्यवाद व्यक्त करना चाहता हूँ। जयहिन्द।

इंसानियत का रास्ता बराबरी का होता है

4 नवम्बर 1997 को जबलपुर में विकलांग बच्चों को सम्बोधन के प्रमुख अंश —

सभी सम्मानित अतिथिगण और प्रिय बच्चों, आपके स्नेहमय और पुरे निश्चल भाव से दिए गए आशीर्वाद

के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। यह जो कार्य यहाँ हो रहा है, वह समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने वाले नागरिकों का काम है। मैं उनको इसके लिए बधाई देना चाहत हूँ। और ये बच्चे उनको भी बेसहारा कोई न समझे, कोई अनाथ न समझे, यह भारत के भविष्य के रूप में उभरकर सामने आएँ, यही मेरी शुभकामना है।

आदरणीय बहनों और भाइयों, मैं आपको आशीर्वाद देने के लिए तो आया हूँ। यह जगह हैं जहाँ इंसानियत की असली पहचान होती है। क्योंकि जब एक इंसान किसी दूसरे इंसान को ऐसी नजर से देखने लगे जैसे वो किसी पर मेहरबानी करता है, तो फिर वो बात अलग हैं। इंसानियत का रास्ता बराबरी का होता हैं। ये कालोनी शहर से दूर जरूर है, और एक तरह से आपको अकेलापन महसूस होता होगा लेकिन इस शहर में रहने वाले उन सब इंसानों के दिलों की धड़कन आपकी धड़कन से जुड़ी हैं, जो इंसानी बिरादरी मे विश्वास करते है। यहाँ पर बहुत खामियाँ कमियाँ थी, धीरे-धीरे दूर हुई है और मुझे विश्वास है कि जो खामियाँ होगी सरकार की ओर से उनको भी दूर किया जायगा। ताकि आप सब बहन भाई और बच्चे इस देश के, इस समाज के, वह सर्वहारा समाज हैं, पूरे समय तक साथ-साथ अपनी जिन्दगी व्यतीत कर सकें। मेरी ओर से यही शुभकामना हैं, आपके समय और आशीर्वाद के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

पंचायती राज में शिक्षा को प्रोत्साहन

5 नवम्बर 1997 को जबलपुर में शिक्षकों के सम्मेलन में सम्बोधन के प्रमुख अंश —

यह एक ऐसा संवेदनशील विषय हैं जो किसी फेक्ट्री में काम करने वाले मजदूरों की स्थिति से भिन्न नहीं लगता। मजदूर जो मेहनत करते हैं, पसीना बहाते हैं, उसकी पगार लेते हैं, उनकी कठिनाईयाँ हैं, उसके लिए वह हड़ताल भी करता हैं, वह जायज माना जाता हैं लेकिन जो शिक्षा देता हैं वह अपनी माँगों के साथ-साथ जिनको शिक्षित करना चाहता है, अपने आचरण से भी उनको प्रभावित करना चाहता हैं। जिस समाज के लिए आपको नियुक्त किया गया है, उसके सामने इस तरह का उदाहरण आप प्रस्तुत करें जैसा मैं यहाँ एक घण्टे से देख रहा हूँ तो यह लगता नहीं कि यह कोई शिक्षाकर्मियों का सम्मेलन है, फैक्ट्री के मजदूरों का सम्मेलन लगता है और आप लोगों ने मुझे बुलाया है, तो मेरी बात सुनने की कृपा करें। अगर आप चाहते हैं कि मैं न बोलूँ तो मैं चला जाऊँगा।

सारा मध्यप्रदेश जानता हैं, सारा देश जानता हैं कि पंचायती राज में मूलभूत तरीके से राजीव जी की सोच को अमल में लाने की मध्यप्रदेश शासन ने कोशिश की। कई ऐसे इसके पहलू हैं, जिसके बारे में अलग-अलग मत हो सकते है। मैं भी किसी पहलू से पूरी तरह से सहमत नहीं हूँ। जो कुछ हुआ उसको सही करना हैं तो उसके करवाने के भी तरीके होते हैं। चुनाव बाद मैं आपकी समस्याओं को समझ सका। थोड़े समय में एक बात मुझे साफ नजर आई कि शिक्षा के क्षेत्र में पंचायत और जनपद पंचायतों के स्तर पर कुछ इस तरह से हस्तक्षेप हुआ जिससे अब ग्रामीण अंचल में जो अव्यवस्था और अभाव था शिक्षा के क्षेत्र मे उसे पूरा किया जा सकें। मै भी इस प्रदेश का शिक्षा मंत्री रहा हूँ, मुख्यमंत्री भी रहा हूँ और देश का शिक्षा मंत्री भी रहा हू। गाँवो के स्कूलों की क्या हालत हैं, गाँव में पढ़ने वाले बच्चों की क्या दुर्दशा है? ये तो उनके माता-पिता से पूछिए। कितनी दूर तक उनको शिक्षा मिलती है, कितने दिन मास्टर रहता है? कितने दिन नहीं रहता? इन सब चीजो को ग्रामों से दूर करने के लिए यह एक अभिनव योजना है।

पंचायती राज लागू होने के बाद भी क्या फर्क पड़ा? शहरों में पढ़े लिखे लोग वेतन तो शहर से लेते है और

नाम लिखा है, गांवों में। क्या अध्यापक ऐसा है? हजारों अध्यापक ऐसे हैं और जब उनको वापस करने की बात आएगी तो नेता लोग पहुँच जाएँगे कि साहब मत ट्रांसफर करों। इन्हीं सब परिस्थितियों को देखते हुए यह प्रयोग प्रदेश शासन ने किया है और जितनी भी मुझे जानकारी मिली, एक चीज कह सकता हूँ कि प्रशासन में अनेक प्रकार की कठिनाईयाँ पैदा होती है। आप तो केवल अपने वर्ग की बात कर रहे हैं।

जब मुख्यमंत्रीजी ने आपके सामने कई दफे घोषणा कर दी है, वह नियमित करेंगे तो मैं तो समझता हूँ कि जिन्होंने इस योजना को चालू किया हैं, जिस योजना की वजह से आप सब लोग यहाँ इकट्ठे हुए हैं, वरना अभी यहाँ इकट्ठे होने का अवसर आपको नहीं था। अपने गाँव में बैठकर कोसते जिसको कोसना होता। लेकिन आप सब यहाँ इकट्ठे हुए हैं। यह उसी प्रक्रिया का अंग हैं जो मुख्यमंत्री जी ने यहाँ पर चलाई है। यह उन्होंने आश्वासन आपको दिया है तो मैं तो उन पर पूरा भरोसा करूँगा कि वह इसको चलाए। आपसे केवल एक ही बात कहना चाहता हूँ, आप मेरी बात माने न माने यह आपके ऊपर है। इस प्रशासनिक ढाँचे में सभी चीजें अपने मन से, अपने तरीके से नहीं होती है। इसलिए मेरा आपसे यह निवेदन है कि आपकी माँगे जायज हैं, उचित है इसमें कोई दो मत नहीं है। लेकिन उनको किस तरह से मुख्यमंत्री जी एक प्रशासनिक ढाँचे में रखकर पूरा करेंगे इसकी जिम्मेदारी आपकी नहीं उनकी हैं। ये जिम्मेदारी उनको देना ही पड़ेगी आप नहीं ले सकते यह जिम्मेदारी, मैं नहीं ले सकता, अगर वह जिम्मेदारी आप ले सकते हैं तो फिर यहाँ बैठने की जरूरत ही क्या हैं? इसलिए मेरा आपसे यह निवेदन है कि मुख्यमंत्री की घोषणा पर विश्वास करें।

आज के सम्मेलन का अंततः वही परिणाम निकलना चाहिए जो आप चाहते हैं, जो मुख्यमंत्री चाहते हैं, अगर उसमें कही बीच में मतभेद होता हैं तो मैं अपनी बात को दूसरे ढंग से कहता। लेकिन मैं उसमें कोई मतभेद नही देखता हूँ और इसलिए आपसे प्रार्थना करना चाहता हूँ कि आप लोग मुख्यमंत्री को अवसर दें। वे इस विषय पर जितना जल्दी हो सकें, यह भी मेरा उनसे निवेदन हैं कि अंतिम रूप से फैसला करके शिक्षा के क्षेत्र में जो एक अभिनव प्रयोग उन्होंने किया है वह प्रयोग असफल हो गया हैं ऐसा कहने का मौका लोगों को न मिलें। इसलिए फैसला करना हैं। मैं इन्ही शब्दों के साथ-साथ आप लोगों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशों में

चुनाव सुधार के लिए सुझाव

जनवरी 1997 को लखनऊ में राजनीति के अपराधीकरण पर परिचर्चा में सम्बोधन के प्रमुख अंश—

मंच पर विराजे हुए आदरणीय अतिथिगण, और प्रिय बंधुओं। आज की चर्चा का विषय सामूहिक भी है और हमारे नवोदित प्रजातंत्र के लिए महत्वपूर्ण भी है। क्योंकि अनुभव के आधार पर जो लक्षण हमारे सामने उभरकर आए है, समितियों की रिपोर्ट के आधार जो साक्ष्य सामने आए हैं। यह राष्ट्रीय अनिवार्यता सामने आई है कि इस विषय पर हम समूचे देश के अन्दर चर्चा करें। इस महत्वपूर्ण विषय पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास और ध्यान केंद्रित करने के पश्चात कुछ ऐसे तथ्यों को सामने लाने की कोशिश की जाय, जिन पर कार्रवाई की जा सकें। क्योंकि डिस्कशन की सार्थकता एक सीमा तक होती है। उसके बाद की चर्चा का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

मेरी समझ में यह बात आती है, मै फिर इसको कहना चाहता हूँ, क्योंकि समस्या के बारे में जो किसी के मन में कोई संदेह नहीं है, कि समस्या का स्वरूप इतना बड़ा बन गया है, कि शासकीय लोग अपनी रिपोर्ट में यह कहते

है, कि ये लोग एक समानांतर सरकार चलाते हैं। अब इससे ज्यादा और कोई बात कही भी नही जा सकती हैं। जो एक्शन का दूसरा रूप हैं मेरे विचार से वो हैं, चुनाव प्रक्रिया और उसको संचालित करने वाले नियम कानून कायदों का सूक्ष्म तथ्य विवेचन होना चाहिए और पुनरीक्षित होना चाहिए। ये समझ में नहीं आता कि बार-बार इसकी चर्चा होती है, लेकिन अंततः कोई कदम नहीं उठाए जाते हैं। मैं किसी को दोष नहीं देना चाहता। लेकिन सवाल यह है कि ये अनुभव हम सबका रहा हैं। मेरा मत है कि अगर हमें सचमुच में कोई असरकारक कदम उठाना हैं, तो अगले लोक सभा चुनाव के पहले हमें कुछ ऐसे बिंदुओं पर सहमति बनाकर कानून में हमें संशोधन करना चाहिए। मैं उदाहरण के लिये एक-दो बिन्दू बताना चाहूँगा।

प्रजातंत्र हमने आज जिस रूप में भी स्वीकार किया हैं, संविधान में एक दम से कोई मौलिक परिवर्तन हो जाय एक नई प्रक्रिया देश में आ जाए, ये बात भले ही अच्छी लगे, विचित्र भी दिखे, लेकिन अंततः कुछ होने वाला है नहीं। इसलिए जो कुछ हम आज हैं हम उसमें ही सुधार करने की कोशिश कर सकते हैं। आज चुनाव की प्रक्रिया महँगी भी है और जटिल भी हैं। आज से लगभग 40 वर्ष पूर्व मैंने पहला चुनाव असेम्बली का 1957 में लड़ा था। मूल रूप से कोई ऐसा परिवर्तन आज इस चुनाव में नहीं हैं क्योंकि वही मतदाता हैं, जो वोट देते थे और उसी प्रकार से पोलिंग बूथ होते थे। बैलेट बाक्सेस होते थे। लेकिन उस समय आज जो चीजें हैं, कहीं नजर नहीं आती थी। बूथ केपचरिंग का कोई सवाल नहीं था, सरकारें तब भी बनती थी, जीतती थी, उसी वोट के आधार पर बनती थी, काँग्रेस पार्टी भी जीतती थी। विरोधी भी जीतते थे, और दोनों हारते भी थे। आज क्यों ये पद्धति उलझ गई है। हमें उसको देखना हैं।

आज सबसे ज्यादा परेशानी मतदाता को हैं। जो चुनाव लड़ते हैं उनको परेशानी नहीं हैं। सबसे ज्यादा परेशानी मतदाता को हैं और इसलिए शायद यह संयोग हैं कि आज भी देश में पचास प्रतिशत से कम लोग वोट डालने जाते हैं। अर्थात हमारे प्रजातंत्र का जो प्रतिनिधित्व स्वरूप हैं वो पचास प्रतिशत से ज्यादा नहीं हैं। तो उसके पीछे कोई कारण तो होगा। उसकी खोज होनी चाहिए। उसका निवारण होना चाहिए। मैं समझता हूँ कि हर एक व्यक्ति के बारे में अलग-अलग कुछ करना शायद इतना आसान नहीं। जिस पार्टी का उम्मीदवार बूथ केपचिरिंग करता हो, कमजोर वर्ग के मतदाताओं को मत डालने में बाधा उत्पन्न करता हो, उस उम्मीदवार को तत्काल डिशक्वालिफाय कर ही देना चाहिए। लेकिन साथ ही साथ उस दल के लोग जिले के या फिर प्रदेश के जैसी भी स्थिति बने जो लोग हैं, उन्हें भी नोटिस देना चाहिए कि आपको हम 6 साल के लिए डिशक्वालिफाय करते हैं। इसकी वजह से शायद सबको यह अहसास होगा कि अगर हम ऐसा करेगें और हमारा उम्मीदवार बूथ केपचरिंग में लगेगा, तो हम जीत के आए चाहे ना आए लेकिन हमारी डिशक्वालिफिकेशन हो सकती हैं।

दूसरा मेरा इस संबंध में सुझाव है, वो हैं खर्चे के बारे में, बहुत कुछ इस बारे में कहा जा चुका हैं। उन बातों को दोहराने से कोई फायदा नही हैं कि समय आ गया हैं, जब अपने प्रजातंत्र के स्वरूप को बचाने के, उसके निश्चित स्वरूप को बचाने के लिए हजार दो हजार करोड़ रुपये सरकार को खर्च भी हो जाते हैं तो उसमें कोई बहुत बड़ी बात नहीं हैं। इसके लिए हर उम्मीदवार का फायनेंसिंग, एक निश्चित सीमा में कानून द्वारा बाँध दी जाय वह सरकार के द्वारा की जाय। उसको किसी के पास जाकर अपने चुनाव खर्च के लिए पैसे माँगने की जरूरत नहीं है। एक दफे निश्चित करने के बाद खर्च की सीमा का उल्लंघन ठीक नहीं है। मि.शेषन ने कुछ कदम उठाए है और मैंने प्रत्यक्ष भी देखा है और उसका असर भी हुआ हैं। हिसाब-किताब उन्होंने बहुत से लोगों से नहीं माँगा लेकिन इतना ही कह देना कि हर कांस्टीट्वेन्सी में उनके प्रतिनिधि घूम रहे है नोट करने के लिए कि कौन कितना खर्च कर रहा है। बहुत

से उम्मीदवार इसलिए रूक गए हैं। इसका कोई एक तरीका निकालना हैं।

मैं समझता हूँ कि इस विषय पर आज की यह परिचर्चा इसका प्रमाण हैं कि समाज में जागृति आई है अभी दायरा छोटा हैं। सुप्रीम कोर्ट ने भी इसमें रूचि लेना शुरू किया हैं। और प्रबुद्ध वर्ग को भी इसमें अपनी भूमिका निभानी पड़ेगी। आज मैं आपके बीच में आया हूँ इसलिए कह रहा हूँ इसमें भूमिका देश की तरूणाई की होगी, देश की तरूणाई एक दफे निश्चय कर लें कि बहुत हो चुका अब हम राजनीति को दूषित करने की जो प्रक्रिया हैं उनको रोकेंगे और जो भी सामने आएगा हम उसके लिए संघर्ष करेंगे तो इस देश की तरूणाई का फैसला भारत के इतिहास को एक ऐसे अंधेरे की ओर जाने से रोक सकेगा जिसका बहुत बड़ा खतरा इस वक्त उत्पन्न हो गया हैं।

वोरा कमेटी की रिपोर्ट पढ़ने के बाद बहुत सी चीजें जो लोग अंदाज करते थे उससे कहीं ज्यादा चीजें हमारे बीच में आई हैं। और अभी उसका आधार सामने आया नहीं। जबकि समिति ने अपनी रिपोर्ट में यह लिखा है, कि उपलब्ध जानकारी की समीक्षा करने के बाद यह रिपोर्ट बनाई हैं। उस रिपोर्ट के मेम्बरों में गृह सचिव उसके चेयरमेन हैं, डायरेक्टर सी.बी.आई. उसके मेम्बर हैं, डायरेक्टर आई.बी. उसके मेम्बर हैं और सेक्रेटरी जो हायर ऑफीसर होता हैं मिनिस्ट्री में वह उसका सदस्य होता हैं।

आज भारत के प्रजातंत्र की रक्षा के लिए नितांत आवश्यक हैं कि यह रिपोर्ट देश के नागरिकों के सामने लाई जाय उनको बताया जाय और चाहे जो भी उसमें आते हो उनके खिलाफ कार्रवाई कानून के तहत हो सकती हैं, वह की जाय।

मैं आशा करता हूँ कि उस दिशा में बढ़ने के लिए एक प्रबल जनमत धीरे-धीरे निर्मित होगा क्योंकि जनमत ही प्रजातंत्र में अंतिम अस्त्र होता हैं। वह अस्त्र भारत के भविष्य के लिए हमारे जनतंत्र के भविष्य के लिए और हम सबके भविष्य के लिए सही दिशा में उपयोगी हो सकें। यह हम सबकी आशा हैं आप सबके चिंतन सहयोग से संभव होगा। धन्यवाद। जयहिन्द।

हम सब भारतीय हैं

26 जनवरी 1997 को मुम्बई में सम्बोधन के प्रमुख अंश —

आदरणीय त्रिपाठीजी, मंच पर बिराजे हुए सम्मानित कलाकार गण, अन्य सम्मानित अतिथिगण और यहाँ उपस्थित हजारों, की संख्या में इस देश के सम्मानित नागरिक बंधुओं। सर्वप्रथम मैं आपको गणतंत्र दिवस की बधाई देना चाहता हूँ। आज वह दिन है जिस दिन के लिए हमारे भारत के लाखों लोगों ने अपना सर्वस्व बलिदान करके यह संभव किया है। आजादी की लड़ाई भारत के कोने-कोने से महात्मा गाँधी जी के नेतृत्व में चली।

आज भी इस बात की जरूरत है। आजाद हुए हमें 50 साल हो गए हैं। जो हम अपने गणतंत्र दिवस की वर्षगाँठ मना रहे है। लेकिन हमें इस बात को आज भी समझना पड़ेगा कि असली आजादी क्या होती है? और दिखावे की आजादी क्या होती है? इन 50 सालों में भारत का कायाकल्प हुआ। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में एक नए हिन्दुस्तान की रचना हुई है। सरदार पटेल ने भारत की एकता को मजबूत किया, 500 से ज्यादा रजवाड़ों को देश में मिलाया, लाल बहादुर शास्त्री ने यह करके दिखाया कि यदि दृढ़ता हो और अपना उद्देश्य साफ हो तो, हम सब कुछ कर सकते है। श्रीमती इंदिरा गाँधी ने भारत का इतिहास ही नहीं, भारत के भूगोल को भी बदल दिया। श्री राजीव गाँधी ने भारत की तरूणाई के प्रतीक के रूप में, देश को 21 वीं सदी की तरफ ले जाने का एक अभियान शुरू किया। यह सब

तो हमारी उपलब्धियाँ है।

लेकिन आज हम खड़े कहाँ है? क्या जवाहरलाल नेहरू जहाँ ले जाना चाहते थे हम उस मंजिल तक पहुँचे? जिस देश की एकता के लिए सरदार पटेल ने एक ऐसी शक्ति पैदा की, आज देश पूरी तरह से क्या एक है? क्या हमारी एकता और अखण्डता स्थापित रह सकती है? जिस इतिहास के साथ-साथ भारत का भूगोल बदलने का संकल्प करके श्रीमती इंदिरा गाँधी ने बंगलादेश के लिए मार्ग प्रशस्त किया, क्या आज हमारा भारत सुरक्षित है? आज जो कुछ हो रहा है, क्या वह हमारे देश के हित में हैं? और उस 21 वीं सदी की ओर जाने का संकल्प और रास्ता राजीव जी ने दिखाया था क्या आप दो साल बाद वहाँ जाने वाले हैं? क्या हम उस 21 वीं सदी में जाकर सबसे शान शौकत और भारत की मर्यादा को सुरक्षित रखने की स्थिति में हैं या नहीं? यह आज प्रश्नचिह्न बनकर खड़ा हो गया है। और ये इसलिए हुआ है कि भारत की राजनीतिक संरचना में आज कुछ प्रवृत्तियाँ प्रवेश कर गई है, कुछ ऐसे इरादों ने अपना स्थान बना लिया है जो देश की नहीं सबसे पहले अपने बारे में सोचते हैं। इससे समाज में हिंसा, जातीयता, स्वार्थपरता, स्वेच्छाचारिता और भ्रष्टाचार घर करता जा रहा है तो आखिर यह विरोधाभास कहाँ जाकर रूकेगा। समाज के लिए देश के लिए, संघर्ष करने का समय है। और यह संघर्ष तब तक चलते रहना चाहिए जब तक यह संघर्ष अपनी परिणति पर न पहुँच जाय, व्यवस्था न हो जाय और उस देश के अन्दर रहने वाले व्यक्ति जब तक सुरक्षित न हो जाय। समान अधिकार का अधिकारी न बन जाय। चाहे वह कहीं का रहने वाला हो और देश के किसी कोने में रहता हो।

आप संसद को देखिए वहाँ पर जिन लोगों के हाथ में सरकार और सत्ता होती है, तो वह इस बात पर भी निर्भर करता हैं कि वह संसद के प्रति उत्तरदायी है। आप एक दफे प्रधानमंत्री बन गए, संसद की कोई परवाह नहीं की, तब भी शक्ति नहीं दिखा सकें, वह हौसला नहीं दिखा सकें और आपने नहीं किया अपने उत्तरदायित्व का पालन। इसलिए अब लोगों के मन में संसद के बारे में भी शंकाएँ पैदा हो रही है आरोप लग रहे हैं, अपनी ही सरकार बचाने के लिए लाखों रूपए सदस्यों को घूस दी। सही और गलत बात क्या है? क्या इससे पहले कभी इस प्रकार के आरोप लगे थे। आज संसद का इस रूप में उपयोग किया जा रहा है तो देश के गरीबों के बारे में क्या सोचा जाएगा। आप कार्यपालिका देखे, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री ये सब वो साए हैं जिनको इस देश की जनता ने असीम विश्वास देकर चुना है। अगर वो संस्थान और उस जिम्मेदारी को निभाने वाले लोग जनता की नजरों से गिर जाय तो यह समझना चाहिए कि जनता क्या चाहती हैं। मैं किसी व्यक्ति के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता।

अब इस समय केवल हमारे गणतंत्र की दो संस्थाएँ हैं, जो अपनी मर्यादा में काम कर रही हैं, और लोगों को उन पर विश्वास है। हमारे राष्ट्रपति जी हैं, और दूसरी हमारी न्यायपालिका है, सुप्रीम कोर्ट, हाय कोर्ट। इस संदर्भ में यह हम सबकी जिम्मेदारी है, कि हम अपने देश की इस प्रजातांत्रिक व्यवस्था कि पद्धति को मजबूत बनाने में काम करें। वह मजबूत कैसे हो, यह केवल भाषणों से नहीं हो सकता। इस देश के अन्दर रहने वाले हर व्यक्ति को और खास तौर से जो समाज का गरीब व्यक्ति है, हरिजन, आदिवासी, पिछड़े वर्ग का है उसके संदर्भ में हमें ध्यान देना पड़ेगा, उसके विचारों को हमें सुनना पड़ेगा। उसकी आवश्यकताएँ और मजबूरियाँ हैं, उनको दूर करना पड़ेगा। अगर वह दूर नहीं होती है तो जितनी भी आप लंबी चौड़ी बातें कर लें, देश खोखला होता जाएगा और एक दिन फिर से हमारी आजादी को बहुत बड़ा खतरा पैदा हो जाएगा।

गाँधी जी ने एक कागज का टुकड़ा वोट के रूप में आपके हाथों में सौपा, उसने कई लोगों को बनाया और बिगाड़ा। श्रीमती इंदिरा गाँधी जैसी नेता भी चुनाव हार गई। उनकी पार्टी हार गई। वह टुकड़ा न लोहे का है, न चाँदी

का है, न सोने का है, वह कागज का है। लेकिन आपको यह विश्वास है कि वह टुकड़ा आप अपनी मर्जी से डालेंगे। उसका जो असर होना चाहिए उसको कोई रोक नहीं सकता।

सांप्रदायिकता, जातीयता जितनी भी बाँटने वाली चीजें हैं, इन से सतर्क रहना हैं। और जो लोग राजनीतिक सहारा देकर शक्ति बढ़ाना चाहते हैं, उनका डटकर मुकाबला करना हैं। बिना किसी संकोच के, बिना किसी डर के पूरी तरह से खासकर नौजवानों को एक होकर इस संघर्ष में आगे चलना हैं।

मैं अगले महीने फिर यहाँ आने वाला हूँ। आपके प्रतिनिधि मण्डल के साथ में, इस प्रदेश के मुख्यमंत्री जी से बात करूँगा। इसी आशा और विश्वास के साथ कि वह भारत के नागरिकों की समस्याओं पर विचार कर रहे हैं। यह किसी प्रदेश के नागरिकों की समस्याओं पर विचार नहीं कर रहे है। और मैं आशा करता हूँ कि इन समस्याओं को दूर करने के लिए पहल उन्हें करना चाहिए। वह पहल ठोस रूप से सामने आकर की जाएगी और यदि ऐसा नहीं होता मैं यह मानकर नहीं चलता कि यह नहीं होगा, यदि ऐसा नहीं होता तो प्रजातंत्र के अन्दर जो मौलिक अधिकार हर नागरिक को मिले हैं, सम्पूर्ण तरीके से अपने अधिकार के लिए प्रदर्शन करेंगे, कष्ट में भी मैं आपके साथ रहूँगा यह मैं आपको वचन देना चाहता हूँ।

आज का दिन भारत में सदियों सदियों तक आता रहे। देश की आजादी देश की सत्ता, देश की संप्रभुता दिनों सालों में नहीं गिनी जाती, सदियों में गिनी जाती हैं। दो-तीन सदियों तक हम गुलाम रहे, उस गुलामी का बोझ कंधों पर और दिमाग पर से अभी पूरी तरह से गया नहीं है। मुझे विश्वास है कि भारत का भविष्य बहुत ही उज्जवल हैं। हमारे देश के सामने जो भी खतरा हैं उन खतरों से निपटने की क्षमता भारत के लोगों में हैं, आप उस ऊर्जा का उस स्रोत का एकता के साथ निर्भीकता के साथ, समर्पण के साथ और भारत के प्रति पूरी श्रद्धा के साथ उसको मजबूत करने के लिए यह संकल्प लेने का दिवस है।

प्रजातंत्र में सभी को समान अधिकार

दिसम्बर 1997 को बंगलूर (कर्नाटक) में माइनारिटीज़ कॉंफ्रेस में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश—

कर्नाटक प्रदेश के आदरणीय मुख्यमंत्री श्री एस.एम. कृष्णाजी, और कंवेंशन में भाग लेने के लिए आए हुए सभी आदरणीय बहनों ओर आदरणीय भाइयों, मुझे बेहद खुशी है और इसे मैं अपने लिए बहुत सौभाग्य की बात मानता हूँ कि कर्नाटक प्रदेश ने माइनारिटीज़ कमीशन में मुझे आने का मौका दिया, और आप सब लोगों से रूबरू होने का अवसर मिला।

मैं कृष्णा साहब को इस प्रदेश के कॉंग्रेस के सभी जागरूक साथियों को, इस बात की मुबारकवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने श्रीमती सोनिया गाँधी के नेतृत्व में एक नया राजनैतिक इतिहास कर्नाटक में लिखा है। और यह इतिहास लिखा जा सके इस के लिए जो शिरकत और जो सहयोग कर्नाटक प्रदेश के सभी माइनारिटीज़ के लोगों ने किए, उस के लिए तहे दिल से इन्हें मुबारक वाद भी देता हूँ और धन्यवाद भी देता हूँ। आप ने इस बात को साबित किया है कि जब मुल्क के मुद्दे, अवाम के मुद्दे सामने आते है, तो किस प्रकार से राजनीतिक फैसले किए जाने चाहिए। चुनाव तो हमारे प्रजातंत्र की एक सामान्य प्रक्रिया है, जो हर पाँचवे साल होती आई है और होती रहेगी, लेकिन इतने बड़े देश को हम किस दिशा में ले जाना चाहते है, इस का संकेत समय-समय पर होता रहा है और उस संकेत की वजह से मुल्क में कभी-कभी परेशानियाँ भी पैदा होती रहीं, लेकिन इस मामले में सब से पहले मै कॉंग्रेस पार्टी का क्या

नजरिया है? हमारी क्या सोच है? हमारे क्या इरादे हैं? उनकी तरफ आप का ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा।

हमारा प्रजातंत्र एक लम्बे संघर्ष के बाद स्थापित हुआ है। हजारों हजार लोगों ने गाँधी जी के इशारे पर, उन की अवाज पर कुर्बानियाँ दीं, संघर्ष किया और उस संघर्ष के लिए गाँधी जी के क्या सिद्धांत थे? सब से बड़ा सिद्धांत पहला यह था कि देश को आजाद होना चाहिए अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। अपने लिए खुद फैसले करना चाहिए, हम किसी विदेशी ताकत के नीचे नहीं रह सकते हैं और सन् 1942 में जब गाँधी जी का वो नारा "करो या मरो" का आया तब देश की तरूणाई ने इस नारे को सही मायने में अमल में लाया और उसी की वहज से आज हम एक आजाद मुल्क के नागरिक हैं।

इस समय देश के लिए खतरा बढ़ गया है। अगर हम इस गफलत में पड़ गए तो आगे बहुत संकट का समय पैदा हो सकता है। क्योंकि जिस दिन भारतीय जनता पार्टी को नेशनल एलायंस की जरूरत नहीं होगी, वे खुद अपने बलबूते पर सरकार बना लेंगे, उन का उस दिन वह एजेण्डा बरकरार बना रहेगा, जिस एजेण्डा को आज उन्होंने परदे के पीछे रख दिया है, अपनी सरकार को बनाने के लिए। यह बात इसलिए याद रखने की है कि हिन्दुस्तान की एकता और अखण्डता इस प्रकार के दिलों को बाँटने वाले कार्यक्रमों से नहीं चलती। इस की एकता तो रह ही नहीं सकती। जिस मुल्क में दुनिया का हर धर्म माना जाता हो ऐसा दुनिया का कोई दूसरा मुल्क नहीं है। और मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि ऐसा कोई मुल्क नहीं है जहाँ पर हर धर्म को सम्मान और स्थान भी, दोनों मिलता हो। एक हिन्दुस्तान ही ऐसा देश है।

बड़े-बड़े देश हैं। कहीं-न-कहीं कोई न कोई डिस्क्रीमिनेशन की भावना रहती है। मैं किसी मुल्क की आलोचना कर के कोई वात नहीं कहना चाहता, लेकिन हकीकत तो हकीकत है। तो सेक्यूलरिज़्म का जो, धर्मनिरपेक्षता का जो सिद्धांत है, वह सिद्धान्त केवल लोगों के बीच में उनको खुश करने के लिए भाषण देने का सिद्धांत नहीं है। यह हमारी जिंदगी और मौत का सवाल है। यदि हम देश की जिंदगी चाहते हैं, भलाई चाहते हैं, भारत की तरक्की चाहते हैं, सब को उस में पूरा अधिकार देना चाहते हैं तो फिर हमें सेक्यूलरिज़्म के सिद्धांत से पूरी तरह से अपने को जोड़ कर रखना पड़ेगा।

इस मामले पर कहीं भी कोई गफ़लत नहीं हो सकती और न किसी प्रकार की किसी सोच में कमी हो सकती है। यह एक ऐसा विषय है, जिस पर काँग्रेस पार्टी अगर अपने अस्तित्व को बरकरार रखना चाहती है तो उसे उस पर अडिग रहना पड़ेगा। यहाँ हम से जरा सी भूल हुई इस मामले में, आप ने देखा क्या हश्र हुआ पार्टी का।

ऐसा अवसर दुवारा हिन्दुस्तान में न आए, यह सब से पहला हमारा कर्त्तव्य है। और इन परिस्थितियों में आज काँग्रेस को अपनी सियासी जिम्मेदारियों को पूरा करना है। मेरी समझ में जहाँ-जहाँ भी प्रदेशों में काँग्रेस की सरकारें है, उन की जिम्मेदारी है कि सोनिया जी के वायदों को पूरा करने में ऐसी मिसाल पैदा करें जिस से लोग समझ जाएँ कि काँग्रेस जो कहती है, वह करती है। और दूसरी वात यह है कि आज के सियासी चकाचौंध में जिस प्रकार के अवसरवाद और पूरी तरह से अपने स्वयं के स्वार्थों की पूर्ति के लिए रास्ते अपनाए जा रहे हैं, ऐसा कोई भी रास्ता अपनाने की वात भी काँग्रेस के दिमाग में न आए तो इसको सुनिश्चित करें तो हम अपनी पार्टी के भविष्य को मजबूत कर सकते हैं। हिन्दुस्तान के भविष्य की रक्षा कर सकते हैं, उसको रख सकते है और उस भारत की कल्पना को साकार कर सकते है, जिस कल्पना को अपने आँखों में लिए हुए इस देश के हजारों लोगों ने फाँसी के तख्ते चूमे। और अपना आज, हमारे आप के कल के लिए बलिदान किया।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आज इस कन्वेंशन का उदघाटन करने की अनुमति चाहता हूँ।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकारवार्ता

जनविश्वास अर्जित करने के लिए काँग्रेस की एकता जरूरी

12 मार्च 1997 मार्च को रीवा में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

माननीय भाई मदनमोहनजी, और यहाँ पर पधारे हुए सभी सम्मानित पत्रकार बंधुओं, सही बात यह है कि मदन जी की टिप्पणी के बाद हमारी पत्रकार वार्ता अप्रासंगिक हो गई है। अब समय मैं क्यों बर्बाद करूँ जो कुछ उन्होंने कहा है शायद उससे बढ़कर और उससे ज्यादा स्पष्ट विवेचना वर्तमान स्थानीय संदर्भो में घटनाओं की, उनकी पृष्ठभूमि की, उनकी प्रेरणा की, नहीं हो सकती। उसमें मैं कुछ शायद जोड़ भी नहीं सकता, शायद घटा भी नहीं सकता। यह बात जरूर उठती है कि इस तरह की बातें कहने का अवसर क्यों मिलता है। यह तो इसलिए महत्वपूर्ण है कि दुनिया के प्रजातंत्रिक इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं जहाँ इस प्रकार की परिस्थिति का निर्माण एक दिन में तो नहीं होता। शनैः शनैः होता है और कभी उस प्रजातंत्र के हित में नहीं होता। वह सब कमजोरियाँ शुरू होती हैं और अन्ततः एक लड़खड़ाता हुआ प्रजातंत्र अधिनायकवाद का आवरण पहनकर सामने आता है।

प्रशासन की बात तो मध्यप्रदेश की दिग्विजय सिंह जी की सरकार ही बता सकती है। ऐसी हालत क्यों हुई हैं, मैं तो उनसे सवाल ही पूछ सकता हूँ और इसीलिए मैं इधर आया भी था। मैं कही सुनी बातों पर उनसे कोई चर्चा नहीं करना चाहता। पिछले दो दिनों में सीधी जिले के सुदूर आदिवासी इलाके में मैं घूमा। प्रतिदिन 100, 150 ,180 किलोमीटर गया और वहाँ जो कुछ हमें देखने को मिला सुनने को मिला वह नितांत दुःखद है। जब मैं यह कहूँ तो शायद अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसको अंग्रेजी में एण्डीकेशन ऑफ रिसपान्सिब्लिटी कहते हैं। हिन्दी में आप इसका अनुवाद कर लें। करीब-करीब उस सीमा तक की स्थिति देखने को मिली। मैं वहाँ लोगों से कहकर आया हूँ कि मुख्यमंत्रीजी से चर्चा करके और प्रयास करूँगा। अगले महीने जो महत्वपूर्ण विभाग है जिनका सीधा लोगों से संबंध है उनके प्रभारी मंत्रियों को सीधी आमंत्रित करने का और वहाँ इन सब बातों के बारे में कुछ निर्णायक बातचीत हो सके। लोग कह सकते हैं कि सीधी आपका गृह जिला है तो आपने वहाँ के लिए यह बात कही हैं तो प्रदेश में तो 45 जिले है। अगर इस प्रकार का वातावरण निर्मित हो जाता है तो अविश्वास की सीमा हद से बाहर हो सकती है और आप चाहे शासन के दृष्टिकोण से देखें चाहे काँग्रेस पार्टी के दृष्टिकोण से देखे, ये बहुत खतरनाक स्थिति होगी जब वो सीमा पार हो जायगी। इसलिए इस मामले में केवल सीधी नहीं प्रदेश के हर जिले में जहाँ इस प्रकार की स्थिति हो उसमें रीवा भी शामिल है। इन सब बातों की समीक्षा होना चाहिए, इन सब बातों पर ध्यान देना चाहिए।

जैसा मैंने कहा कि मदन जी की टिप्पणियों के बाद मेरे पास कुछ कहने को है नहीं। एक बात आप लोगों ने पत्रकार साथियों की बात की और भवन के बारे में की उसमें थोड़ा बहुत मेरा भी दोष है और दोष इस प्रकार से है कि प्रदेश के और जिलों में मैंने सक्रिय भूमिका इस मामले में निभाई। शायद उतनी और अन्य मामले में यहाँ नहीं निभाई। इसकी वजह से यह समस्या अभी समस्या के रूप में खड़ी है। मै भी उसका दोषी हूँ और जो भी इस दिशा में हो सकता है वह करने की कोशिश करूँगा। वैसे अगर आपके पास कोई भूखण्ड हो तो बताइए।

प्रश्नः तरह-तरह के व्यवधान डालकर टेक्नीकल बातें उठाकर बता देते हैं कि ऐसा है, ऐसा करो तो हम टेक्नीकल बातों की तरफ ही लग जाते है।

श्री अर्जुनसिंहः खैर कालोनी-वालोनी की बात अपनी जगह है। मेरा यह सुझाव है कि भूखण्ड लेने के लिए तो प्रयास

किया जाय और हम कभी चंदा माँगते तो नहीं है ऐसे कामों के लिए लेकिन आपके लिए चंदा भी माँगेंगे और स्वयं बनाईए अपना मकान छोटा ही बने, दो मंजिला बनाने की जरूरत नहीं। पत्रकार भवन को एक हाल चाहिए, दो कमरे और चाहिए इतने से काम चल जायगा। भूखण्ड के लिए मैं जरूर कोशिश करूँगा। बाकी जो अन्य चीजें हैं कालोनी बगैरा कि वह जिस तरह से दिए जाते हैं उसी तरह से मिलना ही चाहिए और मुझे ऐसा स्मरण है कि कोई एरिया इसके लिए अलग से आयडेंटिफाय भी किया गया है।

प्रश्नः किया गया है ढाई एकड़?

श्री अर्जुनसिंहः अब वह ढाई एकड़ जमीन किसके पास पहुँच गई होगी यह तो पता नहीं चलेगा।

प्रश्नः मुख्यमंत्री के निर्देश तो इस जिले में माने ही नही जाते।

श्री अर्जुनसिंहः भाई सरकार तो उन्हीं की है और कोई सरकार तो है नहीं।

प्रश्नः पता नहीं आपने किसी और सरकार के बारे में जिक्र किया था।

श्री अर्जुनसिंहः मुझे बस इतना ही कहना था।

प्रश्नः समानांतर सत्ता का केन्द्र रीवा जिले में चल रहा है।

श्री अर्जुनसिंहः ये बात मैंने अपनी ओर से नहीं कही थी। जो मुझे लोगों ने कहा था उसको उद्धरित किया था, लेकिन आज मदनजी की टिप्पणियों के बाद ऐसा लगता है कि कोई ऐसा केन्द्र जरूर है, जो सामान्य प्रक्रियाओं को अपनी इच्छा और अपने हित के रूप में मोड़ने या बनाने की कोशिश करता है। इससे ज्यादा मैं सार्वजनिक रूप से कुछ कहना नहीं चाहता। इसका निदान करने का सवाल है मिलजुलकर सब लोगों से बातचीत करके और जहाँ कहीं आवश्यक हो संघर्ष करके भी इसका निदान ढूँढना है।

प्रश्नः अभी जो पिछड़े वर्ग के लोग हैं उनकी तरफ ध्यान देंगे तो काँग्रेस अपनी पोजीशन को फिर से प्राप्त कर लेगी लेकिन आप जो बीच-बीच में टिप्पणी करते हैं उससे क्या ऐसा लगता है कि काँग्रेस अपनी स्थिति मजबूत कर लेगी।

श्री अर्जुनसिंहः काँग्रेस की एकता मेरे लिए उसका एक ही संदर्भ है और ये कोई रीवा में आकर नहीं है। यह संदर्भ मेरे लिए सदैव रहा है और उसी के अनुरूप मैं उसके बारे में अपनी राय जाहिर करता रहा हूँ। काँग्रेस की एकता, खोए हुए जनाधार और जन विश्वास को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। लेकिन वह एकता, अगर उसका उद्धेश्य उन मुद्दों पर होगा जो सामाजिक न्याय, स्वच्छ प्रशासन, भ्रष्टाचार को मिटाने, सही विकास से संबंधित हो तो वह एक सार्थक है।

प्रश्नः पिछले दिनों एक मुद्दा उठा था, काँग्रेस, बसपा गठबंधन का, क्या अभी भी यह माना जा रहा है कि काँग्रेस, बसपा का गठबंधन उचित होगा।

श्री अर्जुनसिंहः देखिए बसपा, काँग्रेस या काँग्रेस का किसी भी अन्य पार्टी से गठबंधन यह कोई अप्रत्याशित चीज नहीं है और जैसी आज स्थितियाँ देश में निर्मित हो रही है, तो एलायंस पोलिटिक्स तो चलेगी। कब किससे एलायंस होगा इसके लिए जरूर कुछ सोच समझकर निर्णय लेना होगा। ब.स.पा. मुख्य रूप से दलितों का नेतृत्व करने वाली पार्टी है। ऐसा मुख्य रूप से माना जाता है। और उनके पास एक जनाधार बना है देश के गरीबों के बीच में, हरिजन आदिवासी, पिछड़े वर्गों के बीच में। क्यों बना है, यह भी बहुत साफ है। यह सब वर्ग पहले काँग्रेस के ही साथ थे। आज वह काँग्रेस से अलग

क्यों है, विमुख क्यों है, काँग्रेस उनके विश्वास को कायम क्यों नहीं रख सकी? कोई भी गठबंधन करने से पहले इस पर विचार होना चाहिए और उन कारणों को दूर करने की कोशिश होना चाहिए जिसकी वजह से ऐसी स्थिति निर्मित हुई।

प्रश्नः आदरणीय कुँवर साहब रीवा के विकास के लिए बात हुई और इसमें कुछ ऐसी समस्याएँ हैं, जो 15-16 वर्षों से और आपके जमाने से पड़ी हुई है और उस दरम्यान में बहुत लम्बा समय शासन करने का मिला था आपको तो क्या यह माने कि आपने उपेक्षा का बर्ताव किया था।

श्री अर्जुनसिंहः मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि मैंने कोई किसी भी क्षेत्र को या किसी भी व्यक्ति को विशेषाधिकार नहीं दिया मुख्यमंत्री की हैसियत से मेरा यह कर्तव्य था कि विकास के मामले में आवश्यकता के अनुसार कार्रवाई हो। स्वाभाविक था कि आवश्यकता जहाँ ज्यादा होती है जो पिछड़े होते हैं, वह चाहे बस्तर हो, चाहे रीवा हो, चाहे धार हो, चाहे झाबूआ हो। इसलिए उपेक्षा का तो प्रश्न ही नहीं है क्या संभव हो सका करना, क्या कमियाँ रह गई यह तो मैं कह सकता हूँ जरूर रह गई होगी।

प्रश्नः जैसे बायपास का मामला है, यह आपके समय का है।

श्री अर्जुनसिंहः उस समय इसका फैसला हुआ था, लेकिन मैं नहीं समझता बायपास बनाने के लिये 7 वर्ष लगते हैं।

प्रश्नः यह सवाल आजकल जनता के सामने उठ रहा है। देश के नेताओं की विश्वसनीयता का प्रश्न सामने आया है। आप क्या समझते हैं ऐसा लगातार होता रहा तो उससे क्या लोकतंत्र खतरे में नही पड़ेगा? और राजनीतिज्ञों की अगर विश्वसनीयता समाप्त हो गई तो यें डेमोक्रेसी कैसे चलेगी? इसके बारे में भी जानकारी दें।

श्री अर्जुनसिंहः मैं इस बात को पहले भी कह चुका हूँ और मेरी बहुत साफ मान्यता है कि अपनी विश्वसनीयता कायम करने की जिम्मेदारी अपनी है। वह जिम्मेदारी और किसी के ऊपर नहीं डाली जा सकती। अगर हम ऐसा काम करेंगे जिससे कि विश्वसनीयता घटती है तो दूसरे को हम दोष कैसे दे सकते हैं? जहाँ तक ज्यूडिशियल एक्टिविज्म का सवाल है यह ज्यूडिशियल एक्टिविज़्म 20 साल पहले क्यों नहीं था? आज से 15 साल पहले क्यों नहीं था? इक्का-दुक्का कोई केसेस हुआ करते थे, तो ऐसा लगता था कि हाँ इससे ज्यादा कोई बात हो गई है। इसलिए यह अदालत के पास गया। अब आए दिन वह चीज हो रही है। तो मैं तो ज्यूडिशियल एक्टिविज़्म को कतई गलत नहीं मानता। सवाल यह है कि जो संविधान के अन्दर जिस फोरम में बात होनी चाहिए जिस शक्ति को जहाँ इस्तेमाल करने की छूट दी गई है, अधिकार दिया गया है अगर वहाँ सही ढंग से उस शक्ति का उपयोग नहीं होगा, कोई अतिक्रमण हो जायगा, किसी दूसरे का या अपने स्वयं के हितों के लिए उसका इस्तेमाल होगा, तो अगर कोर्ट्स भी चुप हो जाय तो फिर पूरी तरह से अराजकता इस देश में हो जाएगी।

प्रश्नः काँग्रेस जितनी पुरानी है, उसकी अवधारणा भी उतनी पुरानी है। फिर ऐसी क्या बात है कि काँग्रेस आज आम जनता का भरोसा खो चुकी है।

श्री अर्जुनसिंहः देखिए काँग्रेस पुरानी है, इसका तो इतिहास साक्षी है, कोई कहना भी चाहे कि पुरानी नहीं है, तो कह नहीं सकता। जहाँ तक उसकी अवधारणा का सवाल है, जिस दिन से काँग्रेस का गठन हुआ,

1885 से लेकर और अभी तक का आप देखें, आपको अलग-अलग स्टेजेस पर यह बात दिखेगी कि काँग्रेस में इतनी शक्ति है, कि अपनी अवधारणा को वह संशोधित कर सकें, आधुनिक स्वरूप दे सकें और दकियानूसी होने से बचा सके। अगर आज हममें इस पूरी क्षमता का अभाव हो गया है, तो इसका मतलब यह नहीं कि काँग्रेस में क्षमता नहीं है। और मुझे विश्वास है कि आने वाले दिनों में जब हम इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश करेंगे तो काँग्रेस निश्चित रूप से इक्कीसवीं शताब्दी के अनुरूप हर क्षेत्र में अपने विचारों को, सिद्धांतों को, कार्यक्रमों को उस प्रकार से ढालेगी। आखिर राजीवजी आज से 5 साल पहले क्यों, इक्कीसवीं शताब्दी की बात करते थे। लोग हँसते थे उन पर, कि अभी आज का तो देखो इक्कीसवीं शताब्दी किसने देखी है। लेकिन उनके कहने का मतलब यही था कि काँग्रेस को हम आज पर केन्द्रित नहीं कर सकते। इक्कीसवीं शताब्दी में भी उसकी सार्थकता रहना चाहिए।

प्रश्न: आपने जैसा कहा था कि काँग्रेस में ऐसा कोई चमत्कारिक नेता नहीं है, तो आज आप पुन: काँग्रेस में आ गए हैं, तो क्या यह मान लिया जाय कि आप काँग्रेस के चमत्कारिक नेता हैं?

श्री अर्जुनसिंह: अगर मैं अपने को ऐसा समझता तो जरूर आप कहते, लेकिन मैं अपने को ऐसा समझता ही नहीं हूँ।

प्रश्न: क्या काँग्रेस लोकसभा में बहुमत लाएगी?

श्री अर्जुनसिंह: अब देखिए मैं कोई भविष्य वक्ता तो नहीं हूँ, मैं केवल एक राजनीतिक कार्यकर्ता के नाते आकलन कर सकता हूँ। मेरा तो आकलन यही है कि काँग्रेस में कुछ कमजोरियाँ आई हैं। उनको सच्चाई से देख लिया जाय पहले जैसा कि केसरीजी ने महसूस किया सबसे पहला स्टेज तो वही था कि हमारे में क्या गलतियाँ हैं, क्या खामियाँ है। वह तो उन्होंने स्वीकार किया अब उनके सामने काम है, उसको दुरुस्त करने का उसमें सहयोग करें तो मैं तो मानता हूँ कि काँग्रेस का जहाँ वर्चस्व रहा है, इतना सब होने के बावजूद एक सीमा से कम नहीं हुआ। उसके ऊपर आना कोई मुश्किल काम नहीं है।

प्रश्न: एक सवाल हमारा... सरकार के मुखिया और माधवरावजी का संयुक्त दौरा हो रहा है।

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो नहीं जानता कि कौन मुखिया है आप जानते होंगे लेकिन माधवरावजी का इस क्षेत्र में दौरा हो, ये तो मैं स्वागत करता हूँ बल्कि हम लोगों के बीच में यह तय हुआ है कि न केवल मध्यप्रदेश में ही नहीं यहाँ के कई हिस्सों में हमारे संयुक्त दौरे होंगे।

प्रश्न: केन्द्र में देवगौड़ा सरकार को समर्थन के मामले में आपकी पार्टी के कुछ नेता कहते हैं, समर्थन वापस लेना चाहिए कुछ कहते हैं नहीं लेना चाहिए। क्या काँग्रेस पार्टी पर इसका प्रभाव पड़ेगा।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए हर प्रश्न पर कभी-कभी सबके मत एक तो नहीं हो सकते। लेकिन अंतत: जो फैसला काँग्रेस इस विषय पर लेगी, वर्किंग कमेटी में सोच समझकर लेगी। इसलिए रोज के घटना चक्रों से किसी निष्कर्ष पर पहुँचना शायद मुश्किल होगा।

प्रश्न: महामहिम राज्यपाल के उद्‌बोधन के बाद भी शिक्षा का विकेन्द्रीयकरण न हो और रातों रात रीवा का वाइस चांसलर बदल जाना क्या यह एक सही कदम है। क्या आप इसका स्वागत करते हैं।

श्री अर्जुनसिंह: अब मैं तो यह मानकर चलता हूँ कि मध्य प्रदेश के महामहिम राज्यपाल महोदय ने जो कि सभी युनिवर्सिटी के संरक्षक भी हैं, और प्रभारी भी हैं, उन्होंने अपने को संतुष्ट किया होगा कि धारा 52

के अन्तर्गत करने के लिए वह सभी तथ्य विद्यमान थे। अगर वह विद्यमान थे तो उनका फैसला ठीक ही है। विद्यमान नहीं थे तो आगे चलकर पता चलेगा।

प्रश्नः क्या आपको काँग्रेस में वापस आने के लिए राज्य के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह का योगदान रहा है।

श्री अर्जुनसिंहः मैं तो सबको ही धन्यवाद देता हूँ लेकिन अगर योगदान रहा है, तो केवल एक व्यक्ति का श्री सीतारामजी केसरी का।

प्रश्नः केन्द्र में इस समय काँग्रेस की सरकार नहीं है और वर्तमान सरकार में मध्यप्रदेश से कोई केन्द्रीय मंत्री नहीं है, तो मध्य प्रदेश की जो साढ़े पाँच करोड़ जनता है उसके हितों को केन्द्र सरकार क्रियान्वयन न करें तो इसके लिए कोई योजना काँग्रेस के या आपके पास है?

श्री अर्जुनसिंहः उसका तो रास्ता एक ही है कि जब कभी कोई ऐसा विषय आए कि जो सार्वजनिक रूप से इस प्रदेश के हित से जुड़ा हो उस पर पहल होनी चाहिए और उस पर कोशिश होनी चाहिए। बाकी मंत्री तो कोई बन नहीं सका और अब तो सहयोग दिखता ही नहीं। पहले तो संभावना थी भी, लेकिन अब तो वह भी नहीं है।

प्रश्नः कुँवर साहब क्या आप यह मानते हैं कि उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति गिरी है।

श्री अर्जुनसिंहः न्याय और व्यवस्था तो अकेले तब देखी जाय जब प्रजातंत्र वहाँ कायम हो, उत्तर प्रदेश में तो प्रजातंत्र ही नहीं है। यह कितनी दुखद बात है कि चुनाव के 6 महीने बाद तक वहाँ पापुलर सरकार न बन सके। विधायक शपथ न ले सकें। चिंता का विषय है।

प्रश्नः देवगोड़ा सरकार द्वारा जनहित याचिकाओं पर रोक लगाने का विचार चल रहा है?

श्री अर्जुनसिंहः मैंने सुना कि वह विचार त्याग दिया गया है। इसलिए क्यों उठाते हैं उसको, मैं समझता हूँ वह विचार उचित नहीं था, इसीलिए त्याग दिया गया है।

प्रश्नः विंध्य क्षेत्र में बढ़ते जातिवाद को कैसे रोका जा सकता है?

श्री अर्जुनसिंहः जो प्रबुद्ध वर्ग है जो सोचने समझने वाले लोग हैं, वह लोग जातिवाद से अपने को मुक्त करले तभी जातिवाद रुकेगा। ऐसा नहीं हो सकता कि भाषण तो आप जातिवाद के खिलाफ दें और आचरण में उसके अनुरूप काम न करें। ये विरोधाभास जब होता है, तो आम आदमी देखता है और समझ जाता है कि सब नकली था। और कोई रास्ता इसका नहीं है।

प्रश्नः मध्य प्रदेश के तबादला उद्योग खासकर के रीवा के तबादला उद्योग के बारे में आपके क्या विचार हैं?

श्री अर्जुनसिंहः कोई भी उद्योग चले वह जनहित के आधार पर चले तो ज्यादा अच्छा है।

प्रश्नः इस समय पूरे प्रदेश में प्रत्येक जिले में कोई न कोई एक व्यक्ति सत्ता के केन्द्र बने हुए हैं और लगभग हर कार्यकर्ता प्रताड़ित है। यही हाल सतना में, यही हाल सीधी में है। एक मर्डर हो गया था उसमें एक राज्यमंत्री का नाम है, सतना में भी हुआ इसी तरह से पूरे प्रदेश में सत्ता के एक-एक केन्द्र खड़े हुए हैं। ऐसे में आम कार्यकर्ता का जो आक्रोश है, वह बहुत ज्यादा है। दो साल बाद चुनाव होने वाले हैं। अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई है। कभी भी हो सकते हैं। यह माना जाने लगा था कि प्रदेश में एक बार आप फिर लौटे तो स्थिति कुछ सुधरे?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो आपके सामने बैठा हूँ। मुख्यमंत्री तो बहुत अच्छे हैं, बहुत से लोग यहाँ उस पद के लायक हैं, मैं समझता हूँ कि वह लायक तो हैं ही। जो आपने पहला सवाल किया है, वह जरूर चिंता का विषय है और सत्ता के केन्द्र बने हुए लोगों द्वारा उन असंवैधानिक शक्तियों का जो उपयोग होता है, उसका जरूर डटकर मुकाबला होना चाहिए। और उन्हें समाप्त करना चाहिए नहीं तो जैसा आप कह रहे हैं, खतरा निश्चित रूप से बढ़ेगा।

प्रश्न: हमारा सवाल यह था कि काँग्रेस ने जो समर्थन दिया उस समय कोई सत्र नहीं था। अब जो वर्किंग कमेटी की बैठक हुई उसमें निर्णय पारित किया कि समर्थन देंगे तो ये जो पैतरा बदला क्या ये राजनीतिक बदलाव है।

श्री अर्जुनसिंह: पैतरा नहीं बदला है, ये इसलिए हुआ है कि जून के महीने में जब यह फैसला हुआ बिना शर्त समर्थन देने का उस समय देश के अन्दर यह स्थिति निर्मित हो गई थी कि भारतीय जनता पार्टी जैसी सांप्रदायिक पार्टी देश के अन्दर सत्ता हथियाने के नजदीक पहुँच गई थी। और 13 दिन के लिए तो प्रधानमंत्री बन गए थे वाजपेयीजी। उस चीज को उसकी संभावना को समाप्त करने के लिए यह जरूरी था कि बिना शर्त समर्थन देने की बात की जाय। और अब जो मुद्दों की बात आई है, उसका कारण यह है कि वो खतरा तो टल गया। अब हर पार्टी का केवल काँग्रेस का ही नहीं आप देखिए जितनी भी पार्टियाँ है, सी.पी.एम. को देखिए, सी.पी.आई. को देखिए, ये सभी मुद्दों पर आधारित समर्थन देना चाहते हैं। इसके पीछे सोच यह है कि हर पार्टी का अपना पोलिटिकल एजेण्डा है, अपना एक राजनीतिक कार्यक्रम है, हम उस कार्यक्रम को छिन्न-भिन्न होने देना नहीं चाहते या उसमें किसी प्रकार की तब्दीली नहीं आने देना चाहते। इसलिए मुद्दों की बात पर समर्थन देना चाहते हैं। अगर हमारे किसी कार्यक्रम को लेकर कल यह गवर्नमेण्ट कहे कि हम कार्यक्रम के विपरीत चलेंगे तो ये सामाजिक न्याय की बात है। एक सीमा से ज्यादा विदेशी पूँजी के प्रश्न पर पार्टी को सोचना पड़ेगा कि उस हालत में हम समर्थन जारी रखे या नहीं।

प्रश्न: अपने देश में पर्यावरण की समस्या दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है और स्थानीय कत्लखानों में पशुओं की हत्या हो रही है। इसकी रोक के लिए सरकार कोई ऐसा कानून नहीं बना रही है कि जिससे उनकी हत्याओं को रोका जा सके। आज गायों की, बैलों की, सरे आम हत्या की जा रही है तो ऐसा कोई कानून बनाया जाना चाहिए जिससे हमारे पर्यावरण की रक्षा हो सके।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए पर्यावरण की बात अलग है और गौवंश की हत्या की बात अलग है। मैं तो नहीं समझता कि इन दोनों में कोई तालमेल है। इन विषयों पर, पर्यावरण के बारे में अभी जितने भी कानून बने हैं कई क्षेत्रों में वे पर्याप्त हैं, कई जगह वे नहीं बने हैं, तो बनना चाहिए। गौवंश की रक्षा का मैं समझता हूँ कि अलग-अलग प्रदेशों में कानून बने हैं। पूर्ण रूप से गौवंश की रक्षा हो इस बात को सार्वजनिक रूप से स्वीकारा गया है।

प्रश्न: मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री आदिवासी हो आप इसके पक्षधर रहे हैं तो अगले चुनाव के बाद क्या आदिवासी मुख्यमंत्री होगा?

श्री अर्जुनसिंह: भाई बार-बार तो हम यह कह चुके हैं कि हमारे हाथ में नहीं है। यह तो मध्य प्रदेश के विधान सभा के काँग्रेस पार्टी के जो सदस्य है उनके ऊपर है।

प्रश्नः आपके जो कार्यक्रम होते हैं उनमें और रीवा, सतना में जो काँग्रेस पार्टी के कार्यक्रम होते हैं, उनमें कुछ काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं को बुलाया नहीं जाता उपेक्षित किया जाता है तो इस संदर्भ में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए उपेक्षित कोई नहीं होगा। काँग्रेस में एकीकरण हुआ है। वह किसी शर्त पर नहीं हुआ। अगर कोई यह समझता है कि मैं इस पद पर था अब यहाँ आ गया हूँ तो मुझे वह पद मिलना चाहिए तो मूल सोच ही गलत है। एकीकरण में पूरी तरह से मेम्बर सब जगह बनाए गए हैं। रीवा में भी बनाए हैं उसकी जो प्रक्रिया है, वह प्रक्रिया तो अब शुरू हो रही है। उस प्रक्रिया में जिनके नाम है, मुझे नहीं मालूम लेकिन जिन्होंने मेम्बर बनाए हैं, वह रहेंगे।

काँग्रेस संगठन के चुनाव

28 मार्च, 1997 को भोपाल में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश —

मैं दो शब्द कहना चाहता हूँ। कल की जो एक्सरसाइज थी, उस के बारे में आप लोगों ने अलग-अलग पूछा था। पंचायतों से संबंधित प्रश्न किए और वैसे भी अपने-अपने जिले और क्षेत्रों से संबंधित प्रश्न जो उनके मन में थे, उनके बारे में अपनी बात कही और काफी स्पष्ट रूप से विचारों का आदान-प्रदान हुआ। कुछ लोग नहीं आ पाए। मैं ने यह सोचा है कि उन लोगों से उनकी राय लिखकर मँगवा लें। जो थोड़े समय में बहुत-सी बात नहीं कह पाए थे, वे भी बता सकेंगे और जो लोग आए नहीं, वे भी सीधे, पत्र में अपने सुझाव लिख भेजेंगे।

फिर कल रात में करीब चालीस-पैंतालीस लोग जनपद पंचायतों के अध्यक्ष, जिला पंचायतों के अध्यक्ष और ग्राम पंचायतों के अध्यक्ष भी रात को करीब दस बजे आए और मिले। उन लोगों ने भी इस बारे में चर्चा की। उनका भी यह सुझाव था कि हम लोगों को जानकारी पहुँची तो हम लोग आ गए, लेकिन सब लोग तो यहाँ नहीं आ सकते हैं। तो आप जरा भोपाल से बाहर निकलिए और हम लोगों को मौका मिले।

मैंने यह सोचा है कि मई के महीने में तो फिर आर्गेनाईजेशनल चुनाव शुरू हो जाएँगे। अप्रैल के महीने में जहाँ भी जा सकूँगा, मैं जाने की कोशिश करूँगा और उन सब लोगों से सम्पर्क होगा। मई में अपने आर्गेनाईजेशन इलेक्शन के बाद फिर जो कुछ भी इस दौरान लोगों के विचार आएँगे और जो कुछ भी थोड़ा बहुत मेरी समझ में आएगा, उस पर जो कुछ हमें कहना है, वो भी मैं मुख्यमंत्री जी से फिर बात करूँगा।

पत्रकार : अप्रैल में आप जिलों में जाएँगे।

श्री अर्जुनसिंह : हाँ जिलों में।

पत्रकार : कल जो विधायकों से बात हुई है, उस में क्या लगा आप को? क्या पंचायती राज से वो खुश थे या नहीं थे?

श्री अर्जुनसिंह : नहीं, पंचायती राज के विरुद्ध कोई नहीं है। एक बात बहुत स्पष्ट रहनी चाहिए। किसी ने यह नहीं कहा कि हम पंचायती राज के विरुद्ध हैं। इसलिए वो तो एक वेल एक्सेप्टेड एण्ड यूनीवर्सली एक्सेपटेड पॉलिसी है। अब जो उन की थोड़ी सी प्राबलम अलग-अलग तरीके से आई है, उन के लिए कुछ लोगों ने थोड़े बहुत सुझाव भी दिए है। एक तो टाइम बड़ा शार्ट था।

पत्रकार : मुख्य समस्या क्या है? किस तरह की है?

श्री अर्जुनसिंह : मुख्य समस्या अगर एक लाईन में कहना हो तो यह है कि थोड़ा-सा समन्वय और कार्य के क्षेत्र में अधिकारों के बीच में तालमेल। आई मीन आई मे पुट इट वेरी वेल जनरली।

पत्रकार : समन्वय किन के बीच में?

श्री अर्जुनसिंह : जनप्रतिनिधियों के बीच में। आखिर हैं तो वे सब जन प्रतिनिधि पंच से लेकर विधायक तक। सब की अपनी-अपनी जन प्रतिनिधित्व की जिम्मेदारियाँ हैं और उन जिम्मेदारियों को निभाना चाहते हैं।

पत्रकार : बीच में यह भी छपा था कि कुछ एमएलए ऐसा समझते हैं कि उन के अधिकार छीन लिए गए हैं?

श्री अर्जुनसिंह : छीनने की बात कोई नहीं है।

पत्रकार : यह बात सामने आई है कि जो अधिकारों को देने की बात जब पंचायतों को कही गई, जो घोषणाएँ की गई, वो पंचायतों तक नहीं पहुँची हैं?

श्री अर्जुनसिंह : जी हाँ, मैं आप से कह रहा हूँ। ये चीजें ऐसी हैं कि एक तरफ इन को आप ने अधिकार दिया है। वे समझते हैं कि उन को सम्पूर्ण अधिकार नहीं मिले। साधन नहीं मिले। साधन मिलने में थोड़ी सी देरी हुई है, यह तो सर्वविदित है। कोई ऐसी बात नहीं है, प्रदेश में साधनों की कोई एक सीमा है तो इन सब चीजों से जो बातें उत्पन्न हुई हैं, जो अंततः जिस को हम ये कहेंगे कि प्रतिनिधित्व शासन, रिप्रजेंटेटिव्ह गवर्नमेंट, जिस लेबल पर भी हो, एफेक्टिव हो। अंततः सबका उद्देश्य तो जनहित है। अगर एफेक्टिव नहीं होगा तो प्रभावित तो जनहित होगा न।

पत्रकार : आप इस मुद्दे पर भाजपा विधायकों से भी बात करेंगे क्या?

श्री अर्जुनसिंह : यदि कोई करना चाहे तो मुझे कोई एतराज नहीं।

पत्रकार : कुछ विधायकों ने आप को यह भी सुझाव दिया है कि पंचायती चुनाव पार्टी लेबल पर और चुनाव चिन्ह पर होना चाहिए।

श्री अर्जुनसिंह : देखिए, एक दफा तो हुआ ही था। लास्ट टाईम नहीं हुआ।

पत्रकार : रीवा में अहमिया सरकार होने की कोई बात कही है। किस संदर्भ में वो बात कही है?

श्री अर्जुनसिंह : भाई, मैं ने तो ऐसी बात कही नहीं थी। हम को कुछ लोग आ कर कह रहे थे। मैंने उन को कोट किया।

पत्रकार : कौन-सी सरकार चल रही है?

श्री अर्जुनसिंह : वो कह रहे थे साहब हमें अहमिया सरकार से बचाईए। तो मैंने उन से कहा कि मध्य प्रदेश में केवल एक ही सरकार है, दिग्विजय सिंह की सरकार है। मैं किसी और सरकार को नहीं जानता। ये मैंने उनसे कहा।

पत्रकार : मतलब क्या होता है, अहमिया सरकार का?

श्री अर्जुनसिंह : ये जिन्होंने कहा है, उन से पूछिए? (हँसी) चाहे रीवा का हो, चाहे भोपाल का हो, चाहे ग्वालियर का हो, जिन्होंने इस्तेमाल किया, उन से पूछिए। मैंने तो किया नहीं।

पत्रकार : आप ने सी.डब्ल्यू.सी. में पंचायती राज का मामला काफी जोर से उठाया था, उसके बाद दिग्विजय सिंह जी ने आफर दिया था कि उन के साथ किसी भी पंचायत में चले और प्राबलम शार्ट आउट

करें। यह मौका कब आएगा?

श्री अर्जुनसिंह : ये तो हम नहीं कह सकते। हम जो कर सकते हैं वह करने की कोशिश कर रहे हैं और मैं इसका कोई उत्तर नहीं दे सकता।

पत्रकार : सत्ता और संगठन में कड़े निर्णय लेने की बात कही और आप ने इस के लिए क्या केसरी जी से बात की है, हायकमाण्ड से।

श्री अर्जुनसिंह : नहीं, अभी मैंने केसरी जी से इस के बारे में कोई बात नहीं की। जब कोई स्पेसीफिक कंक्रीट चीज सामने आएगी, तब करेंगे।

पत्रकार : शराबबंदी को ले कर खरगोन में जो झगड़े-फसाद हुए, उस पर क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह : अब शराब बंदी को ले कर जो झगड़े हुए, वो तो बड़े अनफार्चूनेट हैं। इस इशु में तो बहुत शांत तरीके से विचार कर के फैसला होने चाहिए। हिंसा का तो इस में कोई स्थान ही नहीं है।

पत्रकार : वर्तमान हालातों को देखते हुए आप को काँग्रेस का केन्द्र में भविष्य क्या लगता है?

श्री अर्जुनसिंह : देखिए, मैं कोई भविष्य वक्ता नहीं हूँ, लेकिन ये कोई मेरे कहने की आवश्यकता भी नहीं है। ये कोई भी सामान्य व्यक्ति इस बात को समझता है कि काँग्रेस पार्टी का क्या नेशनल लेबल हो, क्या स्टेट लेबल हो, काफी मेहनत करनी पड़ेगी और काफी हद तक स्थिति को सुधारना पड़ेगी, तब जा कर वो जनता के बीच में जो उसका स्थान है, वो उसको सुरक्षित रख सकेगी। यह कोई मेरे कहने की जरूरत तो है नहीं। यह तो स्पष्ट है।

पत्रकार: उत्तर प्रदेश में जो बसपा और भाजपा के बीच गठबंधन हुआ, इस बारे में क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह : वैसे तो ये गठ बंधन, मुझे गठबंधन नही दिखता है, उसके पीछे तो कुछ चीज नहीं है केवल 6-6 महीने का बँटवारा है।

पत्रकार : यह कब तक चलेगा?

श्री अर्जुनसिंह : एक 6 महीने चल जाए तो बहुत अच्छा है, उसका दूसरा फिर देखेंगे।

पत्रकार : इंदिरा काँग्रेस का जो इंटीग्रेसन काँग्रेस से हुआ ये अण्डरस्टेंडिंग थी कि जो लोग जिन-जिन स्थानों में थे, तकरीबन उन्हीं स्थानों पर वापस ले लिए जाएँगे?

श्री अर्जुनसिंह : नहीं, नहीं, शर्मा साहब, आप को किस ने यह बिल्कुल गलत सूचना दी है। इंटीग्रेशन के समय हमारे प्रस्ताव में ही बहुत स्पष्ट है कि विदआउट एनी कंडीशन। इसमें कोई पब्लिकली या प्रायवेटली, इस तरह की चर्चा ही नहीं हुई और न किसी बात को उठाया गया। इसलिए अब सेकण्ड क्वश्चन का तो कोई मतलब ही नहीं रह गया। इंटीग्रेशन, इस वक्त इंटीग्रेशन का मतलब मेन यह था कि हमारे आर्गेनाईजेशनल इलेक्शन हो रहे हैं, उसमें मेम्बरशिप के लिए सब को अपार्चुनिटी मिलनी चाहिए, तो वो सबको मिली है। कई जो स्टेट्स हैं, इलेक्शन से संबंधित स्क्रूटनी का, वो एक इम्पोर्टेंट फेक्ट था स्क्रूटनी कमेटी में सभी जगह के जो लोग इंदिरा काँग्रेस से आए, उनका रिप्रजेंटेशन हो गया है। सभी संगठन में हुआ है, तो एक प्रोसेस उसका है। बाकी किसी को कोई ओहदा पद देने की बात किसी ने नहीं की और न कोई आश्वासन हुआ।

पत्रकार : नेतृत्व परिवर्तन को आप अहम नहीं मानते, लेकिन जो कमियाँ बताई जा रही है, जो लेकुना आपने बताया, उसके लिए नेतृत्व को दोषी नहीं मानते?

श्री अर्जुनसिंह : अब मैं अगर उस दृष्टिकोण से देखूँ तो अब केवल नेतृत्व परिवर्तन ही करवाना है तो आप किसी चीज को कोई ओरिएंटेशन दे दीजिए। जब मैं कहता हूँ कि मैं उसको महत्वपूर्ण नहीं मानता तो जो बातें उन्होंने कही हैं, सुधार की दिशा में रहते हैं मैं तो उसी तरह से लूँगा।

पत्रकार : मध्य प्रदेश में अगला इलेक्शन कॉंग्रेस जीत सके, उसके लिए कौन से फेक्टर जरूरी हैं। क्या-क्या बातें बाकी हैं अभी?

श्री अर्जुनसिंह : मैं कोई पॉलिटिकल डाक्टर तो नहीं हूँ, जैसे वो प्रिसक्राइब्ड करते हैं। आज केवल मध्य प्रदेश में नहीं सभी जगह कॉंग्रेस की स्थिति काफी हुज्जत की स्थिति है। ऐसा नहीं है कि हम बड़ी आसानी से जो चाहें कर लें। अब उसमें उसी तरह से बनाने के लिए एकता की भी जरूरत है, जो ऐसे मुद्दे हैं, जिनका सीधा लोगों का संबंध है, उनके बारे में मिली जुली सोच, सामने आना चाहिए। जैसे एक पँचायती राज की सोच है, जो पब्लिक पीपल प्राबलम है, उनकी प्रियारिटी फिक्स होकर उस प्राबलम को एडजस्ट करने की बात है। ये सब चीजें हैं, जिन से होगा वे सरवाइव करेंगे।

पत्रकार : क्या बीमारी लोकेट कर ली, जो इलाज ढूँढ़ रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह : मैं अकेले कोई इलाज ढूँढ़ने वाला नहीं हूँ। इलाज हम सबको मिल कर, अगर इलाज शब्द इस्तेमाल करना है, वैसे मैं तो नहीं समझता कि इलाज का इसमें कोई प्रश्न है, यदि कुछ करना है तो सबको मिलकर करना है।

पत्रकार : कल की मीटिंग में क्या मंत्रिमण्डल के सदस्यों के करप्सन के बारे में बात उठाई गई थी?

श्री अर्जुनसिंह : नहीं, किसी के बारे में ऐसी कोई बात तो नहीं आई।

पत्रकार : माधवराव सिंधिया ने विधायक दल की बैठक में कहा था कि पंचायती राज असफल है क्या आपके सामने ऐसी कोई शिकायत आई?

श्री अर्जुनसिंह : नहीं, मेरे सामने तो ये बात किसी ने नहीं कही। माधवराव जी ने जो कहा, वो तो अखबारों में भी छपा था। अगर ऐसी कहीं स्थिति है तो वह स्थिति नहीं होनी चाहिए। इतना तो मैं कह सकता हूँ।

पत्रकार : ऐसी कोई स्थिति है क्या?

श्री अर्जुनसिंह : अगर माधवरावजी ने कहा है तो हवाई बात तो नहीं कहेंगे वो। उनको कहीं कोई अनुभव हुआ होगा तभी तो कहा उन्होंने। मैंने तो नहीं देखा कहीं ऐसा। मुझे देखने को नहीं मिला।

पत्रकार : माधवरावजी सिंधिया ने जो मुद्दे उठाए, उसके बाद यहाँ वी.सी. शुक्ला आए। उन्होंने कहा, जो लोग कॉंग्रेस से बाहर चले गए थे, उनको यह सब कहने का राइट नहीं है।

श्री अर्जुनसिंह : देखिए, एक तो ऐसा नहीं है कि हम हर बात पर रिएक्ट ही करें। कोई ऐसी अनिवार्यता तो है नहीं और मैं किसी के पर्सनल कमेण्ट पर रिएक्ट करना भी नहीं चाहता। जो मेरी बात है वो मैं जानता हूँ। जो मैं कह रहा हूँ, करने की कोशिश कर रहा हूँ। उसका सीधा संबंध हमारे प्रदेश और देश में कॉंग्रेस की मजबूती से है। अगर किसी को मेरी बात अच्छी नहीं लगती है या मै जो बोल रहा हूँ, वो पसंद नहीं आए तो उनकी लाचारी है। मेरी लाचारी नहीं और मैं ये जरूर कह दूँ कि किसी की वजह से जो मैं सोचता हूँ, जो उचित समझता हूँ, वो कहने से मै रुकने वाला नहीं हूँ, इसको रोकने के दो ही तरीके हैं, तीसरा तरीका भी नहीं है।

सीताराम केसरी जी अध्यक्ष हैं, इस पार्टी के, उनसे कह कर मेरा फिर से निष्कासन करवा दें। दूसरा फायनल सालुशन भी है, फिजीकल एलीमिनेशन का सालुशन करवा दें। उसकी भी एक्सपर्टीज अब मध्यप्रदेश में डेवलप हो गई है। कोई तीसरी बात नहीं आएगी। जिस को जो कुछ कहना है, कहता रहे। मुझे कोई परवाह नहीं।

काँग्रेस के अस्तित्व की चिन्ता

22 अप्रैल, 1997 को शिखर वार्ता के श्री त्रिलोक दीप के साथ साक्षात्कार—

प्रश्न: देश के राजनीतिक घटना चक्र का देश को कितना लाभ हुआ, आपकी पार्टी को कितना लाभ हुआ?

श्री अर्जुनसिंह: राजनीतिक घटना चक्र शुद्ध लाभ या हानि के आधार पर तो कभी आँका नहीं जा सकता। कई परिस्थितियाँ हैं जो घटनाओं को जन्म देती हैं। इन घटनाओं को जन्म दिया यूनाईटेड फ्रंट के अन्दर शामिल तत्वों ने जो उनका एक प्रखर गैर काँग्रेसवाद का जो रवैया था, धीरे-धीरे अविश्वास को जन्म दिया और इस स्थिति में ला दिया, जहाँ काँग्रेस के अस्तित्व को लेकर ही चिंता हुई और उसी का यह परिणाम है कि जो राजनीतिक घटना चक्र है अब इसमें हानि लाभ का तो प्रश्न नहीं है। लेकिन इतना तो स्पष्ट है कि इस भूल को सभी जितने घटक हैं, उन्होंने इसको स्वीकार किया है और जो अब करने की कोशिश है जो प्रयास किया है वह यह है कि अब आगे इस प्रकार की परिस्थिति पैदा न हो।

प्रश्न: इससे काँग्रेस को क्या हासिल हुआ?

श्री अर्जुनसिंह: काँग्रेस आज तो इस स्थिति में है नहीं कि अपने टर्म्स डिक्टेट कर सकें। लेकिन जो लोग काँग्रेस को टेकन फार ग्रांटेड मानकर के इसकी इमेज को और उसके प्रयास को कुंठित करने का प्रयास कर रहे है, वह तो समाप्त हो गया। अब काँग्रेस अपने बल पर जो कुछ अपनी स्थिति बना सकेगी उसके लिए अवसर खुला है।

प्रश्न: जब केसरी जी ने समर्थन वापस लेते हुए अपना दावा ठोंका था, तो उसके पीछे क्या कारण थे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए वह तो एक राजनीतिक स्ट्रेटेजी के बतौर सब चीजें हुई इसलिए हर एक चीज की व्याख्या तो नहीं हो सकती। सामूहिक रूप से जो उद्देश्य था, वह मैंने बताया।

प्रश्न: क्या आने वाले दिनों में ये जो कुछ हुआ उससे स्थिति सुधारी जा सकती है?

श्री अर्जुनसिंह: सुधारी जा सकती है। बिल्कुल सुधारी जा सकती है। एक तो जो दूषित वातावरण था, वह नहीं रहेगा। विश्वास व परस्पर सहयोग के आधार पर जो कुछ उपलब्धियाँ सरकार की होंगी उनका हमें राजनीतिक श्रेय भी मिलेगा। अभी तो कुछ करने की गुँजाइश नहीं थी करने के लिए कोई तैयार नहीं थे। और काँग्रेस को अपयश मिल रहा था आम जनता की निगाहों में तो एक तो सरकार के लेवल पर ये एक चीज है और फिर असली बात तो है, काँग्रेस अपने आप में, अपने लिए क्या कर सकती है। उसके लिए तो हम किसी दूसरे के सहारे रहकर कभी नहीं सोच सकते। तो कम से कम वो करने का रास्ता तो खुल गया।

प्रश्न: कहा जाता है कि ये जो विड्राअल था। इसको कभी भी किया जा सकता था। तमाम तरह के हालात थे। उस समय देश में विदेशी लोग आ जाएँगे तो आपके अनुसार इसकी इतनी जल्दी कैसे हुई?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए ये तो काँग्रेस अध्यक्ष के जजमेण्ट का सवाल था। विड्रा करने की बात पर व्यापक उन्होंने सबसे परामर्श भी किया। सब लोग सहमत भी थे। ऐसा नहीं था कि कोई इसके खिलाफ था। अब टाईमिंग के लिए तो नेचुरली लीडर हेज टू डिसाइड, उन्होंने डिसाईड किया। जो अंतिम परिणाम निकले हैं, उससे ये तो नहीं लगता कि वो फैसला टोटली गलत था या उसमें कोई बहुत बड़ी विकृति हो रही है इस तरह की।

प्रश्न: लीडर के इस फैसले से आप सहमत हैं? टाईमिंग को लेकर?

श्री अर्जुनसिंह: वैसे सहमति और असहमति लोग अपने-अपने नजरिए से देखते हैं। लेकिन लीडर का जो विशेषाधिकार है, उसे आप स्वीकार करते हैं, तो फिर उसके डिसीजन को ही स्वीकार करना चाहिए। और लीडर तो वही है, जो समय पर फैसला लें, फैसला सही निकले, तो एक तरह की परिस्थितियाँ जन्म लेती है फैसला गलत निकलता है, तो दूसरी तरह की परिस्थितियाँ जन्म लेती हैं। उसमें मैं कोई केसरी जी की तरफ से त्रुटि नहीं मानता हूँ।

प्रश्न: चर्चा यह थी अर्जुनसिंह जी की ये मूपनार की पार्टी को काँग्रेस में वापस लाने के लिए केसरी जी ने कुछ किया। इस बारे में आपने कुछ सुना इसको क्लीयर करेंगे।

श्री अर्जुनसिंह: ये तो मेरे ख्याल से इन घटनाओं के बाद की सोची हुई बातें हैं। इसमें किसी को लाने के लिए बात नहीं हुई थी। जो प्रयास हुआ है वह तो सबके सामने हुआ है। हम लोग चाहते थे, कि मूपनार इस सरकार के प्रमुख बने। वह बात नहीं हो सकी।

प्रश्न: इसे भी काँग्रेस सरकार का विस्तार कहा जा सकता है। गुजराल साहब तो आपके पुराने साथी रहे हैं। उनके बारे में आप क्या सोचते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: गुजराल साहब के बारे में बहुत अच्छा सोचता हूँ।

प्रश्न: वो आपके सहयोगी भी रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: जी हाँ, सहयोगी भी रहे हैं और संबंध बराबर हम लोगों के बने रहे और हम उम्मीद करते हैं कि वह एक स्वस्थ और अच्छी दिशा देश को देंगे। और अंततः उससे काँग्रेस को फायदा होगा।

प्रश्न: इस पूरे घटनाचक्र में आपका क्या योगदान रहा। क्या यह सही है कि आपकी सक्रिय भूमिका रही है।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं कोई सक्रिय भूमिका का सवाल नहीं है। सवाल यह है कि चूँकि मैं किसी फार्मल फोरम का सदस्य नहीं था, जो विचार-विमर्श उस फोरम में हुआ करता था, वहाँ तो मेरी उपस्थिति का कोई सवाल ही नहीं। जहाँ तक परामर्श और विचार-विमर्श काँग्रेस अध्यक्ष और साथियों के बीच में था, जहाँ भी आवश्यकता थी वहाँ बीच में था।

काँग्रेस अध्यक्ष का चुनाव

6 जून, 1997 को भोपाल में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

यह पूर्णतया स्पष्ट हो गया है जो मेरा संकेत था परसों कि माननीय श्री राजेश पायलट जी, श्री नरसिंहराव जी के प्रावसी केंडीडेट है, ये उनके आफिशियल केंडीडेट नहीं है, इसलिए यह बात

हम सबके सामने है कि यह फैसला इस चुनाव में काँग्रेस अध्यक्ष के लिए होना है। वो मूल रूप से यह होना है कि जिन कारणों से और जिन नेताओं और जिस तरह के निर्णयों से काँग्रेस की बहुत ही दयनीय स्थिति बनी 1996 में और ये विश्वास देश के विभिन्न वर्गों का काँग्रेस ने खोया। अब यह फैसला फिर से काँग्रेस जनों को करना है कि क्या वे उन्हीं नेताओं और उनके कार्यक्रमों और उनके दल से संचालित और प्रभावित होना चाहते है या हम काँग्रेस को एक नई दिशा, देना चाहते हैं। अब अकेले यही मुद्दा रहता है। इसमें काँग्रेसजनों ..... को फैसला करना है। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता है कि कम से कम मध्यप्रदेश में अब इस विषय में किसी भी प्रकार का मतभेद नहीं है। काँग्रेसजनों के बीच में बहुत थोड़े से लोगों को छोड़कर इस मौलिक प्रश्न का उत्तर मध्यप्रदेश के काँग्रेसजन, काँग्रेस के भविष्य को भी देखकर करेंगे। किसी भी पूर्वाग्रह से प्रभावित होकर नहीं करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

श्री दिग्विजय सिंह जी आज मुझसे मिलने आए थे और बयान उनका पहले ही छप चुका है। आज उन्होंने व्यक्तिगत रूप से भी मुझे यह सूचित किया कि वे और उनके सभी साथी श्री सीताराम केसरी जी के अध्यक्ष पद के लिए अपना मत और समर्थन देंगे। हमारी प्राथमिकता इस समय काँग्रेस के अध्यक्ष के चुनाव के लिए है। अन्य बातें उसके बाद सामने आएगी। वैसे सामान्य रूप से हम सब का यह प्रयास रहेगा कि प्रदेश की संस्था के संबंध में भी हमारा निर्णय इस प्रकार से हो जिससे कि प्रदेश में काँग्रेस मजबूत हो और सफलता से उन चुनौतियों का सामना कर सकें जो आज इस प्रदेश में राजनैतिक रूप से विद्यमान है। यह प्रयास होना ही चाहिए कि ज्यादा से ज्यादा परामर्श लोगों के साथ हो सके और मेरे ख्याल से सभी लोग इसको स्वीकार करेंगे। मध्यप्रदेश की परिस्थिति को देखते हुए हमें प्राथमिकता प्रादेशिक स्तर पर समाज के कमजोर वर्गों के लोगों को सामने लाने में देना होगी। आदिवासी, हरिजन अन्य कमजोर वर्ग के लोग ही मध्यप्रदेश का सच्चे रूप में प्रतिनिधित्व करते हैं और उन्हें प्राथमिकता मिलेगी यह प्रयास होना चाहिए। इसके अलावा मैं और कुछ भी नहीं कहना चाहता हूँ। सभी साथियों से परामर्श के बाद जो स्थिति सामने आएगी, हम उसके अनुरूप काम करने की कोशिश करेंगे।

प्रश्न: आज राजेश पायलेट ने यह आरोप लगाया है कि काँग्रेस चुनाव समिति के चुनाव में भारी धाँधली हुई है। इसकी तुलना 1949 के चुनाव से की गई है। इसके बारे में आपका क्या कहना है।

श्री अर्जुनसिंह: राजेश पायलेट जी ने यह आरोप लगाया है मैं यह तो नहीं कहता कि हमारे बड़े देश में कहीं कोई गलती नहीं हुई होगी, लेकिन यह कहना कि चारों तरफ केवल धाँधली हुई है और उससे सारा इलेक्शन निषेध हो गया है, तो मैं समझता हूँ कि ये सही नहीं है और जहाँ कहीं ऐसी बात साफ हो इसको देखना चाहिए, लेकिन पूरे देश का चुनाव निषेध हो गया है, यह कहना उचित नहीं है।

प्रश्न: लेकिन दिग्विजयसिंह मंत्रीमण्डल के सदस्य तो इस तरह आचरण कर रहे हैं जैसे उनको उनकी अंतरात्मा की आवाज पर वोट देने की सी.एम. के द्वारा छूट दे दी गई है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से कोई मतलब मैं नहीं समझता जो बात होगी, सामने होना चाहिए, सामने वो स्पष्ट रूप से कह रहे हैं, बयान दिया है, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से मुझसे कहा है मैं तो पूरा विश्वास करता हूँ।

प्रश्न: सोनिया गाँधी पिक्चर में कैसे आ रही है।

श्री अर्जुनसिंहः पिक्चर में इसलिए आ रही है कि वो काँग्रेस परिवार की सदस्य बन गई हैं, प्राथमिक सदस्य हैं इसलिए अपने परिवार के किसी भी व्यक्ति के बारे में ऐसी आशा करना कोई गलत नहीं है।

प्रश्नः आप इस तरह एक्सप्लेन कर रहे हैं कि वो डायरेक्शन देंगी कि किसको प्रेसीडेंट चुना जाए।

श्री अर्जुनसिंहः इस संबंध में तो उन्होंने कोई दिलचस्पी नहीं ली और न ऐसी कोई आशा है, न कोई करना है।

प्रश्नः काँग्रेस अध्यक्ष चुनाव के दौरान जो कटुता और बढ़ गई है इसको किस तरह से दूर किया जाए।

श्री अर्जुनसिंहः कटुता तो वैसी कोई रहने का सवाल ही नहीं, जो सैद्धांतिक रूप से बातें हैं, वे तो कहनी ही पड़ेगी।

प्रश्नः दिल्ली में आपका जो बयान शरद पवार के संबंध में आया है जिसमें राजीव गाँधी हत्याकाँड की जाँच कर रहे जैन आयोग का और काँग्रेस के ऊपर लगी सूचना छिपाने की बात कही गई है। उसको लेकर कहा गया है कि आप इस मामले पर नहीं बोले तो ही ठीक है।

श्री अर्जुनसिंहः अगर सैद्धांतिक विषयों पर ध्यान आकर्षित करना कटुता फैलाने की परिधि में आता है, तो मैं नहीं समझता कि ये परिधि में आता है। यदि उस परिधि में आता है तो चिकनी-चुपड़ी बातें करने का राजनैतिक माहौल में क्या मतलब हो सकता है, क्या उद्देश्य हो सकता है। मैं उसमें कुछ कहना नहीं चाहता। आरोप मैंने किसी के खिलाफ कोई व्यक्तिगत नहीं लगाया। मैंने वो संदर्भ बताया है, उस संदर्भ से उसमें क्या आचरण हुआ है उसका क्या असर हुआ पार्टी के ऊपर, बीते हुए इतिहास का अंग है। क्या हम उस सबसे आँख मूँद लें, अब तो उसको स्वीकार भी किया है, स्वयं उस चीज को जो अभी तक छुपा कर रखी गई थी। अब तो द्विवेदी जी के बयान में आ गया है कि हाँ चर्चाएँ, निगोसिएशन्स हुई। सबको मालूम था कि ये बात सही है कि वर्किंग कमेटी की मीटिंग में नहीं बताया गया। ये तो हम क्या बताएँ मैंने तो नहीं कहा और इन्हीं सब बातों का तो देश के लाखों लोगों पर असर हुआ जिसकी वजह से काँग्रेस को इतनी हानि हुई। अगर आप इन चीजों की बात नहीं करेंगे तो अपनी संस्था के किस हित की बात करेंगे। इसमें किसी के खिलाफ तो कोई बात नहीं है, यथार्थ से मुँह मोड़ लेना, सही जो बातें हैं उनको स्वीकार न करके केवल किसी को खुश करने की बात करना क्या यह संस्था के हित में है?

प्रश्नः अर्जुन सिंह जी जिस तरह से पार्टी में फेरबदल किया गया है और प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव भी पार्टी अध्यक्ष के चुनाव के बाद में हो रहा है, क्या कार्यसमिति के निर्णय के विपरीत नही है? इसको आप कैसे जस्टीफ़ाई करेंगे?

श्री अर्जुनसिंहः ये तो बहुत क्लियर बात है, चूँकि बैलेट डालकर के बहुत दिनों बाद चुनाव हो रहे हैं, एक ही दिन में संभव नहीं था उसको कर पाना, इसलिए कोई आर्गनाईजेशन से किसी के वोट की किसी की कमी तो आती नहीं है।

प्रश्नः विधायक दल की बैठक में प्रदेश के 15 प्रतिनिधि चुनने की बात उठी थी उसमें आपने भी सलाह मशविरा दिया है।

श्री अर्जुनसिंहः आज मुख्यमंत्री जी ने कुछ चर्चा की है।

प्रश्नः केरल में तो कोई इलेक्शन नहीं हो रहे हैं।

श्री अर्जुनसिंहः इलेक्शन हो रहे है, या नहीं हो रहे है। मैं आपसे कह तो रहा हूँ, मिस्टर विजय भास्कर रेड्डी ने कहा है, तमिलनाडु के पी.सी.सी. प्रेसीडेंट है उन्होंने कहा है, कर्नाटक के जो पी.सी.सी. प्रेसीडेंट है उन्होंने कहा है। अभी आप बहुत लोगों को नोटिस नहीं देते यह अलग बात है। आपने कहा नहीं

कि दक्षिण भारत में कोई नहीं कह रहा है।

प्रश्न: वर्किंग कमेटी में जो दक्षिण भारत के सदस्य है .....

श्री अर्जुनसिंह: वर्किंग कमेटी में विजय भास्कर रेड्डी हैं, ए.के. एंटोनी हैं, ये तो वर्किंग कमेटी के ही मेम्बर हैं साऊथ के हैं।

प्रश्न: जैसे आप दौरा कर रहे हैं, वैसे और कौन आपके साथ कर रहे हैं।

श्री अर्जुनसिंह: मैं और तो कहीं गया नहीं सिवाय बाम्बे के।

प्रश्न: आपके हिसाब से और कौन दौरा कर रहे हैं।

श्री अर्जुनसिंह: अलग-अलग प्रदेशों में जा रहे हैं। प्रणव मुखर्जी साहब, आसाम गए हैं। माधवराव जी आज जयपुर में हैं, और प्रदेशों में भी लोग जा रहे हैं।

प्रश्न: आप बाम्बे होकर आए हैं, महाराष्ट्र में क्या.... आशा है।

श्री अर्जुनसिंह: महाराष्ट्र में केसरी जी का समर्थन बढ़ रहा है और कोई आश्चर्य नहीं होगा जब नतीजे निकलेंगे।

प्रश्न: उनको कितने मत मिलेंगे।

श्री अर्जुनसिंह: ये तो जैसा अभी तक होता आया है वैसा ही होगा।

प्रश्न: इस बारे में आपका क्या कहना है।

श्री अर्जुनसिंह: भाई, मैं तो नहीं समझता कि पैसा दिया गया होगा। मैं तो यही मानकर चलता हूँ कि नहीं दिया गया होगा।

काँग्रेस में कोई करिश्माई नेता नहीं

7 दिसम्बर को पायनियर के कुमार आनन्द के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Question: What is the future of Congress party in the comming election.?

Shri Arjunsingh: You see, the future of the congress party... has established its prominence when the result of this election are known.

Question: How many seats you predict?

Shri Arjunsingh: I can't predict, atleast I have never done so.

Question: This is the survey report which says between 80 to 120 seats..

Shri Arjunsingh: Well, with all due respect to all these surveys that will go on, that they are not the last word, number one, and experience has shown that the survey reports are not true.

Question: What Congress working committee's meeting has decided?

Shri Arjunsingh: In the meeting of the Congress working committee in fact something which never used to happen previously, Congress President made it a point that every turn of event to ask each and every member of the working committee what his or her opinion was, and only then a decision was taken. So may be it suits some people

to spread this kind of disinformation but it is not a fact.

Question: On 20th of November there was a meeting and there was not a decision and you just walked out of it. Is it not so?

Shri Arjunsingh: It was a different thing altogether, that was not a committee to decide anything? It was committee to address a press conference and make some observations, so only related to that, it was not to decide what party is going to do on this. Absolutely not if that is the information given, it is absolutely wrong.

Question: In 1995 in the Amethi Soniaji herself has said about Rajiv Gandhiji's assassination and that become the issue.

ShriArjunsingh: No, what did she said there she only said that the probe is being delayed and it should be fast. I think it is all that she said. She did not point finger at anyone, so far as I remember. The probe was being delayed, and what happened in the last five years? The issue of Shri Rajivji's assassination. It will definately be taken as an issue. But it will not be the only issue, and then so many other factors that will come from state to state, internal security. What has happend to endanger the borders of India, in the north-east and so many other places.

Question: And again, what is that because you have to face the hung parliament... Do you feel that any party will get absolute majority?

Shri Arjunsingh: See, don't under estimate the voters of this country. Atleast I will always mention it, whatever be their decision we should accept it. But don't under estimate them. They know the danger to this country and they know the dangers that comb out when parties who can not reconcile their personal ambitions with the demands of the nation.

Question: Few years ago when congress was led by some Charasmatic leaders and the problem is yet to be solved and what will be the alternate of that.....

Shri Arjunsingh: Well, I think the very attempt to pose this question to ourselves and try to search the alternative you have to deal with the delicacies of the situation, we don't have leader in the congress who has the charishma of Jawahar Lal Nehru, Indiraji, Shashtriji, Rajiv Gandhi so to search for that I don't think there is ony one, you only have then to come to the next. Now here I want to be very clear because this is something which can be a decisive factor, in the ultimate decision that the voter of this country take, whether to repose confidence in the congress party or not, after all those issues have been stated. My view is very clear on this. We have Shri Sitaram Kesri as the Congress President, so he is leading the congress party.

Now, we have a lot of other people who are helping him. We should not be giving any individual the sole right to decide for any state, number one, the decision has to be arrived at regarding candidates on the basis of very clearcut guidelines and discussion. And every one has to take part in that whether it is Madhya Pradesh, whether it is U.P., whether is is Maharashtra, Bihar anywhere. Number two each one of us is now on test as a congress man, and to what extent we want the interest of the congress to survive.

Question: Who would be the Prime Minister...?

Shri Arjunsingh: That is to be decided by the parliamentary party which will be elected after the results are out.

Question: You know, like BJP is putting Atal Bihari Vajpayee.....

Shri Arjunsingh: What other parties are doing they are doing, what can we do about that.

Question: But Congress use to practice who is the President of the Party, he used to be the Prime Minister also...

Shri Arjunsingh: He can definitely be the Prime Minister. Why not, but that is a question to be decided by the parliamentary party after the election. Well I don't know why but I certainly don't endorse this quickly and decision have to be taken in a very very short period, so let us see what the Congress President does. But may be at this moment of time there should not be a issue which should be pressed beyond certain limits. I have been saying from the very begining that the forum of the party must be very much there. So I am not changing my mind, but at this moment of time under the imperative of the present situation what we have to do is someting quite. Thank you.

कॉंग्रेस सभी समस्याओं पर राष्ट्रहित की दृष्टि से बात करती है

17 दिसम्बर, 1997 को संतोष भारती के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

श्री संतोष भारती: देश की मौजूदा राजनीतिक स्थिति के पीछे आप को क्या मुख्य कारण नजर आते है?

श्री अर्जुनसिंह: ये दोष देने वाले दृष्टिकोण से बहुत-सी चीजें लोग सामने लाते हैं, लेकिन अगर पूर्वाग्रह से ऊपर उठ कर देखने की कोशिश की जाय तो मोटे तौर पर दो-तीन बातें मेरी समझ में आती हैं। पहली बात यह है कि कुछ दिनों से, कुछ वर्षों से कहिए, राजनीतिक क्षेत्र में कुछ ये दृष्टिकोण ज्यादा प्रभावी होता गया कि हर कीमत में हमें अपने उद्देश्य को प्राप्त करना ही है। वो हर कीमत में जो बात सामने आ जाती है। बहुत-सी मर्यादाएँ और बहुत से आधार, जो एक स्वस्थ राजनीति

और जीवन का स्रोत है, वो गौण हो जाते हैं और बहुत सी बातें सामने आ जाती हैं एक से दस प्रकार की।

दूसरी बात यह भी है कि जो आधार स्तम्भ थे हमारे राजनीतिक सोच के, आप उसे सेक्यूलरिज़्म कह लीजिए, समाजवादी समाज की रचना की बात कह लीजिए और अब उसमें जुड़ गया सामाजिक न्याय की बात कह लीजिए। इनके बारे में लोगों के दृष्टिकोणों में काफी परिवर्तन हो गया है और इसलिए विचारों की स्थिरता भी आई है। स्वाभाविक है कि उसका असर लोगों के निर्णयों पर आएगा।

तीसरी बात यह है कि जो आर्थिक ढाँचा देश का है, वह दुनिया के आर्थिक दबावों या कुछ दबावों की वजह से उस में काफी तेजी से परिवर्तन आ रहा है और आर्थिक क्षेत्र से उठे हुए जो दबाव हैं, जो अनिवार्यताएँ हैं, वो सामान्य लोगों के जन-जीवन को भी और उनके विचारों को भी प्रभावित कर उनमें काफी परिवर्तन करने लगे हैं। ऐसा सोचिए कि एक परिवर्तन काल है इसलिए थोड़े- से अस्थिरता का वातावरण बना हुआ है। मेरे ख्याल से यह बहुत दिनों तक नहीं चलेगा और धीरे-धीरे इसमें स्थिरता आएगी।

श्री संतोष भारती: तो क्या यही कारण माना जाय, जो की दलों की मिली-जुली सरकारों का युग लोग कहते हैं अब आ गया है और आगे भी चलेगा या इसके अलावा भी कुछ कारण हैं, आप की नजर में कि इस प्रकार की स्थिति कब तक रहेगी?

श्री अर्जुनसिंह: मोटे तौर से यही कारण है उसके और बहुत विस्तार में जाने में तो बहुत-सी चीजें सामने आ सकती हैं, लेकिन मोटे तौर से मेरी समझ में यही कारण है और इसमें कोई भविष्यवाणी की दृष्टि से तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन राजनीतिक समीक्षा के आधार पर मेरी ऐसी मान्यता है कि ये दौर बहुत दिनों तक तो नहीं चलेगा। कुछ दिनों अभी और चल सकता है।

श्री संतोष भारती: तो ऐसी स्थिति में काँग्रेस की कार्य प्रणाली में कहाँ पर चूक हुई या कौन-सी चीज छूटी, क्योंकि जिस काँग्रेस का देश में एक छत्र राज्य था, वो अब हर जगह सिकुड़ती जा रही है। आखिरी उदाहरण मणिपुर का आया। वहाँ भी टूट हुई और काँग्रेस जो अधिकारिक पार्टी है, वो अल्प मत में आ गई है।

श्री अर्जुनसिंह: मैंने जो एक बात शुरू में कही कि हर कीमत पर अपने उद्देश्य की प्राप्ति की प्रक्रिया चल पड़ी है, उसमें ये सब अवश्यम्भावी है। केवल काँग्रेस के लिए नहीं, उत्तर प्रदेश में क्या हुआ? भारतीय जनता पार्टी में, जो स्वयं प्रचारित करते थे कि हम सिद्धांतों के पालन में अग्रणी हैं। हमारी मान्यताएँ स्थिर हैं। उन्होंने क्या किया? तो जो एक असर है, वो सब पार्टियों पर होगा। काँग्रेस का भी आज जो हाल हुआ है, वो उन्हीं सब कारणों से हुआ है।

अब सेक्यूलरिज़्म के बारे में ले लीजिए। धर्मनिरपेक्षता, ऐसा लोग मानते थे और मानने के आधार थे, यह एक ऐसा विषय है, जिस पर काँग्रेस पर कभी कोई अँगुली नहीं उठा पाएगा। क्योंकि हमारी परम्पराएँ आज की नहीं थी। कई दशकों से थी। आजादी की लड़ाई से थी। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में उसी के बारे में संदेह पैदा हो गया, हम लोगों के आचरण की वजह से। क्या उसका असर नहीं पड़ेगा? माइनारिटीज़ पर उसका असर पड़ा। ये सब तो जो मैंने पाँच-छः बातें

शुरू में कहीं थी, मेरे ख्याल से उसी से सब यह होता है। काँग्रेस भी प्रभावित हुई है।

श्री संतोष भारती: मेरा सवाल अभी यह है कि एक सौ चालीस सांसद होने के बावजूद काँग्रेस की रणनीति में या एप्रोच या जिस को कहते हैं, उसके प्रोजेक्सन में कहाँ कमी है, ताकि लोग आज इसको केन्द्र बिन्दु नहीं मान रहे हैं। केन्द्र बिन्दु लालू यादव बन रहे हैं।

श्री अर्जुनसिंह: वो सामयिक बात है। केन्द्र बिन्दु बनने का प्रश्न नहीं है। यही सब चीजें जब सामने आएगी और उनको स्पष्ट रूप से कहा जाएगा तो फिर यह सवाल नहीं उठेगा। आज भी काँग्रेस के अलावा कोई पार्टी नहीं जो सचमुच में बी.जे.पी. के चैलेंज को रोक सके? खैर, इन डेढ़ सालों में, अठारह महीने में ये जितने बड़े-बड़े नेता थे, ये किस के बलबूते पर बी.जे.पी. को रोके रहे? अपने बलबूते पर नहीं, काँग्रेस के ही बलबूते पर रोके रहे।

श्री संतोष भारती: आप से मैं इस बात को थोड़ा और इसलिए पूछना चाह रहा हूँ, क्योंकि अभी एक सप्ताह नहीं हुए कि फारुक अब्दुल्ला ने एक बयान दिया मुसलमानों के ऊपर कि साम्प्रदायिकता में काँग्रेस आगे है, और बावरी मस्जिद को गिराने की जिम्मेदारी काँग्रेस के ऊपर है और इसी तरीके का बयान लगभग एक दिन पहले मुलायम सिंह ने दिया था और ये वही दोनों लोग हैं, जो अब तक आप के समर्थन से केन्द्र की संयुक्त मोर्चा सरकार में थे। तो एनालासिज कैसे करेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: इसका एनालासिज नहीं, ये तो एक परिस्थिति का फायदा लेने वाली बात है। मुलायमसिंह जी क्या कभी बी.जे.पी. के सहयोगी नहीं रहे? मैं इस एक सवाल का उत्तर चाहता हूँ। रहा फारूख साहब का तो फारूख की तो अपनी अलग ही बात रहती है, लेकिन ये उनका कहना उस हद तक सही है कि काँग्रेस की जो जिम्मेदारी बाबरी मस्ज़िद की शहादत को रोकने की थी, उसे हम पूरा नहीं कर सके। इससे इंकार करने से फायदा नहीं होगा और यह तो हमारे निकट का इतिहास का अंग है। अब इस बारे में जो भी गलतफहमियाँ पैदा हुई हैं, उन्हें दूर करने की जिम्मेदारी भी काँग्रेस की है और मैं समझता हूँ ये जिम्मेदारी हम लोग निभा सकेंगे।

श्री संतोष भारती: तो अगर संक्षेप में आप से कोई पाँच या छः चीज में लोग जानना चाहें कि काँग्रेस देश में अपनी साख पुनः पैदा करने के लिए कौन सा क्रेशप्रोग्राम चलाएगी? उसे क्या करना चाहिए? कार्यकर्ताओं के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, काँग्रेस को अपने आधार को और वास्तविक जो उसका सैद्धांतिक आधार रहा है, वैचारिक आधार रहा है और जो उसकी कार्यशैली रही है, उसको फिर से पुनःस्थापित करने की जरूरत है। हमें नए तरीके से कुछ नहीं करना है और उसके लिए कुछ निर्णय स्पष्ट होने चाहिए। जो कि धीरे-धीरे लिए जा रहे हैं और जो इस समय देश के विभिन्न भागों में जिन को हम रीजनल फोर्सेस कहते हैं, क्षेत्रीय शक्तियाँ, जो किसी राष्ट्रीय मुद्दे को लेकर उभर कर सामने नहीं आईं, उनके लिए धर्मनिरपेक्षता भी कोई प्रश्न नहीं है। अब जरूर उसके बारे में ये लोग बात करने लगे हैं, क्योंकि वही एक आधार रहा अभी तात्कालिक सरकार को बनाने का, उसको अठारह महीने तक चलाने का, कोई आर्थिक मुद्दा तो था नहीं। न कोई राजनीतिक भी एक व्यापक सोच के सब लोग भागी तो थे नहीं। और जो कामन मिनीमम प्रोग्राम भी बना संयुक्त मोर्चा का। अगर उसमें एक से लेकर अंत तक जितनी संख्या है, आप अगर देखें तो मुश्किल से आधे दर्जन ऐसे होंगे, जिस पर

सचमुच में कोई अमल किया हो। इन सब विश्वासों को पूरा करके काँग्रेस निश्चित रूप से आएगी, जिस की आज लोग कल्पना नहीं कर सकते। अब मैं गलत भी हो सकता हूँ, लेकिन मेरी तो मान्यता यही है।

श्री संतोष भारती: लेकिन एक और घटना कल हुई। परसों सोनिया जी से ममता बैनर्जी मिलीं और ममता बैनर्जी के मिलने के बाद ऐसा लगा कि वो शायद काँग्रेस से अलग नहीं जाएँगी? आज जब हम और आप बात कर रहे हैं, वो शायद इलेक्शन कमीशन में गई हुई होंगी, तृणमूल काँग्रेस को मान्यता या चुनाव चिन्ह माँगने के लिए। तो इन घटनाओं से क्या मेसेज कम्युनीकेट हो पाएगा पार्टी वर्कर्स को?

श्री अर्जुनसिंह: ये कुछ घटना चक्र ऐसा जरूर हुआ है। खास तौर से पिछले संस्थागत चुनावों के दौरान, जहाँ काँग्रेस के अंदर के बहुत से लोग अपने को वंचित महसूस करने लगे हैं या अलग-थलग महसूस करने लगे हैं। इस को दुरूस्त करने की बात तुरन्त काँग्रेस के समझ में आई और एक्शन प्लान जो बना, उस का वो प्रमुख अंग रहा। वर्किंग कमेटी में इस पर सहमति हुई।

जहाँ तक सोनिया जी का सवाल है। उन की तो जहाँ तक काँग्रेस के हित में और उनके समझ में आई उन्होंने वो बात की। अब कोई किस हद तक उस को मानता है, नहीं मानता है, वो तो अब समय बताएगा आज, कल और परसों का सवाल नहीं है। लेकिन आज भी इस बात की आवश्यकता है कि हम इस की गंभीरता को समझें और अभी कोई बहुत ज्यादा नहीं बिगड़ा है काँग्रेस के अंदर, उस को दुरूस्त किया जा सकता है और मैं तो इस के बारे में सदैव काँग्रेस अध्यक्ष से कहता रहा और उन की तरफ से इस के बारे में रिस्पाँस भी अच्छा रहा। अब देखते हैं, ताकि आने वाले दिनों में कैसी स्थिति बनती है।

श्री संतोष भारती: आपकी राय में राजीव जी की हत्या की जाँच कर रहे जैनकमीशन ने क्या सही कारणों को या उस के पीछे जो उद्देश्य थे, उन को सचमुच में तलाश सकी?

श्री अर्जुनसिंह: कमीशन ने तो अभी अपने एक टर्म्स आफ रिफ़रेंश का उत्तर दिया है, इस रिपोर्ट में। दूसरा टर्म्स आफ रिफ़रेंश जो है, जो सीधे षडयंत्र से जुड़ा है, उस पर तो अभी रिपोर्ट उन की आई नहीं, लेकिन मैं इंगित करना चाहता हूँ, आखिर इस कमीशन को अपने कार्य को पूरा करने के लिए, निष्कर्षों पर पहुँचने के लिए जो आवश्यकता थी, डाकुमेन्ट्स की, उस से क्यों वंचित किया गया? आज भी वंचित किया जा रहा है। यह सतत जारी है। क्या कारण है? किसी को बचाने के लिए तीन प्रधान मंत्री नरसिंहराव जी, देवगोड़ा जी और गुजराल जी, करीब-करीब एक ही तरह का उन का आचरण और दृष्टिकोण था, वो डाक्यूमेण्ट न दिए जाएँ, वे बातें न बताई जाएँ, जिन से षड्यंत्र के बारे में कोई निष्कर्ष निकाला जा सके। आखिर उस के पीछे उद्देश्य क्या है? क्यायह सब चाहते हैं कि यह षड्यंत्र जो है, वो बरकरार, अधूरा रहे? मैं तो समझता हूँ कि किसी भी भारतीय के लिए स्वाभाविक इच्छा होगी कि देश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री की जो हत्या हुई है तो उस षड्यंत्र को बेनकाब होना चाहिए। कौन दोषी है? नहीं है? यह मैं किसी को नहीं कह रहा हूँ, लेकिन उस को रोकने के जो प्रयास हो रहे हैं, उस से तो निश्चित रूप से कुछ चीजें उभर कर सामने आती है।

अब रह गया कि कितने हद तक जैन कमीशन सफल हुआ। अभी तक जो उन के टर्म्स आफ रिफरेश था, उन का उत्तर दिया है। मैं समझता हूँ कि उस में जितना साक्ष्य आ सका, यह साक्ष्य कहीं कॉंग्रेस के द्वारा प्रस्तुत नहीं किया गया। ये डी.एम.के. के बारे में जो टिप्पणी आई है, वे इस को ऐसा मोड़ दे कर के समूचे तमीलियन के खिलाफ है, उस को विकृत करने की कोशिश की है। रिपोर्ट में पूरे तमीलियन जनता के बारे कुछ नहीं कहा गया है। ये जो साक्ष्य है, ये 89 और 90 जब श्री वी.पी. सिंह जी प्रधान मंत्री थे देश के, उन के समय में जो केन्द्रीय एजेंसियाँ थी आई.बी.; रा; सी.बी.आई.; ये उन की रिपोर्टस् पर ये टिप्पणी की गई डी.एम.के. के बारे में और रिपोर्ट तो लिखित होती है, जबानी जमा खर्च कुछ होता नहीं। अब अगर उस के आधार पर जस्टिस जैन किसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं, उसे तो हमें ठीक ही मानना चाहिए। जब कि उन निष्कर्षों के बारे में यह नहीं कहा जा रहा है कि ये कोई साक्ष्य है नहीं, उस को तो किसी ने देखने की कोशिश ही नहीं की।

अब जो दूसरी रिपोर्ट आएगी। अगर ये सब डाकुमेंट और ये सब चीजें उपलब्ध करा देंगे, जिस की मुझे उम्मीद बहुत कम है। क्योंकि लोगों को बचाने का जो सिलसिला है और लोगों का जो दृष्टिकोण है, वो मुझे एक ही दिखता है नरसिंहराव से ले कर गुजराल साहब तक, डाकुमेन्टस के अभाव में जितनी रिपोर्ट आ सकेगी, आएगी।

श्री संतोष भारती: जैन कमीशन ने जिस तरह से सुरक्षा और दूसरी एजेंसियों के काम के तरीके के बारे में और खास करके बिल्कुल ही सीक्रेट चीजों को उस का एनेक्चर बना दिया, ये सारी चीजें जितनी खोल दी हैं, जब कि दुनिया के बाकी जगहों के बारे में हमें कुछ नहीं पता। तो आप को नहीं लगता कि कुछ अतिरेक हुआ है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, देश के हितों में, मेरी समझ में जो गलत फहमियों में पनपते हुए कार्यक्रम या नीतियाँ, हैं, उन से ज्यादा खतरा है, बजाय इस के कि हकीकत के उजाले में उन को ठीक से दुरूस्त किया गया। आखिर यह घटना इसी की वजह से ही नहीं हुई, क्यों कि ये जो उजागर हो गया कितना अपर्याप्त और पूरी तरह के बे मायने था, उसी की वजह से तो हुआ है। यह तो स्वयं जस्टिस वर्मा ने अपनी रिपोर्ट में कहा है। ये बातें कोई जस्टिस जैन ने पहली बार तो नहीं कही। उन्होंने केवल थोड़ा विस्तार से उस को कहा है। मैं तो इसे देश हित के खिलाफ नही मानता? ठीक है? आप सुधारिए उसे जो कुछ गलत है। गलत चीजें जिन के आधार पर केवल अपनी-अपनी जिम्मेदारी से बचने के लिए ही उस पर आवरण डालने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। क्या वो देश के हित में है?

श्री संतोष भारती: राजीव जी की हत्या के कारण को जो जैन कमीशन ने कहा है, जिस की वजह से यह सारी घटनाएँ हुई। आप को लगता है कि ये चुनाव में एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन पाएगा?

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ कि अगर ऐसी चीज किसी देश में मुद्दा नहीं बनेगा, तो उस देश के लोग किस बात को महत्व देंगे। लेकिन अकेले वही मुद्दा नहीं रहेगा और मुद्दों में यह प्रमुख मुद्दा रहेगा। इस में कोई दो राय नहीं। केवल जो हुआ है, वही नहीं, जो अभी हो रहा है। जैसे मैं ने कहा- ऊपर से गुजराल साहब पत्र लिख कर केसरी जी को आश्वस्त करते है कि मेरी सरकार हर कदम

उठाएगी, जिस से जो दोषी है, उन को दण्ड दिया जा सके और चार कागज देने के लिए तैयार नहीं हैं। ये जो विरोधाभास है। यह भी सामने उजागर होगा और जिन लोगों के बारे में कागज माँगे गए हैं, वो तो कमीशन ने दिया है स्वयं कांग्रेस अध्यक्ष ने एक लिस्ट दी है, उसको देखकर ही पता चल जाएगा उस का किस से संबंध है?

श्री संतोष भारती: अभी आपने मुद्दों की बात कही। यह भी एक मुद्दा होगा तो कुछ आप बताएँगे कि किन मुद्दो को काँग्रेस इस चुनाव में सामने रखेगी?

श्री अर्जुनसिंह: स्थायित्व मेरी नजर में स्थिरता से जुड़ा हुआ है, नीतियों की स्थिरता, उद्देश्यों की स्थिरता, कार्य प्रणाली की स्थिरता, वो कांग्रेस ने ही दी है, पिछले पचास सालों में, जो थोड़ा बहुत हम उस से विमुख हुए, हैं, तो हम उसे स्वीकार करेंगे। लेकिन वह स्थिरता ही देश में स्थायित्व को ला सकती है। एक तो यह मुद्दा है।

दूसरा है, जो उदारीकरण का मामला, आर्थिक ढाँचे को बदलने का सिलसिला दुनिया में चल रहा है, उन प्रक्रियाओं से हम अपने को अलग नहीं रख सकते हैं। हमें उस में अपने को समावेश करना पड़ेगा, उस से जुड़ना पड़ेगा। लेकिन हमें इस बात को बहुत बारीकी से देख कर ही फैसला करना पड़ेगा कि ये प्रक्रियाएँ इस देश के अंदर उन गरीबों को पूरी तरह से नजर-अंदाज न कर दें- जो मौलिक वजह से प्रभावित नहीं होते, गवर्न नहीं होते, उस को ध्यान में रख कर ही यह लिबरालाईजेशन होना चाहिए। उस में किसी की कोई दो राय नहीं।

तीसरा यह है कि अंतर्राष्ट्रीय जगत में धीरे-धीरे भारतवर्ष एक किनारे पर लगा दिया गया है और हम केवल उसी वक्त याद किए जाते हैं, जब कोई फैसला हो जाता है और उस फैसले में हमारी भी पुष्टि की जरूरत होती है। हमारे देश में सिक्यूरिटी के मामले, इस के डिफेंस, हमारे देश की प्राथमिकताएँ, हितों की, उन्हें फिर से हमें सामने लाना पड़ेगा और उसके अनुरूप ही हमारी विदेशी नीति को, बनाना पड़ेगा।

फिर जो क्षेत्रीय समस्याएँ हैं, उन क्षेत्रीय समस्याओं को हमें बहुत संजीजदगी से देख कर उन की प्राथमिकताएँ निर्धारित कर के और उन को हल करने की दिशा में हमारी तरफ से क्या प्रयास हो सकता है और होना चाहिए, वह भी एक प्रमुख मुद्दा हमें लाना पड़ेगा। क्षेत्रीय भावना जब राष्ट्रीय हितों से ऊपर उठ जाय, वो देश के लिए खतरा है।

श्री संतोष भारती: अटल जी का कहना है कि स्थिरता का मुद्दा काँग्रेस का नहीं रहा?

श्री अर्जुनसिंह: खैर, ठीक है। उनकी निगाह में तो गाँधी जी हमारे नहीं रहे। हत्या उन्होंने की और अब वे हमारे नहीं है। हर चीज को बी.जे.पी. उधार ही लेती है, लेकिन जनमत को उधार लेना उतना आसान नहीं है। आप ऐसी परिस्थिति निर्मित कर सकते हैं कि भ्रम में डाल सकें, लेकिन ये भ्रम का वातावरण तो बहुत दिनों नहीं रह सकता।

श्री संतोष भारती: काँग्रेस, भाजपा, संयुक्त मोर्चा, अभी ये तीन पार्टी ही देश में चुनाव के केन्द्र में नजर आ रही है। इन को आप कैसे लिस्ट करेंगे आर्डर में?

श्री अर्जुनसिंह: संयुक्त मोर्चा तो धीरे-धीरे अपने ही वजन से संयुक्त मोर्चा नहीं रहेगा। ठीक है, परिस्थितियाँ कुछ ऐसी रहीं, काँग्रेस ने अनिवार्य समझा इस गठ बंधन को मजबूत करने का तो उन को अहसास

होने लगा कि सारी राजनीतिक शक्ति उन में केन्द्रित हो गई है। मैं समझता हूँ कि बहुत जल्दी स्पष्ट हो गया कि बात यथार्थ नहीं है। अब इस से बढ़ कर और इस का प्रमाण क्या हो सकता है कि साम्प्रादायिकता के विरूद्ध मोर्चा और जैसा अखबारों में छपा है, इस मोर्चा के जो प्रमुख हैं, प्रधान मंत्री हैं, वे संसद में पहुँचने के लिए अकाली दल का सहारा ले रहे है। अकाली दल उन की नजर में सेकुलर पार्टी नहीं है तो मैं क्या कह सकता हूँ। तो ऐसे भी विरोधाभासों से कोई ऐसी शक्ति नहीं बनती।

श्री संतोष भारती: भाजपा का भविष्य अब आप क्या देखते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: भाजपा का भविष्य हम देखें या बताएँ, वो तो शायद उचित नहीं होगा। लोग कह सकते हैं कि मैं पूर्वाग्रह से भी ग्रसित हूँ। पूर्वाग्रह से ग्रसित पूरी तरह से न भी हूँ तो मेरा दृष्टिकोण तो इस मामले में आज से नहीं करीब चालीस वर्षों से स्पष्ट है। लेकिन शुद्ध राजनीतिक समीक्षात्मक दृष्टिकोण से अगर देखें तो किसी चुनाव में बहुमत पा जाना अलग बात है। वो तो परिस्थितियों पर निर्भर करता है। कई प्रदेशों में इनको बहुमत मिला लेकिन ये भारतवर्ष के उस राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित नहीं हो सकते, जो भारत के सभी विचारों, सभी धर्म, जाति और जितने भी तत्व भारत के माने जाते हैं, उन का प्रतिनिधित्व करने लगें। वे परिस्थितियाँ मुझे दिखाई नहीं देती।

श्री संतोष भारती: जो देश की आर्थिक स्थिति है, उस के बारे में आप की क्या टिप्पणी है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं कोई आर्थिक मसलों पर बहुत बड़ा ज्ञाता तो नहीं हूँ। एक सामान्य, सार्वजनिक कार्यकर्ता के रूप में जो थोड़ा- बहुत अनुभव है, आर्थिक ढाँचा जो कई प्रकार के बंधनों से अभी तक, ग्रसित रहा है, उसकी मुक्ति तो होना जरूरी है। क्योंकि वे बंधन जितने थे, कण्ट्रोल जो थे, वे एक पृष्ठभूमि में थे। वो पृष्ठभूमि अब नहीं रही। इसलिए पूरी तरह से कम्पीटीशन के आधार पर लोगों को आने की छूट मिलनी चाहिए। हमारे देश के आर्थिक ढाँचे में, जो बहुत महत्वपूर्ण अंग था वो पब्लिक सेक्टर भी अब आरक्षण की स्थिति से नहीं चल सकता। उन को भी सामने आ कर काम्पीटेटिव तरीके से सार्थक बनना पड़ेगा। फिर जो लिबरलाईजेशन का सिलसिला है। कुछ लोग समझते हैं कि एक तो उदारीकरण का चेहरा है जो हमें विदेशों को दिखाना है और एक चेहरा है जो हमें देश के अंदर दिखाना है और उस से उपजी हुई नीतियाँ, कार्यक्रम इस समय है जो उदारीकरण के मूल आधार हैं, वे विदेश के लिए भी होना चाहिए और स्वदेशी के लिए भी होना चाहिए। स्वदेशी से मेरा मतलब भारत के जो उद्योग हैं और यहाँ की औद्योगिक इकाईयाँ है। इस प्रकार से ही हम संतुलन सही ढंग से बना सकते है। वरना इस का एक खतरा है।

अभी मैं एक पुरस्कार वितरण समारोह में गया था। वहाँ मुकेश व अनिल अंबानी को 'बिजनेस इण्डिया' की ओर से पुरस्कार दिया गया। उस में मुकेश अंबानी की स्पीच थी, वो आज की नई पीढ़ी का उद्योगपति क्या सोचता है, उस का एक द्योतक था। मैं हर चीज से सहमत न भी हूँ, लेकिन एक-दो टर्म्स जो उन्होंने यूज़ किए वे बहुत ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि 'एकानामिक नेशनलिस्म' को हमें कभी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। यह एक ऐसा पहलू है, जो निश्चित रूप से अपना महत्व रखता है। इतना तो मैं कह सकता हूँ। बाकी तो किस संदर्भ में, किस दिशा

में और किस क्षेत्र के लिए क्या निर्णय होंगे, जिन से चीजें आगे प्रभावित होंगी, यह तो फिर अलग से चर्चा का विषय है?

श्री संतोष भारती: मैं यह सवाल इसलिए पूछ रहा हूँ कि क्या आप की पार्टी देश में सत्ता की दावेदार है, इस चुनाव में। संभवतः आप की सत्ता आ भी जाए। साउथ कोरिया, हाँगकाँग, मलेशिया की इकानामी जिस तरह से क्रेश हुई है और हिन्दुस्तान भी जिस तरह उस की चपेट में लगभग आता नजर आ रहा है, उस को देखते हुए मन में सवाल उठता है कि मनमोहन सिंह जी ने कुछ उसी प्रकार का प्लान किया, आज जो वहाँ हो रहा है तो क्या किसी लेबल पर ऐसा नहीं लगता है कि पुनः हमें नेहरू माडल या गाँधी माडल की तरफ कुछ सोचना चाहिए। कहीं हम भी उस ट्रेप में आ गए तो क्या होगा? जिस में मलेशिया पड़ा हुआ है या सिंगापुर या हाँगकाँग है।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इन चीजों के बारे में जो विशेषज्ञ हैं, उन को विचार - विमर्श में शामिल कर के एक कोई निर्णय किया जा सकता है। सामान्य लोग इन चीजों का फैसला नहीं कर सकते, लेकिन एक बात सही है कि जो भी चीजें उत्पन्न हुई हों, चाहे कोरिया हो, चाहे यहाँ हो, चाहे मलेशिया या पहले मेक्सिको में कम से कम कुछ उदाहरण तो प्रस्तुत हुए, उन को ध्यान में रखकर ही जहाँ भी जो तबदीली करना हो तो वो तो बहुत बुद्धिमत्ता है।

श्री संतोष भारती: कुछ एक-दो सवाल और, अगले प्रधान मंत्री को, जो गुजराल के बाद होगा, उन को क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए उन की प्राथमिकताएँ क्या होनी चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: ये तो आप ने ऐसा सवाल कर दिया कि इसका उत्तर देना शायद मुश्किल भी है, लेकिन देश के हित में जो बातें होनी चाहिए, वो तो चाहे जो भी प्रधानमंत्री बने, उसको इन चीजों पर ध्यान देना ही पड़ेगा।

पहली बात जैसा मैंने पहले ही कहा- स्थिरता लाने की बात है। शुद्ध स्थायित्व से अलग होना चाहिए। जब तक हम उस प्रकार की स्थिरता नहीं लाएँगे, जिस का हम ने उल्लेख किया है, एक तो उस की तरफ ध्यान देना होगा।

दूसरा, भारत के हितों को सर्वोपरि मान कर ही हमारी नीतियाँ बननी चाहिए। चाहे वो स्ट्रेटेजिक डिफेंस हो, चाहे वो परमाणु पालिसी हो, इंटरनली सिक्यूरिटी का एंगल देश के लिए बहुत जरूरी है, क्योंकि हम इस खतरे को कभी भी नजरअंदाज नहीं कर सकते कि इस देश के विघटन के लिए तत्पर बहुत- सी शक्तियाँ वो कोई भी मौका नहीं छोड़ेगी जिस से भारत प्रभावित हो। फिर जो हमारे देश की प्रगति का सवाल है, उस में आर्थिक प्रगति महत्वपूर्ण है। ये क्या हो रहा है। किस के लिए हो रहा? क्योंकि नीति और कार्यक्रम का सवाल नहीं होता, जब तक कि देश की जनता का उसको समर्थन नहीं मिला। आज बहुत से ऐसे कदम आर्थिक जगत, आर्थिक क्षेत्र में उठाए जा रहे हैं, जिन के बारे में सामान्य लोगों को ज्ञान भी नहीं है कि उस के परिणाम क्या होंगे, उस की जानकारी होने का सवाल नहीं उठता। इस चीज को भी हमें देश के अंदर अच्छी तरह से लोगों के सामने ले जा कर के डिबेट करना चाहिए कि भाई हम यह करने जा रहे हैं। ये कठिनाईयाँ भी उत्पन्न हो सकती है। तो मैं समझता हूँ कि इस पर देश एक स्थिर तरीके से आगे बढ़ सकेगा।

श्री संतोष भारती: अगर उस तरह की लोक सभा आई जैसी ग्यारहवीं लोक सभा थी तो क्या ऐसी स्थिति में कभी राष्ट्रीय सरकार जैसी कोई कल्पना पर राजनीतिक दल विचार कर सकते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, राष्ट्रीय सरकार की जो परिकल्पना है, वो तो बहुत भिन्न परिस्थितियों की है। ये खण्डित मेण्डेट जो है, ये राष्ट्रीय सरकार को जन्म दे, ऐसा राष्ट्रीय सरकार की परिकल्पना के बाहर है। राष्ट्रीय सरकार तो तब होती है, जब कोई राष्ट्रीय विपत्ति हो। राष्ट्रीय परिस्थितियाँ ऐसी हों, जहाँ युद्ध हो रहा है। जहाँ सब लोगों का ध्यान एक ही विषय पर केन्द्रित होता हो, वहाँ राष्ट्रीय सरकार बनती है। मैं तो नहीं समझता कि राष्ट्रीय सरकार इस का विकल्प है। इस का विकल्प जनादेश है। अब वो जनादेश मैं तो यह मान कर चलता हूँ कि भारत का मतदाता हम से ज्यादा परिपक्व है।

इस देश के करोड़ो गरीबों का ख्याल कैसे रखा जाए? उनके अधिकारों की रक्षा कैसे की जाए? उनकी आर्थिक तकलीफों को कैसे दूर किया जाए? माता-बहनों की इज्जत कैसे सुरक्षित रखी जाए? पिछले आठ महिनों में इनमें से किसी मसले पर इस सरकार ने गंभीरता से विचार नहीं किया क्योंकि प्रधानमंत्री को इस समस्याओं पर विचार करने के लिए समय ही नहीं मिला। वे तो गठबन्धन के घटकों को मनाने में लगे रहते है।

–श्री अर्जुनसिंह

फरवरी 1998



1998

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

देश में कमरतोड़ महँगाई है पर, सरकार मौन है

फरवरी 1998 नागोद की आमसभा में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश—

काँग्रेस के साथियों, माताओं, बहनों ओर भाइयों। आज लोगों के बीच में एक दफे फिर आने का मौका मिला है। चुनाव के संदर्भ में जो कि केवल नागौद से मतलब नहीं रखता है सारे देश से मतलब रखता है। हमारा कर्तव्य रहा कि हम अपने लोगों की बीच में आए और अपनी राय जाहिर करे। फिर आप लोग ही सोच विचार कर अपना फैसला करें। राजाराम जी की पहचान आप लोगों से कराने की जरूरत नहीं है, और न उनके हित में कोई सिफारिश करने की जरूरत है। वो काँग्रेस के एक कर्मठ कार्यकर्ता हैं। वे स्वयं अपने कार्यों से यह साबित कर चुके हैं कि वे जनता के हित में खड़े हो सकते हैं। जनता की सेवा कर सकते हैं और आपके लिए संघर्ष कर सकते हैं। वैसे काँग्रेस का उम्मीदवार बनाने का फैसला श्रीमती सोनिया गाँधी का है और मैं विश्वास करता हूँ कि आप उनको पूरा-पूरा समर्थन देकर अपने क्षेत्र का सेवक बनाने का फैसला करेंगे। कुछ व्यक्ति कहते हैं कि वे काँग्रेस में रहे, विधायक रहें, पदाधिकारी रहें और अब फिर चुनाव लड़ रहे हैं, हमको उनकी व्यक्तिगत् आलोचना तो नहीं करनी चाहिए, लेकिन इतनी बात हम सबको समझाना चाहिए, कि वो अब सब चीज बहुत अच्छी तरह से समझते हैं ओर जो व्यक्ति पार्टी व संगठन के प्रति वफादार नहीं होता, पार्टी और संगठन उनको आगे बैठाकर सम्मान नहीं देती है।

सन् 96 के चुनाव में काँग्रेस की गलती से काँग्रेस चुनाव हारी। वरना 96 में फिर से काँग्रेस की सरकार बनती। लेकिन जो कुछ परिस्थिति बनी रही, जिसके कारण लोगों ने काँग्रेस को स्वीकार नहीं किया और 96 के चुनाव में बी.जे.पी. के लोगों को भी बहुमत नहीं दिया। ये लोग जनादेश-जनादेश बघारते हैं। 514 सदस्यों की लोकसभा में बीजेपी के केवल 176 सदस्य चुनकर आए और 176 में बहुमत नहीं होता। बहुमत के लिए 270 से अधिक सीटें चाहिए फिर जोड़ा गया भानुमती का कुनबा। वहाँ वादा यह रहा कि केवल अटल को ही प्रधान मंत्री बनाना है। ठीक है लोगों को अधिकार है। उन्होंने उन पार्टियों को चुनाव में जिताया और भानुमती का कुनबा जोड़कर एक सरकार बनाई गई, और अटल विहारी जी प्रधानमंत्री बने। उनकी जिन्दगी भर की तमन्ना पूरी हो गई, लेकिन उसके बाद क्या हुआ? जैसे ही सरकार बनाई और वहीं बीजेपी ने स्वयं यह फैसला किया कि अब हमारे भगवान राम और अयोध्या के मंदिर का मुद्दा हमारा नहीं है और दोनों चीजों पर बात नहीं करें, क्यों नहीं करें? इसलिए कि ये जो सरकार बनी है कहीं वह चली न जाए। इस वक्त वे भगवान राम को वनवास दे कर सत्ता संभाल रहे है। इन सब चीजों से लोगों के मन में कुछ धारणाएँ बनी। इससे कुछ लोगों को अब कुछ समझ में आने लगा कि बीजेपी, धर्म का ढोंग रच रही है। हम तो लोगों से पहले से ही कहते रहे, लेकिन लोगों ने उसको नहीं माना। कुछ लोगों ने तो यहाँ तक कहा कि हम हिन्दू धर्म के खिलाफ है। आज जो हिन्दू धर्म के सबसे बड़े चेम्पीयन है आज वे कह रहे है कि भगवान राम को आने की जरूरत नहीं है, न ही मंदिर बनाने के मामले को उठाने की जरूरत है। और जो पार्टी, जो नेता भगवान को छलने

में दो मिनिट नहीं लगाते हैं तो वह हमको-आपको, देश को, देश की जनता को छलने में कितना समय लगाएँगे?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी केवल लालकिले पर झण्डा फहराने के लिए तो प्रधानमंत्री नहीं बने है। वो एक घटना है जो हर प्रधानमंत्री 15 अगस्त को करते हैं। इस देश के करोड़ों गरीबों का ख्याल कैसे रखा जाए? उनके अधिकारों की रक्षा कैसे की जाए? उनकी आर्थिक तकलीफों को कैसे दूर किया जाय? माता-बहनों की इज्जत कैसे सुरक्षित रखी जाए, और उनको आगे बढ़ाने में किस प्रकार की सहायता और साधन दिए जाए जिससे जो बेरोज़गार युवक युवती है, उनको काम मिले। देश के विकास के लिए यह बहुत आवश्यक चीजें हैं उनको हाथ में लेकर कैसे पूरा किया जाए। पिछले आठ महीनों में इनमें से किसी भी मसले पर गंभीरता से इस सरकार ने विचार किया हो और देश के सामने रखा हो ऐसा नहीं लगता। क्योंकि लाचारी यह है कि 24 घंटे में से 20 घंटे तो उन 18 दलों के भानुमती कुनबा के लोगों को ही खुश करने में चले जाते है। अगर सुबह जयललिता जी से बात होती है, तो शाम को समता पार्टी से बात होती है। तो प्रधानमंत्री को बैठकर विचार विनमय करने का मौका कहाँ मिलता है? क्या होना चाहिए? और उसी का परिणाम आज देश देख रहा है।

आज कमर तोड़ महँगाई सारे देश में है। यह वस्तुओं की कमी की वजह से नहीं है। न नमक की कमी है, न प्याज की कमी है, न आलू की कमी है न और कोई चीज की कमी है यह तो वह जब जमा खोर लोगों ने देखा कि यह सरकार लुंजपुंज सरकार है, कुछ नहीं कर सकती है तो उन्होंने मौका देखा और मौका देखकर अपनी मुनाफाखोरी में लग गए। अटल जी कहते रहे कि हम जानते है कि इसके पीछे जमाखोरी है। वह देश के प्रधानमंत्री है, वे जानते हैं, तो कुछ करते क्यों नहीं? क्यों नहीं शासन ऐसे लोगों के उपर शक्ति करता हैं तो हम लोगों को यह संदेह होता है कि सख्ती इसलिए नहीं हो पा रही है, क्योंकि जो जमाखोर लोग हैं वो भारतीय जनता पार्टी के सहायक है, उनके खिलाफ यह पार्टी सख्ती कर नहीं सकती।

जब 1966 में अकाल पड़ा तो वह कितना भयंकर अकाल था। उस समय इन असामाजिक तत्वों ने मिलकर यही करने की कोशिश की। उन्होंने कीमतें बढ़ाई, आवश्यक वस्तुओं की जमाखोरी की और स्थिति बिगड़ने लगी। उस समय इंदिरा गाँधी, प्रधान मंत्री थी। मुश्किल से उन्हें चार-पाँच महिने प्रधानमंत्री बने हुए थे। तो उन्होंने केवल एक काम किया एक छोटा सा वक्तव्य दिया कि मैं उन लोगों को सावधान करना चाहती हूँ जो आम जनता को तकलीफ पहुँचाना चाहते हैं। अगर वह जल्दी से बाज नहीं आते हैं तो कड़ी से कड़ी कार्रवाई उनके खिलाफ की जाएगी। उससे हमें कोई नहीं रोक सकता है। और पाँच दिन में ही इस एरिए में जो बहादुर लोग हैं, वो सब अपने घर में बैठ गए और सामान्य स्थिति हो गई। पर आज चेतावनी में दम नहीं है। हिन्दुस्तान आज एक अनिश्चितता के वातावरण में बढ़ रहा है और जब इतने बढ़े देश में इस तरह की भावना फैल गई हो तो उसका बहुत खराब असर देश के भविष्य पर पड़ेगा। आज परिस्थिति यह है कि किसी प्रकार से इस बिखराव को रोंके। किसी प्रकार से आपस के टकराव को रोंकें जो कमजोर राजनीतिक स्थिति देश की हुई है उसको कैसे सुधारा जाए? यह विषय आज चुनाव से जुड़ा है और वह एक ही चीज है यदि काँग्रेस मजबूत होती तो देश के अंदर जो केन्द्रीय राजनैतिक स्थिति है वह मजबूत होती और यह बिखराव और अस्थिरता का वातावरण दूर रहता और देश का भविष्य सुरक्षित रहता। इसलिए मैं आप लोगों से विनती करने आया हूँ कि यहाँ नागौद के, सतना के, चित्रकूट के, मैहर के, विधान सभा के लोगों से कि इसी 25 तारीख को चुनाव चिह्न पंजा पर निशान लगाकर अपने क्षेत्र से एक सच्चे सेवक को चुने और देश के अंदर वह मजबूती पैदा करें जिससे देश बच सके और भा.ज.पा. के जो थोथे नारे है उनसे भारत की रक्षा कर सकें। यह हम आप लोगों से विनती करने आए है। मुझे पूरी उम्मीद है कि आप लोग मेरी बात पर गौर करेंगे और सही निर्णय लेंगे। धन्यवाद, जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशों में

हरियाणा में नई हवा

12 फरवरी, 1998 को बहादुरगढ़ (हरियाणा) की सभा में सम्बोधन में प्रमुख अंश—

बहादुरगढ़ क्षेत्र के काँग्रेस पार्टी के सम्मानित उम्मीदवार भाई रमेशजी, और इस सभा में पधारे हुए आदरणीय बंधुओं, नौजवान साथियों। कुछ विलम्ब हो गया मुझे आपके बीच में आने में सबसे पहले मैं इसके लिए आपसे क्षमा चाहता हूँ कि जो असुविधा आपको हुई, आज कई सभाओं में मुझे भाग लेने का मौका मिला और मुझे लग रहा हैं कि ये एक नई हवा हरियाणा में चलेगी। वो हवा हैं जो हरियाणा के राजनीतिक धुँध को साफ करने वाली हैं। और जिस तरह से नेताओं ने वर्षों लम्बे-चौड़े खोखले वादे करके, गलतबयानी करके लोगों को भ्रम में डालकर अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करते रहे हैं, अब जनता उनको पहचानने लगी हैं। इसी नई हवा के एक प्रतीक भाई रमेश बलार जी हैं। यह उनका पहला चुनाव हैं। जहाँ तक मुझे मालूम हैं और इस चुनाव में मैं देख रहा हूँ कि वे स्वयं अकेले नहीं लड़ रहे हैं। वे चुनाव देश के बुजुर्गों के आशीर्वाद से, उनकी प्रेरणा से, अपने समकक्ष और अपने साथियों के कंधे से कंधा मिलाकर एक प्रजातांत्रिक प्रयास, जनतांत्रिक प्रयास हो रहा हैं, जो शायद हरियाणा में पहले देखने को नहीं मिला। रमेश बलार जी का कोई बहुत पुराना राजनीतिक अनुभव उनके पीछे नही हैं और न कोई बहुत बड़े नेतृत्व की पृष्ठभूमि हैं। एक चीज की पृष्ठभूमि हैं, सहज स्वाभाव, कर्म के प्रति निष्ठा और ईमानदारी इन तीन चीजों ने मिलकर रमेश बलार जी को वो शक्ति प्रदान की हैं, उसकी वजह से वे इस चुनाव का सामना करने के लिए आज मैदान में डँटे हैं।

मैं उनको जो कुछ भी जानता हूँ, कह सकता हूँ कि वो एक सच्चे जनसेवक के रूप में आपका आशीर्वाद प्राप्त करके आपके प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएँगे, इसमें कोई संदेह नहीं हैं। इस समय जरूरत इस बात की हैं, कि हम इस प्रदेश के चौमुखी विकास की ओर देखें। चाहे वो सिंचाई का हो, चाहे बिजली का, चाहे वो सड़कों का हो, चाहे वो शिक्षा का हो, हरियाणा ने एक अपना अलग स्थान बनाया था देश के अन्दर, एक विकास की यात्रा का पर पिछले कुछ वर्षों से हरियाणा का विकास रूक गया हैं, खुदगर्ज नेताओं की वजह से जो अपने राजनीतिक हितों को देखते रहे, हरियाणा के हितों को नजरअंदाज करते रहे। काँग्रेस ने ये फैसला किया हैं कि हम श्रीमती सोनिया गाँधी के नेतृत्व में हरियाणा को विकास की मंजिल तक पहुँचाए। हरियाणा का आज जो कुछ भी आप विकास देख रहे हैं वो तीन महान नेताओं की देन हैं। बाद में जिन लोगों ने भी आपका विश्वास पाकर यहाँ पर राज किया उन्होंने सिवाय फिरकापरस्ती के हरियाणा के लोगों के लिए ऐसा एक भी कदम नहीं उठाया जिनको हम याद करें। शगुफ़ेबाजी एक चीज होती हैं, भाषण और घोषणा एक चीज होती हैं, लेकिन ईंट पर ईंट रखकर एक इमारत को बनाना जो काँग्रेस ने ही किया हैं, हरियाणा में आज उस को तेजी से हमें बढ़ाना हैं।

मैं जब भी यहाँ आया तो सड़कों की हालत मैंने स्वयं देखी। बाकी और जो चीजें हैं वो आप अच्छी तरह से जानते हैं। रमेश बलारजी को आपसे यही आशा हैं। जो बातें उन्होंने यहाँ आपके सामने कही है कि वो संघर्ष करेंगे इस क्षेत्र के लिए किसानों के लिए, मजदूरों के लिए, हर जात और धर्म के लोगों के लिए और यही संघर्ष आज जनसेवकों के लिए आवश्यक है। आपके हाथ से इलेक्ट्रानिक मशीन से वोटिंग होगी। पहचान पत्र को लेकर जरूर जाईए वरना वोट देना मुश्किल होगा। बाकी वोट वैसे ही पड़ता है, जैसे पहले पड़ता था। तो पंजा निशान है बलार जी का और

उस पंजे पर आप मोहर लगाएँगे तो एक मजबूत संबल के साथ-साथ आपके बीच का एक मजबूत नुमाइंदा हरियाणा विधान सभा में आपके हितों की लड़ाई लड़ने के लिए पहुँचेगा। यही मेरी आपसे प्रार्थना हैं। जय हिन्द।

देश में कोई सियासी नज़रिया नहीं है

8 अगस्त 1998 को बंगलूर के अल-अमीन ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन में सम्बोधन के प्रमुख अंश —

यहाँ पर विराजे हुए सभी आदरणीय बन्धुओं, मैं अपने को बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे आपके बीच में आने का मौका मिला। यह प्रदेश बहुत बड़ा है। अलग-अलग तरह की बहुत सी कमियाँ हैं यहाँ लेकिन मेरी नजर में जिस सबसे बड़ी चीज की हमें सख्त जरूरत है वह है इस देश में बसने वाले सब इंसानों को एक ऐसे नजरिए से देखने की जरूरत है जो हिन्दुस्तान को एक धागे में बाँध सके और वह तभी संभव है जब पूरे देश में तवारीख को एक ऐसे स्तर पर ले जाकर पहुँचा दें, जहाँ लोग अपने दिमाग से, दिल से काम लें, ज़ज़्बातों से काम न लें। कुछ चन्द लोगों के खुराफ़ाती दिमाग से काम न लें।

इस समय जो कुछ भी माहौल देश में बना है कोई सियासी नज़रिया नहीं है। एक खतरनाक मोड़ से हमारा देश गुजर रहा है। क्योंकि कुछ लोगों को ऐसा अहसास हो गया है कि शायद फिरकापरस्ती के जरिए कुछ मंजिलें पा सकते हैं। यह जो दौर चला है, मैं समझता हूँ बहुत दिनों का दौर नहीं है, क्योंकि हिन्दुस्तान का मिजाज अभी बिल्कुल ठीक है। यह कोशिश होनी चाहिए कि हम जल्दी सारे मुल्क में ऐसी फिजाँ पैदा कर सकें जहाँ हम सबका ध्यान और अटेंशन हैं वह मुल्क की तरक्की और खास तौर पर नई पीढ़ी को आगे बढ़ाने में हम सब कामयाब हों।

मैंने बहुत कुछ सुना है आपके बारे में देखने का मौका अब मिला। लेकिन माइनारिटिज़ का जहाँ तक सवाल है यह कहने में मुझे कोई दिककत नहीं है क्योंकि हकीकत को मानकर ही हम आगे कुछ कर सकते हैं। अल्पसंख्यकों की शिक्षा के क्षेत्र में जितना सब सरकारों को काम करना चाहिए वह नहीं कर पा रही है, और मैंने पहला सवाल ही अभी पूछा कि कितनी दिक्कतें आपको हो रही हैं सरकार की तरफ से और यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि जो माइनारिटीज़ की एजुकेशन को जो अहमियत मिलनी चाहिए वह नहीं मिलती, क्योंकि इस देश में कोई भी तबका हो अगर वह कमजोर है तो सारा देश कमजोर होगा और इसलिए मैं आशा करता हूँ कि जिस काम में आप लगे हैं, उस काम में आपको सफलता मिले। इस काम में आप इसी तरह से तरक्की करेंगे इससे देश की तरक्की होगी। आपने मुझे बोलने का समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकारवार्ता

सेक्यूलर वोट बँटने से भाजपा विजयी

27 मार्च 1998 को डेकन हेराल्ड के श्री एम.कुकरेती के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Question: What is your opinion about the regional parties manipulating in minority?

Shri Arjunsingh: I was talking about the regional forces so when this sort of focus has come, sharper focus I don't consider to be against the interest of the country. The only

thing is that if these regional forces or regional parties think that their own interest transcends the interest of the country as such and they would like to see their interest served at any cost, problem will arise.

Question: Let every participants seeking something for their own party say some type of state packages, parties fund but what about the seeking ministrial post for giving support of one member or two members.

Shri Arjunsingh: That what I say, is not correct thing.

Question: They are holding from big parties like Congress and BJP a big ransom.

Shri Arjunsingh: I hope the Congress has never held to ransom but if some people want to be held to ransom what can we do.

Question: Some of the senior congressmen made alliance with other parties before election, do you think that this has done a impact of BJP's emergence as a major party and weakening of secular agenda.

Shri Arjunsingh: Well, B.J.P. has not emerged as a very powerful force, it is very obvious, apart from media built up that way, yes they had made some strategic alliance here and there and alliance stregthen government to this position, if you look, most of the allies they have got, whether individuals or small parties and groups they are all the secular formulation, may be for some reason or the other, some times it happen in certaing circumstances they choose to side with them, but I do not visualise that this combination will last very long because at some point of time when the basic issue of destorting the secular prudential of the country becomes an issue I don't know these people will act.

Question: You see, again, do you think that congress and secular parties has come together in a way.

Shri Arjunsingh: Well, I don't know these things of the future but that is an imperative if we really want to, how it will come about, what will be the shape, contained this is a little premature sort of point to announce at this time, the trend is that way.

Question: Do you see future for BJP's kind of politics.

Shri Arjunsingh: I think the BJP will be exposed because they don't have a deep commitment to idealogy except to acquire power and they are being run from behind by the R.S.S. which has an agenda of its own. So as time passes the issues that will come up, in front of the country this decorum between the BJP and the R.S.S. which they have been trying to use successfully so far, I don't think they can get success.

Question: Do you think that BJP has dropped issues like Ram Mandir, common civil code

and article 370 from their manifesto.

Shri Arjunsingh: That is precisely they think, that is what I am saying. But that is not a thing in their hand B.J.P. can not decide on it of its own, if the RSS has not dropped it as they have said very clearly that these issues remain on their agenda. Now that is the case then one day that is bound to come up. Then what this government will do, and Vajpaiji say that I will not repeal article 370 in Kashmir or Ayodhya, Kashi, Mathura issues.

Question: What kind of future you see for congress now in the new leadership?

Shri Arjunsingh: I think the congress is now on the rebound and may be some hard assessments will have to be made and hard decisions will have to be taken then the congress, I am quite sure it will be on the upswing.

बोफोर्स काँड से राजीव गाँधी या सोनिया गाँधी का कोई सम्बन्ध नहीं

6 अप्रैल 1998 को दिल्ली में काँग्रेस अधिवेशन के बाद पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्न: अभी सी.बी.आई. ने बोफोर्स जाँच तेज कर दी है?

श्री अर्जुनसिंह: करना ही चाहिए। हम लोगों का तो यह शुरू से कहना है कि जाँच शीघ्र पूरी हो, जिससे सारे तथ्य जल्दी बाहर आए।

प्रश्न: इसमें यदि ज्यादा जल्दबाजी दिखाएँगे तो...

श्री अर्जुनसिंह: अब जल्दबाजी करें या धीरे करें तो वह करने के लिए जो उनका कार्यक्षेत्र हैं वह करें। इसमें सोनिया जी का ना कुछ हैं और ना उनके ऊपर कोई असर पड़ेगा। क्योंकि 1989 में पार्लियामेंट में जो राजीव जी ने वक्तव्य दिया था, कि उनका और उनके परिवार का इसमें कोई लेना देना नहीं हैं। वह वक्तव्य और वह आधार तो अभी भी बरकरार है क्योंकि आज तक कोई भी साक्ष्य सूक्ष्म से सूक्ष्म भी इस बारे में सामने नहीं आया है, जो उनके इस वक्तव्य को नकार सकें। बाकी और जिसके खिलाफ करना है करें।

प्रश्न: जैन कमीशन वाला जो मुद्दा है। आपके यूनाइटेड फ्रंट वाले लोग यह कह रहे हैं कि जैन कमीशन के कारण सरकार गिराई गई। उसके बाद से काँग्रेस पर यह आरोप लगाए गए हैं कि सिर्फ सरकार गिराने के लिए ही यह मुद्दा उठाया गया।

श्री अर्जुनसिंह: वैसे बहुत से लोग चाहते हैं कि जैन कमीशन को भुला ही दिया जाय और इसमें सबसे ज्यादा यूनाइटेड फ्रँट के लोग है। 97 में जैन कमीशन की अंतरिम रिपोर्ट आई, मैं मंशा पर नहीं जाता लेकिन जो तथ्य सामने आएँ उन पर जाता हूँ। मंशा किसकी क्या थी, वह विवाद का विषय हो सकता है। उसमें एक बात सामने आई कि डी.एम.के सरकार ने आतंकवादियों के प्रति जो रूख अपनाया था उसकी वजह से उन्हें स्वतंत्रता मिली अपनी गतिविधियों को फैलाने में। अंततः उन्होंने उसका इस्तेमाल राजीव गाँधी की हत्या में किया। काँग्रेस ने केवल यह कहा कि चूँकि डी.एम.के. सरकार के विरूद्ध यह आक्षेप है इसलिए डी.एम.के. के जो दो मंत्री है उन्हें सरकार से अलग कर दें क्योंकि

सरकार हमारे समर्थन से चल रही है। कम से कम हमारे प्रेसीडेण्ट की हत्या को लेकर जो बात सामने आई है तो इतनी तो सदाशयता आप दिखाए कि इन दो मंत्रियों को अलग करके और जो भी तथ्य दिए गए है, अंतरिम रिपोर्ट में, उन तथ्यों को आप किन्हीं न्यायविदों को दे और जाँच कराएँ और वे बता दें कि इस तरह का आक्षेप करने की जरूरत नहीं थी तो फिर आप उन्हें वापस ले लें। सरकार आपकी चलती रहेगी।

हमने तो इतना ही कहा, हमने तो रास्ता बताया कि यह सब होने के बावजूद एक रास्ता निकल सकता है। क्योंकि मध्यावधि चुनाव कराने के पक्ष में काँग्रेस नहीं थी। लेकिन इन लोगों ने सरकार में बने रहने के लिए हमारे समर्थन लेने मे तो कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई। लेकिन काँग्रेस की धारणाओं के प्रति जरा भी सहृदयता, संवेदनशीलता नहीं दिखाई। आखिर यह काँग्रेस अध्यक्ष की हत्या थी। राजीव जी कोई एक्सीडेंट में तो नहीं मरें। एक षडयँत्र के तहत उनकी हत्या की गई। फायनल रिपोर्ट जो अब सबमिट हुई हैं। उस रिपोर्ट में बहुत से ऐसे आधार हैं जिनको बार-बार जैन कमीशन माँगता रहा कि हमें निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए इन दस्तावेज़ों की ज़रूरत हैं। जो सबसे संवेदनशील दस्तावेज़ थे, वे न तो नरसिंहराव सरकार ने दिए, न देवगौड़ा सरकार ने दिए और न गुजराल सरकार ने दिए। अंत में तो यह कह दिया कि एक हफ्ते के अन्दर आप अपना बोरिया बिस्तर बाँधकर जाइए और जो भी आपके पास हो वह देकर चले जाइए। देकर चले गए वो? अब जो रिपोर्ट उनके सामने हैं, वह षडयंत्र से संबंधित हैं, हत्या के षडयंत्र से, अब हम लोगों को नहीं मालूम उसमें क्या है? हमारी यह माँग हैं कि वह रिपोर्ट संसद में रखी जाएँ। एक्शन टेकन रिपोर्ट रखी जाए और जो भी संकेत जैन कमीशन ने दिए हैं, षडयंत्रों को, षडयंत्रकारियों को खोजने के लिए उनको पकड़ने के लिए उसके पीछे जो करना आवश्यक है,वह किया जाय। ताकि षडयंत्रकारियों को न्याय की गिरफ्त में लाया जा सकें।

इसके अलावा किसी व्यक्ति के खिलाफ़ कुछ नहीं हैं। अब अगर यह भी नहीं होगा तो यदि वे लोग यह समझे कि हम लोग यह कह दे कि राजीव जी को फलाँ तारीख से उनकी हत्या के विषय को भूल जाना चाहते हैं या देश भूल जाना चाहता हैं तो यह तो बहुत गलत बात होगी। यदि देश के बड़े-बड़े नेताओं के बारे में ऐसे हादसे हो और यह दृष्टिकोण अपना लिया जाय तो यह तो अपने देश के लिए अपमानजनक बात है।

प्रश्न: कुछ लोगों ने कहा है कि सोनिया जी की वजह से बी.जे.पी. पावर में आई, इस तरह के आरोप लगा रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंह: यह दुर्भाग्यपूर्ण हैं। इस तरह की बात कहने का कोई आधार नहीं है और मैं समझता हूँ इस प्रकार का विचार व्यक्त करके धर्म निरपेक्ष ताकतों को कमजोर ही किया जायगा और मैं उम्मीद करता हूँ कि मुलायमसिंह जी तो इस विचार के पक्षधर नहीं हो सकते। जिससे कि धर्म निरपेक्ष ताकतें कमजोर हो।

प्रश्न: ए.आई.सी.सी. का पोलिटिकल रिजोल्यूशन जो पास हुआ था उसमें लेफ्ट फ्रंट को लेकर बहुत ज्यादा कुछ कहा नहीं गया। उस पर पश्चिम बंगाल के कुछ नेताओं ने आपत्ति व्यक्त की और आपने जवाब भी दिया था। कलकत्ता में करूणाकरन जी गए थे, उस मीटिंग में, वहाँ उन्होंने कुछ इस तरह से कहा कि काँग्रेस, बी.जे.पी. को अलग करने के लिए लेफ्ट फ्रंट से हाथ मिला सकती है। उस

समय भी काफी भ्राँति बनी हुई थी। सही स्थिति क्या है? काँग्रेस का लेफ्ट फ्रंट के प्रति क्या एटिटयूट है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए लेफ्ट फ्रंट को जैसा अभी मैंने मुलायमसिंह जी वाली बात कही। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि वह तो काँग्रेस वर्किंग कमेटी का ही प्रस्ताव था। मेरा कोई निजी प्रस्ताव थोड़ी था। मैंने तो केवल मूव्ह किया था। प्रस्ताव तो वर्किंग कमेटी का था। बात यह है कि आज के राजनीतिक संदर्भ में यदि हम उन शक्तियों को आपस में टकराने देंगे जो मूलतः धर्म निरपेक्ष शक्तियों की पोषक शक्तियाँ है, वह लेफ्ट हो, एस.पी. हो, आर.जे.डी. हो कोई भी हो तो ये आज के संदर्भ में एक गलत कदम होगा। इसका मतलब यह नहीं कि हम एक दूसरे के अंध विश्वासी समर्थक हो जाय, या एक दूसरे के बारे में कुछ बोले ही नहीं, उसका यह मतलब नहीं लेकिन मूल रूप से हम आपस के टकराव के रास्ते को नहीं अपनाना चाहते, ये हैं इसका सीधा मतलब और मैं समझता हूँ कि इसमें न किसी को चिंतित होने की जरूरत है, न एतराज करने की जरूरत हैं। अब वेस्ट बंगाल में पोलिटिकल बेटल होगी तो काँग्रेस की सी.पी.आई.एम. से ही होगी। उसमें हम कोई ढील थोड़े ही डालने की कह रहे हैं। राष्ट्रीय संदर्भ में यह स्थिति है।

प्रश्न: मध्यप्रदेश में भी यही स्थिति हैं। जो आपका स्टेट हैं, वहाँ चुनावों में हार के कारणों को लेकर जो बातें सामने आ रही हैं, उसमें लीडरशिप को ब्लेम किया जा रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: लेकिन मैं इसमें कुछ नहीं कहना चाहता हूँ और मैंने इससे अपने को दूर ही रखा हैं। पायलट जी की अध्यक्षता में जो समिति गई हैं, उसमें तजुर्बेदार सदस्य है, उन लोगों को अपने निष्कर्षो पर पहुँचने दीजिए। काँग्रेस अध्यक्ष को वे अपने निष्कर्षों से अवगत कराएँगे, उसके आगे की जो बात होगी वह होगी। मेरा दृष्टिकोण यह, है कि जो भी स्थिति उभरकर सामने आ रही हैं, उससे काँग्रेस पार्टी को मध्य प्रदेश में खतरा संभावित दिखता है। हम सबका दृष्टिकोण यही होना चाहिए कि उस खतरे से पार्टी की रक्षा करे और इन चुनावों में पार्टी को फिर से बहुमत मिले ऐसे प्रयास करें। उसके लिए जो भी सोचना हो, करना हो, वह सबको एक साथ मिलकर करना चाहिए। क्या करना? फैसला क्या होगा? ये काँग्रेस हायकमान तय कर लें। बाकी तो हम लोगों को जो इस चीज को इंप्लीमेण्ट करना है। मेरा तो यह दृष्टिकोण है।

प्रश्न: न्यूक्लीयर विस्फोट के बारे में आपको क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं समझता हूँ कि ऐसे विषय जो देश की सुरक्षा से जुड़े हुए हो उन पर थोड़ा सोच समझकर टिप्पणी होना चाहिए और विचार विनियम भी होना चाहिए। यह ऐसा मुद्दा नहीं है जिसको कोई पार्टी अपनी बहादुरी का प्रदर्शन करने के लिए उपयोग करें।

गठबंधन, चुनावी राजनीति का प्रमुख अंग

11 अप्रैल 1998 को सहारा के कुमार राकेश के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश —

श्री कुमार राकेश: श्री अर्जुन सिंह जी, ए.आई.सी.सी. सेशन की उपलब्धि आप क्या मानते है? यह जो एक दिवसीय सम्मेलन हुआ?

श्री अर्जुनसिंह: मेरे ख्याल से सोनिया जी को अध्यक्ष के रूप में स्थापित करने का फैसला तो एक महत्वपूर्ण

फैसला था ही और इस की औपचारिकताएँ तो पूरी की गई, लेकिन उस से भी ज्यादा महत्वपूर्ण मेरी नजर में जो उनका अध्यक्षीय भाषण था। उस अध्यक्षीय भाषण में, जिस को कहते हैं बेवाकीपन का उन्होंने इज़हार किया और पूरी तरह से सभी परिस्थितियों का विश्लेषण कर के और जो आगे के लिए काम करने के जो मार्गदर्शक चिन्ह निरूपित किए। इस अधिवेशन की यही सब से बड़ी उपलब्धि पहले सामने आई है।

श्री कुमार राकेश: लेकिन किस प्रकार से अब संगठन को फायदा होगा? जैसी कि रूपरेखा उन्होंने अपने भाषण में दी हैं और टास्क फोर्स का गठन कर के, संगठन को मजबूत बनाने की दिशा में ये किस तरह से कार्य करेगा ?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, सब से पहली बात तो यह है कि अक्सर हम लोग यथार्थ का अहसास करने में हिचकिचाते हैं। इस प्रकार के कई कारण होते हैं। हमें अपनी बात में भी कमजोरी नजर आती है। दूसरे अगर यथार्थ ज्यादा कंटकाकीर्ण है तो फिर उस तरफ से आँख मूँदना ही ज्यादा श्रेयस्कर माना जाता है। लेकिन जब एक दफे यथार्थ का दिग्दर्शन करने का फैसला हो जाए अपने आप में, मैं समझता हूँ सब से पहली उपलब्धि वही है।

उस के बाद बहुत सी चीजें, फिर अपने आप सामने आएँगी। उन पर क्या कदम उठाना है? कैसे उठाना है? अनिवार्यताएँ स्पष्ट हो जाएँगी। फिर उधर चलना शुरू हो जाएगा।

श्री कुमार राकेश: ये फेरबदल की प्रक्रिया कब तक पूरी हो जाएगी?

श्री अर्जुनसिंह: अब मैं इस में कोई निश्चित समय कैसे दे सकता हूँ, क्योंकि करना तो सोनिया जी को है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि बहुत विलम्ब इस में नहीं लगेगा।

श्री कुमार राकेश: केसरी जी के आने के बाद काँग्रेस में घर वापसी का अभियान शुरू हुआ था। काफी लोग आए थे। आज सोनिया जी के आने के बाद भी, कुछ लोग छोड़ कर गए थे, आने के पहले भी और कुछ बाद में, तो क्या लगता है कि वे लोग वापस आएँगे? यदि वापस आते हैं तो क्या आप लोगों ने कुछ रूपरेखा प्लान या प्रोग्राम ऐसा कुछ बनाया है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, प्लान चाक आउट तो नहीं हुआ है। वैसे, केसेज हरेक जगह और उस की परिस्थितियाँ भिन्न रहती हैं और उन के संदर्भ में ही कोई बात होगी। कोई एकरूपता तो इस में हो नहीं सकती।

श्री कुमार राकेश: जैसे पिछले दिनों तमिल मनीला काँग्रेस को ले कर के बात सामने आई। सोनिया जी के जितने हमारे पुराने मित्र हैं वो आएँगे क्या? ऐसा लगता है कि क्या वो आएँगे, तृण मूल काँग्रेस...?

श्री अर्जुनसिंह: लगने की बात नहीं है। अगर जब वो स्थिति बनेगी तब स्पष्ट है, उन्होंने संकेत दे ही दिया है।

श्री कुमार राकेश: विपक्ष में बैठने के निर्णय को किस तरह से लेते हैं? पार्टी में इस को ले कर के क्या प्रतिक्रिया है? जैसा सोनिया जी ने कहा विपक्ष में बैठना चाहिए। ये हमारा मेनडेट नहीं है। लेकिन पार्टी में एक वर्ग सरकार बनाने को ले कर उत्सुक था, ज्यादा सक्रिय था, तो ऐसा क्यों?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, देखिए, सरकार बनाने का काम किसी भी पार्टी के लिए स्वाभाविक है और काँग्रेस पार्टी भी सरकार बना सकती है। सामान्य परिस्थिति में तो काँग्रेस ही बनाए। इस में कोई गलत नहीं है। आगे भी बन सकती है। ये इम्प्रेशन नहीं जाना चाहिए कि सत्ता में रहे बगैर काँग्रेस को चैन नहीं। येन केन प्रकारेण जोड़ तोड़ कर के चाहे जैसे हो हार्स ट्रेडिंग कर के हम सरकार बनाना चाहते हैं, इस से पार्टी को अंततः नुकसान होता है। ये हम लोगों का असेसमेंट है और ये पहले

भी एक दफे हुआ था, जब 89 में पार्टी को मेजार्टी नहीं मिली थी तो राजीव जी ने साफ कहा था, कि हम आपोजीशन में बैठेंगे। जनता ही हम को फिर से बहुमत में लाएगी तो हम सरकार बनाएँगे।

श्री कुमार राकेश: ये बिहार और उत्तर प्रदेश के साथ-साथ मध्यप्रदेश में भी संगठन की स्थिति अच्छी नहीं है। मध्यप्रदेश में और राजस्थान में और कई प्रदेशों में विधान सभा चुनाव होने को है, उस समग्र दृष्टिकोण से उस परिवेश को देख ते हुए आप ने संगठन को मजबूत करने का क्या प्लान बनाया है, उस प्लान को कैसे पूरा करेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: ये सब चीजें तो सामने आएँगी। वह प्रक्रिया तो अभी शुरू हुई है, पिछले पाँच-सात दिनों से।

श्री कुमार राकेश: लोक सभा के हारे हुए उम्मीदवार को राज्य सभा के टिकिट दिए जाने को ले कर के जो बातें उठी थी, उस बीच में पार्टी के अंदर ये चर्चा थी कि इस आईडिया के पीछे आप का दिमाग था। लोगों ने इस को प्रचारित किया और तो और इस को लेकर के काफी चर्चा हुई कि राज्य सभा के लिए मध्यप्रदेश से आप आ रहे हैं, तो इस पर आप का क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, कौन क्या कहता है? मुझे कोई लेना-देना नहीं है। मैं ने कभी भी अपने लिए राज्य सभा के लिए किसी तरह से कोई चर्चा नहीं की। अपने लिए प्रयत्न करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। अब ये फैसला काँग्रेस अध्यक्ष ने लिया और उन के स्वयं के निर्णय से हुआ। वो फैसला ठीक है।

श्री कुमार राकेश: मौजूदा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में आप को दस जनपथ का 'चाणक्य' कहा जा रहा है, इस को समझाएगें?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, ये कुछ विश्लेषण है, कई विश्लेषणों से मैं गुजर चुका हूँ। (हँसी) इसलिए मैं किन्हीं का कुछ नहीं हूँ। एक काँग्रेस के सिपाही की हैसियत से मुझे काम करने का सौभाग्य मिला है, उस सौभाग्य को मुझ से कोई छीन नहीं सकता। छीनने की भी कोशिश हुई, लेकिन आखिर फिर से लौट कर मैं आ ही गया और जिन मुद्दों को, जिन कारणों से मुझे निकाला गया था, आज ऐतिहासिक तथ्य है कि वही मुद्दे आज काँग्रेस के प्रमुख मुद्दे हैं। इस लिए ये सब बात नहीं, लेकिन दस जनपथ में सभी लोग हैं। सभी के साथ मैं भी वहीं हूँ।

श्री कुमार राकेश: इस बात की चर्चा है कि पार्टी में भी और पार्टी के बाहर भी सोनिया जी के अध्यक्ष बनने के बाद जो भी दिग्गज हैं काँग्रेस के, उन के प्रधान मंत्री बनने की संभावना समाप्त सी हो गई है तो बहुत सारे लोग, आई डू नाट कोट नेम्स्, अपने-अपने प्रदेशों की तरफ ध्यान ज्यादा लगाने की सोचने लगे हैं, तो इस बाबत आप की क्या टिप्पणी है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, मैं औरों के बारे में कुछ कहना नहीं चाहता। कोई क्या सोच रहा है? कोई क्या करेगा? यह मेरे लिए कहना उचित नहीं है। लेकिन एक चीज हम लोगों को अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि सोनिया जी के काँग्रेस अध्यक्ष बनने से पार्टी के लिए नए रास्ते खुले हैं। दिग्गज हैं, या छोटे है या जैसे हों, अगर व्यक्तिगत रूप से कोई सोचता है कि उस के लिए रास्ता बंद हुआ है तो फिर उस के सोचने का तरीका, गलत है, वरना काँग्रेस के जो वरिष्ठ हो, नया हो, उसे नए रास्तों पर चलने के लिए उन को तैयार रहना है और चलना है। एक दफे पार्टी फिर से स्थिति वापस ले लेगी तो जो कुछ होगा, सो होगा।

श्री कुमार राकेशः पिछले चुनावों में चुनाव गठबंधन को लेकर के जैसे महाराष्ट्र में हुआ, मध्यप्रदेश में नही हुआ, बिहार में हुआ, जब कि उस के बाबत सी.डब्लयू.सी. का डिसीजन था कि गठबंधन होना चाहिए राज्यवार, उस के कारण पार्टी को नुकसान भी हुआ। तो क्या आप भविष्य में कोई गठबंधन को ले कर ऐसी कोई रणनीति बनाएँगें, जैसे कि अपने भाषण में सोनिया जी ने कहा था। इस बारे में पार्टी क्या सोचती है?

श्री अर्जुनसिंहः सोनिया जी के भाषण में जो बात थी, वहीं तो काँग्रेस का आम कार्यकर्ता भी महसूस करता है कि गठबंधन चुनावी राजनीति का अंग है। हम सदैव के लिए कह दें, कि यह गठबंध कभी नहीं होगा या ये कहें कि केवल गठबंधन ही होगा, ये दोनों चीजें सही नहीं है। जो स्वाभाविक रूप से कुछ पार्टियों के बीच में मतैक्य उभर कर सामने आए, सार्वजनिक मसलों पर और उस मतैक्य के कारण कोई तालमेल हो, गठबंधन हो और उस को नीचे से समर्थन मिले तो वे तो ठीक है। लेकिन केवल ऊपर से गठबंधन करना है, यह आदेश दे कर गठबंधन होगा तो वह तो मुश्किल ही होगा।

श्री कुमार राकेशः गैर काँग्रेसीकरण की जो राजनीति थी वह घूम कर के गैर भाजपावाद पर आ कर के टिक सी गई है। ऐसा लग रहा है कि एक परिवर्तन की प्रक्रिया चली है। इस के पीछे आप मुख्य कारण क्या मानते हैं? ये पार्टी से जुड़ा मामला है और आप के सिद्धांतो से भी...?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, गैर काँग्रेसवाद का जो दौर था, मैं ऐसा मानता हूँ कि उस गैर काँग्रेसवाद के पीछे कोई सैद्धांतिक सोच नहीं थी, केवल प्रतिस्पर्द्धा के आधार पर एक दृष्टिकोण बन गया था कि काँग्रेस से हमारी प्रतिस्पर्धा है। इसलिए हमें काँग्रेस को कमजोर करना है। अगर सैद्धांतिक दृष्टिकोण से सोचा जाता है तो उसी वक्त से लोगों को सोचना चाहिए था कि इस का फायदा धर्म निरपेक्ष शक्तियाँ नहीं, साम्प्रादायिक शक्तियाँ ही उठाएँगी। जैसा कि अब हो गया। तो जो रियलाइजेशन उस वक्त होना चाहिए था, वो इस प्रतिस्पर्द्धा की राजनीति की वजह से नजरअंदाज हो गया। आज वो उभर कर सामने आ गया और ये सब को देखना पड़ेगा। मैं किसी पार्टी का नाम नहीं लेता, लेकिन आज ये अब क्यों कह रहे हैं कि सेकुलर फोर्सेस का कंसालिडेशन हो गया है।

श्री कुमार राकेशः ये शासन के लिए जो राष्ट्रीय एजेण्डा बनाया है इन्होंने?

श्री अर्जुनसिंहः राष्ट्रीय एजेण्डा तो बहुत बड़ा एक धोखा है। राष्ट्रीय एजेण्डा वो देश के शासन के लिए नहीं बना है। राष्ट्रीय एजेण्डा शासन में आने के लिए पार्टियों को सुविधाजनक रास्ता दिखाने के लिए बना है, ताकि सब को जो थोड़ी बहुत अड़चनें उनके दिमागों में थी, वो अड़चनें मिट जाएँ और सब मिल जाएँ, मजबूत हो जाएँ और मतलब मेजार्टी मिल जाएँ।

श्री कुमार राकेशः आज की परिस्थिति में जो भाजपा अपने सहयोगी दलों के साथ सरकार में है, और काँग्रेस पचास साल में कोई पैंतालीस साल राज कर चुकी है तो आज की स्थिति में आप काँग्रेस और भाजपा में क्या फर्क देखते है?

श्री अर्जुनसिंहः फर्क तो जमीन-आसमान का है और उस को लेकर पूरा व्याख्यान देने की जरूरत पड़ेगी।

श्री कुमार राकेशः आप ने आम सहमति की बात की है और प्रधान मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने संसद में आम सहमति से सरकार चलाने की बात कही कि राष्ट्रीय मुद्दों पर हम भी सरकार को विपक्ष मे रह कर भी समर्थन देते रहे है और हमारी अपेक्षा है कि जो विपक्षी पार्टी है देश को चलाने के लिए

आम सहमति से निर्णय करे तो इस पर आप की क्या प्रतिक्रिया है?

श्री अर्जुनसिंह: आम सहमति अपने आप में तो अच्छी बात है, इस पर किसी को ऐतराज नहीं होगा। लेकिन आम सहमति केवल एक लुभावना नारा नहीं रहे यथार्थ में जब काम करने की बात आए तो आचरण इसके विपरीत हो, तो उस का तो कोई मतलब हुआ नहीं। काँग्रेस ने भी, और काँग्रेस अध्यक्ष ने तो खुद ही कहा है हम कंस्ट्रक्टिव सपोर्ट देंगे और को-आपरेशन देंगे। लेकिन पहला ही अवसर आया स्पीकर के चुनाव का और उसी में पता चल गया कि आम सहमति केवल अपनी बात मनवाने का रास्ता बन जाए वह तो ठीक नहीं है। आम सहमति हो कर के कोई फैसला हो इस में उनका विश्वास नहीं है।

श्री कुमार राकेश: एक अंतिम सवाल जिसे कहा जाए एक नरसिंहराव की सरकार थी और ये अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार है। दोनों में आप किस तरह से सिमिलेरिटि और डिसपेरिटी देखते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: एक तो काँग्रेस की सरकार थी और बहुत-सी बातें काँग्रेस की नीतियों और कार्यक्रमों की हैं, उन पर अमल करने की कोशिश हुई। सब से बड़ा मुद्दा था पंचायती राज का, लोग आज भूल जाते हैं कि पंचायती राज का जो संवैधानिक संशोधन था उसे राज्य सभा में भारतीय जनता पार्टी ने हराया था, राजीव जी के जीवन काल में। बाद में 91 के बाद में जो सरकार बनी उस सरकार ने उस संवैधानिक संशोधन को पास करा के सारे देश में पंचायती राज को लागू करवाया था और उसमें तैंतीस प्रतिशत महिलाओं को आरक्षण भी दिया है।

दूसरा जो मण्डल कमीशन के ऊपर एक सवाल था जिन्हें मण्डल कमीशन के जिन को हम कह सकते हैं, शब्द आप बता दीजिए, मैं गलत शब्द इस्तेमाल न करूँ, मतलब जो उस के लाने वाले थे।

श्री कुमार राकेश: प्रस्तुकर्ता कहेंगे।

श्री अर्जुनसिंह: हाँ, प्रस्तुत करने वाले या उस के जनक थे, उन लोगों ने उस विषय को सामाजिक न्याय और संतुलन का माध्यम न बना कर के सामाजिक तनाव का एक विषय बना दिया और कितनी कटुता पैदा हुई? कितने बच्चों ने आत्म दाह कर लिया? उस विषय पर काँग्रेस ने एक आम सहमति बनाई और सब के सहयोग से उसे लागू करने का एक रास्ता निकाला। यह हुआ है, नरसिंह राव जी के शासन काल में।

अब रह गया वाजपेयी जी की सरकार का तो अभी तो जुमा-जुमा दो महीने भी नहीं हुए। अभी तो कोई तस्वीर ही उभर कर सामने नहीं आई, सिवाय इस के कि प्रधानमंत्री हैं वाजपेयी जी और व्यक्ति गत स्तर पर हम सब उन का सम्मान करते हैं, लेकिन सरकार की छवि कही उभर कर सामने आई नहीं जहाँ तुलना भी की जा सके। धन्यवाद।

काँग्रेस की स्थिति में सुधार

9 मई 1998 को नवभारत के अनुज गुप्ता के साथ साक्षात्कार—

प्रश्न: चुनाव के परिणाम आपके ऑकलन के अनुसार नहीं रहे, क्यों?

श्री अर्जुनसिंह: हाँ मैंने भी कहा था जिस वक्त यह शुरू हुआ था चुनाव की गिनती का श्रीगणेश वन साईडेड हुआ।

तभी यह हुआ था कि यह प्रोजेक्ट किया जा रहा हैं, जो लोग मानते थे, वह किया जा रहा है। वन साईडेड नहीं है।

प्रश्नः आपके लिए यह परिवर्तन किस वजह से हुआ?

श्री अर्जुनसिंहः मैं तो दो कारण मानता हूँ। एक तो बी.जे.पी. का बड़बोलापन ज्यादा से ज्यादा हुआ और दूसरा महत्वपूर्ण कारण सोनिया जी का राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश है।

प्रश्नः सोनिया जी की सभा में जो भीड़ आ रही है उसको किस रूप में ले रहे हैं आप?

श्री अर्जुनसिंहः ऐसा हमने पहले भी देखा है, जब इंदिरा जी थी और 77-80 के बीच में 77 की डिफीट के बाद पहली बार बाहर आई। उस वक्त आप देखें तो एक साथ लोग डिफिटेड इंदिरा को देखने आ रहे थे और किसे देखेंगे भीड़ तो भीड़ आती है सुनती है।

प्रश्नः क्या आपको लगता है काँग्रेस संगठन मजबूत है कि भीड़ को ट्रांसलेट कर सकें।

श्री अर्जुनसिंहः देखिए कोई आटोमेटिक ट्रांसलेट तो होता नही हैं। पोलिटिक्स में लोग समझते हैं रिलेवेंट को ट्रांसलेट होने में कोई दिक्कत नहीं है।

प्रश्नः चुनाव के बाद आप क्या काम कर रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंहः अकेले करना कोई मतलब नहीं रखता है। उत्तरप्रदेश का एक पोलिंग हो जाय तो उसके बारे में कुछ गेसवर्क हो सकता हैं। वरना गेसवर्क नाट पासिबल।

प्रश्नः काँग्रेस ने संयुक्त मोर्चे की दो बार सरकारें गिराई। इससे आपको लगता हैं कि चुनाव के बाद संयुक्त मोर्चे और काँग्रेस में कोई तालमेल हो सकता है?

श्री अर्जुनसिंहः हायपोथेटिकल प्रश्न है। मैं तो कोई आधार ही नहीं देखता हूँ, किस आधार पर क्या होगा उसके बारे में कुछ कहना ठीक नहीं है।

प्रश्नः आँध्रप्रदेश और बंगाल की तरह अन्य राज्यों में काँग्रेस की बढ़त महसूस कर रहे हैं?

श्री अर्जुनसिंहः राजस्थान, असम यह तो उसी केटेगरी में आते हैं। केरल, कर्नाटक, मध्यप्रदेश में इम्प्रूव हुआ है।

प्रश्नः क्या काँग्रेस का नुकसान मध्यप्रदेश में नहीं होगा?

श्री अर्जुनसिंहः ऐसा मामला तो मुझे नहीं दिखता। इतना तो नहीं लेकिन लोकसभा के चुनाव में केवल यही नहीं आप देखेंगे। अमूमन आप जो कह रहे हैं लोकसभा पोल्स आय डोंट थिंक और स्टेट के इलेक्शन भी तो हमारे यहाँ होने वाले हैं। चार राज्यों में तो होंगे ही। उसमें थोड़ा सा केयरफुल रहना चाहिए।

भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्ष नीति है

25 मई 1998 को सहारा के संवाददाता के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

प्रश्नः मध्यप्रदेश में और दूसरे प्रदेशों में जहाँ इलेक्शन होने वाले हैं, वहाँ के बारे में काँग्रेस ने कोई स्ट्रेटेजी तैयार की है, या नहीं?

श्री अर्जुनसिंहः इस मामले में तो वर्किंग कमेटी में विचार-विमर्श हुआ है और सभी लोगों को मिलकर उस मामले में हरेक स्टेट में काम करना है। वही फर्स्ट इफेक्ट हैं। बाकी तो बहुत सी चीजें हैं, स्ट्रेटेजी बनाने की कोशिश हुई है और स्ट्रेटेजी तो कोई पब्लिक डिस्कसन की चीज है नहीं।

प्रश्नः कॉंग्रेस में कुछ लीडर्स खास तौर से मध्यप्रदेश में दिलीप सिंह भूरिया, अरविंद नेताम कहते हैं कि हम कॉंग्रेस में वापस जाना चाहते हैं, तो क्या पार्टी अपनी तरफ से कोई सूचना निकाल रही है कि उनको लिया जायगा।

श्री अर्जुनसिंहः यह तो प्रदेश कॉंग्रेस कमेटी तय करेगी।

प्रश्नः प्रदेश कॉंग्रेस कमेटी को जब तक हाय कमान से इशारा नहीं होगा तब तक नहीं करेगी?

श्री अर्जुनसिंहः अभी इस विषय पर विचार नहीं हुआ है।

प्रश्नः पोखरन में जो धमाका हुआ है क्या आपको लगता हैं कि बी.जे.पी. के शासन को इससे कोई सियासी फायदा होगा?

श्री अर्जुनसिंहः अगर सियासी फायदे के लिए यह धमाका किया गया है, तो अलग बात हैं। लेकिन जैसा कि प्रधानमंत्री का कथन हैं, यह राष्ट्र की सुरक्षा के संदर्भ में किया गया है। तो इसके डिटेल की बात तो और हैं लेकिन हम लोगों ने तो सही रूख लिया हैं कि यह राष्ट्रीय मामला हैं। कोई दलगत मामला नहीं है, उम्मीद करते हैं कि सभी लोग इसको इसी नजरिए से देखेंगे।

प्रश्नः अडवाणी जी और खुराना जी का बयान, पाकिस्तान के जिन्ना के सिलसिले में, उनसे आपको क्या ऐसा नहीं लगता कि हमारे देश की जो विदेश नीति रही है, अभी तक, यह उससे हटकर संबंध बिगाड़ने वाली बात हैं और देश पर इसका क्या असर पड़ेगा?

श्री अर्जुनसिंहः मैं तो उनके बयान को गैर जिम्मेदाराना बयान मानता हूँ, समझबूझ कर तो कोई ऐसा बयान देगा नहीं। निश्चित रूप से विदेश नीति पिछले 50 वर्षों से एक गुटनिरपेक्ष नीति है। आज भी प्रधानमंत्री ने कहा कि पाकिस्तान का जो विषय है वह हमारी आम राय का विषय हैं। अगर आडवाणी जी अपने प्रधानमंत्री की ही मंशा नहीं समझ सकते तो खुराना और हम लोग इसके लिए क्या करेंगे? प्रधानमंत्री समझाएँ उनको?

प्रश्नः लेकिन प्रधानमंत्री जी ने जो संकेत दिए हैं, कि उन्होंने जम्मू कश्मीर के मामले में चार्ज अडवाणी जी को दे दिया है?

श्री अर्जुनसिंहः वह पहले से होम डिपार्टमेण्ट में था। वह तो एक विशिष्ट परिस्थिति में नरसिंहराव जी ने ले लिया था। इसलिए तो मैं यह कह रहा हूँ कि इस चीज को प्रधानमंत्री को देखना चाहिए। वह एक बयान करते हैं और उनके मंत्री दूसरा बयान करते हैं। तो कौन निपटाएगा, हम लोग तो नहीं निपटा सकते, केवल उसकी भर्त्सना कर सकते हैं, वह तो कर ही रहे हैं।

प्रश्नः अच्छा तो पार्लियामेण्ट का परसों से सेशन शुरू होने वाला हैं तो पार्टी के पास क्या खास मुद्दे है?

श्री अर्जुनसिंहः यह तो पार्लियामेण्टरी पार्टी बैठकर तय करेगी। वही लोग तय करेंगे, एक्जीक्यूटिव है, कल शायद मीटिंग है, पार्लियामेंटरी पार्टी की।

प्रश्नः परसों मीटिंग में तय किया गया कि जो इलेक्शन के खर्चे है वह गवर्नमेण्ट उठाए?

श्री अर्जुनसिंहः वही तो चर्चा हुई ना, अब इस तरह का विधेयक आ जाय, कॉंग्रेस लाए, पेश हो जाय तब न कुछ बात है यह तो कई दफे हो चुका है। हम लोगों ने तो देखा कई दफे पहल हो चुकी है। अंततः फिर फैसला नहीं होता। इसलिए हम कह रहे है कि जब पास हो जाय तब मै मॉनू कि हॉं यह कदम

हुआ, वैसे चर्चा अच्छी है।

प्रश्नः विशेष रूप से प्रधानमंत्री के बारे में लोगों का कहना यह है कि वह हार्ड लाईन में नही हैं, जैसे अडवाणी जी?

श्री अर्जुनसिंहः हार्ड व साफ्ट से मतलब नहीं है। भारत के हित में जो बात हैं वह करने के लिए प्रधानमंत्री को हिम्मत रखना चाहिए। अगर वह हिम्मत नहीं रख सकते और हार्ड लाइनर व साफ्ट लाइनर में ही विभाजित होना हैं देश को तो फिर क्या मतलब?

प्रश्नः शायद बी.जे.पी. ने यह भी कहा कि 26 जनवरी को जो रैली होगी उसमें आर.एस.एस. की टुकड़ी शामिल की जाएगी और भारत रत्न के एवार्ड भी कुछ आर.एस.एस. के लोगों को दिए जाएँगे। क्या काँग्रेस इसको अपोज करेगी?

श्री अर्जुन सिंहः सूत न कपास लट्ठम लट्ठा वाली बात है। अरे भाई जब होगा तब देखेंगे। 26 जनवरी को तो अभी बहुत दिन है।

प्रश्नः 26 जनवरी के कार्यक्रम में आर.एस.एस. की टुकड़ी शामिल की जाएगी?

श्री अर्जुन सिंहः यह अखबारों में छपा हैं, अटकलबाजी हैं तो क्या हर अटकलबाजी का हम जवाब देते फिरे। धन्यवाद।

भाजपा की चुनौती से निपटने में काँग्रेस सक्षम

18 जून 1998 को उज्जैन में पत्रकारों के साथ चर्चा के प्रमुख अंश—

प्रश्नः काँग्रेस में क्या चल रहा है?

उत्तरः काँग्रेस में तो कन्सालिडेशन चल रहा है और तैयारी चल रही है, आने वाले चुनावी सँग्राम के लिए।

प्रश्नः काँग्रेस के पक्ष में परिस्थितियाँ क्या हैं?

उत्तरः परिस्थितियाँ तो अपनी जगह रहती हैं, परिस्थितियों को मोड़ने का काम भी पार्टी का रहता है और परिस्थितियों से निपटने का काम भी पार्टी का रहता है।

प्रश्नः आज प्रदेश में और देश में बी.जे.पी. की चुनौती है उससे निपटने में काँग्रेस कहाँ तक सक्षम है?

उत्तरः मैं तो समझता हूँ कि काँग्रेस पूरी तरह से सक्षम है और आने वाले समय में इस बात का स्पष्ट संकेत भी मिलेगा।

प्रश्नः पिछले दिनों मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह को हटाने की मुहिम चली थी, ऐसा काँग्रेस के सूत्रों द्वारा बताया जाता है कि आप के इशारे पर मुहिम छिड़ी थी इसमें कहाँ तक सत्यता है?

उत्तरः इसमें जरा भी सत्यता नहीं है कि किसी के इशारे पर कोई ऐसी मुहिम नहीं चली थी। पार्टी की ओर से सभी चीजों का आँकलन हो रहा था कि किस प्रकार से हम भविष्य में चुनावों के संदर्भ में पार्टी को मजबूत बना सकते हैं और यह आँकलन करने का अधिकार काँग्रेस के नेतृत्व को सदैव रहता है आपको मालूम ही है उस आँकलन के बाद एक निर्णय हुआ। इसमें किसी के द्वारा मुहिम चलाने की या किसी के द्वारा बचाने का सवाल नहीं उठता।

प्रश्नः अयोध्या मामले को किसने उठाया और क्यों उठाया?

उत्तरः अयोध्या मामले को क्या काँग्रेस ने उठाया? क्या भाजपा ने उठाया? वह तो अदालत में केस चल रहा था वोट पाने के लिए अदालत का मामला चौराहे पर कौन लाया, बीजेपी लाई ना और अब उस विषय पर मौन है, भगवान राम विश्राम कर रहे हैं, अब नैशनल एजेंडा में नहीं है। सवाल यह है कि काँग्रेस का बहुत स्पष्ट मत शुरू से था कि यह विषय विवाद का नहीं होना चाहिए। यह विषय सबकी सहमति से और जब एक दफे मामला अदालत में पहुँच गया है तो अदालत के फैसले के बाद इस पर कार्रवाई होनी चाहिए अब बीजेपी ने तो उसका पहले फायदा उठाने की कोशिश की थी, विवाद पैदा करके फायदा नहीं उठा पाए तो फिर से चुप हो गए और इस बीच में क्या-क्या हुआ, वह देश के सामने है। हजारों लोगों की जानें गई, खून खराबा हुआ देश में। बाबरी मस्जिद को गिराया गया, देश में तनाव पैदा हुआ और उस दौरान बी.जे.पी. के बड़े-बड़े नेताओं ने हाथ उठाकर आश्वासन दिया देश के सर्वोच्च न्यायालय को कि हम लोग ऐसा आचरण नहीं करेंगे। यहाँ तक कि मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह जी ने हलफनामा दिया। ये आचरण का द्योतक हैं जो होता है वह तो अलग चीज है। अंततः एक दिन की सजा हुई उनको contempt of court Supreme Court के लिए। हम लोग यही चाहते थे कि इस विषय पर एक जो सामान्य तरीका होना चाहिए, वह सर्वमान्य तरीका हो जाए और सर्वमान्य तरीका होने के लिए जरूरी है कि बीजेपी के तथा संघ परिवार के जितने भी घटक हैं वे भी वाजपेयी जी की इस घोषणा को स्वीकार करें कि न्यायालय का जो भी फैसला होगा उसे सरकार मानेगी। उसके अनुसार कार्रवाई करेगी, वाजपेयी जी ने तो यह कहा है और सिंघल और आर.एस.एस. जो कह रहे हैं वह आप सुन ही रहे है।

प्रश्नः बिहार की ताजा राजनीतिक स्थिति क्या है?

उत्तरः जल्दीबाजी में बिहार की सरकार भंग करने की कार्रवाई तो नहीं होना चाहिए।

प्रश्नः विधान सभा के चुनाव को लेकर सोनिया गाँधी की अध्यक्षता में जो समिति बनी थी, समाचार पत्रों में छपा है कि माधवराव सिंधिया और पायलट को दर किनार कर दिया गया है। तो क्या आप मानते हैं कि उसमें आपका हाथ था?

उत्तरः देखिए, इस तरह की बातों में कोई तथ्य नहीं है, अब कहीं कुछ न मिले तो मिर्च मसाला तो आप लोगों को लगाना ही है, अब हम लोग उसमें क्या करेंगे?

प्रश्नः मध्यप्रदेश में 16 नए जिले बनाने का जो निर्णय लिया गया है उसमें से 10 जिले बना भी दिए गए हैं, यह काँग्रेस के लिए कहाँ तक फायदेमंद सिद्ध होंगे?

उत्तरः निर्णय सब होते हैं किसी संदर्भ में कितना फायदा-नुकसान होता है, वह बाद में पता चलता है, मेरे ख्याल से प्रशासनिक दृष्टिकोण से ऐसा किया गया हैं और इनमें कहीं असंतोष है उसको दूर करने की कोशिश हो रही है।

प्रश्नः पंचायती राज के सफल कार्यान्वयन में आपका क्या दृष्टिकोण है क्या वह सफल रहा है?

उत्तरः पंचायती राज सही दिशा में उठाया गया सही कदम है और मैं समझता हूँ कि वह एक ऐतिहासिक कदम है जिसे स्वर्गीय श्री राजीव गाँधी ने संवैधानिक संरक्षण देकर आज के उन हजारों, लाखों, करोड़ों, लोगों की भावना का आदर किया है जो सही मायने में प्रजातंत्र की जड़ से जुड़ी है। नीचे से प्रजातांत्रिक पद्धति स्थापित होना चाहिए। अब यह बात जरूर है कि शुरू-शुरू में जो अधिकार दिए गए जो प्रक्रिया निर्धारित की गई जो धन की व्यवस्था की गई कुछ-कुछ कहीं खामियाँ भी आई है, विकृतियाँ भी हुई है उनको सुधारना चाहिए।

नेशनल एजेण्डा की बात बेमानी

14 अगस्त, 1998 को श्री अनुज गुप्ता, नव भारत, भोपाल के साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

प्रश्नः इस सरकार के कामकाज के बारे में कुछ कहना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंहः मेरी समझ में ऐसा कोई विषय नहीं है जिस पर पहले से निर्णय सोच-समझकर लिया गया हो और उसको क्रियान्वित करने की कोशिश की गई हो। जो भी निर्णय होता है वह किसी एक उद्देश्य को लेकर होता है और उस उद्देश्य को ही पूरा नहीं होने दिया जाता कि वह निर्णय बदल दिया जाता है। इसलिए मैं कुछ समझ नहीं पाता कि जो प्रशासन के सामान्य तौर-तरीके हैं, वे उस काम को करने का एक सिलसिला है, वो तो कहीं दिखता नहीं है।

प्रश्नः इसके पीछे आपको क्या नजर आता है?

श्री अर्जुनसिंहः कारण यह है कि कोई कल्पना ही नहीं हैं और न कोई पहले से निर्धारित कार्यक्रम है। नेशनल एजेण्डा कि बात बार-बार कहीं जाती है, ये तो इसलिए बना दिया गया है कि इसके बारे में किसी को कोई एतराज नहीं है। उनका यह अनिवार्य कार्यक्रम नहीं है। चूँकि इसमें किसी को एतराज नहीं है, सब जो घटक हैं वह भुलावे में रहे कि वह जो चाहते है, वहीं एजेण्डा में शामिल है। बस यही है और तो इसके पीछे अन्य कोई सोच नहीं है।

प्रश्नः परमाणु विस्फोटों का क्या असर देश की राजनीति पर पड़ा?

श्री अर्जुनसिंहः परमाणु विस्फोट के बारे में जो कुछ काम काँग्रेस की तरफ से ही पहले किया गया है वह अपनी जगह है, लेकिन विस्फोट कर देना ही पर्याप्त नहीं है। इससे उत्पन्न परिस्थितियों पर काबू पाने के लिए क्या किया गया? ऐसी बात तो नहीं है कि आपने विस्फोट कर दिया और उसी वजह से हम सहसा एकदम उस स्थिति पर पहुँच गए, जहाँ आज रूस और अमेरिका है। अगर यह किसी की कल्पना है तो थोड़ी मुश्किल बात है। ठीक है अगर एक सही दिशा में उठाया गया कदम परिस्थितियों की वजह से माना भी जाय तो उसके आगे जो कुछ होना चाहिए सबको साथ में लेकर दुनिया के लोगों को उन परिस्थितियों से अवगत कराना।

दूसरा यह कि असली मुद्दा तो न्यूक्लियर डिस आरमामेंट का है। आज इतने एटम बम रूस और अमेरिका के पास है, क्या उन्होंने पिछले नागासाकी-हिरोशिमा के बाद कहीं भी एक बम का उपयोग किया? और लड़ाईयाँ बहुत हो गई, लाखों लोग मर गए इन लड़ाइयों में। कोरिया में लड़ाई हुई, मिडिल इस्ट में हुई, युगोस्लाविया में हुई, ये तो बहुत प्रमुख है। ऐसे न जाने कितने संघर्ष हुए लेकिन कहीं भी अणु-शक्ति का प्रयोग नहीं हुआ। यह केवल एक शक्ति है जिसका कि प्रभाव होना चाहिए। वही दुनिया के हित में है निरस्त्रीकरण और निरस्त्रीकरण का मात्र ढाँचा केवल भारत ने प्रस्तुत किया है। आज वह हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए उसके बारे में न वाजपेयी जी बोल रहे है न ही कोई बोल रहा है।

प्रश्नः अब इस बात का ख्याल होगा कि इस सरकार ने शस्त्रीकरण न करने के बारे में अभी तक कुछ नहीं कहा है?

श्री अर्जुनसिंहः वही तो मै आपसे कह रहा हूँ कि यह जो बाते है, यह देश के लिए ठीक नहीं है। अब सोच-समझकर

पूरी चीज ए-टू-जेड विचार करके कोई फैसला लीजिए, फिर उसको पूरा करने में सबका सहयोग लीजिए। क्योंकि कुछ ऐसे मुद्दे देश के होते हैं जिसमें राजनीति नहीं आती है। न ही अभी तक लाई गई है। विदेश नीति और रक्षा नीति पंडित जवाहरलाल नेहरू के समय से आज तक नहीं बदली। लेकिन अब आर.एस.एस. का एजेण्डा अलग है और देश का एजेण्डा अलग है।

प्रश्नः आर.एस.एस. के एजेण्डे से देश को मुक्त कराने के लिए आप कुछ प्रयास करेंगे?

श्री अर्जुनसिंहः अब तो इस देश की जनता ही कर सकती है। हम क्या कर सकते है। हम लोग तो पूरा प्रयास करेंगे, हर संभव प्रयास करेंगे।

प्रश्नः परमाणु विस्फोटों के बाद कूटनीति प्रयास करने के बारे में प्रधान मंत्री जी से आप लोगों की कोई बात हुई है?

श्री अर्जुनसिंहः मैं तो जानता नहीं, लेकिन हाँ कोई ठोस बातचीत तो नहीं हुई। वैसे बाई द वे, कोई चर्चा हो गई हो तो बात अलग है। वरना कोई ठोस बात होती तो जिस काम के लिए अफसरों को भेजा जाता है, उस काम में देश के अलग-अलग पार्टी के नेताओं को भेजना चाहिए था ताकि एक इम्प्रेशन देश में और विदेशों में जाता कि इस मामले में हम सब एक हैं। मैं किसी एक व्यक्ति की बात नहीं कर रहा हूँ। जितनी पार्टियाँ हैं मैं नहीं समझता कि कोई इंकार करता। अगर प्रधानमंत्री की ओर से पहल होती तो लेकिन उन्होंने सरकारी अफसरों को भेजकर बात करना ज्यादा उचित समझा। इसका क्या असर पड़ेगा बाहर? पोलिटिकल लीडरशिप पर तो कोई असर नहीं पड़ सकता।

प्रश्नः क्या वाजपेयी जी से इस तरह की उम्मीद आपको पहले थी?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए वाजपेयी जी को सब भला आदमी मानते हैं, मैं भी मनता हूँ।

प्रश्नः अभी भी मानते है?

श्री अर्जुनसिंहः मैं पहले भी मानता था, आज भी मानता हूँ लेकिन वो इतने भले हैं कि देश के भले के लिए क्या करना है वह करने में असमर्थ है। तो व्यक्तिगत भलाई का तो कोई मतलब नहीं है। प्रधानमंत्री की हैसियत से तो उसका कोई मतलब नही हैं?

प्रश्नः श्री कृष्ण आयोग की जो रिपोर्ट आई है। उस पर काँग्रेस की कोई बड़ा आन्दोलन छेड़ने की कोई तैयारी नहीं दिखाई दे रही है?

श्री अर्जुनसिंहः कार्यक्रम बन रहा है। विचार-विमर्श हो गया है। जल्दी ही उस पर कार्यक्रम घोषित होगा।

प्रश्नः छत्तीसगढ़ राज्य के गठन का लाभ भाजपा को कितना मिल पाएगा?

श्री अर्जुनसिंहः गठन कहाँ हो रहा हैं, गठन की बात कही गई है। गठन की बात कहने से ही सब छत्तीसगढ़ के लोग भाजपा को समर्थन देने की बात सोचते हैं। ऐसी भाजपा आशा करती हैं। मैं तो नहीं समझता कि वह सफल होगा। यह सब धोखा देने वाली बात है।

गाँधी जी कहते थे कि हिन्दुस्तान वह भूमि है जहाँ हर धर्म को मानने वाले लोग, विभिन्न जाति बिरादरी के लोग पूरी बराबरी के साथ रहते हैं, अपने अधिकारों का निर्वहन करते हैं, और भारत माता के आँगन में खेलते समय, उनके बीच में कोई भेदभाव नहीं होता, ऐसे देश के हम सब नागरिक हैं। और जब जब ऐसा नहीं हुआ, तो उसके परिणाम हमें देखने को मिले हैं।

—श्री अर्जुनसिंह

16 फरवरी 1999



1999

श्री अर्जुनसिंह : मध्यप्रदेश में

देश की सुरक्षा के बाद अन्दर की राजनीति देखेंगे

4 जून 1999 को कटकोन (सतना) में उच्चस्तरीय पुल के लोकार्पण समारोह में उद्‌बोधन के प्रमुख अंश—

सम्मानित विधायक श्री रामप्रतापसिंहजी और इस आयोजन में भाग लेने के लिए आए हुए सभी सम्मानित बंधुओं। मुझे इज़ाज़त हो तो थोड़ा बुन्देलखंडी बोली में कुछ कहूँ। ये लोकार्पण विकास की एक सामान्य प्रक्रिया है और जिसको जनसेवा की यह जिम्मेदारी मिलती हैं, कोई उसको निभाने के भी अवसर जनता के सहयोग से मिलते हैं जिम्मेदारी को निभाना कोई बहुत बड़ी मेहरबानी का सवाल नहीं हैं, हर्ष का सवाल हैं। भाई रामप्रतापसिंह जी अपने क्षेत्र के बारे में जो कुछ कर रहे हैं वह इस बात का सबूत है कि जन प्रतिनिधि होने के नाते उनकी जो जिम्मेदारी है उसको वह केवल समझते भर नहीं है बल्कि उसको पूरा करने की कोशिश करते हैं।

हम सिर्फ इतना ही कहना चाहते हैं कि इन दोनों बातों का उल्लेख कर दें तो उन्होंने कहा कि ये काम करा दीजिए तो हमने कहा कि जब सुविधा हो आप हमको लिखकर दे दीजिए हम एक-एक चीज की सुध करके उसको पूरा करने की कोशिश करेंगे। हम आप सभी से विनती करते हैं नागौद, सतना तक सभी दूर बात होती हैं, तो इसके आगे भी हिन्दुस्तान हैं और वो हिन्दुस्तान जो हराभरा रहे, अखण्ड बना रहे, तो हमारे अपने नागौद, सीधी, सतना और रीवा यहाँ भी काम होते रहेंगे और धीरे-धीरे हम इनको बढ़ाते रहेंगे। लेकिन जब वृहद हिन्दुस्तान खंडित होगा, कमजोर होगा, तो कमजोरी हम लोगों के लिए दुःखदाई होगी और फिर हम चाहे भले ही तीसमारखाँ बने हम कुछ कर नहीं सकेगें।

आज ऐसे ही असंमजस में अपना देश पड़ गया हैं। सरहद पर लड़ाई हो रही हैं, स्वयं प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि लड़ाई जैसी स्थिति बन गई हैं, हमसे भी कही, काँग्रेस अध्यक्ष से भी कही। दूसरे रोज उनके मंत्रालय से एक वक्तव्य निकल गया कि ये प्रेस वाले गलत छाप दिए हैं, प्रधानमंत्री ने तो ऐसा कहा ही नहीं। अब इतने बड़े स्तर से देश की जनता को भुल भुलैया में रखा जाय तो देश कैसे बचेगा, ये सोचने वाली बात हैं। आज तो केवल एक ही लक्ष्य हैं सरकार में कैसे बैठे रहे और किसी बात से कोई मतलब नहीं हैं। हमारा लक्ष्य यह है कि भारत की सीमा सुरक्षित हो, भारत की सीमा के अन्दर जबर्दस्ती जो लोग घुस रहे हैं, उनको देश से बाहर निकाला जाय। भारत की सेना जो है वह बहादुरी से, हिम्मत से काम को पूरा कर रही है। एक भारतीय होने के नाते हमारा पहला कर्तव्य यह है कि उस प्रयास में हम जो कुछ सहयोग दें सकें अपने स्तर पर वो सहयोग हम दें, एकता के साथ दें। एक दफे देश सुरक्षित हो जाय उसके बाद देश के अंदर की राजनीति देखी जायगी लेकिन देश की सुरक्षा के साथ राजनीति के खेल खेलना देश के लिए कितना खतरनाक हो सकता हैं, इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। इस बारे में हम लोगों का दृष्टिकोण साफ हैं और जनता के बीच में ये बात कहना इसलिए जरूरी है कि कई एक प्रकार की भ्राँतियाँ जनता के बीच में फैलाने की कोशिश हो रही हैं।

दूसरी बात जो हम कहना चाहते हैं वह यह है कि क्षेत्र के विकास की जिम्मेदारी किसी रूप में भी जो उचित समझे हमको एक मौका दें करने के लिए हम सब मिलकर करने की कोशिश करेंगे।

राम प्रतापसिंहजी से इतना ही कहना चाहते हैं हमको गुरु कह दिए हैं, तो हमको संकोच हो रहा है, नहीं तो हम कुछ और कहते। गुरु वाली बात अपनी बुन्देलखंडी में कहते ही है कि गुरु गुड़ हो गया, चेला खार हो गया तो गुरु वाली बात तो नहीं कहूँगा लेकिन चूँकि वो हमसे छोटे हैं, हरदम उनके साथ भावना जुड़ी रही तो हम उनसे एक ही चीज कहते है कि सार्वजनिक जीवन भी बहुत कठिन जीवन है। सार्वजनिक जीवन की मर्यादा का पालन करना और मन में किसी प्रकार का द्वेष और कटुता न लाएँ। ये बहुत बड़ी चीज होती है। बहुत देखे हम ऊँच नीच, सपाट, गहराई सबं देखे हैं लेकिन एक चीज आदमी को हरदम सहायता करती है दिल छोटा न करें, जिन्दगी तो छोटी है लेकिन जरूरी नहीं है कि मन छोटा हो, मन बड़ा होना चाहिए। और मन बड़ा रहे तो ये सब चीजें अपने आप बड़ी होती है, खत्म नहीं होती हैं। और वो मनुष्य निष्ठा और समर्पण की भावना से कार्य करता है। जनता के प्रति निष्ठा और समर्पण की भावना से कार्य करता हैं जनता के प्रति उसको कोई विचलित नहीं कर सकता। उसको कोई हटा नहीं सकता।

यहाँ परिहार साहब हैं ये इंजीनियर हैं तो ये काम ही यही करते हैं। ये बनाओं, मकान बनाओ ओर लोकार्पण करवाओं। निष्ठा से, समर्पण से एक छोटा कदम आगे बढ़कर खड़ा हो जाएँ तो पर्याप्त होता है, लंबी चौड़ी फेहरिस्त से कोई मतलब नहीं। यह हमारे लिए बहुत बड़े सौभाग्य की बात हैं। इस पुल के लोकार्पण से इस क्षेत्र की जनता को आवागमन में सुविधा होगी। इस क्षेत्र के विकास के लिए ये पुल एक माध्यम बने, ये हमारी आशा और विश्वास है।

श्री अर्जुनसिंह : अन्य प्रदेशों में

बाबरी ढाँचा गिरने का खामियाजा काँग्रेस को भुगतना पड़ा

16 फरवरी, 1999 को जिला सहारनपुर के इंटर कॉलेज में सम्बोधन के प्रमुख अंश—

माननीय चौधरी यशपालसिंहजी, पत्रकार बंधुओं और इस सभा में पधारे हुए आदरणीय साथियों।

चौधरी साहब ने मुझे कई महीने पहले इस कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया था। चौधरी साहब का आदेश भी इतना ही दृढ़ था और इसीलिए हाजिर हुआ हूँ, आप सबको नमन करने के लिए, आप सबके प्रति शुभकामनाएँ देने के लिए और शिक्षा के मंदिर में देश के जिन दो विभूतियों की प्रतिमाओं के अनावरण करने का आपने मुझे मौका दिया उसके लिए।

भारत को चार प्रधानमंत्री तो उत्तरप्रदेश ने, दिए, लेकिन उससे भी बढ़कर हमें वो संस्कृति, साहित्य और धार्मिक भावनाओं की विरासत, यहाँ गंगा, जमुना, सरस्वती के प्रवाह से मिली है। शायद कोई दूसरा उदाहरण दुनिया में नहीं होगा। लेकिन ये महान संस्कृतियाँ, ये धार्मिक प्रवाह, ये जो विरासत है, उसकी कोई तारीख नहीं है।

कुछ लोग यह बताना चाहते हैं कि अमुक समय से हमारे देश की संस्कृति को जोड़ा जा सकता है। कोई यह कहना चाहता है कि हमारे धर्म से भारत की विरासत को नापा जा सकता है। कोई यह कहना चाहता है कि जातीय सर्वेक्षणों से देश के इतिहास को गूँथा जा सकता है, लेकिन जो भारत को जानता है, भारत माता की सही तस्वीर को पहचानता है, वो जानता है कि यह प्रवाह अनन्त है। गंगा की तरह अनंत है जो हजारों साल से बहती आई है

और भविष्य के हजारों साल तक बहती रहेगी, इसके किनारों पर किस जाति के लोग रहते हैं? किस धर्म के मानने वाले लोग रहते हैं। गंगा वो देख कर उनको शांत और सिंचित नहीं करती है, आदमी को मनुष्य जानकर सेवा करती है।

और इसीलिए काँग्रेस पार्टी और गाँधी जी यह कहते है कि हिन्दुस्तान की भूमि में जहाँ हर धर्म के मानने वाले लोग, विभिन्न जाति बिरादरी के लोग पूरी बराबरी के साथ रह सकते है अपने अधिकारों का निर्वहन कर सकते है और भारत माता के आँगन में खेलते समय उनके बीच में भेदभाव नहीं रहता ऐसे हिन्दुस्तान जिसके हम सब नागरिक है। और जब-जब ऐसा नहीं हुआ, तो उसके परिणाम हमें देखने को मिले है।

सबसे बड़ा परिणाम तो देश का बँटवारा है। उसकी पृष्ठभूमि से आप सब लोग परिचित हैं, लेकिन कुछ लोग ऐसा समझते है कि हिन्दुस्थान का बँटवारा धार्मिक आधार किया गया था। अब भी वे अपनी राजनीतिक महत्वाकाँक्षा की पूर्ति के लिए उसी धर्मान्धता का सहारा लेकर चल रहे हैं।

सबसे बड़ी बात यह है कि बाबरी ढाँचे के ढहने पर जो भावना देश के अंदर फैलाई गई, बम्बई में आग लगी, कलकत्ता में आग लगी, दिल्ली में आग लगी, उत्तर प्रदेश में आग लगी, हजारों माताएँ बेबा हो गई, बच्चे यतीम हो गए। करोड़ों की सम्पत्ति दंगों में जला दी गई, और इसका आभास था, आर.एस.एस. वालों को कि इस सबका परिणाम यह होगा कि सारे देश के हिन्दू उत्तेजित होकर और सीधे बी.जे.पी. को दिल्ली के तख्त पर बैठा देंगे। लेकिन क्या हुआ? 6 दिसम्बर, 1992 को यह घटना हुई। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश जहाँ भारतीय जनता पार्टी की सरकारें थीं। भारतीय जनता पार्टी के लोग मुख्यमंत्री थे। जिन्होंने पूरा सहयोग देकर इस हादसे को करवाया। ठीक एक साल के अंदर जब इन सरकारों को हटाकर दूसरा चुनाव हुआ तो उसी 6 दिसम्बर, 1993 को इन चारों प्रदेशों में एक भी प्रदेश में बी.जे.पी. की सरकार लौटकर नहीं आई।

आज फिर वही परिस्थितियाँ निर्मित हुई हैं। आज अटल बिहारी जी प्रधानमंत्री बने हैं। भारतीय जनता पार्टी के बलबूते पर नहीं। आप तो यह समझिए कि 6 दिसम्बर, 1992 के बाद इनका सपना जो था, सपना ही रह गया। वो पूरा होने वाला नहीं है। ठीक है, जोड़-तोड़ करके पहले 13 दिन के लिए बन गए, अब जितने महीनों के लिए बन गए हों। देखेंगे आगे। लेकिन इस देश के लोगों के बहुमत से भारतीय जनता पार्टी प्रजातांत्रिक तरीके से सत्ता में नहीं आई और न आएगी।

आज उत्तर प्रदेश में क्या हाल हैं? 100 लोगों का मंत्रिमंडल है। शायद किसी ग्राम पंचायत में इतनी संख्या नहीं होगी जितनी कि आज लखनऊ के मंत्री मंडल की है। लेकिन लोग सहते चले जारहे हैं। इन सब चीजों की ओर ध्यान देने की जरूरत है। और यह ध्यान और किसी के देने से नहीं होगा। यह ध्यान आप जब देंगे, देश के किसान, मजदूर, हर धर्म के मानने वाले लोग, जब आपका ध्यान इस ओर जायगा तब देश की हालत सुधरेगी, यह बात मैं आपसे प्रार्थना करने के लिए हाजिर हुआ हूँ। तब कहीं जाकर हमारे देश का स्वर्णिम युग आएगा।

सोनिया गाँधी की राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं थी। जिस दिन राजीव जी की हत्या हुई 21 मई 91 को उसके दूसरे दिन, तीसरे दिन दिल्ली में जो काँग्रेस की बैठक हुई, सब लोगों ने एक मत से उनको काँग्रेस का अध्यक्ष बनाने का फैसला किया, लेकिन उन्होंने नहीं माना। इसलिए नहीं कि कोई काँग्रेस से किसी प्रकार का द्वेष था या काँग्रेस से नाराज थीं, उन्होंने इसलिए नहीं माना, कि उन्होंने कोई सेवा नहीं की थी। ऐसी सोच केवल उस व्यक्ति की हो सकती है, जो ऐसे परिवार से आए, जहाँ प्रजातंत्र के प्रति गहरी आस्था हो।

आज तो लोग धोखे की टट्टी के पीछे से समर्थन लेते हैं। वायदा एक करते हैं, काम दूसरा करते हैं और आरोप

दूसरों पर लगाते हैं। अभी जो कविता पढ़ी गई मैं समझता हूँ उसके बाद मुझे कुछ कहने की जरूरत ही नहीं है। आप बहुत अच्छी तरह से सब चीजें समझ गए हैं। मैं किसी पार्टी का नाम नहीं लेना चाहता। लेकिन यह साफ करना चाहता हूँ कि काँग्रेस पार्टी चाहे वह धर्म निरपेक्षता का सवाल हो, चाहे वो समाजवाद के सिद्धान्त का सवाल हो, चाहे वो बराबरी के सिद्धान्त का सवाल हो, चाहे वो दलितों के लिए जनमत के आधार पर उनकी रक्षा करने का सवाल हो, काँग्रेस पार्टी किसी पार्टी से कोई नसीहत नहीं लेना चाहती है और न ही किसी के साथ कम्पीटीशन में है।

आज वही हौसला लेकर श्रीमती सोनिया गाँधी देश के कोने-कोने में जा रही हैं। जब उन्हें जनता का विश्वास मिलेगा, तब जनता क्या चाहती है, उस काम को करने के लिए वे आगे बढ़ेगी। आज उत्तर प्रदेश में काँग्रेस के बारे में कई भ्रांतियाँ हैं। कुछ हमारे आदरणीय पत्रकार बंधु अभी मुझ से वहाँ पर पूछ रहे थे, कि कुछ काँग्रेस के लोग ऐसे हैं- कुछ वैसे हैं। काँग्रेस के अंदर यह हो रहा है, वो हो रहा है। किसी के साथ नाइंसाफी हो रही है। किसी के साथ पक्षपात हो रहा हैं ऐसी स्थितियाँ, ऐसी बातें एक बड़ी जमात में कभी-कभी उठती रहती है। लेकिन यह कभी नहीं होता कि सारी की सारी जमात इससे प्रभावित हो कर काम करने लगे, अगर ऐसा होता तो काँग्रेस पार्टी का 113 साल का इतिहास नहीं होता।

मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि सबसे बड़ा संकल्प श्रीमती सोनिया गाँधी का यही है कि हम आज, काँग्रेस की खोई हुई प्रतिष्ठा और उसकी साख को जो किसी एक-दो व्यक्तियों के ऊपर निर्भर नहीं कर सकते, देश के करोड़ों-करोड़ों की आस्था पर निर्भर करती है। उनकी प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है। उस साख को वापस लाकर के काँग्रेस को फिर से सेवा और संघर्ष का एक सशक्त माध्यम बनाएँगी और वह माध्यम आपके सहारे से बनेगा, उसके लिए मैं आपसे प्रार्थना करना चाहता हूँ और चौधरी यशपाल सिंह जैसे कर्मठ नेता ही संस्था को फिर से उत्साह दिलाने में सहायता करेंगे।

आप सबके प्रति पूरा सम्मान व्यक्त करते हुए आप सब के मंगलमय भविष्य की मैं कामना करता हूँ। जय हिन्द।

भारतीय जनता पार्टी की असलियत

20 मार्च 1999 को गुवाहाटी में माइनारिटीज़ कान्फ्रेन्स में सम्बोधन के प्रमुख अंश—

असम प्रदेश काँग्रेस के सम्मानित अध्यक्ष और सभी आदरणीय बंधुओं, आज मुझे यहाँ आने का अवसर मिला गोयल जी के आमंत्रण पर और असम की इस शस्य स्यामला भूमि के पुनः दर्शन का भी सौभाग्य मिला।

आज भारत की राजनीतिक तस्वीर जो बनी है, वह चिन्ताजनक है। केवल इसलिए कि यह राजनीतिक लोगों का एक गठबंधन किसी प्रकार से सत्ता में पहुँच कर और सत्ता का उपयोग देश के लिए नहीं, भारत के गरीबों के लिए नहीं, भारत के भविष्य को बनाने के लिए नहीं, अपने स्वयं को सत्ता में बनाए रखने के लिए अपने सब अधिकारों का उपयोग कर रहे हैं। अभी कल बड़े हंगामे के बीच दिल्ली में जश्न मनाया गया-भारतीय जनता पार्टी नीत सरकार के एक वर्ष का। लेकिन जिस वक्त वहाँ जश्न मन रहा था, उसी वक्त दिल्ली की गलियों में अपराधियों द्वारा मासूम बच्चों का खून हो रहा था।

मैं आप से यह कह रहा था कि जब सत्ताधारी लोग जश्न मनाने में मशगुल थे, उस वक्त भारत की राजधानी दिल्ली में गुण्डों द्वारा, अपराधियों द्वारा निर्दोष बच्चों का, बुढ़े लोगों का, माताओं और बहनों का खून हो रहा था, कत्ल हो रहे थे, लूटपाट हो रही थी। आज हम सब का सिर शर्म से झुक जाता है, जो अपने देश की राजधानी की

यह हालत देखते हैं। ऐसा लग रहा है कि जैसा दिल्ली, भारत के अपराध की राजधानी हो गई है, भारत की राजनीतिक राजधानी नहीं रह गई है।

यह तो केवल एक पहलू है। भारत का, ऐसा कोई स्थान नहीं है हमारी राजनीति का, हमारे प्रशासन का, हमारे डेव्लपमेंट का, जिस के बारे में हम यह कह सकें कि संजीदगी से, ईमानदारी से कोई कोशिश हो रही है। करना और सफल होना तो दूर की बात है। जो गरीबों की समस्याएँ हैं, जो माइनारिटीज़ की समस्याएँ हैं, जो किसानों की समस्याएँ है, महिलाओं की है, नवयुवकों की बेरोज़गारी की है इन में से किसी पर भी यह बी.जे.पी. का शासन ध्यान नहीं दे रहा है। जिंदगी से तंग आ कर सैकड़ों किसानों ने खुदकुशी कर ली- आंध्र में, पंजाब में, कर्नाटक में,।

जहाँ तक महिलाओं की बात है। अब उस के बारे में कुछ कहना नहीं चाहता। आप इसी से अंदाज इन की मानसिकता का लगा सकते हैं कि कल वाजपेयी जी ने उद्घाटन किया एक इंशुरेंस स्कीम का, जिस का बलात्कार के इंशोर्ड करने का लक्ष्य है। बाद में जब वहाँ की सब बहनों ने इस पर इतराज किया, आवाज उठाई तो इंशुरेंस कंपनी ने उस को बंद किया, लेकिन वाजपेयी जी तो उद्घाटन कर के चले गए थे।

जहाँ तक माइनारिटीज़ का सवाल है। भारत के किसी कोने में, किसी भी राज्य में आज माइनारिटीज़ सुरक्षित नहीं है। चाहे वो हमारे मुसलमान भाई हों, चाहे वो ईसाई भाई हों, चाहे सिक्ख भाई हों, चाहे बौद्ध हों, चाहे जैन हो कोई हों।

कभी-कभी देश पर तरस हो जाता है औरों की बातें छोड़ ही दीजिए। शायद आप लोगों को याद होगा कि आज से आठ-नौ साल पहले यही वाजपेयी जी, यही आडवाणी जी, मुरली मनोहर जी, जितने भी हैं, कितने जोर-शोर से सारे हिन्दुस्तान में इन्होंने बबेला मचाया था। किस का नाम ले कर? मर्यादा पुरूषोत्तम राम का नाम लेकर। भगवान राम को इन्होंने वोट बटोरने की मशीन बना लिया और अब श्री राम को कुछ दिन का आराम दे दिया।

जो राजनीतिक लोग, जो नेता इस देश के भगवान का मजाक उड़ा कर, उन का इस्तेमाल कर के अपनी सियासत चलाना चाहते हैं, वो इस देश का क्या भला करेंगे? हमारे और आपके लिए एक सवाल है कि क्या हम इस को चुपचाप बर्दाश्त करते रहें? चाहे वो असम हो, चाहे वो गुजरात हो, चाहे वो और कोई प्रदेश हो? श्रीमती सोनिया गाँधी ने यह फैसला किया है, काँग्रेस के सदस्य की हैसियत से, इस मामले पर कहीं भी कोई समझौता बी.जे.पी. से नहीं होगा।

आप का असम भी एक ऐसा ही उदाहरण है। यहाँ जो आग लगी, जो तबाही हुई, किस की वजह से हुई? उस का काफी कुछ इतिहास हम को बताने की जरूरत नहीं है। लेकिन उस आग को बुझाने के लिए असम में सिर्फ एक शांति लाने के लिए, यहाँ के नागरिकों के बीच में आपसी प्रेम बढ़ाने के लिए मिल-जुल कर चलने के लिए रास्ता दिखाने के लिए स्वर्गीय राजीव गाँधी ने जो असम एकार्ड किया है, और उसके अंदर उन लोगों को शामिल किया है, जो आग लगाने में शामिल थे, इस उम्मीद के साथ कि कम से कम अवाम की बात सोच कर ऐसे लोग भी अपना रास्ता बदलें।

दुःख की बात यह है कि इन्होंने रास्ता तो नहीं बदला। असम में फौज की वजह से इनको थोड़ा सा समय मिल गया उस का तेजी से इस्तेमाल कर के और असम का सम्पूर्ण तरीके से इस का राजनीतिक शोषण कर के इस्तेमाल करने की कोशिश है। लेकिन इन को बहुत बड़ा धोखा है। असम का अवाम अब सहन नहीं करेगा और उस का थोड़ा-सा नजरिया पिछले लोक सभा के चुनाव में देखने को मिल ही गया है। अब जब भी असेम्बली का चुनाव होगा, तो जिन लोगों ने असम के लोगों की हिफ़ाजत न कर के, यहाँ के लोगों के, गरीबों के हित की हिफ़ाजत न कर के, केवल अपने घर को भरने का काम किया है, प्रजातंत्र में उन के साथ क्या व्यवहार हो सकता है, अगले चुनाव के

नतीजे से वह साफ हो जाएगा।

आज श्रीमती सोनिया गाँधी इन सब चीजों से वाकिफ़ हैं। उन का यह संकल्प है कि काँग्रेस फिर से इस देश की अकलियत के साथ जुड़े। इस देश के गरीबों के साथ जुड़े, महिलाओं के साथ जुड़ें, जवानों के साथ जुड़े। अर्थात् हमारा वही स्थान जो पहले काँग्रेस का इस देश में केन्द्रीय राजनीतिक शक्ति के रूप में रहा है, वो स्थान काँग्रेस को वापस मिले और अपने लिए नहीं, इस देश की भलाई के लिए।

हम लोगों को भी यह महसूस करना चाहिए कि अब हम से ऐसी कोई गलती न हो, जिस के लिए हमें फिर से अवाम से माफी माँगनी पड़े। आज काँग्रेस लड़ रही है, तो देश के उन लोगों के हक के लिए लड़ रही है, जो अपने हक से हटाए गए हैं। हम यह दृष्टिकोण ले कर चलेंगे तो जो आपस की खींचातान होती है, उसमें भी कमी आएगी। अगर वो नहीं हुआ तो माफ करिएगा, चिकनी-चुपड़ी बातें जितनी करते रहें, अब देश की जनता बहुत सतर्क है, वो कभी ऐसी चीज को बर्दाश्त नहीं करेगी, जहाँ उनको यह लगेगा कि लोग अपने स्वार्थ में लगे हुए हैं, हमारे लिए नही सोच रहे हैं। चाहे वो आदिवासी हो, चाहे वो हरिजन हो, चाहे वो नौजवान हो, चाहे वो व्यापारी हो, चाहे वो किसान हो।

आज सब से बड़ी बात जिस की वजह से सारे देश के काँग्रेस जन श्रीमती सोनिया गाँधी के पीछे चल पड़े हैं, उन को यह भरोसा है, यह विश्वास है कि श्रीमती सोनिया गाँधी गुटबाजी के ऊपर है। उन का कोई गुट नहीं है। वो काँग्रेस के लिए चिंतित हैं और काँग्रेस के लिए काम करना चाहती हैं।

सवाल यह है कि हम और आप उसके लिए किस तरह से आगे बढ़ें। आज बहुत-सी समस्याएँ हैं। माइनारिटीज़ की हों, फारमर्स की हों, स्टूडेण्ट की हों, नौजवानों की हों। काँग्रेस को इन से जुड़ना होगा। तरुण बिगोई जी ने असम प्रदेश काँग्रेस अध्यक्ष के नाते बहुत अच्छा रिकार्ड बनाया है।

आप से मेरा यह सब कहने का एक ही मतलब है कि जो एक नया दौर राजनीति का आना शुरू हुआ है देश में इस दौर में काँग्रेस की जिम्मेदारी जो है, वो एक-दो नहीं निभा सकते। वो जमाना अब नहीं है। जब तक एकता नहीं होगी, एक साथ चलने की आदत नहीं होगी, एक तरह से सोचने के लिए हम प्रेरित नहीं होंगे, आगे नहीं आएँगे, तब तक हम को बाँटने वालों को हरदम सफलता मिलती रहेगी।

यही कहने मैं आपके बीच आया था। मेमोरेण्डम में जो-जो बातें कही गई हैं, उन के बारे में संजीदगी से विचार होगा और उन में से जितने में कोई कदम उठाने की बात होगी, जरूर उठाई जाएगी। मैं आप की जानकारी के लिए बताना चाहता हूँ कि अभी 30 जनवरी, 99 को काँग्रेस अध्यक्ष ने माइनारिटीज़ के प्रोटेक्शन और वेल्फेयर के लिए एक इंटेंसीफाय प्रोग्राम काँग्रेस की ओर से रिलीज किया है। अध्यक्ष जी के पास इस प्रोग्राम की कापी आ गई है। मैंने उन से रिक्वेस्ट किया है कि उसे वे अपनी भाषा में ट्रांसलेट करा कर असम में बँटवा दे, ताकि यहाँ की माइनारिटीज़ को इस बात का इल्म हो कि जिन बातों के बारे में वे लोग चिंतित हैं, विचार कर रहे हैं, वो इस प्रोग्राम के अंग है और काँग्रेस के लोगों का यह फर्ज है कि वो इस प्रोग्राम को अमल करने के लिए जो कुछ भी उनको करना संभव हो, वो करें और इस में कहीं भी किसी भी प्रकार की गफ़लत न हो। जय हिन्द।

कारगिल में बहादुर सिपाहियों ने पाक घुसपैठ को रोका

25 जुलाई, 1999 को सिद्धार्थ नगर (उत्तर प्रदेश) की आमसभा में सम्बोधन के प्रमुख अंश—

काँग्रेस के सभी आदरणीय साथियों ने देश और प्रदेश की महत्वपूर्ण बातें छेड़ी हैं। बार-बार यह कहा गया कि

मै सोनिया जी का संदेश लेकर आया हूँ। मुझ जैसे सामान्य कार्यकर्ता को सोनिया जी के संदेश को सुनाने का अवसर मिलता है। संदेश सुनाने की जिम्मेदारी मेरी नहीं है। सोनिया जी का सबसे पहला संदेश जनता की सेवा करने के लिए और सही ढंग से सेवा करने के लिए काँग्रेस के मंच पर बैठे हुए नेताओं को हैं, उसके बाद जनता को।

इस समय मुल्क के आगे बहुत गम्भीर समस्याएँ हैं। ये चुनाव जो भारतीय जनता पार्टी की अक्षमता की वजह से उनके ही दल में शामिल नेताओं की वजह से हो रहे हैं।

यह इस बात का सबूत हैं कि भारतीय जनता पार्टी और उनके सहयोगी आपका विश्वास पाकर भी देश का काम नहीं चला सकें और अब 2-4 नहीं अब तो 18 पार्टियाँ एक साथ हो गई हैं। पहले 5-6 थे, तो अलग-अलग खींचतान होती थी। अब 18 तरफ खींचतान होगी।

जैसा कि इस वक्त कारगिल में हुआ देश के बहादुर सिपाहियों ने पाकिस्तान की घुसपैठ को जो बिल्कुल ही नाजायज और बिल्कुल ही गलत थी बहादुरी के साथ उनको खदेड़कर देश के बाहर निकालने का प्रयास किया हैं। सबसे पहले मैं अपने देश के उन बहादुर जवानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ और यह कहना चाहता हूँ कि सारा राष्ट्र उनके प्रति कृतज्ञ हैं। जो कुछ उन्होंने किया हैं, कोई भी देश उसको भुला नहीं सकता हैं।

ये बात मुझे इसलिए कहना पड़ रही हैं, क्योंकि जो कुछ कारगिल में हुआ था, वह जीता जागता नमूना हैं, अटलबिहारी वाजपेयी की अक्षमता का, उनके गैरजिम्मेदाराना कदमों का, जिस देश के प्रधान मंत्री को ये न मालूम हो कि उसके घर में कौन, कब घुस आया हैं, इस बात का जवाब उन्होंने आज तक नहीं दिया।

काँग्रेस ने यह कोशिश की कि भारत को एक सूत्र में बाँधकर रखा जाए। हिन्दुस्तान में रहने वाले व्यक्ति को चाहे वह किसी भी धर्म का हो, कोई भी भाषा बोलता हो बराबरी का हक मिले।

मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ, मैं इस बात को मानता हूँ कि काँग्रेस से कुछ गलतियाँ हुई हैं जिसकी वजह से आपकी नाराजगी स्वभाविक हैं लेकिन अब उस गम को भुलाने का समय भी आ गया है ये गम और गुस्से से देश का काम नहीं चलता। अगर कौम को आगे बढ़ाना हैं और कौम को अगर तेजी से आगे ले जाने की कोशिश करना हैं तो हमें उन चीजों की तरफ ध्यान देना होगा जिससे मुल्क आगे बढ़ता हैं। सांप्रदायिक लोग तो कभी भी ऐसी स्थिति नहीं आने देना चाहते। भारतीय पार्टी हो, चाहे वो शिव सेना हो। दुःख इस बात का है कि लाईन में वो लोग भी जुड़ गए हैं जो दुहाई तो आपकी देते हैं, लेकिन साथ भारतीय जनता पार्टी का देते हैं। ऐसे लोगों से भी बहुत बड़ा नुकसान हुआ है।

मैं अभी चार दिन पहले बम्बई गया था। आप भी जानते हैं बम्बई में हमारे अकलियत के भाई यही से गए है, सिद्धार्थनगर, आजमगढ़ गोरखपुर यहीं के सब लोग वहाँ हैं। उनके ऊपर भी जुल्म सितम ढाए गए हैं, और वही जिन्होंने जुल्म सितम ढाए थे, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने अब उनको अपनी ओर लाने के लिए तरह-तरह की बातें कर रहे हैं। लेकिन मुझे यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि हमारे अकलियत के भाई और बहनों ने वहाँ पर उन्होंने साफ इंकार कर दिया कि अब हम दुबारा झाँसे में आने वाले नहीं हैं। और किसी भी हालत में अब हम देश में अमन चैन को खतरा नहीं होने देंगे।

हमारी आपसे एक प्रार्थना है कि आपकी शिक्षा का, आपकी सुरक्षा का आपकी तरक्की का, चाहे बुनकर भाई हो, चाहे और कोई हो, नौजवानों को एक नया रास्ता दिखाने के लिए सभी लोग मिलकर काम करें। ये सिलसिला सोनिया जी ने अकलियत के लिए बनाया है। आने वाले 8-10 दिनों के अन्दर पार्टी का चुनावी घोषणा-पत्र जारी होगा। आप उसमें देखेंगे उसमें मुख्य रूप से शिक्षा के बारे में, पर्सनल लॉ के बारे में लोगों को अपने काम में लगने वाले

रास्तों के बारे में, तरक्की के लिए अपने रोजगार के बारे में, इन्हीं सब मुद्दों का उसमें उल्लेख हैं यह घोषणा-पत्र देश के सामने आ रहा है।

उत्तरप्रदेश में जो सरकार हैं वह सरकार नहीं है एक सरकस हैं। इस सरकस में बराबर के खिलाड़ी कोई अपराधी है, कोई किडनेप करने वाले है, तो कोई हत्यारा हैं, तो कहीं कोई और है। और ये सब भारतीय जनता पार्टी के मुख्यमंत्री के नीचे काम कर रहे हैं, जो देश की जनता को तबाह करते हैं, अगर वही मंत्री बन जाएँगे तो सरकार क्या करेगी? आप स्वयं ही कल्पना कर सकते हैं। इस तरह की स्थिति को बदलना है और यह तभी बदला जा सकता हैं जब लोग इस बात का वादा करें, प्रदेश के मुलाजिम हो, किसान हो, प्रदेश के शिक्षक हो, प्रदेश के नौजवान हो, ये सब मजबूती से गठबंधन कर के इसे अन्दर से रोकने में मदद करें तो ही भारत का भविष्य सुरक्षित होगा। हमारे भाई विनोद तिवारी जी ने आपको विस्तार से कहा और सलमान जी ने भी बताया मैं इतनी ही आशा करता हूँ कि हम सब खुले दिल और दिमाग से अपने मुल्क की बात सोचेंगे। अपने छोटे-छोटे मामलों में छोटे-छोटे दायरों में उलझकर मुल्क को खतरे में नही डालेंगे। यही हमारा कर्तव्य हैं। पूर्वांचल उत्तर प्रदेश का क्रॉतिकारी अँचल हैं। यहाँ सब एक से बढ़कर एक क्रांतिकारी पैदा हुए जिन्होंने सब कुछ अपना सर्वस्व बलिदान किया बहुत-बहुत धन्यवाद। जयहिन्द।

श्री अर्जुनसिंह : साक्षात्कार एवं पत्रकारवार्ता

पचमढ़ी घोषणा प्रभावशील

16 जनवरी, 1999 को दिल्ली में अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी की पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

The agenda of today's meeting was primarily on the routine issues, and the discussion on the Pachmarhi declaration. The disussion was held there for three days. Many points has emerged there and the whole set of documents have been prepared. The Congress Working Committeee felt that apart from what has alreday appeared in the declaration, there may be other points, which need to be highlighted or acted upon. For that purpose, a sub-committee of the C.W.C. was set up to study the papers and point out those suggestions according to the amended constitution of the Congress.

There has to be a central organisational election authority of the A.I.C.C. The appointment of this authority was one of the items on the agenda and C.W.C. authorized the Congress President to appoint this authority, then the discussion on the communal riot, in the country on which you have a resolution before you.

A point was also raised in the agenda about the announcement of the Govt. of India, to restructure the Defence Ministery vis-a-vis the arm forces of India. On this C.W.C. took serious note of this matter as announced by the Defence Ministry. C.W.C. wants that the Govt. should spell out the details of this so that in the best traditions of our country by partisan approach to sensitive defence matter is adopted. So the issues on which decisions were taken and mention of the programme to observe the culmination of 50th year of martyrdom of the father of the nation Mahatma Gandhi, which has been distributed to you also and was announced earlier. Well, that was actually announced sometime back it was referred to in the C.W.C., therefore, we are giving the details.

Q: What is your discussion on Orissa?

Shri Arjunsingh: No, there was no discussion on Orissa for the simple reason that the Congress President is ceased of the matter and she has to take a decision.

प्रश्न: क्या वर्किंग कमेटी में कुछ सदस्यों ने यह राय रखी कि गुजरात में 356 लागू करने का समय आ गया है?

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, इस रूप में तो नहीं।

प्रश्न: क्या आप समझते हैं कि पहले से स्थिति सुधरी है या खराब हुई है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो समझता हूँ कि और खराब हुई है।

प्रश्न: गुजरात के मामले में काँग्रेस कड़ा कदम उठाने से पीछे क्यों हट रही है?

श्री अर्जुनसिंह: काँग्रेस कोई कड़ा कदम या नरम कदम के आधार पर कोई फैसला नहीं करती, उपयुक्त परिस्थिति में सही कदम उठना चाहिए और इसीलिए सभी आप्शन पार्टी के सामने हैं जब परिस्थिति ऐसी होगी जैसी आप अपेक्षा करते हैं तो वह कदम भी उठाए जाएँगे।

प्रश्न: आपने कहा कि परिस्थिति बिगड़ी है तो गुजरात के बारे में कुछ जानकारी देंगे क्या?

श्री अर्जुनसिंह: जानकारी तो वर्किंग कमेटी मेम्बर्स ने दी। जनरल सेक्ट्री इनचार्ज ने दी। श्री अहमद पटेल जो गुजरात से आते हैं, उन्होंने भी दी।

प्रश्न: क्या गुजरात में 356 इसलिए डिमांड नहीं किया जा रहा है क्योंकि उड़ीसा में विपक्षी दल आरोप लगा रहे हैं कि वहाँ लॉ एंड आर्डर की स्थिति खराब है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, यह कोई इंटरलिक्ड मामले नहीं है और न उस नजरिए से काँग्रेस पार्टी उसको देखती है।

प्रश्न: आज भा.ज.पा. ने माँग की है कि जे.पी. पटनायक को नैतिकता के आधार पर इस्तीफा दे देना चाहिए?

श्री अर्जुनसिंह: अब यह उनकी माँग अपनी जगह पर है।

प्रश्न: लेकिन ऐसी माँग काँग्रेस, केशुभाई पटेल से नैतिकता के आधार पर त्याग पत्र देने की क्यों नहीं कर रही है?

श्री अर्जुनसिंह: इतना तो फर्क आपने माना, कि नैतिकता की बात भा.ज.पा. हम लोगों से कर रही है, स्वयं उस पर अमल करने के लिए तैयार नहीं है।

प्रश्न: आप समेत कई काँग्रेस नेताओं ने गंभीर मामलों में, नैतिकता के आधार पर मामला अदालत में होते हुए, अपना पद छोड़ा। भले ही अदालत ने बाद में निर्णय कुछ और दिया तो क्या वर्तमान शंका की स्थिति इसी तरह की है?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, क्वालीफाई करना होगा किसी परिस्थिति को और जैसा मैंने पहले कहा अगर ये पूरा विषय काँग्रेस अध्यक्ष के कंसीडरेशन में नहीं होता तो मैं कोई न कोई कमेंट जो आपने कहा उसके आधार पर करता। लेकिन जब मामला उनके कसीडरेशन के लेवल पर है तो ऐसा कोई भी कमेंट करने का औचित्य नहीं है।

Q: What matters come for discussion in AICC?

Shri Arjunsingh: Many serious matter which have come up that is why this announcement by the Defence Minister that the Govt. is considering restructuring of the Ministry. We

want the details to be spelled out and once the details are spelled out then we will take a veiw on it.

प्रश्न: यह जो एडमिरल भागवत का प्रकरण हुआ, जिस तरीके से एडमिरल भागवत को हटाया गया, इस पर काँग्रेस की प्रतिक्रिया यह रही है अभी तक कि यह डिफेंस का मामला था, इस मामले में कोई विशेष आग्रह सरकार से नहीं करना चाहते, डिफेंस में इतनी बड़ी-बड़ी घटनाएँ हो रही है। आजादी के बाद पहली बार ऐसा हुआ कि सेना के एक अंग के अध्यक्ष को हटाया गया, उसके बाद भी काँग्रेस पार्टी कह रही है डिफेंस के मामले में वह अपनी राय नहीं देना चाहती, क्यों?

श्री अर्जुनसिंह: इस विषयपर भी रिएक्शन तो दिया जा चुका है और यहीं पर दिया जा चुका है। अभी फिर से उसको दोहराने की आवश्यकता मैं नहीं समझता। डिफेंस के मामले संजीदा है, इसीलिए तो हम ये माँग कर रहे हैं कि जो मेजर एक अनाउंसमेंट हो गया है कि वे रिस्ट्रक्चर करने जा रहे हैं। इसके विस्तार के बारे में हमें मालूम होना चाहिए। ताकि इस विषय पर कभी कोई पालिटिकल लाइन नहीं ली गई तो मालूम हो जाए हम कोशिश करेंगे उस प्रकार की एप्रोच के लिए।

Q: What is the shape of central election authority?

Shri Arjunsingh: That has been spelt out in the amendment passed to the constitution of the Congress party and just to refresh what was decided. This will be an authority set up within the Congres party consisting of either five or three members who will have the total responsibility regarding monitoring and overseeing the enrolement of members, the elections to every level from block upto the Congress President, this is the scope of this.

चुनाव में काँग्रेस कार्यकर्ताओं ने एकता दिखाई

30 जनवरी, 1999 को भोपाल में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

सबसे पहले मैं मध्य प्रदेश के जागरूक मतदाताओं का बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि उन्होंने सभी परिस्थितियों पर गौर करते हुए एक पाजीटिव सकारात्मक और स्पष्ट निर्णय लिया, इन चुनावों में, जिसकी वजह से साफ तस्वीर राजनीतिक रूप से मध्य प्रदेश की उभरकर सामने आई है और काँग्रेस को फिर से इस प्रदेश की सेवा करने के लिए जिम्मेदारी दी है।

दूसरी बात यह है कि ये सोनियाजी के नेतृत्व की वजह से एक बहुत स्पष्ट ओवरवेलमिंग सेंस ऑफ यूनिटी मध्य प्रदेश काँग्रेस के अन्दर आई जिसकी वजह से काँग्रेस के सभी कार्यकर्त्ताओं ने हर स्तर पर अपनी जिम्मेदारी इमानदारी से निभाई। स्वयं सोनियाजी के प्रदेश के दौरे के समय जो प्रदेश के हितों के बारे में उनका जो कंसेप्ट था, जो सोच थी वह बहुत स्पष्ट रूप से मतदाताओं के सामने आई। एक बहुत ही महत्वपूर्ण रोल उसने अदा किया। साथ ही साथ मध्य प्रदेश में श्री दिग्विजय सिंह जी के नेतृत्व में जो सरकार थी, उस सरकार का मूल्याँकन सही ढँग से मतदाताओं ने किया। अब आगे का जो परिदृश्य है वह बहुत स्पष्ट है और उस परिदृश्य में हम लोगों की, मतलब काँग्रेस जनों की क्या भूमिका होनी चाहिए वह महत्वपूर्ण है। क्योंकि अब विश्वास प्राप्त करने के बाद उस विश्वास

का सही मूल्याँकन करके और आकाँक्षाओं की पूर्ति के लिए, प्रदेश के चौमुखी विकास को गति देने के लिए, उसी प्रकार की एकता की जरूरत है, जो चुनाव के जीतने में परिलक्षित हुई।

उसके अलावा हम सबको ये समझ लेना चाहिए कि जनमत जो है, मतदाता जो है, वह अब परफार्मेंश चाहते है। और परफार्मेंश तभी सम्भव होगा, जब प्रदेश के अन्दर पार्टी का पूरा सहयोग दिग्विजय सिंह के साथ हो। जो स्थिति निर्मित हुई है उसको स्थाई बनाने के लिए और मजबूत करने के लिए आज भी आर्गेनाईजेशन को उतना ही मजबूत करने की जरूरत है जितना चुनाव के पहले थी। मुझे इतना ही कहना है। पंडित जी ने पहले ही मुझ से सवाल पूछ लिया कि मीडिया के बारे में आपका क्या विचार है। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि मीडिया ने जो उसका सही रोल है, वह यहाँ प्ले किया और उस सकारात्मक भूमिका की वजह से ही प्रदेश के मतदाताओं को निर्णय करने में सहायता मिली।

प्रश्न: घोषणा-पत्र के बारे में बताइए?

श्री अर्जुनसिंह: आज सुबह मैं इसी बात पर मुख्यमंत्री जी से बात कर रहा था और वे स्वयं इससे सहमत हैं, इस विषय पर सभी सहमत है। सबसे पहली प्राथमिकता तो यह है कि प्रदेश के अन्दर अधिकारों के तहत प्राईज फ्रण्ट पर एक्शन होना चाहिए। स्वाभाविक है कि वो प्रदेश की परिधि में जो अधिकार हैं, उसी के अन्दर होगा। दूसरा यह कि जो डेवलपमेण्ट स्टेट का है, वह तो सरकारी टीम को करना है। मध्य प्रदेश जैसे बड़े प्रदेश में आवागमन महत्वपूर्ण हैं और मध्य प्रदेश में आवागमन केवल सड़कों से ही प्राथमिक रूप से होता है, रेल्वेज तो वैसे भी कम हैं। तीसरे किसानों के संबंध में जो समस्याएँ बीच-बीच में उठी जिनकी वजह से किसानों को काफी परेशानी हुई। कृषि के क्षेत्र में केन्द्रित करके किसानों की मध्य प्रदेश में रक्षा की जाय। ये हैं फिर जो प्रशासन हैं वो प्रशासन पारदर्शी के साथ-साथ प्रभावशाली भी हो।

प्रश्न: कल प्रणव मुखर्जी ने कहा कि दिग्विजय सिंह ने सोनिया गाँधी को विश्वास दिलाया था कि मध्य प्रदेश में काँग्रेस जीतेगी बाकी सभी नेताओं ने कहा था कि जीतना मुश्किल है। इस बारे में आपका क्या कहना है?

श्री अर्जुनसिंह: इस बारे में मेरा कहना, यह है कि सितम्बर, 98 में एक इंफार्मल डिस्कशन में बातचीत हुई। मैंने महामहिम राज्यपाल से कहा था कि आगामी चुनाव में सरकार काँग्रेस की बनेगी जिसका मैंने कल उन्हें स्मरण दिलाया तो उन्होंने कहा कि हाँ आपने कहा तो था, तो अपना-अपना दृष्टिकोण है।

प्रश्न: आपने राज्यपाल से कहा सोनिया जी से तो नहीं कहा?

श्री अर्जुनसिंह: जब मैंने यह पब्लिकली इस तरह से कहा तो वह मैं कैसे कहूँगा सोचने की बात है।

प्रश्न: चुनाव के समय आपने दबाव डाला था कि जो नेता चुना जाय वह हरिजन, आदिवासी, पिछड़े वर्ग का हो?

श्री अर्जुनसिंह: अमूमन मैं स्टेण्ड लेता नहीं हूँ और लेता हूँ तो पर्याप्त कारणों के अभाव में बदलता नहीं हूँ। मेरा स्टेण्ड यह था कि ऐसा होना चाहिए जो आपने कहा था, लेकिन फैसला तो पार्टी ही करेगी। मेरी राय नहीं बदली है। लेकिन फैसला तो पार्टी का ही होगा।

प्रश्न: पंचायती राज के बारे में आपका क्या विचार है?

श्री अर्जुनसिंह: मैंने अभी पंचायत के सिलसिले में जो बात कही वह उसी संदर्भ में कही जो चीज सामने आई है।

खामियाँ हैं उनको सुधारना पड़ेगा। तभी इफेक्टिव होगा पंचायती राज।

प्रश्नः करप्शन....?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए उच्च स्तर पर हो या मिडिल स्तर पर हो या लोवर लेबल पर हो, करप्शन कोई एक्सेप्टेबल तो नहीं है। एनी पार्टी एनी परसन उसको तो फाईट करना ही पड़ेगा।

प्रश्नः बी.जे.पी. ने क्या किया? काँग्रेस का व्यू क्या है?

श्री अर्जुनसिंहः काँग्रेस का व्यू इस मामले में तो आर्टिकुलेट हो चुका था। पहले सरकार स्थिर हो जाय और यह पता चले कि वह क्या चाहती है तो फिर काँग्रेस रिएक्ट करेंगी। जयहिन्द।

काँग्रेस में कोई सेगमेन्ट सोनिया गाँधी का विरोधी नहीं

4 फरवरी, 1999 को बम्बई में लंच के दौरान पत्रकारों से चर्चा के प्रमुख अंश—

प्रश्नः यहाँ शिवसेना और बी.जे.पी. में डिसीडेण्ट लोग हैं, जो दु:खी लोग हैं। यदि वो गवर्नमेंट फार्म करना चाहते हैं तो क्या काँग्रेस उनका सपोर्ट करेगी? एक ऑपर्चुनिटी उन्हें अवेलेबल कर के देगी, ऐसा उन्होंने कहा है?

श्री अर्जुनसिंहः उन्होंने क्या कहा है? क्यों कहा? यह तो मुझे नहीं मालूम। देखिए, कोई पालिसी डिसीजन काँग्रेस पार्टी का नहीं हुआ है। यह मैं जानता हूँ।

प्रश्नः नई काँग्रेस इमर्ज कर रही है, सोनिया जी के नेतृत्व में, देन यू डिस्क्राइब ए रियल काँग्रेस?

श्री अर्जुनसिंहः काँग्रेस जैसी संस्था को कोई describe कर दे यह तो जरा, Too big a order. Certinly I can't do it. Only thing is that the congress is a living organisation and naturally therefore, it has learnt certain lessons. There have been some misunderstanding also. Some mistake also. We have understood what the meaning to those mistakes are, In terms of the support of the people. All that when it is taken into account considered carefully in an honest attempt to be made. This is enough what I said.

प्रश्नः अभी-अभी फारुख अब्दुल्ला जी आए थे, जब उन्हें बताया गया कि न्यूक्लीयर टेस्ट तो काँग्रेस टाल रही थी और भारत के संबंध में कुछ खटास आई है। उन्होंने कहा कि इंदिरा गाँधी ने भी किया था 71 में। उन का यह कहना है कि कश्मीर की स्थिति काँग्रेस के जमाने में ज्यादा खराब थी और अभी ज्यादा अच्छी है। आप की प्रतिक्रिया क्या है?

श्री अर्जुनसिंहः देखिए, जहाँ तक पहला सवाल है इंदिराजी ने एटॉमिक टेस्ट किया। लेकिन उस समय उन्होंने कहीं यह फोकस में नहीं आने दिया कि वह टेस्ट किसी दूसरे देश को मद्दे नजर रख कर किया गया है। आप उस समय का एक स्टेटमेंट भी इंदिराजी का पता कर लीजिए। राष्ट्र में यह शक्ति होनी चाहिए कि एॅटामिक एनर्जी को तो यूज कर सके, पीसफुल परपज के लिए। इंटरेस्ट उनका पीसफुल परपज़ था, लेकिन टेस्ट जरूरी था। सो देट इज अवर पोजीशन टू डू इट। इस समय तो इन्होंने शुरू से, डे वन से, वहाँ से खतरा है, वहाँ से खतरा है, इसलिए हम टेस्ट कर रहे है। आई मीन यू वेण्ट टू द लॉग ट्रेक आल टू गेदर। यह सवाल है।

रह गया फारूक अब्दुल्ला जी के अनुभव का, उस पर हम कुछ न बोलें तभी अच्छा है।

प्रश्न: सोनिया जी के खिलाफ इस वक्त काँग्रेस पार्टी में कोई सेगमेंट है, जो उन को एक्सेप्ट नहीं कर रहा है?

श्री अर्जुनसिंह: मैं तो नहीं देखता ऐसा कोई सेगमेंट।

प्रश्न: ऐसा कोई स्टेट है, जहाँ किसी देश में फारेनर को प्राइम मिनिस्टर बना दिया गया। वर्ल्ड में ऐसा कोई देश है, एक्जाम्पल बता दें।

श्री अर्जुनसिंह: नहीं, एक्जाम्पल का क्या सवाल? सी इज नाट ए फारेनर। सी इज एन इंडियन सिटीजन सिम्पल।

प्रश्न: पोस्ट बाबरी फेज़ से देश में एक अलग-सा जिक्र हुआ, हो रहा है, यह होते हुए भी माइनारिटीज़ के लिए अलग से फ्रण्ट शुरू करने की क्या आवश्यकता है?

श्री अर्जुनसिंह: फ्रण्ट नहीं है भाई साहब, जो काम हमारा हो रहा था, उस में और गति लाने की बात है। कोई नया फ्रण्ट नहीं खुल रहा है।

प्रश्न: एक राजनीतिक प्रश्न, काँग्रेस यह कह रही है कि नारायण राणे का आना, यह शिव सेना जाति का खेल, खेल रही है, लेकिन नारायण राणे का आरोप है अब तक काँग्रेस जाति का खेल खेलती रही है, शरद पवार को आगे करके।

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, काँग्रेस ने कभी किसी को इस आधार पर आगे पीछे नहीं किया कि वह किस जाति का है। काँग्रेस में सब की इम्पोर्टेंस अपनी तरह से होती है और अब इम्पोर्टेंस को पार्टी अपने दृष्टिकोण से, लोगों के परसेप्सन के दृष्टिकोण से, आगे पीछे यूज करती है। लेकिन यह कहना कि इस जाति का है, इसलिए हम आगे कर रहे हैं, ऐसा तो हम लोगों ने कभी नहीं किया और न कभी करने का इरादा है।

प्रश्न: आप ने यह भी कहा कि एक साल बाद खुद ही जनता उन्हें गिरा देगी इस सरकार को, लेकिन बार-बार यह क्यों कहा जा रहा है कि वो अपना बहुमत सिद्ध करें।

श्री अर्जुनसिंह: यह कॉस्टीट्यूशन प्रोसेस है, अपना बहुमत सिद्ध करें, ऐसी बात नहीं, लेकिन अंतिम फैसला जनता ही करेगी।

हार के लिए दूसरों को दोष देना उचित नहीं

26 अप्रैल, 1999 को दिल्ली में पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

Q: What you have to say on the defeat of confidence motion?

Shri Arjunsingh: You have read the statement that has been issued and we have mentioned detail in all the sickness that lead to the present situation. Only one thing, I would like to say that the effort that all the secular parties except one, put into the political exercises that followed the defeat of the confidence motion on the floor of the House. मेरी आवाज तो वैसी ही है, माइक अभी भी ठीक नहीं हुआ? मैं न तो एक्साइट होता हूँ और न डिप्रेस होता हूँ। Further saying in that exercise an effort was made that

communal forces are marginalized and there is no mid term election. List of the details are given in the note and I would only like to as that except Shri Mulayam Singh of the Samavadi party, we have great regard for all the other secular parties and their leaders may be, some people may find something wanting here and there Congress party would not like to say anything about any of the other leaders. The rest of the facts have been detailed in the statement.

प्रश्न: श्री हरकिशन सुरजीत के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं? उन्होंने काँग्रेस की आलोचना की है।

श्री अर्जुनसिंह: हरकिशन सुरजीत उस श्रेणी के नेताओं में से हैं जिनके लिए मैं पब्लिकली कोई भी कमेंट नहीं करना चाहता। यदि उनका तात्पर्य काँग्रेस वर्किंग कमेटी के उस फैसले से है जिस फैसले में काँग्रेस वर्किंग कमेटी ने किसी भी दूसरे काम्बीनेशन को मदद न करने का फैसला किया है, वह फैसला पार्टी का है, जो सोच समझकर लिया गया है उसके आधार पर यह निष्कर्ष निकालना जो आपने कहा है मैं समझता हूँ काँग्रेस के साथ ज्यादती होगी।

प्रश्न: आपको किनसे परेशानी हुई?

श्री अर्जुनसिंह: कोई परेशानी नहीं होती यदि मुलायम सिंह जी ने 17 अप्रैल तक जो रुख बनाकर रखा था वह रुख वह 18 को भी कायम रखते।

प्रश्न: प्रधानमंत्री पद के लिए ज्योति बसु के नाम पर काँग्रेस पार्टी क्यों राजी नहीं हुई?

श्री अर्जुनसिंह: इस विषय पर वर्किंग कमेटी में विचार विमर्श करने के बाद वर्किंग कमेटी का यह फैसला था कि पिछले अनुभवों को देखते हुए ये उचित नहीं होगा, अब यह फैसला किसी को पसंद न आए वह अलग चीज है लेकिन वर्किंग कमेटी का यह फैसला है।

Q: But you are in favour of coalition.

Shri Arjunsingh: I don't think we ever said that we are prepared for a coalition.

Q: According to Pachmarhi?

Shri Arjunsingh: Yes, because all of you were trying to put the Pachmarhi declaration in a context so I read it out.

Q: Do you think that Congress could keep the allies together, till the last moment?

Shri Arjunsingh: Well, I think keeping the flock together in an unprincipled manner we did not succeed in this. I can say we acted from the very beginning on clear cut principles, our commitment was very clear from the very beginning where some people are not prepared to their own commitment what can I do?

प्रश्न: काँग्रेस पार्टी और ए.आई.ए.डी.एम.के. के बीच चुनावी तालमेल की संभावना है क्या?

श्री अर्जुनसिंह: देखिए, इन प्रश्नों पर आज 26 अप्रैल को उत्तर नहीं दिया जा सकता। ये विषय ऐसे हैं जिन पर परामर्श होगा, एक दूसरे से चर्चा होगी, तब इस प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है, एकदम से हम कैसे कह दें, किससे होगा, किससे नहीं होगा, यह गलत होगा।

प्रश्न: सी.पी.पी. में जब इस आशय का निर्णय लिया गया कि चुनाव को रोकने के लिए सारे कदम

उठाए जाएँगे तो कार्य समिति ने किस आधार पर फैसला किया?

श्री अर्जुनसिंह: कार्यसमिति के फैसले की पृष्ठ भूमि तो मैने आपको बताई, अब कार्य समिति में जितने सम्मानित सदस्य हैं उन सबने जो चर्चा करके फैसला लिया उसके पीछे मैं जा भी नहीं सकता हूँ और जाने की मैं कोशिश भी नहीं करना चाहता हूँ।

Q: Why the situation for mid term election arises?

Shri Arjunsingh: This situation has arisen because of somebody not being able to honour his own commitment for that the Congress should not have to be blamed.

Q: Do you think that Mr. Mulayam Singh is responsible for midterm election?

Shri Arjunsingh: Very obvious.

Q: What was the view of C.P.I.(M)?

Shri Arjunsingh: Well, I must say it in the last what we were told and it came publicly that CPI(M) was not prepared to make Joyti Basu a candidate this is the last that we heard.

Q: When Congress know that there are intra-party differences why congress took the lead?

Shri Arjunsingh: You see, I don't know whether that happened or not but since it was insistence in your part that I clarified the position, but that does not take away the other fact that inspite of the people coming together to vote there were intra party differences. Where one was saying that I will not be a party to this set up unless somebody is kept out for the more rational thing was that the Congresses is in, all other are out. I mean that is a simple logic.

Q: Don't you think that Congress President was very keen to lead the government? But she couldn't?

Shri Arjunsingh: We thought that his overriding commitment to the anti-secular thought might overcome whatever inhibitions we had suddenly developed and that was the figure on the basis of the voting in the House, So I think it was very natural for the Congress President to presume that thought who voted against the Govt. would support the motion that is only thing.

Q: When Shri Mulayam Singhji gave assurance why he suddenly stepped back?

Shri Arjunsingh: You see that assurance had been made by him all the way if I may say so Mulayam Singhji was literally sitting on our head to bring this Govt. down. So many times he said this before everyone and he also made an assurance about remaining outside why suddenly withdraw I didn't know but we took note of his anxiety which he expressed in very very heightened tones about bringing down the BJP Govt.

Q: Why Congress belived Mulayam Singhji?

Shri Arjunsingh: Well, the party accepted what he was saying because we thought he was genuinely for removal of BJP.

प्रश्न: क्या लेफ्ट फ्रंट से भी आपको शिकायत है?

श्री अर्जुनसिंह: जहाँ तक लेफ्ट फ्रंट की बात है, मैंने पहले ही कहा कि हमें लेफ्ट फ्रन्ट से इस प्रकार की कोई शिकायत नहीं है और न उन्हें किसी चीज के लिए एक्सक्यूज करना चाहते हैं। सवाल यह है कि एक संदर्भ में काँग्रेस पार्टी की वर्किंग कमेटी ने एक फैसला लिया और वह संदर्भ भी मैंने आपको बता दिया, उसके बियान्ड अब और क्या कह सकता हूँ।

प्रश्न: ऐसा कहा जा रहा है कि काँग्रेस के ही कुछ लोगों ने काँग्रेस अध्यक्ष को गुमराह किया, इससे क्या आप सहमत हैं?

श्री अर्जुनसिंह: इसका उत्तर तो काँग्रेस अध्यक्ष ही देंगी, मैं कैसे बोलूँ।

Q: Will the congress looking for coalition politics?

Shri Arjunsingh: The Congress will be looking at the whole political scenario in the country and would try to act in the manner so that once again these communal forces do not get any opportunity to come at the centre of politics.

प्रश्न: आपने साझा सरकार के बारे में कहा था कि कुछ परिस्थितियों में साझा सरकार को काँग्रेस स्वीकार करती है और पचमढ़ी डिक्लेरेशन को आपने पुनर्भाषित किया था क्या?

श्री अर्जुनसिंह: पुनर्भाषित नहीं किया, जो था यह बताया।

प्रश्न: तो क्या आज की परिस्थितियों में काँग्रेस को वे स्थितियाँ नहीं जान पड़ी साझा सरकार की?

श्री अर्जुनसिंह: यह फैसला तो काँग्रेस वर्किंग कमेटी ने किया है।

भाजपा ने विदेशी नागरिकता का मुद्दा छोड़ा

2 अगस्त, 1999 को पत्रकार वार्ता के प्रमुख अंश—

प्रश्न: क्या श्रीमती सोनिया गाँधी की विदेशी नागरिकता का प्रश्न पहले भाजपा नेताओं ने उठाया था?

श्री अर्जुनसिंह: बी.जे.पी. ने उठाया था, आडवाणी ने, ठाकरे ने, आज बिना किसी सिफारिश के बी.जे.पी. ने यह मुद्दा क्यों छोड़ दिया?

प्रश्न: आप क्या समझते हैं?

श्री अर्जुनसिंह: बात यह है कि उनके अब समझ में आ रहा है कि श्रीमती सोनिया गाँधी का व्यक्तित्व इस चुनाव को प्रभावित करेगा। जितना ही वे उनके खिलाफ बात करेंगे वह उनके ही खिलाफ जाएगी। मेरी यह मान्यता है, मैंने जो अहसास किया है, कि सारे मुल्क में गरीबों का, अल्पसंख्यकों का, समाज के पिछड़े वर्ग का, हरिजन आदिवासियों का, स्वाभाविक विश्वास श्रीमती सोनिया गाँधी में आ रहा है। इस वजह से जो मैं कह रहा हूँ वह कारण है, अब कोई इसको माने, या न माने।

प्रश्न: पिछले दिनों आप पर बड़ा एलिगेशन लगाया था कि जो सरकार के संबंध में जो पीछे हुआ, कि आपने पार्टी को मिस गाइड किया या आपने कुछ इस तरह से बात की कि जिससे पार्टी को नुकसान

पहुँचा। इस बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

श्री अर्जुनसिंह: मैं अफवाहों और तथाकथित चीजों को न तो महत्व देता हूँ, न उनका उत्तर देता हूँ। ये फालतू की बातें हैं जो कुछ फैसला हुआ वह वर्किंग कमेटी ने मिलकर किया।

प्रश्न: भारतीय जनता पार्टी को कारगिल से फायदा होगा, कारगिल स्ट्रगल से?

श्री अर्जुनसिंह: अब उनकी तो यह कोशिश शुरू से थी, लेकन मेरी समझ में उनको फायदा नहीं होगा। वे कहतें औरों को हैं कि राजनीतिक लाभ ले रहे हैं, पर राजनीतिक लाभ तो पहले दिन से वही ले रहे हैं। अब श्यामा प्रसाद मुखर्जी पहले शहीद हो गए कश्मीर के लिए, अब इससे बढ़कर भोड़ापन क्या हो सकता है।

प्रश्न: मुफ्ती साहब जो पार्टी छोड़कर चले गए, इससे क्या लाभ पार्टी को है?

श्री अर्जुनसिंह: इसका लाभ मुफ्ती साहब को होगा, पार्टी का तो जो होगा सो होगा।

प्रश्न: कैसे?

श्री अर्जुनसिंह: भई, जो व्यक्ति अपनी विश्वसनीयता खो देगा वह राजनीति में क्या रहेगा?

प्रश्न: काँग्रेस में इंडिया के जो पोलिटिकल लीडर्स हैं वे सभी वेटरन हैं। काँग्रेस किसी नौजवान को आगे नहीं लाती हैं?

श्री अर्जुनसिंह: वेटरन 2-4 लोग ही होंगे, अब नौज़वानों को आना ही पड़ेगा। हिन्दुस्तान की 70 प्रतिशत जनसंख्या 35 से 45 के बीच में है, तो अब वे आएँगे नहीं तो कैसे होगा?

Politics in the country is in a flux

27 अगस्त, 1999 को दूरदर्शन के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Q: Momentary crisis in the party, I mean how do you now assess the situation as the senior leader of the Congress party.

Shri Arjunsingh: Well, I think that crisis period is over and now our attention is entirely focused on the coming election. Party is gearing up for the electoral battle, we have full confidence in the Congress worker across the country and the leadership of Mrs. Soniaji is definitely going to be a very very big boost to party morale.

Q: Would you like to say that there has been some kind of damage at least to the Congress where at least two leaders with some kind of base walking out of the party?

Shri Arjunsingh: You see, when you want to damage something you can always do some damage. But I don't see that kind of damage, which will cripple the party, some electoral damage may be there.

Q: I am also talking about what is called the third force, could it affect Congress fortunes in some measure ways in some States not mainly Maharashtra, Meghalaya, may be other places also?

Shri Arjunsingh: Well, you see, there are many fronts coming and going it is very difficult at this moment of time to identity this as the third front or the other as the forth front. Politics in the country is in a flux. The left CPI, CPM, they also have a front.

But the political trends amongst the people will be complementary, other alliances are totally unprincipled alliances, As far as unprincipled alliances growth whatever they are capable of doing limited act, they will try to do. I don't say any big third forces entity coming into existence.

Q: Coming again to the party's prospects I mean in M.P., in Rajasthan, these are places going on one to one win with BJP, so I mean in that situation might not prevail on a nationwide specially in southern India even in U.P., and Bihar?

Shri Arjunsingh: In South there will be no damage by anyone neither in M.P., nor Rajasthan neither in Delhi, very small effect will come in Maharashtra. But that too will not be to the extent of damaging the party very gravely we may not win two, three seats in Maharashtra.

Q: You know politics has become extremely federal now in India? I mean we have also seen in the past ever since principally after 1989 that is the regional parties which forms, regional forces I mean how is the Congress proposing to attune with this because there is an impression that Congress still function to a large extent from 10 Janpath...

Shri Arjunsingh: You see, some address has to be there, whether it is 10 Janpath or 24 Akbar Road or Jandewalan. Party have a headquarter so, I can't say that 10 Janpath does not have a role to play or 24 Akbar Road does not have a role to play, Jhandewalan has not a role to play, The point is that question that arises in this large country arises out of people aspirations that arise out of other hopes and fears. Now in India you can't wisdom away so, I am not trying to say that the federal character of India has to be diluted and to be made a unitary character, no, what used to happen, was that the Congress party use to imbibe and use to involve in itself all these things and project platform to the people who accepted that platform. In the last 5-6-7 years this effort of the Congress has not been as it should have been and therefore, it gave rise to regional political entities. I am not criticizing them because there can't be a vacuum in the country and certainly not in the political system. Now the effort of the Congress party will be while recognizing the regional identity and regional aspiration looking to the attempt by the party to project a common platform. If there has been any .... we are putting together again the original Congress platform that Mrs. Gandhi has been saying from day one that she wants to strengthen the Congress party and restore to its original position and its original identity. Now once we are able to do that in whatever manner it may be possible by the time

of the election. These issues will no longer remain contentious issues. They will not remain issues as if they are beyond the pale of the Congress understanding. So Congress also will have a view on them and if the people of that area can understand that view and can feel that the Congress is taking care of the regional aspiration also that extend regional structure of the party who are doing that alone totally divorce from the national scene and I am sure the people will now accept that position.

Q: The last question relates to your department chairman of the minorities, which is perhaps senior most important post in the Congress because that is the constituency which Congress has lost ever since the demolition of the Masjid, how do you see now the entire minorities question on folding?

Shri Arjunsingh: You see, Babri Masjid was a very dark side of Indian history and I must without any hesitation say that the Congress did not come out creditably in that. But leaving it there the minority question has to be dealt with first and foremost in participation and consultation with the minorities. If you try to prescribe something for the minorities that this is my prescription for the minorities think that is a totally wrong way to go about it and that is why Soniaji in computing this department has given us responsibility to widen our consultation and take the views of the minorities on what they would like to be done that process in the last three months has been more or less completed. Now we have formulated an action plan based on accelerated programme for the protection and development of minorities she released on 30th Jan. That is now at a stage when we will be unfolding it publicly and since it has been formulated after wide consultation both critical and also complementary that is a plan what the minorities will see as the Congress sort of synthesizers is on perception what they should see happening support of minorities will be there.

काँग्रेस ने कारगिल को राजनीतिक मुद्दा नहीं बनाया

27 अगस्त 1999 को आब्जरवर के श्री सिन्हा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश—

Q: What do you think about rightly or wrongly in this election Kargil has become the major issue what is the possession in the Congress party?

Shri Arjunsingh: The Congress party never wanted to make Kargil a political issue and we exercise the .... restraint while hostility is your own but it is obvious that from day one the BJP, wanted to politicise the Kargil issue and they did whatever they could under the circumstances now that hostility has ceased. We are not making it an issue but we have to answer the points raised by the BJP and also certain relevant

points regarding this episode and the first thing is that it has been said on our behalf is that forget everything else. Let the nation know as to when did the Prime Minister himself come to know of the intrusions in Kargil but today Prime Minister does not in any way answered this thing or is not prepared to take the nation into confidence either way. It is something which has serious implication and the stage of affairs about this national issue and the cavalier attitude of the B.J.P.

Q: Well, replying to Kargil whenever Congress has raised the question.

Shri Arjunsingh: That shows total bankruptcy of this set up, we are talking of 1999, not or 48. This is deference of 50 years.

Q: Recently the Army Chief reacted. Have you read the remarks of Army Chief about Kargil....?

Shri Arjunsingh: Well, the feelings of the Army Chief are well under stood but the first person to heed his request should be the Prime Minister of this country. It is not possible that the Prime Minister goes on making all the symbolic references and direct references and expects everyone else to keep quiet. If he doesn't make use of the issue no one will touch it.

Q: The challenge of minority cell for Congress party what do you think that the minorities are coming to the Congress party, in Chandni Chouk Shahi Imam has given a Phatva vote for the Janta Dal...

Shri Arjunsingh: I think Phatvas, have been given from time to time by Shahi Imam and what you mean realities on the ground because these Phatvas have come in the past also and they have not been ordered to be precise I think that the minorities in the country have over come whatever inhibition they had about the Congress party and the personal credibility in the personal position of the Congress President is the single most important factor and changing this attitude and I think now the Congress party will set to regain its traditional support amongst the minorities.

Q: What is the situation of congress in Uttar Pradesh?

Shri Arjunsingh: Very much promising and I want to make present mention of the situation in Uttar Pradesh in this regard. I think the results in the Uttar Pradesh will be fairly revealing and unprecedented in this respect.

Q: Say something about the BJP....

Shri Arjunsingh: Well, the BJP is literally clutching at straws because they see that now their total image has emerged that of a party and the set up which is prepared to take anything and everything to somehow get back into power and this kind of rank opportunism does not go down well with the people of India as has been witnessed many a times in the past.

Q: It is said that you are a member of Kitchen cabinet of Sonia Gandhi. Is it true.?

Shri Arjunsingh: Well, I think these are matters which are part of a view rather than reality. Mrs. Gandhi does not have a kitchen cabinet or anything of that sort. She has a broad based approach into issues which are decided upon various forums of the party through discussion and then a consensus at no stage has anybody been able to say and get way with something which he has not been part of a wide ranging discussion amongst the CWC or any other forum that exist in the party.



26928



इण्डियन रायटर्स एसोसिएशन की स्थापना कवि-चिंतक और राजनीतिज्ञ श्री श्रीकान्त वर्मा ने 1982 में की थी, जो सभी भारतीय भाषाओं के लेखकों, कलाकारों और बुद्धिजीवियों का राष्ट्रीय संगठन है। पिछले बाईस वर्षों में इस संगठन ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अनेक साहित्यिक परिसम्वाद और सांस्कृतिक समारोह आयोजित किये हैं, जिनमें सार्क देशों के लेखकों का सम्मेलन तथा महात्मा गाँधी और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर पर परिसम्वाद उल्लेखनीय है।

इण्डियन रायटर्स एसोसिएशन भारत के साहित्यकारों का मंच है, जिसके माध्यम से भाषायी कट्टरपन, साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयतावाद के विरुद्ध लगातार आवाज़ उठायी जा रही है। भाषायी सीमाओं को तोड़ते हुए सभी भारतीय भाषाओं के बीच सम्वाद विकसित करने के उद्देश्य से परस्पर अनुवाद, पुस्तक प्रकाशन और साहित्य संकलन की दिशा में यह मंच सक्रिय है। यह भारत में एक ऐसा वैचारिक आन्दोलन है जो भारतीय संस्कृति की बहुवाचकता के प्रति समर्पित है।

यह सही है कि बीसवीं
शताब्दी में कई महान स्वप्न
भंग हुए हैं पर जब तक हम मनुष्य
हैं और जब तक हमें अपनी
परम्पराओं और उत्तराधिकार का
सांस्कृतिक संस्पर्श सुलभ है; हम
मनुष्य की स्वाधीनता, उसके सच्चे
समतापूर्वक स्वराज्य का सपना
देखना छोड़ नहीं सकते।

अर्जुन सिंह